

संगीत

रागकल्पद्रुमः

(२२ खण्ड)

स्वर्गीय कृष्णानन्द रागसागर-विरचित

—०—

सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी लालगोलेके

राजा राव श्रीयोगीन्द्रनारायण राव बहादुरके

सम्पूर्णं व्यय चौर उक्ताहपर

हिन्दी प्रकृति विविध भाषाओंमें पारदर्शी सङ्गीतज्ञके साहाय्यसे

विश्वकोष-सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव शब्दरत्नाकर

सिद्धान्तवारिधि-सम्पादित

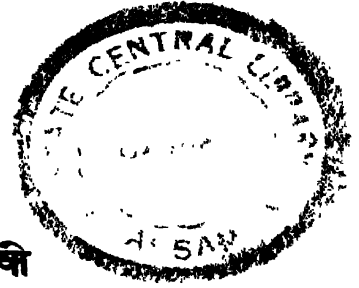
—०—

१७११ अपर-सरकुमार रोड, राष्ट्रीय साहित्य-परिषद्-मन्दिरसे

श्रीरामकमल सिंह द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता

सं. १८०१



SANGITA RAGA-KALPADRUMA

Encyclopædia of Indian Music

COMPRISING

Popular Sanskrit, Hindi, Gujrati, Karnatic, Telegu, Tamil, Bengali,
Uriya, Arabic, Persian, Peguan and various songs of
the different dialect of Rajputana as well as
some ancient English songs.

COMPILED BY

LATE KRISHNANANDA VYASADEVA RAGASAGARA

—o—

VOL. II.

(REVISED EDITION)

Edited by

**NAGENDRA NATH VASU, Prachavidyamaharava,
Siddhantavaridhi, Sabdaratnakara**

Under the distinguished patronage of

RAJA RAO JOGINDRANARAYAN RAY BAHADUR

OF

L A L G O L A.

—o—

Published

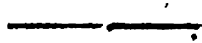
*From the Bangiya Syhitya Parishad,
By RAMA KAMAL SINHA
243|1 Upper Circular Road,
CALCUTTA.*

Printed by

**R. C. Mitra, at the Visvakosha-Press
9, Visvakosha Lane, Bagbazar,
1916**

विषय-निर्देश

	पृष्ठ
१। ग्रन्थकार और ग्रन्थका संक्षिप्त परिचय	१—८
२। रागसागरकी सूचना और स्वाक्षरकारियोंके नाम	१—६
३। २रा खण्डका साधारण सूचीपत्र	१—६
४। रागकल्पद्रुमका २रा खण्ड	१—५४६
५। प्रथमखण्डोक्त वर्षानुक्रमिक रागरागिणी-नामसूची	१—८
६। अकारादिक्रमिक प्राचीन संस्कृत शास्त्रसूची	८
७। १ले, २रे और ३रे खण्डकी अकारादि वर्षानुक्रमिक नामसूची	१०—१६



ग्रन्थकार और ग्रन्थका संक्षिप्त परिचय

कोई ३२ वर्ष पढ़िले सन् १८८४ ई०को कलकत्तेमें सार राजा राधाकान्तदेव बहादुरके प्रासादमें हमने तेजस्वी तप्तकाञ्चनवर्णाभ और दीर्घकाय एक ब्राह्मण देखा। उस समय हमने वङ्गभाषामें 'शब्देन्दु-महाकोष' नामक बृहदभिधान प्रकाशित करनेका बीड़ा उठाया था। इस अभिधानके प्रकाशन और प्रकृतत्वविषयमें शिञ्जालाभके अभिप्रायसे ही राजा राधाकान्तके उपयुक्त दौहित्र स्वर्गीय श्रीभानन्दकृष्ण वसु महाशयके समीप हम उपस्थित थे। उसी समय पूज्यपाद वसु महाशयसे साक्षात् करनेको वह ब्राह्मणप्रवर राधाकान्त भवनमें आये थे। वसु महाशयको कृपासे हमारा उनका परिचय हुआ। परिचय-प्रसङ्गमें वसु महाशयने कहा था,—“यही रागसागर कृष्णानन्द व्यासदेव हैं। इस समय इनका वयस ८० वर्षका, किन्तु देखनेपर ५०।६० वर्षसे अधिक समझ नहीं पड़ता। हमारे मातामहने जैसा 'शब्दकल्पद्रुम' नामक अभिधान बनाया है, इन्होंने भी वैसे ही 'रागकल्पद्रुम' नाम पर एक प्रकाण्ड सङ्गीत-ग्रन्थको सङ्कलन किया है। 'पृथ्वीराज-रायसे'की बात सर्वज्ञ सुनी होगी। इस समय एकमात्र यही कविचन्दका वह 'रायसा' उपयुक्त रूपसे गा सकते हैं।” इत्यादि

जब हमने उन महात्माको देखा, तब वह बहुमूल्य जरीन् कुरता, चपकन, चोगा और टोपी पहने हुये थे। उनकी वह वैशभूषा देख हम उन्हें कोई श्रेष्ठ ग्रन्थकार या गायक समझ न सके। हमने सोचा, कोई अमीर या राजा-महाराज होंगे। वसु महाशयसे उनका प्रकृत परिचय पा हम विस्मय-विसुग्ध हो गये। कविचन्दका नाम तो सुना, किन्तु उनका गान कभी कानमें न पड़ा था। हमने बहुत उरते-उरते गुरुस्थानीय वसु महाशयसे वही गान सुननेका आग्रह प्रकाश किया और रागसागरने भी हंसते-हंसते बालकका मन रख दिया। उन्होंने कविचन्दका गान सुनानेके लिये पहिले अपना परिधृत परिच्छद समस्त खोल-खाल लंगोटा पहना, पीछे वीररसात्मक कविचन्दका एक पद गाया।

वैसा हृदय-उत्तेजक और वीररसात्मक गान फिर हमें कभी सुन न पड़ा। जो लोग भानन्दकृष्ण वसु महाशयके पुस्तकागारमें उस समय बैठे थे, वे रागसागर महाशयका अपूर्व खरालाप सुन और हावभाव देख मानो मन्त्रमुग्ध हो गये। हमने उसी समय समझ लिया, कि यह व्यक्ति प्रकृत ही एक असाधारण पुरुष हैं। किन्तु उस समय भी उनके कीर्तिस्तम्भ 'सङ्गीत-रागकल्पद्रुम'को देखनेका सुयोग न लगा। स्वर्गीय वसु महाशयने सिर्फ यही कहा, “यह राजा राधाकान्त देवकृत शब्दकल्पद्रुमके अनुकरण पर रागकल्पद्रुम बना रहे हैं।” सिर्फ उसी दिन इन महापुरुषसे हमारी मुलाकात हुई थी। उसके थोड़े दिन बाद सुन पड़ा, रागसागर इहजगत्में उठ गये। इस बातको गुजरी कोई २८ वर्ष बीते होंगे। वर्तमान वङ्गके प्रथित-कीर्ति साहित्य-परिपोषक मुर्शिदाबाद-लालगोलेके वासी श्रीयुक्त राजा योगीन्द्रनारायण राव बहादुरकी कृपा एवं हमारे अन्धश्रुत बन्धुवर श्रीयुक्त रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी महाशयके उद्योगसे रागसागरका कीर्तिस्तम्भ रागकल्पद्रुम हमारे हाथ लगा है।

प्रसिद्ध प्रकृतत्ववित् राजा राजेन्द्रलाल मित्र महाशयने रागसागर और रागकल्पद्रुमके परिचय-प्रसङ्गमें लिखा है :—

“The book was in three volumes. The author, I remember, told me that he would make his work extend to seven volumes, the same as Raja Radhakanta Deva's Sabdakalpadruma, but I do not think he had materials ready at hand for the purpose. He carried about with him a huge bundle of MS notes, but I never had an opportunity to examine them, and I was too young then to care for them. The author was a Brahman, and his great pretension was that he could sing in three octaves, the ordinary compass of the human voice being two and a half octaves. He pretended also that he could sing in all the Ragas and Raginis with absolute accuracy, and without ever mixing up the latter; but I never studied music myself, and in my youth cared no-

thing about it, so I never could get any proof of the man's pretensions. He was always singing, but was not a professional musician, that is, he never let himself out on hire. He received presents from the rich people of the town frequently, but never accepted anything as wages or remuneration for singing."

राजा राजेन्द्रलालकी उक्तिसे समझ पड़ता है, कि उन्होंने वाल्यकालमें ही रागसागरको देखा था। उस समय रागसागर अपने वृहत् ग्रन्थकी पाण्डुलिपि लिये घूमते रहे। उद्धृत परिचयसे आप अच्छीतरह समझ सकते हैं, कि वे एक अद्वितीय गायक थे। फिर उस समय कलकत्तेमें प्रत्येक बड़े आदमीके घर सङ्गीतका यथेष्ट आदर रहा। प्रधान-प्रधान धनी रागसागरको बुला गाना सुनते, और उपयुक्त उपहार दे सम्मानित करते थे। किन्तु उन्होंने कभी किसीसे पारिश्रमिक वा वेतनके तौरपर कुछ नहीं लिया। राजा राजेन्द्रलालने कहा है, कि शब्दकल्पद्रुमकी तरह रागकल्पद्रुमकी सात खण्डमें प्रकाश करनेका अभिप्राय स्वतंत्र भी रागसागर तीन खण्ड मात्र ही कर पा सके थे।

सन् १८२४ ई०में राजा राजेन्द्रलाल मित्रों जन्म लिया था। अन्ततः हादशवष वयःक्रमकालपर रागसागरके सहित उनका साक्षात् होनेसे प्रायः सन् १८३६ ई०की उम्रमें रागसागर कलकत्तेमें देख पड़े। रागसागरने अपने राग कल्पद्रुमकी सूचनामें बताया है, कि उन्होंने ३२ वत्सरकाल भारतमें सर्वत्र घूमफिर गीत-संग्रह किया था। सन् १८४२ ई० अर्थात् १८८८ संवत्में उनके रागकल्पद्रुमकी सूचना और प्रथमांश 'रङ्गीन गान मजमूवा' प्रकाशित हुआ।

हमने प्रारम्भमें ही लिखा है, कि सन् १८८४ ई०की रागसागरका वयस प्रायः ८० वत्सर पहुँचा था। ऐसे स्थलमें प्रायः सन् १७८४ या १७८५ ई० उनका जन्मकाल निकलता है। उनके आत्मपरिचयसे मालूम पड़ता है, कि राजपूताना मेवाड़-राज्यके अन्तर्गत उदयपुरके 'जाहैन' नामक स्थानमें कृष्णानन्द व्यासदेव रहते और वृन्दावन-गोकुलमें सङ्गीतशास्त्र पढ़ते थे। गोकुलके सुप्रसिद्ध सङ्गीताचार्य दामोदर गोस्वामी, गिरिधर गोस्वामी एवं कल्याणराय प्रभृति गोस्वामिगणने सङ्गीत-विद्यासे सुगंध ही उन्हें 'रागसागर' उपाधि दी थी। इसके ठहरानेका कोई उपाय नहीं, किस वयसमें

उन्होंने 'रागसागर' उपाधि पायी थी। फिर भी उन्होंने ३२ वर्षकाल उत्तर एवं दक्षिण भारतके सकल प्रधान स्थान घूम फिर बड़े बड़े उस्तादों या गायकों और पद-कर्त्ताओंसे मिल उनके निकट उस समय भारतको गाना भाषामें जितने प्रकारके श्रेष्ठ गान रहे उन सबको संग्रह किया। जिस समय वह इस विराट् संग्रह-कार्यमें लगे, उसी समय मन्भवतः राजा राजेन्द्रलालसे उनकी मुलाकात हुई थी। उस समय भी वह विशाल पाण्डुलिपि कर्त्तव्य पर लादे घूमते थे।

सन् १८२२ ई०में राजा राधाकान्त देवने शब्दकल्पद्रुम आरम्भ किया और १८५८ ई०में उनका वह महा-ग्रन्थ पूरा हुआ। सुतरां जिस समय शब्दकल्पद्रुमका मुद्रणकार्य चलता था, उसी समय रागसागरके हृदयमें रागकल्पद्रुम प्रकाशना सङ्कल्प उठा। शब्दकल्पद्रुम-प्रचरकालमें राजा राधाकान्त जिस तरह अजस्र अर्थ लगा अपने छापीखानेसे शब्दकल्पद्रुम निकालते, असाधारण उद्योगी पुरुष गौड़ब्राह्मण रागसागर वङ्गवासी और धनकुवेर न जानते भी उसी तरह कलकत्तेमें खानेका पाखाना खाल अपना विराट् रागकल्पद्रुम प्रकाश करनेकी व्रती बने थे। उस समयके इस कानकी असाधारण अध्यवसायका उद्दान्त निदर्शन कहना पड़ेगा। यह हमने एक दिनके परिचयमें ही समझ लिया, कि ब्राह्मण दरिद्रमन्तान होकर भी उनका हृदय राजा-महाराजकी तरह उदार और विशाल था। शब्दकल्पद्रुम समाप्त होनेसे पहले ही उनका रागकल्पद्रुम निकल गया। राजा राधाकान्तदेवने १६ लाख रुपये लगा ३६ वर्षकी चेष्टाके फलसे जो महाकार्य साधन किया, बेचारा ब्राह्मणसन्तान ३२ वर्ष घूम उपकरण संग्रह कर पीछे ८ वर्षकी चेष्टामें ही अपना चार खण्ड रागकल्पद्रुम छपा सका था। पहले ही बताया है, कि सन् १८४२ ई०में उनके ग्रन्थका प्रथम खण्ड छपा था। मुद्रित ग्रन्थकी समाप्ति पुस्तिकासे समझ पड़ता है, कि सन् १८४८ ई०की उनके ग्रन्थका अन्तिम खण्ड निकला था। उनके ग्रन्थका जो-जो खण्ड जिस-समय मुद्रित हो प्रकाशित हुआ था, उसका सन्-संवत् इसतरह लिखा मिला है,—

सूचनिकाके शेष “संवत् १८८८ चैत्रवदि द्वितीया रवौ, वङ्गला सन् १२४८ ७ चैत्र अङ्गरेजो १८४२ १८ मार्च।”
रङ्गीनगान मजमूवाके शेष “संवत् १८८८ चैत्र वदि रवौ”

शास्त्रनाम सूचनिकाके शेष “संवत् १८०० वैशाख कृष्णदशमि वङ्गला १२५० १५ वैशाख, अङ्गरेजो १८४२ २० एप्रैल।”
रागरागिणी-विवेकाध्यायके शेष “संवत् १८०१ वैशाख शुक्ल एकादशी, वङ्गला सन् १२५१ १८ वैशाख २४ एप्रैल।”
बंगला भाषा रङ्गीनगान २३६ पृष्ठके शेष “सन् १२५२ साल, संवत् १८०२ शुक्लचतुर्दशी तारौख, २८ मार्च”
ध्रुवपद विष्णुपद ख्याल आदि गानके शेष “संवत् १८०२ फाल्गुन सुदी १ शुक्रवार, वङ्गला सन् १२५२ अङ्गरेजो १८४५”
कबोर-वोजकके शेष “संवत् १८०६ वैशाख कृष्ण १ चतुर्थी, वङ्गला सन् १२५६, ११ वैशाख, अंगरेजी सन् १८४८”।

पूज्यपाद आनन्दकृष्ण वसु महाशयसे सुना और राजा राजेन्द्रलाल मित्र महाशयने भी लिखा है, कि रागसागर महाशयने अपने रागकल्पद्रुमकी शब्द-कल्पद्रुमकी तरह ७ खण्डमें सम्पूर्ण करनेका मङ्गल्य किया था, किन्तु उसमें वे ३ खण्ड मात्र ही प्रकाश कर सके। इधर रागसागरकी ग्रन्थसूचनार्थ देखते हैं, कि उनका ग्रन्थ ४ खण्डमें सम्पूर्ण हुआ, प्रति खण्डका मूल्य २५) ६० और समग्र ग्रन्थका मूल्य १००) ६० निर्दिष्ट रहा।

सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागो लालगोलेके राजा श्रीयोगेन्द्र नारायण राव बहादुरने एक प्रति रागकल्पद्रुम संग्रह कर वङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकालयमें प्रदान किया। बहुत दिनसे यह अपूर्व ग्रन्थ लुप्तप्राय था। सन्देह है, कुछ प्राचीन सङ्गीतज्ञ व्यतीत कितने ही लोगोंने इस महाग्रन्थका नाम पर्यन्त सुना है या नहीं। चिर-साहित्यबान्धव राजा बहादुरने ऐसे लुप्तग्रन्थका पुनरुद्धार एकान्त वाञ्छनीय समझ सन् १८९२ ई०में पुनर्मुद्रणका अभिप्राय प्रकाश किया। इसलिये उन्होंने हमें लालगोले ले जा हमसे परामर्श पूछा—कैसे यह ग्रन्थ छपाया जा सकता है, और सुदृढ और श्रेष्ठ रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी महाशयके आग्रहसे इस वृहद् ग्रन्थका सम्पादनभार हमारे ही ऊपर रख दिया। हमारे लिये यह गुरुभार ग्रहण कोई सीधो बात न थी। जिस बहुविध भाषाका गान इस रागकल्पद्रुममें ग्रथित हुआ, उस समस्त भाषा और विशेषतः सङ्गीत शास्त्रमें हमें अल्प ही अभिज्ञता विद्यमान है। हमने राजाबहादुर जैसे उत्साहदाताके आनुकूल्य और सुदृढ-वर त्रिवेदी महाशयके उत्साहवाक्यसे इस महाकार्यमें हाथ लगाया।

यद्यपि रागसागरने अपनी सूचनार्थ ४५ विभिन्न भाषाओंके सङ्गीत-संग्रहकी बात लिखी है, तथापि उनके इस ग्रन्थमें प्रधानतः हिन्दी, उर्दू, माड़वारी, पञ्जाबी, ब्रजभाषा और बंगला ही अधिकांश व्यवहृत हुई हैं। अपरापर भाषाओंके गान बहुत ही अल्प हैं। देशीय मुद्रायन्त्रको उस श्रेष्ठ प्रवृत्तिमें अच्छा प्रूफ परिदर्शक न मिलता, प्रूफ देखनेका भी कितना हीको अभ्यास न था। सुतरां उस समय उपयुक्त प्रूफ-परिदर्शकके अभावसे रागकल्पद्रुमके अधिकांश गान ऐसे विकृत भावसे छपे, कि उनका प्रकृत पाठ उद्धार करनेके लिये हम और हमारे साहाय्यकारो कयो बार चबरा गये हैं। विशेषतः चीन, पेगु, ब्रह्म, श्याम, बल्लभ, बोखारे प्रभृतिको जो भाषायें इस देशमें साधारणतः नहीं चलतीं, उनमें हम यह नहीं ठहरा सके, कि किस विषयके कौन-कौन गान संगृहीत हुये हैं। संस्कृत, बंगला, हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी, मारवाड़ी प्रभृति प्रचलित भाषाओंके गानोंका पाठ उद्धार नाना व्यक्तियोंके साहाय्यसे किया गया है।

रागसागरके छापीलानेसे जिस अवस्थामें ग्रन्थ सम्पादित हुये, उसे हम आजकलका प्रथम प्रूफ समझ सकते हैं। राजा राधाकान्तदेवने जैसे बहुसंख्यक परिष्कृत नियुक्तकर अपने शब्दकल्पद्रुमके विशुद्ध संस्करण-प्रकाशमें उपयुक्त आराजन किया, मेवाड़के गोड़-ब्राह्मण सन्तानने भी कलकत्ते पहुंच वैसे ही उपयुक्त आराजन करनेका सुयोग न पाया था। सङ्गीतविद्याके अद्वितीय व्यक्तिहोते हुयेभी इसमें सन्देह है, कि अपना बताया ४५ भाषाओंमें उन्हें अभिज्ञता रही। इसीसे उनका ग्रन्थ उपयुक्त भावसे सुदृढकर निकालना एक प्रकार असाध्य-साधन व्यापार है। लालगोलेके राजा बहादुरके उत्साह

और हमारी बहु चेष्टासे छपते भी नहीं कह सकते, कि यह संस्करण संपूर्ण भ्रम-प्रमाद-विरहित हुआ है। हमने यथासाध्य प्रकृत पाठ-उच्चारकी चेष्टा की है।

यह बता देना भी आवश्यक है, कि इस रागकल्पद्रुमके संस्कृत, बंगला और अंगरेजी अंशको छोड़ अपरापर अंशके मुद्रणकालमें हिन्दी भाषावित् त्र्ययुक्त राधारमण मैत्र, पण्डित मतिराम महता, पण्डित बलभद्र शुक्ल, पण्डित रामार्धन अवस्थी, पण्डित गुरुदयाल मिश्र, पण्डित रामेश्वर देव साहित्याचार्य और पण्डित जयनारायण पाण्डेय काव्यतीर्थ महाशयने विभिन्न स्थलके भ्रमसंशोधन एवं पाठोच्चार-कार्यमें उपयुक्त साहाय्य किया है। इस लिये हम उनके निकट कृतज्ञ हैं।

१ले और २रे खण्डके प्रथमांशमें प्राचीन संस्कृत सङ्गीत-शास्त्रसे जो प्रमाण उद्धृत हुये, रागकल्पद्रुममें उनके आकरस्थान वा अध्यायादिका निर्देश न रहनेसे बहुसंख्यक मूलग्रन्थ मिला आकरस्थान निकालने और प्रकृत पाठोच्चार करनेमें हमें अनेक कष्ट भूलने पड़े हैं। हम मम्यादक रूपसे कह सकते हैं, कि संस्कृत अंशके प्रकृत पाठ-उच्चारके लिये संपूर्ण भावसे दायी हैं। अपरांश हमारे सहकारियोंकी अभिज्ञताके फलसे सम्पादित हुआ है। इस सकल अंशकी आलोचना करनेकी हमें समय न मिला। विशेषतः सङ्गीतविद्यामें अभिज्ञता न रहनेसे उनके कार्यपर हस्तक्षेप करना युक्तियुक्त कैसे समझ सकते हैं। हिन्दुस्थानी पण्डितों और गायकोंमें भाषाज्ञानका भी यथेष्ट तारतम्य है। किन्तु उनमें तीन दल हो गये हैं। एक दल तो चाहता, पहले जिसतरह प्रकृत रूपसे हिन्दीभाषा व्यवहृत होती थी, ठाक उसी तरह हिन्दी अंश छपना चाहिये। दूसरा दल हिन्दीभाषामें जहां शुद्ध संस्कृत शब्द आता, वहां प्रकृत संस्कृत रूप ही रखता और खालिस हिन्दी अंश हिन्दी भाषाके प्रकृत उच्चारणानुसार सन्निवेशित करता है। फिर गायकदल जिस भावसे गाता, उसीके खरालापको पद्धति और उच्चारणके अनुसार ग्रन्थ छपानेकी अनुमति भी देता है। ऐसी ही तीन श्रेणियोंके संशोधकोंके साहाय्य एवं

तस्वावधानसे विभिन्न स्थलको हिन्दी, ब्रजभाषा और मारवाड़ीके पदोंका अंश छापा गया है। सुतरां मुद्रण कालमें सर्वस्थान भाषागत या उच्चारणगत परिचर्या सम्पूर्ण भावसे रक्षित रह नहीं सकती।

नहीं जानते और सुनते भी नहीं, कि भारतीय सङ्गीत-साहित्यमें रागकल्पद्रुम-जैसा कोई वृहत् ग्रन्थ विद्यमान है। हिन्दुस्थान और बङ्गालमें सङ्गीत संग्रहके जो ग्रन्थ छपे हैं, उनमें हमारे कितने ही देखे सुने हैं। किन्तु इस रागकल्पद्रुमके सामने वह अति सामान्य हैं। रागसागरने ग्रन्थके प्रथम सङ्गीत-शास्त्रसे उद्धृत संस्कृतमें जिस अज्ञात-पूर्व विविध सङ्गीत-साहित्यका परिचय दिया, उससे हमें बहुतसे प्राचीन सङ्गीत ग्रन्थोंका सम्बन्ध मिला है। उनमें ऐसे अनेक ग्रन्थ हैं, जो वर्तमान भारत-गवर्णमें एक ही भारतव्यापी अनुसन्धानसे भी आजतक आविष्कृत हो न सके। वर्णानुक्रमिक प्राचीन (२रे खण्डके अन्तिम ८ पत्रपर) संस्कृत शास्त्रसूचीमें उन सकल ग्रन्थोंके नाम देख पड़ेंगे। इन सकल संस्कृत ग्रन्थोंको छोड़ रागकल्पद्रुमके गाना-ध्यायमें बहुसंख्यक हिन्दी और बंगला ग्रन्थोंसे भी गान उद्धृत हुये हैं, नीचे वही सकल ग्रन्थ अकारादिक्रमसे लिखे जाते हैं*—

अनन्तरस	काशीखण्ड
अनेकाद्ये-नाममाला	कृष्ण गोतावली
अवतार-चरित्र	कीकसार
अवध विलास	कीतुक-रत्नावली
अष्टयाम	खट्वाटु
आभास रामायण	गणितानु
उपदेशमाला	गर्भावली रामायण
कविप्रिया	गोतावली (हिन्दी)
कवित्त-रामायण	गोतावली (बंगला) आनन्द-
कबीर-बीजक	नारायण घोषकृत

* सर जर्ज गीयार्सन साहबने अपने हिन्दी भाषाके इतिहासमें रागकल्पद्रुमसे हिन्दुस्थानी ग्रन्थोंकी जो तालिका दी, वह भी इस जगह ले ली गयी है। उसमें सकल गान मिला हम यह ठोक कर नहीं सके, किस-किस ग्रन्थसे कौन-कौन अंश उद्धृत हुये हैं। इस तालिकामें जिन सकल ग्रन्थोंके नाम छपे, उनमें केवल गोतावली और ब्रजसङ्गीत बंगला भाषाके ग्रन्थ हैं। सिवा इसके समस्त ही ग्रन्थ हिन्दुस्थानी, मारवाड़ी और ब्रजभाषाके ग्रन्थ हैं।

गीतावली (वङ्गला	भाषा सामुद्रिक
„ आद्यतोष देवज्ञत)	मदन-मञ्जरी
„ कालिदास गाङ्गोलीकृत)	मनोरञ्जन इतिहास
„ कालिदास मौरजाकृत)	मन्न खालका शायर
„ रामनिधि गुप्तकृत)	माधौ-विलास
„ शिवचन्द्र करकौरकृत)	योगान्तकसार
गोपीचन्द्र गान	रसराम
गोरखमच्छेन्द्र-समाज	रसार्णव
चाहार दरवेश	रसिकप्रिया
कृतप्रकाश	रागमाला
जगद्विनोद	राजनीति
ज्ञान-उपदेश	राज-भक्तिरि गान
तानसेनका सङ्गीतसार	रामचरण-चिह्न
तुलसीदासका रामायण	रामविनोद
नगर-कासिन (राजकृष्ण	रामशतसे
बाहादुरकृत)	राम-शलाका
दया-विलास	राम-पञ्चाध्याय
दोहावली	रुक्मिणीमङ्गल
ध्यान मञ्जरी	लोलावती
नयानसुन्द	लूना चमारिका मन्त्र
नरसीकी चारमाला	वारवे रामायण
नाजिरका शायर	विखपरीका
नोतिकथा	विद्याभ्यासका फल
पञ्चरतन	विनय-पत्रिका
पद्मावत्	विहारौ शतसे
पृथीराज रायसा	वृन्दावन सत्
प्रबोध-वन्दोदय-नाटक	वेताल-पचिशी
प्रेमसागर	वेदररो कथा
ब्रह्मसङ्गीत (राममोहनराय)	वैद्यमहोत्सव
„ (देवेन्द्रनाथ ठाकुर)	व्रजयात्रा
„ (गिरान्द्रनाथ ठाकुरकृत)	व्रजविलास
भक्तमाला (हिन्दी)	व्रजभाषा महाभारत
भाषा इन्द्रजाल	शालिहोत्र
„ कोक	शिवका ग्रन्थसाङ्ग
„ छन्द	शिवसरोज
„ पचिशी	शिशुबोध
„ पिङ्गल	श्रीकृष्णावली
„ भगवद्गीता	सिंहासनवत्तिसी
„ भागवतपुराण	सभाविलास
„ भूषण	सरस रस
„ रत्नाकर	सर्पादि-जन्तुकी पोथी
„ सङ्गीतदर्पण	सूगा वङ्गरी
„ सावर	सूरसागर

सीदाका गजल	हातमताद
खेहसागर	हितोपदेश
इनुमान नाटक	हौराराज्या
इनुमान वाङ्मक	

इस ग्रन्थतालिकासे हमें कई हिन्दुस्थानी, डिङ्गल और बंगला ग्रन्थोंका सन्धान मिलता है।

इस सुष्ठुहत् ग्रन्थमें कितने प्रकारकी राग-रागिणी, कितने गीत-रचयिता और उनके रचित कितने प्रकारके गान किस विषयमें संश्लेषित हुये, साधारणको समझानेके लिये उपरोक्त तालिकाको छोड़ इस ग्रन्थके साथ निम्नलिखित भावसे विस्तृत सूचीपत्र दिया गया है—

१। १ले और २रे खण्डके साधारण विषय और रागरागिणीकी सूची (१—१६ और १—६ पृष्ठ)

२। २रे खण्डके अन्तमें १ला खण्डोक्त वर्णानुक्रमिक रागरागिणी-नाम सूची। (१—८ पृष्ठ)

३। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ सूची। (२य खण्डके अन्तमें ८ पृष्ठ)

४। १ले, २रे, और ३रे खण्डके गीतरचयिताओं और साधारण नामोंकी वर्णानुक्रमिक विस्तृत सूची। (१०—१६ पृष्ठ)

गीत-रचयिताओं और साधारण नामोंकी सूचीसे समझ पड़ेगा, रागसागरसे पहले कितने सुप्रसिद्ध गायक या सङ्गीत-रचयिता विद्यमान थे और दिल्लीके मुगल बादशाहसे लेकर कितने मुसलमान और हिन्दू राजन्व, धर्माचार्य और सिद्ध पुरुष उनके आश्रयदाता रहे। तीन खण्डकी साधारण नामसूचीमें उन सकल आश्रय-दाताओंके नाम लिखे गये हैं, उनमें कितने ही पदकर्ता या गीतरचयित-रूपसे भी परिचित हुये हैं। सिवा इसके दूसरे भी बहुतसे गान रागकल्पद्रुममें हैं, जिनके रचयितृगणके नाम और आकरस्थानका कोई सन्धान हम नहीं पा सके हैं।

रागकल्पद्रुम कोई प्रकृत इतिहास या साहित्य ग्रन्थ नहीं है, तो भी इस विराट् संग्रह ग्रन्थमें इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तियों, धर्माचार्यों और समाजपतियोंके नाम मिलनेसे इसकी आलोचना द्वारा मुसलमान और हिन्दू-समाजके विभिन्न समयका अनेक अज्ञातपूर्व ऐतिहासिक तथ्योंका उद्धार हो सकता है। इस रागकल्पद्रुमसे हमें कितने ही हिन्दी और उर्दूके मुसलमान पद-

कर्ताओंका सम्बन्ध मिलता है। नामसूचीकी तालिकामें प्रकाशर, जहांगीर, शाहजहाँ औरंगजेब, आसमगौर, मुहम्मदशाह प्रकृति बादशाहोंका नाम सज्ज करनेसे ही समझ पड़ेगा, कि मुगल बादशाह भी हिन्दुओंके साथ भगवद्गीता एवं प्रेम-विषयक गान सुनते और स्वयं भी समय-समय पर पद बना कृतकृत्य होते थे। जिस औरंगजेबको कितने ही लोग दारुण दंडसे और हिन्दूविद्वेषी समझते हैं, उनके रचित पद पढ़नेसे इस विषयमें घोरतर सन्देह होता है कि वास्तविक वह हिन्दूविद्वेषी थे या नहीं। शायद लोग कहें,—औरंगजेबका नाम रहते भी वह पद औरंगजेबके खास बनाये नहीं, किन्तु हिन्दूने ही लिखे होंगे। इस बातका यह उत्तर दिया जा सकता है—वह यदि प्रकृत हिन्दू-विद्वेषी ही होते, तो उनके समय उन्हींके नामसे ऐसे गान प्रचारित होनेका कभी सम्भावना न थी। अन्ततः इस रागकल्पद्रुमोक्त मुसलमान पद कर्ताओंके बनाने शत-शत पदोंसे हम समझ सकते हैं कि, किसी समय मुसलमान बादशाह और मुसलमान लोग हिन्दुओंको हरगिज, विद्वेषकी दृष्टिसे न देखते थे। हिन्दु-देवताओंका भी उनके निकट सम्पूर्ण श्रद्धाका वस्तु नहीं माना जाता था। ऐसे दिन बात गये हैं, जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरेको आत्मीय भावसे देखते, धर्म-विश्वासमें कभी विद्वेषवादी न होते; उल्टे परस्पर धर्मकार्यमें सहानुभूति रखते थे। कहनेसे क्या—मुसलमानोंके अमलदारीमें समाज, धर्म-साहित्य और रीति-नीतिके मध्य जिस भावका तरङ्ग उठता था, उसका कुछ-कुछ आभास हमें रागकल्पद्रुमके नाना पदोंसे मिला है। स्थानाभावसे हम इसका विस्तृत विवरण न दे सके।

पहले ही लिख चुके हैं, कि रागसागरके समय भारतके सकल धनी गृहस्थोंके घरमें सङ्गीतकी चर्चां यथेष्ट प्रचलित रही, विशेषतः कलकत्तमें बड़े आदमियोंका ऐसा घर न था, जिसमें उपयुक्त सङ्गीत-चर्चा न होतो हो। सङ्गीत-चर्चाके साथ कितने ही बड़े आदमी नाना विषयोंके अनेक गान बनाते थे, जिनका अधिकांश इस समय विलुप्त होते हुये भी रागसागरकी कृपासे रागकल्पद्रुमके वङ्गांशमें कुछ लोगोंका सम्बन्ध मिलता है।

इस ग्रन्थके प्रथम प्रकाश-कालमें आहकान्धेसुक्त ही जिन-जिन महाकाव्योंने रागसागरको उत्साह दिया था, उन सबका नाम ग्रन्थकी सूचनामें रागसागरने कृत-ज्ञताके साथ लिखा है। उसी आहकतालिकामें राज-राजेश्वरी क्वीन विक्टोरियासे लेकर उस समयके भारत-वर्षीय सकल स्थानके सकल प्रधान-प्रधान राजाओं अमीरों और बहुतसे सम्मान्त धनी व्यक्तियोंका नाम देख पड़ता है। उस समय महाराज रणजित्सिंहके पुत्र स्वाधीन भावसे ही राज्य करते और काशीपति चेतसिंहका राज्य लोप होते हुये भी उनके पुत्र महाराज बलवन्त सिंह आगरेमें विराजते थे। उस समय भी भारतवर्षके बाहर-भीतर जिन स्वाधीन और अध-स्वाधीन नृपतियोंने रागसागरको रागकल्पद्रुम ले उत्साहित किया, उनका सम्बन्ध भी इस ग्रन्थकी सूचनासे मिल जाता है। जिन सकल महाकाव्योंका नाम उक्त तालिकामें लिखा है, उनके कितने ही वंशधर आज भी नाना स्थानोंमें उज्वल मन्त्रको तरह चमक रहे हैं। हम आशा करते हैं, कि उनके पूर्वपुरुषोंको तरह उनके निकट भी यह ग्रन्थ विशेषरूपसे समाहित होगा।

हम पहले ही बता चुके हैं, कि रागसागरके ग्रन्थ छपानेके बाद अनेक ज्ञानी और मानी लोगोंके रागकल्पद्रुम ले उन्हें उत्साह देनेपर अल्प दिनोंमें ही यह ग्रन्थ बिरल-प्रचार ही गया था। परम पूज्यपाद महामहोपाध्याय श्रीयुक्त हरप्रसाद शास्त्री महाशयसे हमने सुना है, कि ग्रीयार्सन साहबने (अधुना सर जार्ज थोयार्सन) सन् १८८६ ई०को जब हिन्दूस्थानी भाषाका संक्षिप्त इतिहास लिखना आरम्भ किया तब यह रागकल्पद्रुम उनका प्रधान अवलम्बन बना; उन्होंने अनेक चेष्टा लगा मेट-काफ़ेहाल-पुस्तकालयसे एकमात्र सम्पूर्ण ग्रन्थ पाया था। यह ग्रन्थ दीर्घकाल व्यवहार करनेको उन्हें सौ रूपयेसे भी ज्यादा चन्दा पड़ा, परन्तु उन्हें बहु चेष्टा करने एवं मूल्य देनेपर भी दूसरा सम्पूर्ण ग्रन्थ न मिल सका। शास्त्री महाशयने भी घटनाक्रमसे वङ्गांश मात्रके तीन खण्ड संग्रह किये थे। अपना एक खण्ड उन्होंने वङ्गीय साहित्य-परिषद्-पुस्तकागारमें उपहार दिया है। पहले शास्त्री महाशयकी भी धारणा रही,

कि वङ्गाक्षरमें सुद्धित अंश ही रागसागरका सम्पूर्ण रागकल्पद्रुम था। किन्तु पीछे लालगोलीके राजाबहादुरने जब वङ्गीय साहित्यपरिषत्को नागरी अक्षरोंमें सुद्धित अंश दिया और शास्त्री महाशयने उसे देखा, तब वह वास्तविक चमत्कृत हो गये। लालगोलीके राजा बहादुरको इस अर्थके उद्धारका आयोजन करते देख शास्त्री महाशयने आन्तरिक धन्यवादज्ञापक पत्र लिखा था। हमने अनेक चिट्ठासे निम्नलिखित नागर और वङ्गाक्षरमें सुद्धित रागकल्पद्रुमका सन्धान पाया है। उनमें—

- १। लालगोलीके राजा बहादुरका दिया और वङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकालयमें रखा आदर्श पुस्तक है।
- २। स्वर्गीय राजा राधाकान्तदेव बहादुरके भवनमें अथर्वसे रचित १ खण्ड है।
- ३। वर्तमान कलकत्ता इम्पीरियल लायब्रेरीमें रचित एक असम्पूर्ण खण्ड है। (इस पुस्तकको ग्रीयार्सन साहबने व्यवहार किया था।)

केवल वङ्गाक्षरमें सुद्धित ४।५ ग्रन्थोंका सन्धान तो मिला, किन्तु हम कितने ही लोगोंसे अनुसन्धान लगा भी यह मालूम कर न सके, नागरी और वङ्गाक्षरमें सुद्धित ग्रन्थ सिवा तीन प्रतिके किसी दूसरी जगह है या नहीं। पहले हम समझते थे,—लालगोलीके राजाबहादुरका दिया आदर्श-पुस्तक ही संपूर्ण रागकल्पद्रुम है। इस पुस्तकमें निम्नलिखित रूपसे अंश-विभाग लगा है—

- १। सूचनिका ४ पत्राङ्क और नाम ४ पत्राङ्क।
- २। स्वराध्याय, तालाध्याय, नृत्याध्याय, रामरागिणी-विवेकाध्याय—२८ पत्राङ्क।
- ३। ध्रुवपद, ख्यालादि गान प्रथम २२८ पत्राङ्क, पीछे १से ८ और ११७से १५६ पत्राङ्क।
- ४। रङ्गीनगान मजमूवा, ३४४ पत्राङ्क।
- ५। कीर्तन वा नृत्यकीर्तन, १३२ पत्राङ्क। उसके बाद खण्डित है।
- ६। होली रङ्गीनगान १०८ पत्राङ्क। (१०८ पृष्ठके बाद खण्डित है।)
- ७। अध्यात्म और ज्ञानतत्त्वसागर, ७६ पत्राङ्क।
- ८। हिन्दो भक्तमाल-धृत कबीरका बीजक, ५२ पत्राङ्क।
- ९। बंगला अक्षरमें सुद्धितांश, प्रथम २३६, उसके बाद २४ पत्राङ्क।

आदर्श पुस्तकके अवलम्बनसे ग्रन्थसम्पादनकालमें

अनेक चिट्ठा करनेपर भी हम दूसरा कोई ग्रन्थ संघट्ट कर न सके थे। ग्रन्थका ३रा खण्ड या वङ्गाक्षरांश छपते समय हमें इम्पीरियल लाइब्रेरी और राजा राधाकान्त देवके पुस्तकालयमें इस पुस्तकके वर्तमान रहनेका सन्धान मिला। किन्तु उभय ग्रन्थ मकान लाकर उपयुक्त भावसे मिलानेका कोई सुयोग लगा न था। स्वर्गीय राजा राधाकान्त देवके सुयोग्य पौत्रके निकट कितनी ही दौड़ धूप कर भी उनके भवनका पुस्तक हम देख न सके। इम्पीरियल लाइब्रेरीका पुस्तक देख तो पाया, किन्तु उसे मकान ला अपने आदर्श-पुस्तकके साथ मिलानेको सुविधा न लगी। इम्पीरियल लाइब्रेरीके कर्मचारो अपने यहाँका पुस्तक किसी प्रकार बाहर निकालनेपर सन्मत न हुये। इसीसे हमें इम्पीरियल लाइब्रेरीमें जाकर उभय पुस्तक मिलानेकी व्यवस्था बांधनी पड़ी। हमारे सहकारी पण्डित श्रेयुक्त रजनीकान्त विद्याविनोद मासाधिक काल इम्पीरियल लाइब्रेरीमें यातायातकर आदर्श पुस्तकसम्बन्धोय १ला खण्डका खण्डित अंशके ३२ पृष्ठोंको नकल उतार लाये। यह अंश २रे खण्डके परिशिष्टमें छपा है। ३यांश या ध्रुवपदख्यालादि अंश इम्पीरियल लाइब्रेरीके पुस्तकमें ४ पृष्ठ मात्र अर्थात् संपूर्ण न रहनेसे हम पूर्ण कर न सके। षष्ठ अंश भी थोड़ासा असंपूर्ण रह गया है। इम्पीरियल लाइब्रेरीके पुस्तकको नकल उतारते समय दूसरे भी कई भाग मिले, जो हमारे आदर्श-पुस्तकमें बिलकुल देख नहीं पड़ते। नीचे उनका अंश-विभाग दिया जाता है :—

- १०। सूरदासजीकृत सूरसागर-सारावली ४४ पत्राङ्क।
- ११। सूरसागर—बधायी, बाललीला, यमलाजुन, अघासुरवध, वत्सहरण, राधाकृष्णजीकी प्रथम मिलन-लीला, गोचारण-लीला, कालीयदमन-लीला, वसुधहरण-लीला, पनघटकी लीला और खण्डिता, (सूरसागरके) कुल १५२ पत्राङ्क।
- १२। सूरसागर—दानलीला और राधाजीकी अनु-रागलीला, कुल १०४ पत्राङ्क।
- १३। सूरसागर—सुरलीलीला, रासलीला और मानलीला, कुल ८६ पत्राङ्क।
- १४। सूरसागर—मथुरालीला, ३२ पत्राङ्क।

१५। सुरसागर—अमरमौता (रामसागर-संग्रह),
१२० पन्नाह ।

१६। अपना दोनख, प्रभुजीका माहात्म्य तथा विनय-
पत्रिका, ३२ पन्नाह ।

१७। कलावती होकीगान—अतिरिक्त पन्नाह १०८
से १०६ ।

१८। राजा-भक्त-रि-गीत, (१-८ पृ०) और राजा
गोपीचन्द्र गीत (८-२८), कुल २८ पन्नाह ।

१९। रङ्गीनमान (गजल, रीखता, गायर, कबायी
आदि हिन्दी, फारसी और सब देशकी भाषामें) कुल
६८ पन्नाह, उसके आगे खण्डित है ।

सुतरां उभय पुस्तक मिलानेमें देख पड़ा, कि इम्प्यो-
रियल लायब्रेरीमें रचित रागकल्पद्रुमके ७४४ पृष्ठ
अभी छपनेको पड़े हैं ।

समझनेकी बात है, रागसागरने अपनी सूचनामें
जिन चार खण्डोंका परिचय दिया, उनमें तीन खण्ड
मात्र राजा बहादुरके दिये हुये आदर्श पुस्तकमें भिन्नते
हैं । तीन खण्डमें विभक्त ऐसाही मूलग्रन्थ सम्भवतः
राजा राजेन्द्रलालने भी देखा होगा । हमें प्रथम जैसे
चतुर्थ खण्डका सम्बन्ध न मिला, राजा राजेन्द्रलालकी
भी वैसे ही तीन खण्डसे अतिरिक्त पुस्तक देखनेका
सुयोग लगा न था । सुतरां इसमें सन्देह नहीं, उनके
समयमें ही इस संपूर्ण पुस्तकका कितना ही अभाव
पड़ा होगा । जो ही, इम्प्योरियल लायब्रेरीमें संग्र-
हित पुस्तकसे हमारा वह अभाव पूरण हुआ है ।
हमारे आदर्श और इम्प्योरियल लायब्रेरीके पुस्तकमें
जो-जो अंश मिला, उसको तालिका ऊपर दी गयी है ।
मिथा इसके किसी दूसरेके पास यदि कोई अंश मिले
तो कृपापूर्वक उसका संवाद देनेसे हम विशेष अनु-
ग्रहीत होंगे । अतः राजाबहादुरके उत्साहसे यदि
चतुर्थ खण्ड निकालनेका सुयोग लगा, तो अवशिष्ट
समस्त अंश छाप ग्रन्थ पूर्ण करने और उसी चतुर्थ
खण्डमें सङ्गीत साहित्यके इतिहासका आलोचना देनेकी
हमारी प्रवृत्ति है ।

इस उद्देश्य के तांगे खण्ड प्रकाशित हुये हैं ।
रागसागरने ३२ खण्ड केवल बङ्गाधरीमें निकाला

था । ३२ खण्डमें अधिकतर बंगला गान रहनेसे
हमनेभी उसे बंगला अधरीमें ही छपा है । आगेके दो
खण्डोंकी पत्रसंख्या कुल १३५६ और तृतीय खण्डकी
पत्रसंख्या कुल ३४० है । फिर आगेके दो खण्डोंमें
गानोंकी संख्या ११३३० और तृतीय खण्डमें गानोंकी
संख्या २५६२ है । इसी बातसे ग्रन्थकी विशालता
लोगोंकी समझमें आ जायगी ।

हम पहले ही कह चुके हैं, कि महात्मा सर आर्जे
घीयासनने हिन्दूखानो भाषाका इतिहास-बनाते समय
इस रागकल्पद्रुमसे यथेष्ट साहाय्य लिया था । महात्मा
घीयासन साहबने भी अपने ग्रन्थमें लिखा है—

“And another product of Calcutta civilisation,
of a very different kind, was the huge anthology of
Krishnanand Byas Deb, called the Rag-Sagarodbhab
Rag-kalpadrum, written in emulation of the better-
known Sanskrit lexicon, the Sabda-kalpadruma.”

(The Modern Vernacular Literature of Hindustan,
(1889) p. xxiii.)

“Some years ago this work, which was printed
in Calcutta, sold for a hundred rupees a copy, but
it is now out of print.” (Do Do pp. 187.)

घीयासन साहबके ग्रन्थ-रचना-कालमें इस पुस्तकका
एकान्त अभाव ही गया था । आज लालगोलेके राजा-
बहादुरकी असाधारण वदान्यता, ऐकान्तिक यत्न और
आग्रहसे वह अभाव मिट गया । सौ रुपये नकद मूल्य
देकर भी घीयासन साहब जो ग्रन्थ पा न सके, अब
अनायास ३० ही रुपयेमें वही ग्रन्थ सबको मिल
जायेगा । इसलिये इसमें सन्देह नहीं, कि समस्त
भारतवर्षके सङ्गीत-रसज्ञ मात्र इस महाकार्यके लिये
लालगोलेके राजा बहादुरका सुयोग कीर्तन करेंगे ।
वङ्गीय साहित्य-परिषत्के परम बन्धु राजाबहादुरने बहु
व्ययसे मुद्रित इस विशाल ग्रन्थका समस्त खर्च साहित्य-
परिषत्को अर्पण किया है और इसके विप्रेय-लक्ष्य मूल्यसे
अन्यान्य सङ्गीत-ग्रन्थके प्रचारका आदेश दिया है । राजा
बहादुरकी वदान्यतासे वङ्गीय साहित्य-परिषत् चिर-
कृतज्ञ बना रहेगा ।

विश्वकोष-कुटीर

८ विश्वकोष सैन, बाग्याजार, आषाढी पूर्णिमा, संवत् १९०१ ।

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु (सम्पादक)

रागसागरको सूचना

श्रीगणेशाय नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः ।

श्रीकृष्णानन्दव्यासदेव सागरसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्प-
द्रुमनाम ग्रन्थः ॥ श्रीब्रजगोकुलके गोस्वामि श्रीदामोदर-
जो महाराज गोस्वामि श्रीगिरिधरजी महाराज
गोस्वामि श्रीकल्याणरायजी महाराज आदि सर्व-
गोस्वामिजीने कृपाकरके श्रीकृष्णानन्द व्यासदेवको
संगीतशास्त्रमें रागसागरनाम दयो। ताने सबही
गोस्वामीनकी कृष्णानुग्रहते सर्वदेशमें फिरके बतीस-
वरष पर्यन्त गान संग्रह किया। सब गुनोजननसे प्रबंध
दिवारो संगीतवारे ध्रुपदवारे कलामंत तिसकी चार-
वानी। गोबरहारा खंडारो डारो नोहारो तानसेनकी
बैजुबाबरेको गोपालनायकको सुरदासको वाणो।
ख्यालवारे कवालतिसका वाणो चार अमीरखुसरोको
कबीरको राजामान इंदलकी सूलतानसरकी। अथ रागो-
त्पत्ति—श्रीब्रजहृदावनमें श्वेतवाराहकल्पविखे श्रीकृष्ण-
भगवान् स्वयं परब्रह्मरासलोत्पा करी। तामे चार प्रकारको
गोपी वेदको स्तुतिरूपों ऋषिरूपी देवरूपी और स्वतन्त्र
सदासर्वदा ब्रजमें नित्यलीलामे गोपी। श्रीकृष्णविराजी
ब्रजहृन्दावनप्रलयमें नांहीं ब्रह्मस्थान है। सोले सहस्र
एक शो षाठ आदिगोपी एतनही श्रीकृष्णरूप धरे।
एक एक गोपी श्रीकृष्णप्रति एक एक राग एक एक
ताल जुदे जुदे गए। सोले सहस्र एकशो षाठ राग-
रागिणी प्रगट भए। ताते यह भूलोकमें रागरागिणी
प्रसिद्ध भए। तामे भैरवादि छराग छतीस रागिणी राग-
पुत्र पुत्रवधु सखी सहैला राग उपराग देखो मार्गादि
भेदकरके रागमिलाप देशदेशको ध्रुन आदि राग उप-
रागादि साढ़े सातसौ राग साढ़े सातसौ उपराग। धनादि
संग्रह किया बारहस्र पचीस सहस्र गानप्रबंध ध्रुपद ख्याल
विष्णुपदादि परमेश्वरके प्रौढ्यर्थ संग्रह संकल्प किया।
ताते सब हिन्दुस्थानमें ब्रज दिल्ली म्वालयर अन्तर्वेद

जैनगर योधपुर गुजरात मम्बोई पुना दक्षिण हैदराबाद
काशी पटना टाका बंगला वाराभाटी कलकत्तेमें
सब बंगलागान सब देशका गान संग्रह करके हजारान
रुपैया खरचकर शरीरसो मेहनत करके परमसज्जनके
आनंदार्थ। संगीतशास्त्रो श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव राग-
सागर गौड़ब्राह्मण रहैषवारे मैवाड़देश चदेपुर देबगढ
कोटकेवासी यह पुस्तक सब देशनमें, सब तीर्थनमें
सब प्रजानमें सब राजा समराव और विलायत बादशाह-
को पठाया, बादशा बहोत प्रसन्न भया नामकेवास्ते
पठाया। अमोरनमें पठाया। यह पुस्तकमें कुछ भूलचूक
होय ताको क्षमा करियो सुधार बनाय लइयो। भैरवादि
षट्तराग त्रिंशतिरागिणी अष्ट अष्ट पुत्र तथा पुत्रवधु-
सखीसखा सहित ध्यानोदाहरण समय रागमिलाप
संस्कृत भाषाटीकासहित संगीतरत्नाकर संगीतदर्पण
संगीतदामोदर संगीतसार संगीतमहोदधि संगीतनारायण
संगीतसाहित्य सङ्गीतनादपुराण सङ्गीतपारिजात सङ्गीत-
कौमुदी सङ्गीतचन्द्रिका सङ्गीतमञ्जरी सङ्गीतनारद-
संहिता सङ्गीतार्थव सङ्गीतभाष्यादि शिवमत भरतमत
हनुमन्मत नारदमत ब्रह्ममत विष्णुमत महेशमत पार्वती-
मत लक्ष्मीमत हाहाहुहुगांधर्वमत सोमनाथमत कलि-
नाथमत इन्द्रप्रस्थमत नन्दिकेश्वरमत भैरवनाथमत गणेश-
मतादि अनेकमत मंगलाचरण भगवद्वाक्य नाद-
महिमा सरस्वतीवाक्य शरीरचक्रयोगभेद सप्तशरोत्पत्ति
वर्णकुलदेवता स्वरस्वरूपवर्णन पंकीपशुस्वर उचार वाईस
श्रुतिविवेक इकरंश मूर्धना नामविवेक स्वर-अलंकार
बादी विवादी अनुवादीभेद स्वराध्याय उनंचास कोट-
तान प्रस्तार विस्तार पलटा आरोही अवरोही तिन
प्रकारसो ओडव खाडव संपूर्ण संकोण काकली हादय-
भेद स्वराध्याय रागध्याय प्रकीर्णाध्याय प्रबंधाध्याय वाष्वा-

ध्याय मृदंगाध्याय पञ्चप्रस्तार प्रमलु ब्रह्मा विष्णु महेश
गणेश देवी सूर्यषट्शब्द सङ्गीतबोल देशदेशके संस्कृत-
भाषादिगान भैरवादि षष्टप्रहरके रागरागिणीसंयुक्त
नित्यनैमित्तिक कौर्त्तन ठाकुरकी जगानेते पौढाने पर्यन्त
प्रार्थनासहित सेवापदके मंगलके प्रात दर्शनके जुगल-
स्वरूपके कलेवाके बाललीलाके जसुमाजीके गङ्गाजीके
मिङ्गारके ग्वालके राजभोगके बनछाकके उद्यापनके प्रचन-
ते व्रजवनके संध्या पारतीके वयारुके पोठवेके दीनताके
नित्यगान और उषस्त्रव हादश महीना हौली अठार-
हजार भूलन पांचहजार । जम्माष्टमीके छठौके पलनाके
ठाठोठाठनके बाललीलाके श्रीराधाष्टमीके वामनहादशी-
के दानलीलाके सार्त्तीके नवरात्रिके दशहराके धनतेरसके
रूपचतुर्दशीके दिवालीके अन्नकूटगोवर्द्धनधर गोवर्द्धन-
पूजा इन्द्रमानभङ्गके भाइदुजके गोपाष्टमीके प्रबोधनी
एकादशीके गोकुलनाथजी यमुनाजीके चौरहरणके श्री-
विठलनाथजीके वसन्तसमयके होली धमारके डोलउत्सवके
फूलमण्डलीके रामनवमीके सोताजीके हनुमानजीके
आचार्यजीके अक्षयतृतीयाके नृसिंहचतुर्दशीके जल-
विहारयात्रा स्नानयात्राके रथयात्राके वर्षाके हिंडोर्लाके
पवित्राके राखीके इत्यादि उक्त्वादि गान और ध्रुपदादि
हादशलक्ष पचीसहस्र गान तिमके गीत सङ्गीत प्रबंध
छन्द कविता सबैया धारु धोवा भाठा परभाठा जुगलबंध
द्वेषट तिलाना रागसागर चतुरङ्ग षट्त्रङ्ग पञ्चरङ्ग सप्तरङ्ग
अष्टरङ्ग नवरङ्ग दशरङ्ग चौराष्टक निरोष्टक मणि पति
बलि बिकट उंच नीच प्रथम सार ध्रुवपद विष्णुपद
वलदेवपद शिल्पपद शक्तिपद सूर्यपद गणेशपद भैरवनाथ-
पद सब देवतानके सब राजावादशाहं ध्रुपद तुक ख्याल
टप्पा टुमरो खेभटा पंचाली सखीसंवाद विरहा कहरवा
दादरा सिठनी समधनगारी लोरी जशन सावन कजली
भुलना राजा भर्तरीगान गोपीचन्दगान अनेक प्रकार
दक्षणा-निलावणी चूर्णिका गुजरानि-धवल गरबा
गरबी गजल हवाई रेखता शयर नानाप्रकारके देश
देशभाषाबोल गान हिंदूस्थानिभाषा उरदु व्रज बांस-
वाड़ा तिरोहती मगहो नेपाली निवारी भोट बाराभाटी

बंगाला गान पैगु चिनिया चोड़ाया तैलंगी पद्मनाभ-
भूमि महाराष्ट्री कोंकणी कर्णाटी काष्टावाड़ सिंध
मारवाड़ी मिवाड़ी टूँटार हाडोती जैनगरी सेखा-
बती हरियाणा दिल्लीबोली बैखरीभाषा प्राकृतभाषा
सरस्वतीबालभाषा नागभाषा डिंगलपिंगलभाषादि गान,
अरबीगान तुरकी इरानी रुम शाम बलख बुखारा खैवर
पस्ती फारसी गजल रेखता हवाई फरद वेत मित्रा
शयर बहरेताबोल हादश अहंग विलायत मकाम हादश
चौबीस सोवे सनम् गनम् नारेज बाकरेजादि नाना
प्रकारके छन्द दोहा सोरठा चौपाई सबैया कवित भुलना
त्रिभङ्गी आर्या शिखरिणी शार्दूलविक्रीडित त्रोटक
वसन्ततिलका मालिनी नागराज नागस्वरूप हरिणीभूता
जयकरि छन्द महीधरी इन्द्रय्या मोतीदास दोषक
सावंत रोला भुजङ्गप्रयात गुरुतोमरछन्द घनाक्षरी गद्य-
पद्यादि अनेकछन्दमें गीत । इत्यादि तिनसौ साठ ताल ।
नानाप्रकारके छन्द ताल लय एकपदी द्विपदी त्रिपदी
चतुष्पदी पंचपदी षट्पदी सप्तपदी अष्टपदी नवमपदी
दशमपदी नायिकाभेद स्वकीया परकीया सामान्या खण्डि-
तादिभेद अलंकारादि गणागण नगण भगण यगण सगण
तगणादि अष्टगण शुभाशुभ लोलावती गणितादिभेद
व्याकरण न्याय मीमांसा षट्काव्यादि श्लोकप्रस्थान रत्ना-
करादि अनेकस्तोत्रस्तवकवचादि श्रौवज्ञभाचार्यजी श्री-
गुसाईजी कृताष्टक गोस्वामिश्रीगिरिधरजीकृत रामानुजजी
कृत माधवाचार्यजीकृत नीमावताचार्यजीकृत श्रीहितहरि-
वंशजीकृत रूपसनातनगुसाई श्रीकृष्णचैतन्य श्रीशङ्करा-
चार्यकृत विश्वमङ्गल पुष्पदन्ताचार्य इत्यादि अनेक मधुर-
स्तोत्रादि श्रीसूरदासजी सूरस्वामिजीकृत सूरसागर एतने
महाभावनकी वाणी सूरदास सूरश्याम श्रीजयदेवजीकृत
नानकजी तानसेन नायक बैजुबाबरे नायकगोपाल नायक-
घांधी नायकचिरञ्जु नायकमोर नायक वक्चु नायक-
रामदास जगन्नाथ सूरस्वामी परमानन्दस्वामी चित-
स्वामी गोविन्दस्वामी चतुर्भुजदास कृष्णदास कुम्भदास
नन्ददास मूरदास मदनमोहन श्रीभटजी गदाधरभटजी
गदाधरमिश्र व्यासजी हितघानन्द ध्रुवदास विहार

विहारण रसिकविहारो ब्रजनिध नागरोदास मीरांवाई नामदेव कबीर कमाल जुगलदास जानकीदास माधोदास ब्रजजोवनदास/करतालोया मोहनदास श्यामदास विष्णुदास क...रदास ठंडीराम महानन्द चरणदास सहजीवाई मल्लूकदास रामजस नृसोमहता नरहरदास भगवानदास कृष्णजोवन लक्ष्मीराम चतुरविहारो रसिकराय श्रीगुसाई वल्लभजी श्रीगुसाई पुरुसोत्तमजी श्रीगुसाई गोकुलनाथजी सरसरङ्ग श्रीगुसाई ब्रजाधीशजी मदनमोहन कल्याण माणिकचन्द वल्लभदास दामोदरदास धीरज माधो दयासखी सांवरीसखी चन्दसखी सोनादासी रङ्गीलीसखी सामासखी केवलराम वृन्दावन जीवन आनन्दघन बलरामदास उधोदास रङ्गोला प्रीतम आनदास लछनदास जुगराजदास हरिदास जितउ रामगुलाम नृसिंहदयाल रामसहाय रसिक गोविन्द गोपाल गोपालदास हितदामोदरदास श्याममुन्दर श्यामाश्याम इत्यादि, चण्डिदास गोविन्ददास विद्यापति अभैराम नशिराम रामप्रसाद रघुनाथमहाशय नीधु आशुतोष नीलमणि नीलरत्न करुणानिधान मदनमोहन राममोहन शिवचन्द्र कालोभिरजा लोकनाथ रामानन्द इत्यादि अनेक कवीश्वरकृत गिरिधर कविराय भूषण मतिराम पद्माकर देवआलम विद्यापति कमलापति सुवंश कुलपतिमिश्र चन्दकवि पृथुराज राजा कर्ण विक्रम भर्त्तरि राजा विश्वनाथसिंह मानभाबनके गानसंग्रह । ध्रुपदमें तानसेन वैजुवाबरे गोपालनायकादि विष्णुपद सूरदास सूरश्याम आदि । सुसलमान गबैया इछावरस वाकवरस हसुखां हुसेनवक्स साकलि जन्म-मन्नुखां रङ्गवरस तानवरस तानवरङ्ग वाणीवल्लास हिदायत खुशालखां छजुखां भूरखां रागरसखां कायमखांकृत नोवाजखां दुलैखां उदोतसेन गफ्फासेन जाफरखां पेयारखां वासदखां सादिखां छगखां इमामखां नाशरखां अचपल मौज साहुसेन अकतर मानखां खाजिहसन रहीमवक्स इमामवक्स साहवखां शीरीटपेवारी गासु हम्दम् नादम् महमदखां नाशर अलो अमीरखां कविरखां खाजिकुतव मीरअलिसाह गूदर काजम असगरली

खां सुलतान् अलीखां हुसेनअलाखां जोवनखां वाकरखां सखनमखन रजवली फजअली हदुहसु मानखां पानखां तानप्रवीण धोधा फारातुला । अथकलामति चार वाणी प्रथम गुवरहारो मानसेनकी वाणी दुसरे खठारो इछावरसको वाणी डागरीवाणी नोहारीवाणी इति कलामति वाणी । अथ कवालो वाणी-कनोरवाणी अमीरखुखरो सुलतानसरकी श्रेख सलेमो सदारङ्ग अदारङ्ग मगरङ्ग रसरङ्ग कोडीरङ्ग इस्करङ्ग आशकरङ्ग दिलरङ्ग खूशरङ्ग सरसरङ्ग रङ्गरस आनन्दरङ्ग । ध्रुपद हुमासके अकवरके राजारामके साहजहांके जहांगोरके आलमसाहके औरङ्गजेवके महमदसा अहमदसा सुनतान सजेम इत्यादिकनके नामके ध्रुपद ख्याल टप्पादि प्रकार । इत्यादि अद्भुत संगृहोत रसन्न गुणन्न रोचक महानुभाव आनो सज्जन विद्वज्जन रसिक-जननके आनन्दार्थ सङ्गोतशास्त्री श्रीकृष्णानन्दव्यासदेव रागसागर गोडब्राह्मण मेंवाड़देश उदपुरवासा श्रीजोहैनिवास निज छापामें सङ्गीत-रागकल्पद्रुम छापाए । जाकुं यह पुस्तक लेनेको इच्छा हाथ सो ठिकाना नगर कलकत्तेमें बड़ेवाजार थानेके नजिक सराफा महाजनोसां पुकलेवे श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागर पास मिले इस पुरू कका चारखण्ड एक एक खण्डका मोल नव-छावर रुपैया २५ चार खण्डका जुमले रुपैया १०० अंके एकसो कंपनी निखरचे लगगे और वाहार भेजनेमें डाकका महसूल गाहकोको लगेगा । पाछा कागजमें छापा जाता है । अगरचे एकठेदेश विदेशमें लिखावे तो हजारोन रुपया खरच होय नहीं संग्रह होय सकता सो अयुक्त राजा उमराव अमीर जमोदार महाजन सराफ व्यापारी बजारू गृहस्थादि जा कोउ लेवे सो दगखत करे वा चिठो भेजे तिनके परमभाग्य है ।

“सङ्गीतसाहित्यरसानभिन्नः

ख्यातः पद्यः पुच्छविषाणहीनः ।

चरत्यसौ किं तृणानभुङ्क्ते

परं पशुनामुपवासहेतुः ॥

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।

मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥”

अममिति चैत्र वदि तिया रवौ संवत् १८८८, वांगला तारिख ७ चैत्र सन १२४८, अंगरेज सन १८४२ १८ मार्च श्रीरक्षु कल्याणमस्तु ।

श्रीमन्नारायणाय नमः । अथ श्रीलक्ष्मणानन्द व्यास-देव रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुम नाम ग्रन्थकी पुस्तक प्रीतिपूर्वक चण्डीकार कौया, सर्वं देशानमें पठायति तिन राजा, बादशाह, अमीर, उमराव, महाजन, सज्जन विद्वान्, गुणीजन तिनके नाम हस्ताक्षरकारिणां नामानि । श्रीं महाराजाधिराजराजेश्वर हिन्दुपति पातसाह श्रीराणाजो खरूपसिंहजी, इंग्लण्डीय सर्व-देशाधिपति श्रीमती राजराजेश्वरी सर्वसामन्त-चक्र-चडामणि कुयन् विकटोरीया बादशाह, दिल्लीदेशाधिपति शाहनशाह वहादुर शाहसानी, अरबदेशाधिपति शाहनसाह शेरद नावापल्लानो वा मोल्लानी वा नवीना शेरद विन सुलतानी, फराशीस देशाधिपति साहनसाह, कश्मीरदेशाधिपति साहनसाह, पुन-सतारिके श्रीमहाराजाधिराज साह राजा पुस्तकमेकं, ईरानदेशाधिपति महम्मद शाहसुलतान, लाहोर-पञ्जाव-काश्मीर मूलतानदेशाधिपति श्रीं महाराजाधिराजराजेश्वर पातसाह श्रीरणजत सिंह वहादुर, श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर खडगसिंह वहादुर, श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर नर्वनिहास सिंह वहादुर, श्रीं महाराजाधिराज शेरसिंह वहादुर, श्रीं महाराजाधिराज लाहोर-पञ्जाव-काश्मीर-मूलतान-देशाधिपति पातसाह दिलाप सिंह वहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं । चीनीहा देशाधिपति शाहनसाह पातसाह, रंगुन-पेगु-ब्रह्मा देशाधिपति साहनसाह पातसाह, इरानदेशाधिपति शाह, बलख मुखाराधिपति शाह, दक्षिणाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर राजा श्रीमन्त बाजिराव पेशवा वहादुरस्यैकं पुस्तकं । दक्षिणाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर अमृत राव पेशवा वहादुर तख पुत्र श्रीं महाराजाधिराज श्रीमन्तविनायकराव पेशवा वहादुरस्यैकं पुस्तकं । श्रीं जहांपना राजराजेश्वर सुरैयाजं इद्रावादाधिपति श्रीजहांपना, मगसुदावाद् देशाधिपति

जहांपना श्रीमन्त जहांपना सुलफकार, फरकावाद् देशाधिपति जहांपना, नेपाळनेवार देशाधिपति खस्ति श्रीं गिरिराजचूडामणि नरनारो-ग्नेत्यादि विविध-विरदावली विराजमान मानोबत श्रीं श्रीमहाराजाधिराज राजराजेश्वर विक्रमसाह वहादुर समसेरजह देवानां सदा समविजयीनां नृपवरसु—मारवाडदेशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर राजा तखत सिंह वहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं । जयनगर देशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्रीं राजा रघुजी भोगले सेनापति सुबे वहादुरस्यैकं पुस्तकं । कर्णाटदेशाधिपति श्रीपद्मनाभ भूमिपति श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्रीरामराजा सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । नागपुर-देशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर राजा सथाई राजसिंह वहादुर नृपवरस्यैकं । इन्द्रावनपुरो बुंदी देशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजेश्वर राजा रामसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । कोटादेशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजा राव राजा रामसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । बुंदेलखण्ड वधेलखण्ड देशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजेश्वर राजा विश्वनाथ देवसिंह वहादुर तिलकधारी नृपवरस्यैकं पुस्तकं । वरोदा-गुजरात-देशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजेश्वर श्रीमन्त सोयाजौ गायकवाड सेनापति सुबे वहादुरस्यैकं पुस्तकं । सुदामापुरी पुरबन्दर हारका देशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज भोजराज सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । रामनगर काश्यधिपति महाराजाधिराज राजेश्वर उदितनारायण सिंह वहादुर । श्रीं महाराजाधिराज राजराजेश्वर राजा ईश्वरीप्रसादनारायणस्यैकं पुस्तकं । श्रीं महाराजाधिराज राजा देवकीनंदनवहादुर । गुजरात-भावनगर देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज विजयसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । गुजरात-नयानगर देशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राज जामशाह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । कच्छभुजदेशाधिपति श्रीं महाराजाधिराज राजा देशरजो वहादुरस्यैकं पुस्तकं । जैपुर-प्रधान महाराज

रावल सिंहजी एकं पुस्तकं । औधू राठ लक्ष्मनसिंह-
जी पुस्तकमेकं । भरतपुर देशाधिपति श्रीमहाराजाधि-
राज राजा वलवन्त सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । आग-
रेमे औधू महाराजाधिराज चेतसिंह वहादुरस्य पुत्र औधू
महाराजाधिराज वलवन्तसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं ।
मथुराजी मध्ये श्रीद्वारकाधीशजी पुस्तकस्यैकं । औधू
महाराज सैठ मनोराम, लक्ष्मोचन्द्र, राधाकृष्णस्यैकं
पुस्तकं । अग्रामाधिपति श्रीगहाराज पीतमसिंह
वहादुरस्यैकं पुस्तकं । आमनपुरीदेशाधिपति श्रीमहा-
राजाधिराज गङ्गासिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । औधू
श्रीमहाराज जालमसिंह जी । औधू साह विहारीलाल,
गोविंदलालजी रघुवरदयालजीस्यैकं पुस्तकं । औधू
साह रामलाल वद्रीनाथजी एकं पुस्तकं । भोजपुर
उमराव देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज राजा लाल
साह वहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं । बकशरदेशाधिपति
श्रीमहाराजाधिराज उदितप्रकाश सिंह वहादुरस्यैकं
पुस्तकं । पगयादेशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज हित-
नारायण सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । औधू महाराजाधि-
राज राजा टाडनारायण सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं ।
वेतोयादेशाधिपति औधू महाराजाधिराज राजा नवल-
किशोर सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । छोटैनागपुरके
औधू महाराजाधिराज जगन्नाथ सिंह वहादुरस्यैकं
पुस्तकं । हजारीवागके औधू महाराजाधिराज राजा
शम्भुनाथ सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । औधू महाराजा-
धिराज अमरसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । पुरणीया-
देशाधिपति औधू महाराजाधिराज राजा विजयसिंह
वहादुरस्यैकं पुस्तकं । हतुवाके औधू महाराजाधिराज
राजा कृष्णधारी सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । दरभङ्गा-
तिरोहतदेशाधिपति औधू महाराजाधिराज राजा रुद्र-
सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । औधू महाराजाधिराज
राजा वासुदेवसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं । मधुवनोके
औधू महाराजाधिराज कोर्त्तिसिंहस्यैकं पुस्तकं । सकरो
फतेपुरके औधू महाराज रामप्रतापसिंह वहादुरस्यैकं
पुस्तकं । पुरणीयाके औधू महाराजाधिराज राजेन्द्र-

नारायण, औधू महेन्द्रनारायणसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं ।
पुरणीयाके औधू महाराजा विद्यानन्द सिंहस्यैकं पुस्तकं ।
पुरणीयाके औधू महाराज रुद्रानन्द पुस्तकमेकं ।
फतेपुरके श्रीमहाराज हमोर सिंह पुस्तकमेकं, महाराज
रामनारायण सिंह पुस्तकमेकं, महाराज रूपनारायण
पुस्तकमेकं । मुजफरपुरके साह मनोहर दासजी पुस्तक-
मेकं । महाराज सधाके भेरुसिंहजी पुस्तकमेकं ।
काशीके महाराज अबसान सिंह पुस्तकमेकं । राज-
धानीके महाराजाधिराज राजा अन्वमेकं । बाबू जगन्नाथ
दास, बाबू बलराम दासजी पुस्तकमेकं । बाबू गावर्धन
दासजी पुस्तकमेकं । साह गोपालदास, मनोहरदास,
सुकुन्दलाल दास, हनुमानदास पुस्तकमेकं । बाबू
सुकुन्दलाल जानकीदास पुस्तकमेकं । बाबू रामचन्द्र
जानकीदास, दामोदरदास पुस्तकमेकं । बाबू ब्रजवल्लभ
दास, गोकुलदास, हरिदास, मथुरादास पुस्तकमेकं ।
साह विहारीलाल रघुवरदयाल पुस्तकमेकं । बाबू
रामदयालजी पुस्तकमेकं । बाबू शिवचरणलाल, शिव-
सहायलालजी पुस्तकमेकं । बाबू ब्रजभूषण दास
पुस्तकमेकं । बाबू द्वारकादास मधुवनदास पुस्तकमेकं ।
बाबू रामसेवक मिश्र, रघुनन्दन मिश्र पुस्तकमेकं । बाबू
हरिदास, हरकृष्णदास पुस्तकमेकं । बाबू नारायणप्रसाद
वल्लभदास, जगन्नाथ दासजी पुस्तकमेकं । बाबू मोतीचंद
गुजराती पुस्तकमेकं । कलबाबू लालचंद जी पुस्तक-
मेकं । बाबू परसराम अयाध्याप्रसाद पुस्तकमेकं ।
बाबू सोताराम, तुलसीराम पुस्तकमेकं । बाबू पूरणमल
कृष्णदासजी पुस्तकमेकं । साह मोहनलाल ठाकुर
पुस्तकमेकं । बाबू नेणसी पद्मसो पुस्तकमेकं । बाबू
प्रतापचंद वहादुरमल पुस्तकमेकं । बाबू रूपचंद
स्वरूपचंद पुस्तकमेकं । बाबू जोरावरमल दानमल
पुस्तकमेकं । बाबू माणकचंद केशरीचंद पुस्तकमेकं ।
बाबू देवचंद, पूर्णचंद पुस्तकमेकं । बाबू देवचंद
सर्वसुखस्यैकं अन्व । बाबू पूरणचंद लक्ष्मीचंद अन्व-
मेकं । बाबू पूरणचंद मनानाल अन्वमेकं । बाबू
सूरतराम रायभान धनरुपा वाचमल । बाबू शिवजीराम

गौधराम हरदयाल शिवप्रसाद रामप्रसाद। बाबू
हरगोविंद राय गुलाबराय। बाबू देवचंद कपूरचंद।
बाबू सीताराम चैतनदास। बाबू बालजी रतनजी
कल्याणजी ग्रन्यभेकं। बाबू मावजी धनजी ग्रन्यभेकं।
बाबू रणछोडदास मनजी ग्रन्यभेकं। बाबू नानजी
कीकरन ग्रन्यभेकं। बाबू मूलचंद प्रेमजी ग्रन्यभेकं।
बाबू भूटाकच्छा जी ग्रन्यभेकं। बाबू गाकुलदास जी
ग्रन्यभेकं। बाबू दामाजी ग्रन्यभेकं। बाबू रस्तमजी
ग्रन्यभेकं। बाबू शिवरामदास सालामिंह। बाबू
गोवर्द्धनदास धनसुन्दरदास। बाबू नंदराम मैत्री गरु-
दास लक्ष्मणदासजी ग्रन्यभेकं। बाबू फकीरचंद गंभीर-
चंद ग्रन्यभेकं। कुञ्जलाल वेंजनाथ। बाबू सीताराम
लक्ष्मणदास मनदास परमसुख। मदासुख युगलकिशोर।
बाबू राजरूप धनसुन्दरदास। बाबू फकीरचंद गंभीरचंद।
मैवाड़देशके सोली उमराव। बंटीके हादशउमराव।
नवकीर्टी मारवाडके उमराव। हरियाणा शंखावटीके
उमराव। लाहौर शीवरनर पञ्जावके उमराव। जांबू जंग
शायलाके उमराव। काश्मीरके उमराव। मुल्तानके
उमराव। ज्वालामुखी पट्टीयाणाके उमराव। फांहरके
उमराव। श्योनगर वर्द्धनाथजीके उमराव। जैनगरके
उमराव। अलवरगादि उमराव। हन्दावन मारवाड़ गाकुलके
गोस्वामी उमराव। आगरा ग्वालियरके उमराव। दिल्ली
सरधना मेरठ पानीपत जयपुरके उमराव। बिठौर
कानपुर अंतरवटके उमराव। लखनाउ वासपाड़ा
अयोध्याके उमाडाके उमराव। गोरखपुर आजमगढ़
हौन्पुरादि उमराव। गार्जीपुर कोपामीह डुमरावादि
उमराव। काशी मिरजापुर प्रयागादि उमराव। हुंदिल-
खण्ड बघेलखण्ड जबलपुर चरखिरी ध्यनीया भांमि
उमराव। छपरा हतुवा देहतादि उमराव। तिराहत
दरभङ्गा जनकपुरादि उमराव। वंतोया नेपाल
पुरणयादि उमराव। घोड़ाघाट रङ्गपुरादि उमराव।
ठाका मुक्तागाछा घट्ट्याम बाल बांकुहादि उमराव।

मणिपुर भाट कुकीयादि उमराव। रङ्गनके पेशु
ब्रह्मदेशके उमराव। चीन महाचीन सिंगापुरादि
उमराव। वाराभाटी बंगला मगसुन्दर कलकत्ता
मैदिनीपुरादि उमराव। उडिष्या बालेश्वर बन्दर कटक
जगन्नाथपुरी आदि उमराव। पद्मा नृसिंह मङ्गलीबंदर
शिवकांची विष्णुकांची मद्रबाजादि उमराव। रामेश्वर
देशाधिपति उमराव। कर्णाटदेश पद्मनाभभूमादि
उमराव। कोकणदेश मलयावारादि उमराव। हिंदा-
बाद सत्यासो बिटूर गंगाखेड उमरावती आदि उमराव।
ओरङ्गाबाद पुन-सतारा महाराष्ट्रदेशादि उमराव।
सुम्ब ड सूरत बरोदरा अमदाबाद भावनगर नयानगर
सुदामापुरी हारकानाथ गुजरात देशादि उमराव।
काठवाड़ कच्छभुज अजारादि उमराव। सिन्धु सिकार-
पुर हद्दाबाद कावल-गंधारादि उमराव। हादश ठोपी
इंलड फरासी रूसीया अरब रुम ग्राम इरान बलख
लुषा मक्का मदीना वसारादि उमराव। अथ बंगला
देशके स्वाक्षरकारी। ५ राजा महाराजाधिराज गिरीश-
चंद वहादुर। ५ महाराजाधिराज आशचंद वहादुर।
५ महाराजाधिराज महतायचंद वहादुर। ५ महा-
राजाधिराज बनवारीलाल वहादुर। ५ महाराजाधिराज
दुर्गनाथ वहादुर। महाराज आनन्दनाथ वहादुर।
बाबू हारकानाथ ठाकुर महाशय। बाबू देवेन्द्रनाथ
ठाकुर महाशय। बाबू गिरीन्द्रनाथ ठाकुर महाशय।
बाबू रमानाथ ठाकुर महाशय। बाबू प्रसन्नकुमार
ठाकुर ग्रंथभेकं। बाबू गापाललाल ठाकुर १। बाबू
ललितमाहन ठाकुर। बाबू चन्द्रकुमार ठाकुर। बाबू
नीलरतन हालदार। बाबू हरिचन्द्र लाहिड़ी १।
५ महाराजाधिराज राधाकान्त देव वहादुर। कुमार
महेन्द्रनारायण १। बाबू अमृतलाल मित्र। महाराजा-
धिराज सातानाथ वहादुर १। बाबू आशुताष देव १।
५ महाराजाधिराज कालाकृष्ण वहादुर १। ५ महाराजा-
धिराज देवेन्द्रकृष्ण वहादुर १। बाबू जम्बोजय मित्र १।

रागकल्पद्रुमः

द्वितीयखण्ड—सूचीपत्र

विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा		
अथ खम्बावती-ध्यानम्	१	परज	तिताला	३७	कलिङ्ग षट्	६३	
खम्बावती सरगम ताल साट	,	,,	धीमातिताला	३८	,,	मारु तिताला	६४
,, चौताल	,,	,,	खम्बावती	,,	परज	मारु तिताला	,,
,, तिताला	२	,,	तिताला	३९	कलिङ्ग	देशी	६५
,, चक्रताल	१२	,,	कलिङ्ग	,,	परज	मारु तिताला	,,
,, तिताला	,,	,,	एकताला	४१	,,	कलिङ्ग	,,
,, चौताल	,,	,,	धीमातिताला	,,	,,	तिताला	६६
,, तिताला	१३	,,	तिताला	४२	,,	कलिङ्ग	,,
,, यत्	,,	,,	धीमातिताला	४४	कलिङ्ग	तिताला	,,
,, तिताला	१४	,,	तिताला	४७	,,	परज	६७
,, यत्	१५	कलिङ्ग राग		,,	,,	तिताला	,,
,, धीमातिताला	१७	,,	ठ'रो	४८	परज	तिताला	,,
,, तिताला	१८	,,	खेमटा	५०	कलिङ्ग	तिताला	,,
,, देशी	२३	,,	तिताला	५७	कलिङ्ग	तिताला	,,
परज चौताल	,,	,,	धीमातिताला	५८	परज	एकताला	,,
,, तिताला	२४	,,	खेमटा	,,	कलिङ्ग	एकताला	६८
,, चौताल	२५	,,	यत्	५९	जयजयन्ती	एकताला	,,
,, तिताला	,,	,,	खेमटा	,,	,,	तिताला	७०
,, धीमातिताला	३०	,,	परज	,,	राग भैरव		७१
,, तिताला	३१	,,	यत्	६०	भैरव	चर्चरी	७७
,, धीमातिताला	३६	,,	परज	,,	अथ राम-कीर्तन		८०
,, यत्	३७	कजली तिताला		६१	,,	श्रीयमुनाजीके पद	,,
,, भाँपताल	,,	परज कलिङ्ग		६२	,,	समुदाय	८१

विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा
भैरव एकताला	८७	विलावन तिताला	१८७	भैरवी चर्चरी	२३६
„ तिताला	८८	„ एकताला	१८२	„ यत्	२४०
„ एकताला	„	सुडा तिताला	१८८	„ तिताला	२४४
„ तिताला	८९	„ „	२०६	„ यत्	„
रामकली तिताला	९०	अलया „	२०८	„ तिताला	२४५
„ चर्चरी	९१			पीलु	२४६
„ तिताला	९५			„ यत्	२४८
„ चर्चरी	९८	अथ कुञ्जामङ्गल		„ तिताला	„
अथ त्रियमुनाके कीर्तन	१०२	विलावन तिताला	२१४	„ जङ्गला	२४८
अथ रामके पद	१०६	„ छन्द	„	„ भिँभिट तिताला	„
रामकली चर्चरी	११०	अथ मुनाजीके पद	२१५	भैरवी तिताला	२५३
अथ मङ्गलारतो	„	अथ गङ्गाजीके पद	„	„ लम	„
रामकली चर्चरी	१११	भारती	„	„ गारा तिताला	„
विभास तिताला	१२२	विलावन चर्चरी	२१७	„ भिँभिट तिताला	२५४
„ चर्चरी	१२७	अथ ध्रुपदादिगान प्रारम्भः	२२१	„ जङ्गला	२५६
„ यत्	„	„ नादमहिमा	„	„ यत्	२५७
„ भाँपताल	„	„ भैरव रागध्यान	„	„ काफो	२५८
„ पठताल	१२८	„ चौताल	२२२	„ पीलु	„
„ यत्	„	अथ डोलो रङ्गोनगान प्रारम्भः	२२६	„ जङ्गला	„
„ एकताला	„	„ वसन्तध्यान	„	„ काफोसिन्धु यत्	„
„ यत्	„	„ यत्	„	„ परज	२५९
„ चर्चरी	१२९	भैरवी धमार यत्	„	„ टोड़ी	„
„ चाल	१३४	„ खेमटा	२३०	„ काफो जङ्गला तिताला	२६१
„ छन्द	१४५	सिन्धु भैरवी यत्	२३२	„ „ सिन्धु	२६२
अथ त्रियमुनाके पद	१४७	मूलतान भैरवी पशुती	२३३	„ खाब्बाज अलैया	२६४
अथ अथ गङ्गाजीके पद	१४८	सिन्धु भैरवो „	„	„ काफो देब	२६५
विभास चर्चरी	„	सिन्धु जङ्गला तिताला	„	„ जङ्गला तिताला	२६६
वारहमासा	१५३	भैरवी „	२३५	„ सोरठ „	२६८
पञ्चम तिताला	१५५	„ यत्	„	„ काफो	„
ललित तिताला	१६०	„ तिताला	„	„ सोरठ „	„
पठ तिताला	१६९	„ यत्	२३६	„ धानी काफो	„
देवगान्धार तिताला	१७३	काफो भैरवी „	„	„ परज „	„
„ पठताला	१८०	भैरवी „	„	„ काफो अलैया	„
		सिन्धु „ „	„	„ सिन्धु	२६९
		पीलु भैरवी „	„	„ टोड़ी	„
		भैरवो „	„		

सूचीपत्र

३

विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा
भैरवी काफ़ी सिन्धु	२७०	खम्बावती तिताला	२८८	मूलतानी धमार	३२२
„ सिन्धु	२७२	सिन्धु धमार	„	काफ़ी धमार	३२३
सिन्धु धमार	२७८	खम्बावती तिताला	३००	„ यत्	„
„ यत्	„	सिन्धु चाचर	„	भिँभिँट	„
„ वासवाड़ा यत्	„	„ तिताला	३०१	पीलु	„
„ काफ़ी	२७८	„ धमार	„	गारा	„
„ भैरवी	„	खम्बावती तिताला	„	भिन्धु	„
मरपरदा तिताला	२८०	„ यत्	३०३	काफ़ी	„
गारा यत्	२८२	„ धमार	३०५	भिँभिँट	३२४
विहाग	„	सिन्धु तिताला	„	काफ़ी	„
„ चाचर	२८३	„ परज	३०६	श्रीगुंसाइ गोकुलनाथजीकी चारा	„
„ धमार	„	नरपरदा तिताला	३०८	चैतो गौड़ी धमार	३२५
मोरठ	२८४	„ तिताला	„	कलिङ्ग यत्	„
विहाग	२८५	„ पहाड़ी	„	मरपरदा	„
सोरठ	„	„ खम्बावती	„	दौपचन्द्र	„
„ तिताला	२८६	विहाग तिताला	३०८	विलावल चौताल	„
विहाग	„	परज यत्	„	काफ़ी यत्	„
सोरठ धमार	„	योगिया	३१०	लहर	„
„ यत्	„	„ परज	„	काफ़ी	३२६
विहाग धमार	२८७	परज कलिङ्ग	३११	अथ श्रीगुंसाइ श्रीवल्लभजी कृत डोरी	„
मोरठ	२८८	„ खम्बावती	„	परज यत्	„
सिन्धु	२८०	„ अलैया	३१२	सोरठ	„
मोरठ	„	कलिङ्ग योगिया	„	वहार तिताला	„
„ पहाड़ी	„	„ परज	„	काफ़ी मारङ्ग	„
देश	„	परज कलिङ्ग	३१५	„ गारा	„
पालु धमार	„	कलिङ्ग तिताला	३१६	भिँभिँट तिताला	„
पालु पहाड़ी	„	„ परज	„	काफ़ी यत्	३२७
देश	२८१	परज धमार	३१७	धानी खेमटा	„
पहाड़ी यत्	„	„ कलिङ्ग	„	सिन्धु धमार	„
पीलु	„	खम्बावती परज	३१८	काफ़ी	„
सोरठ	„	सोरठ	३१८	„ यत्	„
„ धमार	३८२	परज तिताला	„	धनाश्री तिताला	३२८
सोरठ तिताला	२८३	„ कलिङ्ग	३२०	भिँभिँट	„
जयजयन्ती	„	काफ़ी यत्	३२१	देवगिरि धमार	„
सिन्धु धमार	२८८	परज धमार	३२२	विलावल	„

विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा
कनड़ी तिताला	३२८	काफी तिताला	३३६	सवेया यत्	३४८
भैरवी "	"	धनाश्री "	"	दोहा तिताला	"
भैरवी एकताला	३२८	" ठुंरि	३३७	चौबोला ..	३५०
सोरठमोझार धमार	"	होलो गान	"	दोहा "	"
सोरठ टोपचन्द्र	"	भैरवी चौताल	३३७	विलावल "	"
अडाना धमार	"	" धमार	३३८	सवेया	"
जलद तिताला	"	रामकली धमार	३३०	तिताला दोहा	"
माहाना जलद तिताला	"	टोड़ी "	३४२	षटराग तिताला दोहा	३५१
काफी .. "	"	मूलतानी "	"	चौबोला तिताला	३५२
मिन्धु धमार	"	धनाश्री "	"	दशदोष-लक्षण	
वरां काफी	३३०	पूरवी "	"	अलैया	३५४
काफी जलद तिताला	"	अलैया "	"	तानसेनोक्त कवित्व	३५५
" एकताला	"	" यत्	"	आनन्दरूप कवित्व	३५८
सोहनी धमार	"	विभास धमार	"	अकतीर-लक्षण	"
मूलतानी यत्	३३२	भैरव "	"	अखण्ड-लक्षण	"
काफी "	"	विभास "	"	अनन्तघातन कवित्व	"
ककुभ "	"	" चौताल	३४३	स्वरूप-प्रकाश-लक्षण	"
सरपरदा तिताला	३३३	" धमार	"	कूटस्था-लक्षण	"
षट् "	"	ललित "	"	आक्रम-लक्षण	"
भैरवी यत्	"	" पञ्चम	३४५	ब्रह्म-लक्षण	३५८
भैरवी जङ्गला	"	अलैया धमार	"	पापाकुल	३६०
" काफी यत्	"	विलावल	३४६	दोहा	"
जङ्गला यत्	३३४	सरपरदा यत्	३४७	कुण्डलिया	"
पाल् "	"	अलैया धमार	"	श्रीगोतायां	३६२
भैरवी "	"	अथ ज्ञानतत्त्व अध्यात्मसागर		पातञ्जल	"
भैरवी मिन्धु	"	सवेया	३४७	सांख्य	"
पूरवी धमार	"	दोहा	३४८	अथ आलापचारौ	
"वहान "	"	धनाश्री तिताला	"	एकताला	३६२
सरपरदा "	"	कवित्व चौताला	"	सोरठ	३६३
पाल् भैरवी	"	दोहा तिताला	"	" चौताल	"
खट् यत्	"	सवेया "	"	दोहा	३६५
कंदारा धमार	३३५	दोहा "	३४८	कबीर शब्दसागर	
काफी "	"	चौबोला "	"	लम एकताला	३६५
" यत्	"	दोहा ..	"	रागभैरव	"
धनाश्री "	३३६				

सूचीपत्र

५

विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा
आशावरी	३६६, ३६८	मनहरण छन्द चौताल	३८४	सोरठ चौताल	४०१
" सोरठ पोख	"	टण्याको अङ्ग—	३८५	खम्भाच "	४०२
रेखता गान्धार	"	इन्द्रवज्र छन्द देग्रीटोड़ी चौताल	"	पतिब्रताको अङ्ग—	"
सोरठ यत्	"	सारङ्ग चौताल	"	खम्भाच "	"
कनाडी तिताला	३६७	पेटको अङ्ग	३८६	मनाहर छन्द "	४०३
खम्भावती	"	इन्द्रवज्र छन्द सारङ्ग—चौताल	"	अङ्गविरह उराहनेको अङ्ग	४०४
कानाडा	"	मनोहर छन्द—चौताल	३८७-३७८	मनोहर छन्द	"
कानिङ्ग तिताला	३६७-४७१	मधुमास "	"	शब्दसारका अङ्ग—	"
भाटियाल "	३६८-३७८	वडफस "	३८८	जयजयन्ती चौताल	"
सिन्धु "	३६८	धिन्ताको अङ्ग—	"	इन्द्रवज्र छन्द "	"
अहारी	३७०	सारङ्ग "	"	शूरतानका अङ्ग—	"
विहाग "	"	भोसपलाश "	३८८	अहारी चौताल	४०६
विहागो यत्	"	इन्द्रवज्र छन्द "	३८९	सिन्धु "	"
धनाश्री "	३७१	मालकोश "	"	वसन्त "	"
ज्ञानतत्त्वसागरसंग्रह—	३७१-४४६	मनाहर छन्द—	"	साधुको अङ्ग—	"
सुन्दरदासकृत कवितादि छन्द	३७१	नारोनिन्दाको अङ्ग—	३८१	वहार तिताला	४०७
भैरव चौताल इन्द्रवज्रछन्द	"	मनाहर छन्द—चौताल	"	" यत्	४०८
अन्या बिलावल चौताल	३७३	कुण्डलिया	"	" चौताल	"
देवगिरि चौताल	३७४	परानन्दकको अङ्ग—	"	जङ्गला "	४०८
कान्ध	"	इन्द्रवज्र छन्द—चौताल	"	मनाहर छन्द—चौताल	"
कट तिताला	३७४	भन चञ्चलको अङ्ग—	३८२	पोलु "	४१०
सिन्धु "	३६५	मनाहर छन्द चौताल	३८२-८४	" तिताला	"
रामकली भाँपताल	३७६	इन्द्रवज्र "	३८३	भिक्षित "	"
सिन्धु भैवी तिताला	३७८	हमौर चौताल	३८४	भक्तिज्ञानमिश्रित अङ्ग—	४११
मनहरण छन्द "	३७८	ज्ञानकको अङ्ग—	३८५	सिन्धु तिताला	"
द्रुमिला छन्द	"	छायानट चौताल	"	अङ्गविषय अङ्ग—	४१२
जागोया तिताला	"	नट चौताल	३८६	सिन्धु तिताला	४१२
" यत्	"	अडाना चौताल	"	काफो "	४१३
अकालचिन्तामणि इन्द्रवज्र छन्द	३७८	वागीश्वरी "	३८८	अपने भावको अङ्ग—	४१६
आशावरी तिताला	३८०	विपरीत ज्ञानको अङ्ग—	३८८	धनाश्री तिताला	"
मनहरण छन्द चौताल	३८१	वागीश्वरी चौताल	"	मनोहर छन्द चौताल	"
ठीरो चौताल	३८२	वचनविवेकको अङ्ग—	"	छायानट चौताल	४१७
गुजरो "	"	केदारा चौताल	"	महार साहाना यत्	"
देह-पाला-विद्योह—	३८३	विहाग "	४०१	इन्द्रवज्र छन्द "	"
इन्द्रवज्रछन्द—चौताल	"	निगुँच उपासनाको अङ्ग—	"	खरूप विस्मरक अङ्ग—	४१८

विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा
मङ्गार चौताल	४१८	अङ्ग विदेहकी—	४३८	विहाग यत्	४६६
मनोहर छन्द ,,	„	प्रदोष यत्	„	काफी तिताला	४६८
इन्द्रवज्र छन्द तिताला	„	सवेया ,,	„	आशावरी यत्	४६८
मनोहर छन्द ,, ४१८, ४२३, ४४१	४४१	जीवन्मृतकी अङ्ग—	„	„ तिताला	„
जयप्रयन्ती यत्	४२०	प्रदोष यत्	„	योगीया ,,	४७०
दृष्ट मङ्गार चौताल	„	अहं तन्मानकी अङ्ग—	४४०	सिन्धु ,,	४७१-४७५
साक्षी ज्ञानकी अङ्ग—	४२१	प्रशास्त्र कानहड़ा चौताल	„	आशावरी ,,	„
मनोहर छन्द चौताल	„	ब्रह्मराग चौताल	„	सिन्धु ,,	४७४, ४७७, ४८२
सुवराज	„	इन्द्रवज्र छन्द ,,	४४२	अङ्गीरी ,,	४८७
प्रश्न तथा उत्तर	४२२-२३	मनोहर छन्द ,,	४४३	पोलु ,,	४७८
विहारी यत्	४२५	आत्मिका अङ्ग—	„	कवीर चौतोसा	४८५
बहार ,,	४२६	मनोहर छन्द चौताल	४४३, ४४४	कवीर विप्रवतीसी	४८७
विहारी विहाग यत्	„	विस्मयकी अङ्ग—	४४४	कवीरकी चाचरी	४८८
मनोहर छन्द यत्	„	कवीरवीजक—	४४६-५०८	धनाश्री तिताला	„
विचारकी अङ्ग—	४२७	आशावरी तिताला	४४६	कवीर—विरह	४८८
इन्द्रवज्र छन्द ,,	„	कवीरकी माखी ४४६-४६५, ४८३-५०६	„	„ दिखोला (हिन्दोल)	„
काफी तिताला	४२८	घनाश्री ४४६, ४७८, ४७९, ४८३	„	„ शब्दकहरा	४८०
वसन्त चौताल	४२८	जङ्गला ,,	४४७	वसन्त धमार	४८३
प्रश्न ,,	„	पोलु यत्	४४८	वसन्त धमार	५०७
उत्तर ,,	„	गौरी तिताला	४३८	अहेरी तिताला	५०८
ब्रह्मनिष्कलङ्क अङ्ग—	„	भूपाली ,,	४५०	इमन भिँ भिट ,,	„
मनोहर छन्द यत्	„	कलिङ्ग गौरी ,,	४५०	भिँ भिट पलासी	„
आत्मानुभव अङ्ग—	४३०	इमन् ,,	४५१		
लावनी	„	कंदार तिताला	४५२		
प्रशास्त्र ,,	४३१	सोरठ ,, ४५३, ४५५, ४६५, ४७४,	४७७, ४८२	राग विलावल	५१०—५१३
मनोहर छन्द ,,	„	विहाग ,, ४५४, ४६५, ४७६, ४७८	„	विलावल-चर्चरी	५१३
इन्द्रवज्र छन्द ,,	„	ठुमरी ,,	„	राग सूही	५२४
सिन्धु ,,	४३३	देश ,,	४५६	राग विलावल	५२४—५३२
कान्हारा चौताल	४३४	खभावती ,,	„	छन्द	५२८—३२
ज्ञानीकी अङ्ग—	४३५	„ यत्	४६०	अघासुरका वध	५३२
मेघ चौताल	„	मारु तिताला	४६१	ब्रजमोहनलीला	„
कान्हड़ा ,,	„	परज ,, ४६१, ४६२, ४७५, ४७८	„	कालीयदमनलीला	५३६
भिँ भिट ,,	४३६	कलिङ्ग ,, ४६२, ४६५, ४६८, ४७३,	४७६, ४८१	चीर वा वस्त्रहरण लीला	५४०
नट मङ्गार ,,	„			राग सूही	५४५
सवेया चौताल	४३८			राग विलावल	५४६

नित्यकीर्तनका परिशिष्ट

राग विलावल	५१०—५१३
विलावल-चर्चरी	५१३
राग सूही	५२४
राग विलावल	५२४—५३२
छन्द	५२८—३२
अघासुरका वध	५३२
ब्रजमोहनलीला	„
कालीयदमनलीला	५३६
चीर वा वस्त्रहरण लीला	५४०
राग सूही	५४५
राग विलावल	५४६

रागकल्पद्रुमः

द्वितीयः काण्डः

श्रीकृष्णाय नमः ॥

अथ खम्बावती-ध्यानम् ।

(संगीतदर्पणं २।५४) .

खम्बावती स्यात् सुखदा रसज्ञा

सौन्दर्य-लावण्य-विभूषिताङ्गी ।

गानप्रिया कौकिलनादतुल्या

प्रियम्बदा कौशिक-रागिणीयम् ॥

खम्बावती सरगम—ताल साठ

ध ध नि नि धा नि सा सा नि ध प म म म ध म
ध नि सा सा नि ध प म ग रे सा सा रे ग म प ध
नि सा सा नि ध प म ग रे सा ।
धा नि नि ध नि नि ध नि सा ग रे सा म ग रे सा
सा नि ध प म ग रे सा सा नि सा नि ध प ध प
म ग रे सा म ग रे सा ॥
प्रथम सप्त सुर ब्रह्मनाद उच्चारो आहृद अनहृद त्रद
श्लोक चराचर सुर नर मुनि गुनी गन्धर्व्व आद नाद ।
सा नि नि सा ध नि सा ग रे सा म ग रे सा सा नि सा
नि ध नि ध नि ध प ध प ध प म प म प म ग
म ग म ग रे ग रे ग रे सा सा रे ग म प ध नि सा
सा नि ध प म ग रे सा ॥

खम्बावती—चीताला

एरी तू अङ्ग अङ्ग रङ्ग रानी अतही सयानी री तू

पिय मन मानी री तू ।

सोलह कला समानी बोलत अमृत वानी तेरो मुख देखें

चन्द जोत हू लजानो री तू ॥

कटि केहर कदली जङ्ग नासका पर कोर वारों

श्रीफल उरोजनकी छवि आनी री तू ।

तानसेन कहे प्रभु दोज चिरञ्जीवी रहो तेरो नेह रहे

जालों गङ्ग जमुना पानी री तू ॥

जोवनके जोर तोर कैसे समभाय राखूं मेरो

कह्यो मान प्यारी आज तेरो दावरी ।

तन मन धन नोछावर करहं बोल गई रैन

तासों छूट गयो चावरी ॥

लाल मनावत तू नहीं मानत उठरी गंवार नार

घने समभावरी ।

तानसेन कहे प्रभु से तजो मान हातसे गंवांय

साल फेर पछतावरी ॥

वंशी धुन सुन मभार बाजत श्रोत्रन्दावन

रङ्ग घुमड़ रह्यो सघन गरजत बादर विमान ।

रहस सरस वरपत गोपी जिम टामन चमकत
 नैना रतनारे पर भोंह सोहै धनुष वान ॥
 चंवर चार चौकुने कंचन वमन विराजत है
 प्यारी और प्यारि दोउ कृटे छवकी छटान ।
 कुञ्जन श्रीविहारी जुगन विहरत मुख मूदत खोलत
 जेसे वरपा रितमें निकमत श्री छिपत भान ॥

मन्दिर मणि टोपक काया मणि जोव
 रजनी मणि चन्द टिन मणि है जु भान ।
 फूल मणि पङ्कज वृक्ष मणि कल्पवृक्ष
 विद्या मणि भोज विक्रम जनन मणि जान ॥
 वेदन मणि सामवेद राजन मणि रामराज
 आनन्द मणि सुखनिधान ।
 सरिता मणि गङ्गा वार मणि हनुमान
 गुणियन मणि तानसेन गुरुन मणि ज्ञान ॥

मृनो भवन उन विन कैसे रहो जाय निपट कारी
 वरपा रित आके अब विरहण पर मदन दूनी ।
 रजनी अधियारी भारी कारी कारी कजरारी
 भिक्षी भनक भारी टादुर सोर सोर मर ममान जनी ॥
 जुगनू जमाति जोर चपला चमके तैसे
 पवन भकभोग देत होत दुख दूनी ।
 चिन्तामन ब्रजचन्द नन्दनन्दन आनन्दकन्द
 कंधी मरे नयन ए चकोर होहिं निरखि मुखचन्द पूनी ॥

आवत देखि हे रो माई सुन्दर मोहनलाल ।
 जैसो बनी मोन केमरो पाग तैसिय बनी उर माल ॥

अरन दल मलनकी सांचो अरदल प्रबल वर भूम पर ।
 ऐसे कतपति भुअपति हलनको
 तोरे गढ़ सब और घर घर ॥

सङ्गत अनाघात देशो मारग लिये हो ए राग ।
 जय जय गुनी ते ते कठन जानत है यह खेलौना नाग ॥

सा ग म प ध नि सा सा नि ध प म ग म प
 नि ध नि प म ग म प ध म ग रे सा ।
 म प ध नि नि सा नि सा ग रे सा द्विप्सा नि
 ध प सा नि ध प म ग रे सा ॥

१०

रङ्ग लाल रूप लाल अधर अधिक लाल
 द्रगनके डोरे लाल कोरे लाल भलके ।
 कर लाल चुरी लाल सीसफूल द्रुमे लाल
 एती लाली बिच प्यारी लाल पलके ॥
 असन बसन लाल दसन चमक लाल
 लाल ही ललना पगन परत लाल मुगनके ।
 माला लाल दुलरो को रेशम लाल
 सदारङ्ग प्यारे लाल लाल हीमें ललके ॥

११

समभ समभ आनी प्राण जात प्यारे मोहन विन ।
 बहोर न यह रङ्ग बहोर न यह रूप
 बहोर न रहे आली यह दिन ॥
 अञ्जुरन जल घटत किन किन तेरे रा
 मान बढ़े चोगन ।
 तानसेनके प्रभु तुम बहु नायक
 मान न कीने आली किन किन ॥

१२

लाल अब कब करोगी मरे आंगनमें तुम फेरा ।
 तर गईं अंखियां जगमग जोहत रैन
 गिनत नित होत सवेरा ॥

मृनो भवन मोहे रंच न भावै
 आन सतावै विरह ताप ने घेरा ।
 नन्दलालके लाडुले आज मया कोजि सवेरा ॥

१३

कर पकृताय आली रो मान कर पकृताय रही ।
 हमसों अवध बढ़ अनत विरम रहे
 जैती भद्र सहे लही ॥

१४

ध ध नि ध नि सा सा नि ध प म ग म म ध म ध नि
सा सा नि ध प म ग रे सा सा नि ध प म ग रे सा रे सा ।
नि नि ध नि ध नि सा सा नि ध प म ग रे सा
म ग रे सा सा नि ध प म ग रे सा सा नि ध प म
ग रे सा रे सा ॥

प्रथम तार सुर ओप विद्या किया दोउ बिन भो
अम्बर दोउ एक रस बन काम भयो ।
सा नि नि सा नि नि ध सा सा नि सा सा नि ध प ध प
म ग रे सा सा नि सा नि ध प म ग रे सा ॥

१५

आज तो मखी रो देखे रामचन्द्र कृत्रधारी
गजकी मवारी किए चले जात बाटमें ।
केते असवार मोहे केते मोहे बरकनदाजे
केते नकीब बोले आनन्दके ठाटमें ॥

१६

भौनी भंगली बीच भौनो अङ्ग भलकत
भुमरि भुमरि भुकि ज्यों ज्यों भूले पलना ।
घंघरू घमत बन घंघराके घोर घने
घुघुरारें घोर मानो घनी बार चलना ॥
आलम रदाल जुग लोचन विशाल लोल
ऐसे नन्दलाल विनु देखे क्योंहु कलना ।
फेरि फेरि फेरि करि गोद लै लै घेरि घेरि
टेरि टेरि गावै गुण गोकुलकी ललना ॥

खम्बावती ध्य.ाल—तिताना

अब कोड़े जाइयो रे मोता सुरजनुवा मोरे के
मइकी वेग खबरियां लइयो याह सन्देशवा
उन सन कहियो ।
वेग खबर ले आव पतिंगवा उन विन मइ कीं
विरह सतावै बार बार नित जइयो ॥

२

तू मेरे डेरे पाइयो रे सांवर सलोना प्यारे
वेग दरस मोही देखाइयो ।

विन देखे मोहे चैन न आवै तनकी तपन बुझाइयो ॥
घरो पल छिन विन देखे मोहे ककु न सुहावै
वंशी तान सुनाइयो ।
कृष्णानन्द आनन्द करो उर सुख सम्पत
देहो मन चाइयो ॥

३

आगाने पधारी जो महाराज ओ जो म्हारा राज बेमाने
पधारी जो महाराज ।
म्हें तो थारो दासो वारो थें म्हारा सायबां थारें
अटक्यो छे म्हारो काज ॥

४

कोठे रित मानी महाराज कोठे साहबां
रैन विहानी म्हारा राज ।
लटपटी पागके अटपट पेचां
चाल चले छे मतवारी म्हारा राज ॥

५

राज हो लोभी आवणा थें म्हारा सिरताज राज ।
फूलोदी सेज वारो उमगसे विछावां थं सां अटकीं छे
म्हारो काज ॥

६

जाए दासी जवा दे मारुड़ासे कौज्यों में बो आवां छां ।
मैं तो थारो दासो वारो थें म्हारा साहबां इतनो अरज
म्हांकी मानां छां ॥

७

सुखसें रहियो मेरो जान हरियाले बने ।
सकर बाटवारी पोर मनाजं तानू
मौलादी अमान हरि० ॥

८

प्यारे विन जो मेरो तरसे कारो रैन उरावनी लागे
धरकत मोरी छतियां ।
जहीं आयो मेरो मदको मातो कैसे कटे दिन रतियां ॥

९

अमलारो मातो आयो छे जो लाडो थारें वारने ।
रैण चौमासी मांभली रात
भोका खातो आयो थारें कारने ॥

१०

महलां पधारो म्हांगे राज राग सूने छे हो खम्बाची ।
थे अदारङ्ग अरज करे छे मतवारो राज अरज सांची ॥

११

वीरा नागरवेल री अपने बालमजूके कारने कही
पान जेही पातलारि कही के सूई जेहा रङ्ग ।
केटल जेही कही जङ्ग है भुक भुक लागि अङ्ग ॥

१२

नेनां दी बरछी लाई बे आख्या सुन तो भला तेज
नजरांवाला ।
सान धरी काजर दोउ मग दिल नाल बे
मितम किया ते तो यार मिपाई बे० ॥

१३

नेणांटी मांग चलाई बे हो जटी नेणांटी सांग चलाई ।
सांग धरी काजर दो उमंगसे दृशकटी लाग लगाई ॥

१४

कांई गुनडा समभासी म्हांगे राज ।
बालो रङ्ग यं हो करी छे सुनियो री म्हांगे ए रो सखी ।

१५

जादूगर बे जादूकी जानि मंडे नैन आप हो सेहर दे ।
एक आन बिच उमंग दिल मियाणनू मायल कर दे ॥

१६

म्हेकी जाणां नेणांटी तकसीर भला बेव
रांभणनू मानू मायल काता ।
उमंग दिलटी जाण दे नाहीं लोकां आंक दे फिर दे
कमली हुडयाहोर भला० ॥

१७

मानू वूहे खड़ा भिड़के दा बे दरदो बे परवाहियां दे
नाल रब ना महे जो मैं सहंदा ।
राति देहा उमंग दिल डरदा रहंदा आह
फकीरांदो क्यों लीदा ॥

१८

कांई रूस माणे बतलावो जी आवे राजीन्द्र मारू ।
उभी उभी थारी बातड़ीपै ओ सायबां चञ्चल
सेभड़िए रङ्ग लावोजी राजीन्द्र मारू ॥

१९

आवे सोणा मानू छटके न जा मैडा नेहा लगा ।
छिकतो गलां साड़ी माण लेवो ~~खम्बा~~
तेड़े कारण अतो जगणत जा ॥

२०

हो रबा बे मैं तो राजी जो तेड़ी मरजो ।
अरज गरज तुसी माल मुलक नहीं
करदो वरल पिया तेड़े महर नजरदी ॥

२१

कस कर भौंहे कमान प्रेमके वान चलावत हंसके ।
चञ्चल चपल टगन मोहे सेन चलावै बतियां कसके ॥

२२

याद मांडी क्यों भुलाई बे श्रीरंदि नाल बहाना तू
सुण तो नैणावाले मियां ।
जो कुछ तेरे दिलमें खूब समझे ते दाद मैंने
भर पाई बे० ॥

२३

तुज विन यार मैडा जो तरफे हो जो मछली विन नीर ।
बबरू आधीन हुण ते दड़ा लगदे विरहंते तीर ॥

२४

या जटीमें थो क्यों रुठानी तकसीर साड़ी की दोठानी ।
नाहकदो बदनामी श्रीरी सोणे दुनियांटी सबसी ठानी ॥

२५

एक गलांदि नाल पियारा मैं सबी गलां शिरते भेलियां ।
जो तान दृशकटी बहाना उमंग नाल बे मियां रब
करंगा हंड़ी सब भलियां बे मैं केही बदनामां
शिरते० ॥

२६

दम ब दम जोर जफा सहदा तानू की नफा बे ।
दुतांदा वेला दुश्मन पावे मग दिल श्रीर महबूब
बेवफा बे ॥

२७

हुणतो वसे खेड़े दिलवर मांड डा माड़े नेड़े ।
विच्छेदी राती न करो रब सांइयां भांदि
उमंग दिलदे भेड़े भेड़े ॥

२८

आयानी मैं नू माफ़ि बे माते माते नैण बेखावणनू ।
मेरी उसदी प्रीत लगी शोरी मियां
फकीर रब डाढ़ेदा पंजतन दा ह्योवी साया ॥

२९

भमके माते नैण ढोलनदी पलकां लाया नेह वो ।
तेज निजारे नाल जींद खस लीती
गुजियां कर कर सैण ढो० ॥

३०

नाहक जीन्द क्यों सतामो वो बेदरदां हथ बीच की
तैडे आमी ।
कबी तो आन मिलो चञ्चल साड़े नाल
हुण तैड़ा गम खामी ॥

३१

ए ह्यो मैं की जाणे नैणां दी तक़ीर बे ।
घायल कीतां असी लड् फिरजांदां
शोरी दिल लांदा तीर बे ॥

३२

क्यों भुक भुक विरहदे जानी यार मैं तो
मर चुकियां तैड़ा गम खांदी खांदी ।
शोरी दे मानूं टपेदी तांन भांदी आंदी जांदी ॥

३३

वसदा बे थारिं मैड़ा ऊंचे बेड़े मान् सांवलियां दा डेरा ।
ना ककु तेरा शोरी ना ककु मेरा की दमदा उलभेरा ॥

३४

तानू तो कदर दा न जान जिन्द दी तो एमें आन ।
रब कीता गुलजार हुणदा महबूब बे
उमंग दिलदे सुन सुन टपेदी तान ॥

३५

नैन कर तैडे चोरियां में लखियां जानी यार भला ।
इशकदी तैडे वेडे उमंगनू मेरा मियां
एक तो सोरी दूजे शिरते जोरियां जा० ॥

३६

आज इथे रहणा बे मियां आज इथे रहणा ।

आप छो दिल मिला नहीं मिलदे जांदे
शोरी फकीरांदी मान सदा मियां रहजांदे
इथे ह्येदे माते आ० ॥

३७

मोही बे मोही यार मैं तो मोही बे भला मोही बे
सानू अंखी मारदा ।
मुण्ड भालन तैड़ा मानू काम न होया
शोरी तूंतो ठग बाजारदा ॥

३८

मुख बेग्वलामी बे मियां घणे दिन बीते ।
दरदनु नित ध्यान तूंडा साड़ा बे आपो मिल जावे
सानू हां बे मुख बे ॥

३९

हमकों तो याही गलां तेरो प्यारी बे मियां ।
रमभांदे नाल सानू मायल कीता मुखडा तैड़ा सब
जगन भांदा असी अदापे तेरी वारी वारी बे० ॥

४०

जटी पनियां भरन न देन रमण रम
तैड़ी कलाई दुखेनी ।
घड़ा घड़ूला भरन चली शोक रङ्ग दिलडो बाड़ो
होदां जिन्दडा लटी प० ॥

४१

लाड़ला सेहरा वो रङ्ग लगामा ।
गूंध ला री मालन फूलां दा सेहरा
अच्छी बनी सें लागा नेहरा वो० ।

४२

राज सुण लीजो म्हांरा हिला नन्दजी रा
छो जी अलवेला ।
घणे दिनांमिं आएशो जो उभा तो रहो हो जी
थें तो बांकी रस छैला ॥

नींद न आवे मण अत अकुलाये मदन सतावे
मैं ह्यां जी अकेला ।

ब्रजनिध निपट नवेलाजी रसिया जावा न देशां
थाने राखोजी भेला ॥

४३

मैनु फन्द क्यो गया बे इगकदा जाल मरापा मुण्डके
न लीती मरो खबरां ।
मारा किगतीःततबीर नफरदो अजब सङ्ग दिल
पाया बे ॥

४४

तेनु हुसनेदा भूमका देखला जा तेनु हुसनेदो
कसम माहिडा ।
तन मन अन्दर भाय इगकदा साला चमका चमका
भूमक देखला जा हुसनेदा ॥

४५

घोलमं जादियां लाखां परिया तेडे परादे मुखडेदा
बहोन यांपर मार मरियां ।
उरियां न सकदो हुसन देखण नू परं परं परं
हापे परा बांध खरियां ॥

४६

कांडे कर से मतवारा राज सदारङ्ग कांडे करसे
रुनिया भोरो हो मखारा ।
गरबां चाक चू टिन जो दमसे गर दमसे आयद
वसादा गाफिलिम् गरमस्त मो आयद ॥

४७

मै तो भूलियां जानो यार बे सरियां मै तरियां मियां ।
जो तुं करम करी रब लाब्बा कोसो वहाने तूं
मिलियां जनियां ॥

४८

मोर्णा मचबूदांदो गलियां लगटियां तरियां
मियां बे मोर्णा० ।
देखणनू सब जटियां चलियां मिलियां रलियां
गलियां घुलियां भलियां मियां मोर्णा० ॥

४९

केसी बजाई धंशो कान्ह मोह लिया मन मोरा रे ।
तनक भनक सुन मुरलीकी धुन
निकस जाय प्रान मोरार ॥

५०

जालम तरियां बे मै तो तरियां रुदर नो जानो
तुसो मेरियां ।
नाजक यार दिलवर दे वर दे रहंदे बक्स गुणा बन्दी
चेरियां मै तो० ॥

५१

सोणा तूं तो मेडे नाल नाहीं बोलदा
अमी केहोनकसोर पाई है अमाडो गाढी
दिलदो गुंडो नहीं खोलदा ।
विशुदास दो गुणा माफकर तैडडे चरण
मेंडा मन डोलदा ॥

५२

तेरो चितवनन मुक्त मारा रे एक नजर
नाल आसक दिल ।
पीत करी तो विमारन जानो अपने आमक
गोकारङ्गदो कोरे घाट मोहिक्कूं उतारा रे ॥

५३

हो जो हो जो हो केसरिया म्हांरा मारुजी
ए मै ना बोलांगो थांनो टहल करी रहो
सोतनियाके रुडे जो ।
अङ्गना बहारं मेज संवारं फुलवन मेज बनाऊं
गोकारङ्ग थारे मङ्ग मै तो पोऊं कृ दारुडी ॥

५४

पोहरिये म्हांरे रुडी छे नवाङ्गो मेन ।
घर कांछा मार्याडा ले सङ्ग वेगा आज्यो जी कैल ॥

५५

कागट आयो है पन्ना मारुजीरो आज ।
विचडी बनावडां चडिया जा विचवाडारो लाज ॥

५६

थं तो जीवो म्हांरा राज जब लग
गङ्गा जमुना जलपानी ।
राज करंता म्हें मुख्या म्हांरा राज श्री जी
मै तो थारो जोवां बाटडी हो राज ।

५७

बोल सुनाटियां सानू भांदि भांदि ।
सहर पनू च आलम बसदा क्यों शीरो
अपना मन सरमांदि भांदि ॥

५८

जिसेदा मन लगे सोई जाणे बे वेकदरांदो बला जाणे ।
इशकां दे रमभा नाल टिलांदि महरम्
हो सोई पहवाणे बे० ॥

५९

ओ मेरो जान जादू कोता भला इन
सांवलियांदि दोउ नैन ।
मोर मुकुट पोताम्बर राजत वंसो बजाय मन
लाता भला० ॥

६०

आयानो मैड़ा प्यारे जटियांदि काल मानू कड़के ।
कीसी तरे समभाऊं शीरोनू आ मिनो लड़ भड़के ॥

६१

मियां तांड़े हदड़े जांदियांनो सदके कीतो
कुरवान मैड़ा माहिड़ा ।

शीरो अटका भटका लटका दे नाल
केहा मैड़ा खेड़ा चाहिड़ा ॥

६२

जानो यार बे सोणा बे खेदिया बिरहंदो सांग लहरा
ले लै लै लै जानो या० ।

हो न तो सोरी कड़दे मर चुका सहरां कर दे ॥

६३

जिन्द सांड़ी रूंधो बे सोणा कोई आण मिलावो ।
इशकदे अर मैडेनु आग लगाणाबे जबसे पड़ी
साड़ी रूसोबे ॥

६४

तू मैड़ा दिल जान बे सांवल्यार ।
घरी घरी पल छिन विन देखे कलन परत
मैनु रटत रहत मदन दहत नीर नैननते रङ्ग रस
कर निडर वीन सिखाई ऐसी तान बे ॥

६५

काची कली जिन तोरो मोरे प्यारे डार सुरंगो ।
पाकन दे सांवरो हाथ जिन लावो
जब फिर मौज खुलेगो ॥

६६

ले कर जी फिर आणा समभाणा ।
बैठ रहो मन मार न जाणा जो गुजरी मोई
खूब मियांबे ॥

६७

अब घर कैसे आज राज जाओ महाराज
जिय मोरा है बकरार ।
कवकी मैं ऊभी सायवां अरज करां छां बे
अबके उतार सवार ।

६८

जींदुड़ी साड़ी क्यों कर यार प्याग तूतो हांगंदे
नाल मिलटा नो माणो जी० ।
लगव बटनामो तैड़े कारण ली तो दिन जानो माणे
क्यों कर यजी० ॥

६९

भूमके चूड़ाजो थांग मृगा नैणीरो जीवन सुन्दर
बन्धों मन मोहे राजोन्द राजुड़ा ।
सुन्दर मुख तरे अबतै निरखहं तवतै कांई जाणे
रहत उदाम मारुड़ा ॥

७०

साईं रब जानटा बे मियां टिलांदो फिरयाद
सोणा बे तू की जाणे कमनां नटाणा मियां ।
तांड़े दिलां बिच कामिन रहंदो को पया बिच
हमलां नटाण मियां सांई ॥

७१

आली जांपना जो म्हाने प्याग लागो आप ।
रङ्ग भीना राजोन्द्र राजे सुरकर प्रवीन प्रताप ॥

७२

भांभरी भनके मीरो रे ।
कैसे कर आजं पिया तैरो सेज मोरो रे ॥

७३

घड़ी वेग बजाव रे घड़ियाले आज पियाके
मिलनकी वारी ।
शुभ सायत सौं पियासों मिलोगी बार बार
गई में वारी ॥

७४

कागद आयो छे जी मारु जीरो आज ।
बहोत दिनन पाके कागज आयो हंस हंस
गरवीं लगायो छे ॥

७५

बिरमरहो जी कौन देश देश हो बालम राज उजली ।
सुरझो मैण गुड़ी रङ्ग लाल छे जी छैला
राजी रहणा इशकदी बे छिवारो ना चट थर थर
कापे म्हांरा जी उजली ॥

७६

कतक दूर भला वो म्हांडे माहिड़ा गाढो राज
माथिड़ा लगकरिया ।
पलङ्ग बैठो मोजां मार मुजरा लीजो म्हांरा
नाथिड़ा ल० ॥

७७

सुणदा विनाही मंडा दिल दां हवालनी सइयो बे
में किसनु जाय सुनावां ।
कुछ न पृछो अए अजीजो यार जानी की तरां
हर बात मंडी सुनके की जाता है पानीकी तरां ॥

७८

नैणादे निजार नाल दिल लीता मंडा अपना
बस कीताबे ।

फन्दियांमिं तांडे दिल तो ना आदम केहा पयानी
मंडा इशकदा जाल दिल० ॥

७९

मानू भांटे नैन सिपाइया दे अंखियादे बीच सोहै ।
इशकदी डोर नैन सिपाइया दे खून करेदे ॥

८०

लोभी आजरे धनवारी जीरे मंमंला सवाणा
घोलतै रातरे धन० ।
माशुक रे कई कपट की नेहकी बातेंहो
मारुराज धेई एई ॥

८१

हो राज कमरिया राज गहरी लगा जो राज
घर घर चम्पा फूली मिलियारे इशकदी फुलरी
सेज बिछाजो ॥
आप सोवे और सुन्दरी सोलावे मुझे राज
वेग मगाजो ॥

८२

अनी वेषो सइयो फन्दड़ा तकेदी दिल वयारद ।
चञ्चल अचपल सुन्दर नार नौके रङ्ग सो जा कहियो ॥

८३

मिलनेदा तैड़ा मैनु चाङ्ग बे कि करां तुसी जाणदा
बी नाहीं ।
गरल गणन जिय तरसेंदा रब करे तुसी वेग मुड़ आमी
साड़ी गलां तुसी माणदा बी नाहीं ॥

८४

वीरो नागर बेनरो अपने बालमजूके कारनेका
पांनां जेही पातलीजो काई केसरजेहो रङ्ग ।
चम्पासा कोमल वहीं भुकभुक लागे अङ्ग ॥

८५

आवो सजण गर लाग मिलां व्रजमोहनकी
जुदाइयां बे ।

वल्लिहारियां तैनु सब कोई चाहे रूप निमाणां
मंडी अरजतुज ताइयां बे ॥

८६

द्रुतीम् तनन दीम् तन दिरना
तन दिरना दिरना आहे दोस्त नाद्र दिर दानी
तुम दिर दिर दानी तदरे दानी तार दांनो दोस्त
मियाने आशुकी महबूब माशुक करम जो करो
मनका तवारह मुखवसेस्त ॥

८७

कल न परेदियुं बे तुज विन दिलबर मेरे ।
बिक्कोहान दुख सालदानी सदयो वेषण दे मैंनू
चाव घणरे ॥

८८

जादुड़ा कीता मन लाता टोलणदे निजरि नाल केहा ।
दुतां बेड़ा दुशमन मापे जर प्याला अमा पोतांढो ॥

८९

गुमाना घुमाई जांदियां बे सोणा जीन्दा रहो बे
बाल सनेहो ।

चन्द जेहा मुखड़ा सान भान्दा बे सोणा जीन्दा रहियो
गबरू घनेहो ॥

९०

जानी यार बे मिया मैना कड़के न जामा ।
आती रातीत काला बेला भूलानू राह बतासा ॥

९१

मारुड़ा म्हांरा हेला न बताजा पना मारुड़ा ।
म्हांरे री आंगन चम्पेदो बूटिला सात सखा मिल
कोटा लाड़ान बताजा पना मारुड़ा ॥

९२

घर आवा सजन कटा कर फेरा ।
घाल घुमाइयां सदके कांता हुण तेर मिलन नू जी
चाहे मेरा ॥
मुखडावो तेरा वारा अजब बहारांदा वल वल जांदियां
मैंडा प्यारा घाल घुमाई सदके कीती कीतो
लख लख बेरा ॥

९३

जाहे लागे चोट सोई जाणे ।
इशक दा लहरां रब्बा हरगिज किसी कूं न होवे
ज्ञानरङ्ग दीठ लगी जाणे ॥

९४

दिल तो तेरे हाथ बिक गया ।
कृष्णा तैडी पाक असनाइयां बे
ज्ञान रङ्ग साडा नेह नित नया ॥

९५

मैं तक आइयां बे रांभा जान बे साडडी गली कर
फेरा साड़ा तं दरद पफंचाण बे ।
राजा तूं तखत हजारों दा बे लख लख लेदो
बलाइयां बे ॥

९६

गाढा मारू हां बे म्हांरा गाढा मारू आया बे ।
चार महाने थाने चलन न देशां बहुत दिनन पाछे
आया जो म्हांरा राजा बे मारू हां बे ॥

९७

रसिया ना बोलूं थां से लगा जी म्हांरा नेह रसिया
ना बोलो कोहीं ॥

बेसरदा मीतो अनविधो छे वा राखो नथड़े बोच ।
सांई हमारा एक पल राखे मैं राखूं पल बीच ॥

९८

खेड़ांदे नाल नहीं जांदियानो मैं जिन्द कीतो
कुरबानियां ।
हुसणू सोणा आनके बे खामी भली लगदा तैंडो
आनो मैं ॥

९९

साड़ी बातड़ी सुणजामो सोणा इशक लगा तो
निभावी बे ।
तुज्जेहा मानू होर न दीसदा साड़ी जीन्द आणके
जिवावी बे ॥

१००

उरभ रहे री दीउ नैन नथपर ।
चञ्चल अचपल चतुर छवोली तन मन वारुं सुन्दर
छवगत पर ॥

१०१

किया रे वंशो ने टोना रे ।
तेरी वंशीने मेरा मन हर लोनो तोरुंगो पात
बनाजंगो दोना रे ॥

१०२

बनरा अनमोला ढोला र चाव घेरा के ।
नोको घरोमि बना व्याहन आया गल विच पहर
सुग्रा चोला रे० ॥

१०३

कैला जोर कांडे बे जटियांटा रङ्ग माणा ।
इस नगरी विच बे जालम बसदा के
विच मन्नुवांदा थाणा ॥

१०४

फन्दड़ा तर्फदियां टिलवर यारदा आणो वेपो मइयो ।
विन टाठे चन नरीं थाए नोको रङ्गसां जाय कहियो

१०५

का करां बे मैडे केलियां सं का सन कोता ।
मरुंटा रङ्ग बे चार दिगांटा वो पियां आसकदा
रङ्ग तें लोता ॥

१०६

कहीं टेरो र मोहन बांमरो ।
बांमरो बजाय कर मन हर लानो
उपज करत और बांमरो ॥

१०७

मै तो तैनु चदियां चहदियां यार व वलाय लेदियां ।
सुखड़ा तांडा वारा बे अजव तराटां सुभरङ्ग कहरडे
बांसें मै महरदियां ॥

१०८

मेरा बे मनमाहन प्यारा बे वंशो वजादा भांदा ।
मुरलीदा धुन सन भई हे कमला
साडा जिय ललचांदा ॥

१०९

वंशो बाजि सन नननन ।
अवण सुनत सुर नर मुनि गुनी जन
मोह लिए तान तन नननन ॥

११०

पिया विन नैनां नींद न आवे ।
सगरी रैन तरफत बीत भार भए जिय घबरावे ॥

१११

अमी तैनु दवाइयां दं दे बे मियां मैडे जिन्द लग
तैडे नाल ।
पंजतन पाकदा साया तैनु बे दोस्त शाद
तैडे दुगमन पैमाल ॥

११२

तांडे कुरवान साणा मैडे गल सुण जामो ।
बन्दी हुइयां तैडे वेणादो साणा देखणी
माणो गल लग जामो ॥

११३

विरम रहि जो कीन देग देश र बालम राज ।
जवके गए अजहं नहीं आए कोठे विरमा को महाराज ॥

११४

रब्बा मैडा माहिडानू आनके मिनामा बे रब्बा ।
पण्डित पूछे दो वारो बे सगुण सनादो बे
सांचो आग्या दर कद आमो बे० ॥

११५

मोही चोर वालियां बे मैनु यार
साणे न देदा मेरा मोणा मैनु यार ।
जंचेनी थल कूके दियां बे रांभण मिला मैनु प्यार ॥

११६

नन्ददे गुमानो खारः बात न माणी बे ।
ओरांटे नाल यू हंसदानो मिलदा बे
हमसां करत हो मयाणी बे ॥

११७

सालू वालनि मन सोर्पो र पट्टी पावां मांग सवारां
अंखियन काजल पावां ।
म्हारा राज रमक भूमक थारि घंघटडे घर घालो रे० ॥

११८

हो राज गाढ़ा मारू जो मैं नहीं आवना
हो हो हो हो हो हो जो ।
जंचेनी मैडी बे दूरि देण्यां बे रङ्गरसनू बतलाजो
तू म्हारे घर आइला सायवां हो हो हो हो हो हो जो ॥

११९

मोकों नींद न आखि रे गिनत तरैयां ।
 धितत सारी रजनी विहानो सुन मेरी सजनी रे
 आवन आवन हमसों कहे गए निश बोतो आए भोरैयां ॥

१२०

गिनत गिनत तारे रैन विहानो रे ।
 सज सूतो वारो नींद न आवे वो पिया मोरी
 पोर न जानो रे ॥

१२१

ते मैथे सुध लोजा जी वा जानिवाले ।
 इतनी अरज मैथो मनरङ्ग मान ले
 जो चाहा सुख दीजो जी० ॥

१२२

कहा जादुडा काता वा जाणेवाले ।
 आप न आवे वारी ना निख भेजे मियां
 इशक लगाय जोन्द लाता वा० ॥

१२३

वो पंको दानियां दिलवर मैडा वो ।
 जो तूं चला वा नी नाल चलेदियां आसरा छे
 रव सब तंडा वो ॥

१२४

मारुडा थाने आवष दिशां ।
 पायन मोरी रुगभुण बाजे साम ननद घर जागां ॥

१२५

गुडयां बालम है परदेश ।
 हभरे बालमकी खबर न पाई
 करहुं जोगनियांको भेष ॥

१२६

निदियांके माते जाग रे ।
 सगरी रैन मोहि तलफत बोतो
 भोर भए गर लाग रे ॥

१२७

मैं तो मोही बे मैडा माहिडा मैं ।
 तुज जेहा मानू होर न भावदा बे
 जित देखुं तित तूं हो बे० ॥

१२८

नेणांदि गुलाम लगे सगे पगे ।
 वरज रहो वरजो नहीं माने रूप सलोने जगे ॥

१२९

दिलभर सोणा तुमो मैडरे आवणा ।
 अदारङ्ग तुमो महदो लावणा पोर पोर
 छलडे रचावणा ॥

१३०

नजर भरोखा मुजरा लोजो ।
 कान्हा क्यो नाराज कहीं गुण माना ॥

१३१

नेणांदि भिजार नाल बे दिल लीता सांडुडे
 अपने वस कीता बे ।
 आन प्रया तांडे दिल ते नादम को प्रया बे
 तांडे इशकांदि जाल बे० ॥

१३२

रखो माडा लाज बे क्यां न करे फरियाद जान बे ।
 या रब्बा भिल बे देवो सुराद बे प्यरा मिले मैं
 आज बे ॥

१३३

बरन क्लिन विरमायो राज ।
 घोडो लोज कुन्दनार चावुक है गुलजार
 पानका डिब्बा सारे हाथ में रे
 मृगा नैणीका टोला साथ ॥

१३४

तांडो बानियां बे मियां भूम रहियां सानुडे बे
 चन्द कृपावण मियां ।
 यारों नूने जतावण मियां अंखिया रङ्ग खिना लरियां ॥

१३५

साजन मोरा अत ही रङ्गाला देखन को सब
 आईं सखियां ।
 हमसों अवध बंद अनत विरम रहे जियकी
 करत है अनसन बतियां ॥

खम्बावती—चक्रताल

मनमोहनके पास न जा न जा न जा ।
हां जो कहीं तो मां भानत नाहीं लजा लजा लजा ॥

खम्बावती - तिताला

दिलवर यार बे मियां मैनु कडके न जामो ।
आधी रातीति काला वेला भुललानू राह बतलामो ॥

कहा जादुडा कीता बे गोरिण जटियन ।
ए परी तेरो नाहीम राज चो आरस्तन
नई हरके आईना बटस्ते तो देहद दुगमन ॥

कल न पंडटियां बे तुज विन दिलवर मंग ।
विकुहंदा दुख मानदाना मइयो विपणदे
मैनु चाव घनरे ॥

ऊभी रे रङ्ग माण लाडो बे रङ्ग माण ।
केसरिया बणा छे निपट निदान वो उभा
बांकांड घोडो थारो बांकांड जोडा मूड
दर मयज करण ॥

अजी हां जी बलमा कांड जाणे ए महराज ।
राजदुलार म्हांगी बात सण लोजो मायबां रे
राज कांडे सण मासो रुस रहे के ॥

यलल ली यलुम यलुम यल लूम ।
तर लूम तर लूम तर लल लूम उदन तूम तनन तूम
नित नारे दीम ॥

जान बख्शा तु मा आयदम ।
आखर नवा शोख आखर कार हमन जो हो
गवां बैठे तुम ॥

जीन्दुहा साडी क्यो कर यार तैडे नाल दीता धो यार ।
लख बदनामी तैडे कारण लीती
सुण मन मोहन यार ॥

मैनु जा यार कडके जिन्द कीता बे तांडे सदके ।
मुलका विगाणा शोरो लाग पराया
लाख तरे दिल खटके ॥

१०

गुजारा दम्दा बे आदम् दा किसी तर
होय होय जोयदा ।
आदम दा को मरदा शोरो तूं कदा डरदा बेचारा दम् ॥

खम्बावती—अष्टताल

माजन मोरा अत हो रङ्गोला देखन को सब आई
सखियां ।
हमसो अवध बट अनत बसीला जियको करत है
हमसो धनियां ॥

२

खरन मनि रचित अति दिव्य परजंक पर कनित
मज्जा बनी सुमन राजे ।
सन वस नैन श्रीगाम अरु जानको भूषण जटित
तापर विराजे ॥

अष्टसिद्धि नौनिद्धि दासिका धरि रही
दरत कर चौरम फूल चारि भ्राजे ।
यत्त गन्धर्व नारद महित सारदा करत कल गान
वर बाजे वीण विराजे ॥

कुसुम वरषत ब्रह्म रुद्र इन्द्रादि सुर
मुदित मनसा वसा दरस काजे ।
तडित धन मिलित सुख पाव जो परसपर
निरखियत कीटि रति काम लाजे ॥

विमल राका रजनी मनहु कर जोर रही गनत मणि
सुभाग्य निज भुरो आजि ।
दासलकन जुगलरूप धर ध्यान जो करत
कलि कलुष दुःख दूरि भाजे ॥

खम्बावती—चीताला

लटकि लटकि चलत मोहन आवै
भावै मन अधर सुरली मधुर मधुर बाजे ।

अवण कुण्डल चपल डोलनि मोर मुकुट चन्द्र कलनि
मन्द हंसनि जियुकी वसनि मोहनि मूरत राजे ॥
भौंह कुटिऊ कमल नैन अधर अरुण कोमल वैन
गजै मतङ्ग गवन तिलक भाल वर विराजे ।
लकनदास श्यामरूप नख सिख अङ्ग अङ्ग अनूप
रसिक भूप वदन निरखि कोट मदन लाजे ॥

२

लाडली लाल दोउ कुञ्ज भवनमें राजत रूप नवीने ।
मुकुट विराजत मोहन जूके पीताम्बर कटि श्रोप्यारो
छवि नख सिख भूषण कीनि ॥
लाल भाल कंसरि चन्दन का तिलक वन्थीं अति
सुमन गुहे सिर प्रिया छवीली कुङ्कुम बंदो दाने ।
लकनदास परस्पर ले आदर विलाकत मन्द मन्द
मुसकात लिए करत मनसिज कोटि कोटि छवि छीने ॥

खम्बावती—तिताना

भजु रे मनुवा कोशिलराज ।
सुन उपदेश मानु चित हित करि
नाहित बड़ीइ अकाज ।
वेद पुरान सन्तमुख सुनियत है प्रभु लाज जहाज ॥
लकनदास राम करुणामय दशरथ सुत महाराज ॥

३

विनै कुंवर दोउ फूले जमुनाके कूले ।
मन्दनन्दन वृषभानु नन्दिनी नवल वेस समतूले ॥
रङ्गरङ्गके सुमन सुहाए तिनपर मधुकर भूले ।
ख्याल खुशाल करत पिया प्यारो भरे नेहरस मूले ॥

४

प्यारी पियाको मनावै पइयां पर पर विनती सुनावै ।
हा हा करत निहारत नैनन सैनन चाह लुभावै ॥
कोई लीन्हा पट पीताम्बर खैच

कोइ कर पकर रिभावै ।

कोइ गल बहियां डार नवेली गिरिधर लाड लडावै ॥
ख्याल खुशाल करत ब्रजवनिता नव निकुञ्ज दरसावै ॥

५

निरतत रासमण्डलमें आली
श्रीराधे पिया सङ्ग वनमाली ।
कुञ्ज निकुञ्ज सुहावनी सोभा
हरो भरो तर भुक रहो डालो ॥
चितवत लनित चखन छवि ब्रजका
फूले रङ्गरङ्ग सुमन विशाली ।
ख्याल खुशाल करत जसुदासुत
निरख रसिक जन करत निहाली ॥

६

लाई अबोर गुलाल बनाके हारो खिले मृदु मुसिकाके ।
ब्रजका मखा सब बन बन आई चावा चन्दन लिपटाके ॥
नन्दकुमार सो फाग खेलत हारो
फगुवा भागे मनाके ।
ख्याल खुशाल प्रातके निशदिन ननोंसे नन मिलाके ॥

७

सावला मुर्भ रङ्गहीमें बारी
सुन रो सखा सङ्ग लागोइ डोरे ।
जित जाजं तित रसिया ठाड़ो
अबोर गुलाल मलत वरजोरे ॥
गारो गावत फगुआ मांगत नैनन वैन सैन मन चारे ।
ख्याल खुशाल करत है निशदिन
उमंग आवत है मोरी ओरे ॥

८

रङ्गमे रङ्गत है कन्हाई अरो गुइयां पिचकारो
चपल चलाई ।
चञ्चल चलन गुलाल कपोलन जीवन उमंग उमंगाई ॥
ख्याल खुशाल करत वम अपने वंसोकी टेर सुनाई ॥

खम्बावती—जन

रसमाते कुञ्जनमें खेलत हैं दाउ हारो रो ।
नन्दनन्दन वृषभानु नन्दिनी रङ्ग तरङ्ग वरजोरो रो ॥
अबोर मलत मुख अङ्ग लिपटावत
करत नैन चित चोरो रो ।

मृदु सुसक्यान क्लत मन चितवन
वमकर पिया वरजोरो री ॥
ख्याल खुगाल दिखाय लुभावत बांध प्रेमको डारो रो ॥

कैसे हारोके खिलार कन्हाई सारो बोगे रङ्ग
अब हीं रङ्गाई ।
अत उधमी अपार नन्दके बात मोठी मोठी सुनाई ॥
उमंगाई आवत कर पिचकारी
वरजोरो अबोर लगाई ।
छेल कंवर खिलवार बड़े हो ख्याल खुगाल लोभाई ॥

टुक केखला जा मैत जेधे मांडा साणा यार ।
तेहे देषण दे अमा रंटा मुप्ताक ला मियां
मौला बेष बे तांडी दोटार ॥

खम्बावती - तिताला

करुणामय प्रभु गुणनिधि टोनन दरन दुःख दारुणम् ।
सरनागत पालन प्रभु समरथ जग जग सन्त उवारणम् ॥
कमलनयन रघुनाथ लुपानिधि हा टपाल विनु
कारणम् ।
लकनदास सुखद कोमलचित राम प्रणत जन
तारणम् ॥

जधो तुम हो निकटक वामी ।
यह निरगुन ले उन हो मिखायो जे मुड़िया वसे कामी ॥
सुरलो धरन सकल विधि सुन्दर रूपमिन्नु गुणरामा ।
जोग बटोरे लीण फिरत है ब्रजलोगनको फांसो ॥
राजकुमार भले हम जानत घरमें कंसका दामा ।
सूरदास जटुकुल हिल जावत ब्रजमें होत है हांसो ॥

जधो या विध ब्रजमें रहियत ।
जागत जामन जुगमें जात हो जतनन निरवहियत ॥
सागर विरही अगम है जधो अब कैसे टहरैयत ।
तुमसां काज कौन कह वे को जल बूड़त तण गहियत ॥

एक बार दरसनको आसा ता कारण सब सहियत ।
अबको बार मिलो प्रभु सुरको
बहार नहीं कुछ कहियत ॥

जधो यह मन बिगर परे ।
मानत नहीं ज्ञान गोताका मृदु सुसक्यान अरे ॥
बांको भौह वक्र द्रग राचे याते अधिक खरे ।
सूध न होत खान पंछ जां पच पच वेद मरे ॥
जोग गभीर अन्धकूपनसां याते दूर डरे ।
सूरदास प्रभु ऐसे रहन दे श्याम वियोग भरे ॥

रुकमनी मोहे ब्रज बिसरत नाई ।
वा क्रीड़ा वा कैल जमुन तट सघन कदमको छांई ॥
गोपबधुनके भुजाकण्ठ धर विहरत कुञ्जन माई ।
और विनोद कहां लग वरनां सो मुख बरणि न जाई ॥
सुरभी सुत और नन्द जशीदा वह चित ते न टराई ।
जहपि सुखनिधान हारावति वा ब्रजकी शर नाई ॥
सूरदास सुन्दर घनमोहन समभ समभ पछताई ॥

वसा जो भंवरवा मोरो प्रीत कली ।
कृपा निवास श्रीअवधविहारो प्यारे अब रङ्गरली
बनी बात भली ॥

हमारो आंगुण चित न धरो ।
समदरसो है नाम तुमारा सोई पार करो ॥
एक लोहा पूजामें राखत एक घर वधिक परो ।
सा लोहा पारस नहीं जानत कञ्चन होत खरो ॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नोर भरो ।
जब मिलियां तब एकवरन है गङ्गा नाम परो ॥
तन माया जी ब्रह्म कहावत सूर सुमिल बिगरो ।
को इनको निरधार कोजिये को प्रण जात टरो ॥

जागवे पियारा मत नींद करे उठ सुमरण कर हरे हरे ।
माया नींद अत्रिया सोयो राम कहत भव पार परे ॥

लख चौरासी भटकत भटकत शरण सुमेरमें आय अरे ।
रागसागर प्रभुको रट ले नित कृष्ण कहे सब दुःख हरे ॥

जधो रे जधो माधे भाग ।

विलसत फिरत सकल ब्रज जुवतो चैरो चपल सुहाग ॥
आए जोगकी बेलि लगावत काटो प्रेमकी बाग ।
कुवज्या को पटरानो कोनो हम हीं देत वैराग ॥
निलज भरे खेलत है दोज वारामासी फाग ।
सूरदास प्रभु जख छाड़ कर चतुर चचौरत आग ॥

१०

कहियो रे जसुमतकी असोस ।

जहां रहो तुम नन्ददुलारे जीयो कीट वरोस ॥
सुरली दई दोहनी घन भर जधो धर लई सोस ।
ए माखन उन हीं सुरभोको जो पालो जगदीश ॥
जधो चलत सखा सुरि आए मिल दश पांच पचोस ।
अबको वार ब्रज फेरि वसावो सूरदासके ईस ॥

११

मैं हस्किो सुरली वन पाई ।

सुनि जशोवत सङ्ग छोड़ आपनो कुंवर जगाय
देन हीं आई ॥

इतनी सुजत विहंस उठवैठे अन्तरजामी कुंवर कन्हाई ।
सुरलीके सङ्ग हुनी मेरो पांचो दे राधे व्रषभान दुहाई ॥
हां चित लाय उहां नहीं टूटो चलहु ठोर सोइ देहु
देखाई ।

सूरदास प्रभु नागरी नार दीउ बुध एको चतुराई ॥

१२

नन्द घर लेले बधावा धाय आई ।

नारा नार उमाह भरे अङ्ग मुखकवि वरनि न जाई ॥
देख रही मनमोहन सोभा उर आनन्द प्रगटाई ।
ख्याल खुगाल विगाल प्रेमके जोवनका फल पाई ॥

१३

बजाई कान्ह सुरली जमुनाजीके तोर ।

भनक परे अवननमें सजनी मिटो विरहको पीर ॥
ख्याल खुगाल भरे अङ्ग अङ्गमें चले मिले बलवीर ॥

खम्बावती—जत

लगीयानो नैन निजारिदे नाल ।

देख आई नन्दराय लाडला सुनरो सखी मन

मगन जाल ॥

चेटक नेह बेन मेननमें करी रो प्रीत वस ख्याल

खुगाल ॥

प्रगटो महालकूमो आन ।

वरसाने में काय रहीं कव भवन मध व्रषभान ॥

सिद्ध सकल नौ निध तहां राजत ध्यान सकल

गुन खान ।

पावत फल जे निरखत आनन पूरन चन्द समान ॥

आवत घर घरसे नर नारी हिल मिल करत वखान ।

रसिक खुगाल विलाकत जावन आवल्लभके प्रान ॥

३

सुरली बजांदानी सङ्गो मन भांदा श्याम ।

ललित कदम तले ललित विभङ्गो रस भरो तान

सुनांदा श्या० ॥

चल सखी देख भेख नट नागर नैनन मृदु

मुसक्यांदा श्या० ।

ख्याल खुगाल दयाल सांवरा चितवन चित हो

चुरांदा श्या० ॥

४

श्याम रे सलाने प्यारे मेरे कने आ रे ।

तेरो सूरत पर मायन हृदयां नेनां सैन मिला रे ॥

ख्याल खुगाल उमाह भरे है वंसोको टेर सुना रे ॥

५

राममें निरतत विवसु कुमारे ।

राजत गौर श्याम तन सोभा नख सिख रूप अपारे ॥

नेन मैन सुख चाह बढावत गुन रित लखन लखारे ।

उरभ रहे सुरके नहीं कबहूँ प्रेम प्रीत लपटारे ॥

मृदु मुसकात दिथे गलबहियां ख्याल खुगाल निहारे ॥

६

ब्रजकी बाला फूल बीन बीन लाई ।
मख सिख र प अगाधा राधा सकल मध्य दरसाई ॥
सेवती गुलाब चमेली चम्पा विला नवेली दरसाई ।
निरखत रसिक रूगाल ख्याल नित वृन्दावन छव छाई ॥

खम्बावती—धीमा तिताला

कर ज्ञान याही धर ध्यान महादेव भोला मन भाता
रिद्ध सिद्ध सब सुखके दाता जी ।
बिच कासी कासी बसे अवनारी सकल सम्पत
सुख सङ्ग लाने मन्त अपनेको सुख दाने जी ॥
नो निध नो निधि भगत अरु सुकत प्राप्त गुण चार
वेद गाता के जैसा भुजग विख्याता जी ।
हरि धावो धावो महावर पायो करे निशदिन
प्रभु की सेवा जो होइ है प्रेम खोद देवा जी ॥
जिय प्रीत प्रीत बढ़े रस रीत बतावत भेद अगम
बाता दयानिध ख्याल राम राता जी ॥

७

त्रिपुरारी त्रिपुरारी मूरत प्यारी भवानी सङ्ग मोभा
धारी निहारी छव सिङ्गार अपारी ।
हित प्राणन प्राणन उरगत जान रसिक रसकन
निरमात दिष्ट कृपा कर मुसकाना जी ॥
अगङ्गा गङ्गा घाट सुहाए रङ्ग रङ्ग राजत लनित
घने सुहावन भावन ललत बनै जी ।
नरनारी नरनारी रूप संवारी मोद पल पलमें
सरसा जी हिरदे बीच जन खुशाल लाता जी
कर ज्ञान ॥

८

हमारे प्रभु पूरण ब्रह्म अवनारी वृन्दावन विनासी ।
महाराज तिहूँ लोका उजागर राधे कृष्ण नाम उपासी ॥
जाको जश गावत ब्रह्मादिक देवन देवन प्रकासी ।
नाम सच्चिदानन्द प्रगट जग अत उदार सुखरासी ॥
ख्याल खुशाल करत मन भावै महा रूपको रासी ॥

४

वल्लभ रसिक रसिक रसिकाई ।
कों कहै सकत अब ना मध कविकुल निगम चार
गत लखी न जाई ॥
विहरत वन निशदिन ललित मोहनी रूप बनाई ।
जेइ निरखत तेई बड़ भागी प्रेम लच्छुना जिन मत
पाई ॥
निरमल इन्द प्रगास आनन सुख अङ्गने बल रितु
मदन लजाई ।
रूप राम गुन खान माधुरी मृदु मुसकानि क्रान्ति
प्रगटाई ॥
वोह निरगुन सरगुन मोभा रही छाव त्रिभुवन भाई ।
यह रस ख्याल खुशाल विलोकत पाई भगत फल
गुरु सरनाई ॥

५

हठड़ी सेज सवारुं सहेली कब घर आवे म्हारा
सामी ।
सुनियारी म्हारी सखिय सहेली तन मन धन
जोबन वारी ॥

६

चने स्यां थांके साथ सुनो जी म्हंका ए सांवरा प्यारा ।
थांको म्हंको पीत नित नई छे म्हंका राज अलगा न
रहजो रहजो भेला नाथ सु० ॥

खम्बावती—तिताला

हां जी हो थें जीवो म्हंरो राज जब लग गङ्गा
जमुना पानी ।
थें विधना दीनो पद्मा साहेब लाड़ लड़ी ठकुरानी ॥

२

थांमो मन लागो जी म्हंरा राज कंवरजी ।
राव राजा राज सुहावै थें मानि प्यारा लागो सुन्दरजी ॥

३

बनरा अवधविहारी लख पाई ।
जनक भवनमें श्याम सलोना बनरीके गल बाई ॥

मुसकावत मन भावत मोहनी सोहनी सूरत लोभाई ।
रसिक खुशाल राजा महाराजा दूलह रूप सुहाई ॥

खम्बावती—जन्

बनरा दशरथ लाल निहारा ।
जनक भवनमें समैं व्याहके नख सिख रूप अपारा ॥
नवल ही मूरत सूरत मोहनी नवल बेस छव भारा ।
ख्याल खुशाल सकल बन आए देखा राजदुलारा ॥

२

विहारी सरद रात मन भावै ।
वृन्दावनमें चारहु दिशतें रितु गुन मन्द देखावै ॥
तैसेइ फूल खिले रंग रङ्गके द्रुम बेली छव छावै ।
पवन सुगन्ध उमग उर लावतु कुञ्ज निकुञ्ज सुहावै ॥
करत विहार पियारा ब्रजमध रागरागणी गावै ।
निरखत रसिक खुशाल ख्याल मुख सकल
विधी सुख पावै ॥

३

बेला चमेली हार गूंध लाई ।
मनमोहनके कारण सखियां जाही जुही मन भाई ॥
चम्पा यार बेल दाऊदी सेवती गुलाब सुहाई ।
दीना मरुवा केबड़ा सब्बो केतकी सुगन्ध महकाई ॥
कमलकली कमोद तुरी गुलेबास दरसाई ।
गेंदा कुञ्जकली अरसरफी जाफरी नलित वनमाई ॥
गुलाला गुलकलंगा हजारा इशकपेचा छव छाई ।
मोतिया मोलसिरी औ निवारी मालती अत सरसाई ॥
यह शोभा निरखत निशदिन प्रभु ख्याल खुशाल
लुभाई ॥

४

निजारि दियां लालियां बे सानू आन ।
उठियाना ख्याल खुशालांदी मिठिया मुखड़े सोने
दी मुसकान ॥

५

वस रहा रीभ श्याम पियारा बांके नैनां वारा ।
मनमोहन मनमांइ विराजे कबू न होवत न्यारा ॥

प्रेम प्रीत वस कर लियाने छेला प्राण हमारा ।
रसिक खुशाल भरे गुण सैनन रङ्ग रहा रङ्ग अपारा ॥

६

पिया नैणां लगे तेरे नाल बे ।
कुलकत भरे मदन रितु राते निरखत करत
निहाल बे ॥

रुकत न चपल चोप वस दिठियां रसिक ख्याल
खुशाल बे ॥

७

यार मँड़े नाल आमी बे वंशीवाले नेक वंशी
बजामी बे ।
कील तू साड़े इशक लगामी ख्याल खुशाल लुभामी बे ॥

८

औ रङ्गीली राधा पिया प्राणन प्यारो ।
मोहनी मूरत सोहनी सूरत चन्दवदन उजियारो ॥
करत विहार विपिन वृन्दावन निरखत सब सुखकारो ।
ख्याल खुशाल ध्यान मन निशदिन याहो प्राण
अधारी ॥

खम्बावती—धीमा वितानः

राधा मुख बे षलामो तो जिवामी वो ।
मनमथ गुन मन उमग उमग रहे अधर सुधा रस
पामो वो ॥
मान मनोहर आगर नागर याही बात मनभामो वो ।
ख्याल खुशाल विलास निहारो प्रेम प्रीत उरभामो वो ॥

९

दरशन देना प्राण पियारि नन्दलला मेरे नैननके तारे ।
मनमोहन मन रुकत न रोके यह चित चाह हमारे ॥
दीनानाथ दयाल सकल गुण नवकिशोर सुन्दर
सुकवारि ।

रसिक खुशाल मिलनकी आसा निशदिन सुमरन
ध्यान लगारि ॥

१०

वनरा प्यारा देखो नी देखो लाडला रङ्गीला ।
राजा जनक घर व्याहन आया नखसिख छैल छबोला ॥

सिर सोनिदा मोर विराजी बागा सुगन्ध विशाला ।
भूषण हार चमेली बेला कङ्कना हाथ सजोला ॥
जीवन फन पावै जो निरखन भर भर नैन रमोला ।
ध्यान खुशाल मदा निश वासर चितवन माह बसोला ॥

४

मैया मोरी कामर कौन लई ।
कोउ कहे तेरो कामर देखो जमनार्म जात बई ॥
एक कहे हम नाहीं लीनो सुरभी खाय गई ।
एक कहे तुम नाचो गावो ले दे' मोल नई ॥
हां जो गए थे धेन दुहावन ओचक भेंट भई ।
एक कहे तुम आवो हो आयो हां तुम रमिक मई ॥
सूरदास जगमतके आगे असुभन धार दई ॥

५

नेक चलो री चलो नन्दरानी ।
देखो जाय कान्हको का गत दृध मिलावत पानी ॥
हमरे शिरकी नई चनरिया ले गोरममें सानी ।
हमें उने रसवाट कहांको आन देखावत ज्वानी ॥
यह ब्रजको बसवो नकिं नोकी हम नेहचे कर जानी ॥

६

विहारोनाल टूटे जमनाजीके तीर ।
मधुर मधुर बांसुरी बाजी सुन मन धरत न धीर ॥
भूषण मणिगण अङ्ग विराजत सुन्दर श्याम शरीर ।
कृष्णरङ्ग स्वामी लख आई फेर चली मेरो वीर ॥

खन्नावती—तिताला

उधो भाग बडे इत आए ।
उत हरि गए घने दिन बीते समाचार नहीं पाए ॥
कुशल तो है वसुदेव देवको हमरे हित चित भाए ।
कहो कुशल बलदेव कान्हको रहे उते सुख पाए ॥
विरधापन को पूत पालियत तहां तज हम हिं सिधाए ॥
धायहु को ना तो हरि धोयो विनु कहु दोस लगाए ॥
चलत बार बलदेव कान्हते साथ न प्राण पठाए ।
ताके ए परपाक गदाधर जीवत ही फल पाए ॥

१

काहू फिर न कही वह बातें ।
जो भर गए सुकृत किरियातें वा मगलुं कुगलातें ॥
जैसे चढ़त रङ्ग भीतर सहत सैलकी घातें ।
वाको खाद पूछिए कासों सैले सही है तातें ॥

२

अब तो सहाय करो प्रभु मेरे बहो जात जन तेरो ।
माया नदिया लिये जात है हात गहो प्रभु मेरो ॥
काम क्रोध लोभ मोह जलचर दियो चहं दिश घेरो ।
नाना भंवर भरमके भीतर भरमत रहै जो फेरो ॥
बार बार नहीं गिनत है मोकूं कियो खोज बहुतेरो ।
विष विकार चित तातें तवपद गहो जात नही मेरो ॥
माणक और उपाय न सूझ चरण कमल टढ़ हरो ॥

४

हां मुरलोमें गावत तान ।
पढ़ पढ़ मोहन मन्त्र मखो री सुन्दर श्याम सुजान ॥
परत न चैन नैन दिन तबते भनक परा मेरे कान ।
जानकीदास कोइ आन मिलावै रसिया नागर कान्ह ॥

५

थें म्हारे घर आज्यो जी नन्ददुलारे ।
मन टोकी जी म्हाने मारग जाताई मास ननद
म्हाने मारे ॥
गुरुजन दुरजन चाव करे के हित चित को न विचारे ।
प्रेमरङ्ग घड़ी पल नहीं विसरीं तन जन वस के थारे ॥

६

रतनाली बे तैड़ी आंखड़ियां असा जिन्द बेष ले
अमी जिन्द बेषी वो मुस्ताक रहें दे ।
मुए पणके हो राह मुसाकिर नाजो भगेखेन क्यो
खड़ियां अ० ॥
याणे नाल स्याणों क्यो दरस तुसो दें दो पलको
दे नाल क्यो लड़ियां अ० ।
प्रेमरङ्ग दरस दे दिवाणे इस्कदी बेड़ो तुसो क्यो
जड़ियां अ० ॥

०

रसिया भजन जगमें सार ।
सुक नारद शिष्य श्रुति देवा भजन ही भए भव पार ॥
ध्रुव प्रह्लाद उपमन्यु विभोषण अचल पदके सिरदार ।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक और हु
ब्रजको नार ॥

भजन रङ्ग रङ्गीले जे भए पाए साक्षातकार ॥

८

जो तूं छोड़ा माझो ताझो भेद ।
तू माहं छूं हं मातूं सो भूट नहीं कइं सांच कहे
छे वेद ॥
अणपाम्यूं पामवाना दुखथो सुख सारुं निरबद ।
जो तूं जो हं होजं एक अनेक होय बी जो तो
देहि करे खेद ॥
प्रेमरङ्ग प्रभु थी रङ्ग रमतां नहीं पामा विछेद ॥

९

राघोजीके नीको लागि नव रङ्ग पाग ।
कवहुं कैल छविसें सुन्दर निरखत आनन्द है अनुराग ॥
भलक लाल मोतिन की कलङ्गी उपजावत सुख लाग ।
राम सखे प्रभु शोभा सागर देखत सो बड़ भाग ॥

१०

थारो छव प्यारो लागि राज राधावर महाराज ।
रतन जटित शिर पेंच कलङ्गी केशरिया सब साज ॥
मोर सुकुट मकराकृत कुण्डल रसिकों रा सिर ताज ।
मीरांकें प्रभु गिरिधर नागर म्हाने मिल गया ब्रजराज ॥

११

इलां म्हारें मङ्गलरो दिन आज ।
श्यामसुन्दर जो आया म्हारि पावणा सज
केसरिया साज ॥
वीण मृदङ्ग बजा स्यां गास्यां भुजभर मिल स्यां
ब्रजराज ।
रसिक गोविन्द रसिया जीसुं हिल मिल करस्यां
सुफल सब काज ॥

१२

आज बन वंसी बाजे छे ।
लोक लाज कुलकान सखीरो सुन सुन भाजे छे ॥
बैरन घन जो गाजे छे म्हारो चित चोटो रूबि छाजे छे ।
रसिक गोविन्द जी सास ननद जिय छिन छिन
लाजे छे ॥

१३

म्हारो मन मोह लियो छे वो कान्हा थारो बांसरो ।
तोषी तोषो तान बान सों म्हारों मन गेलो
कियो छे वो० ॥
धे' तो म्हारा रूड़ा राजीन्द छो मैं तो थाने आपा
दियो छे वा० ॥
अब जुग बिच म्हाने खाली लागि आनन्द घन
रस नीको पियो छे वा० ॥

१४

ऊधो कबसें भए हरि ज्ञानी ।
छिन छिन भात ग्वाहनको पावत मांग लयो
दध पानी ॥
अब कछु ज्ञान भयो तिनहीको करो जो चिरो रानो ।
होय भोगी और जोग सिखावत कौन वेद या वानो ॥
महीदास अदभुत यह गत कछू जात नहीं जानो ॥

१५

गुजर दे यार बे जानो यार तेरे नैनांकें मारि भाले
आले ओ मिजगांवाले ।
दिठोयानी ख्याल खुशाल कमाले साजो जमा माले
ढाले मिठोया आटे नाले ॥

१६

बनरा कुञ्जविहारो मन भावै ।
छंल छवोला रङ्ग रङ्गीला श्याम सलोना मुसकावै ॥
शिर सोने दा सेहरा विराजे कर कङ्कना छव छावै ।
सुगन्ध वसोला सुहाग लजामा पीतमवर सरसावै ॥
सङ्ग सोभा प्यारो दुलहनके चितवन चित उरभावै ।
निरखत जन खुशीयाल मनोहर निशदिन प्रेम बढ़ावै ॥

१०

कौन गुण बांसरी बजाई रे भनक परी अवनन मेरे ।
नन्दरायके कुंवर लाडले बलदाजके भाई रे भ० ॥
ख्याल खुशाल करन चित चाहे ब्रज कुञ्जन छव
छाई रे भ० ॥

१८

धेँ न्हारिं गरे लागो जी श्याम सलोना ।
कृपा भई न्हारिं मछल पधारो मोहन मन ही लगोना ॥
सुन्दर सुखट सरूप कृपानिधि जन्म मन्त्र धो टोना ।
भई दासी में थारी ब्रजनिध अब कहु और न होना ॥

१८

सुघर हो राजेन्द्र पना आशी या ही माभली रात ।
पान फूल और अतरदान लिए ठाड़ी मारवण
गोरि गात ॥

२०

माहनी मुरत ललित श्यामको जबसे नैन निहारी ।
विन देखे कल परत न आली वनमाली वनमालीरा ॥
याहो चाह चित लखो काजिए ख्याल खुशाल
अपारी ॥

२१

बल बल जांटी श्याम मै तेरे अरे मोरे प्यारं ह्यो यार ।
सुनिए कुंवर कन्हाई विनतो माहनी रूप देखावा
हो यार ॥
ऐसा चाह हमारे चितमें आखन आगे आवो ह्यो यार ।
बहुत दिननते उमग भरो है देखन मुख ब्रजचन्दा
हो यार ॥
आवो चित विम ह्योस मनोहर नव जोवन नन्दनन्दा
हो यार ।
जो लीला तुम ब्रजमें कीनी दिए प्रिया गल बांही
हो यार ॥
हन्दावन वो धंसीवट ललित कदमकी छाई हो यार ।
नितप्रत आस लालसा जियमें लिखिए श्रीगिरिधारो
हो यार ॥

कुञ्जन माह नेहरस माते रास हुलास विलासो
हो यार ।
मदन मोहन नन्दराय लाडले रसियारसिक विहारो
हो यार ॥
गोकुल नाथ सकल सुखदाई भक्तनके हितकारो
हो यार ।

विसरत नाहीं वसी उरमाहीं प्रीतम प्रीत तिहारी
हो यार ॥
महाराज राजीके राजा पूरन ब्रह्म खिलारी हो यार ।
तिरलोकोपति अन्तरजामो करुणासिन्धु कृपाला
हो यार ॥
ख्याल खुशाल करो निशवासर राधावल्लभ लाला
हो यार ॥

२२

श्यामसुन्दर वनमाली बुला ला आली ।
विन दरसन मन धीर धरत ना माहन मदन गोपाली ॥
करत विहारी कुञ्ज कुञ्जनमें हिलमिल उर भुज डाली ।
मोहनी मुरत मोहनी मुरत रसिया ख्याल खुशाली ॥

२३

काची कली जी न तोड़ माड़े बालम डाल सुड़ेगी ।
पाकन दे पिया हात मत लावो अपनी उमगसें आप
खुड़ेगी ॥

२४

वा विन जात नाहन कोय जाव न विसरी दुहद
वांसरी नोय ।
सुरभ केस सुरेस असवट और पै नहीं होय ॥
धरनीमां अली भाल मानो रही कमल भिगोय ।
रूप सेली फनिन निद्रित जननो सी कहे रोय ॥
विसरी रही अङ्ग अङ्ग भोय बांसरीमें प्राण मेरो
देख हिरदे टोय ।

सूर जाके अङ्ग विथा व्यापी पीर जानत सोय ॥

२५

मोरो बीरो भोला आज लागत मोहे नीको ।
सीस जटा वाघाम्बर ओटे शोभित हार फनोको ॥

बूढ़े बैल पर धर असवारी खबर लेत धरनीको ।
कृष्ण रङ्ग छव देख मगन भए भाङ्ग धतूर धनीको ॥

२६

अधर धरी मीहन वांसरिया ।
सोवत चौक परी सेज पर तानन वेध गई फांसरिया ॥
जो जैसे सो तैसे धाई डार दई गरे प्रेम फांसरिया ।
कृष्णरङ्ग प्रभुके मिलवे को कुलके लाज करी
नासरिया ॥

२७

लाग रह्यो मन राधावर सों
और कहे ककु और उपरसो ।
दिन रतियां अंखियां आगि मेरी
ठाढ़ो रह्ये ककु रूप सुघरसो ॥

लोक लाज कुलकान तजो आली
निठुर भए घरवार नगरसो ।

आनन्द घन प्रभु लाए नेहा
प्रेमरङ्गांगी मैं गिरिधर बरसो ॥

२८

उरभ रह्यो मन श्यामसुन्दर सों ।
उरभ तो रह्यो पर सुरभत नाहीं
केत जतन किए बाहरसों ॥

लोग कहे ककु लाज करी आली
लाज गई है नेह जकरसों ।

हरदम घरी घरी पल पल छिन छिन
चरण गहे है दीज करसों ॥

२९

मौला देली केलदे मुहा गौन सेंदियांनू पार लगावणा ।
नौबहार रब तैडी बनाई ससोदा मुल्क सुहावणा ॥

३०

दिल मैला मत रखियो प्यारे उजला दिल चांदनी चौक ।
तज दे कपट तुसी सुन बे सांगा याही सचे इशकदियां
नोक ॥

३१

सांवल्ला मोहना मैं तैडे कुरवाण ।
विन देखे सानू कल न पड़दी तू मैंडे है प्राण ॥

३२

कौन देश जाए रे बालम विरमाए राम कही रो
सखी अजहं नहीं आए मोर मन्दिरवा मीत पियरवा
कासें कहं को पतियाए ।
धाम छोड़ तोरे मोर रहत फिरत है जो उनसे
नेहा लाए वे तो मीज करे सोतनके जो मेरे आवने
नहीं पाए ॥

३३

बालम तोर कौन विध जइहं मोरे राम ।
ननदिया बैरन जागे डरपत हं को मत देख पावे चरचेगो
मई खिजावन कारन कर गई एक ठोर सब धाम ।
एक तो यह डर दूजो पायल बिकुवा बाजे भनन भनन
तीजे रैन उजारो चौथे मीज करनको मन करे नहीं
मानत काम ॥

३४

परदेशवा मत जाइयोरे पानन छाई पनवरिया भंवरा ।
काहंको तेरी नाव नेवरिया काहंका तेरा वासा
तेरा खेवनहारा बताय दे भंवरा ।
सोनिदी मेरी नाव नेवरिया रूपेदा मेरा वासा
खेवनहारा गुसैया भंवरा ॥

३५

बना जो थारे सेहरडे रङ्ग रूढ़ा ।
तन मन धन नोकावर करहं
चिरजोयो कोटो लाड़ी जारो चूड़ा ॥

३६

दीजो जी सांवलिया म्हानि हो नजरांरो मेलो दीजो ।
छकन्दपना थारा म्हानि न भाधं
इतनो अरज सुन लीजा ॥

थं तो म्हानि प्यारा लागो सायबां
मन माने सोई कोजो ।

यह उपकार नहीं भूलस्यां व्रजनिधि मेहर कीजो ॥

३७

प्यारेदे मिलदो मैंनू आस घणेरी मियां ।
पार खड़ा बे रांभण कूंकदो दिल बिच चुभ गई
फांस घ० ॥

मो नयना मृग मोर है सब तनमें बहुराय काम कियो
 लहनाय द्रष्ट घात लगाय पिय चकचार्त कीनि ।
 चोप तुरङ्ग चढ़ाय पीत पटा बैठाय सङ्कुचत डोर छिड़ाय
 अपन चाट चटाय कुद्रा बढ़ाय कपट फन्दी
 उतराय छव देखाय तुअ और छोर दीने ॥

मो है हसन रो तो कूँ दगन भलक यों लागत
 मानी चन्द मध वोज चमक गई ।
 अतही सुन्दर बतीसी मेरे जान लकन बतासो की
 सभाकीं प्रतिविम्ब देखत ही नवल कमल बोच
 हीरा खान भई ॥

सुध आइये आइये ज उनके जिय ककु मेरो सुध ।
 अवध बढ़ो मोसो दुतो न लगाई है प्यार नीका
 छबसां पिय मेरे गृह धाइये जु० ॥

परज—तिलाना

जोगी जतो सती मन्यासा अवधूत जोग अडम्बर
 भाव तू जो मेख धरे ।
 जपतपतें सञ्जम जमकत दुख हरे करत सब सुख
 दुख हरे ॥

मन सुमरण ज्ञान ध्यान चित न हरि हरि करे ।
 कहै बैजू बाबर रसना रटना नाम जाते पाप
 सब ही टरे ॥

मन जोगिया आसन कानि चिबुक गुफामें जाय ।
 रहो समाय लगायके तिल मुल हारे लाय ॥

शरद-शशोवदनी सारदा सरस्वती हंसवाहनी धरे
 वीन वरदानो ।

वाक्वार्णी शेष सुरता सबनकी जीवनमूल देवो ते
 जगजानी ॥

जय जय जगदम्ब निरालम्ब अवलम्ब तुही तारे विनो
 बार बार जोर जुगपानि महारानी ।

जीवन धन तुव प्रसाद पावै नाद वेद भेद गोविन्द
 गुण गाय गाय पीत मनमानी महारानी ॥

जित देखों तित कृष्ण मनोहर दूर्जा द्रष्ट ना परे री ।
 चित सुहावनी छवि अति सुन्दर रोम रोम
 रस ही भरे री ॥

शिव विरञ्च जहां दृढत फिरे सो मन मेरे अरे री ।
 निशदिन राची गुण गोविन्दके और उपाय न करे री ।
 जा कारन हां अटकी फिरी जगमें पायो
 निज घर मेरे री ।

परमानन्द लह्यो सुख दरशन चित कारज सबही
 सरे री ॥

श्याम सखी नोके देखे नाहीं ।
 चितवत ही लोचन भरि आवत वार वार पकृतांहीं ॥
 कसेहुं करि एकटकमें राखति नकाहि मैं अकुलाहीं ।
 निमिष मनो छवि पर रखवारे ताते अतिही डराहीं ॥
 कहां करे इनकीं कहा दोपन ईन अपनीसी काहीं ।
 सूर श्याम छवि पर मन अटक्यो उनि सब शोभा लाहीं ॥

गोपी श्याम रङ्ग राची ।
 देह गेह सुध विसारी बढी प्रीति सांची ॥
 दुवधा डर दूरि गई उघर उघर नाची ।
 हरि तजि जा और भजे पुहमा लोक खांची ।
 माता पिता लोक बन्धुकी बात नहीं बांची ।
 सकुच जबहा उर वार वार भांची ॥
 अब तो छिन हू न छांडे नाहि न मत कांची ।
 सूर श्याम पद पराग ताहो मैं मांची ॥

मेरो लाल रंगीला रंग भरो ।
 जो भावें सो करहु किशोरीमोहन तेरे वस परो ॥
 जमुना-पुलिन निकुञ्ज-भवनमें सर्वसु सची तोकीं धरो ।
 विट्ठल विपुल विनोद विहारी सगुण गांठो देवर वरो ॥

मेरो गुप्त मतो कहिया हरिसों जायके ।
 दूध भात कुञ्जनमें खाते पहले हम हीं खवायके ॥
 जलकी प्यास जबे हरि होती पीते हम हुं पिवायके ।
 अब तो छान छान जमुना जल पोवत है अचवायके ॥
 वहां जाय कुवरो नहीं उबरो ब्रजकी सबै भुलायके ।
 अब सुनियत हरि घण्ट बजावत तिन्ह तिन्ह
 वार नहायके ॥

नमस्कार कहियो सुरकी कबहीं भवमर पायके ।
 जप लगबै कीं लगी है बोलै यासह असुए खायके ॥

परज—चीताला

हो लाल आइए मेरे गृह धरिए द्रगन पर
 चरणकमल ।

करोंगे बधाई आनन्द मन भाई शुभ दिन घरी
 पल सुबारक करिए कृपा प्राण प्यारे नवल ॥

२

कारि री कान्हा कुञ्जन कारि नयन अञ्जन कारि
 कांघि कामर सोउ कारी री ।

भोंहै कारी द्रग कारी सुरली अत हितकारी
 धुनीमें कस सोउ कारी री ॥

३

ए सखी कारी री सारी सोहत अङ्ग कारी हीं
 कारी है सिङ्गार ।

कारि ही रेष मिशि कारि हो नैन अञ्जन कारी हो
 मुख मञ्जन कारि हीं कृष्ण सों करत प्यार ॥

४

सोहै सीस मुकुट अरण कुण्डल भाल तिलक
 गुञ्जमाल पीताम्बर कट काछनी विराजि ।

शङ्ख चक्र गदा पद्म कर सुरली अधर धरौ वृन्दावनचन्द्र
 मध श्रीगोपीनाथ काजि ॥

धनुष वधु जम्बु क फल ऊर्ध्व रेष त्रिकोण षट्कोण
 अष्टकोण मीन चन्द्र जब म्नाजि ।

गोविन्द है मदनमोहन श्रीनारायण वट्टोनाथके प्रभु
 सप्त सुर काय रहे लैत तोनो ग्राम मधुर मधुर गाजि ॥

५

प्रथम आदि शिव शक्ति नाद परमेश्वर नारद तुम्बर
 सरस्वतो फणपतिरे ।

अनाहत आदि नाद गुणसागर स्वरूप ब्रह्मा विष्णु
 महेश लक्ष्मणरे ॥

आदिधरणी शेष आदि चन्द्र सूर्य आदि पवन पानौ
 आदि अनगनरे ।

आद बैजूके प्रभु कब गुरु प्रसाद सुध बुध
 मत गुन गनरे ॥

६

पलकन जुहार कर ले हीं आये घर तेरे मुरार ।
 नीची नार किए जंचे न चितवत काहे बढ़ावत रार ॥

७

मोकीं तो जब लग चैन तत्र लग देखों तुम्हारो
 दरसन ।

नैननके तारे प्यारे कर राखों जेहर धन्य धन्य रावरे
 तुज चरण परसन ॥

परज—तिताला

जोगिया मन मेरे चित भटकत अलख ।
 आप आपी लख ज्ञान सुमरनको करत सो तो

सब व्यापत है रोम रोम नख सिख ॥
 घट पर घट घर आंगन जित तित पवन वृक्ष

सब वाही सुरत रख ॥
 चन्द्र सूर्य उड़गण मद्गण पशु पक्षी जल थल

बिच लख ॥

२

मोहै कोउ देहो बताय मोहै कल न परत छिन
 वा विन ए जोगियारा ।

सैलो स्याम भभूत मुख सोहै नैन चातुर मन
 भोगियारा ॥

३

ए हो दक्षिण सारी दलमली वाको चङ्ग देश
 भयो नाम ।

जब हीं चढो महा मरदान एक दरस परस सब काम ॥

जाके दान स्थिर रङ्गी भेटनी एसो वीरभानको नन्दन
राजा राम बघेलो वीर ।

इन्द्र नाहीं धरत धीर दान वाको सुनि शेष
उकमत बलवीर ॥

नाद ब्रह्मको माधो आराधो ।
योगिनकी गत परम पद पावे अनहद आहद
उपवेद पठंत तत त्रित त घन मिखर प्रवान्धो ॥

वर्मानत आयि अरसानि हम जानि जू लक्षण तिहारि
पहचानि ।

कहं काजर कहं पीक लोक अनगन सुभाय
मोपै न जात बखानि ॥

नेनन नींद ध्यान मन हिरदे वसत तीय ताही के
लगत गुण गानि ।

धन्य रे नह तोहे एसे नटनागर कल कर नाचनचानि ॥

मनमोहन देखत हो सजनी क्यों गई नन्दके द्वार रो ।
दशन हसन कर वसकर डारो कासे करों पुकार रो ॥
मोहन मोहन जोहन कवि निरखत कौन मन्त्र पढ़
डार रो ।

रागरङ्ग सुरली अधरन धर मधुरा तान उचार रो ॥

श्याम सुजान आए सखी मेरे अब हीं उठ चल
हिल मिल करो टैल तन मन धन सब वार वार
डारो फेरे घने रे ।

वे महाराजाधिराज कृपाल दयाल कृपासिन्धु
करुणामय जत्र गुण अवगुण सब हो विसरं राखे
अपने शरण तरे रे ॥

धन धन भाग सुहागरी सजनी धन घरी पल मूङ्गर्त
आज सांवरे रावरे चरण धरे रे ॥

नन्दनन्दन आनन्द कन्द मोहनो मूरत व्रजराज चन्द्र
मेरो मन रस वस कर लियो मन् चोते काज
भये मेरे रे ॥

श्यामसुन्दर मन मेरा सोहावे ।
सोहनी सूरत श्रीर माधुरी मूरत आली हंस रस
वस कर कस भुव नैना निरख निरख द्रग बांकी
चितवन सों मोहे सखी जो आवै ॥

एरो में क्यों गई जमुना पानी ।
देखत हो मन मोह लीनो मेरो सांवल हाथ बिकानी ॥
मेरे मन वसो है सांवरो सूरत लोक कहे बोरानो ।
प्रकट भई वलिहार श्याम सों लागी प्रोत न छानो ॥

न जानूं तेरो यह माया कामो कुटिल कुचाल
कुसङ्गत में हो श्रीरघुराया ।
करत करे फिर भेटे काहू भेद न पाया जो
वलिहार द्रवा दोन पर गुरुमुख भेद बताया ॥

तुन्दावन फूल रही फुलवारो ।
विहरत लाडली लाल अस भुज चांदनी रात
उजियारी ॥

भुक रह्यो श्याम लता द्रुम द्रुम को
पल्लव क्रान्ति निहारो ।
कुञ्ज निकुञ्ज विराजत राजत देख विहार विहारो ॥
मङ्ग सखा नव रङ्ग रङ्गोली नख सिख रूप अपारो ।
निरखत रसिक खुशाल सदा सुख आराधे वनवारो ॥

कारो पीरो धंधरो धुमारो पिशा प्यारो घटा घिर
आइयां ।
बोलत मोर पपोहा कोकिला कोयल कूक सुनाइयां ॥
तुन्दावन में छाया रही कवि ख्याल खुशाल लुभाइयां ॥

१४

राजत ललित नैन चांदनी छिटक के खिल रहे
 तू आ मिल मेरे यार पास रहो प्यारे ।
 बिच रङ्गमहल छवि छाई फूलों की सेज विछाई
 उर मदन उमग उमगाई नही रोके रहत रुकाई
 तेरो चितवन उरभे प्राण जानो सुलभारे ॥
 वे बातें मोहे सुनावो जो सैनन माह बतावो
 चित अपनी चाह लखावो जानो सनमुख आवो
 उर लगे हमारे आय कांठ सुकवारि ।
 मैं कहती हूं मेरे जानी प्रेम प्रीतकी वानी
 उर नेह चोप उमगानो तू लेना श्याम मेरो मानो
 मेरो नई चाहको चाह मैं लिपटारि ॥
 काम जो ऐसका आया रस ख्याल खुशाल बनाया
 मनमोद काम प्रगटाया क्या बखत सुभूका छाया
 साअली महोबत कल्लो खिली सुसुकारि ॥

१५

प्यारो पिया सङ्ग करत बियारी ।
 नानाविध पक्षवान मिठाई कई कई रङ्ग संवारी ॥
 अनगिन जिनस सल्लानो चाषत सुसकावत सुकुमारी ।
 निरखत रसिक खुशाल सदा दोउ नव निकुञ्ज
 छवि छारी ॥

१६

व्रजमें कुञ्ज कुञ्ज छवि छाई ।
 रास समाज कियो नन्दनन्दन लोला ललित बनाई ॥
 फूले फूल नवल द्रुमनन पर गुञ्जत मधुप लोभाई ।
 बोलत पच्छा रङ्ग रङ्गके सुगन्ध पवन महकाई ॥
 भुक रही लता कूल जसुनाके पुनत पिवत सुहाई ।
 प्रीत खुशाल श्रीराधावर सुख रसिक फल पाई ॥

१७

दूले जदुराई सुखटाई वो मनमोहन कुंवर कन्हाई वो ।
 रासमण्डलमें छाया रही छवि अङ्ग लखि अनङ्ग
 लजाई वो ॥
 रूप मोहनो मदनमोहनको उपमा वरनि न जाई वो ॥

विलसत सुखरस केलकुञ्जनके शोभा व्रज प्रकटाई वो ।
 गावत राग रागिनी सखियां आनन्द हृदय वढ़ाई वो ॥
 ख्याल खुशाल निरख पिय प्यारो जीवनके फल
 पाई वो ॥

१८

सखी वनमाली विहरे विपन मंभारी ।
 निरखत द्रुमद्रुम लगे फूल फल हरियल भुक
 रही डारी ॥
 मन अति प्रसन्न सुगन्ध सुगन्धित अनंत सुमन अपारो ।
 हार हमेल बनावत निज प्रिय रसिक खुशाल लुभारो ॥

१९

बना दूलह अवधविहारो वो दुलहन जनकदु नारो वो ।
 जनक नगरमें छाया रही छव निरखत नर श्री नारो वो ॥
 गिर सोनेका सेहरा विराजत गल फूलोंके हारो वो ।
 सूप वसन अङ्ग आभूषण पहरे नख सिख रूप अपारो वो ॥
 विश्वामित्र वशिष्ठ आदि सब देत असोस उचारो वो ।
 नौबत बाजि घन जो गाजि गावत मङ्गलचारो वो ॥
 करत नोछावर दशरथ राजा दाव अनेक लुटारो वो ।
 पावत रसिक खुशाल जुगल सुख प्रेम प्रीत
 रस सारी वो ॥

२०

छिप छिप कहा करत नन्दनन्दा कोन चूक जो हमें
 बतावो रूठ रहे व्रजचन्दा ।
 महा प्रवीण सकल विद्यामें कोजि वेग आनन्दा ॥
 ख्याल खुशाल कुड़ी जनमें रसिकन आनन्दकन्दा ॥

२१

आवत सृदु सुसक्यात किशोरी ।
 रासविहार करन उर रुच मन निरख सरद निशा
 उमग उठोरी ॥
 अति विचित्र प्रवीण वैरन धन्य आन अब छाई
 एकठोरी ।
 जो शशो पूरण उदित पूर्व दिशि चलत प्रकाश
 करत चंद्र शोरो ॥

भूषण वसन दिव्य अङ्ग राजत साजत शोभा मदन
करोरी ॥

२२

मोह्ये धनुष चढ़ाए पल शिर तुरङ्ग नयन रसराज चटोरी ।
चावक अलक लिए सुख राजत नेह पकर चितवन
कर डोरी ॥

अवण कुण्डल निशान मनसिजके फहरत सुन्दर
कपोलन ठोरी ॥

अवली सुभग सुहावन हेमर नथ मुक्ता लालरो
ठगोरी ।

अधर अरुण दमकत दशना बोली बोलत मोहनी
मन्त्र पढोरी ॥

विवस करत पिया प्राण मनोहर प्रेम प्रीत
गुणसिन्धु भुकोरी ॥

सङ्ग सखी नव रङ्ग रङ्गली आवत गावत व्रजकी खोरी ।
ख्याल खुशाल ध्यान निशवासर चरणकमल सौं
चित उरभोरी ॥

२३

पियार्जोके चरणन को वलिहारी ।

जिन चरणन शरणकी महिमा गावत वेद अपारी ॥
जिन चरणनका ध्यान किएतें सुरत मिल कुञ्जविहारी ।
भ वदुख भेटन नाम मनोहर अंशु राधा सुखकारी ॥
र सिक खुशाल मनोरथ पूरन कारन विपिन विहारी ॥

२४

घर आवो मजन मिठ बोला ।

तेरे बे खातर सब कुछ छोड़ा काजर तेल तमोला ॥
जो नहीं आवै रैन विहावै छिन मासा छिन तोला ।
मौराके प्रभु गिरिधर नागर कर धर रहे कपोला ॥

२५

दर दो दम दर दो दर दो दम दर दो दम आवे आवे
दर दोदम ।

गनीमर्त सुमर ए शमा वसली परवानाकी इम
आ मिलाता शबोदमन खुहादमन्द ॥

२६

आहे नाद्रदोम तन दरिना तन दरिना यललो यला
यला ललियारं यल यल्लयल यल लले ।
मुकयदान तो अर्जो करे गरखा मुसन बखा तेरेके
तुं हि दिगसारा फरासन् ॥

२७

मंजड़ी रात आइला के जी ।
हाथो आवै तिहारे हारे नो साहबदीन सुभ दिन
सुरङ्ग हाथमें कमदानिया सात आइला केजो ॥

२८

मरदाना हो राजेन्द्र माणे वारी केसरिया राजेन्द्र ।
बागां थाने टोलण आइला हो राजजी राजेन्द्र ॥
राजा थारे घोरलारो हो राजेन्द्र थारे घोरलारो
बाजां परता लाहो मक्त माणे बाजे के घूंघरु हो
राजेन्द्र ॥

२९

दारुडा राज पीवो कौं न दारुडा राज लाड़ी
राज देशां थाने दारुडा मारुडा ।
हं तो थांसि अरज करे शां हमलारा हात घालो
सालुडा मारुडा ॥

३०

हो राजा मैं वारी वारी जावां गाहो राज थांसो
हंरो मण लाग्यो मैं कांई जाणो ।
अमलांही सेज पर सुखवा करोलो सायबां बैठो
पटी तले चपीकरां थारी ॥

३१

होरो तार ठाड़े प्यारा पिया कुञ्जन घन में गौर
श्याम शोभित तनमें ।
उन पहरो वाकी मोतिन माना उन पहरो कुण्डल
अवनमें ॥

३२

सदयां विन घर मोह्ये रह्यो न जाय को मोरे
प्रोतम देह मिलाय

वारे सइयां परदेश निकस गए सभभ समभ
 मोरा जिय पछताय ।
 दिन न चै निश नींद न आवै कोटि करो नहीं
 मन ठहराय ॥
 भुषण भार शृङ्गार सबे सखी अस जिय होय के
 देहो बहाय ।
 जावक सो पावक सो लागत कहु निल नागन होय
 डस जाय ॥
 लोग कहें धन भई है बाधरी हिप्रकी विधा
 कोउ नहीं लखाय ।
 यह दुख कासों कहीं सुन सजनो नवल श्याम सों
 कहु न वसाय ॥
 फरकत वाम नैना प्यारके ।
 आवन हार भए मनमाहन हर्ष भए सब नर नारके ॥
 कसमसात अंगिया बन्ध टूटत फरहरात
 अञ्चल सारके ।
 लगि लगि अत्रण भ्रमर गुञ्जारत सगुन होत
 गिरवरधारके ॥
 उड़ो काग आवै मनमाहन भाखत युवती
 बारबारके ।
 देहो भात दूध सिपागरी जुअ अञ्चल अपने फारके ॥
 होत मग्न मन प्रोत शकुन शुभ भया प्रेममद
 अधिकारके ।
 रामदास दरस यह मनमोहन मिलवे तेई
 चातक गति घन कारीके ॥
 सत्गुरु पूरा होय दयाल एक पलकमें करे निहाल ।
 आदि पुरुष उपजायो नाद विन समुझे वो पूरी व्याधि
 यन्त्री मन्त्री नृत्य कर रागो उनकी
 सुरत न आवै ताल ॥
 ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र वैश्य सैयद मङ्गल पठान कुरेश
 चाल बड़ोकी छाड़ दई है अपनी अपनी कहत
 निकाल ।

ब्रह्मज्ञान क्षत्रियपन छाड़ा युद्ध करन तेहँ मुख मोड़ा
 कहा भयो खड्ग कटारी बांधे सजे धनुष आं
 बरछो भाल ॥
 धोती कण्ठी औ जप माल छापे तिलक
 लगाये भाल ।
 धरम चोन्है मल मल न्हाय मन भीतर वस रहो
 चण्डाल ॥
 रती न माया मन सों त्यागी बाहर भेख धरो वैरागी
 लष्णा भूख रहे नित लागो सों क्यं करे भक्तका
 ख्याल ।
 पञ्च इन्द्रिय वस हो हो रोगो तो शिव कैसे पावे जोगो
 कहा भयो विभूति रमाय मुद्रा धारे आंखे लाल ॥
 संन्यासो को रीत न जानो जटा बढ़ाय भये निर्वाणो
 खैंच खाल सिंहनकी आनी बैठा तले वाघम्बर डाल ।
 भगवा भेष दण्ड कर मांय टुकड़े कारण घर घर जाय
 तिन को दण्डी कैसे कहिये डोलत मन नहीं
 रखो सम्भाल ॥
 मू बांधे और जूठा खाय बाल खसोटे कबू न जाय
 प्रभु त्यागन जग स्थिर कर माना अतिहो कुटिल
 महाविकराल ।
 पढ़े सुखमनी अमृत नाम करे खोटाई आठो जाम
 अपने मनमें सिद्ध कहावे क्यों कर उतरे पार अकाल ॥
 घरमें तिरिया व्याही आवै आकर पीपर हुकम चलावे
 माता पितासे जुटा करावे यह देखो कलियुगके ख्याल ।
 जगत् बीच रोति भई नई लोक लाज आंखनते गई
 लख उपकार जो होय शिरपै एक घड़ीमें देवे डाल ॥
 जा मधु पावे जीभ सुहातो चोर पारनिन्दक अपघातो
 जन्म गंवावे फिर पछतावे जब शिरपै आ
 कड़के काल ।
 अष्टङ्गारमें ऐंड़े फिर ठगठग लाय उदरको भरे
 अन्तकाल कोई नेक न चीने आगिको कहा
 होगा हाल ॥
 याचक को देयश नहीं लीनो पुण्य दान उपकार न कीनो

जो काङ्ग सों बांट न खायो कहा भयो
घर मञ्चो माल ।
या देहीकी बनत बनावै भूषण वस्त्र बहोत उड़ावै ॥
तापर अतर सुगन्ध लगावै स्वास निकल गयो रह
गई खाल ।

जो जो दृष्टि बीचमें आई सोई देख हदोस बनाई
प्रेमी प्रभुकी आज्ञा पाई नहीं तो हमरो कौन मजाल ॥
भत् गुरुका जो शब्द विचारे कामकी जीत क्रोधकी मारे
दया सन्तोष गरीबी धार सोई कहिए मिकख
खुशाल ॥

२५

सत्गुरु जारि जग जञ्जाल कृपा करके किए निहाल ।
कण्ठी बांध कियो जिन सेवक नाम सुनायो श्रीगोपाल ॥
भोकारकी तिलक बतायो नाम जपनको तुलसीमाल ।
पूजाकी सब रीत बताई ऐसे किया करा तिरकाल ॥
तिमिर दूर कर ज्ञान दिटायो घटमें दीपक दीनो बाल ।
महान भावनके पद बतनाए समय के सुन्दर ख्याल ॥
सप्त सुरन और तिन ग्राम ला राग रागिनी और
सुरताल ।

एसे उण्डी रामगुरु स्वामी विष्णुदामकी करि
प्रतिपाल ॥

२६

माई इन अखियन लगन लगाई ।
पैले ही जाय आप ही उरभी फिर मोकी उरभाई ॥
विन देखे मुखकमल ककानो मोपे रहो न जाई ।
नागरीदास रुई बिच पावक कैसे रहत कुपाई ॥

परज—धीमा तिताभा

मन मेरोरी वरजो नहीं माने ।
प्रकट करत है अन्तरको सब रहन न देत नखाने ॥
विरह बाय बोरानेकी गत जो जानि सो हो जानि ।
खिजो रहे तन जाय लगत है नागर रूप निशाने ॥

२

आवै रसिया मोहना गज चरावे छहो राग सुध
श्रीसुख गावे

लकुट कामर मुरली कर लिए दोहना सोहना मोहना ।
मुकट भलक टग हंसनि अलक कूवि अङ्ग अङ्ग
नखसे सैहना मोहना ॥
यह छवि निरख शिव ब्रह्मा सुर नारद वीन ले
सुध जोहना ।

दीनदयाल ख्याल अब गतकी अगम अगोचर ताई
नचावत ग्वाल बाल सङ्ग गोहना मोहना सोहना ॥

३

आधीरात चांदनी छाव रहो ।
अति सुकुमारी लड़ेतो प्यारी प्रीतम उर लगटाय रही ॥
मनसों मन नैनन सो नैना तन सो तन उरभाय रहो ।
नागरिया नागर दोउ राजत लाजत मृदु
मुसकाय रहो ॥

४

कुञ्ज पधारो जो रङ्ग भरो रैन ।
रङ्गभरी दुलहन रङ्गभरे दुलहा श्याम सुन्दर सुख देन ॥
रङ्ग भरी सेज रचो है रङ्ग सो जहां रङ्ग भयो
उलहत मैंन ।
रसिक विहारी प्यारी दोउ मिलकर करो रङ्ग
सुख चैन ॥

५

चतुरङ्ग गायन गाइये रिभाइये रघुनाथकीं स्वर तान
ताल सों राग डाट सो स्वर सम सा मान मनाइये ।
तननन नूं द्र द्र तूं तदीम तदीम नादर दर दर द्रद्रद्र
द्रद्रतूं तनुम उद तद्रनूं द्रतनूं यलल यलललूं लाइये ॥
सा नि ध प म ग रे सा सा रे रे ग गम म प प

ध ध नि नि सप्त प सप्त प स धाइये ।

सप्तस्वर तीनग्राम एकईश मूर्च्छना गुणोजन सममान
ज्ञान पाय परस पाइये ॥

६

ऐय ऐय्य ऐय ऐय्यं धा धिलांगता धिधि कुकु भाइये ।
धिकिटित धृत न थूं थूं न मृदु मृदङ्ग मिलाइये ॥
परन प्रति प्रति पधति मन उदति यदुराइये ।
पद तराना पराक्रम प्रेमरङ्ग त्रवट सुनाइये ॥

०

सिया रघुवरके चरण उर ध्याजं ।
दशरथनन्दन जनकनन्दिनी दोउअनको शिर नाजं ॥
और नाम तीरा जो जानो राम नाम चन्द्र जो गाजं ।
जानकीदास राम राम इति शङ्कर शाख सुनाजं ॥

परज—तिताला

चरनन सोस धरे दे वो देवा तेरे ।
मधु कौटभके मारन कारन हरिको जाग्रत दे दे वो० ॥
तारे देव मार महिषासुर मारे धूम्रलोचन
चण्डेदे वो० ।

सब वलदान भए बलगल सुन शुभ निशुभ
डरेदे वो० ॥
ज्यों ज्यों मारे त्यों त्यों बढदे रक्तवोज मुखमें दे वो० ।
शुभ निशुभ मारे राक्षस कुलवाहन सिंह सोहदे वो० ॥
ब्रह्म ईश जगदीश इन्द्र मुख जय जय कार करेदे वो० ।
देवो सुरत समाधि वेश वरदे तुसो बिन्द पहाड़ा
रहेदे वो० ॥
प्रेमरङ्ग कहि सप्त शतिक जश शरण तु सांडो
लहेदे वो० ॥

२

प्यारी तेरे नेणां लगेदे केबर कारो ।
नैना नाल लगदे वारो टिल बिच चुभदे वो
प्रेमरङ्गदी जिन्द वारी ॥

३

भज मन कृष्ण गोकुलके वासी ।
मोर मुकुट शिर छत्र विराजे कुण्डलको छवि खासी ॥
वंशीवट कट निकट यमुना तट वंशी बजावे
सुखराशी ।
सांवरी सूरत देवकृष्ण मन वसी जन्मकी दासी ॥

४

कान्हा रसिया वृन्दावन वासी ।
यमुनाके नीरे तोरे धेन चरावे मुरली बजावे
मृदुसासी ॥

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे श्रवण कुण्डल भलासो ।
मोरांके प्रभु गिरधर नागर विना मोलको दासो ॥

५

लागेलो म्हांरो प्राण सजनी श्याम सुन्दर नट
नागरसो ।
नेक न होत पल ओट सांवरो नेन सैन ब्रजराज
कंवरसो ॥
एकटक रहत निशवासर गुरुजन निडर निडरसो ।
हो तन मन धन ऊपर वारो चतुर सुवर युगराज
सुन्दरसो ॥

६

आवो शलोना श्यामजो थाने सुकडी आपुरे ।
शुकडी आपु भुकडी भागु है इडे राखुरे ॥
आतां जातां आंखड लो लागो केण पेरे लाज टापुरं ।
घमक घुघरडा छन्द हुतो घूँघट मा टापुरे ॥
श्यामाटे नथी घेर आवो नरशीना सामो हैडी चापुरे ॥

७

रचो री वृन्दावन रास गाविन्दा ।
चलो सखी देखन चलिये नवल अनन्दा ॥
खच्चिरी सारङ्गो बाजि और मोरचङ्गा ।
हैली धन वंशी बाजि मधुरी मृदङ्गा ॥
नारद आए ब्रह्मा आए गौरी गणेशा ।
नन्दी चढ़ कर शम्भू आए अद्भुत वेषा ॥
यमुनाके नीरे तोरे शीतल सुगन्धा ।
ए पद गावे स्वामो रामानन्दा ॥

८

निरख ऋतुराज वारोरी निरतत रासविहारो ।
सब गुण भरी किशोरी राधा प्रीतमके सङ्ग प्यारो ॥
तातथेई तताथेई बोलन मुखते पग नूपुर भनकारो ।
उरपति रपगत लेत सुलेप सो सरद रैन उजियारो ॥
बाजत बीन मृदङ्ग सुरस सुर मिल गावत ब्रजनारो ।
केलकुञ्ज वृन्दावन वीधिन सुख वरषे बलिहारो ॥

९

अंखियां श्याम मिलनकी प्यासी आप तो जाय
हारका छाये लोक करत मेरी हांसी ॥

आंबकी डारो कोयल बोले बोलत शब्द उदासी ॥
मेरे तो मनमें ऐसा आवत है करवत लूं जाय कामी ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमलकी दासी ॥

१०

लेवा रे भैया गोविन्द नाम हरी ।
ज्या मुख में नहीं नाम हरिको वा मुख धूल परी ॥
राम कहत ककु टाम न खरचे नहीं कूट परे गठीरी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जै बोले हरी हरी ॥

११

गऊ चरावनहारा मेरी जान दंभी वाला नन्ददुलारा ।
मोर मुकट और कन्धेनी कमल सुरली मधुर बजावे
नन्द महरदे धन चाराये साड़ा चितचोरा मेरी० ॥
लोकांटे घर रातना चोरो में लुटिया दिन बे चोर
असांडे मन बिच बसटा उस बिन पलक नथारा मेरी० ।
आवन दे सोबादे नी कीर्ति एक न होया पूरा
तेरा दीप नहीं ककु प्यार भाग असाड़ा कुड़ा मेरी० ॥
ममा प्यो दी मैं खरो पियारी साहरडे मनमानी
कन्य बिना कांड बात न पूछे हमें उमर बिहानी मेरी० ।
देश विगाणा लोगा धिगाणा कोन करे दिनदारी
ते बाजु साड़ा हार न कोई साहन बुधबिहारी ॥

१२

मेरी जान लोई वाला तू यार तू साड़ा बे भूरंवा
कमल वारा मेरी जान० ।
काले बागांटी काली तूती कदरत नाल पवाई
उड़ गई तूती टूट गया पिच्छरा तोड़े चला आशनाई
मेरी० ॥
काहे कारण सूरमा पांवा काहे कारण न्हाती
तफलांदी गल हार हमेलां मेनु बितरो दो
नथबेली मे० ।
काले कगांदाबो सोयर काला डरदो बाल न गुदधो ॥
चलोना सइये जीर्थ बेखन चलिये आशक शूली
चढ़दा शूली खिल खिल हंसदा माती मूल
न डरादा मे० ॥

१३

चारो राजकुमार शिकार सी आवत है जू ।
अवध मारग मानुष खरे अभिनव सधु सिङ्गार शि० ॥
बाल वृद्ध तरुणी घरुणी मिल निरखत हर्ष
अपार शि० ।
सुन सुरपुर सी सुरस बधाए जय-जय करत पुकार शि० ॥
पटरानो निज द्वार बधाए भरभर मांतिन थार शि० ।
रावण असुर संहारण हारि बार बार बलिहार शि० ॥

१४

सुनियो बिथा रे गुसाईं ब्रजकी ।
रथकी ध्वजा पीतपट भूपन लखत सबो उठ धाईं
ब्रजकी ॥
जै तुम कहिये जोगका बातें से सब उनहि
सुनाई ब्र० ।
अवण मंद गुण रूप निहारत नयनन नोर भर आई ॥
बहोर एक सन्देसो यशोमत कहत दूरलो चाई ।
ककु आतो नातो हतो हमोसन दोनबन्धु बिसराई ॥
सूरदास स्वामी बालिपन में तब तुम धेनु चराई ।
सो अब धेनु ग्वाल नहीं घेरत मानां भई है पराई ॥

१५

सुन लीजे विनती हमारी मैं शरण गही है तेरी ।
तुम कते पतित उधारे भवजालसे पार उतारे
मैं सबको नाम न जानूं मैं कोई कोई भक्त बखानूं ॥
अम्बरीष सुदामा नाम पहुंचाए हैं निजधामा ।
प्रह्लाद टेक तुम राखी जे जानत हैं सब साखी ॥
तुम खेत धनाको जमायो प्रभु विनहो वोज उपजायो ।
पाण्डवनकी करो सहाई द्रुपदाकी लाज बचाई ॥
ध्रुव पांच बरसको बाला ताहे दरस दिए गोपाला ।
सदना से ना ना नाऊ प्रभु बहोत किए सुकताऊ ॥
मीरां तुमरे रङ्ग भोनो नरसिंहको डराडो लीनो ।
करमाका खीचड़ी खाई गणिकाह पार लगाई ॥
शिवरोके फल तुम खाए त्रिलोचनके घर आए ।
मैं काम क्रोध मद घेरा प्रभु जलदही कर निरबेरा ॥

तेरो शेष आदि यश गावे तेरो वेद पार नहीं पावे ।
क्षणानन्द यश गावे तोपै बार बार बल जावे ॥

१६

आनन्दे नचि जटाधर रे कैलासेर मामे ।
फणीर माला फणीर बाला फणीर कुण्डल काने ॥
दुई आंखी मुदिये हरिध्यान मने मने ।
वामे शक्तिधर दक्षिणे लम्बादर परमानन्दे माति
वामे अङ्गे शोभे गौरी दक्षिणे गोविन्द तार मामे
भोला नाचे ॥

देव सदानन्द नाना यन्त्र बाजे भोमर गाजे
ढताल धरिया नाचे कालशशी मोर बिछे आन० ।
झिमि झिमि डमरु बाजे रामनाम लया सिङ्गा
माथार ऊपरि जटार भितरी बिराजित गङ्गा
सुरधुनी नाचे नारद रङ्ग साजे करि हरिध्वनि
वीणा बाजान मुनि आन० ॥

महादेव शिव शम्भु कैलासेर पति महेश्वर
त्रिपुरारि ईश अम्बापति
रास ताण्डव नाचे धुमकित मृदङ्ग बाजे नन्दो भृङ्गी
साज साजे बम मरा बम बोले बोले आछे हर हर
कहे डोले डोले गिरिजा देले मोहे आ० ।

हरिके कहे द्विज नित्यानन्द भज विश्वनाथे
एडावे यमेर ज्वाला चलि देशा पथे
हटावे मेरु मध्य भज गोविन्दपद आनन्दे वल
हरि चलिवे स्वर्गपुरी ॥

१७

पापी महा सतावी । अकलङ्गी महाकलापी ॥
सुखदेव गुरु में पायो । जिन तेरो ही नाम बतायो ॥
चरण दास आपना कौजे । प्रभु भक्तिदान मोहे दीजे ॥

१८

कारे सबही बुरे रे जधो ।
कारनकी प्रतीति कहा बेखत जतन करे रे० ॥
कीयलके सुत परम पियारो बारे उदर भरे रे० ।
जाय मिलो जब कुल है आपनो कागा जाय छरे रे० ॥

जैसे मधुकर जाय पद्मपर मदमाते मदन भरे रे० ।
ले सुवास अनत उड़ बैठत ऐसे कुटिल खरे रे० ॥
जे बार्ते प्रभु जैसे कहियो प्राणन जांच परे रे० ।
धरी उतार सुखते गठरी बहोतक बोभ भरे रे० ॥
हमको योग भोग कुबजाको धन्य भाग हमरे रे० ।
सूरश्याम मधुपुरी सिधारा व्रजबाल वंशी बिसरे रे० ॥

१९

जधोजी कहे ठकुर सुहाती ।
हमको योग भोग कुबजाको सुन सुन फाटत छाती ॥
जो यश कियो सोई फल पायो सोचत
दिन भर रातो ।
सूरदास दुख तब ही मिट है जब प्रभु लग हे छाती ॥

२०

घाट पर ठाड़े मदन गोपाल ।
कोन यत्न करि भरो यमुना जल परे हैं मेरे ख्याल ॥
एक चितवनि दूजे हियकी रहो लगन उठत
प्रेमकी जाल ।
अवार भई घर सासु रसी है जान देहु नन्दलाल ॥
इतनी सुन छाड़ो नन्दनन्दन गापी करो बेहाल ।
परमानन्द स्वामी मन हर लोना वेणु बजाय रसाल ॥

२१

कदम तले ठाड़े श्रीमदनगोपाल ।
आस पास सब ग्वालमण्डली बाजत वेणु रसाल ॥
मोर मुकुट कुण्डलकी भलकन मृगमद तिलक
लिलार ।
आशकरण प्रभु मोहन नागर प्रेम भग्न व्रजबाल ॥

२२

गोविन्दा गुमानी असाड़ी गली आउरे ।
है प्रीतम तुज विन अति व्याकुल जैसे मीन विन
पानी अ० ॥
मोर मुकट घुंघवारो अलके निरखत रूप लुभानी अ० ।
रसिक प्रीतम सुखसागर मोहन दरसन दीजे
दधिदानो अ० ॥

२२

कान्हा थारि ओलम्बहारो ।
 दूध दही घर माखन करि और मिठाई सारो ॥
 आ मारग न बजैये कुंवर जो हं तुहें राखूं बारो ।
 अनदोखाने दोष लगाड़े ए हीबो के व्रजनारो ॥
 तू तो व्रजनो ठाकुर कृष्णजा हं थारो वलिहारो ।
 नरसोनो स्वामी भले मलीयो हा हा हं अब हारो ॥

२४

हरि सुमर सुमर भव तरणा हो भला करणा ।
 कालजाल मद लोभ मोहमें काहें पच पच
 मरणा हो० ॥
 भूँठ सांच कर कर जग ठगिया एक उदरके
 भरणा हो० ।
 विषय विकार कुमति सङ्गतको देख दूरसे
 डरणा हो० ॥
 यह संसार सार एक श्रीपति समझ परे क्यों न
 चरणा हो० ।
 कामिनो कञ्चन देख लुभाना विभर गयो
 हरिशरणा हो० ॥
 यह उपाय टाब तो पायो चिन्तामणि चित
 धरणा हो० ।
 भाव भक्ति ऋतुमान युगल पद जो चाहे भवदुख
 तरणा हो० ॥
 कामक्रोधको लहर जहर सब विषय आंच क्यों
 जरणा हो० ।
 राधाकृष्ण कल्पतरु शीतल जहां जाय तन
 परणा हो० ॥
 रत्न जन्म पायो नरदेहो कीड़ीका क्यों
 करणा हो० ।
 अधम उधारण दीनवन्धु प्रभु वलिहारो
 भवतरणा हो० ॥

२५

काहू फिर न कही वै बातें ।

जै जै नर इहां सुकृत कर गए वा घरको कुशजाते ॥
 जैसे सती सरा चढ़ बैठे अपने स्वामीके जाते ।
 वाको भेद काहू नहीं जानो सियरी जसु किधो ताते ॥
 जैसे शूर पिलत रण भोतर सहो है अनोको घाते ।
 वाको दरद काहू नहीं जाना सेल लगे किधो साते ॥
 यह संसारउको सब अद्भुत आवत जात कहाते ।
 कहें सूर देह गति एसी समझ न परे इहाते ॥

२६

इतनो सन्देगवा को सुनावे प्यारि हरिको जिय
 प्राण रहै ।
 तलफि तलफि दिन रैन विहानो उनहो
 कोऊ जाइ कहै ॥
 माहे नहीं भावै ककुन सांहावै छिन छिन विरह दहै ।
 लक्ष्मणदाम दया करि आवो को यह शूल सहै ॥
 २७
 रावरो नेह भयो मेरे जियको जाल घरे रहत करि
 वरवस ।
 जोरि रह्यो इतउत न जात काहें थकित भयो पन्थो
 परवस ॥
 काहू कहीं तन मनको बतियां मील लियो मानो
 सरवस ।
 लक्ष्मणदाम कठिन ह्वे लाग्यो देखत देखत लोग
 सहार वस ॥

२८

मेरो गति एक श्रीविदेहनन्दिनी ।
 जाके गुणगण अपार पावत नहीं निगम पार
 ध्यावत चर अचर सकल जगत्वंदिनी ॥
 शङ्कर ब्रह्मादि शेष नारद शुकमुनि गणेश
 भजत उर निरन्तर यमभय निकन्दनी ।
 जाके पदपद्म मूल वन्दत जरि त्रिविध शूल
 नाम जाल प्रबल असुर विहग फन्दनी ॥
 वैकुण्ठ वास चारि लोक प्रकट प्रणत हरत शोक
 कोटि कामधेनु जननि दनुजदण्डनी ।

कोमल चित विदित वानि सेवकप्रद अभयदानि
 जन्म जन्म करनि कलिमल विहण्डनी ॥
 जय जय जन्मो उदार सुरहित महि हरनि भार
 प्रदुभुत त्रैलोक्य विदित विमल चन्दनी ।
 लक्ष्मण तव दास मूढ वरगै कह यश अगूढ
 छन छन दिन रैन राम उर अनन्दनी ॥

२२

रावरै निवाहे बनेगो मेरो लाज ।
 आयो है शरण खल कुमिति शिरोमणि अधमनको
 सिरताज ॥

पाप आपने कहलौ गनाऊं कोटिन चलत जहाज ।
 लक्ष्मणदास पुकारत तुमसो दशरथसुत महाराज ॥

२०

नयनन मेरे मोहनी मूरति श्याम पोष हितकरि
 आनि बसावो ।
 निग टिन घरी पल छिन नेकु न करो न्यारा निरखि
 निरखि मन सुख पावो ॥

इन्दु सी वदन जलजात से युगल लोचन मदन
 धनुष भौंहे कटिल रूप समावो ।
 लक्ष्मणदास सुखविलास रावरो दरस माह निमिष
 न बाट जावो ॥

२१

रङ्गभोजि रासमें नृत्यत लाडली लाल ।
 यमुना तीर शुभग वृन्दावन कर मण्डल ब्रजबाल ॥
 टुमक चलत गति ललित त्रिभङ्गी हावभाव मिलि ताल ।
 बांह जोर हृषभानुनन्दनी लटकि लटकि गजचाल ॥
 बढो है कामको कामकुतूहल अवलोकत नन्दलाल ।
 लण तोरत वलिहार सखो जब गावत मदनगोपाल ॥

२२

मिल गावत नार अयोध्यापुरकी ।
 घर घर कोजी सब घर घर पुरकी ॥
 होत उछांव अवधपुरमें नार फिरत हरखी हरखी ।
 बजत मृदङ्ग घन घन ज्यों गरजत मोतियनको
 वर्षा बरखी ॥

लडु तरुणी बाल शशिवदनो गावत राग समसुरको ।
 अग्रदास वलि जात कौशल्या वार वार दशरथसुतको ॥

२२

भूठा जवाब दोज्ये महाराज ।
 भलाहो पधारो शो करके महलां घणाहो घड़ा देशो
 गहना ॥

लाखी न जाय करमको गति कहीं लाखां पड़त
 या लहना ।

हंसाराम हरि अब कांइ हारूं जौल वचन
 लाखी सहना ॥

२३

आइलो रे मोर मन्दरवा आ आ गुणन भरे गुणवन्ता
 मइयां देखत हो नैननमें अति ही कुबोलरा ।
 जन्म जन्मलो सङ्गवा न छाडूं हो चरण न गडे
 रहो हो देहो असीसवा सदा रङ्ग युग युग जोवे दिन
 दुलहा महम्मदशा चतुर रङ्गोलरा ॥

२५

आयो आयो रे कन्हैया म्हारि टिग कहा करा
 मिभ्रमाणो ।
 मुरलीवाला म्हारो सुधबुध लोनी जानरङ्ग सुनके
 ओचकी तान मानी ॥

२६

मूलन मूड सां ताडो राइयां बे लखो लोग करण
 बदखाइयां ।
 चूचक दे घर घणीयानो धोयां हो रसिया लेदो जाइयां ॥

२७

केसरिया कर्तक दूर भला वा म्हारो मारुडो गाडोडा
 साथीडा ।

पलंगां बैठो मोजां मार्ण मेरा मियां मुजरा
 लोच्यो म्हारो नाथोडा ॥

२८

थें म्हारि डेर आइयो हो राजेन्द्र राजा उम्ह उम्ह
 थारि बादरो ।

सदा रङ्गोत्तरी व्यथा कीन सुने मोविन महश्चद
मोविन आदरी ॥

२५

ढोलन मँडे आया मैं की करां मिभमाणी ।
तेन फुकीरांदा मदद होई अली नवीदा साया मैं ॥

४०

रांभड़ा टोलीयांगं मारुजी धं म्हांकि वलिहारणा
मारुजी ।

सुनियो म्हांरो सर्वा सकेली बे म्हें थंके चाकर रहना
बे म्हें थंके वलिहारणा मारुजी ॥

४१

बाला राज बांका म्हांरा राज बांका ।
बांका घोड़ला बांका कमर कटारा राज ॥
माधे पंच रङ्गली पाग कुसुम्भी पाग कुसुम्भी
माणा राज ॥

अधिक सुहावे घुंघट उलट पट मं तक
भांका राज ॥

४२

जर्भोजी रसमाण लांडा बे रङ्ग माणं के जर्भो म्हांरो
लांडी माणं केसरिया बाणा के निपट निदान वो ॥
बांकाइ घोडी थारो बांकाइ जोड़ी मुण्ड थारो सब्ज
कमान वो ॥

४३

म्हांरो जिन्द लगी बे तांडे नाल सोणा मियां तुसी
वैजावो ।

आट पहरौला अटारङ्ग कतार टुक बेख माड़ी
हाल सो ॥

४४

सुधबुध मोरी मति गइली प्राणते पिया विन एमा ।
जिया की लग्न कोउ कहा जाने जो जाने तंपे
भइली प्रा ॥

परज—धीमातिसाला

सेभड़िया सूनी रे धे वाभो आज म्हांरे राज ।

म्हांरो सायबां विदेशो विरमोजीवन शो आ कैल बे ॥
होजी म्हांरो लाज म्हांरो अरज सुन सुभावां ।
म्हांरो शायबां राजीन्द्राना खाले मदशङ्की आज ॥

२

बे मानू सठियां मार जगाइयां ।
इन वेदरदा नाल की समभाइयां
दरद जाने रब साइयां बे मानू ॥
याहीं रम रहणा वो भला सोणा ।
आयकींदा थाणा मइबूवांदा मिलणा ॥

३

अर मेरो चावीरो आयो के । रङ्गरी बातां लायो के ॥
बनरीको बनरो आयो रङ्गरी बातां लायो के ।
आजां मारं सकरड़ी गोणां लायो के ॥

४

धे तो म्हांरो कदर न जाणदा बे मारुड़ा ।
इतनी अरज म्हांरो मानले प्रतापसिंह दिलदी
गिला नहीं माणदा बे ॥

५

नयनी मूलन मारी बे ।
नयन तुसाड़ा बरछी दी नोकां सान चटी तरवारी
चम्पटी माला गर फुलींदा माला तारो बे ॥

६

अणी अणी मेड़ा टोलनो सइयोनी में साइब
सुरजन लो धानी ।

अणो भोली मा ए मेरा लान अनी जोन बे सराइयां
माण कलधा अरी ए मा मालकल धानी ॥
सोसर भीजे णी चोलनी ।

रूपा में देदियां सोना में देदियां यार न देशां तोलनी ॥

७

सायबां बे राज म्हांसो अबर लगावो निलजी
गावो गारी ।

ले कोननन लगी अगव डे पिछवारि दे तारी
वलिनहारो बोल सभारी साय ॥

तू करली ज़ालिम फेर वो मन मेरा मेरा सुश्रुताक
तेरा ।

सगरी रैन भोहि तलफत बीती किसका तम्बू डेरा ॥

सवाजी न्हारे वो तुम मनरी बात धे काई' जाने ।
आप रङ्गीला धारी सेज रङ्गीलो आपही आप
पहचाने ॥

परज—यत्

माधो जी न्हारी चुड़ियां करके सारो मरके जियरो
धरके हियरो फरके नूपुर जेहर तेहर धरके ननदी
गुरुजन जागत धरके ।

हाहा खात हँ पइयां परत हँ दरक दरक अंगिया
दरके तनिया तरके ॥

परज—पञ्चायतन

खण्ड मण्ड ब्रह्मण्ड शिव शम्भो महादेव
देवदुख भञ्जन ।
दैजनाथ विश्वनाथ पिनाकपाणि शङ्कर गिरिजापति
मनरञ्जन ॥

२

अबनो हरि हरि लव लागी ।
सब ब्रज को यह माखनचोरा नाम धरे वैरागी ॥
कहां छोड़ी मोहन मुरली कहां छोड़ी गोपी ।
मूंड मुंडाय डोर क्यों बांधो माधे मोहन टोपी ॥
मात यशोदा माखन कारण बांधो जाको पाज ।
श्याम किशोर भये नव गौरा चैतन्य जाको नाज ॥
पीताम्बर को भाव देखावत कटि कौपीन कसे ।
दास भक्तकौ दाही मीरां रसना छण बसे ॥

३

वही वंशो बाजे कालिन्दो तीर ।
उमग चली सांवन सरिता ज्या ब्रज युवतिनकी भीर ॥
हाय दई निर्दयी मोहै रोकी अब कित जाज
मीरी वीर ।
नागरीदास प्राणपति आगे पहुँचो छाड़ शरीर ॥

परज—भूपताला

आदि मध्य अन्त योगादि योगी शिव भांग अफीम
रिख ए मलङ्गी ।

नाभिके कमल तें तीन मूर्ति भई भिन्न जाने सोइ
नरक भोगी ॥

जटा मध्य गङ्ग हर सङ्ग नित बालके भस्म लगाये
भौर भङ्ग खाये ।

कनकफल रथो आपके आपने आप पाये ॥
लाके नाद अनादि घूरे भानु पक्ष पूरे खाक मुखर
धेनके अफीम खाय किये ।

भालमें चन्द्र आनन्द निर्भय सदा सोसको चंवर
पवन किये ॥

वाघाम्बर वृषभ वाहन त्रिशूल डारा नयन न्यारा ।
सुमर हरिराय सदा शीतलपुरो भुक्ति मुक्तिको
देनहारा ॥

परज—तिताला

धन्य वलिहारी जी न्हारो राज हो राज कुमार छे
बुंदोलड़ी राज ।

राजेन्द्र फूल गुलाबरो धारो बनरो केसर क्यारो
रिभण रिभण बाजे है घन ॥

२

मान निहोरा मोरा अब ही जात रजनी सुन सजनी ।
रूप यौवन धन दिवस चारको घटत जात
थोरा धोरा ॥

३

जो मुख देखत सोई मोहत है हरि रस वस
भये तोरा ।

हस्तराम लटू भये भटू चाड़े दोउ कर जोरा ॥

४

सुन लीज्यो जी मांड़ा वेग सजन धे रसिक भ्रमर
मैं तो कलियां ।

बागां री खेल करो राज न्हारा सायबां धे न्हाने
मन रङ्गरलियां ॥

तरे तरे रा फूल फूल रहाछि सहल करो
 हिल मिलियां ।
 हस्तराम हरि कबरे मिलोगे अबही मिलो तो
 भलियां ॥

ना जानं हरि तेरी हो माया ।
 कामी कुटिल कुचाली कुसङ्गति मेरी है यादुराया
 प्रगट करकर फिर भेटे काहू भेद न पाया ॥
 राई होय पर्वत पर्वत होय राई रङ्ग करें राजा
 राजा रङ्ग दया ।
 जो वलिहारी द्रवो दीन पर गुरुमुख भेद बताया ॥

कब आदिगे म्हारे बलमा पियारे अब श्यामसुन्दर
 सुख देना हो ।
 उड़ रे कागा सगुण मनाजं वेग जाय तुम कहणा हो ॥
 पल पल पत्य निहारत बीती कल न परत
 निशदेणा हो ।
 हस्तराम हरि कुवज्या सों मिलो सुख पलङ्ग
 सुख सेणा हो ॥

ते काहे बजाई वीण बे ते सांवर मनमोहन
 गोपाललाल ।
 अक्ख सुनत सब सुध बुध विमरो एसे डारे हरि
 प्रेमकी जाल ॥

जधो इतनी विनती जाय कहो मनमोहन सांवरेंसां
 अबही ।
 हरि विन कल न परत घरी पल छिन निशदिन मो
 जोवत बीत गइलो एतो प्रीति काहे करी प्यारे
 तबही ॥

तुम विन वृन्दावन वन घन घन गज गो ग्वाल बाल ।

और नन्द यशोदा ब्रजकी बाल भावनहार कहे
 भए छे श्यामसुन्दर रटना
 रसना लाग रही कान्ह कान्ह कर रहै पुत्रही तबही
 तबहीरे ।

परज—धीमा तिताला

हो राज महलां करो हो राज मोतिडा अलसावे
 हो खुमारो राज ।
 डावर नयनी चिन्ता लङ्की कके ककावे मुणे भावे गुण
 अवगुणमें मत जिय धरो हो० ॥

छांड मत जइयो बे यार ॥
 वृन्दावनके घाटपर उलटो देखी चाल ।
 जिम गिन मारिव एक दिन में सो सो वार ॥
 प्रेमनगरके घाटपर उलटो देखी चाल ।
 घायल चुन चुन मारिए खूनो फिरे खुशाल ॥

परज—खम्बावती

मीन दोन धांजा तूतो बड़ोहो दिवान बड़ो दीवान
 हो मान ।

पंजतन पाकहाज दे ईमान आनहो में ॥

हरियाला बना आया रे लाहिना बना ।
 सर मोतियनकी सेहरा विराजे हारा लगे मोती पनारे ॥

तेरो राजा वो मैं नू प्यारो जो करटा सों दिलदारी ।
 शोरी उमग उमग महरबान आजम मियां मोहन
 होदा वलिहारी ॥

भालनी पइया इस्क रंभेटे दे नाल अनो वेखो
 सदयो हाल बे ।
 दुखांदो रोटी वारो सुलांदा सालना बे मियां हुबांदा
 बालन सानू बाल बे ॥

चल बे दरियावांदि कंड़े अबे ।
 असी सोणिया सांवल लुभानी हां हां हां मीं ॥

६

भङ्ग बे राबीदे मेन दरसन लाइयां बे यांणा मे
तेरही यानि दूरचीनावांदि मै तो वारो वै दाना साईं ।
बांकोइ घोड्यारो बांकोइ जोडा माथे पञ्चरङ्ग
पाग सोहनाजो म्हांरा ॥

०

खेडेदा शिर साईं' चाखदा बना मै तो तेरे नामदा
लेवां बलाईं ।
सेलाहुण वीना वरनाईं ॥
चढोइया वीर जा कहियो उस यारसो संदेशवा हमारे
ताके कसमरमे बकदमे ।
हैं खडे तेरे इतजार काजम गुन्हे चि करदे
खुरोदारा बाजार ॥

परज—तिताला

नेवरिया राम तुमही लगानो पार ।
जग दरियाव लोभ मोह ममता सूक्त वार न पार ॥
कैते पतित उधारे गिरिधर जहां तुझे खेवनहार ।
सुन वलिहार कान ए विनती अबके मेरो वार ॥

२

आली मोहे नागरनन्द डगर बोच गहियां ।
डगर बोच गहियां ही वरजोरी अङ्ग लइयां ॥
रोकत टोकत यमुना निकट हट निपट खोट जइयां ।
मै वरजोरी भकभोरी मोरी सखियां गहे बहियां ॥
एसे ठीट कन्हैया सुन मैया हो कैसे ब्रज रहियां ।
लपट भपट दपट लागन जाय मोरे ठइयां ॥
नयनन के सैन देन वैन के बजैया बोलत मृदु बोल
बोल हंस हंस गारो दइयां ।
ज्ञानदास प्रभु नेक न माने अपने जियकी बतियां
ठाने कहु न बसात मेरो लागूं वाके पइयां ॥

४

माधव विलस बिदेश रहे ।
अमरराज सुत नाम रैन दिन निरखत नीर बहे ॥

कुन्तीपति पितु तात नार घर ता अरि अङ्ग दहे ।
घट सुत अरि तनया पति सजनो नाह नेह निबहे ॥
मारत सुत पति नन्दग्रहको हरिभख वचन कहे ।
जस ऋतु नाम जानि अब लागी ताके नेह रहे ॥
शैलसुता पति ता सुत वाहन बोल न जात सहे ।
सूर श्यामके दरश लहे विन ब्रज छिन नर न रहे ॥

०

ब्रजके निकट जाय फेर आयो ।
गोपी नयन नीर सरिता मह उतरत पार न पायो ॥
तुमरी मोख नाव सरिता मह चावत पार गयो ।
योग ज्ञान जो तुम कहे दोनो सब परिवार लछो ॥
इत ते चल्यो जाय नौका उत ते पवन भिकभारो ।
सुरत वृक्ष सो मार डार गहि तोरो ॥
केते दूरलो ही वह जलमें अङ्गन बुडकी खाई ।
ना जानो यह योग कुन्द के कत वह गयो गुसाईं ॥
जानत हतो थाह वा जलको तोखे हकी दोर ।
सूर सो कथा कहा कहूं उनको करो प्रेमको भोर ॥

५

उधो ब्रजकी दशा विचारो ।
ता पाछे पुनि आपनि योग कथा विस्तारो ॥
परम चतुर निजदास श्यामके सन्तत निकट रहत हो ।
जल बूडतु अवलम्ब फेनको फिर फिर कहा
गहत हो ॥
हो वह ललित मनोहर आनन कोनो यतून बिसारो ।
योग युक्ति और मुक्ति वारी वा सुरलो पर वारो ॥
जाके उर बसत श्यामसुन्दरघन तहां निर्गुण कैखे
आवे ।

सूरदास सोइ भजन बहाऊं जाहे दूसरो भावे ॥

परज—कनिडा

धारो देश रूडा के जी भारो राज मारवण ।
उदियापुरदी कामनी गढ़ बांकी चित्तोर
धूमधुमालो घाघरा बांकी नयनांकी कोर
बिजियापुरदी कामनी नरवरगढ़ी रूडी लाग के जो ।

१

तसादीयां मैडीयां आखीयां मोणु यारदे मिलणनू ।
भब आमी बे बी बांक स्थाब जियाकी मेडा वास्ता
सांवलियाबे धटाकारियां टिन रात पई बरसे दोयां ॥

२

मारुजी थाने जान न देशां मारे ।
पायल मोरी रुनभुन बाजे सास मनद मेरो
जागे मे कैसे आजं ॥

३

खंचे नी डंगरला साडे कोल चढो नहीं जाणदा बे ।
एक सडीवारो निकली नाजक दूजे बुलावे भनभादा
साडेकुं ॥

४

रांभण मेडी जिन्दड़ी तरसामी बे आद्या जङ्ग
सिहाल बेण जामी ।

हे कोड रांभेनृ आन मिलावे मत्ररङ्गदे दिलादी
पर न पामी ॥

५

समधन री तू दादड़ीनी कुडिए गोदी में यार
छिपाय लेनी ।

तुभनृ हाथीदा भावे चंडा तेरी खरकी अनमाली ॥

६

हो राज मे से बोली म्हासे बोली ।
मे तो थारो दासी वारो जन्म जन्मकी बे त
घूँघट पट खोली ॥

७

माभली रात मारुडो मारु डोलो अधक
छकावे जी थे म्हारा मन ।

सगरी रेन जगावो सदारङ्ग कहीं सखी अरज
म्हाकी राज माण ॥

८

साडे पेर नालबे बन्दी दे अनबट नाल बे ।
भांभर हलीहली बांसोड़े पेर सादरे दे कदम चली
मेडा मियां यार मणावन चल चलली बे ॥

१०

हाडो थाने जान न देशां ।
कमर कटारो थारो बांकडोरे धरे बूदी तरबार
बरे बून्दे बचे ॥

११

चञ्चल नयना मतवारि रे तिहारि कोन बिरमाए
हारि कजरारे ।
देखो प्यार दिल घायल कीर्त जिन्द पुकारि हुणकारि
बिसियारे ॥

१२

साडे पेर नाल बे बन्दी दे अनबट नाल बे ।
भांभर हली साडे पेर नाल बे सादरे कदम चली
सोरी मियां यार मणावन चली चली बे साडे
पेर नाल बे ॥

१३

दारुडी हो महाराज पिवा क्यों न राज
दारुडी रे पिये मोहे आवे दूनी लाज ।
रेन खुमारी थारी भली ए लगत हे
भर भर प्याले म्हाणे दोज्बो म्हारो राज ॥

१४

ए री हो तो परुं पायन बाजो कोई आन मिलावे
चतुर सुधर सुरजन बालमुवा ।
जानी पीउ तन मन जिउ तुम बिन कल न परत
हा रे मोत पियरवा सुरजनवा ॥

१५

कमलीदी वारी बे नदाना मियां
अला कमली दी वारी बे ।
नदाना मियां अला इशक तु साडुडो बान पई बे
यार बे ॥

१६

दारुडी री बात कजरा करे हो राज प्याला
पीवो चतुर सुजान ।
मे तो थारी दासी वारी बे तू म्हारा सायबां निकसी
रोप्या थाने जभी म्हारो राज ॥

१७

मारुजी सो कह्यो राज भमलारी भमलारी बात ।
चन्द्र सरीखो झंडो मुखडो बिराजे हांजी काई
गोरो गोरो गात ॥

१८

मोती रोड़ी चाटो थासे लागो म्हारो राज लाधो
होते दीज्यो जी ।
सालुडारी सलबट मांतिडा में भूली छे राज
नीदडियांमे घूला छो राज ॥

१९

नयनां नींद न आवे मांडी सडयोनी राभण नजर
आवदा मेडे ।
चश्मके दारो खारं बूद चं खुशपसन्द आरा के गमियार
बुवद चं खुशपसन्द सुथडाई इशक जगाया मेडे ॥

२०

ठाकुर रे नू आइयो म्हारे डेरि सुन मारुजी हो राज ।
सोने दा सुराई मीनिदा प्याला आप पोवे
म्हाने प्यावे ॥

२१

हो जी हो जगो जा म्हारे निदरा नदान ।
मतवारे टोला सुन मारो बात ॥

२२

छाड़दे लङ्गर घर जान दे छेनवा ।
यमुना जल भरन जात रह्यो हमसो करत बरजोरीरे
लङ्गरवा ॥

परज—एकताला

प्रकट प्रीति करि रसके बस भए सरस वदे बिसर गये
बरबस पिय परबसमें परके ।

केसरका रङ्ग लाल बेसरका रङ्गराग मोतिमसो
माग भरे प्रेम भरके ॥

सुनरी सुरङ्ग रङ्ग कुचकी अङ्गिया उतङ्ग बसके अनङ्ग
अङ्ग अङ्ग अङ्ग करके ।

सुन्दर तनके सिङ्गार जीवन निरखी बहार जीवन
सो कर पियार हार हिये दरके ॥

२

मारो डाने जगावे छे न्हे तो काई राज लाज
पाज म्हाने धनी आवेछे न्हे काई जानो राज ।
सुनियोरी भेरो यार परोसन आधी आधी रतियां
म्हाने जगावेछे न्हे काई ० ॥

३

हिली हो काई करो माई नन्दनन्दन बिना ककु
न सोहाई ।
मोर मुकुट की लटकमें मन अटक्यो भावे नहीं
खान हर विन सुध बिसराई ॥

४

निपट हितको सुध विसराय डारो मोहन प्यारे
कठिन भये श्यामसुन्दर जियते विसराय डारो ।
नई प्रीति नयो रङ्ग कीना हरि अनत जाय एसे निर्दयी
व्यथा नेक न विचारो मारो ॥

परज—धीमा तिताला

जधो प्रीति करो पकुतानो ।
हम जानी एसी निबह्यो उन ककु आरहो ठानो ॥
और सो हिया कोई न पतीजे बालत मधुरी बानी ।
औरनको वेराग सिखावत आप भए रजधानी ॥
अब तो मेज सुहावत ना हरि सोचत रैन विहानी ।
जब ते गमन कियो सधवनको नयनन बरषे पानो ॥
जधा कहियो श्याम सुन्दर सों उर अन्तरके जानी ।
सूरदास प्रभु मिलकर बिकुरे ताते भई हे दोवानो ॥

२

जधो सुन सुन आवत हासो ।
कहां वै तीन लोकके ठाकुर कहां कंसकी दासो ॥
इन्द्रादिक को कौन चलावे शङ्कर करत ख्वासो ।
नीस मनेती बन्धो जन जाके सेस सोसके बासो ॥
कमला जाके वसे निरन्तर कोन गिने कुब्जासो ।
सूरदास प्रकट कर बांधे प्रेम प्रीतिकी फासो ॥

परञ्ज—नितान्ता

बिछो बे मारी बेलोको ।
लगीयाणी बिरह साईंदे नाल इशक दे नोको भोकां
आवी बे सुनु यार बे नयनरो दोजार मजारी ॥

२

अहो वेख पई सुराडयां या रब्बा मैडे पाले कोल
पे बल देनी रहे सुसाफिरां यार ।
मैडे सङ्गण लड़के गए मेहर न पाइयां उना जाल
मा मानू सूतानू छड़के गए
कते विछो है विछड़े या रब्बा ओ गया सो गया
गए आमी ॥

मै सूतियां सुहाग बोच यार ।
पुनूदे गले लगमं वांछट टोला मे राशो नहीं या रब्बा ॥
मेरी बूकुल गदो अगार लागि लानो सहेलियां
या रब्बा तुमो बहोल तीदे कोल ।
सभो धीयो जीगणा या रब्बा मैडे पुनू नू लावो ढोल ॥
हत घिणा वो तकड़ा या रब्बा तुसि एंद

घिणा बो ताल ।

मैडे शिर बदनामा दे गया या रब्बा औह घड़ियन
ढंठा कोल ॥

भूलो साची थलां दे या रब्बा मैनु मोत आउके बलो ।
इथे न कोई तकियां न आसरा या रब्बा ना कोई
कुञ्जगलो ॥

मेकू का तरफ खुदा यदीयां मेकर कर बांइ खला ।
नारो धोया ससाये या रब्बा ॥

कोई तेनू बोलाच घणै मैडे पुनू दो एहियां सूरत या
रब्बा कोई विरलो माव जाण ।

आधी रात निखण्ड है या रब्बा इना होताने लाई
सनदेके पुसराबदो या रब्बा ॥

मैडे पुनू नू टूंटता वनन पनत ठदे दो या रब्बा ।

मैडी पेंडी पड़न बबूल हो केते पुनू नू मिले
या रब्बा नाही तो मरणा कबूल ॥

३

हो जो सोलाल लागेहो राज पानि सायंशा जी
नित निहोरा राज ।
रहे तो थारी दासो वारी थे म्हारा सायंशां अरज
धाके महाराणी ॥

४

मैं वारी वारी वारोबे राजेन्द्र वारी मे तो बलिहारी
थारी मे ।
रसिक रङ्ग थारि मिलवे कूंदो नैणांको मारो बे
राजेन्द्र ॥

५

अहो गोरी दा साबला यार ।
सांबरा मेरो जान बे मैंडा रब्बा लाया सांबला
लोकांदि भावै चाक सहेलो सांडे भावे रावजा यार ॥

६

आज म्हारे मङ्गलरो है रात ।
आवो म्हारे बमना बेंठो म्हारे अगना
किस गुण बिचारा शुभ के साहागकी रात ॥

७

तूं करलेरे जाल फरेब मनमे सुप्रताक रहेदेरा ।
तेड़ेरे बैखगनु चतुर सुघर सुन्दर बालमुवा
मेरा जिय चाहे घनेरा ॥

सगरो रयन मोकूं बाट जोवत भई किसका तंबू
किसका डेरा ।
आवो सजन मिठबोलना साजन तनमन वार वार फेरा ॥

८

सबाजी म्हारे बे तू मनरो बात थे कांई जानो ।
आप रङ्गीला थारी सेंज रङ्गीली आपही आप
पहचानो ॥

९

रांभा तेडे मुखड़ेदी लेवे बलिहारी मैनु लगदो
तेडी सूरत प्यारी ।
इशक महीबत आद्या कितवलकु को सोहनी
सूरत बेकरारी ॥

१०

भावदियां बे मैं नू तेंडी अंखियां ।
सेरा बांगू बे करण कलाची धाबदियां ।
नावे मैं नू कर तेंडा दिलव मेडी लाग रखियां ॥

११

नयनी मूलन मारीरे ।
नयन तू साडी बरछी दो नोकां सांन चढ़ो तरवारीरे ॥

१२

चमेली माला गले फूलदो माला ।
नयन बजहन तन कोन सो पूछिए कीई लाल
चम्पे घाला ॥

१३

मारवण बाला बन्द तो मोछो हे ।
रांज हांजो कांई अमलारा काक्या म्ह के राजकुमार
राजथान खमाजी खमा कर लेश्यां ॥

१४

बरछी मारो वे नयना बीच तोल ।
सुन्दर श्याम मनोहर मूरत तू मारा अनमाल ॥

१५

कांई करां मनुहार बे साजण आया ।
छत्रपति म्हारे महल पधारना बे तन मन दोनो
वार बे सा० ॥

१६

बीरती बुलावे दमदे वो ।
घडा पल मैं नू चैन न दे दे शोरो नजारि कमदे वो ॥

१७

डाबर नयनोरो मानी गरशानि म्हानि शानि बुलावे ।
थे कि जानो म्हारो मनडो लाग्यो हेवो माणी
गर पोळ्यो माणे आन जगावे ॥

१८

मारू जी सो कहे दीजो राज मारिरे मनकी बात ।
मैं तो थारो दासी सायबां जन्म जन्मकी थां सो
सग्योछे म्हारो काज मा० ॥

१९

शाम उनीदा तू मेरे घर आया वो ।
पंथुडामे जोई जोई दरस देखावो
खूब बलिहारयांदां सांवल सानूकी जुदा वो ॥

२०

साजननू वेग मिलामी मेरा प्यार हो जिन्दडीनू
आन जीवामी हो ।
सेज सूमती वारो नोद न आवे कधो तो दरस
बेखामी हो ॥

२१

महाराज मोसो कुंडी बे कहियोजी ।
बालम रूम रहां के होजो बलमा सदयां
जाणे के जी वारो राजदुलारीको बात सुनजइयोजो ॥

२२

कांई जाणा राज म्हारा मनकी हांजो म्हारा
मनकी हो बात ।
छत्रपति म्हारे महल पधारयो राज पकी पायल
म्हारी भूमकी हो राज ॥

२३

आवां न करेस्या राज म्हारे डेरे आवन ।
अनष्ट बाजि म्हारा पगका बिछुवा लगी याद नहीं
भूलदी ॥

आप न आवे वारो ना निग्व भेजे जिन्द तु साडे
नाल घूलदी ।

राजा पछछजो जोजो राजा राणा
राजदुलारी री बात सुन जाइयो लोग कहे के
थाणे साजणा राज ॥

२४

थे तो मो सोभली वो राज कोनी राजवर म्हारे
नहीं महाराज थे ।

छत्रपति म्हारे महल पधारयो राज पायल
म्हारी हली वो राज थे केसगियाजी म्हारे ॥

२४

क्यों गई यमुना पानी जानी मनमोहन मिल गयो ।
बरवस मोरी बइयां भकभोरी चितवनमें
रसबस कर लारी न जानुं कोन चेटक चित ह्वै गयो ॥

२६

तार्त न बधा भक्त भली तिन तिनकी मत
नेकु न अनत चली
श्रवण परीक्षित तरे राज ऋषि कीर्त्तनक शुकदेव ।
सुमरण करि पज्ञाद निर्भय भयो कमल हरिपदसेव ॥
अर्चन प्रथु वन्दन सुफलक सुत टास भाव हनुमान ।
सखाभाव अर्जुन व्रम कीर्त्तन श्रीपति श्रीभगवान ॥
बलि आत्मा नमर्षण करि करि राखि आपने पास ।
अति मति ऐम इह्यो गोपिनसों बलि परमानन्ददाम ॥

२७

किसो बहाने आव सांवल ।
नयन लगे तुमी नाल असाड़े सोहन रूप देखाव ॥
इन गलियां बिच फिर वो महरदे मेनू देखणादा
चाव ।

चलत चाल सुण्ड संमंत्रो विहारी बलिहारी
यानू जीवाव ॥

२८

आयारे मेरा सांवल प्यारा ।
मोर मुकट पीतःखर मोहै उर वंजस्तीमाल सांवरा ॥
लटकन चलन सुमकान चितवन मोहत प्राण हमारा ।
नन्दनन्दनकी कव निरखतही उमानाथ तानको वारा ॥

२९

भइलोर आज मिलनवा मनमोहन सुन्दर सनवा ।
राजबहादुर निरख दुख गइला नन्दनन्दन
मनमोहन कनुवा ॥

३०

देखिये तो समान एक ठौर ।
कृतोश उपर चन्द बिराजे तापर शोभा और ॥
घर पर गगन गगन पर धरणी ता उपर विस्तार ।
कोटिन कोटि तरैयां मोहै रवि उनये भिनसार ॥

गुण निर्गुणकी शोभा बरण सब पर एही भाव ।
सूरदास यह दन्त कथा नही पण्डित अर्थ बताव ॥

३१

राधे तरे नयन किधो बटपारे ।
चितवत चित वाणसे लागे धूमत जो मतवारे ॥
अञ्जन दे पियाको मन मोहत करि कटाक्ष
बिसहारे ।

सूरदास प्रभु भक्तनकी सम्पदा नृत्यत ज्यों नटवारे ॥

३२

राभन जोगी जोगी जोगी कर मेहे नयन लगाए हो ।
पलकां सेलियां भोहे जटयां सइयो गरदन
पेती विभूति रमाए ॥
हुण की करां रूस रहो मै थो मूलन मणदे मनाए ।
मथेदी मठी बिच आसन मारे बैठे फिर थे ना
फिराए ॥

परज—धीमा तिताला

मूलन टिसटे मियां मारवाण लट सिधानि
कथे कारवान ।
कार टे हजरां मेखु कित कारण लाए कारीगरी
कर गए बेकार ॥

दान पुरनू कले जैनु असी न जुदा कर ले गए
जालिमा जान जान ॥
रात भरी हजरे अज चश्म पुर आबम् वह दे हम
चुना बदानम् ॥

३

हे हे हो हो ताए कों हां सरस्तावे ना होदा
आलम विचारस्ताने सगुवनके ।
बनोनु घिन कले आए असवारीनु फिरइता
लिखदियां

सरसण कानियात कागज बनदा अहवाल गुजस्ता ॥

३

कलापो थासे दारुहो मांगे जभो बांको मारुडो ।
राज मतवारों राज सारी रैनके काम उनीदे हे ॥

४
अमलारी रातो हे क्वां म्हारे पाइलो ।
सदारङ्ग छो जीं म्हाणे साहवां आप पोवे मुणे
पिलावे हे क्वां० ॥

५
राह देखावो सोणा तरे दरवाजे बैठा कोई कब
लग तेरो राह देखे वो ।
जो तू अपने घरको घर जानता नाहीं इस
मालूम हुवा अपने लेके आवे ॥

६
इस प्यारे नाल सठगियानी मैं ठगियां ।
रांभन मैड आपो आदा हंस हंस गरे लगादा
इन बन्दियां कोलन डरदो चटपट भंखियां लगियां ॥

७
इशक लगा तेंडे नाल सुन साजन साईं ।
जो भामो त्यां पाल तुज बिन मैडे हेर न कोई
सुन नन्ददे गुमानी गोपाल ॥

परज—बीमा तिताला

रात चांदनी बनी चांदनीके देखे मोहे प्यारो
याद आवे ।
फूलन कोरा ज़रद गजरा फुलवाकी सेज पर फूल ले
बिछावे ॥

२
एरो मैं तो लाग रही चरण ।
महमद शा पिया सदारङ्गोले जन्म जन्म हो शरण ॥

३
गुरुजी म्हाने मोल ले दे कारो कारी कामरिया ।
राम जपन को माला ले दे पाना पोवन को तुमरिया ॥

४
सायबांजी म्हाडो चम्पा वरनो राज ।
हद चम्पा हद मोगरारे हद चमेली फूल
मारवण बैठी सेज पर काई माणिक टिग मन झल ॥

५
हुण तो नयन लगे वो मेरी जान अखी वो थार ।

नयन तु सडिे वारी बरछोदो नोके बे इयक तु
साडे नाल फन्दे वो ॥

६
वो मैं तर गइयां रांभा वो ।
पांच रुपैया वारी पानादां बीड़ी नजर थारांदा
कीती बे ॥

७
मैडा अनवेलडा रावलको आंखदा ।
पांच रुपैया वारी पानादा नजरानो मांगत
सारो रातदा ॥
मैडा काल आमो बे भला बे मनडा लग्या तेडे कोल ।
साडे दिलादी वारी मोला हो जानि वो हरगुण
कहे दे भाला मोल ॥

८
मारुजी वो मारी हेली हेली न बताय जापन मारुडा ।
मारुदे आंगन चम्पेदा बूटा साथ सहेली मिल
जुडी हे जुडी हे ॥

९
दारुडारी बात भलक रहो वो ।
सोनेदो सुराही वारी मोनेदा प्याला आप पोवे
भंवर सुजान आली जी वो ॥

१०
कलाला थारी दारुडो ए अजब तमाशा
पोवत करे मतवाला ।
सोनेदी बतक जोवन मद भरये वो नयना जलाउदा
प्याला ॥

११
आंगण आ बे मारु जीवे ।
सोनेदी सुराहो वारी रूपेदा प्याला
बे भर भर प्याला तू पीवे ॥

१२
नहीं भावे नहो भावे हे गुमानो अनबोलनाजो
थारा नहीं भावे ।
सोनेदो सुराहो मोनेदा प्याला बे मद हक्या हक्या
धर आवे ॥

११

ना शूकड़ो म्हारो जीव छे गोरी बहियां छार दे ।
लटपटो पाग केसरिया बांगां वो मोसो घोड़ांरो
असवार छे ॥

१४

राजाजी म्हारो काँई बेगुन्हा नजरो नजरो करो ।
अबकी बार पिया मानत नाहीं मान पियारे
म्हारो यो भगरो ॥

१४

छैला मेरी कदर न जानो ।
कर मुकरो वो तु जी वा विहारो वो राजा बे बहादुर
गर्द गुमानो ॥

१६

धे काँई जाणा छे घांटो राज आमि वो छे गाज ।
अनवट बाज थारा पग का बिकुवा घंघरिया बे
घननन गाज ॥

१७

नजारा मेरा चोला दा रङ्ग बे ।
चोलादा वारो अजब कसादा कठिन बालोदा
तिखड़ा नादोदा तेरो जल्फ कुच्छल बल खायानो बे ॥

१८

लायवां दिन जारी भो ।
एक अंधेरो दूजि बादर घेरियां वो मियां
जिन गलां तोमिं डरियां सोई गलां ॥

१९

म्हारा मारुजी ने कामन थाकियो के ।
हं तो थारी दासो सायवां जन्म जन्म री राजमें
तो थाई देखा देखा देखा देखा जो वो म्हारो ॥

२०

जारे जारे सिपैया मे तो मोहो रे ।
मेरो कहो तू एक न मानो तेरो बात मैं तो सहो रे ॥

२१

मे तो भूलो नवेलो का मे न भूली नाहो बे
भूली रांभा तेरो चाल ।

रब करे तूसी आनके मिलामो मेरा मियां
सांडा दिल तेडे नाल धूली ना० ॥

२२

दिल महर यार दा बे वेखा सइयो पेड़ा तकेदो बे ।
लिख भेजो मेरो जानकूं कांसा विहार हेमचतुके
वासी बे ॥

२२

कित गए रो श्याम कन्हाई ।
इत यमुना उत गोकुलनगरी कितहु दूँटे नहो पाई ॥

२४

गेह नेक न भावे आलो कासे कइं बोत ।
आप तो जाए हारका छाये कौन अनोखो रीत ॥

२५

माने है राजेन्द्र ओ जो भावे छे अर्णा भात माने दे ।
चन्द्रवदन मृगनयनोरो सायवां गोरो गारो गात मा० ॥

२६

मुरलिया ते वस कीनोरो कोनो है जग सगरो ।
अधर मधुर ध्यान बाज बाज उन गाज गाजरो
पहोचत धाय धाय सब वनमे छाड़ दई
सब कुनको कान ॥

२७

प्यारे ते नु मतनु मत नदर रहदा वो नाहो
तनदे रतन मन जपतू रामनाम ।
नादर दर दर दर दर दर दर फिरे मत तूं तन मन
हरिसो लगाव समझ बूझ नहो तेरे कोज
आवे काम ॥

२८

काँई मो सो वैर परारी मुरलिया ।
जातिपांति तेरो कहुअ न जाना तू जङ्गलकी
लकरिया ॥

२९

निरख चतुराज वारी ।
सब गुण भरो किशोरी राधा प्रियतमके सङ्ग प्यारो ॥
नीलाम्बर पोताम्बर राजत भ्रमकत कोरकिनारो ।
युगल खड़े कुञ्जनमे विहरत शोभा पर वलिहारो ॥

२०

थारो वर रुड़ो छे जी हो राधारानो ।
 धन्य धन्य भाग्यसुहाग तिहारो और अविचल
 बाँही चूड़ो ॥
 साँवलियो पातलियो सुन्दर जैसे शरद शशि पूरो ।
 जानकोदास हरि बालही लागी और जग लागी
 म्हनि कूड़ा ॥

२१

थारो बातें लागी म्हनि मोठारे बालहा ।
 साँवलियारो मुखड़ी यौवन मान्दुर जनलोक
 मान दोठारे बा० ॥
 सास ननद मोरो दोरानो जेठानो जेसो बलतो
 अङ्गीठीरे बा० ।
 नरसोनो स्वामी साँवलियो उघोरो कर्म नो
 चोठारे बा० ॥

२२

वंसीके बजेया जू वेसेही बजावो साँवरे ।
 छ राग छनांस रागिणो न्यारा न्यारोके सुनवैयाजू ॥
 भैरव मालकोश हिंडोल श्यामिष दोपकके गधैयाजू ।
 चेतसिंह कह गिरिधर नागर अन्न के हाडु सहेयाजू ॥

२३

मन मेरे साग रही मेयारो मनमाहन
 पिया कान्ह कुंवर प्राण्य प्यारिको मूरत ।
 कल न परत घरो घरो पल पल छिन चित गति
 जात न कहो ॥
 चटपटे परे अटपट नयना मिलनेका टेक गही ।
 सब सुख सरस मिलयो यशमति सुत आसा सुख
 आज सहो ॥

२४

चांदनी रात अति भावे सखो मोहे ।
 वृन्दाविपिन विपुन वंशोवट यमुना निकट सोहावे ॥
 मण्डल निरत करत प्रिया प्रियतम कोउ मृदङ्ग कोउ
 वीन बजावे ।
 जानकीदास श्यामश्री सुरली सुनि मुनि मन ललचावे ॥

परज—तिताला।

खल रही चांदनी पुलिन यमुना तट ।
 रास रथो वृन्दावन मोहन सखिन समेत जहां
 वंशोवट ॥
 हावभाव कर लेत चोर मन नृत्य करत बहुविध
 नागर नट ।
 जानकीदास विलाम रास सुख निरखत छवि मुख
 लागो हरि हरि रट ॥

कलिङ्ग राग

हमे राम रघुनाथ हो मारत नाहीं लागत यमराज
 जगायत ।
 काम क्रोध मद समता वनजो कुटिल कपट
 अभिमान बिसायत ॥
 सुमिरन राम सिया रस पारस राव सो बना रस
 लगन लगावत ।
 प्रेमरङ्ग प्रभुको सङ्ग प्यारा चाल सुचाल कुचाल
 कफायत ॥

२

मन उरभो श्याम सुजान सो बाज आई मेरो वान सो ।
 कल न परे छिन पल घरो घरो लाज तजो
 कुलकान सो ॥
 गुरुजन बकत चबाव करत है सुनत नहीं मानो
 कानसो ।
 बीरो भई खिरकिनकी फिरकिन तनक वंशोको
 तानसो ॥

३

तन मन मेरे रामचरण है ।
 जबते सत् गुरु नाम दियो है तबसे रघुवर दास
 शरण है ॥
 सुख दुख सच्चे पूर्व जन्मके वरवश आयुर्वल देन
 भरण है ॥
 प्रेमरङ्ग हमारे प्रभु तुमरे भक्तवत्सलके विरदसे
 तरण है ॥

बांसरिया किने बजाईरे
 मेरी अवष सुगत सुध बुध सारी विसराईरे ।
 सुनरी वीर तीर यमुनाके मधुर मधुर सुखदाईरे ॥
 पञ्चवाण सम तान लगत है अङ्ग अङ्ग शिथिलता
 आईरे ।

तकभक्त रही जिह्वा दशमन गहि जानकीदास
 मुख चाईरे ॥

श्याम तोरी अजब रङ्गीली अंखियां ।
 आप रङ्गीला वारो सेज रङ्गीली और रङ्गीली सखियां ॥
 बड़ी यां कहुक सुना बानी बे तेडरे कारण भई
 कोयल रगियां ।
 पाक दृक्, रबदी ता नामदार हीर मही तो
 पावा मेमरियां ॥

कलित - तुमरी

सांवलिया बिलमायोरी ।
 सुनयोरो मोरो बगर परोसन उन बिन ककुन
 साहायोरो ॥

सांवलिया तोरे नयनवा रसीले लागे प्यारियां
 बड़ी बड़ी अंखियन कजरा दीना तोरो चितवन
 मांहे मारियां ।
 अज वनिता सब कहत प्रेम वस लागो प्रेम कटारियां ॥
 मन मोहत जोहत मनभावन लोक लाज कुल
 डारियां ।

असृत अवत रैन दिन प्यारे कृष्णरसिक
 वलिहारियां ॥

नोकी लगत मोहे अपने पिवाकी आखर मीली लाज
 मरीही
 खज्जन मोग कमल मद गज्जन रज्जन मनसुख
 सीमा धरीही ।

श्याम सेत मनसिज सरसावत तामे अरुणकी रेख
 परोही ॥
 नवनि विलोकनिकी छवि घन छे खर बिच
 वर्ष प्रेम भरी हो ।
 कृष्णरसिक मैं हेरत ठाढ़ी नित प्रति छपा कटाच
 चरी हो ॥

सदयोनी मैं की करां कांइ रांभण मिलदा मांही बे ।
 रांभण मेड़ा मे रांभणदी राणा सीरदा सांई बे ॥

मोपे भरइ न जाय राम पानिडारे ।
 कइर कुइयां पाताल जल पानी गगरो न डूबे
 मोरी कमर पिराय राम ॥

मोरे ललना हो हो नीचवा बसेरे कलबरो ।
 या उचवा वसे मोरे ललना हो हो मोरे मोरे
 मतवरवाकी लाल पगरी ॥

या अरे मोरे ललना हो हो लचकत
 आवे मतवरवा मो ॥
 दइने हात सरवा बायें हात करवा मोरे ललना हो
 घूमत आवे गज चलवा मो ॥

चांदनी रात छिटक रहे तारे आधा रात
 पहरके तरके किन सोतन सिखलाए पिय प्यारे ॥
 कृष्णरसिक मन मान लेहु अब होहु न एक पल
 मोहि सन न्यारे ।

रुहु अन्दर भायल बे काही ।
 हीरां रांभणदे दृक् नौ पगियां दिल कीता सदयो
 मायल बे ॥

चला जारे गुमानी मैं नहीं बोलं ।
 ना मे बोली ना मे चाली काट कटीलो छड़ी
 मारी मैं ॥

१०

सांची कही विरहिया जिय डूबो डूबो जाय ।
माथे की टिकुलिया मोरी गई बिसराय कंगणा
सुभि सुभि जाय ॥

११

मोरी अंखियां लजाइरी ननदी तोरे अगवा ।
आगे देखे पाछे देखे अगर बगर के लोगवा ॥

१२

बेदिया दीज्यो मोरीरे कैसेके आऊं तोरे पास ।
बेदियां मोरी काहे छीन लौगी कैसे कटे सारी रात ॥

१३

मोरीरी नादान बनरा बाजबन्द महरकी कंगना ।
बने पियारे डरे डारे नीके मैदान बनरा ॥
गले तेरे खासेका जामा चालो लहर रही बनरा ।
सिर तेरे ककरेजी चौरा गल सोहे फुलवनको हरवा ॥

१४

मैं काके सोइ हूं साथरी सूनी परी उन विन सेजरियां ।
एक तो अंधेरो राती अति डर पाऊं दूजे तरफ
तरफ जिय जातरी ॥

१५

मैं नहियां राजी नहियां छाड़ दे मोरी बहियां ।
शानबाज पिया सुनरी रंगाय दे विनती मानो
मोरो सइयां ॥

१६

नजरियां लागीं मोर गुहियां हमारे सइयां की
ढाल तरवरिया सईयो कमर सो लागीं ।
फुलवा बीनन गई बगिचवा सईयांके सङ्गमें पागी ॥

१७

काहे कु लगाई ऐसी प्रीति देया मोरे मनमें रहीरो ।
जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय तो नाइक
करती सहीरी ॥

१८

मोहे नीको लागो तेरो गांव ।
आगे चलत हूं चल न सकत हूं पाछे परे मेरो पांव ॥

१९

मोकूं गारी दीनी आपो गरजे आपी बरसे ।
हंसोखुशी सो पिया मोरे डरे आइला रसभरी
बतियां कर कर मइ कूं गरवा लगाय लौगी ॥

२०

एरो मोहे गरवा लागन देरो निशि अंधियारी कारी
घन गरजे ।
उमड़ चहूं ते आये बदरवा मोरो जियरा लरजे ॥

२१

कागा बोले दाहनेरो मनमोहन आदिगे मेरे धाम ।
जबसे कागा बोले तबसे मनरस पागी और रसरङ्गसे
दिल उन सङ्ग लागा ॥

२२

तुमसो नयना लागीरो जासो मेरो मन अटक्यो ।
सगरौ रैन मोहे तलफत बोती भोर भए गरवा लागीरी ॥

२३

दंसरी बजाय मन मोहरे कान्हा ।
हरे हरे बांसकी दंसी बजाई ऐसे बजा तोको
राम दुहाई मइकूं नौद न आईरे कान्हा ॥

२४

बटोइया जियरा जातरी ।
सगरौ रैन मोहे तलफत बोती तरफ तरफ घबरातरी
कण्ठारसिक हंस मो उर लागो होन चहत अब प्रातरी ॥

२५

गारी दंगी मैं ना डरोंगो लानारे ।
दूंगो गारो मैं अपना उमङ्गसे सौतन की मैं ना सुनूंगी ॥

२६

सुवावाली बनो मैं पाया अब मेरी जान लाडो मैं पाया ।
हाथ तेरे जराउदा कंगना मइदा देख लुभाया ॥

२७

लोगोरे विरना जागे ।
एक चन्द्र दूजे निर्मल तारे पायलिया मोरो बाजे ॥

२८

ननदी तारा विरना मई छेड़त ।

तोरे विरना कूंकित समभाजं निशदिन मइकूं भेड़त
सगरी रेन मोहे तलफत बीते सिरकी गगरिया
तोड़त ॥

२४

आमार बंशी के ले गइली चारारे सांवल भला भला बे
आमार बाड़ो आओ बँध खाओ नागर पान ।
बैठन देवी शोतल पाटो जीबन देवी दान ॥
एक सखो तोरे घरमें गई ना एक सखो तोरे द्वार ।
तन मोशी चाखे काजल कनको भारे जाय ॥

कलिङ्ग—खेमटा

बंशी बाजाय मन लेगयो रे श्याम रे काला रे कान्हर
आमार वन्धु आमार जीरो प्राण म० ।
कालिन्दार तार कान्ह बजाईला बंशिया
आमार बंशी रड़ डर दीलो प्रेम रो तरङ्ग ॥

२

बेड़ा पार कारिया श्रीराधारो व्रजनाथ ।
सबसखो को पार कारो ला लेवे आना आना
राधाजाको पार कारो ला लेवे कानेर सोना ॥

३

किंगरी निर्वाण बाजे बाजे बाजे एरो मजना
ज्ञान सिराहा बांध कमरमें शूरा रणमें आया ।
प्रेम मग्न हूँ शूरा खेलै एक एक पर धाया ॥
शूरा ज्यो मैदानमें क्या कृरा का काम ।
शूराको शूरा होय मिलिये तो पूरा सब काम ॥
कहे कबीर सुनो भक्तहरि मौजा सुन रोभ मन ज्ञान ।
प्रेमको डोगो लागो गगनमें त्रिकुटो संयम ध्यान ॥

४

गगरिया में कैसे ले घर जाजं ।
सास बुरी मोरो ननद हठाला देवरा करे लरकया ॥

५

मग ले गयो ले गयो पिया घातनमें ।
एक दिन काजम गरवो लगायो हाथ दियो मोरे
हाथनमें ॥

६

मोर परदेशिया कब घर अइ है ।
ना जानूं कौन देश विलम रहो कबहू लो सुध मोरो
लइ है ॥

७

यह बंसी किने बजाईरे जिया माने न मोर ।
छोटो करेला के लम्बे लम्बे पात
छोटोका जियरा छोटो के हात ॥

८

उनींदा छो जो काँई रातरा वैन शिथिल
अरु नयन भुक्का हो आवे लगि बैठा परभातरा ।
पलकाँ पीक अधरन अञ्जन अलसाया छो गानरा
रसिकविहारो बनिया दुलां कहां कहां कर
आए यातरा ॥

९

मारुडार देश में तो जास्यां ।
सुन मारवन कइ अलबेलिया लिख छक दृग
फरमास्यां ॥

दुर्जन लाज पाजरे ऊपर हूँ आतुर ललचास्यां ।
जो माने इस लाज दिवामो तुमसे अति अरखास्यां ॥

१०

बना मेरा सांवला हो मैं वारो ।
जंटादे गल घंघरू बाजे ठाढ़ो मैं देखीं छो अटारो ॥

११

गई भुलनो टूट दगा हा गई बालम ।
हर हर बोसको बांसुरीरे टेरत मति बीराई ॥
घर बाहरे मोहे कल न परत है पूंछत कुंवर कन्हाई ।
कण्णारसिक फिर नेक सुना वह मनमोहन सुखदायो ॥

१२

मोरे बहोत दिनन के बिछुरे सइयां बोलो नांहा रे ।
कहा मोसे चूक परी मोरे काजम हंस हंस घूँघट
खोली ॥

१३

तरसाए रखियोजो कबतक मुख देखे पाजं

छक छक दरस देतू कहँ तनक तनक ।
 प्रस्तर मणि शशि गुरु अपनेका प्रेमकी जव लागी
 चकमक ॥
 निकसि पड़ौ कहीं ज्योति तकसी देख ज्योति लागो
 चेटक ।
 परख परख अब कहां जाय काजम ठुमक ठुमक कहँ
 चटक मटक ॥

१४

उजियारो भई मारो रतिश तू जो उजियारा पिया
 जग अंधियारा निरख निरख पियाकी छवि न्यारो ।
 घट घट बढ़ बढ़ सम्पूर्ण भई हम हँकी दोनो
 उजियारो काजम हमारे सङ्गकी सबहो ज्योति भइ
 कैसे रहे जगमें अंधियारो ॥

१५

पिया छाड़ दे मारो बहियारि अपने गरजके सइयां ।
 लगर भगर के लिपटत जात हा ठइयां ॥
 हंस हंस धस रस वस पड़ गइलो ऐसे मनके कइयां ।
 गई सां गई मर; वयस अकारथ अब हँ समभ
 गुसइयां ॥
 सब तजके धाम तेरे अइलो और आय परो पइयां ।
 अवगुण बखशा नित दर्शन पइये चरण कमल
 बलिजइयां ॥

१६

बीत गई सारो रातियां पियके लाग छतियां ।
 सोच सोच जिय जात है मेरो सोच सोच रही
 मनहो मनमें जात रही जाबनवा जगमें
 कोऊ न पूछे बातियां ॥

१७

मत करीरे काई बात अयानो ऐसो बातां
 का रब निगहबानी ।
 समभ समभ कर मुखते निकासो निकसी बात
 और डुइ है बेगानी
 सुरादअली अब सांची कहत है किस बिरते
 पर तत्ता पानी ॥

१८

मैं पूछत हँ तोसे नायक बनजारि ।
 तू सङ्ग लादे फिरत है इतने ठांडा इतने भारे ॥
 काहसे भरत काहसे बेचत लेत नफा छाड़ा दूगा
 हर भरतोमें धड़ाधड़ी करत नफा तापे सेर न होत
 यह कोन पनसेरति बांट तेरे आई ।
 तू पा संग या कां जा भया है वह चतुरजू और
 पूरो तौल रहो है यह कह दे साच भाव मोखे ॥

१९

खींच न आवे कमनिया बे नवला जान ।
 सुनवाकी थरियामें जवना परोसो देखो मैं थारो
 छेला मिजमान ॥
 मानकचन्दो सोपरिया चाबो न जाय बंगलादे पान ।
 टाल तरवरिया बांधि हँ न जान हमसे करत तू काहे
 गुमान ॥

२०

मइकूं गारो दोनोरे सुनो ननदिया वीर तिहारे ।
 ना मैं बालो ना मैं चालो काट कटोलो छड़ी मारो ॥
 अपनी गरजकी मेरे कने आवे बहियां मरोर मींचो
 गरही लगावे ।
 सौतनिया कछू कहत आवे और कहँ तो सइयां
 रिभावे मैं तो वाहीके रङ्गरस भोनीरो ॥

२१

फलवा खिल खिल जातरो मनिया तोरो बगियामें ।
 आपो बाये आपो तोरे आपो पाले देखा रो गंवार
 ठाढ़ो बगियामें ॥

२२

जान जान जियरा लगाय दुख दे गयो ।
 विरहको रातो मातो जरो जात हँ तन मनको
 रस ले गयो
 हमरे पिया परदेश सिधारे ना जानू कछु ले गयो ॥
 सइयारि नइयां नइयां जइ हँ मैं तोरे साधरी ।

२३

सास मोरी बैरन ननद हठीलो ताने दे दी
आधी रातरी ॥

२४

सइयांकी खबरियां मइकूँ आन सुनारि कागा ।
जारे कगवा लारि सइयांकी खबरियां सोने चोंच
मटेहं कागा ॥

२५

पिया बिन आज मइकूँ बाटरवा डरावे ननदी ।
कहा करुं कछु बस नहीं मेरो रैन दिना मइकूँ
विरह सतावे ॥

२६

बादल गरजे बोले मोर ननदी कुवो छोर ।
मनरङ्ग पिया तोरि पइयां परुंगी फिर आजंगी भोर ॥

२७

ननदी दिवरा वानर कोठरी पैठा चोर ।
असख भलक मोरा बिकुवा उतारे मैं जानूँ सइयां
मोर ॥

२८

न कुवो न कुवो न कुवो अरे सइयारि मोरा
जियरा डरे ।

सगरी रैन मोहिं तरफत बीती जावो आशक
तुम बेठो परे ॥

२९

मोरइ भवा मइका नीक सगुनवा आवेंगे पियरवा
मन्दिरवा सखीरी मोरो पहर सिंगरवा करहु
भेंट जोबनवा ।

मौज भई जियरा सुख पाइलो आनन्द से चमक
रछो धाम अङ्गनवा ॥

३०

कोई इतनी मेरो जाय कछो वा प्रियतम प्यारि सो
सजनी ।

कल न परत मोहिं घरी घरी पल पल छिन छिन
निश दिन और मग हेरत बार भई कितनी ॥

३१

इशतियाक बन्दी दार तु दारदुदिले मन दिले मन
दांन दो मन दीन्को दान दिले मन ।
अब तो दया कर अपनी मौजसे कहे बेदरदो चाह
जितन ॥

३२

फुलवारी हं देखन जातरी जीवनमें मदमातारि ।
मोतिया केवरा चम्पा चमेली मालन फूलन लातारि ॥
माहन वास आई जो मोहतो फूलतो ही कुम्हलातारि ।
हाफ़िज मदन बान परो मारे अङ्ग अङ्ग रङ्गरातारि ॥

३३

प्यारि मोसो जिन बोली जावो सौतनके सङ्ग डोलो ।
भोर भए सकल जन जागे अब घुंघट मत खोलो ॥
मानो रसरङ्ग विनती मोरी गढ़ गढ़ बतियां छतियां
छोलो ।

जिनके सङ्ग सब निश जागे हो उनके अङ्ग टटोलो ॥

३४

चांदनी रतियां कर ले बतियां ।
आज पियरवा मनमोहनवा तुहारि दरस मोरो
शारीं हो छतियां
तिहारि कारण मै सेज बिछाई रागरङ्ग आवो
हम तुम मिल ले चकि छकि भकि रहा वेग
आये प्यारि बीत जात है सब रतियां ॥

३५

हेरा फेरामें गुजर गईं सारी रतियां ।
सास मोरी सोवे ननद मोरो जागे करने न पाई
सइयां सङ्ग बतियां
सास मोरी देखे दोरनिया जैठानियां ननद
निगोड़ी कर रहा घतियां ॥

३६

बगिया बिरानी जिन कुवोरि बलमा मोरा ।
एक तो वोगन बामलिया तोरी बगियामें
दूसरे बेगनवा मोरो छतियां ॥

१७

मुसक देगना नहीं जइयो रे सइयां मोरे ।
काहेको गमन करो परदेशवा याही घरवा बैठ
रहियोरे सइयां मोरे ॥

१८

जोबनवा मोरा जायरे ।
चकवा चकवी दोय जन वारी इन मत मारो कोय
ए मारे कर्तारके ज्यो रेन बिछोहा होय ॥

१९

मोरा मन धीर धरत नहीं धुन सुन श्याम दंशरिया की
लोक लाज कुल सकुच रहं डर टारुण सासु
ननदियाकी ॥

२०

बोलो बोलो रे हरिनाम भोर कंधा बालमराज ।
एक पिप्पारामें दोय जन वारी एक मुनिया एक लाल
लाल बेचारा उड़ गया तेरो मुनिया पै कुरबान ॥

२१

वंशीवारे हो कान्हा मोरो रे गगरी उतार ।
गगरो उतार मेरो तिलक संभार ॥
यमुनाके नीरे तारे बरसीलो मेह ।
छोटे से कन्हैयाजो सो लागो न्हारो नेह ॥
वृन्दावनमें गउए चरावे तोर लियो गरवा को हार ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर तोरे गई वलिहार ॥

२२

रातके सुपनवा हां सांवेरे सो जलम भइला ।
बारह वर्ष की ब्रषभानु दुलारी सोलह वर्षके कान
वंशी बजावे वृन्दावनमें मोह लियो मेरो प्रान
मन वस गइला ॥
गोरे वदन पर सीतला जो निकसी दे गई दिलपै दाग ।
मेरो मन सांवेरे सो उरभो प्रीति पुरानी लाग
गइल वा ॥

२३

बारह वर्ष पर मोर सइयां आइल दुर गयो
जोबन बाला हो ।

अब पछताये क्या होत है वयस उमर सब टाला हो ॥

२४

सास मोरी वैरन ननद हठीली छोटी देवरा बड़ो
ही नदाना ।

सइयां बेदरदी खबर न लीनी गयो यौवन नहीं आना ॥
सबही जइल वा हो हां सइयां गइलो गाजीपुरमा ।
देवरा गइलो पटना ससुरा गइली पूर्व तैयां
आयो मोहन करो हठ ना बे बलमा ॥

२५

बोले बोले रे चिरैया वनके मोरवा ।
परदेश वाली तोरी आस लगे कुम्हलाय गइलो
यौवन वास नहीं ॥
एक अंधियारी दूजे पिया बिकुरे तोजे सावनको
उबरवा भर गइलो नीर ।

उमग आलु नरवा यौवन गम्भीर कैसे कटि
है रजनी ननदी विन तोरे वीर ॥
मोरे कौन पवरिया पहुंचावे ललना नयो रे भयो ।
चलना परदेशिया ललना तेने कहु न कियो
मोरे आवत ही यौवनवा परदेश कियो ॥

२६

सगुण बिचारी पियके मिलनको ।
विन देखे कल न परत है लागत प्यारी वाके चाल
चलनको ॥

२७

आनी अनी मेरा टोल टोलनी अरो ए सूर्यमल धाल
धा भोली मा अनमोलनी ।
जिन बे राहियां माना कल था सो सर भोजी चोलनी
सोना देबीं रूपा देबीं यार न देबीं तोलनी ॥

२८

हां रे चीरेवालिया ओ री नयनवालिया तैं काहे कूं
जादू डारा रे अरे ।
तेरे हाथमें खरबूजा तेरा यार मिलेगा दूजा ॥
अरे तेरे हाथ में करेला यार मिलेगा छेला ।

तेरे हाथ में नारङ्गी तुझे यार मिलेगा रङ्गी ॥
 तू खावे शकरकन्दो तुझे यार मिलेगा गन्धो ।
 तेरे हाथमें बताशा तेरा यार करे तमाशा ॥
 अब तू रङ्गी रङ्गी रङ्गी तू तो सदा रहैगा चङ्गी ।
 तुझे यार मिले फिरङ्गी तुझे यार मिलेगा जङ्गी ॥

४९

ना कछु ना कछु छोई पछो गए पाछे खोज न छोई ।
 जैसे हैं कालिन्दीके स्वभा तैसे परब्रह्म को रङ्गा
 सब जगमें वो एक ही चिन्ना सम कबोर कहे रङ्ग भिन्ना ॥

५०

मइ कूं गारी दानी रो सुनो ननदिया वीर तिहारि ।
 ना मैं बोली ना मैं चालो काट कटोलो सुर मारी रो ॥

५१

मोरा पार करिया दे रे गोकुल व्रजनार ।
 सब सखिनको पार करी ले लेवो आना आना
 राधा जोको पार करी ले लेवो काना साना ॥

५२

भोजे चुनरो प्रेम रम बंदन ।
 आरतो साजके चला है सुहागन अपने सइयां को टूटन ॥
 चढी गगन खुल गई किबाड़ो गुरुके चरण लागी
 भजन ।
 कहे कबीर गोरो याहो विष भोजे मिट गये
 दुःखहृदन ॥

५३

आज मोरे जानीके मिलनेकं आईरे मो मन चीते
 कजवा भइले मन्दरवा ।
 आवो गावो नाचो सब सखी रे सहली सदारङ्ग
 कहीं मिल है सुन्दरवा ॥

५४

ननदियाके विरना मइ कूं ले चलो रे ।
 पहले पार मोरो खेती बोई समुद्र किनारं
 हरि भरो तामें बोए पांचो बिरवा तामें सइयां
 मो मिलो रे ॥

५५

बेदरदी मोरा सइयां रे मरोरो मेरो बहियारि ।
 क्या करुं कछु बस नहीं मेरो विनती करुं परुं परियारि
 कृष्णरसिक यह केलि देखावत मन सहियां
 मुख नहियारि ॥

५६

श्याम बजावत वीणा रो आली ।
 आठ मास कार्तिक नहाए दान पुख्य बहु कीना
 एरो दई तेरो कहा बिगड़ो छोटा कन्त मोहे दीना ॥
 करके शृङ्गार पलंगपर बैठो रोम रोम रस भीना ।
 चोली केरे बन्द तरकन लागे श्याम भए प्रवीणा ॥
 मोरांके प्रभु गिरधर नागर हरि चरणन चिन लीना ।
 अब तो आन पड़ी फन्दे बिच लोक लाज तज दीना ॥

५७

मोर मुकट पोताम्बर राजे उर सोहे वनमाला
 बांके कहेया प्यारे वो कैला ।
 मुकुटकी लटक छवि अजब बनो मन्त्र जन्म टोना
 बस कीनी व्रजनारो सारो दीनदयाल गये कौन गैला ॥

५८

गोपाल रङ्ग राची मैं श्याम रङ्ग राची ।
 कहा भयो जल विषके खाए तीन हुते मैं बाची ॥
 तात मात लोग कुटम्ब तिन कोनो उपहासी ।
 नन्दनन्दन गोपी ग्वाल तिनके आगे मैं नाची ॥
 और सकल छाड़िके मैं भक्ति काछ काची ।
 मोरांके प्रभु गिरधर नागर मेरो जानत भूठी
 और सांची ॥

५९

हरि विहरनको शूल न जाई ।
 कबहुंक दये आलिङ्गन कबहुंक दौरत
 निहोरत गाई ॥
 एक समय वृन्दावन सहियां अचरा भूपट मोरो
 लाज कुड़ाई ।
 बलि बलि जाउं सुखारविन्दको वह मूरति चित
 रही है समाई ॥

वे दिन जघो विसरत नाहीं अखर हरि यमुना
तट जाई ।
सूरदास स्वामी गुणसागर सुमिर सुमिर हरिकी
सुध आई ॥

६०

हारे हारे फिरे नहीं सुध राम भजनकी ।
औरनकी उपदेश करत है अरे सुध न रही तन मनकी ॥
लोभ ग्रस्यो रहत निशि वासर आशा लागी है धनकी ।
देवकृष्ण प्रभुको सुमरण कर ले गेल गही
ओहन्दावनकी ॥

६१

हमारे मन्दिरके झारू झारे सब पाप ।
हरि मन्दिरमें पवित्र होत है गावत मङ्गल आप ॥

६२

तन हारो रे सुवा हरि नाम बना ।
मट्टीको पिछरा पवन सुवा पांच तत्व मिल
प्रकट हुवा ॥
काम क्रोध मद जरत धुवा पांच पचीस सङ्ग ले न डुबा ।
तामें राजा एक सटुवा भूला रहत दरदम घटुवा
कहत कबीर त्रया जन्म मिटुवा ॥

६३

श्याम मोहिं बावरो कर डारो ।
अंबुवाकी डारो कोयलिया बोले कुह कुह भयकारी ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा विरह व्यथा भई भारी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको तुम जीते हम हारो ॥

६४

हां रे दई मारे योगो काहेको वेणु बजाईरे ।
कानन कुण्डल गले बिच सेली घर घर अलख
जगाईरे ॥

६५

हम न करी हरिकी सेवकाई ।
कोमल चरण महाकण्ठक मग ता पर वन हम
धेनु चराई ॥

अपने सुख सम्पतिके कारण आगे कर दोने
दोख भाई ।
सूरश्याम मानत है नाता प्रेम सहित कहे नन्दराई ॥

६६

ऐसे राम दोन हितकारी ।
अति कोमल करुणानिधान विन कारण पर उपकारी ॥
साधनहोन दोन निज अवश शिला भई मुनिनारी ।
गृह ते गमन परसि पदपावन घोर शापते टारो ॥
हिंसारत निषाद नाम सब पशु समान वनचारो ।
भेटो हृदय लगाय प्रेम वश नहीं कुल जाति विचारो ॥
यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जात

अति भारी ।

सकल लोक अवलोकि शोकहत शरण गए भय टारो ॥
विहङ्गयोनि आमिष आहार पर गृह कौन व्रतधारी ।
जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात संवारी ॥
अधम जाति शिवरो योषिन शठ लोक वेदते न्यारो ।
जानि प्रीति दे दर्श कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥
कपि सुग्रीव बन्धुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी ।
सहि न सके दारुण दुख जनके हत्या बालि सहि
गारी ॥

रिपुको बन्धु विभीषण निश्चिन्त कौन भजन

अधिकारी ।

शरण गए आगे ह्वे लीनो भेटो भुजा पसारो ॥
अशुभ होय जिनके सुमिरनते वानर ऋच्छु विकारो ।
वेद विदित पावन किए ते सइ महिमा नाथ तुम्हारी ॥
कहां लग कहीं दोन अगणित जिनकी तुमने
विपत् निवारी ।

कलिमलयसित दासतुलसी पर काहे कृपा विसारी ॥

६७

आज गिरिधारी नेक बांसुरी बजाइये ।
देखत ही मेरो मन हरलीनो सुरली की टेर सुनाइये ॥

६८

सब घट व्यापक ऐसे राम भक्ति मोहिं दोजिए ।

अज महेश वेद चार नाम अनन्तको कर उचार
नाद सारद शेषनाग स्मरण निशिटिन कोजिए ॥
वालर्मोक ओ वेदव्यास ध्रुव प्रज्ञाद विभीषणदास
शिवरी कंवट खगसे वायस अपनो जन मोहिं
कीजिये ।

गणिका गृह अजामिल खपच कुलाको आशा दीनी
रूपक सदन कसाई और सुदामा पाहन होय
पसीजिये ॥

नामदेव ओ दास कबीरा रक्षा बद्धा नाई मीरा
द्वीपटी गज और विदुर सुदामासो सुयश लीजिए ।
भक्त शिरोमणि है भरपूर गावै गूटर सबकी धूर
दास गुराबी तुलसी मूर गिनती कहां लग कीजिये ॥

६१

लङ्करवा मडकी छोड़ रे लगीई रहत दर पर थरहरवा
निपट कठिन कहं डगर बगरवा ।

भमक भमक टगसो टग जीरे हरिदयाल हंसि
बहियां मरोरे कैसे बसिये गोकुल नगरवा ॥

७०

कौन गांवकी रीति बेदरदी आप ही आप करत
वरजोरी ।
दधि मेरी खाइ मटकी मेरी फोरी आप चले जग जीत ॥

७१

तरे रसीले नयना जान चितवनमें चितचोरी करं ।
कासो जान करूं फरयाद सब तो वाकी ओरी करं ॥

७२

छोटी छोटी चुरियां न पहरूं नरम कलैया मोरीरं ।
दारीजारा है मनहरवा अझिया देख लुभानारं ॥

७३

कजरारे नयना लागे ललक रूप मोहनी वा
प्यारो तक तक चित रहे पिया परे ना पलक ।
उमंग भरे ऋतुराज राज्के देख सखी यौवनकी
भलक ॥

प्रेम प्रीति नए नेह रङ्ग में रङ्ग रहे शिरसे पांव तलक ।

ख्याल खुशाल करत निशि वासर छेल छबोले
चपल कुलक ॥

७४

सइयां निरमोहिया को मनाय लाई
सगरो रैन मोहे तलफत वीतो भीर भए गरवा
लगाय लाई ॥

७५

एरी गुइयां कर्मकी बांची न जाय ।
कर्म ही यार खोटो निकलो भ्रमतही दिन जाय ॥

७६

फेर फेर राम रसिया तन हेरत ।
तषित जान जल लेने लखनख गए भुजा उठाय
जंचे सुर टेरत ॥

अवनि कुरङ्ग विहङ्ग दुम डारन रूप निहारत
पलकन फेरत ॥

अवलोकत मग लोक चहंदिश मनहुं चकोर
चन्द्रमहिं धेरत ॥

मग न डरत निरखत पदकमलनि शुभग सरासन
शायक फेरत ॥

ते नर भूरि भाग्य भूतल पर तुलसी राम पथिक
पद जे रत ॥

७७

तन धरि सुखिया कोउ नहीं देखा जो देखा सो
दुखियारे ।

आदि अन्तकी कहे देत हो इसको करो विवेकियारे ॥

योगी दुखिया जङ्गम दुखिया तपसीका दुख दूनारै ।

आशा तृष्णा सब घट व्यापी कोइ महल नहीं सूनारै ॥

घाटे दुखिया बाटे दुखिया क्या गृहस्थ क्या वैरागी ।

शुकाचार्य दुःखके कारण गर्भ ही माया त्यागी ॥

सांची कही तो सब जग खोभे भूठी कही ना जाई ।

कहे कबीर सोइ है सुखिया हरि चरणन चित लाई ॥

७८

कोइ सुनता है गुरुज्ञानी गगनमें अवाज होती भागी ।

पहले जे आए नादविन्द सो पाछे जमाए पानी ।
घट घट पूरण पूर रहा है अलख पुरुष निर्वाणी ॥
वहां से आए पेटनो खाए तृष्णा नहीं बुझानी ।
अमृत छोड़ विषको रस पीवै उलटे पाश फंसानी ॥
जो कुछ देखी नजर ही देखी अजर अमर ही नशानी ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो यह आगम
निगमकी वाणी ॥

७०

को भेटे कतार करी ।
कहा सुनि शक्ति सगरकी मन्तति विनु इन्धनकी
आग जरी ॥

गणिक वशिष्ठ इष्ट सङ्ग लक्ष्मण दुबेल रावण आन हरो ।
त्रिभुवन को पति पति पायो है मां सोना कैसे
वन्ध परी ॥

भिषक् विदुर व्याम ऐसे पण्डित ताहि मध्य पुनि
हुते हरी ।

कौरव पाण्डव हैं दोऊ दल तिनके हटकन जूझ मरी ॥
चतुर हतो यदु श मण्डली विन लोहके जूझ भरी ।
सूरदास जैसी मत्त उपजे ताके तैसी कर्म परी ॥

७१

हमार अखियन ही के तार ।
राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारि ॥
गौर श्याम अभिराम रङ्गभरं व्रज वरसानवारि ।
शुक सारद नारद वलिहारी उपमा वरणत हारि ॥

७२

घुटहन घनश्याम चलैर ।
काटि किङ्किणी पग नृपुर बाजि नाक बुलाक हलैरि ॥
किलकत विहंसत दूर निकस गए कहत यशोमति
भलैरि ।
सूरदास प्रभु बाललीला देवत मन आनन्द रलैरि ॥

७३

दया मेरी मेरी करते जन्म गयो कछ हरि न भज्यो ।

बारह वर्ष बालापन वीत्यो बीस वर्ष कहु नहिं न कियो
वृद्ध भए तन कम्पन लाग्यो इन्द्रियको बल
सब ही दह्यो ॥

जिह्वा थकी मुख वचन न आवे तब हृदय विच ज्ञान
भयो ।

आई तलफ गोपाल लातो माया मन्दिर घेर रह्यो
कहै नानक सुन भर्तृहरि योगी माया डूब गयो ॥

७३

कर तुम ताड़ु निरखैरि निनाडु रङ्गा ।
गोविन्द स्वामी अटकूं तनू देया मेनू कालुम्
शम शम ताड़ु औरङ्गा ॥

७४

हो म्हारी मारवन थारो देश रूडो ।
उदियापुरको कामिनो काई गढ़नवरको ढोलो चूडो ॥

७५

गल कैसे करदा वो मेरी जान वो मेरी जाना ।
दोष काह न दोजे प्यारो आलो कि समतदा बदा होना ॥

कलिङ्ग—मिताम्ना

आज म्हारे मङ्गलरा भनो रात ।
आवो मेरी बमना तू बेठी मेरी अंगना
बहियां चढ़ाजं थारे चन्दन गात ॥

७६

कान्हा राजी आवो ने म्हारि ।
थे तो म्हाने प्यारि लागा राज आज सिपर धारि हमारि ॥

कलिङ्ग—यत

हम जी बे दाना साईं में तो वारो वा ।
बांकोइ घोड़ा तेरो बांकोइ जोड़ा
बांकोई कमर कटारो राज साईं वो ॥

७७

हम न जीवे तुम जाइलारे ।
तुम्हीं सो ध्यान तुम प्राणपति पिया जब लग प्रीति
निभाइलारे ॥

७८

सुरलीवारिने जादू कीता हो ।
राजबहादुर तानके मिस कोन मन्त्र पढ़ दीता हो ॥

४

सुभावाली लाहो वर पाया ।
जिन सौ बतियां रङ्गरस कोनो सोई वर व्याहन आया ॥

कनिङ्ग—धीमा तिताला

नयनन ए कीना वरजोरो ।
रूपलालकी सीख न मानो श्याम एक रङ्ग चितवोरी
उन तन बार बार लजात ब्रह्म सर्वसी वहोरी ॥

२

दोम तन दिरना दोस्त तदानी नाद्र दानी तुम
तदार तद्र दानी ।
बिष्णु बिष्णुक खमजां दर मेयारीन साया चि दारी
अतकिल अत न्यारी दीम ॥

३

लार्गी लगन कैसे छूटे मैयां हो नादान ।
लाग गई तब लाज कहां है जानि न जान तू जान
बैरमान
कण्णारसिक अठिलात छाड़के करहि जान पहचान
मन मान ॥

४

नयनावालीरे जान भो वो खींचे तिरछी कमान ।
टेढ़ो भौहें बांकी चितवन लार्गी कलेजि तान ॥

५

समभ बूभकं खैयो मुलक बेगाना ।
बालम काचो है सोपरिया काचा बंगला पान
बालम तोरे बगोचारे अन्त बेंठा चोरको रखार
चू चुष्पा फल सदाफल खावे गंवार ॥
खमटा

बालम तुम चलो उहां हम गज बैल सारस हंसकी
जोइया फिर अकेले ।
बालम बालम मत करो मत मरो रोय
चला जाता संसार अमर न कोय ॥

२

खैची न आवि कमनिया बिन बलका ज्वान ।
हाथ पकर क्यो जो तरसावत देखा मैं तेरा गुमान

नाहक मुख चुम्बत उर लावत क्यो मेटत कुलकान ॥
अवही खेल खिलीना सिखहो क्यो खेलत चौगान ।
कण्णारसिक यह तोहि उचित है मैरो मान तू जान ॥

२

दगा ह्वै गा बालम गई भुलनो टूट ।
चुन चुन कलियां सेज बिकायो चढ़त सेजरियां
पर ह्वै गई लूट
मनसिज मदन नयनन भर आयो चितै न परत
लाज गई छूट ॥
कांपत तन जीवन सरसानी लपट भपट गहगह
भई जट ।
कण्णारसिक यह सांच छाड़के हिल मिल पिअहु
अमृत नई घूंट ॥

४

पतली कमरकी जनिया तो से लागे मेरे नयन ।
जब त न देखी तेरो सूरत वाण लागे हैं मैन ॥

५

मजा मार ले जान पतलो कामर को गोरिया ।
बैगनबाड़ी तेरी अजब बनिया तामें नोबू तोरिया ॥

६

जुरा देखो नजर भर गोरिया नयन लागे मार ।
सालू सरस कुसुमकी अंगिया नोबो तनिया तोर ॥

७

मजा उडाय ले गोरिया ज्वानी भई मतवार ।
कहरि कटि कदलो सी जङ्घा क्कालो बनो जैसे के
अनार ॥

८

बांकी राम गुजरो नदिया किनारि ।
लहंगा भी लाए फरिया भी लाए अंगिया न लाए
सभी बात विगरी ॥

९

गोरिया नीके चल रे तेरे सइयां हैं नादान ।
मों बालम को दोष लगावत मत कर मान गुमान ॥

यह यौवन तख्तरकी छांही समुक्त देख कर ज्ञान ।
कण्ठरसिक मन मान ले मेरी छांड़ अटपटो बान ॥

१०

तोरे नयनव्यं को बान गुह्यां जोरे परो बांको
तंबोलन उगरा बैठी चाये नागर पान ।
घूंघट अन्दर सैन चलावे तक तक मारे वाण ॥

११

भावे तू जान न जान गुमानिड़ा हों तो थारो
बन्दी हो रहिया बे ।
गले लगन माण जो तरसावदा इतनो अरज मोरी
मान ले सिपाहिया बे ॥

कनिङ्ग—यत्

नयना काहे को रूगाए रसिया बालम जालिम जोर ।
रूप रङ्ग रस राते माते मनमोहन चितचोर ॥

सिमटा

माई आज वृन्दावन रहस राधाको नगरी ।
जैमे हो चन्द्र चकोर चहत है तैसे हो गोपो रही
सगरी ॥

राधा सखियां सहनरी पूंछके माई रहस देखन
हम जात ।
बहियां पकर हरि ले चले रो आज सुहागकी रात ॥

२

मेरो तू मानो सांवलिया तरो तो कूँन ऐसी रैन
अंधेरिया अब कैसे आज जान ।
पायन चुभो गुजरिया तलफे मेरा प्राण ॥

३

वारा मोरा जियरा सइयां काहेको लगायारे ।
जियको बातें वारी कोज न जाने नेह लगे जी
टरत न टारारे ॥

४

आधीरातके अमलमें बिक्रुवारे बैठा डब्बेमें बिक्रुवारे
काटा चढ़ी लहर भइल पिय आवनका ।
पिय विन लहंगा कौन उतारे सोती थी मैं गफलतमें ॥

आठ पहरकी चौंसठ घड़ियां घायत अपने दरदमें
बेदरदो वहा मान सजन मै० ।
लाल पलङ्ग पर जरद बिछोना हरा दुपटा अतलसमें
पिय विन लहंगा कौन उतारे मै० ॥

कनिङ्ग—परज

धध्य धन्य धन्य धन्य विन्ध्यवासनो ए मा ।
कनक मन्दिर मणि सुजडिन चमकत अति चमत्कार
नव नौबत निशान बाजत गर्जत श्रीशिव
कौलासनो ए मा ॥
छिनमें वृद्ध छिनमें बाल छिनमें तरुण छिन कुमार
असुर दण्डनि सुरन वन्दनि जगनिवासनो ए मा ।
दोनदयालको भक्ति दोजे युगल चरण यश हि लोजे
आदि ज्योति महामाया देव्यत्रासनो ए मा ॥

२

मेरे मन वसोरी औरघुनाथ कीट सुकुट मकराकत
कुण्डल भाल तिलक उर लसोरो श्री० ।
खोटिक शशिसुख ऊपर वारो अधर सुधारस सिन्धु
वसोरी श्री० ॥
पोवत परम रसिकजन सादर नहीं अघात फिर
मन ललचारी श्री० ।
श्यामसुन्दर कमलदल लोचन धनुष पोताम्बर
कमर कसोरो श्री० ॥
रघुनाथ भक्त सुखदायक पावन जनक ग्रह
आय वसोरी ।
भगवान्दास जानकी वर भजु यह नित सुध्यान
उरमें धसोरो ॥

३

तुम कौन कहाँति आए कौन नगरते किस कने
आए यहाँ किसके कहलाए ।
किसने तुम्हें किस कामको भेजा कामभो उसका
किया के नाहीं वहाँ जाचंगी या यहाँ रहोगे क्या
मन में ठहराए ॥

ज्ञान ध्यान वामे सङ्ग लाए मूरख हो या मूल गंवाए ।
माया मोह लोभमे अखतर सुध बुध सब विमराए ॥

५

नींदरिया कात्की आई रे जग परी रोई पकताई ।
रात आए पिछ बहुत दिनन पर फिर गए जब

मोहि मोवत पाई ॥

ठाढ़ रहे यहाके गए तब याकी नींद हकी उड़ाई ।

सोवि संयोगन जागे वियोगन आव नगी कहुं

आख लगाई ॥

नीके भाग जो होत सखीरी प्रिया आवत मोहि

लेत जगाई ।

बलबल जाउं काजमके भागके भनी भई धर

तोड़ समाई ॥

कलिका—यग

आजकी रैन सुहाग भरी लालन मेरे पाए ।

बाजि बधावा सुहावन मजनी हर मङ्गल लाए ॥

योगन हो वन टंटे प्रिया मे नहीं पाये ।

कानन मुद्रा गल बीच सली अइ विभूति रमाये ॥

६

सुख देखे पै बहार रे जधी नहीं प्रीति कुब्जा मे

सुधी ।

जाके आठ पटरानी सुन्दर गोपी सोलह हजार सो

पटरानीकी जा दे गजमुक्ताके हार ॥

भूठी वचन और नाव भांभरी की गए उतरे पार

राजकुल आ धर्म ओ अपने वाने राजनीति गई भार ।

गावै गूढर जधी तुम कहियो प्रभुमे बारबार ॥

७

हो तो चली अब देश विदेश बाबुल तेरा नगरी कूटी ।

वरन फेर कठिन है आवन आग मिलनकी टूटी ॥

ससुर जात हो सङ्ग प्रियाके माता पिता सो कूटी ।

सदया हंसत मे अस रोवत हूँ जैसे मारी लूटी ॥

सांचा मित कोई नहीं जगमे प्रीति जगत्की भूटी ।

ससुर के लीक तुराब से पूछी नैहर सो जो फूटी ॥

५

अभय मुक्तिप्रद काशी जगमें ।

जाकी महिमा मुनी पुराणन कैह गए अकथ

कथासी ॥

कञ्चन मणि रत्न पट भूषण राजते प्रति सुखराशी ।

सकल पुरी तारागणके मध्य शोभित शशि उपमासी ॥

अष्ट महासिद्धि पौर पौरियां मुक्ति है जाकी दासी ।

महापतित नर लहे परम गति परे न यमकी फांसी ॥

जहां राज गौरोपति शङ्कर जगत् गुरु अविनाशी ।

दण्डपाणि गणपति दरबानी भोजनदाता अन्नपूर्णासी ॥

पग पग तोर्य जहां सुर सगरे धर्मद्वी गङ्गासी ।

भैरवनाथ कर कीतवालो गणपति विघ्नविनाशी ॥

नर ते धन्य वसे नगरीमें धर्म कर्म सुखराशी ।

असन वसन धन धाम नवी निधि बहुविध भोग

विलासी ॥

मङ्गल मरण जहां जग वाञ्छित अमर सकल

पुरवासी ।

विधिकी ककु न बसाई मो कर सब ते रहत मे वासी ॥

योगी यती साधुजन जहां वसि तप करे सत्र्यासी ।

प्रेमदास जन तागे मिलावहु हरि वंकुलनिवासी ॥

कलिका—परज

प्रियाके मङ्ग एरो नार चौसर क्यों नहीं खेले ।

इस अवसरकी निपट सार जानो यह दिन है

तीन चार ॥

जो जीते तो प्रियाको जीते हारे तो रहे प्रिया लार ।

तेरो तो सब तरह जीत है जीत तेत न कर

शोच विचार ॥

सात पांचकी कञ्ची पञ्ची तो सोलह है हार ।

दाव रखे मो रङ्ग है वाको वाही जीते सो बार ॥

अब तो अदिया बन्द चले है कर है धो धन रार ।

जब छके कूट जायेगे तेरे तब क्या करोगे खेलार ॥

आठ याम इनकी सुध राखो यह जो खुले दश द्वार ।

तेरो भलाई सजीमे प्यारकी कामकी ले नरद मार ॥

और पांच तिथि हैं पन्द्रह को निहार चंवदे भुवन
खुले ता कों जब ते इनको सवार ।
और भरी अटुकी प्यास बुझावो दशों लगावो वार ॥
निधिकी अट्टि सिद्धि हो तब हीं के जो तुम्हे है
अहंकार ।
बारह हैं बाट अठारह हैं पैड़ा और चाले हैं हजार ॥
तू चल गुरुकी बताई चाल याही ते उतरंगो पार ।
अब तू रङ्ग कर रङ्ग रहो जो न करत तकरार ॥
जाकी जाकी सतह सोलह हैं कौन करे
पिय की प्यार ।

अब कुछ पासोमें पै पासा हाथ एकनके मुख तार ॥
चहिये कुछ और आवे कुछ और याहीते लाचार ।
ऊपर चाल कब हूं तो सूके हमको कहो मतवार
युग युग जिये अर्जाजर्दान ऊपर उठना है एकवार ॥

कजरी—तिताल।

कान्ठ वंशिया बजावे राधा खेले कजरी ।
मयनन अञ्जन आजि राधिका सोहे शृङ्गार
आभरण सजरी ॥
मीर मुकुट काकनो काकि बेसर हार कर सोहै
गुजरी ।
इत ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग लिए उत राधे सखो
लिए गुजरी
कृष्णानन्द प्रभु सावन मास में धूम मची खेलत
कजरी ॥

२

नाथ नैया रे नेवरिया नेरे लेके आव ।
ना मोरे नैया नारे बेड़ा तुमहो गुसैयां मोहो
पार पहुँचाव ॥

३

ककरजवा मंगाय दे मोरे बांके जमादार
चुनरिया रंगाय दे मोरे लरकैया के यार ।
लहरिया पहनके मैं चलखो बजरवा मिल गए
मइकूं बालापनके यार ॥

४
मैं तो सइयारि पवखूं न सुवाना ।
चल चलनन मुहुवा मोर नैहरवा तो के रखे
ओव तीम चुनवाना
सेइनन मुहुवा नोकल बाजार अरे खेलइके मागे
भुनभुन बाना ॥

५

करहैयां नइ नइ जाय गोरी बहियां यार ।
रसलो बुड़ियां चुभि चुभि जाय सइयां मच्चिकूरे
गरहो लो लगाय ॥

६

मजवा घेले कटरी सुरङ्गो खेले कजरी ।
लचकत कटि वा गोरिया आवे सजरो
लचकत करहैयां आवे ह्मके धजरी ॥

७

निबिया लहरिया ले मोरे अङ्गना ।
कंहवां बैठा बे हरियल सुगवा कंहवा बेंठा बे मोर
कहवासें आइला हरियल सुगवा कहवांसें अइला मोर
मोरे अङ्गना ॥
कंहवां पिया बोले हरियल सुगवा कंहवां पिया
बोले मोर मोरे अङ्गना
दुधवा पियाइब हरियल सुगवा मोतिया चुगाइब
मोर मोरे अङ्गना ।
जोतहो के कहलं मैं खेत खरियनवा जातिला
डाल चुलिया दुवार मोरे अङ्गना ॥

८

खेले कजरी गोरिया सावनके मच्चिनवा खेले
सुरङ्ग चुनरिया गोरी ।
लहरिया लै ज़रद किनारो अङ्गिया तनवा सजरी ॥

९

नजराय गइली बालम तारे अंगना ।
तोरे सोनेकी सुराहो मोरा हीरा कङ्गना तोरा
लाख रुपैया मोरा बाला जीबना ॥

१०

खेले कजरी गोकुल मध्य कन्हैया छोटे मोटे लरका
सङ्ग सखी राधा लिए रङ्गिया ।
नाचत कूदत आवे कुञ्जन ठैया कृष्ण रसिक राधा रस
भरियां सांवनके महीना मङ्कू' लागे रलिया ॥

११

भले कहलैरे कबुतरी मचवले कजरी ।
बाबूके बज रवामे सुटवै लंगरी ॥

१२

फूल गेंदवा रे खेले गइलुंरे हरी ।
मोरे स्वामीजो जे मितवा सुन्दरवारि हरी
पुल्लगेवा छटक भुल्लनो टूटलरि हरी ॥

१३

चल चल वसुमतिया बरैयाको दुकान ।
जहां जहां बरिया कतरल पान तहां तहां
वसुमतिया को टिकुली हेरान ॥

१४

फूल गेंदवाके आड़े आड़े आवे गोरिया ।
टपकल बूंद चवल अङ्गिया ॥

१५

भला बे भला मोरे बपहो गोरखपुरवा ।
गोरख पुकारे जनकपुरवा ॥
नथिया मोरो टूट गई नैहरवा ।
कैसे जाउं भला बे भला मोरे पुरवारि गोरखपुरवा ॥

परज—कलिक

मृगनयनी बोल्थो के न राज थारे तो देश विलम्बा
राज ।
आवोजी महरबान सगुन विचारो काहे करो छो
म्हासे खाज ॥

१

बदरिया बरसन लागीरो निश अंधियारी कारो
दामिनो दमके प्राण तरफन लागीरो ।
निजामुद्दौलके आजम लाइले पग तिहारि परसन
लागिरे ॥

२

माई मेरा लाइला बनरा आया खनरो से रङ्ग
रन बन आया ।
अचपल होके गावो मेरासन यह विधिंरि बने
संयोग बनाया ॥

४

धे तो म्हारी कदर न जानदा बे रसिया ।
आप ही क्यारी वारो आप ही माली आपो खेल
खेलारो बे रसिया ॥

५

म्हारे मारुजी से कह ज्यो राज अमलारो
अमलारो बात ।
चन्द्र सरीखो थारो मुखड़ो विराजो उजरे
सेवती से गोरे गात ॥

६

बे राज धाने खमा वो राज खमां माने राखे
दिलाशा दे दे मारा जायां ।
म्हाने बुलाया वारो धे नहीं आया क्यों कर खाजं
थारी गुमां ॥

७

मेरा अलवेलरा सांवलकी आंखदानो सइयो ।
पांच रुपैया वारो पानांदा बीड़ा मुभे मांगे
सारो रातरा ॥

८

भला वो चाहकी चाकरो कोजि अनचाहत
का नाम न लीज ।
औरांदि नाल हंसदा बोलदा नाहक क्यों सांड़ा
जान दौजि ॥

९

घरौ घरौ मैंनू सतांदा यार बे मैं बेख रइयां
तेनू की बे यार ।
तेनू तो नौद न आवे सोवन न दे भानू आंखो
मलमल जांदा यार ॥

१०

रुड़ी मारु आयो है न्हारे घेर ।
कबकी में ठाड़ी ठाड़ी भरज करेशां कहां लगाई
एतो देर ॥

११

केशरिया मारुजी हो मान लोजो न्हारो भरज ।
राजीन्द्र चल श्यो चाकरो लाड़ी जोरा टोला
साथ लोजो ॥

१२

रुड़ी रुड़ी बे पना रुड़ी मांरो राज ।
शिर पर घड़ा घड़े पर गागर चाल चले रुड़ी रुड़ी ॥

१३

भरे हो राजाजो न्हसि काई बो गुना महल पधारो
भरज, करो हो पना ।
अबकी बार न्हा बख्शो साहबां मेहर करो अपना ॥

१४

राज थारो रुड़ी हो रङ्ग मैंने तोरे कारण सब
जग छांडो ।
केशरिया जो थारो बाग बनो छे बूंदीवारो कमर
कटारो ॥

१५

हाल मेरा तुभ को है मालूम तू तो मेरा दिल
जानिड़ा ।
को करां कुछ वश नहीं चलदा क्यों कर आज सांवल
गुमानिड़ा ॥

१६

नजरां रो मेलो राज दोजो सांवलिया न्हाने हो ।
छछंदपना थारा दूर करो साहबां इतनी भरज
सुन लोजो ॥

१७

पइयां पइयां चलू पियाके मिलन को ए सजनी ।
या ऋतु वर्षांमें फखर पिया परदेशवा विरम रहे
सतावन लागे मेरा जिया ॥

कलिक-घट

अतवित मिल किलक पानकपू शुदबुद आमद
चिनाचे मी न बूद पेशानो दोदारो गोशकानो
बीनी नक्क ।

बनियां बकाल दलाल खुशहाल शूद्र ब्राह्मण जनारदार
बिशियार निहाल शुद पालको सवार शुद आमद है
दोस्तां न नृजा शेरवे गनार खान शेख पपू
त्रिया जट भाव जूद काबुल कम्हार बूद यार दिलदार
बुरटवार हुशियार बिनो शराब ख्याल बदस्त
गबरू कर्दान गायद गुफत टपू ॥

अस्य शूनर खर फोल दोद मन गोयम किप्रतीनावतेरा
कसना वरवली चपू अजमे चमेखाडवे गोग
डूगार टपू ।

यह फारसी य दीदनी यदनोके साहब महारवान
कटरदान तोशदान लेकिन इनशा अल्ला ताला बशोर
शाख नजरु आधोन यगोयद सननन सपू ॥

२

नाचत नाचत सारो रन रण्डो जब थको भार भए
तान बैठ बोलिरो ।

खफा हो के नाक चड़ा नोचोसे कहने लगे
तबलेसे सुर काई अब तू लेरो ॥

सुख फार घंघरू ठनकने लागे ठन उन छवि भई
भावकी बंक बलेरो ।

सगरङ्गा बरङ्गो भई ताल से बेताल गावे फिटक
फिटक करे तबलेरो ॥

३

रतियां न अइला गइला सइयां विलम रहिल
के ठइयां रे ।

भकुवा भइला रहिला रतियां कवन तिया
विल महला रे

शेषवा कइला रहिला अंदेशवा नवल तिया गर
सइला रे ॥

जय जय राम जय जय कृष्ण जय माधव जय विष्णु ।
 जय लक्ष्मी मुखकमल मधुव्रत जय दशकम्बर-जिष्णु ॥
 हरि दामोदर दुरित निवारण अपनय भवभयमोहं ।
 भक्तजननप्रिय पङ्कजलोचन नारायण तव दासोहं ॥
 जनकसुतापति चरणपरायण राघव राम पवित्रं ।
 कलिविषनाशन दुष्टविनाशन त्वं हि बन्धु त्वं हित्वं ॥
 हरि सुरनरकरिपो मधुसूदन केशव कलमषभारं ।
 माममुकम्पय दीनमनायं कुरु भवसागरपारं ॥
 त्वं जननी जनकः प्रभुरभ्युत त्वं हि सुहृदकुलमितं ।
 त्वं चरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधिबिहितं ॥
 अपराधं मे सुरहरि परिहरि कुरु वै चरणं शरणं ।
 संसारवन्तरणैकरुणावरुणालयभवतरणं ॥
 पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि गर्भनिवासं ।
 श्रीभमूलभवर्भोतिविभञ्जन मामुद्धर निजदासं ॥
 जय परमात्मन् जय पुरुषोत्तम जय वामन जय कंसारे ।
 मामुद्धर गाविन्द गोपालं पतित विषयसंसारं ॥
 श्रीगोपाजनवल्लभ विट्ठलनारद कृतमिति गातं ।
 तारय नाथ परम पुरुषोत्तम माधवजन्म पुनीतं ॥
 जय आपति जयकेशवकृष्णा जय माधव जय गोपाला ।
 जय दामोदर सुन्दरमन्दिर नन्दनन्दन जगप्रतिपाला ॥
 यशोदानन्दन कंसनिकन्दन भक्तनन्दनकृपाभा ।
 कृष्णानन्द परमानन्द श्रीगिरिधर प्रभुदयाला ॥

कलिङ्ग—माफ तिताना।

भजन धिन तीनो पन बिगरे ।
 बालापन तो खेल गंवायो तरुण भये अकड़े ॥
 हृद भये तब ककुभ न सूभत अन्ध होय निवरे ।
 काहे को देह धरो मानुषकी पशु समान गुजरे ॥
 मन तो धन यौवन मद मातो बोलत गर्व भरे ।
 कहं कबीर सुनो भाई साधो कर ले भजन हरे ॥

२

नीको रवी यशोदा मैया तेरो लरका ।

बचवा छोड़ाय मेरो गउवां सुखाय दीनी और
 तारो मेरो छीको ॥
 दूध दहीको कमारी फोरो मथनिया, माट फोरो
 गहे छीको ।
 मीरांके प्रभु गिरिधर नागर हरि विन सब जग फोको ॥

२

सदा हरि को रस पीजे हो ।
 हरि रस अमृत छाँड़के विष नाहीं गहोजे हो
 तन मन धन हरि जपर सधं वारि दाजे हो ॥
 सब हरिको अर्पण करि चरण गहोजे हो ।
 वृथा उमर योहो जात है वयु सब होजे हो ॥
 दुर्लभ मानुष देह धर यो कारज कोजे हो ।
 हरि विनु माणिक और जो तामे चित न दोजे हो ॥

५

मारग चूका रे सुसाफ़िर ।
 हरिपुर मारग छाँड़के ठग मारगमें ठूका रे ॥
 देह विषय मन इन्द्रिय सङ्ग ज्ञान हू रुका रे ।
 सज्जन सङ्ग को छाँड़के कुसङ्गमें लूका रे ॥
 भ्रष्ट भए निज धर्मते सुनि वचन तिनका रे ।
 ज्ञान धर्म धन को हरे डारे भ्रमके भूका रे ॥
 महा अनर्थप्राप्त करे जैसे सङ्ग ठगों का रे ।
 माणिक जो चाहत भलो सङ्ग त्यागो बुरोंका रे ॥

पर ज—माफ़ तिताना।

जा कर हभ यमुना पछतानी आग लगी है
 भरत हूँ पानी ।
 घाट पे ठाड़ो है तहां मनमोहन चितवत ही
 सुध मोर भुलानी
 लोक कहे सब भई का बावरो मोहन लख कोउ
 रहत सयानी ॥
 अब तो गयो मन हाथ से मोरे मोरी चितवन
 मोरे मुख बिसानी ।
 जा तन लागे सोइ तन जाने काजम पीर
 कोऊ नहीं जानी ॥

कलिङ्ग—दश

नगरिया चोरकीयामें गाफल मारो जावे ।
 चोर सिरदुरै अहङ्कार है जामें काम क्रोध जरावे ॥
 ज्ञान ध्यान कीकु मानत नाहीं अपनी अपनो फेरावे ।
 मन प्रधान चोर है जाको मोह कपट बसावे ॥
 लोभ राजा अमल है जामें नित उठ धूम मचावे ।
 भले लोक सब चुप रहे नक न शीस उठावे ॥
 धर्म ज्ञान डरे दुष्टन सो कब हू न पास सङ्ग आवे ।
 जमा शील सन्तोष नहीं कबहूँ लखा जग भटकावे ॥
 इस नगरीमें वसके माणिक मूढ़ सुख सो सो जावे ।
 काल राजा भारत है तिनका किन हो किनमें रोलावे ॥

२

बटोही तू क्यों सोवे सोवे भवन माहे टाव लगी
 जाग के नाहीं जीवे हो ॥
 तन धन विषय लागिके वृथा वपु खावे हो ॥
 विकट पंथ माहि पखा कर्म बोझ क्यों टोवे हो ।
 मृत्युसिंहका दुःख सुनि तू हो क्यों खावे हो ॥
 नाम अमृत रस रूप को तामें गर्क न होवे हो ।
 माणिक राम सो लागिके सुख सो क्यों न सोवे हो ॥

परज—माह तिताला

पत्थोड़ा पत्थ विचारो रे ।
 विचार विचार कुपत्थमें पग मत धारो रे ॥
 विघ्न घने वा पत्थमें बड़ी पंथ पहारो रे ।
 जो तर जाए नाम सो जिन जाव उधारो रे ॥
 साधुसङ्ग निर्मल हरिके पुर पधारो रे ।
 माणिक हरिपद पायके भव कंको डारो रे ॥

परज—कलिङ्ग

अब क्यों करी है अवार हमरी बार हो नन्द कुमार ।
 गज अभिमान ग्राह जब पकखो कर गहि चक्र
 संभार ॥
 दुष्ट दुःशासन चीर गच्छो जब द्रौपदी की करी
 है सहार ।

खम्भ फारि हिरनाकुश माखो प्रह्लाद लियो उबार ॥
 दशो शोस रावणके तोरे सौता लाय सुरार ।
 भक्त हत अवतार धर्यो प्रभु भूमि उतारन भार ॥
 सकल विलाकत ना कोउ अपना जो जानो ता वार ।
 रामजोदास शरण तेरो आयो ए मोहि तारणहार ॥

२

एरा ए मैं मूकरां मारी माई मैने छेड़े के कुंवर
 कन्हाई ।
 मारग रोके जाने न देगो मेरो कान कौन दधि खाई
 नरसानो खानो सांवलियो सब सन्तन मन भाई ॥

३

जा दिन ते हरि लगन लगाई ।
 एक घड़ी विन मूरत देखे गृह अंगना मोको कहु
 न सुहाई
 चन्द्रसखो हित बालकृष्ण प्रभु लोक लाजको
 सब विसराई ॥

४

कहिये जो कहबेको होय ।
 जात न लगा माई तन जानि जा रे वैद्य कहा
 परो तोय ॥
 लाख सयाने पच पच हारे मर्म व्यथा जानि
 नहीं कोय ।
 चन्द्रसखो पीर तत्र ही मिटेगो मिले सांवरा वैद्य
 जो मोय ॥

५

जानि रे कोउ वैद्य न मनको ।
 जा तन लगे सोइ तन जानि अटपटी प्रीति
 लगन है कठिनको ॥
 हीरेको सार सो हीरो जानि सम्मुख चोट सहे
 शिर घनकी ।
 चन्द्रसखो हित बालकृष्ण कवि चिन्ता है मोहे वा
 सुरगनको ॥

लीनी रो मन मोहन हरके ।
वंशीकी ध्वनि सुन भई हं बावरी लोकलाज सब
गई है बिसरके ॥
रूप ठगोरी डारी मोरी सजनी बेंगां मिलो रो
टोना गयो करके ।
वृन्दावन की कुञ्जगनिनमें कृटी रो मैं पायन परके
चन्द्रसखी हिन बालकृष्ण प्रभु हाथ बिकानी मैं
राधावरके ॥

परज—तिताना

चांदनी छाया रही आधीरात ।
अति सुकुमारी लड़ेती प्यारी प्रीतम उर लपटाय रही ॥
मन सौ मन नयनन सो नयना तन सो तन
उरभाय रही ।
नागरिया नागर टोउ राजत लाजत मृदु
मुसक्याय रही ॥

२

रघुवर आसरो म्हाने थारो छे जी ।
एक आश विश्वास भरोसो और नहीं छे हमारो
भूल पग्यो संसार समुद्रमें भटकत फिरत दुखारो ॥
एक बेर करुणा कर मो पर अपनो आर निहारो ।
जधो पतितनाथ तुम पावन मन करो लोक हंसारो ॥

३

म्हारो राखो लाज मुरारोजी मारो मन लागो
हरिचरणनसों ।
जिन चरणनको कमला सेवे ब्रह्मा आदि गणेशजी
सारद नारद श्रीशुकदेव शेष महेश फणोशजी
सुरपति नरपति गणपति नायक रस पिये
रसना सोजी ॥
धुव तारे प्रह्लाद उबारि राख लियो यातना सोजी ।
चरणकमल में चित विलग्यो है पायो निगम
भना सोजी

जान हरिदास परम पद परसे रोम रोम रसना सोजी ॥

राधे प्यारी हाथ थारे मेहदो रचो घनी ।
नख पंक्ति छविके ऊपर वारुं लालमनो ॥
फुलड़ी फब रहो दोनो करन पर शोभा सरस बनी ।
हस्तराम मन ललचो लाल को रोभरह्यो श्याम धनो ॥

परज—कलिङ्ग

राधा प्यारी थारो वर रुड़ो ।
बार बार मेल्यां वारना मारग नेह निभावन पूरो ॥
रूप लिए ही रहे नृत्यत सावल शोभा नेक रङ्ग रुड़ो ।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनो धन्य सोहागन
अविचल चूड़ो ॥

२

वंशीवालड़ेने केहा जादू कीता ।
राजबहादुर तानांदि मिश अजब मन्व पड़ लोता ॥

कलिङ्ग—तिताना

कान्हा रसिया वृन्दावन वासो ।
यमुनाके नौरे तीरे धेनु चरावे दंशी बजावे
गावे करे सखी हांसो
उरभ रह्यो मन सुरभक्त नाहीं प्रेम फन्दकी फांसो ॥
मोर मुकुट पोताम्बर सोहत मुरली बजावत आछो ।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें रास रच्यो अविनाशो ॥
इत गोकुल उन मथुरा नगरो बीच मिल्यां ब्रजवासी ।
सूरदास प्रभु तिहरे दर्गका लगी प्रेमको गांसो ॥

२

रङ्गरसिया मांका राज ।
रङ्गरसियार्जो म्हाके अन्तर वसिया जमीय नेह
निभाज्योजी ॥
केशरिया अत हंसिया बालम मालमवे के बुलाजा जी ।
रङ्गीला प्रीतम म्हारो मनगो आशा तन का
तपन बुभा जो जी ॥

३

प्यारो थाने खमा हो म्हाने राख्याजी दिलाशा
दे दे दर्मा ।

राज बुलाया थे नही आया कोलो खायो में तो गर्मा ॥
मीठा बोला वागो छाती छोला सांच नहीं छे
मूल जर्मा ।

रङ्गीला प्रीतम थारो आश ही में वन आई
घांकावाया पगाने रहे नर्मा ॥

परज—कलिङ्ग

म्हारो मनुडो राजी ।

कांइ जी करेला म्हारा गुरुजन दुर्जन भकमारि
ला पाजी

यार आगे में तो केनि करश्यां हां हां जी अब में तो
रसिक सनेही जी सो मिलश्यां परत न हारो बाजी ॥

२

थाकी छवि प्यारो राज प्यारो म्हाने लागे ।
छेल छत्रीला रङ्ग रङ्गीला अङ्ग मरगजे बागे ॥
बड़े ही सवारि म्हारे भले ही पधाख्यो

म्हारो आंखइ ब्यारे आगे ।

रसिक गोविन्द अभिराम श्याम थाको मुख देखे
दुःख भागे ॥

३

नयना अमलारा जी माता आए राज ।
रैन कहां थे रह्यो जी सांवलिया सज केशरिया साज ॥
पोक कपोल अधर पर अञ्जन सौंह करो छो
विन काज ।

रसिक गोविन्द पिया थे बहु नायक कांई थाने
आवे न लाज ॥

कलिङ्ग—तिताला

हां जी म्हाका मारवन थाको देश रूडो ।
प्याराजी के पचरङ्ग पाग विराजे प्यारीजो के
पंचरङ्ग गुलाली चूडो ॥

परज—तिताला

वंशी ध्वनि बाजे यमुना तीर ।
सांवन भादो नदी चली जैसे व्रजनारिनको भीर ॥
कैसी वंशी बजाई मोहनी मोहन बलके वीर ।
सूरदास रसवश कर लीनी सुन्दर श्याम शरीर ॥

कलिङ्ग—तिताला

सोवत राधे श्याम जगाई श्याम जगाई ।
बैठे निकट श्याम कञ्जनमें मूदत नयन लेत अलसाई ॥
कानन मोती गले बिच सोहे अलके छूट भुजन
पर आई ।

सौनिका गड्ढा लोम दतुनिया सखियन धाय
यमुना जल लाई
सूरदास तुम्हरे दर्शको निरखत रूप हियरे लगाई ॥

२

तुम कहासे आए जगे पगे प्यारे रैनके उनींदे
हम जो पइचाने तेरो अंखियां खुमार भरों ।
अधरन अञ्जन लिलाट महावर पोके कपोलन लगे ॥
अरसाने सरसाने में जाने पिय चरण धरत डगमगे ।
चन्द्रसखी जो तुम चहां जावो नहीं लागे तुम्हरे संगे ॥

परज—तिताला

में कैसे करि हां बात रो सइयो वा दिन सइयांके
सात रो ।
गुण अवगुण मेरो चित नहीं धरि है जब निर्मल हांके
गात रो ॥

कलिङ्ग—तिताला

में गवने नहीं जइहों रे बालम ।
जो गवर्नकी चर्चा करि है तापर टोना
चलइहों रे बालम ॥

परज—एकताला

बोलन लागे पपिहरा रो ननदी मइ को न
भवनवा भावे ।
मोरे सइयां सन्देगवा न भेजो अधिक शोच जिय
पछतावे ॥

२

कीर्न वन जइहोंरे बिरोगना ।
गोंदलो गह कनो रेवे बार बार जिय भर भर
आयत यत्न जत सों पइहों रे ॥
ले दे मोहि चुनरिया सइयां सुवे रङ्ग बोरीरे ।
बूटी जरद धानी मोकी सोहे हमारे ॥

मैया पार लगावो है दरें करार ।
छोटी नाव विन गुणको ता पर बहत बयार रे
समर घुमड़ नदिया भर आई कहां कर उतरों पार रे
तुम बड़े गर्गवनिवाजरे ॥

मोर पाये चूड़ा चलो नहीं जाय ।
दिली शहर से चूड़ा रंगारंग चूड़ाको कौल
मंगरे दुभ दुभ जाय ॥

कलिह—एकगणना

वाण धनुइयां कित धरें दे री मया ।
तीरों से सब मिल आंगन खेले चारो भैया ॥
काला दूरइ अन्त गए सब मखा बुलियां ।
एक वाण जो खोय गयी सरयू तट मझियां ॥
बाग शुभग बैठक बना आँके बसन बनइयां ।
नानाविध पत्तो बोलि और परम सुख पडयां ॥
सरयू किनारे ना गए बाबाका दहेया ।
तुलसी घर थे बुलायके पृच्छा को न मैया ॥

वीनी रेन हनुमान न आए की वकी पदत
छोहरानी का भारत भाई विरमाए ।
कापि चञ्चल कौन भरोसो देख मधुर फल रहे लोभाए ॥
भोर हात लक्ष्मण संग जरिवे अन्ज उठाय राम
उर लाये ।

तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दर्शको पठेन मरित
भोर ले आए ॥

गोपाला रामा रे हरि हरि गोविन्दा रे जो
ककावार जात मन्दर दिलहा सारि सुजलदी भव नीर
तीर वासा रे ।

गोपी गोपीनाथ गोपी ग्वाला सारि गणपति
मुखदुग गणपति डिढ़कती ॥

धन धन केशवा हरत कलेशवा ध्यावत जाकी
महेशवा हो ।

जाके पद गावल हृदय लगावल गरद मिलावल
अघवा हो ॥
गो ब्राम्हण सधवाके कारण जल वरसीत घट
मेघवा हो ।
प्रागदास प्रह्लादवाके कारण रघवा हो गइल
बघवा हो ॥

भकुवा रे तीय चिन्ता बाय राम कहत हं परल रहो
जाहे जपल शेषवा महेशवा गणेशवा जाहे
जपल है दिनेशवा ।

प्रागदास प्रह्लादवाके कारण रघवा होय गइल बघवा ॥

कानुड़ी मारग लूटे हं राज ।
ले ले रे कानुड़ा माखन मोपि छाड़ दे
मटुकी मीरो फूटे हं राज ॥
हन्दावनकी कुञ्ज गलिन में कञ्चुकीके वन्ध
टूटे हो राज ।

चन्द्रसखा हित बाल कृष्ण कवि लागा लगन क्यों
कूटे हो राज ॥

जयजयवन्ती—तिताला

हम जान लीनी रे पिया ऐसो तिहारो बात ।
मुखका मोचुंसे जियको औरनमें घात ॥
आज मैं करन न पाई रो पिया सन जियका बात ।
जधो जो मैं तिहारो वलैया लेहों मइ को ले चलो
उन ही सात ॥

कवन बे पियालरी जहां मोर भंवरूरे रहि
लो लोभाय ।

वागे हमारी आली उन विन रही सुरभाय ॥

अच्छी वंशो बजाई कान्हा जयजयवन्ती तानसो ।

सा रे ग म प ध नि सा नि ध प म ग रे सा

ताल मान वन्धान सो ॥

४

आज नन्दको नन्दन आलो या मग हो वनको गयो ।
शिर सुकुटु देनि कर बीच वंशी लीनि भाल तिलक
कीनि कोटि कामरूप उदयो ॥

५

दामिनी दमके डर मोहै लागे उमगे दल बादल
श्याम घटा ।

लिख भेजो सखी उन नन्दनको मेरो खोल
किताबको देखे व्यथा
आधी रैनके कारण सदयां विकुरे हं। तो होंगो
वैरागन खोल जटा ॥

६

हां रे सदयां मोरा रे लुब्धानो कवन देशवा ।
जबते गमन कीनो सुध ह न लीनो कासन भेजां
सदेशवा ॥

७

माई नन्द जूके हारे कोई माला मोरी ले गयो ।
माला तो मैं फेर लाजं दरशन कैसे पाजं ऐसी
विखासघाती मेरो छाती छु गयो ॥

८

कहा जानो री कहा जानो लालन हंस कर मन
वश कर लीनो ।

ससकर मोरा हियरामा राजी कसक कसक मोरो
अंगिया कसके पिय सदारङ्ग अति हो रसभोनी ॥

९

ननदी मोसों वैर परी पियसो कहत न बात ।
भावत जात मोरे मनुवारे सदारङ्ग जिय ललचात ॥

१०

म्हांसों काई बोलो म्हारो राज गयलना परदेशो
सुलक बेगाना ।

सगरी रैन सुखसों वीती भोर भए सतरात ॥

११

माई आज तो आवाज आई मजनंके आहकी ।
जिन विन गैल सूनी मेरो सैरगाहकी ॥

चढ़ती अटारी देखती जारी वारी उन विन सुनी
लागत नगरी संसारकी ।

इशक, इशक, सब कोई कहे आशक भए अनेक
इशक-चमन के बीचमें पहुंचा मजनं एक ॥
पयसङ्ग बोसोद मजनं खलके, पुरसीदिये ।

चि बूढ़ गुफ़ गोश गाहै कूय लैली रफ़ बूढ़ ॥

१२

मदनमोहन विन देखे री सजनो घर अंगना न सोहावे ।
जब देखत तब होत चैन जिय विन देखे अकुलावे ॥
चित्त चढ़ी रहे सांवरी मूरत और ध्यान नहीं आवे ।
जानकीदास विलास सकल सुख जो पिय दर्श
देखावे ॥

१३

माई आज तो वंशी बाजो हन्दावनदी कुञ्ज में ।
अवण सुनत सब सुध बुध बिसरी सत्र गोपियनकी
पुञ्ज में ॥

१४

ए री माई कासे कहीं पौर मनकी व्याकुल
होत शरीर ।
जासों लगे सोई नेक न जाने आखर जात अहोर ॥

१५

ऋतुके आगम ये पची तरुवर छाये पियाकी
सुध नहीं पाई जिया भटकत है ।
दामनी दमकत है औरनसों कहा कहीं देख देख—
घटा योगी जटा पटकत है ॥

१६

बहुत दिन वीते री अज हं न आए री लाल ।
जबते भवन ते गमन कीनो कीनो विरह बेहाल ॥
नेक न सुरत लई पिय मोरी पातो न पठाई हवाल ।
अवण सुनत युगराजदास प्रभु मोहन वचन रसाल ॥

१७

वेखी दीवाने लोगी दिन दिन दिन जोषै
कोई मजनं दे कारण दूढ़दो फिरदी आई ।
उसदी सुरत पर जीद साड़ी कुरबान कीती री
लेनी मानी सदके, गइयां रब करे सो होई ॥

१८

सूरत लागी रे बलमा पिया और आवो गरवा
लाग मिले ।
सदारङ्ग महमद शाह रुक टिग मन्दिर बैठे तब
सुख पावे हैं आनन्द दोऊ जने ॥

१९

कीन देश पीठ गइल वा मा ।
वहां माई में चलो सदारङ्ग परदेश ॥

२०

आज तो भवन मेरे जधो आए पावना ।
मथुरामें कंस माख्यो लङ्का माख्यो रावणा
गोकुल में मारो पुतना स्वर्ग पठावना ॥

२१

तुम सुनियो रे तुम सुनियो जधो कपट कहांत,
लाया जोग रे ॥
लिख लिख वैराग पठावत नन्दनन्दन हमको
कुजासे करं भोग रे ।

२२

अजो तुम काहे हो जो तुम काहे रुस रहे
कही और प्यारे सुरजन मिठबालना ।
अनेक बातन किसे बारत रहत निमा जानो जियमें
और कहा कोऊ कसो अजो ॥

२६

तुम्हारे विन कोई नहीं हमारे जो चाहे सो करा
तू घरो भर में रहोम सतार जब्बार जुलफकार ।

अपनी करक लीनी मोरी बहियां पिय रखा कर
कलह बोलन लागी दादुर भिंगरवा
दादुर मोर पपीहा बोले और भिंगरवा सदारङ्गोलो
पायल बाजे क्युं दे लङ्गरवा ॥

जयजयवन्ती—तिताल।

कृष्णके नाम ध्यान धरो मन रेन गई सगरो ठरको ।
चार दिनके स्वादके कारण भूल गए सुध वा घरकी ॥
शोच विचार करो घटमें गुण नाह कियो दूर
अब गुरको ।

चाहे निहाल करे किन में मोहि आश बढी
हरकी हरिको ॥

२

एक समय वषभानु सुता अपने घरतें निकसी
चपलासी ।

बोच ही ठौर मिले जब मोहन छूट गई निकसी
सुख हांसी ॥

घुंघटको पट दूर कियो तब दूजते ह्वं गई पूरणमासी।
कोउ कहे अति ही यह सुन्दर कोउ कहे यह
काम कलासी ॥

३

तेरो कहेया कारो मेरो राधा गोरो है ।
अति ही स्वरूप मानो चन्द्रसी उजियारी है ॥
चम्पा जैसी कलो मानो डाल से उतारो है ।
शङ्ख चक्र गदा पद्म पोताम्बर धारी है ॥
ऐसे श्यामसुन्दर पर कोटि राधा वारो है ।
उत ते आए नन्दनन्दन इत वषभानु दुलारी है
राधा कृष्ण जोरो पर सूर वलिहारो है ॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुमे खण्डाक्ष,

परञ्ज, कलिङ्ग जयजयवन्ती सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशाय नमः

राग—भैरव

मङ्गल माधव नाम उचार ।

मङ्गल वदनकमल कर मङ्गल मङ्गल जनका

सदा संसार ॥

देखत मङ्गल पूजत मङ्गल गावत मङ्गल चरित उदार

मङ्गल श्रवण कथा रस मङ्गल मङ्गल तन वसुदेव

कुमार ॥

गोकुल मङ्गल मधुवन मङ्गल मङ्गल रुचि

दृग्दावन चन्द्र ।

मङ्गल कर गोवर्द्धनधारी मङ्गल वेश यशोदानन्द ॥

मङ्गल धेनु रेणु भुव मङ्गल मङ्गल मधुर बजावत वेनु ।

मङ्गल गोपवधु परिरक्षण मङ्गल कालिन्दा पयफेनु ॥

मङ्गल चरण पथ मणि मङ्गल मङ्गल कोरति

जगत् निवास ।

अनुदिन मङ्गल ध्यान धरत मुनि मङ्गलमति

परमानन्ददास ॥

२

मङ्गल रूप यशोदा नन्द ।

मङ्गल मुकुट कान मङ्गल मधि कुण्डल भलक

विराजत चन्द्र ॥

मङ्गल भूषण सब अङ्ग सोहत मङ्गल मूर्ति

आनन्दकन्द ।

मङ्गल लकुट कांखमें चापे मङ्गल मुरली

बजावत मन्द ॥

मङ्गल चाल मनोहर मङ्गल दरशन होत मिटे

दुखदन्द ।

मङ्गल ब्रजपति नाम सबनको मङ्गल गावत हैं

श्रुति छन्द ॥

३

उठो हो गोपाल लाल दुहो धीरी गैया ।

सद्य दूध मधि पीवहु घैया ॥

भोर भयो वन तमचर बोली ।

घर घर घोष द्वार सब खोले ॥

तुम्हरे सखा बुलावन आए ।

छाण छाण कहि मङ्गल गाए ॥

गोपी रई मथनियां धोवें ।

अपनो अपनो दही बिलावें ॥

भूषण वसन पलटि पहिराजं ।

चन्दन तिलक लिलाट बनाजं ॥

चतुर्भुज लाल गोवर्द्धनधारी ।

मुख छवि पर वल गई महतारी ॥

४

जागे हो मेरे जगत् उजारे ।

कोटिक मनमथ वारों मुसकनि पर कमलनयन

अंखियनके तारे ॥

सङ्ग में ग्वाल वत्स सब लेके यमुनाके तीर वन

जाउं सवारे ।

परमानन्द कहति नन्दरानो दूर जिन जाहु

मेरे ब्रजरखवारे ॥

५

आछो नोको लोनो मुख भोर हो देखाइये ।

निशि के उनींटे नयन तोतराते मीठे धैन भावत

हो जो के मेरे सुख हां बढ़ाइये ॥

सकल सुखकरण त्रिविध तापहरण उरका

तिमिर बढ़ो तुरत नशाइये ।

द्वारे ठाड़े ग्वाल बाल करहु कलेज लाल

मिश्रि रोटी छोटी मोटी माखन सों खाइये ॥

तनिक सो मेरे कन्हैया वारी फेरि डारो मैया

बेषो तो गुहं बनाय गहक न लाइये ।

परमानन्द जन जननी मुदित मन फूलो फलो फूलो

उर न समाइये ॥

६

उठो नन्दकुमार भयो भुनसार गावत नन्दरानो ।

भारीकी जल वदन पखारा सुत कहि सारङ्गपानी ॥

माखन रोटी भरु मधु मेवा भावे सो लीजे हो खानी ।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मन ही मन गुसिहानो ॥

७

उठे मन्दलाल सुनत जननी मुखवानो ।
आलस्य भरं नयन उठे शोभाकी खानी ॥
गोपीजन थकित हिये चितवति सब ठाढ़ी ।
नयन करि चकोर चन्द्र वदन प्राति बाढ़ी ॥
मात जलभारो लिये कमल मुख पखारो ।
नीर ही को स्पर्श करत आलस्य विसारो ॥
सखा हार ठाढ़े सब टेरत हैं तुमको ।
यमुना तट चली श्याम चारण गोधनको ॥
सखा सहित जेवहु बलि भोजन कुछ कीने ।
सूर श्याम हलधर सङ्ग सखा बोलि लीने ॥

८

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई ।
उठो तात भयो प्रात रजनो कों तिमिर गयो
प्रकटे सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥
उठो मेरे आनन्दकन्द नगनचन्द्र मन्द मन्द
प्रकट्यो द्युतिवान् भानु कमलनि सुखदाई ।
सिद्धी सब पुरत वेनु तुम विना न कुटे धेनु
उठो लाल तजो सेज सुन्दर वर राई ॥
मुखतें पट दूर कियो यशोदाका दर्श दियो
और दधि सब मांगि लियो विविध रस मिठाई ।
जेवत दोउ राम श्याम सकल मङ्गल गुण निधान
थारमें कुछ जठ रह्यो सो मानदास पाई ॥

९

प्राणनाथ प्रात भयो जागो बलि जाजं ।
सोना केरो गोपन सुविगुमें गुथाजं ॥
उगत सुरस ज्योति भई कुलहरो बनाजं ।
पाय बांधो घंघरू अरु चालिवो सिखाजं ॥
सूरदास मदनमोहन गुण तिहारि गाजं ।
हरधि निरखि छवि ऊपर बलि बलि बलि जाजं ॥

१०

खेलिये आंगन कृगन मगन कौजिये कलेवा ।
छीकेंते सारो दधि ऊपर तें काढ़ि धरौ पहरि
लेहु भंगुली फेंट हांघि लेहु मेवा ॥
ग्वालनके सङ्ग खेलन जाहु खेलनके मिश्र भूषण लाहु
कौन परो प्यारि ललन निशदिनको टेवा ।
सूरदास मदनमोहन घर हीं खेलो प्यारि ललन
भंवरा चकडोर देहों हंस चकोर परेवा ॥

११

मदनमोहन पिय कौजि कलेज ।
दूध में रोटी सानो माखन मिश्री खानी
जाइ जोइ भावे सोइ सोइ लेज ॥
खांड़ खोर और छत मिठाई आप खाहु और
ग्वालन को देज ।
ब्रजपति पिय फेर खेलन को जाहु वन
सबल श्रीदामा को सङ्ग करि लेज ॥

१२

भोर निकुञ्ज भवन तें भामिनी ।
आवति है लटकति गजगामिनी ॥
अलक सुगन्ध सगवर्गा कृटी ।
निशिके उनादे नयन वीरबहूटी ॥
पलटित वसन रसन मणिभूषण ।
शोभा अङ्ग अङ्ग जित दूषण ॥
गुणनिधान वृषभानु दुलारा ।
दासगोपाल लाल जका प्यारो ॥

१३

रेन जागो पिय सङ्ग रह्यो भानी ।
प्रफुलित मुखकञ्ज नयन खञ्जरीट मौन मैंन
बिथरि रहें चूरण कच वदन ओप कौनी ॥
आतुर आलस जंभात पुलकित अति पान खात
मदमाते तन सुधि न रह्यो शिथिल भई वेनो ।
मांगतें टरि मुक्ताहल अलक सङ्ग अरुभि रह्यो
उरगण फणीश मानो कञ्चुकी तजि दीनी ॥

विकसत ज्यो चम्पकलो भोर भए भवन चली
लटपटात प्रेमघटा गजगति गति लीनी ।
भारति को करित नाथ गिरिधर सुठि सुखकी राशि
• सुरदास स्वामिनी गुणगण न जात चीनी ॥

१४

नागरी नवलाल सङ्ग रङ्ग भरी राजे ।
श्याम अङ्ग वाहु दिथे कुंवरि पुलकि पुलकि हिये
मन्द मन्द हसनि पिया कोटि मदन लाजे ॥
तह तमाल श्यामलाल लटपटो अङ्ग अङ्ग बेलि
निरखि सखो छवि सो केलि नपुर जल बाजे ।
दामोदर हित सुवेश शांभित सखी सुख सुदेश
नव निकुञ्ज भंवर गुञ्ज कोकिल कल गाजे ॥

१५

नवकुञ्ज नयन रतिरङ्ग रङ्गे ।
प्रिया प्रेम वलि रासरस वश अलस वर माधुरी
अङ्ग अङ्गे ॥
रूप यौवन चपलता गुणन आगरि मधुप खञ्जन
मीन मान भङ्गे ॥

कवि कल्याणदास कामिनी उरसि मध्यगति
गिरिधरन सुखद प्रतिविम्ब सङ्गे ॥

१६

प्रातकाल प्यारे लाल आवनी बनी ।
उरसि मरगजी सुमाल डगमगी सुदेश चाल
चरण खूदि मदन जीति करत हामनी ॥
प्रिया प्रेम अङ्ग राग सगवगी सुरङ्ग पाग
गलित वरुह चूड़ अमज वारिकण सनी ।
कल्याणदास प्रभु गिरिधर कण्ठ सुरत पत्र लिख्यो
कर जो लेखनी सुनि पुन राधिका गुनी ॥

१७

आशु नोके बने नन्दनन्दा ।
वदन इन्दुकी ज्योति निरखि नभ चन्द्रमा चार
अम्बुधि परत सघन चन्दा ॥
अम खेद कण गात लाल गिरिधरण सुख
देत मलयज सुपौन मन्दा ।

कल्याणदासनि नाथ डगमगत पग चलत मानो
कुंचर गूँथ्यो प्रेमफन्दा ॥

१८

ललित वदन गलित कुसुम वलित केश
अति सुदेश नयन नलिन रगमगी शशि शरद शर्दरी ।
मरगजी उर माल शिथिल कहुं कहुं चन्दनकी
रेख रसभरे लटपटात गात मधुप अर्बरी ॥
शोभित उर उरज लखिम परसत नहीं परत पछिम
नख छवि पर वारि डारो चन्द्र खर्वरी ।
वासुदेव लाल कल्याण गिरिधर को सुयश
गावत श्रीविठ्ठल पद कमल रज प्रताप गर्वरी ॥

१९

भोर अङ्ग अङ्ग शोभा श्यामके भली ।
मानहु विकसित विचित्र नौल कमलकी कली ॥
प्रिया उरसि लग्न राग सरस कुरित छवि पराग
पौन परसि मन्द ले सुगन्ध को चली ।
करि प्रवेश घ्राण द्वार हरति युवति चित्तसार
मर्म वेधि समरवाण प्रगतत बली ॥
पलटि वसन सुखनिधान मत्त मधुप करत गान
सुरति समय सुयश सुनि अत्रण दे अली ।
गोपालदास मदन मोहन कुञ्ज भवन बलित रङ्ग
सुदित आवनि भावनी सुमानिके रली ॥

२०

शांभित शुभग लटपटो पाग भोने रसिक प्रिया
अनुराग ।
कुंकुम तिलक अलक रुंदुर छवि अरुण
नयन घूमत निशि जाग ॥
कछु जंभात उर माल मरगजी पोके कपोल
अधर मसि दाग ।
चतुभुज प्रभु गिरिधर नोके लागत आलस वश
सब अङ्ग विभाग ॥

२१

भोर तमचर बोले दीनों जूद रसना ।

आतुर है उठि धाए डगमगात चरण आए आलसमें
नयन वैन अटपटे रसना ॥

सन्ध्या जू कहि सिधारे वन जियमें संभारे
सकुचिके मन्द मन्द प्रकटित दशना ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण सिधारो तहां जहां
रति रङ्ग रस लपटाए वसना ॥

२१

भूमत मत्त गज ज्यों चलत डगमगे ।
वतियां कहत सैन सुख न आवत वैन
आलस उनीदे नयन शोभित रगमगे ॥

नागर नन्दकिशोर नीकी छवि आए भोर
अङ्ग अङ्ग रतिरङ्ग चिह्न जगमगे ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन ह्रीं लागे पलक चारि
याम जीति काम रहै जू टगमगे ॥

२२

आजु छवि देत नयन आलस भरे रगमगे ।
वैन पलक न परो सुरत रण जय करी
भोर आए लाल धरत पग डगमगे ॥

तन और गति भांति कहत कहि न जाति कांति
अद्भुत सकल अङ्ग अङ्ग जगमगे ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन भनी करी पलटि
आए वसन सोधे मिले सगमगे ॥

२४

भोर डगमगात पग जीति मन्मथ चले ।
सकल रजना जगे नयन नहीं पल लगे
अरुण आलस चलत नयन लागत भले ॥

करिव नागर नटत चिन्ह प्रकटित करत वसन
आभूषण सुरति रण दलमले ।

चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरन छवि बड़ी अधर
काजर कंकुम अङ्ग अङ्ग रले ॥

२५

डगमगात आए नटनागर ।
कहु जंभात अलसात भोर भए अरुण नयन
भूमत निधि जागर ॥

रसिक गोपाल सुरति रण को यश सकल चिह्न
लाए उर कागर ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कुञ्ज गढ़ रतिपति जीयो
रुख सुखसागर ॥

२६

भोर भए आए हो ललन नीकी भंतियां ।
जावकके उर चिह्न नील पट प्यारी दौने नयन
आलस भीने जागे रतियां ॥

कुटा घोषा वनदा मन खैचत अभिराम कंसके
दुरत श्याम डगमगी गतियां ।

केशवदास प्रभु नन्द सुवन काहे लजात भलेजु
सांवरे गात जानो सब घतियां ॥

२७

आइयेजु भले आए कत सकुचत हो ।
सुरति संग्राम कोनि सौतिन का सुख दोने
याहो रस भोने हा पै मोकों तो रुचत हो ॥

तुम देखे रिस गई उपजो है प्रीति नई भई सो
भई अब काहे धों सोचत हो ।

नारायण मोहि जानो वहै वैरो करि मानो
कहा जीय एतो अभिलाषजू सुचत हो ॥

२८

अरुण नयन राजत प्रभु भोरे ।
अति सुख सुरति किये ललना सङ्ग जात समद
मन्मथ सर जोरे ॥

राति उनीदे अलसात मराल गति गोलक
चपल रहत कहु घोरे ।

मनहुं कमलके कोष ते प्रियतम टुंढत रहत
छपि रिपुदल दोरे ॥

सजल कोप प्रतिमें जु शोभियत सङ्गम छवि
तारे पर डोरे ।

मनु भारतके स्मर मीन शिशु जात तरल चितवत
चित चोरे ॥

वरणि न जाइ कहां लों वरणी प्रेम जलद वेला
बलभोरे ।

सूरदास सो कौर्म त्रिया जिनि हरिके सकल
अङ्ग बल तोरे ॥

२८

नाहि दुरत नयना रतनारे ।
जनु बन्धूक सुमन विशाल पर सुन्दर श्याम
शिलोमुख तारे ॥

रहो जो अलक कुटिल कुण्डल पर मोहन चितवत
चितै विसारे ।

शियिल भौंह धनु गहे मदनगुण रहै कोकनद
वाण विषारे ॥

मंटे ही आवत है ए लोचन पलक आतुर उधरत
न उधारे ।

सूरदास प्रभु सोई धो कन्हो ऐसी को वनिता जासों
रति रण हारे ॥

३०

आवत लाल गोवर्द्धनधारी ।
आलस नयन सरस रस रङ्गित प्रिया प्रेम नवतन
अनुहारी ॥

विलुनित माल मरगजो उर पर सुरति समरको
लगी पराग ।

बुध्बन श्याम अधर रस गावत सुरभि मुख भाव
भैरव राग ॥

पलटि परे पट नील सरखीके रसमें भ्लीलत मदनतड़ाग ।
हृन्दावन वीथिन अवलोकत कृष्णदास लोचन
बहु भाग ॥

३१

भोर भावतो श्रीगिरिधर देखों ।
शुभग कपोल लोल लोचन कवि निरखिके नयन
सुफल करि लेखों ॥

नख शिख रूप अनूप विराजत अङ्ग अङ्ग मन्मथ
कोटि विशिखों ।

चतुर्भुज प्रभु रस रास रसिक को बड़े भाग बल
इकटक पेखों ॥

३२

श्याम सुन्दर भोर भवन आगे होय आवे ।
कबहुं मुख मन्द हास मेरे मेरे सखि सुखकी रास
कबहुं वेन कबहुं नयन सैन हीं जनावे ॥
मेरो दधि मथन बार उनकी उठनि सवार
रई नेत माट समेत सकल हीं विसरावे ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन अङ्ग अङ्ग कोटि मदन
मूरति चलत वनको तनरु मन कीं चिते हो पुरावे ॥

३३

जइये वह देश जहां नन्दनन्दन भेटिये ।
निरखिये मुखकमल कान्ति विरह ताप भेटिये ॥
सुन्दर मुखरूप सुधा लोचन पुट पोजिये ।
लम्पट लव निमिष रहिन अंचय अंचय जोजिये ॥
नख शिख मृदु अङ्ग अङ्ग कोमल कर परसिये ।
अरु अनन्य भाव सो भजि मन क्रम वच सरसिये ॥

रास हास भुव विलास लोला सुख पाइये ।
भक्तनके यूथ सहित रसनिधि अवगाहिये ॥
इह अभिलाष अन्तरगत प्राणनाथ पूगिये ।
सागर करुणा उदार त्रिविध ताप चूरिये ॥
क्षण क्षण पल कोटि कल्प वीतत अति भारी ।
परमानन्द कल्पतरु दीनन दुखहारो ॥

३४

भोर भए नौको मुख हंसत दिखाइये ।
रातिके दरशके बिकुरे दोज पलक मेरे वारि
फेरि डारों नेकु नयननि सिराइये ॥
कोमल उन्नत वाहु ऊपर अमित भाव मेरो
तेरो छातो छवि अधिक बढ़ाइये ।

श्रीतस्नामी गिरिधर सकल गुणनिधान कहा
कहुं मुख करि प्राण ही ते पाइये ॥

३५

विलुनित करपल्लव मृदु वेन ।
हरषित हुंकरत आवत घेन ॥

कोटि मदन द्युति श्याम शरीर ।
 विपति कल्पतरु यमुना तीर ॥
 दक्षिण चरण चरण पर धरे ।
 वाम अंग भ्रूकुण्डल चले ॥
 वरुह चन्द्र वन धातु प्रवाल ।
 मणि मुक्ता गुञ्जाफल माल ॥
 देखन चलहु जेम नन्दलाल ।
 ललित त्रिभङ्गी मदन गोपाल ॥

२६

तोहि ध्यान लाग्यो मज्जनी रो वारक दृष्टि परे मोहन ।
 देखियत चित्र लिखीसी ठाढ़ी मदन सिन्धुजल
 बून्दसनी ॥
 रूपनिधान कमलोचन तोहि मिले आजुकी रजनी ।
 कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक युवति दुखहरनी ॥

२७

आखिनमें दुराय प्यारो काङ्ग देखन न दांजिये ।
 हृदय लगाई सुख पाई सुख सब गुणनिधि पूर्ण
 जोड़ जोड़ मन इच्छा छाँड़ सोड़ सोड़ क्यों न कोजिये ॥
 मधुर मधुर वचन कहत अवगनि सुख दांजिये ।
 निर्मल प्रभु नन्दनन्दन निरखि निरखि जोजिये ॥

२८

ऐसे ही भयो व दधि विना मथन किये देह
 यशमति नेकु अपनी रई ।
 अपनहुं टूँटि हारो तैसी निशि अंधिआरि पाऊं न
 भवन मांभ कहां धो गई ॥
 ककु न जिय सुहाई याही तें आतुर आई लोनोक
 लालच जिय चटपटी भई ।
 दिना चारि करों काज बाढो नन्दजू को राज
 जीलों बहुरि हीं ल्याऊं नई ॥
 चतुर्भुजदास रानी मेरी अति चोप जानी है
 प्रसन्न मणि महिया आनि दई ।
 भोर ही देखं अशोष वारजि निखिसो सीस तिहारि
 गिरिधरकी हीं बलि बलि गई ॥

२९

श्रीनाथ जोको ध्यान मेरे निशिदिना रो माई
 माधुरी मूरति सोहनी सूरति चित्तलियो सुराई ।
 लाल पाग लटकि भाल चिबुक वेरर कण्ठमाल
 कर्णफूल मन्दहास लोचन सुखदाई ॥
 मोर पक्ष शोष धरं मोतिनके हार गरे बाजू बन्द
 पहंचिन कर मुद्रिका सुहाई ।
 सुद्र घण्टिका जेहरि नूपुर बिछिआ सुदेश
 अङ्ग अङ्ग देखत उर आनन्द न समाई ॥
 मुरली अधर धरे श्याम ठाढ़े ब्रज युवति माह
 सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धन राई ।
 निरखि रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान
 वल्लभ पद किङ्कर दामोदर बलिजाई ॥

३०

श्रीकृष्ण जो को ध्यान मेरे निश दिनारो माई ।
 मनके महल प्राति कुञ्ज तामें यदुराई ॥
 सांवरै वर्ण कोमल चरण नख देखे चक्रचोषो
 होत पाय नूपुर पंजनी सो विधिने बनाई ।
 दाहिने पद पद्म ताते ठेढ़े धरत आलो रा
 ऐसे चरण दुखके हरण हैं मदा सुखदाई ॥
 लाल हजार ताके बोच कञ्चनके तार लगे काछनो
 पचरङ्ग तापर किङ्किणी छवि छाई ।
 वनमाल मुक्तामाल कण्ठ बनो कौस्तुभमणि
 पोताम्बर चटक तामें दामिनो द्युति पाई ॥
 बाजू बन्द अङ्गुरी मुन्दरी नगन को अति चमत्कार
 अरुण अधर मधुर सुर मुरली बजाई ।
 कमल नयन विमलकान्ति कुण्डल प्रतिभिस्व
 होत आनन्द सो मुख मानो रङ्गोरो मुसकाई ॥
 धंघरवारी अलक भलक किये चन्दन खौर
 और मोर मुकुट शोष धरे बनो सुन्दरताई ।
 कहे भगवान् हित राम राय प्रभु को निहारि
 श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रट लाई ॥

४१

सुमिरो नर नागुरवर सुन्दर गोपाल लाल ।
 सब ही दुःख मिटि जैहें चितवत लोचन विशाल ॥
 अलकनका भलकन लखि पलकन गति भूलि जात
 भूविलास मन्दहास रदन छदन अति रसाल ।
 निन्दित रवि कुण्डल कवि गण्ड मुकर भलमलात
 पिच्छगुच्छ कतवतंश इन्दु विमल विन्दु भाल ॥
 अङ्ग अङ्ग जित अनङ्ग माधुरी तरङ्ग रङ्ग
 विमद मद गयन्द हीत देखत लटकीलो चाल ।
 रतून रसन पोत वसन चारु हार वर शृङ्गार
 तुलसी रचित कुसुम खचित पीन उर नवीन माल ॥
 ब्रजनरेश दंशदीप हृन्दावन वर महीप
 श्रीवृषभानु मान्यपात्र सहज दीनजन दयाल ।
 रसिक भूप रूपराशि गुणनिधान जान राइ
 गदाधर प्रभु युवतिजन मुनि मानस मन मराल ॥

४२

दीन्हों दर्श सुपनमें आई ।
 क्षण एक सुख उपज्यो मेरे मन गयो कहं
 हरि विरह बढ़ाई ॥
 हा हा पांड परति हों तेरे क्यों हं करि लावे न बुलाई ।
 अब न परत मोहे कल पल क्षण विनु भेंटे जिय
 अति अकुलाई ॥
 यह दुःख काहि कहों सखि तो विन मेरे तू हा
 एक सहाई ।
 कहा विलम्ब करति जैबेको तोसे कहति सखि
 सोहें खाई ॥
 वह मूरति गड़ि रही हियेमें निकसत नहीं
 न और उपाई ।
 उठिए हे सुनि विनती मेरो यशमति सुत
 रसिकनिके राई ॥

भैरव—चर्चरी

हरिके विमुखन को मुख जिनि दिखावे
 जिनि दिखावे नाथ जिनि दिखावे ।

जिनको सङ्गति किये होत दुर्मति हिये
 हरिके गुण रूप यश तुर्त विसरावे ॥
 जिनके परसत सदा सरस मन विषय रस मग्न हूँ
 जात अति पाप उपजावे ।
 करत कहु ना डरे गौरमें चित धरे सत्सङ्ग
 परिहरे युवति चितु लावे ॥
 साधु निन्दा करे भूट भाषे सदा प्रीति राखे
 विषयो वचन मन भावे ।
 अनेक साधन करि जाति राख्यो भाव क्लिनकमें
 जल अग्नि ज्यो बुभावे ॥
 तँई जन विमुख जे करे औरि बात कृष्ण न सुहात
 संसार धावे ।
 साधु सङ्गति रहे वचन हरि गुण कहे सतत
 निबहे रसिक सोई सुख पावे ॥

२

नाथ हा हा मोहि दर्श दीजे ।
 दोष जिनि मन धरो सहज करुणा करो
 बिगर साधन मोहि दास करि लौजे ॥
 दुःखित क्षण होत जिय वदन देखे विना
 रैन दिन तपत चित कैसे जीजे ।
 कासों कहिए हिये राखिए कौन विधि रहतु
 नहीं क्यों हं करि देह छोजे ॥
 लेत न उसास उर कैसे हो समाई नहीं सोचु
 टग भरि न पाजे ।
 वदन लावति अमृत रसिक प्रीतम सुखद पान
 विनु सकल तन कैसे भोजे ॥

३

नेकु बोलो नाथ अमृत रस वैन ।
 और न सुहाई ए रो करति हों हाई नित चित
 न लागत कहं नेकु नहीं चैन ॥
 दीनजन मन मनोरथके पूरण करण और तिहुं
 लोकमें देखियत है न ।

जो मिलत आइ त लेत सर्व स्वभाव करि कहौ
 कैसे हरि मनु रहै ऐन ॥
 अर्थ सब रावरो है तिहारि हाथ नाथ कहौ और
 समर्थ है को दैन ।
 रसिक पिय जिनि करो कठिन मन दोन पर
 परसिके तजत यह लक्षण तो घटे न ॥

४

ए ललना जागे भयो भोर ।
 दूध दही पकवान मिठाई लोजिये माखनचोर ॥
 विकसे कमल विमल वाणो बोलन लागे पत्नी
 चहुं और ।
 रसिक प्रातभ सां कहति नन्दरानी सुनि आवो
 बैठी गोद हा हा नन्दकिशोर ॥

५

वृन्दावन नव निकुञ्ज ठाड़े उठि भोर ।
 बाह जोरि वदन मोरि हंसत सुरत रतिकी करि
 चितवत पुनि कछु लजाइ नयननकी कोर ॥
 करत कबहुं वेणु नाद अधरनि पाइ सुधाखाद
 पक्षागण प्रमुदित मन बोलत चहुं और ।
 रसिक प्रातभ कवि निहारि प्रकथ्यो घन जिय विचारि
 बार बार उमंगित हां नाचत है भोर ॥

६

श्रीवल्लभ सुयश सन्तत नित उठि गाऊं ।
 मन क्रम वचन क्षण एक न विसराऊं ॥
 पुरुषोत्तम अवतार सकृत फल फलित
 जगत् वन्दन आविठलेरा दुनराऊं ।
 परसि पदकमल रज निरखि सान्दर्य्य निधि
 प्रेम पुलकित कलुष कोटिक नशाऊं ॥
 श्रीगिरिधरन भवपति मान मईन करण
 घोषरक्षक सुखद सुयश सुनाऊं ।
 श्रीगोविन्द ग्वाल सङ्ग गाय ले चलत वन निरखि
 नयन सिराऊं ॥

श्रीबालकृष्ण सदा सहज बालक दशा कमल
 लोचन सुहृषित रुचि बड़ाऊं ।
 भक्तिमार्ग सुदृढ़ करण गुणराशि ब्रजभृङ्गल
 आगाकुलनाथ ही लड़ाऊं ॥
 आरघुनाथ धर्मधुरन्धर शोभासिन्धु रूप लहरिन
 दुःख दूरि बहाऊं ।
 पतित उद्धरन महाराज श्रीयदुनाथ विशद
 अम्बुज हाथ शिरसि परसाऊं ॥
 श्रीधनश्याम अभिराम रूप वर्षा खातो आशा
 लागि रसना चातक रटाऊं ।
 चतुर्भुजदास पथ्या द्वार प्रणिपात करे सकल
 कुलकी चरणामृत भोर उठि पाऊं ॥

७

भक्तु श्रीविठ्ठल चरण सरोजं ।
 नखमणि दीपति दमित मनोजं ॥
 यिच्छ सिय दिसत तं सुखसारं ।
 न्यजसि न किमिति विषय धृत भारं ॥
 यदि वाञ्छसि हरिभक्ति सुगतं ।
 कुरु चपलं शरणागत यत्नं ॥
 प्राप्य सुदुर्लभ नरवर देहं ।
 परिहर सकल निगम सन्देहं ॥
 मानय हृदय मयोदित वचनं ।
 तदर्थसि नोचेदतिशय पचनं ॥
 वत्सपद भावय भवजलधिं ।
 सतसमि भवाधिनववधिं ॥
 नाथ तवाह मितोरणरावं ।
 पूरय सतत मिमं मयि भावं ॥
 तव गुणगण कथितामृत गाथि ।
 प्रार्थमिदं दिश तव रघुनाथि ॥

८

श्रीविठ्ठलेश विठ्ठलेश रसना जप मेरी ।
 अन्धनको यहो सार याहीमें होत पार
 बार बार कहत ता सों तू वहि तू मेरी ॥

अनत ह न भलो तोर वेगि कछो करहि मोर
 भजि लेसिरमौर नाथहिं सकल सुखद केरो ।
 जगत्जनकी सहाय प्रेम पुञ्ज सुयश गाय दूर करो
 असदु बात विषया अरुभेरी ॥

प्रकटित सकल सृष्टि आधार ।
 श्रीमदल्लभ राजकुमार ॥
 धेय सदा पद अखुज सार ।
 अर्गणित गुण महिमा जु अपार ॥
 धर्मादिक द्वार प्रतिहार ।
 पुष्टि भक्तिको अङ्गीकार ॥
 श्रीविठ्ठल गिरिधर अवतार ।
 नन्ददास कीन्हो वलिहार ॥

१०

जय जय श्रीवल्लभ प्रभु विठ्ठलेश साथे
 निज जन पर करत कृपा धरत हाथ साथे ।
 दोष सबे दूरि करत भक्तिभाव हिये भरत
 काज सबे सरत सदा गावत गुण गाथे ॥
 काहे कीं देह दमत साधन मरि मूर्ख जड़
 विद्यमान आनन्द तजि गहत क्यों अपाथे ।
 रमिक चरण शरण सदा रहत हैं बड़भाग जन
 अपना करि गोकुलपति भरत ताहि वाथे ॥

११

श्रीविठ्ठलनाथ जूके चरण शरणं ।
 श्रीवल्लभनन्दनं कलिकलुषखण्डनं परमपुरुषं
 त्रयताप हरणं ॥
 सकल दुःख दारणं भवसिन्धु तारणं जनहित
 लीला देह धरणं ।
 कान्हरदास प्रभु सब सुख सागरं भूतले दृढ़
 भक्तिभावकरणं ॥

१२

जय जय जय श्रीवल्लभनन्द ।
 कोटि कला हृन्दावन चन्द ॥

निगम विचारे न लहे पार ।
 सो ठाकुर अज्ञाजुके द्वार ॥
 लीला करि गिरि धाख्यो हाथ ।
 चात खामी श्रीविठ्ठलनाथ ॥

१३

नयन भरि देखीं गिरिधर का कमल मुख ।
 मङ्गल आरतो करीं प्रात हो वारन निरखत होत
 परमसुख ॥
 लोचन विशाल छवि सच्चि हृदयमें धरीं
 कृपा अवलोकन चारु भ्रुकुटिनु रख ।
 चतुर्भुज दास प्रभु आनन्द निधिरूप निरखि
 करीं दूर सब रैनकी विरह दुख ॥

१४

मङ्गल आरतो गोपालकी ।
 नित उठि मङ्गल होत निरखि मुख चितवन
 नयन विशालकी ॥
 मङ्गल रूप श्यामसुन्दर को मङ्गल छवि भ्रुकुटो
 भालकी ।
 चतुर्भुज दास सदा मङ्गलनिधि वानिक गिरिधर
 लालकी ॥

१५

मदनगोपाल हमारे राम ।
 धनुष बाण धरि विमल वेणु कर पोत वसन
 अरु तन घनश्याम ॥
 अपनो भुजा जिनि जलनिधि बांध्यो रास
 नचाये कोटिक काम ।
 दशशिर हति सब असुर संहारे गोवर्द्धन
 धाख्यो कर वाम ॥
 तब रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्य विमल
 बहु नाम ।
 परमानन्द प्रभु भेद रहित हरि निजजन मिलि
 गावत गुणश्याम ॥

अथ राम-कीर्तन

राग रङ्गनिध मिलवत नई ।
नाचति ब्रज ललना तनु थई ॥
मुखरित कटितट मणि मेखला ।
अभिनव यत् चञ्चल करतला ॥
नृपुत्र सञ्चित मोहित जना ।
लेति उरप गति प्रसुदित मना ॥
कृष्णदास प्रभु ते अङ्गवारी ।
रिभए लाल गोवर्द्धनधारी ॥

२

नीकी मोहि लाग्यो गिरिधर गावे ।
ततथेड ततथेड रे रव राग मिलि मुरलीको बजावे ॥
नाचत नृप हृषभानुनन्दिनी ओघर गति रङ्ग उपजावे ।
नृपुत्र रणित मुखर मणि कङ्कण सखी यूथ
सुखराशि बटावे ॥
सुरति देत मधुमत्त मधुपकुल एकताली मक्के
मन भावे ।
सुरति सिन्धु प्यारी पिय पदरज कृष्णदास
न्योक्तावरि पावे ॥

३

प्यारी श्रीवा भुज मिलि नृत्यत पिय सुजान ।
सुदित परस्पर लेत गतिमें गति गुणारशि
राधे गिरिधरन गुणनिधान ॥
सरस मुरली ध्वनि सों मिले सप्तसर गावत भैरव
राग अवघर तान वन्धान ।
चतुर्भुज प्रभु श्याम श्यामाकी नटन देखि रोम्हे
खग मृग वन थकित श्योम विमान ॥

४

नृत्यत गोपाल सङ्ग राधिका बनो ।
बाहुदण्ड भुजन मिलि मण्डल मधि करत केलि
सरस गान श्याम करे सङ्ग भामिनो ॥
मोर मुकट कुण्डल कवि काछनी बनो विचित्र
भक्तकत उरहार विमल थकित चांदनी ।

परम सुदित सुर नर सुनि वर्षत सब कुसुम अति
वारति तन मन प्राण हृष्णदास स्वामिनो ॥
नाचत हृषभानु सुता हंस सुता पुलिन मध्य
हंसहंसिनो मयूर मण्डली बनो ।
गावत गोपाल लाल मिलवत भूपताल चाल
लज्जित अति मत्त मदन कामिनो अनो ॥
पदिकलाल कण्ठमाल तरल तिलक भलक भाल
श्रवण फूल वर दुकूल नासिका मनो ।
नील कङ्कणी सुदेश चम्पकली गलित केस
मुखरित मणि दाम वाम कटि सुकाछनी ॥
मरकत मणि वलयराव मुखरित नृपुत्र सुभाव
जावक युत चरण नखनि चन्द्रिका घनो ।
मन्द हास भौंह पास रास लास भुव विलास
अलग लाग लेत सुघर राधिका गुनी ॥
काम अन्ध कितव वन्ध रोम्ह रङ्ग चरण गहे
साधु साधु कहत फिरत राधिका धनी ।
भेटत गहि वाहुमूल उरज परस भई फूल
व्यास वचन सानुकूल रसिक जीवनो ॥

५

मोरनके मण्डलमें नाचत पिय प्यारी ।
सिखवत सब तान मान सोखति लखि दुरनि मुरनि
हां हां हां हांकि आप देत हैं कर तारी ॥
मधुरे सुर राग लेत रागिणी सां मिले तान
रोम्हके लपटात दोज भरि भरि अंकवारी ।
श्रीविठ्ठल सङ्ग खेलति बोलति तताथेइ थेइ
विहरत गिरिधारी लाल सुन्दरि नव नारी ॥

अथ श्रीयमुनाजीके पद

जय जय श्रीसूर्यजा कलिन्द नन्दनो ।
गुल्ल सता तर सुवास कुञ्जकुसुम मोद मत्त
गुल्लत अलि शुभग पुलिन वायु मन्दनी ॥
हरि समान धर्मशील क्रान्ति सजल जलद नील
कटि नितम्ब भेदन नित गति उतङ्गनी ।

सिक्ता जनु मुक्ताफल कङ्कण युत भुज तरङ्ग
 • कमलनी उपहार ले पिय चरण वन्दनी ॥
 श्रीगोपेन्द्र गोपी सङ्ग श्रमजलकणसिक्त रङ्ग
 अति तरङ्गनी सुरसिक रस सुफन्दनी ।
 शीत स्वामी गिरिवरधर नन्दनन्दन आनन्द कन्द
 यमुना जनदुरित हरण दुःख निकन्दनी ॥

अतिमङ्गल जल प्रवाह मनोरमा
 सुखावगाहन नव द्युति राजत अति तरणि नन्दनी ।
 श्याम वरणा भलक रूप लाल लहरि वर अ पू
 सेवत सम्तत मनोज वायुमन्दनी ॥
 कुमुद कञ्जवन विकाश मण्डित टिश दिश सुवास
 कूजित कलहंस कोक मधुर कन्दनी ।
 प्रफुलित अरविन्द पुञ्ज कीकिल शुकसार गुञ्ज
 सेवित अलि शृङ्ग पुञ्ज विविध वन्दनी ॥
 नारद शुक सनक व्यास ध्यावत मुनि करत आश
 चाहत हैं पुलिन वास सकल दुःख निकन्दनी ।
 नाम लेत कटन पाप ऋषि किन्नर मुनि कलाप
 करत जाप परमानन्द आनन्द कन्दनी ॥

श्रीयमुनादेवी कौन भलाई ।
 नाम रूप गुण ले हरिजू को न्यारी ये अपनी
 चाल चलाई ॥
 उन वश देश कियो भ्राता को तुमहि परसि
 कोऊ उत ही न जाई ।
 जे तन तजत तोर तुम्हरे ते तात किरणमें गैल लगाई ॥
 मुक्तावधुको करि दूतल्वं अधमनिको ले आनि मिलाई ।
 आपुन श्याम आनि उज्ज्वल करि तात तपत
 आपु शीतलताई ॥
 जल को छल करि अनल अधन को यह सुनिके
 कोउ क्यों वपत्याई ।
 निशदिन पञ्चपात पतितन को तदपि गदाधर
 प्रभु मन भाई ॥

यमुना यमुना नाम भजो ।
 हरिवत् करो आराधन इनको और कुपन्य तजो ॥
 देहें सकल पदारथ तुमको और का नाहीं गजो ।
 ब्रजपतिको अति हो प्यारो है तातें सकल
 शृङ्गार सजो ॥

समुदाय

अरुभियो नीलाम्बर पीताम्बर महियां ।
 कुण्डल सां लर लट वेसर सां पात पट हार हुमें
 वनमाल बहियां में बहियां ॥
 हंसगति अति कवि अङ्ग अङ्ग रह्यो फवि उपमा
 विलोकिये कों पटतर नहियां ।
 कामके कलाल छूटे सेज हुके सुख लूटे सूर
 प्रभु विलसे कदम हकी छहियां ॥

आए लाल डगमगत प्रात ।
 भाल महावर पीक कपोलनि अधरन मसि
 नयननि अरसात ॥
 मोतोमाल लसे उर विनु गुण शिथिल पाग
 शिथिल सब गात ।
 बोलत बोल अटपटे मोहन तापर सोह
 करत न लजात ॥
 ओटे नील वसन तुम आए हेज चन्द्र ऋद
 मांभ लखात ।
 सांचे बोल निबाहे ब्रजपति माया करि आए परसात ॥
 अरुण उदय आए मेरे नन्दलाल ।
 शिथिलित अङ्ग उनीदे नयननि धरणी धरत
 डगमगी चाल ॥
 अधरनि अञ्जन पीक कपोलनि लटपटी पाग
 जावक लगी भाल ।
 तापर सोह करत हो ब्रजपति उरसि विराजत
 विन गुण माल ॥

प्रात समय आवत गिरिधारी ।
कुञ्ज महलमें चले भोर उठि सङ्ग राजत
वृषभानु दुलारी ॥
घृमत नयन उनीदे निशिके निरखि सङ्गचरी गई
वलिहारी ।
पीक कपोलनि लगे दुहुँनिके ब्रजपति शिथिल
गात अति भारी ॥

घृमत रतनारे नयन सकल निशा जागे ।
लटपटो सुदेश पाग अलकनको छलक बीच
पीक छाप युग कपोल अधरनि मसि लागे ॥
विन गुण उर माल बनो बीच नखनि रेख ठनो
पलटि परे वसन पीत कङ्कण सों दाग ।
चाक बन्यो चन्दन वनमाल लग्यो चन्दन सों
उगमगात चरण धरत प्रिया प्रेम पागे ॥
वचन रचन कियो सांभ वेगि आये भोर सांभ
वलि वलि या वदन कमल शोभित अनुरागे ।
जाय वसो वहो धाम विनसे जहां सकल याम
गोविन्द प्रभु वलिहारी कर जोरे मांगे ॥

आए भोर उनीदे श्याम ।
सकल निशा जागे प्यारी सङ्ग हारे हो रतिरण
संग्राम ॥
शिथिलित पाग भाल पर जावक हिये विराजत
विन गुण माल ।
कुङ्कुम तिलक अलक पर सेंदुर शुभग पीक
सोहत दोउ गाल ॥
कङ्कण पोठ गच्छो उर नख छत जनु घन सांध
हैजको चन्द ।
चीत स्वामी गिरिधरण भले तुम मोहि खिभावत
हो नन्दनन्द ॥

सुमिर मन गोपाल लाल सुन्दर अति रूपजाल
मिटि हैं जञ्जाल सकल निरखत सङ्गुगीप बाल ।
मोर सुकुट शोश धरे वनमाल शुभग गरे
सबको मन हरे देखि कुण्डलको भलक गाल ॥
आभूषण अङ्ग सोहे मोतिनके हार पोहे
कण्ठयो मोहे टुग गोपी निरखत निहाल ।
चीतस्वामी गोवर्द्धनधारी कंवर नन्द सुवन गाहनके
पाछे पाछे धरत हैं लटकीली चाल ॥

प्रात भयो जागे वलि मोहन सुखदाई ।
जननो कहे बार बार उठो प्राणके आधार
मेरे दुःखहार श्यामसुन्दर कन्हाई ॥
दूध दही माखन छत मिय्या मेवा बादाम
पकवान भांति भांति विविध रस मलाई ।
चीतस्वामी गोवर्द्धनधारी लाल भांजन करि
ग्वालनके सङ्ग वन गोचारण जाई ॥

भई भेंट अचानक आई ।
हों अपने गृहमें चली यमुना वे उतमें चले
चारण गाई ॥
निरखत रूप ठगोरौ लागो उत कों गगर भरि
चल्यो न जाई ।
चीतस्वामी गिरिधरण छपा करि मोतन चितए
सुर सुसकाई ॥

जागिये ब्रजराज कंवर कमल कोष फूले ।
कुमुदहृन्द सङ्कुचि गये अङ्ग लता भूले ॥
तम चर खग रोर सुनहु बोलत वन राई ।
रांभति गौ चीर देन बछरा हित धाई ॥
विधु मल्लोन रवि प्रकाश गावत ब्रजनारी ।
सूर श्याम प्रात उठे अम्बुज करधारी ॥

११

कमल नयन हरि करो कलेवा ।
माखन रोडो मद्य जस्यो दधि भांति भांतिके मेवा ॥
खारक दाख चिरोजो किशमिशि उज्ज्वल
गरो बादाम ।

सफरी सेब छोहारे सिंधारे जे खरबूजा नाम ॥
अरु मेवा बहु भांति भांतिके षट् रसके मिष्टान्न ।
सूरदास प्रभु करत कलेज रीके श्याम सुजान ॥

१२

उठहु नन्दकुमार भयो भिनुसार जगावति नन्दरानी ।
भारीके जल वदन पखारो सुत कहि कहि
सारङ्गपानी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावे सो लोजे आनौ ।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मन ही मनहि
मिहानी ॥

१३

भोर भए निरखत हरि को मुख प्रसुदित
यशमति हर्षिल नन्द ।
दिनकर किरण कमल जनु विकशित उर प्रति
अति उपजत आनन्द ॥
वदन उघारि जगावति जननो जागहु मेरे आनन्दकन्द ।
मानहु मधि सुर सिन्धु फेन फटि दई दिखाई
पूरण चन्द ॥
जा को ईश शेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति
श्रुति छन्द ।
सोइ गोपाल सुगोकुल भोतर सूर सुप्रकटे परमानन्द ॥

१४

तहिं जाहु जहां रैन हुते ।
काहे को दुराव करत नन्दनन्दन मिटे न अहु
उर चिह्न युते ॥
विन गुण हार मनोहर उर पर परम चतुर हिय
लाइ सुते ।
बिथुरी अलक अटपटे भूषण लुटे काम
कुच बीच उते ॥

दशन दाग नख रेख छवीली भामिनि भवन
भाव भुगुने ।
सूर श्याम देखिअत मम शोभा लोचन ललित
उनींद हुते ॥

१५

तहीं जाहु जहां निशा वसे ।
जानति हों पिय चतुर शिरोमणि नागर
जागर राग रसे ॥
घूमत हो मानो पिया उरगण नव विलास
अम सेज उसे ।
श्याम उरस्थल पर नख शोभित गगन
दुइज जनु इन्दु लसे ॥
काजर अधर प्रकट देखिअत है नागवेलि
रङ्ग निपट खसे ।
लटपटि पाग महावरके रङ्ग मानिनि पग
पर शोस घसे ॥
विगलित वरस मरगजी माला पोठि
वलयके चिह्न वसे ।
सूरदास प्रभु प्रिया वचन सुनि नागर नगधर
नेकु हंसे ॥

१६

क्यों अब दुरत हो प्रकट भये ।
कहत हैं नयन निशाके जागे मानो सरसिज
अरुण नये ॥
जावक भाल नागरस लोचन मसि रेखा
अधरनि जो ठये ।
वलयया पीठि नितम्ब चरण मणि विनु गुण
कण्ठहार बनये ॥
भुज टङ्कता ग्रीव सोइ चन्दन चिह्न कपोल
दसन घसये ।
आलिङ्गन चन्दन कुच चर्चित मानो हे शशि
उर उदये ॥

चरण शिथिल अब चाल डगमगो घूमत घायल
ममर सये ।

सूर मर्खी कैसे मन माने सुन्दर श्याम कुटिल भये ॥

१७

लालन आये री रैन गंवाई ।

निशि भई क्षीण बोले तमचर खग खालिन
तब हिं हंसो मुसकाई ॥

अरुण किरण सुख पङ्कज विकसित मधुप लियो
सुन्दर रम जाई ।

चन्द्र मलोन भयो टिनमणिते कुमुद गये
सब ही कंभिलाई ॥

चारि याम जागत बीते मोहि तुम्ह विनु मांकीं
कछु न सुहाई ।

सूर श्याम या दर्श पर्श विनु सब निश गइ
मेरी नीट हेराई ॥

१८

रति संग्राम वीर रम माते ।

हो हरि शूर शिरोमणि अज हं नहिं न संभारे
सकल अङ्गनाते ॥

औरि वरण भये यह लोचन अपने अपने सहज
विनाते ।

मानहु भीर परी औधनको ताते भये क्रोध अतिराते ॥
परिमल लुब्ध जहां अलि बैठत उड़ि उड़ि उड़ि

नहिं सकत तहांते ।

जनु मनमथ सर बागे फाब्यो फांका होत सब
बाहरि घाते ॥

बैठ जात अलसात उनीदे क्रम क्रम क्रम करि
उठत तहांते ।

मन बरछा कटाक्ष नाटसन कढ़ता नाहि चुभ्यो
हियराते ॥

डगमगात घूमत ज्यों घायल गोभा अति भई
सुभट कलाते ।

सूरदास स्वामो रण जीते अब सकुचत धों हो
तुम काते ॥

जानति हों जैसे गुणनि भरे ही ।

काहे को दुराव करत मनमोहन सोइ पै कहो तुम
जहां टरे हो ॥

निशि जागत निज भवन न भावत आलसवन्त
सब अह धर हो ।

चन्दन तिलक मिथो कहां वन्दन काम कुटिल
कच उर उघरे ही ॥

तुम अति कुशल किशोर नन्द सुत कहो कौनके
चित्त हर हो ।

औचक हो जिय जानि सूर प्रभु सोंह करन कां
होत खरे हो ॥

२०

हा हा हो पिय बात कहो ।

आपु कछु जिय तर्क गहत हो तो तुम सों हीं
मौन गहो ॥

कहा चूक हम को पिय लागि रूसि रेहे हो काहे जू ।
तब हीते दैसे ही ठाढ़े मोतन को नहिं चाहे जू ॥

अब हमरो अपराध क्षमोगे क्षमा करो सुख बोली जू ।
सूरश्याम अब तजो निठुरई घुण्डी हृदयकी खोलो ज ॥

२१

जाहु तहां कहा सोचत हो ।

जा संग रैन विहात न जानी भोर भये तेहि
सोचत हो ॥

औरनि को क्षण युग बीतति है तुम निहचीते
नागर हो ।

घूमत नयन जम्हांत बार ही रति संग्राम उजागर हो ॥
मैं अज कहति तुम्हारे हितकी ताहीके गृह जाइ रहो ।

सूरश्याम वैसी त्रिय को है वह रस वाहो विनु न लहो ॥

२२

हम हो पर पिय रूसे हो ।

बोलत नहीं मूक क्यों है रहे अन्तरङ्गहीन
कछू से हो ॥
तब निरखत और हि हित चितवन किधों कहीं
तुम लूसे हो ।
तब हंसि वदन मिलत आजु हि कछु और भये
निठुरूसे हो ॥
डगमगात पग उत हि परत है चित चञ्चल
उत हूसे हो ।
सूरदास प्रभु सांचि भाषि गये त्रिया अङ्ग
अबला मूसे हो ॥

२२

जागिये गोपाल लाल आनन्दनिधि नन्दबाल
यशोमती कहे बार बार भोर भयो प्यारे ।
नयनकमल से विशाल प्रीति वापिका मराल
वदन ललित चन्द्र तनय ऊपर कोटि वारि डारे ॥
उगत अरुण विगत शर्वरी शशाङ्क किरण हीन
दीन दीप मलीन स्त्रीण द्युति समूह तारे ।
मानहुं ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भुव विलास
आश त्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे ॥
बोलत खग मुखर निकर मधुकर है वै प्रतोति
सुनहुं परम प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे ।
मनो वेद वन्दी मुनि सूतवृन्द मागधगण
विरद वदत जय जय जय जयत कैट भारे ॥
विकसित कमलावली चल प्रफन्द चञ्चरीक
गुञ्जत कलकौमल ध्वनि त्याग कञ्ज न्यारे ।
मानो विराग सकल पाय शोक कूपगृह विहाय
प्रेममत्त फिरत भृङ्ग गुणत गुण तिहारै ॥
सुनत वचन प्रिय रसाल जागी अतिशय दयाल
भागे जञ्जाल विपुल दुःख कदम्ब टारे ।
त्यागे भ्रमफन्द हन्ध निरखिके मुखारविन्द
सूरदास अति आनन्द भेटे मद भारे ॥

२४

जागिये गोपाललाल प्रकट भयो हंसमाल
मिटि गयो अन्धकार उठो जन्नी मुख देखाई ।

मुकुलित भये कमल जाल कुमुदवृन्द वन बेहाल
भेटहु जञ्जाल त्रिविध ताप तन नशाई ॥
ठाढ़े सब सखा द्वार कहत नन्दके कुमार
टेरत हैं बार बार आइये कन्हाई ।
गैयनि भई बड़ी बार भरि भरि पय थननि भार
बहुरागण करे पुकार तुम विनु यदुराई ॥
ताते यह अटक परी दोहन काज सों हंकारी
उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई ।
सुखते पट भटक डारि चन्द्रवदन दे उचारि
यशुमति वलिहारि वारि लोचन सुखदाई ॥
धेनु दुहन चले धाड़ रोहिणो को लइ बुलाइ
दोहनो मोहि दे मंगाइ तन ही ले आई ।
बहुरा दियो थन लगाइ दुहत बैठिके कन्हाइ
हंसत नन्दराइ तहां माता दोउ आई ॥
दोहनो कहुं दूध धार सिखवत नन्द बार बार
वह छवि नहिं वार पार नन्दघर बधाई ।
तब हलधर कछो सुनाइ धेनु वन चलो सिवाइ
मेवा लीन्हे मंगाइ विविध रस मिठाई ॥
जैवत बलराम श्याम सन्तनके सुखदधाम
धेनुकाज नहिं विश्राम यशोदा जल लाई ।
श्यामराम सुख पखारि ग्वाल बाल लिये हंकारि
यसुना तट मन विचारि गाइन हंकाराई ॥
शृङ्ग वेणुनाद करत मुरली स्वर मधुर धरत
ब्रजजन मन हरत ग्वाल गावत सुघराई ।
वृन्दावन तुरत जाय धेनु चरति दृष्य अघाय
श्याम हर्ष पाय निरखि सूरज वलि जाई ॥

२५

जननो जगावति उठो कन्हाई ।
प्रकट्यो तरणि किरणगण छाई ॥
आवहु चन्द्रवदन दिखराई ।
बार बार जननी वलि जाई ॥
सखा द्वार सब तुम हि बुलावत ।
तुम कारण हम धाए आवत ॥

सुरश्याम उठि दर्शन दोन्हो ।
माता देखि मुदित मन कीन्हो ॥

२६

भोर भये भोगी रस विलसि भये ठाढ़े ।
जागे यामिनी जगाइ भामिनी अङ्ग सङ्ग समाइ
श्याम शिथिल डरनि डरत देत आलिङ्गन गाढ़े ॥
धूमत रसमत्त मग्न सूधे हू डग परत पग न
क्षण क्षण चितु चोप चोजनि मौज मनोजनि बाढ़े ।
अति रस में रक्षिक राय शोभा वरणी न जाय
वरु विहारनिदाम लडाई प्रेमरङ्ग रङ्गि काढ़े ॥

२७

प्रात ही किशोर जोरि कुञ्ज खेलनी ।
अङ्ग अङ्ग गुणत रङ्ग गौर श्याम रूपराशि
मदन केलि सुरति मिश्रुकूल भेलनी ॥
तरणिनन्दना सुतीर गावत पिय भृङ्ग कीर
त्रिगुण मारत गन्धरो अम अम्बु भेलनी ।
वरविहार राजनी सुनपुरादि बाजनी
विट्ठल विपुल वारनि भुज कण्ठ मेलनी ॥

२८

श्यामा मङ्ग श्याम नचत राम रङ्ग गुणनि बचत
शशि अखण्ड मण्डल हंसि शरत् यामिनी ।
तरणितनया कूल मृदुन अछ शशि तरज पुनीत
त्रिविध पौन ताप वदन काम कामिनी ॥
चरण चलित वाहु वलित ललित गान कलित तान
मान सुख निधान तिरप लेति भामिनी ।
वर सुधङ्ग रङ्ग ताल मणि मृदङ्ग विन्द चाल
लाल सुघर शौघर गजराज गामिनी ॥
रिभै पति हि गति दिखाइ लेत कुंवर कण्ठ लाइ
श्याम घटामांभ मनहुं दुरति दामिनी ।
नयन सैन भ्रुविलास मन्द हाम सुखनिवास
सुनि ध्वनि सुनि बोलत जय व्यास स्वामिनी ॥

२९

जय गोविन्द माधव मुकुन्द हरि ।

क्षपासिन्धु कल्याण कंसअरि ॥
प्रणतपाल केशव कमलापति ।
क्षण कमललोचन अगतिन गति ॥
रामचन्द्र राजीव नयनवर ।
शरण साधु श्रीपति सारङ्गधर ॥
वनमाली वामन विट्ठल बल ।
वासुदेव वासी ब्रज भूतल ॥
खर दूषण त्रिशिरा शिर खण्डन ।
चरण चिह्न दण्डक भुवमण्डन ॥
वकीदमन वक वदन विदारण ।
वरुण विषाद नन्द निस्तारण ॥
ऋषिमख त्राण ताड़का तारक ।
वन वसि तात वचन प्रतिपारक ॥
गोकुल पति गिरिधर गुणसागर ।
गोपी रमण रास रति नागर ॥
रघुपति प्रबल पिनाक विभञ्जन ।
जगद्गित जनक सुता मनरञ्जन ॥
काली दमन केशि कर पातन ।
अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन ॥
करुणामय कपिकुल हितकारी ।
वालि विरोध कपट मृगहारो ॥
गुप्त गोप कन्या व्रत पूरण ।
हिज नारो दर्शन दुख चरण ॥
रावण कुम्भकर्ण शिर केदन ।
तरु वर सात एक शर भेदन ॥
शङ्ख चूड़ चाणूर संहारण ।
शक्र कहे मेरो रछ कारण ॥
उत्तर क्षपा गृह कतकारी ।
दर्शन दे सेवरी उडारी ॥
जे पद सदा शम्भु हितकारी ।
जे पद परशि सुरसुरी गारी ॥
जे पद रमा हृदय नहिं टारी ।
जिनि पद ते तिहुं भुवन तियारी ॥

जे पद वृन्दावनहि विहारो ।
 जे पद पाण्डव गृह पग धारो ॥
 जिनि पद अकटासुर संहारो ।
 जे पद अक्षि फण फण प्रतिधारो ॥
 जे पद भक्तनके सुखकारो ।
 जिनि पदरज गौतम त्रिय तारो ॥
 सूरदास सुर याचत वेद पद ।
 करहु कृपा अपने जन पर सद ॥

२०

सोहत घूंघरवार बार अरुभि रहे सुकुताहल
 निरवारत बार ।
 रति मानो सङ्ग नन्दनन्दके छूटे बन्द कञ्चुकी
 टूटे हार ॥
 निशिके जागे दोउ नयन उरभि रहे चलति
 यौवन मदभार ।
 सूरश्याम सङ्ग यह सुख देत रोकि बारम्बार ॥

२१

नयन श्याम सुख लूटत है ।
 इहै बात मोकां नहिं भावे हमते काहू छूटत है ॥
 महा अक्षय निधि पाइ अचानक आपु हि सबै ;
 चुरावत है ।
 अपने हैं ताते वह कहियत श्याम इनहिं
 भरहावत है ॥
 क्षण क्षण प्रति सुखसागर लूटत वरजे
 भीहें तानत है ।
 सूरदास जो देत कछु एक कहो कहा
 अनुमानत है ॥

२२

ओक्षण नाम रसना रट सोई धन्य कलि में ।
 जाके पद पङ्कज की रेणुकी वलि में ॥
 सोइ सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवन्ता ।
 जाको निशदिन रहे क्षण नाम चिन्ता ॥
 योग यज्ञ तीर्थ व्रत क्षण नाम माहीं ।

विना क्षणनाम कलि उदार और नाहीं ॥
 सब सुखन को सार क्षण कबहुं न विसरैये ।
 क्षण नाम लै लै भवसागर को तरिये ॥
 ओगोवर्द्धन धरण प्रभु परम मङ्गलकारी ।
 उधरे जन सूरदास ताको वलिहारी ॥

भैरव—एकताला

क्षण नाम भावे मोहि क्षण नाम भावे ।
 वलिहारी ताकी जो क्षण नाम गावे ॥
 वसुधा को सार क्षण मेरे मनको आधार ।
 क्षण अरण मङ्गल रूप क्षण सब विचार ॥
 मन्त्रन कीं मूल क्षण हरण सकल खल क्षण
 व्रज समुद्र की पार ।
 क्षण शिव को आधार मेरी रसना को भाग्य
 क्षण ध्यान धार ॥
 मन को सुहाग क्षण रसना तन्त्रन को तन्त्र
 क्षण सब मन्त्रन सुधार ॥
 यह रामराय कहत क्षण ताही जपत भगवान्
 क्षण बारम्बार ॥

२

हरे हरे हरे क्षण क्षण राम राम राम ।
 नारायण नारायण वासुदेव वासुदेव
 गिरिवरधर गिरिवरधर श्याम श्याम श्याम ॥
 दीनबन्धु दीनबन्धु वैकुण्ठ धाम ।
 होत प्रात बड़ पुनीत लेत हरि को नाम ॥
 दामोदर दामोदर चक्रपाणि चक्रपाणि
 नरहरि हरि नरहरि हरि सुररिपु सुरारो ।
 मधुसूदन मधुसूदन सांवरे वनवारी ॥
 यमुनाके नीरे तीरे वृन्दावन धाम ।
 सूर श्याम रटत रहत राधावर नाम ॥

३

वांशरो बजाइ आज रङ्ग सीं सुरारी ।
 शिव समाधि भूलि गई मुनि मन तारो ॥
 वेद भणत ब्रह्मा भूली भूली ब्रह्मचारी ।

सुनत हर्ष ध्यानन्द भयो लानि है करारो ॥
 रश्मा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारो ।
 यमुना जल उलट रश्मा सुधि ना संभारी ॥
 श्रीहृन्दावन वंशी बाजी तीन लोक प्यारी ।
 गालबाल मग्न भए ब्रजकी सब नारी ॥
 सुन्दर श्याम मोहन मूर्ति नटवर वपुधारी ।
 सुर किशोर मदनमोहन चरणो वलिहारी ॥

भैरव—तिताना

दधिक मतवारे काण्ड खोलो प्यारि पलकें ।
 शीस मुकट लटा कुटो और कुटो अलकें ॥
 सुर नर मुनि द्वार ठाड़े दर्श कारण किलकें ।
 नासिकार्क मोती सोहैं बौच लाल ललकें ॥
 काटि पीताम्बर सुरली कर श्रवण कुण्डल भलकें ।
 सुरदास मदन मोहन दर्श देहु मलकें ॥

२

राम कृष्ण कहिए निशि भोर ।
 वे अवधेश धनुष धरे वे ब्रज जीवन माखन चोर ॥
 उनके छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन
 लक्ष्मन जोर ।
 उनके लकुट मुकट पीताम्बर गायनके सङ्ग
 नन्द किशोर ॥
 उन सागरमें शिला तराई उन राख्यो गिरिधर
 नख कोर ।
 नन्ददास प्रभु प्रपञ्च तज भजिये जैसे निरत
 चन्द्र चकोर ॥

३

देखो री यह कैसा बालक रागी यशोमत जाया है ।
 सुन्दर वदन कमलदल लोचन देखत चन्द्र लजाया है ॥
 पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्द घर आया है ॥
 मोर मुकट पीताम्बर सोहैं केसर तिलक लगाया है ।
 कानन कुण्डल गल बिच माला कोटि भानु
 हवि छाया है ॥
 शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजि चतुर्भुज रूप बनाया है ।

परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कह लाया है ॥
 मच्छु कच्छु वराह श्री वामन रामरूप दर्शाया है ।
 खम्भ फारि प्रगटे नरहरि जन प्रह्लाद कुड़ाया है ॥
 परशुराम बुध निःकलङ्क हो भुवकारभार मिटाया है ।
 कालीमर्दन कंसनिकन्दन गोपीनाथ कहाया है ॥
 मधुसूदन माधव सुकुन्द प्रभु भक्तवत्सल पद पाया है ।
 दामोदर गिरिधर गोपाल हरि त्रिभुवनपति

मन भाया है ॥

शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख
 गाया है ।
 सुर नर मुनिके ध्यान न आवत अद्भुत जाको माया है ॥
 सो परब्रह्म प्रगट हो ब्रजमें लूट लूट दधि खाया है ।
 परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरण कमल
 चित लाया है ॥

भैरव—एकताला

मैं योगी यश गाया रे बाबा मैं योगी यश गाया ।
 तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशीसे धाया ॥
 परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जाकी माया ।
 अलख निरञ्जन देखन कारण सकल लोग फिरि आया ॥
 धन तेरो भाग यशोदा राणी जिन ऐसा सुत जाया ।
 गुणन बड़े छोटे मत भुलो अलख रूप घर आया ॥
 जो भावे सो लीजे रावल करो आपनी दाया ।
 देहु अशीस मेरे बालक को अविचल बाड़े काया ॥
 ना मैं लेहो पाट पटाम्बर ना मैं कञ्चन माया ।
 मुख देखूं मैं तेरे बालक को यह मेरे गुरुने लखाया ॥
 कर जोरे विनवे नन्दरानी सुन योगिन के राया ।
 मुख देखन नहीं देहीं रावल बालक जात डराया ॥
 काला पीला गोरा रूप है बाष्पम्बर आंड़ाया ।
 काङ्क डायनकी टुटि लगे कहुं बालक जात दिठाया ॥
 जाकी टुटि सकल जग ऊपर सो क्यों जात दिठाया ।
 कर पसार चरणन रज लीनी शृङ्गीनाद बजाया ॥
 अलख अलख कर पाय छुए हैं हंस बालक
 किलकाया ।

पांच बार परिक्रमा करके प्रति भानन्द बढ़ाया ।

हरि की लीला लाल मन अटक्यो चित नही

चलत चलाया ॥

अखिल ब्रह्माण्डके नायक कहिये नन्द घर ही

प्रगटाय।

इन्द्र चन्द्र सूरज सारद सनकादिक पार न पाया ॥

लाग अरण जो मन्त्र सुनाया हंसि बालक सुसकाया ।

कौन देशके योगी हो तुम कौन है नाम धराया ॥

कहां वास यह कहत यशोदा सुन यागिन के राया ।

तुम ही ब्रह्मा तुम ही विष्णु तुम ही ईश्वर कहाया ॥

तुम ही विश्वेश्वर तुम ही जगपालक तुम ही

करत सहाया ।

सूर श्याम कहे सुनो यशोदा शङ्कर नाम बताया ॥

२

नन्द हारे एक योगी आया शृङ्गानाद बजाया ।

श्रीस जटा शशी वदन सोहायो अरुण नयन

छवि छाया ॥

रोवत खीजत कृष्ण सांवरे रहत नहीं लराया ।

लियो उठाय गोद नन्दराणी हारे जाय देखाया ॥

अलख अलख कर लियो गोदमें चरण चूम उर लाया ।

अरण लाग कहु मन्त्र सुनायो हंसि बालक

किलकाया ॥

चिरजीवे सुत महर तिहारो हो योगी सुख पाया ।

सूरदास रम चख्यो रावलो शङ्कर नाम बताया ॥

भैरव—तिताना

राम चरण अभिराम काम प्रति तीरथराज विराजि ।

शङ्कर हृदय भक्ति भूतलवर प्रेम अक्षय वट छाजि ॥

श्यामवर्ण पदपाठ अरुण तल लसत विशद

नखत्रेणी ।

मनो रविसुता सारद सुरसुरि मिलि चलि

ललित त्रिवेणी ॥

अद्भुत कुलिश कमल ध्वज रेखा भ्रमर तरङ्ग विलासा ।

मञ्जन सुर सञ्जन मुनिवरजन मुदित मनोहर वासा ॥

विन विराग तप याग योग व्रत विन तन तीर्थ त्यागे ।

सो सब सुलभ दासतुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागे ॥

२

यदुवर मेरे दीनदयाल शरणागत को करे निहाल ।

केवट गृह ऋच्छु कपि राक्षस कीट पतङ्ग किए

प्रतिपाल ॥

मुनिमनसा पूरण करवे को गोपीनाथ भए नन्दलाल ।

तन मन धन तुम्हरो तुम को दे प्रेमरङ्ग छूटे यमजाल ॥

३

चलना रे प्रभुके दरबार ।

काल बली ठाढी चौबदार ॥

इह हुजूर में याद तिहार ।

चलनेकी कहु करो तैयार ॥

जिसमें दुरमत रहे तुम्हार ।

एसी करनी कर ला यार ॥

जिसको खादिम पकर बुलावे ।

यत्न करे कहु बन नहीं आवे ॥

विन मरजी कोई रहन न पावे ।

क्या गरीब क्या साहु कहावे ॥

जब यम आवे कहु न वसावे ।

क्षणमें बांध पकड़ ले जावे ॥

तब तोको कहो कौन छोड़ावे ।

ढिग बैठा कलपे कलपावे ॥

मौजूदातकी तैयारी कीजे ।

दर्शन तलब वेग चल लीजे ॥

गो खादिम तोहे देख पसीजे ।

कण्ठ लगाय रङ्गमें भोजि ॥

करणीका कर कमर कटारा ।

शील सिपर तप तेग दुधारा ॥

धरे तोपकर ध्यान पियारा ।

ज्ञान घोड़े हजि असवारा ॥

ओ तू ऐसा होय चलेगा ।

मालक मनमें बहुत खिलेगा ॥

काम क्रोध मद मोह मद यह संसार स्वप्न दहेगा ।
निधि वासर हरिनाम उचारके रसना जप ले
परम पद लहेगा ॥
सूरदास सुख जो तू चावे । गोविन्दके गुण तो तू गावे ॥
पतित उधारण विरद कहावे । चरण शरण नित ध्यावे ॥

श्रेष्ठाय नमः

रामकली—तिलाना

मोहन जागि हों वलि गई ।
ग्वालबाल सब द्वार ठाढ़े वेर वनकी भई ॥
पोत पट करि दूर मुखते छांड़ि दे अरसई ।
अति आनन्दित होत यशोमती देखि द्युति नित नई ॥
जागे जङ्गम जीव पशु खग और व्रज सबई ।
सूरकी प्रभु दर्श दीजे अरुणकी किरण छई ॥
भोर भयो जागो हो ललना कहा तुम अब हुं
रहे हो सोई ।
पिओ धार अपनी धोरीकी जैसे देह बल होई ॥
वेणो गुहं दोउ दृग अञ्जन मसिविन्दुका मुख धोई ।
हंसत वदन सुखसदन निहारां नान्ही नान्ही
दतियां दोई ॥
टेरत ग्वालबाल खेलन को गोरभ्रण हू होई ।
व्रजजन सब ठाढ़े मुख देखन अति आरत सब कोई ॥
उठि बैठे लिए गोद यशोदा सुन्दर सुत तिहुं लोई ।
रसिक प्रीतम लागि गरं जननीके मांगत रोटी रोई ॥
मैया तेरे लाल को मुख देखन हों आई ।
काल्हि मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो
है बिकारि ॥
दिनते दूगो दाम लाभ भयो गाइनि बछिया जाई ।
आई हवे यंभाय सायकी गिरिधर देहु जगाई ॥

सुनि द्विय वचन विहंसि उठि बैठे नागरि निकट
बुलाई ॥
परमानन्द सयानी ग्वालनि चलि सहेत बनाई ॥
लालको दर्शन भये सवेरो ।
बहुत लाभ पाजंगी माई दहो बिकै है मेरो ॥
गली सांकरी जो एक नौकी भेंट भयो भटभेरा ।
अरु दे चली सयानी ग्वालनि हरि को वदन फिरि हेरो ॥
प्रात ही मङ्गल भयो सखीरो हू है सब काज भलेरी ।
परमानन्द प्रभु मुख निरखत मियो भवसागर उरभेरो ॥
लगमग चलति और ही भांती ।
तब निकुञ्जते राधा भामिनि अरुण उदय घर जाती ॥
रतिकी केलि सुमिरि मृगनयनी बार बार मुसकाती ।
वदन ज्योतिते सुन रो भामिनि मेटत उड़पति कान्ती ॥
नखके चिह्न प्रगट देखियत है काम केलि कुलकाती ।
प्रियतम प्राण रत्न सम्पुट कुच भेंटि जो गई छाती ॥
नन्दकुमार सुरति सङ्ग लीन्हें शरत् विमलकी राती ।
कृष्णदास गिरिधर पियके सङ्ग अधर सुधारस माती ॥
हरि अनुभवति युवति बड़ भागी ।
राधा रसिक नन्दनन्दनके सुखनिधि चरण कमल
अनुरागी ॥
की ककला सङ्गीत निपुण सखि पिय सङ्गम
रतिरस निधि जागी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर पिय मुख देखतते नट
नटनौ लागी ॥
बे सद्दयां मेरे रैन विदा हीन लागी ।
घटी ज्योति मन्द भये तारे फूल वासना पागी ॥
सोरह शृङ्गार बतास आभूषण अपने प्रियतम
सङ्ग जागी ।
सूरदास प्रभु तिहारै मिलन को कृष्ण हमारे
अनुरागी ॥

हों वलि वलि जाऊं कलेज कोजि ।
खीर खांड छूत भृति मोठो है अबकी कवर
बहु लीजे ॥
वेणी बड़े सुनै मनमोहन मेरो कछो जो पतोजे ।
ओठ्यो दूध सद्य धोरोको सात घंट जो पीजे ॥
हों वारी था वदन-कमल पर अञ्चल प्रेम जल भोजि ।
बहुरि जाय खेलो यमुनातट गोविन्द सङ्ग करि लौजे ॥

गुलिन पिछवारे हूँ बोल सुनायो ।
कमलनयन हरि करत कलेज कवर न मुखली आयो ॥
मैया एक गाय बन व्याई बहुरा लाय वसायो ।
वेणु न लई लकूट नहिं लोन्हीं अरवराय कोउ
सखा न बुलायो ॥
चकित सुनयन चहं दिश चितवत सत्य इहै किधों
सपनो पायो ।
फले अङ्ग न मात रसिकवर त्रिभुवन पूर रस
छत्रनि छायो ॥
मिलि बैठे सङ्केत सदनमें विविध भांति कोनो
मन भायो ।
परमानन्द सयानो गुलिन उलटि अङ्ग गिरिधर
पय पायो ॥

रामकली—चर्चरी

जयति आभीर-नागरो-प्राणनाथे ।
जयति ब्रजराज-भूषण यशोमती ललित देत
नवनीत मिश्री सुहाथे ॥
जयति प्रात प्रभात दधि खात श्रीदामा सङ्ग
अखिल गोधनहृन्द चरे साथे ।
ठौर रमणीक हृन्दाविपिन शुभस्थल
सुन्दरी केलि गुण गूढ़ गाथे ॥
जयति तरणिजा-तट निकट रासमण्डल रथो
तप्तता थैइ थैइ थैइ तप्तताथे ।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरण बहुरि अब श्रीविठ्ठल
प्रकट ब्रज कियो सनाथे ॥

माखन तनिक दे रो माय ।
तनिक कर पर तनिक रोटी मांगत चरण चलाय ॥
कनकभूमि पर तनिक रेखा करन पकचो धाय ।
कम्पियो गिरि शेष सङ्गो दधि हंत अकुलाय ॥
मेरे मनके तनिक मोहन लागो मोहि बलाय ।
तनिक मुख पर तनिक बतियां बोलत है तुतराय ॥
यशोमतीके प्राण जीवन धन लियो उर लपटाय ।
नन्दकंवर गिरिधरण ऊपर सूर वलि वलि जाय ॥

लालहि जगाइ वलि गई माता ।
निरखि मुखचन्द्र छवि सुदित भई मनहि मन
कहति अंधे वचन भयो प्राता ॥
नयन अरसात अति बार बार जंभात कण्ठ सी
लगि जात हर्ष गाता ।
वदन पीछियो यमुना जलनि सो धोइ के कछो
सुसकाइ कहु खाइ ताता ॥
दूध ओठ्यो आनि अधिक मिश्री सानि लेइ
माखन पानि प्राणदाता ।
सूर प्रभु कियो भोजन विविध भांति सों पियो
पय मोद करि घूंट साता ॥

आज लाड़िलो लालहि जगाय जागो ।
सकल निशि कुञ्ज वसि प्रिये बल वाहु कसि विलसि
अङ्ग अङ्ग अनुराग रागो ॥
रोम रोमनि अरुभि सकति नेक न सुरभि
अति अधर मधुर रस प्रेम पागो ।
विहारनिदास सकाम गौर श्याम सधाम चितै
चितवति याम लतनि लागी ॥

राधिका श्याम तन देखि सुसकानो ।
हार विन गुण लेख अधर अञ्जन रेख नयन
तयूर तुतरात वासी ॥

पाग लटपटी बनी उरह कृटी तनी अङ्गकी गति
देखि जीय लजानी ।
उपटि कङ्कण पीठ वक्र विह्वल दीठ ईठकी
ईठता लखी छानी ॥
पाणि पङ्कव आधार दशन सों गहि रहो अर्ध
वैन बोलि वचन हार मानी ।
सूर प्रभु अङ्ग भरी प्राणपति नागरी नवल
नागर उरह घालि सानी ॥

श्यामसुन्दर रैन कहां जागे ।
देखि विन गुण माल अधर अञ्जन भाल जावक
लख्यो गाल पीक पागे ॥
चाल डगमगी अति शिथिल अङ्ग अङ्ग सब
तोतरें बोल उर नख नि दागे ।
गण्यो कङ्कण पीठ निपट विह्वल दीठ शर्वरी
लाल नहीं पलक लागी ॥
कहिये सांच बात काहे जिय सकुचात कौन
त्रिय जाके अनुराग रागे ।
दासकुञ्जन लाल गिरिधरण एतें पर करत
भूठी सोह मेरे आगे ॥

जैये तहां जहां रैन जागे ।
बनी विनु गुण माल ओष्ठ अञ्जन भाल सेदुर
लख्यो गण्ड पीक पागे ॥
आरक्त नयन अति शिथिल सब अङ्ग गति
डगमगत रात नहीं पलक लागी ।
चपल चतुर दीठ उपटि कङ्कण पीठ देखियत
उर मांभ नखन दागे ॥
सकल ब्रज-त्रियनमें कौनसी नारी वह जाके
तुम लाल अनुराग रागे ।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरण काहे को करत
भूठी सोह मेरे आगे ॥

भले आए भोर गिरिवरधरण ।
अरुण नयन जंभात आलस धरत डगमगी चरण ॥
पाग लटपटी पलटि परे पट अटपट्टे आभरण ।
शिथिल अङ्ग अङ्ग सबहि देखियत निशाके जागरण ॥
नव त्रिया सङ्ग प्रहर चारो पलन पाए परण ।
चतुर्भुज प्रभु जीति रति रण कियो रतिपति शरण ॥

नीके आए गिरिवरधारी नागर ।
जियकी कृपा हम तब हीं जानी भोर खोलाई आगर ॥
तुम्हरे चितवत नयन अरुण भए सकल निशाके जागर ।
जिन तुम पें यह खेल रच्यो है ऐसी कौन उजागर ॥
तुम अपने रङ्ग हीं रीभे चतुर नारीके बागर ।
वलि वलि जाउं मुखारविन्दकी सुरति कलेवर सागर ॥
गुण कहियत कहि पार न आवत मसि पर्वत
छिति कागर ।
सूरदास प्रभु हमें लाज आवत है तुम हो सदा उजागर ॥

प्रात भए आए लाल क्वांडहु अटपटी ।
आजुकी रैन मोहि नखत गिनत गई मार्ग जीवत
आंखि न लागी चटपटी ॥
उर नख पदवर सुनु गिरिवरधर गलित वरुहा
चूड़ा पाग बनी लटपटी ।
कृष्णदास प्रभु जानतर नित दाम निशान मदन
नृपति रण लीनी मानो भटपटी ॥

लाल रसमसे नयन आजु निशा जागे ।
अति विशाल अरसात अरुण भए रतिरणके रङ्ग पागे ॥
सुन्दर श्याम शुभगता अटपटी अङ्ग अङ्ग नखत दागे ।
मानहु कोपि निदरि सम्मुख शर साथ भए अरि भागे ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण अधिक छवि वन्दन
भृकुटी लागी ।
मानहु मनमथ चाप डेट धरि रह्यो जोरि कर आगे ॥

१२

आज हरि रैन उनीदे आए ।
अञ्जन अधर ललाट महावर नयन तमोल खवाए ॥
शिशिल गङ्गत वसन मरगजी माला कङ्कण पीठ सुहाए ।
लटपटी प्राग अटपटे भूषण विन गुण हार बनाए ॥
शिशिल गात अरु चाल डगमगी भृकुटी चन्दन लाए ।
सूरदास प्रभु यही अचम्भा तीन तिलक कहां पाए ॥

१२

आवत बलन पिया रङ्ग भीने ।
शिशिल अङ्ग डगमगत चरण गति मोतिन हार
उर चीने ॥
पारिजात मन्दार माल लपटात मधुप मधुपोनि ।
गोविन्द प्रभु पिय तहां जाहु जहां अधर दशन
धत कीने ॥

१४

लाल न जागत रैन विहानी ।
देखत पथ अंखियां अति हारीं कहां लाल रतिमानी ॥
कव्यो लाल कहि काल सखिन सङ्ग पूरव विविध
कहानी ।

रङ्ग अनङ्ग सुरति चित आवत छतियां अधिक पिरानी ॥
भोर भए आए मेरे गृह देखत सखी हिरानी ।
रसिक प्रियतम दाउ अंखियां अरुण भईं कहो
कहां रैन सिरानी ॥

१५

नयन उनीदे भए रङ्गराते ।
मनहु गुलाब कुसुम पर सजनी भिरत भृङ्ग मदमाते ॥
प्रेम पराग पाखुरो पलटल प्रफुलित मदन लताते ।
सदा सुवास विलास विलोकनि प्रकट प्रेमके नाते ॥
तैसिये मारत मन्द जंभाई मिलत मुदित छवि ताते ।
सौंचे सूर श्याम मानिनि निज हित करि केलि कलाते ॥

१६

केहि मिस यशोमतीके जाउ ।
सकल सुखनिधि मुख निरखिके नयन लषा बुभाउ ॥

हारे आरज सभा लुरि रही निकसिवे नहिं पाउ ।
विनु गए पतिव्रत छूटे हंसे गोकुल गाउ ॥
श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाउ ।
सूर है लग्न कठिन मनको कहां काहि सुनाउ ॥

१७

सखी हरि दर्श को मोहि चाव ।
सांवरे सां प्रीति बाढ़ी लाग्न लोग रिसाव ॥
श्यामसुन्दर कमललोचन अङ्ग अगणित भाव ।
सूर हरिके रूप राचो लाज रही के जाव ॥

१८

नन्द सदन गुरुजनको भोर तामे लालन वदन
नीके देख न पाजं ।
विनु जिय देखे अकुलाइ जाइ दुःख पाय यद्यपि बड़ेइ
खन उठि उठि आजं ॥
ले चल री मोहि यमुनाके तीर जहां बलवोर
सुन्दर वदन देखि नयन सिराजं ।
नन्ददास प्यासे को पानी पिवाय ले जिवाय
जियको तू जाने तो सौं कहा हं जनाजं ॥

१९

मन मृग वेधो मोहन नयन वान सौं ।
गूढ़भावको सैन अचानक तकि तान्यो भृकुटी
कमान सौं ॥
प्रथम नाद बल धरि निकट ले मुरली सप्तक
सुर वन्धान सौं ।
पाछे व्यङ्गते मधुरे हंसि घात करो उलटो सुठान सौं ॥
चतुर्भुजदास पीर पातनकी मिटतन औषध आन सौं ।
हूँ है सुख तव हीं उर अन्तर आलिङ्गन गिरिधर
सुजान सौं ॥

२०

अङ्गरिया काडि रे गति अरग थरग ।
नूपुर बाजत त्यों त्यों धरणी धरत पग ॥
कबहुंक यशोदा माइ भुज पसारि हंसि
डगमगायके उलटि डग ।

जननी मुदित मन चित्त चित्त शिशुतन राखति
 कण्ठ लग्नाइ सुन्दर श्याम शुभग ॥
 मृदुवाणी तुतरात मांगि नवनीत खात भुजन भाव
 जैसे जनावत बाल खग ।
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके बाल विनाद नन्द आनन्द
 मुख देखें ठाड़े ठग ठग ॥

२१

उपमा धोरज तल्गे निरखि छवि ।
 कोटि मदन अपुनो बल हाथो कुण्डल तेज
 कृप्यो रवि ॥
 खसून मीन मृग जे हैं जिते दीन रहे क्यों हू दबि ।
 गिरिधर पटतर हम हि लजावत सकुचत नहीं
 खोटे कवि ॥

ईषत् हास दशन द्युति निरखत वज्रशिखर सकुचानि ।
 सूर श्याम लीला वपु कछियो पट तर मेटि विरानि ॥

२२

ठाढ़ो रो खरो माई कौन को किशोर ।
 सांवरे वरण मनहरण वंशोधरण कामकरण
 कैंसो गति जोर ॥
 पौन परसि जात चपल हात देखि पियरे पटको
 चटकीलो होर ।

शुभग सांवरो छोटी घटाते निकसि आवे
 क्वीलो छटा को जैसे क्वीलो ओर ॥
 पूछति पाहुनी गारि हा हा हो मेरो आलो कहा
 नाम को है चितवित को चोर ।
 नन्ददास जाहि चाहि चकचौधी आइ जाइ
 भूल्यो रो भवन गमन भूल्यो रजनी भोर ॥

२३

माई गिरिधरके गुण गाजं ।
 मेरे तो व्रत ए है निशदिन और न रुचि उपजाजं ॥
 खेलन आंगन आउ लाडिले नेकहुं दर्शन पाजं ।
 कुलनदास इइ जगके कारण लाल चला गिरहाजं ॥

२४

करत हो सबे सयानी बात ।
 जोलों देखे नाहिं न सुन्दरि कमलनयन मुसकात ॥
 सब चतुराई विसरि जात है खान पत्तकी तात ।
 विनु देखे क्षण कल न परत है घरि भरि कल्प
 विहात ॥

सुनि भामिनीके वचन मनोहर सखि मन अति
 सकुचात ॥
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल सङ्ग सदा वसो
 दिनरात ॥

२५

निपट छोटे कान्ह सुन जननो कहं बात ।
 होत जब समुदाय करत तत्र शिशु भाय एको
 तपायके नयन भरि मुसिकात ॥
 देखि रस रीतिकी प्राति विपरोत गति मति
 मान छाड़ि सङ्ग लगो रहों निशि प्रात ।
 जात नहीं विसरि देखि बहुत यत्न धरि समुक्ति
 कहं चन्द्र देखे कमल हू विकसात ॥
 दुरत घूँघर जब लाल यशामति हृदय उभकि धसि
 धरणि पांव धरि मुख किनकात ।
 मनहुं आषाढ़ घन बादरी सूर तजि होत आनन्द
 सब फूल अति जलजात ॥

२६

ग्वालिन आप तन देखि लाल तन देखिये ।
 भीति जो होय तो चित्त अवरखिये ॥
 मेरो तो सांवरो पांच ही वर्षको अजहुं यह
 रोय पय पान मांगि ।
 तू महा मस्त अति ढोठरो ग्वालिनो फिरत
 अठिलान गोपाल आगे ॥
 मेरे एते श्यामको तनिकसी अङ्गुरिया बड़े
 नखनके दाग तेरे ।
 मष्ट करि सुनो लोग अगवारको कहां पाई
 भुजा श्याम मेरे ॥

ठगठगे नयन वैनन हंसो गालनी मुख देखे शोभा
अति हो बाढ़ी ।
सुनि सखी धूर सर्वस्व हख्यो सांवरे अन उत्तर
महरके द्वार ठाढ़ी ॥

२७

मेरि गति राधिका चरण रज में रह्यो ।
दृष्टै निश्चय कख्यो अपने मन में धाख्यो भूलि
कोज कछु और हु फल कह्यो ॥
कर्म कोउ करो ज्ञानहु अभ्यसा मूर्तिके
यत्न अब करि देह दह्यो ।
रसिकवत्सल चरण कमल युग शरण पर आशा
धरि यह महापुष्टि पथ फल लह्यो ॥

२८

मानिनो मानि जिनि मान एतो करे आपु पाइन
परें नाथ तरे ।
दर्श जाको करण जगत् तरसे सदा सो तो
इकटक तेरो वदन हेरे ॥
हां कहति सुमति उठि वेग मिलि मोत सो मेरो
हित वचन जिनि भूलि फेरे ।
रसिक प्रियतम सङ्ग विहरि रस रङ्ग सो क्यो न दुःख
अनङ्ग को सब निवरे ॥

२९

जयति श्रीराधिके सकल सुख साधिके
तरुणि मणि नित्य नवतन किशोरी ।
कृष्ण तन नीलघन रूपको चातकी कृष्ण मुख
हिमकिरणको चकोरी ॥
कृष्णदृग भृङ्ग विश्राम हित पद्मिनी कृष्णदृग
मृगज वन्धन सुडोरो ।
कृष्ण अनुराग मकरन्दकी मधुकारी कृष्ण गुणगान
रससिन्धु बोरी ॥
परम अद्भुत अलौकिक मेरो गति लखि मन
सु सांवरे रङ्ग अङ्ग गोरी ।
और आश्चर्य कहं मैं न देख्यो सुन्यो चतुर चौसठि
कला तदपि भोरी ॥

विमुख पर चितते चित्त जाको सदा करत
निज नाथको चित्तचोरी ।
प्रकृत यह गदाधर कहत कैसे बने आमित
महिमा इते बुद्धि घोरी ॥

३०

चतुर चारु चन्द्रावली मुख चकोरे ।
अस्तमें चरण रति व्रज युवति भूषणी कमललोचन
नन्द नृप किशोरे ॥
मानि मेरो कख्यो अति साल रस रीति क्यो
करावति सखी बहू निहोरे ।
मिले किनि धाइ अब कुंवर चूड़ा रत्न रसिकवर
भूपाल चित्त चोरे ॥
नवरङ्ग कुञ्ज मह तव नाम हित नाथ कुणित कल
सुरलोका ठाठ मोरे ।
सुनि कृष्णदास शुभ लग्न वह धन्य घोरो लाल
गिरिधरण सो हात जोरे ॥

रामकली—तिताला

देखो मेरे भाग्यकी शुभ घोरो ।
नवल रूप किशोर मूरति कण्ठ ले भुज धरो ॥
जाके चरण सरोज गङ्गा शम्भु ले शिर धरो ।
जाके चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥
जाके वदन सरोज निरखत आशा सगरी मरो ।
सूर प्रभुके सङ्ग विलसत सकल कारज सरी ॥
आज हरि पकर न पाए चोरी ।
ले गये चार चारि मन माखन जो मेरे धन होरो ॥
बांधो कञ्चन खम्भ कलेवर उभय भुजा दृग डोरो ।
राखो कठिन कठोर कुचन त्रिच सके न कोज छोरो ॥
अधर दशन खण्डो रस गोरस कुवे न काह कोरी ।
काम दण्ड दण्डो पर घर को नाम न लेइ बहोरी ॥
तब कुलकानि आनि तिरको भई क्षमा अपराध
किशोरी ।
शिर पर हाथ धराइ सूर प्रभु सोच मोच शिर टोरी ॥

३

गोपाले माई बारे ही तें टेत्र ।
जानी नही कौन पें सीखे चोरीके छल छेव ॥
कबहुंक दूरतें माखन खाते सुनि रहती करि कानि ।
अब हमपै क्यो सही परति है मणि माणिक
की हानि ॥
बुद्धि विवेक वचन चातुरी सर्वस्व लई सुराय ।
सूरदास प्रभुके गुण अवगुण कासों कहिये जाय ॥

४

माखन चोर री मैं पायो ।
जैयतु कहां जान कैसे पैयतु बहुत दिननु ही खायो ॥
हो जू कहति हो होत कहा है नित उठि भाजन
लग्न कृपायो ।
बहुत बार कोरे लगि देख्यो मेरी घात न आयो ॥
बेणीकी कर गही चामटो घुंघट मांभ देखायो ।
मत रोवो तुम सों कौन कहत है ले उकड़ हुलरायो ॥
ओमुख तें उघरि गईं हे दतियां तब हंसि
कण्ठ लगायो ।
परमानन्द प्रभु प्राण जीवन धन विशद विमल
यश गायो ॥

५

अन्य यह राधिकार्के चरण ।
शुभग शीतल अति सुकीमल कमलके से वरण ॥
नखचन्द्र चारु अनूप राजत विविध शोभा धरण ।
रश्मि नूपुर कुञ्ज विहरत परम कौतुक करण ॥
रसिकलाल मन मोदकारी विरह सागर तरण ।
विवश परमानन्द क्षण क्षण श्याम जीके शरण ॥

६

बढ़ि बढ़ि बात लागी करन ।
श्याम सुन्दर मदनमोहन आए तेरे घर न ॥
उदित उरपर चिकुर छूटे चिकुर उरपर टुरन ।
कामकी दल साजि आई आड़ दे दे लरन ॥
विरह को संघाम जीत्यो बांधि अपनो परन ।
सूरके प्रभु तरण तारण राखि अपनो शरण ॥

७

बोलत कीककला निधान ।
मम वचन सुनि उठि चलहि सखि छींड़ि सुन्दरी मान ॥
तव नाम सहित निकुञ्ज मह प्रियकरत सुरली गान ।
केलि कौतुक रसिकनो त्रिय सुनहि दे किनि कान ॥
शेष रजनो खसत उड़पति जनु कि भयो विहान ।
क्षणदास प्रभु गिरिधरण पर वारि हो तन प्राण ॥

८

बदूं जो तबहि मानु धरि आवे ।
सुन्दर श्याम बडुरि सम्मुख ह्वै अम्बुज वदन दिखावे ॥
तबलग मान करहु कोउ कैसे जब लग वह
दर्शन नहिं पावे ।
दृष्टि परे मन मधुकर तिहि क्षण सहज सरोजहि धावे ॥
त्रिभुवन मांभ होउ वदे युवता आर्य पथहि दृढ़ावे ।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर कुल मर्यादा बढ़ावे ॥

९

बे लाल तेरी पैजनिया भनकेदी ।
माथे बे तेरे मुकट विराजि रोभ ग्वाल लटकदी ॥
भई री चकोर चतुर चन्द्रावली गति मति रति
अटकदी ।
आशाकरण प्रभु मोहन नागर चरण कमल चित देदी ॥

१०

हमारो दान दे री गुजरंटी ।
नित उठि आवत जात चोरि दधि बेचन आज
आचानक भेटो
अति सतरात कैसे कुटोगी बड़े मोपकी बेटो ।
कुम्भनदास गिरिधरण लाल सों भुज ओढ़नो लपेटो ॥

११

अहो दधि मथति घोषकी रानो ।
दिव्य चीर पहरे दक्षिणको कटि किङ्कणी
रुन भुनवानो ॥
सुतके कर्म गावति आनन्द भरि बाल चरित
जानि जानी ।

अमजल विन्दु राजे वदन कमल पर मनहुं
शरत् वर खानी ॥

पुत्रसनेह सुचांत पयोधर प्रसुदित अति हर्षानी ।
गोविन्द प्रभु घुटरुन चलि आये पकरो रई मथानी ॥

१२

मोहि दधि मधन दे वलि गई ।
जाउं वलि वलि वदन ऊपर छाड़ि मथानी रई ॥
लाल देधुं नवनीत लोदा रारि कित तुम ठई ।
रुते हंत विलोकि यशोमती प्रेम पुलकित भई ॥
ले सङ्ग लगाय उरसों प्राण जीवन जई ।
बालकेलि गोपालकी व्रज आशाकरण नित नई ॥

१३

श्रीयमुनाजी तिहारो दर्ग मोहि भावै ।
श्रीगोकुलके निकट वसत है लहरन की छवि आवै ॥
सुखकारणी दुःखहरणी श्रीयमुना जो जन प्रात
उठि आवै ।

मदनमोहन जूकी खरी पियारो पटराणो जू कहावै ॥
हृन्दावनमें रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै ।
सूरदास प्रभु तिहारै मिलनको वेद विमल यश गावै ॥

१४

नमो तरणितनया परम पुनीत जग पावनी
कृष्ण मनभावनी रुचिर नामा ।
अखिल सुखदायिनी सर्व सिद्धि हेतु श्रीराधिका रमण
रति करण श्यामा ॥

विमल यश सुमन नव कानन आमोद युत पुलिन
अति रम्य प्रिय व्रजकिशोरी ।

गोप गोपी नवल प्रेम रति वन्दिता तट सुदित
रहत जैसे चकोरो ॥

लहरि भांवरि ललितालुका शुभग व्रजबाल
व्रत पूरण रास फलदा ।

ललित गिरिवरधरण प्रिय कलिन्दनन्दिनी
निकट कृष्णदास विहरत प्रबलदा ॥

१५

निरखि हर्षि व्रज युवती घोष मुरारि ।

थकित जित तित अमर मुनिगण नन्दलाल निहारि ॥
विनु वैन शिर केश लट चहुं दिसा छटका भारि ।
श्रीश पर जानो जटा धरि शिशुरूप कियो त्रिपुरारि ॥
रुचिर रचित ललाट केशर विन्दु शोभाकारि ।
रोष मनहु तृतीय लोचन रहे रिपुजन जारि ॥
कुटिल हरिनख हृदय हरिके शुभग इहि अनुहारि ।
ईश जनु रजनीश राख्यो भाल तेज उतारि ॥
कण्ठ सोपज नीलमणिमय माल रची संवारि ।
नील गिरिवर गरल मानो लाय लड मदनारि ॥
वदन रज तन श्याम मण्डित शोभा इहि अनुहारि ।
मनहु अङ्ग विभूति राजत शम्भु साइ मधुहारि ॥
त्रिदशपति यशोमताके आगे असन को करे आरि ।
सूरदास विरञ्चि जाका जपत यश मुख चारि ॥

१६

वलि वलि चरित गोकुल राय ।
दावानल को पान कीन्हो पावत दूध सिराय ॥
पूतनाके प्राण शोषे रहे उर लपटाय ।
कहति जननी दूध डारत खाभि ककुव न खाय ॥
दृषावर्त आकाशते गहि शि ता पटको आय ।
डरत लालन भूलत पलना खरे देत भुलाय ॥
यमला अर्जुन तारि तारे हृदय प्रेम बढ़ाय ।
भटक तात पलास पल्लव देह देत दिखाय ॥
कीर पिञ्जर देत अङ्गुलि लेत श्याम भजाय ।
वकासुरकी चीच फारो दृष्टि अचरज लाय ॥
विना दोषक सदन में हरि नेकु धरत न पाय ।
अघासुर मुख पैठि निकसे बाल वत्स जिवाय ॥
हरे बालक वत्स नव कृत हेन दोगे माय ।
फूटि पशु जब रहत वनमें दुर्मनि दूंदत जाय ॥
लिखो हारे नाग कारो देखि श्याम डराय ।
नृत्य काली फणनि ऊपर मस ताल बजाय ॥
धखो गिरिवर दोहनो कर धरत बाँह पिराय ।
शकटभञ्जन प्रसत कुच युग कठिन लागत पाय ॥
घोष नारिन सङ्ग मोहन रच्यो रास बनाय ।

कहति जननी व्याहृती तत्र लजत वदन दुराय ॥
 वृषभभञ्जन हतन कैंस! हन्या पुच्छु फिराय ।
 भजत सखन समेत मोहन देखि व्याई गाय ॥
 शेष महिमा कहि न आवे अर्नक रसना पाय ।
 एक रसना सूर कहा कहे अङ्ग अगणित भाय ॥

१०

लटकत आवत कुञ्ज भवनतें ।
 टरि टरि परत राधिका ऊपर जागर शिथिल गमनतें ॥
 चौकि परत कबहुं मारग बिच चले सुगन्ध पौनतें ।
 भए उसास भरम राधाके सकुचत दिवस रमनतें ॥
 आसस मिस न्यारे न हांत हैं नेक हु प्यारी तनतें ।
 रसिक टरो जिनि दगा श्यामको कबहुं मेरे मनतें ॥

१०

चरण कमलकी चैरो तैरी छाडहु लालन नन्दके ।
 कैसो है दान कहा किनि लिया दियो न कबहुं
 वचन वदन अरविन्दके ॥
 देखत सखा सखीजन मगरी चरित चपल व्रजचन्द्रके ।
 लालन सकुचत अञ्जल ऐंचत पार न पावत
 विविध अटपटे फन्दके ॥
 मटकी खसत हंसत सब ग्वानिनि निरखि तिहारे
 कन्दके ।
 रसिक सदा मन बसो विविध गुण रसनिधि
 आनन्द कन्दके ॥

११

हा हा लेउ एको कोर ।
 बहुत वेर भई है भूखे देखि मेरो ओर ॥
 मेनि मिश्री दूध ओटो पीओ हूँ है जोर ।
 अब हो खेलन टेरि हैं तरे ग्वाल भयो अति भोर ॥
 जागे पक्षो द्रुम द्रुमनि प्रति करन लागे शार ।
 खेलिवे को उठि भजोगे मानि मेरो निहोर ॥
 लेहुं ललन वलाइ तैरो कोरि अञ्जल ओर ।
 वदनचन्द्र विलोकि शोतल होत हिरदो मोर ॥
 बैठि जननी गोद जेवन लागे गोविन्द थोर ।
 रसिक बालक सहज लीला करत माखन चोर ॥

१०

मानहु बात लालन मेरो ।
 करो भोजन रोष भूलो हों जू मैया तुरो ॥
 दुग्ध दधि नववोत छतपक परसि राखो थार ।
 कहा लोटत धरणिमें मेरे लाल होति अबार ॥
 गोद बैठो हों जिवाजं गाजं तैरे गोत ।
 खेलिवे को तोहि बोलत ग्वाल तैरे मोत ॥
 कहो जाको ताहि टेरों बैठे तैरे पास ।
 करो दधि मन्थान उदयो सूर्य कमल विकास ॥
 माइके सुनि वचन हंसि उर आइ लगे गोपाल ।
 कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नयन विशाल ॥

११

खेलत मदन सुन्दर अङ्ग ।
 युवतिजन मन निरखि उपजत विविध भाव अनङ्ग ॥
 पकरि वक्रा पृच्छ ऐंचत अपनो दिश कर जोर ।
 कबहुं वक्र ले भजत हरिको युवतिजनको ओर ॥
 देखि परवश भए प्रियतम भयो मन आनन्द ।
 मैन आकुल भई व्याकुल गई लाज अमन्द ॥
 कोउ देखति गहति कोऊ हंसत छाडति गेह ।
 करति भायो अपने मन को प्रकट करि निज नेह ॥
 अति अलौकिक बाललाला क्या हुं न जानो जाइ ।
 सुग्ध तासो महासुख रस देत रसिक मिलाइ ॥

रामकली—चर्चरी

व्रजानन्द कन्द व्रजानन्द कन्द घाषपति भाग्य
 भुविजातं ।
 रसिकवर गोपिका पीत रस माननं तत्र जयतु
 मम दृशि सुजातं ॥
 रुचिर दर हाम गल विमल परिमल लुब्ध मधुपकुल
 मुख कमल सदनं ।
 अमृतचय गर्व निर्वासनाधर सिन्धु पायस
 मनोजाग्नि शमनं ॥
 स्मित प्रकटित चारु दन्त रुचि वदन विधु कौमुदी
 हत निखिल तापे ।

विल सलिलता हृद कनक कलस हये मरकत
मणिरिव दुरापे ॥
शुभग-सुमुखी कण्ठ-निहित निज वाहु रति-मत्त
गजराज इव रुचिरं ।
विरहो विरहानलं चारु पुष्कर चलन शीकरे
रूप शमय रुचिरं ॥
अरुण तरलापाङ्ग शर निहत कुलवधु धृति
तव विलोचन सरोजं ।
मम वदन सुखमा सरसि विनशतु सततमलसगति
निर्जित मनोजं ॥
नन्दगेहाल बानोदित स्त्रीरागसेकभङ्ग सुरवृत्तं ।
व्रजवर कुमारिका वाहु हाटक लता सततमाश्रय तु
कृतलत्तं ॥
व्रजश्लाघ गुण रसिकता गुण गोपनातिशय
रुचिरालापलोलं ।
तादृगीक्षणजनित कुसुम शर भाव भर युवतिषु
प्रकटतर निखिलं ॥
रुचिर कौमार चापल जय त्रोड्या वल्लवौ हृदय
गृह गुप्तं ।
प्रकटयन्निज नख शरचयै रसमशरमिह
जयति हत भाव चित्तं ॥
घोषमोमन्तिनो विधुदुद्यहेण केलिनिनाद गर्जित
रुवमिह सततं ।
वचन करुणाकृत दृष्टि दृष्टि रङ्ग नव जलद
मपि कुरु सुहसितं ॥

२

हरि यश गावति चलो व्रजसुन्दरी श्रीयमुनाके तोर ।
लोचन लोने बांह जोटि करि श्रवणनि भलकत वोर ॥
बेणो सुथिर चारु कांवे परे कटितट अम्बर लाल ।
हाथनि फूल लिये डलिया भरि अरु सुक्ता मणि माल ॥
जल प्रवेश करि मञ्जन कौनों प्रथम हेमन्तके मास ।
ए वर होहु नन्द सुत मेरे व्रत ठान्यो इहि आश ॥

तब हो चीर हरे हरि नागर चढ़े कदमको डारि ।
परमानन्द प्रभु वर देवेको उद्यम कियो सुरारि ॥
२
हो मोहन हो हारी तुम जीते ।
नागर नट पट देहु हमारे कांपत है तन शोते ॥
रसिक गोपाल लाल अञ्जलिपर एतो कहा अनीते ।
परमानन्द प्रभु हम सब जानत गाल बजावत रोते ॥

३

मोहन देखा वसन हमारे ।
कहेगी जाय व्रजपति जूके आगे करत अनोत ललारे ॥
तुम व्रजराज किशोर नन्दसुत सब हिनके प्राण प्यारे ।
गाविन्द प्रभु पिय दासी तिहारी सुन्दर वरसुकुमारे ॥

४

बनत नहीं यमुना जू को नहेवो ।
चाली चीर कण्ण ले भाज कठिन भयो घर जेवो ॥
जो हरि हमसो ऐसी करि हो तो इह घाट न ऐवो ।
आविद्वल गिरिधरण लाल सां विनतो करि घर जेवो ॥

५

खालिन मांगति वसन अपाने ।
शोतकाल जल भीतर ठाढ़ी आवत नाहीं दयाने ॥
तुम व्रजराज कुमार प्रबल अति कौन परो यह बाने ।
हम सब दासो तिहारे व्रजपति तुम बहु निपट
सयाने ॥

६

मोहन वसन हमारे दीजे ।
बारने जाउं सुनो नन्दनन्दन शीत लगत तन भोजे ॥
कौन स्वभाव वृथा अन अवसर इन बातन कैसे जीजे ।
सुनि दुःख पावे व्रजमहर यशोमती जाइ कहे
अव हीजे ॥
ए सब अबला जल मांभ लघारी दारुण दुःख
कैसे सहीजे ।
प्रभु बल्लाम हम दासी तिहारी जो भावे सो कीजे ॥

हमारी अम्बर देहो सुरारी ।
 खेकर चीर कदम पर बैठे हम जन मांभ उघारी ॥
 सुन्दर श्याम कमलदल लोचन हम हैं दासी तिहारी ।
 जो कहु कही सोई हम करि हैं चरण कमल पर वारी ॥
 अङ्ग अङ्ग कम्पत मनमोहन विनती सुनहु हमारी ।
 सुरदास प्रभु रसिक शिरामणि तुम जाँत हम हारी ॥

बालिनी अपन चीर लेह ।
 जलते निसरि निकट हँ दोऊ कर जोरि के
 गास देह ॥

कत हो शीत सहत ब्रजसुन्दरि होत अरिषत
 कृश गात सबे ।

मेरे कहँ आनि पहिरो पट इतनो अङ्ग
 विधि हीन अबे ॥

हों अन्तरयामी जानत सबन की कत दुरावत
 लाजके ।

करि हों पूरण काम कृपा करि शरत् समय
 शशि रातके ॥

सन्तत सूर रूभाव हमारी कत डरपति हो
 काम भय ।

कैसेये भाँति भजे कोउ मोक्ते सबे संसार जय ॥

जयति श्रीवल्लभ सुवन उद्धरण त्रिभुवन फेरि नन्दके
 भवनको केलि ठानी ।

इष्ट गिरिवरधरण सदा सेवत चरण द्वार चारो
 वरण भरत पानी ॥

वेद पथ व्यास से हनुमान् दास से ज्ञान को
 कपिल से कर्म योगो ।

साधु लक्षण निपुण महु ब्रजराज प्रकट सुखराशे
 मनो इन्दु भोगी ॥

सिन्धु सम गभीर मिलन रङ्ग नीर प्रीति को जल
 क्षीर ब्रज उपासी ।

ध्यान को सनकसे भक्त को सनन्दनसे याही तें
 वृष कियो ब्रह्मराशी ॥
 मनहु इन्द्रको जीति कृष्ण सों करो प्रीति निगमकी
 चक्षु नीहिन अति विवेकी ।
 रहित अभिमान ते बड़े सन्मानके शील अरु
 दान गोविन्द टेकी ॥
 सदा निर्मल बुद्धि अष्टसिद्धि नवनिद्धि द्वार सेवत
 जहां मुक्ति दासो ।
 रामराय गिरिधरण जानि आयो शरण दीनके
 दुःख हरण घोषवासी ॥

११

रुचिर तरु वल्लभाधोश चरणं ।
 अस्तु मे सर्वदा सुन्दराकृति जगन्मोहनं हृदि हृता
 विहित करणं ॥

विहित मायां वादनादि दनुजादि जन सङ्ग
 जनितात्मजन कुमति हरणं ।

अखिल साधन रहित दोष शत कलुष मति
 विमति भरभरित निज दास शरणं ॥

अप्लसा काम कोपादि बहु नक्रयुत वासना भङ्ग
 भवजलधि तरणं ।

वदत हरिदास इति निज वरण मात कृत
 गोकुलाधोशपद कमल वरणं ॥

१२

जयति राधिका रमणकर चरण परि चरण
 रति वल्लभाधोश सुत विट्टलेशे ।

दास जन लौकिका लौकिके सर्वथा कैव चित्तो
 दयति हृदय देशे ॥

स्थापयति मानसं सतत कृत लालसं सहज सुखमा
 रुचिर रूपवेशे ।

भाल गत तिलक मुद्रादि शोभा सहित मस्तकावह
 सित कृष्ण केशे ॥

सहज हासादियुत वदन पङ्कज सरस वचन रचना
 पराजित सुदेशे ।

अखिल साधन रहित दोष शत सहित मति दास
 हरिदास गति निज लवलेखे ॥
 १२
 मनो वल्लभाधीश पटकमल युगले सदा वसतु मम
 विविधर सभाव वलितं ।
 अन्य महिमा भाव वासना वासितं मा भवतु
 जात निज भाव चलितं ॥
 भजतु भजनोय मतिशयित रुचिरं चिरं चरण
 युगलं सकल गुण सुललितं ।
 वदत हरिदास इति मा भवतु मुक्तरपि भवतु मम
 देवसुत जन्म फलितं ॥
 १४
 जयति भद्रलक्षण तनुज कृष्ण वदनानल
 श्रीमदिल्ल सुगारुगभरत्ने ।
 देववृत्त जनसमुद्भूति करणकृत निजाविभवन
 विहित बहु विविध यत्ने ॥
 महालक्ष्मीपती गोपीनाथ श्रीविठ्ठलाभिध
 शुभगतनुज तापे ।
 घृष्टित मायावाद वर्त्ति वदन ध्वंसि विहित निज
 दास जन पक्षपाते ॥
 पुष्टि पथ कथन रचितानिक सुग्रन्थमथित
 भागवत पीयूष सारे ।
 रास युवती भाव सतत भावित हृदय सदय मानस
 जनित मोद भारे ॥
 निज चरणकमल धरणी परिक्रमणकृति मात्र
 पावित वितत तीर्थ जाले ।
 कृष्ण सेवन विहित शरणागत शिक्षणक्षपित सन्देह
 दासैकपाले ॥
 निज वचन पीयूष वर्ष पोषित सतत साहित्य
 पुरुष जन भृत्य युक्ते ।
 विविध वाचोयुक्ति निगम वचनोदितैरपि च
 दुरित दुष्ट जन दुरुक्ते ॥
 ईदृशे सति शिरसि सर्वदा वल्लभे सकल कर्तारि
 दयाली ।

कैव परिदेवना भवति हरिदासके सकल साधनरहित
 जन कपालौ ॥
 १५
 श्रीमदिल्लभ रूप सुरङ्गे ।
 नखशिख प्रति भावनके भूषण उन्दावन सम्पति
 अङ्ग अङ्गे ॥
 दर्श स्वशं गिरिधर जकी नाई एन रैन ब्रजराज
 उरुङ्गे ।
 पद्मनाभ देखे बनि आवे सुधि रही रास रसा भ्रूभङ्गे ॥
 १६
 हेलो नव निकुञ्ज लीलारस पूरित श्रीवल्लभ वन मोरे ।
 अङ्ग अङ्ग विपुन छिपुन घन दामिनि द्युति
 फल फल प्रति दोरे ॥
 करत आवे सविरह विरहनी श्रुति भूतल बहुत
 कठोरे ।
 पद्मनाभ मधुरेश विचारत श्रीलक्षण भट सुत ओरे ॥
 १७
 सखी री शोभा-रस-मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ
 वर देह ।
 अङ्ग अङ्ग ब्रजवध विरहनी व्यापी युगल सनेह ॥
 श्रीवन्दारण्य इन्दु प्रकटित हृदय निगूढ कन्दरा देह ।
 पद्मनाभ सुतहित कियो मारग नेह सुरालिका वेह ॥
 १८
 श्रीगोकुल नाथ निज वपु धख्यो ।
 भक्त हित प्रकटे श्रीवल्लभ जगते तिमिर हख्यो ।
 नन्दनन्दन भये तत्र गिरि गोप ब्रज उरुख्यो ।
 नाथ विठ्ठल सुवन ह्वै के परमहित अनुसख्यो ॥
 अति अगाध अपार भवनिधि तारि अपनो कख्यो ।
 दास माधव त्रास देखे चरण शरणीं पख्यो ॥
 १९
 सुमिरो श्रीविठ्ठलेश कुमार ।
 अति अगाध अपार भवनिधि भयो चाहो पार ॥
 रहत करुणासिन्धु कोमल सदा चित्त उदार ।
 गोकुलेश हृदय वसो मम माल पाख निहाल ॥

माल तिलक नत जीत कहुं परो यदपि पुकार ।
 अन्त भक्तन दियो धीरज भए पद टातार ॥
 चार युगमें विशद कीरति भक्त हित अवतार ।
 नवकिशोर कल्याणके प्रभु गाउं बारम्बार ॥

२०

रुकमनि चलन सिखावति पाइन ।
 सुतको गहे अङ्गरिया डोलति शोभा कोटिक भाइन ॥
 ठुमकि ठुमकि पग धरत धरणी पर ले उकङ्क
 डर लाइन ।

वृन्दावन को चन्द्र शिवलभ ले बलाय हुलराइन ॥

अथ श्यामनाके कोतन

नमो देवि यमुने नमा देवि यमुने हरिकृष्ण
 मिलनान्तरायं ।

निजनाथ मार्गदायिनो कुमारा कामपूरके कुरु
 भक्ति रायं ॥

मधुपकुल-कलित कमलावली व्यपदेश-धारित
 श्याकृष्ण युत भक्त हृदये ।

सतत मतिशयित हरि भावना जात तत्मारूप्य
 गदित निज हृदये ॥

निज कूल-भव विविध तरु कुसुम युत नीर शोभया
 विलसदलिहन्दे ।

स्मारयसि गोपीवृन्द-पूजित सरसमोश
 वपुरानन्दकन्दे ॥

उपरि चलदमल कमलारुण द्युति रेणु परिमलित
 जलभरेणामुना ।

व्रजयुवती कुच-कुम्भ कुङ्कुमारुणमुरः स्मारयसि
 मारपितुरधुना ॥

अधिरज निहरि विह्वति मोक्षितं कुलतयाभिध
 शुभग नखनान्युशति तनुषे ।

नयन युग मर्त्यमिति बहुतराणि च तानि रसिकता
 निधितया कुरुषे ॥

रजनीजागर-जनित रागरञ्जित नयन पङ्कजैरहनि
 हरि मीचसे ।

मकरन्द भर मिषेणानन्द पूरिता सतत मिह
 हर्षशु मुच्यसे ॥

तटगतानिक शुकसारिका मुनिगण-सुतविविध
 गुणसिन्धु सागरे ।

सङ्गता सततमिह भक्तजन ताप ह्वति राजसे
 रासरस सागरे ॥

रतिभर-श्रम-जलोदित कमल परिमल व्रजयुवतो
 जलविह्वति मोदे ।

ताटङ्क चलन सु निरस्त सङ्गोत युत मदमुदित
 मधुप कृत विनोदे ॥

निज व्रजजनावनायात्त गोवर्द्धने राधिका हृदयगत
 हृद्य करकमले ।

रतिमतिशयित रस विह्वलस्याशु कुरु वैष्णु
 निनादाह्वान सरले ॥

व्रजपरिवृन्दवल्लभे कदा त्वच्चरणसरोरुह मीक्षणा-
 स्पदं मे ।

तव तटगत वालुका कदाहं सकलनिजाङ्गता
 मुदा करिष्ये ॥

वृन्दावने चारु ब्रह्मने मन्मनोरथं पूरय सूरसुते ।
 दृग्गोचरः कृष्ण विहार एव स्थितिस्त्वदोद्ये

तट एव भूयात् ॥

पिय सङ्ग भरि रङ्ग करि कलोलै ।

सबन को सुख देन पिय को करत सैन चित न
 परत चैन जब ही बोले ॥

अति हि विख्यात सब बात इनके हाथ नाम लेत हि
 कृपा करी अतोले ।

दर्श करि स्पर्श करि ध्यान हियमें धरे सदा व्रजन्मथ
 इन सङ्ग डोले ॥

अति हि सुखकरण दुःख सबको हरण यह लीन्हो
 है प्रण हिज ही कूले ।

ऐसी यमुना जानि तुम करो गुणगान रसिक
 प्रियतम पायनङ्ग मूले ॥

नयन भरि देखि अब भानुतनया ।
 केलि पिय सों करे भंवर तब ही परे अमजलनि
 भरत आनन्द मनया ॥
 चलति टेढ़ी होइ लेति पियको मोहि इन विना
 रहति नहिं एक छिनया ।
 रसिक प्रियतम रास करत यमुना पास नानो निर्दनन
 की हो जु धनया ॥
 श्याम सुखधाम जहां नाम इनके ।
 निशदिन प्राणपति आय हियमें वसे जोई गावें
 सुयश भाग तिनके ॥
 एहि जगमें सार कहत बारम्बार सबनके आधार
 धन निर्दनके ।
 लेत यमुना नाम देत अभय पट धाम रसिक
 प्रियतम प्रिया वश जो जिनके ॥
 कहत सुख सार निर्दार करके ।
 इन विना ऐसी कौन करि है सखी हरत दुःखदह
 सुखकन्द वर्षे ॥
 ब्रह्मसम्बन्ध जब करत हैं जीव को तब हि इनकी
 वाम भुजा फरके ।
 दौरि करि शोर करि जाय पिय सों कहें अति हि
 आतुर मनमें जु हर्षे ॥
 नाम निर्मील न गले कोज ना सके भक्त राखत हिये
 हार करके ।
 रसिक प्रियतम की होत जापर कृपा सोई यमुना
 जूको रूप परशे ॥
 यमुना सो नाहिं कोज और दाता ।
 जे इनकी शरण जात हैं दौरि के तिन्हें क्षण
 करें सनाथा ॥
 एहि गुणगान रसखान रसना एक सहस्र
 क्यों न दई विधाता ।

गोविन्द वलि तन मन धन वारने सबनका जीवन
 इन हीके हाथा ॥
 श्याम सङ्ग श्याम हूँ रहो रो यमुने ।
 सुरति अमविन्दुते सिन्धुमो बहि चलो मानो
 आतुर आली रही न भवने ॥
 कोटि काम हि वारों रूप नयन निहारों लाल
 गिरिधरण सङ्ग करत रमने ।
 हर्षि गोविन्द प्रभु देखि इनका आर मानो
 नव दुलहना आई गमने ॥
 यमुनयश जगत्में जोइ गाया ।
 ताके आसक्त हूँ रहत हूँ प्राणपति नयनमें वैन
 में रम जो छायो ॥
 वेद पुराणकी बात यह अगम है प्रेमको भेद
 कोज न पाया ।
 कहे गोविन्द यमुनाकी जापर कृपा सोई वक्त्र-
 कुल-शरण आयो ॥
 चरण पङ्कज रेण यमुना देनी ।
 कलियुग जीव उद्धारण कारण काटत पाप
 अवधार पेनी ॥
 प्राणपति प्राण यह आय भक्तन नेह सकल
 यह सुखकी हो जु मेनी ।
 गोविन्द प्रभु विना रहत नहिं एक क्षण अति हि
 आतुर चञ्चल जा नयनो ॥
 धाड़के जाइ जे यमुना तीरे ।
 तिन हीकी महिमा कहां लीं वरणिये जाइ
 परशत प्रेम अङ्ग नीरे ॥
 निशदिन केलि करत मनमाहन प्रियके सङ्ग
 भक्तनकी हूँ जु भीरे ।
 द्योत स्वामी गिरिधरण ओविडल ता विना
 नेकु नहीं धरत धीरे ॥

१२

जोई मुख यमुना यह नाम आवे ।
 ता ऊपर छपा करत श्रीवल्लभ प्रभु सोई
 यमुना जीको भेद पावे ॥
 तन मन धन अब लाल गिरिधरणको दे करि चरण
 जब चित ह्वि लावे ।
 श्रीत स्वामी गिरिधरण श्रीविठ्ठल नयननि प्रकट
 लीला देखावे ॥

१३

धन्य यमुने निधि देनहारो ।
 करत गुणगान अज्ञान अब दूरि करि जाहि
 मिनवत पिय श्रीर प्यारो ॥
 जिन ही सन्देह करो बात जियमें धरो
 पुष्टिपथ अनुसरो सुख जां कारो ।
 प्रेमके पुञ्ज में रासरस कुञ्जमें एहि राखति
 अति रङ्ग भारी ॥
 यमुना अरु प्राणपति और सब प्राण सुत चहुं
 जन जीव पर दया विचारो ।
 श्रीतस्वामी गिरिधरण श्रीविठ्ठल प्रीतिके लिये
 यह सम्पदारी ॥

१४

गुण अपार एक मुख कहां लो कहिये ।
 तजो साधन भजो नाम यमुनाजी को लाल
 गिरिधरण को तबहिं पडये ॥
 परम पुनीत प्रीति रीतिको जान ही दृढ़ करि
 चरण कमल जो गहिये ।
 श्रीत स्वामी गिरिधरण श्रीविठ्ठल एहि निधि
 छाड़ि अब कहां जां जइये ॥

१५

चित्तमें यमुना निशिदिन जो राखो ।
 भक्तके वश छपा करत है सर्वदा ऐसो यमुना जो
 को है जो साको ॥
 जाहि मुखते यमुने नाम यह उचरे सङ्ग कोज
 अब जाइ ताको ।

चतुर्भुज दास अब कहत है सबन सो ताते
 यमुने यमुने जो भाषो ॥

१६

प्राणपति विहरत यमुनाके कूले ।
 लुब्ध मकरन्दके वश भए भ्रमर जी रवि उदय देखि
 मानो कमल फूले ॥
 करत गुञ्जार मुरलीके सांवरो ब्रजवधु सुनत
 तन सुधि जो भूले ।
 चतुर्भुज दास यमुना प्रेमसिन्धुमें लाल गिरिधरण
 अब हर्षि भूले ॥

१७

बार बार यमुने गुणगान कीजे ।
 एहि रसनार्त जो नाम रस अमृत भाग्य जाके
 सोई जो लोजी ॥
 भानुतनया दया अति ह्वि करुणामया इनको
 करे आशा सदा जीजे ।
 चतुर्भुज दास कहे सोई प्रिय पास रहे जोई
 यमुनाके रसमें भोजी ॥

१८

हंत करि देत यमुना वास कुञ्जे ।
 जहां निशि वासर रासमें रसिक वर कहां लो
 वरणिये प्रेमपुञ्जे ॥
 थकित सरितानीर थकित ब्रजवधु भीर कोज
 न धरत धार मुरली सुनिञ्जे ।
 चतुर्भुज दास यमुने जो पङ्कज जानि मधुपको
 नाई चित लाइ गुञ्जे ॥

१९

भक्त पर करि छपा यमुना ऐसो ।
 छाड़ि निज धाम विश्राम भूतल किये न प्रकट
 लाला दिखाई जो तैसो ॥
 परम परमार्थ करण है पवनि का रूप अमृत
 देत आप जैसी ।
 नन्ददास जो जानि दृढ़ चरण गहै एक रसना
 कहा कहां वैसो ॥

२०

नेह कारण यमुना प्रथम आई ।
भक्तकी चिन्त वृत्ति सब जान हीं ताहिते प्रति ही
आतुर जो धाई ॥
जैसी जाके मन हती मन इच्छा ताहि तैसी
साध जो पुजाई ।
नन्ददास प्रभु नाथ ताहि पर रीभक्त
यमुनाजूके गुण जो गाई ॥

२१

यमुने यमुने यमुने जो गावो ।
शेष सहस्र मुख गावत निशदिन पार नहीं
पावत ताहि पावो ॥
सकल सुख देनहार ताते करो उच्चार कहत हों
बार बार भूलि जिनि जावो ।
नन्ददासकी आशा यमुना पूरण करी ताते कहं
घरो घरी चित्त लावो ॥

२२

भाग्य सौभाग्य यमुना जो दे रो ।
बात लौकिक तजे पुष्टि यमुना भजे लाल गिरिधरण
को ताहि वर मिले रो ॥
भगवदी सङ्ग करि बात उनकी ले सटा सान्निध्य
रहे कलि में रो ।
नन्ददास जो जाहि वल्लभ कृपा करे ताके यमुने
सदा वश जो रहे रो ॥

२३

नाम महिमा ऐसी जो जानो ।
मर्यादादिक कहें लौकिक सुख लहें पुष्टिको
पुष्टिपति निश्चय मानो ॥
स्वाति जलबुन्द जब परत हैं जाहिमें ताहिमें
होत तैसी जो बानो ।
यमुना कृपा जान सिन्धु जल वहिमान सूर गुणपूर
कहां लो बखानो ॥

२४

भक्त को सुगम यमुना अगम श्री ।

प्रात ही न्हात अघ जात ताके सकल यम ह रहत
ताहि हृदि जोरे ॥
अनुभवो विना अनुभव कहा जान हीं जाको
प्रिया नहीं चित्त चोरे ।
प्रेमके सिन्धुको मर्म जान्यो नहीं सूर कहि
कहा भयो देह बारे ॥

२५

फल फलित होत फलरूप जाने ।
देखि ह नहीं सुनो ताहि कहि आपनो ताकी
यह बात कोज कैसे माने ॥
ताहीके हाथ निर्माल नग दीजिये जोई नोके
करि परखि जाने ।
सूर कहि क्रूरतें दूर वसिये सदा यमुनाको नाम
लीजि जो छाने ॥

२६

यमुनापति दासके चिह्न न्यारे ।
भगवदीको भगवद् सङ्ग मिलि रहे ताके वसत हिये
प्राण प्यारे ॥
गूढ़ यमुना बात जोई अब जान ही ताके
मनमोहन नयन तारे ।
सूर सुखसार निर्हार वहे पाव ही जापर होय
वल्लभ कृपारे ॥

२७

यमुने रसखानि को शोष नाजं ।
ऐसा महिमा जानि भक्तकी सुखदानि जोई मांगों
सोई जो पाजं ॥
पतित पावनकरण नाम लीन्हें तरण दृढ़ करि
गहं चरण कहं न जाजं ।
कुम्भनदास गिरिधरण मुख निरखत एही चाहत
नहीं पलक लगाजं ॥

२८

यमुना अगणित गुण गने न जाई ।
यमुना तट रैन इतने होय वेन इनकी सुखदेनकी
करुं बड़ाई ॥

भक्त मांगत जोई देत तेही छिन सोई ऐसी करे
कौन प्रण निभाई ।

कुम्भनदास गिरिधरण मुख निरखते कहो कैसे
करि मन अघाई ॥

२८

यमुना पर तन-मन-प्राण वारों ।
जाको कीर्ति विशद कौन अब कहि सके ताहि
नयननते नेकु न टारों ॥

चरण कमल इनके जा चिन्तत रह्यो निशिदिन
नाम मुखते उचारों ।

कुम्भनदास कहे लाल गिरिधरण मुख इनको
कृपा भई तो निहारों ॥

३०

भक्त इच्छा पूरण यमुना जो करता ।
विन हि मांगि देत कहां लो कहं हेत जैसे काहको
कोज होय धरता ॥

यमुना पुलिन रास ब्रज वधू लिये पास
मन्द-मन्द हास मन जो हरता ।

कुम्भनदास जो प्रभु का मुख देखत एहि जिय
लेखत यमुना जो भरता ॥

३१

रासरससागरा यमुना जानो ।
प्रति क्षण नूतन बहत धारा तने राखत अपने
उर मांझ ठानी ॥

भक्तको सहे मार देत प्राण आधार अति ही
बोलत मधुर-मधुर वानी ।

श्रीविठ्ठल गिरिधरण वरवश किये कौन पै
जात महिमा बखानी ॥

३२

भक्त प्रतिपाली जञ्जाल टारि ।
अपने रम-रङ्गमें सङ्ग राखत सदा सर्वदा जोइ
यमुना उचारि ॥

इनकी कृपा अब कहां लो वरणिये जैसे राखत
जननी पुत्र वारि ।

श्रीविठ्ठल गिरिधरण सङ्ग विहरते भक्तको एक
क्षण ना विसारि ॥

३३

कौनपै जात यमुना जो वरणी ।
सबहिन को मन मनमाहन हरत सो प्रियको मन
ए जो हरणी ॥

इन विना एक क्षण रहि न जीवन धन्य ब्रजचन्द्र
मन आनन्द करणी ।

श्रीविठ्ठल गिरिधरण सहित आय भक्तके हेत
भवतार धरणी ॥

३४

यमुना जो नाम ले सो सभागी ।
सोइ रस रूप को सदा चिन्तन करे नक नहिं
कल परे जाहि लागी ॥

पुष्टि मार्ग परम अति हि दुर्लभ छाहि
सगरे कर्म प्रेम यागी ।

श्रीविठ्ठल गिरिधरण सिद्धि निधि अब भक्त को देत हैं
विन हि मांगी ॥

३५

यमुने तुमसी एक हो चु तुम ही ।
करि कृपा दर्श निशि वासर दोजिये तिहारि
गुणगान को रहे उद्यम ही ॥

तुम ज पाए तें सकल निधि पाव हो चरण कमल
चित्त भ्रमर भ्रम ही ।

कृष्णदास नि कहे कौन यह तप कियो तिहारि
ढिग रहत है लताद्रुम हो ॥

३६

ऐसी कीजि कृपा लीजिये नाम ।
यमुना जगवन्दनी गुणन जात योगिनी जिनके
ऐसे धनी सुन्दर श्याम ॥

देत संयोगरस ऐसे प्रिय हैं जो वश सुनत
सुयश तिहारो पूरे सब काम ।

कृष्णदास नि कहे भक्तके कारणे यमुना एक क्षण
नहीं करे विनाम ॥

१०

यमुनाके नाम-पषट् दूर भाजे ।
जिनके गुण सुनिके लाल गिरिधरण प्रिय आय
सम्मुख ताके विराजे ॥
तेहि क्षण काज ताके जो सगरे सरत जाइके
मिलत ब्रजवधू समाजे ।
कृष्णदास नि कहे ताहि अब कौन डर जाके
जपर यमुनासो गाजे ॥

३८

यमुनाके नाम तेई जो ले हैं ।
जिनकी लग्न लागो नन्दलाल सो मर्वख देके
निकट रे हैं ॥
जिनहि सुगम जानि बात मनमें बानि
विना पहिंचानि कैसे जो पे हैं ।
कृष्णदासनि कहे यमुना नाम नौका भक्त भवसिन्धु
ते-यों जो तरे हैं ॥

३९

यमुनाको आशा अब करत हैं दास ।
मन-क्रम-वचन कर जोरिंके मांगत निशदिन
राखिये अपने ही पास ॥
जहां अब रसिकवर रसिकनो राधिका दोउ जन
सङ्ग मिलि करत हैं रास ।
दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द्र देखि सिराने
नयन मन्दहास ॥

४०

यमुना सुखकारणी प्राणपतिको ।
प्रिय जो भूलत जिन्हे सुधि करि देत तिन्हे कहां
लो कहिये अति हि इनके हितको ॥
पिय सङ्ग गान करें अति रस उमगि भरें देत
तारी करें लेत जितको ।
दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द्र एही जानत
अति प्रेम गतिको ॥

४१

यमुनाके साथ अब फिरत हैं नाथ ।

भक्तके मनके मनोथे पूरत सबे कहां ली कहिये
अब इनकी जो बात ॥
विविध मृङ्गार-भूषण अङ्ग-अङ्ग सजे वरणो न
जात शोभा बनी गात ।
दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द्र राखे अपने
शरण बड़े जो जात ॥

४२

यमुने पियको वश तुम कानि ।
प्रेमके फन्दते घेरि राखे निकट ऐसे निर्माल
नग मोल लानि ॥
तुम जो पठावत तहां अब धावत निशदिन
तिहारे रसरङ्ग भीनि ।
दास परमानन्द पाय अब ब्रजचन्द्र परम उदार
यमुना जो दीनि ॥

४३

जगमें ए ही सार भजु तू बारम्बार ।
श्रीयमुना जोको नाम जप निशदिन जातें
उतरेगो भवसागर पार ॥
जाके भजनते हरि हियमें वसें करे क्षपा सर्वदा
अपनो पितुमार ।
कहत ब्रजपति तुम सबन सो समुभाय परो
इनके चरण और नाहिं आधार ॥

४४

एक रसना गुण अपार क्यों करि वरनो ।
साधन सबे तजो भजो इनको नाम जाके सुमिरन
ते हांगो तरनो ॥
एक मनमें निहार करिके करो सदा तट इनके
निकट रहनो ।

कहत ब्रजपति तुम सबनसों समुभाय जपो
हरिनाम और कहु न करनो ॥

४५

पिय सङ्ग रङ्ग भरि करि विलासे ।
सुरति-रससिन्धुमें अति हि हर्षित भई कमल
क्यों फूलत रवि प्रकाशे ॥

तनते-मनते-प्राणते सर्वदा करति है

हरि सङ्ग मृदुल हासे ।

कहत ब्रजपति तुम सबन सों समुभाय मिटे

यम त्रास इन ही उपासे ॥

४६

यमुनासी नाहीं कोउ दुःखकी हरणी ।

जाके स्नानते मिटत है सब पाप होत है आनन्द

सुखकी करणी ॥

महिमा अगाध अपार इनके गुण सकल यश

वेद-पुराण वरणी ।

कहत ब्रजपति तुम सबन सों समुभाय कृटे

यम डर जो आवे इनकी शरणी ॥

४७

जयति भानुतनये चरणं युगल वन्दे ।

जयति ब्रजराज नन्दन प्रिये सर्वदा देत आनन्द

ज्यों शरत् चन्द ॥

जयति सकल सुख कारणी कृष्ण मनोहारणी

श्रीगोकुल निकट बहत मन्दे ।

जाके तट निकट हरि रासमण्डल रच्यो तंहा

निर्तत तथा थैड थन्दे ॥

जयति कलिङ्ग गिरिनन्दिनी देति आनन्दनी

भक्तके हरे मव दुःख हन्दे ।

चित्तमें ध्यान धरि मुदित ब्रजपति कहै जयति

यमुने जयति नन्दनन्दे ॥

४८

श्रीयमुने तुम सी और न कोई ।

करो कृपा निज दीन जानिके ब्रज निज वासो होई ॥

राखो चरण-शरण तरणितनये जन्म आपदा खोई ।

इह संसार अपने स्वार्थको सुत-पति सगो न कोई ॥

प्रेमभजनमें करत विघ्नता सन्त सन्तापत सोई ।

ताको सङ्ग मोहिं सपने न दीजो मांगत नयनन रोई ।

गरल पान डारत अमृतमें विष क्यो रसमें सोई ।

रसिक कहत दीन ह्वे याचूं लहरि समुद्र समोई ॥

४९

श्रीयमुना जी दीन जानि मोहिं दीजे ।

नन्दको लाल सदा वर मांगूं सब गोपिनकी

दासी कीजे ॥

तुम हो परम उदार कृपानिधि सन्तजनन सुखकारी ।

तिहारे वश वर्तत राधाधर तट खेलें गिरिधारी ॥

सब सखियन मिलि हरि संग खेलें

अद्भुत रूप निहारी ।

तिहारे पुलिन मध्य निकट कुञ्ज द्रुम कमल

पुहप हैं सुबासी ॥

अमजल सहित नाथ अति रस भरे जलक्रोडा

सुखकारी ।

मनो तारा मध्य चन्द्र विराजत भरि भरि

छिरकति नारी ॥

राणी जूके पाइ लागि विनती करि गृहको कारज

सब कीजे ।

परमानन्द प्रभु सब सुखदाता इह रस नयन

भरि पीजे ॥

५०

श्रीयमुनाजी तिहारो दर्श मोहि भावे ।

श्रीगोकुलके निकट बहत हो लहरनको कृवि भावे ॥

सुखकरणी दुःखहरणी श्रीयमुना जो जन प्रात उठि न्हावे ।

मदनमोहन जूकी खरी पियारी पटराणी जो कहावे ॥

वृन्दावन में रास रच्यो है मोहन सुरली बजावे ।

सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यश गावे ॥

५१

श्रीयमुनाजी यह प्रसाद हीं पाजं ।

तुम्हरे निकटे रह्यो निशिवासर रामकृष्ण गुण गाजं ॥

मञ्जन करों विमल पावन जल चिन्ता कलुष बहाजं ।

तिहारो कृपा भानुको तनया हरिपद प्रीति बढाजं ॥

विनतो करों यड़े वर मांगूं अधम सङ्ग विसराजं ।

परमानन्द चार फलदाता मदन गोपालहिं भाजं ॥

५२

श्रीयमुनाजी यह विनती चित धरिये ।
गिरिधर लाल मुखारविन्द रति जन्म जन्म
मोहि करिये ॥
विष सागर संसार विषम अति विमुख सङ्गते डरिये ।
काम क्रोध अज्ञान तिमिर अति उर अन्तरते हरिये ॥
तुम्हरे निकट वसीं निजजन सङ्ग रूप देखि मन डरिये ।
गाजं गुण गोपाल लालके दुष्ट वादते डरिए ॥
त्रिविध दोष हरि ही कालिन्द्री नेक कृपा करि डरिये ।
गोविन्द सदा इहे वर मागूं तुम्हरे चरण अनुसरिये ॥

५३

श्रीयमुना जी अधम उद्धारणी मैं जानी ।
गोधन सङ्ग श्यामघन सुन्दर तीर त्रिभङ्गी दानी ॥
गङ्गाचरण परशते पावन हर शिर चिकुर समानो ।
सात समुद्र भेदि यमभगिनी हरि नख शिख लपटानी ॥
पालिङ्कन चुम्बन रस विलसत प्रेमपुञ्ज ठकुरानो ।
गोविन्द प्रभु रवितनया प्यारी भक्ति-मुक्तिको खानो ॥

५४

श्रीयमुना जी तिहारो दर्श हीं पाजं ।
श्रीगोवर्द्धन श्रीवृन्दावन व्रजरज अङ्ग लगाजं ॥
दिन दश पांच रहं श्रीगोकुल ठकुराणी घाट न्हाजं ।
दासन ऊपर करो कृपा निज सन्तनके सङ्ग आजं ॥

५५

श्रीयमुना जी पतित पावन कखो ।
प्रथम ही जब दर्श दीन्हों सकल पाप छु हखो ॥
भुज तरङ्गन स्पर्श कीन्हों पयपान दे मुख भखो ।
नाम लेत हि गई दुर्मति कृष्ण-रस-वश तखो ॥
गोपकन्या कियो मज्जन लाल गिरिधर वखो ।
सूर श्रीगोपाल निरखत सकल कारज सखो ॥

५६

श्रीयमुना जी पतित पावनकरण ।
प्रथम ही जाको दर्श पायो कीटि कलिमलहरण ॥
पैठत ही भुज तरङ्ग परशत मिटत जियकी जरन ।
नाम उचरत शङ्खवाणी बुद्धि पोषण भरण ॥

उपजे उग्र वैराग जाको खैचि लावत शरण ।
सूर हरिको भक्तिदाता विश्वतारणतरण ॥

५७

जगत्में श्रीयमुना जी परम कृपाल ।
विनती करत तुरत सुनि लोन्हीं भई हैं मोपे दयाल ॥
जो कोऊ मज्जन करत निरन्तर ताते डरत यमकाल ।
व्रजपतिको प्यारी कालिन्द्री सुमिरत होत निहाल ॥

अथ रामके पद

गाजं रसिक नट भूपाल गुण अनन्त न पार
कमलनयन प्रिय यशोदा दुलारे ।
प्रकट पुरुष सार पृथ्वीतल हरे भार जानत महिमा
जाके डर हि उरग हारे ॥
रामकलो एक तार नाचे अमोघ विहार कालिन्द्री
पुलिन सखी लोचन निहारे ।
उत्तम भूषण धार तन लेपि घनसार वृन्दावन
चन्द्र चहुं दिशि उजियारे ॥
मोहन नन्दकुमार अङ्ग-अङ्ग सुकुमार गिरिवरधर
यश तिलोक विस्तारे ।
उभय कर उदार व्रजभामिनी शृङ्गार
कृष्णदास प्रभु हरि सर्वस्व दातारे ॥

२

रासरस गोविन्द करत विहार ।
सूरसुताके पुलिन रम्यमें फूले कुन्दमन्दार ॥
अद्भुत शतदल विकसित कीमल मुकुलित
कुमुद कङ्कार ।
मलय पौन बहे शारद पूरण चन्द्र मधुप भङ्गार ॥
सुघराई सङ्गोत कलानिधि मोहन नन्दकुमार ।
व्रजभामिनी सङ्ग प्रमुदित नाचत तन चर्चित घनसार ॥
उभय स्वरूप शुभगता सीमा कोककला सुखसार ।
कृष्णदास स्वामी गिरिधर श्रिय पहरे रसमय हार ॥

३

गोविन्द करत मोहन गान ।
सप्तसुर गतिभेद मिलवत वेषु सुरति दंधान ॥

तराणजा कर लहर विरचित पुलिन केलि बंधान ।
शरत् रजनो विमल उडपति मलय पौन सुठान ॥
राग वारि समुद्र ताण्डव नाट्य कला निधान ।
व्रजवधु सङ्ग मुदित नाचत लेत अवधर तान ॥
वशोक्त गण सिद्ध सुरगण थकित व्याम विमान ।
क्षणदास विलास रस गिरिधरण सब गुण जान ॥

४

मृत्युत मोहन रसिक सखन सहित अग्र ता
तत्तथै तत थै तत्ता ।

मृदङ्ग ध्रमु ध्रमु ताल उपङ्ग मिलि श्रुति देत
मधुप मधुमत्ता ॥

टिपारो शिर पोत अति लाल काकनी बनी किङ्किणी
भ्रिनि भ्रिनि गति लेत गावत सुरसप्ता ।

गोविन्द प्रभु गापवालक जय-जय करत प्रेम अनुरक्ता ॥

५

रहो मोहि श्रौवल्लभ गृह भावे ।
सुनि मैया तू मो डर माग्वन दूध दही जा छिपावे ॥
तू तो करुण कृपण कहा कहं नित उठि मोहि
खिभावे ।

मेरे प्राण जोवन धन गोरस मोति दूर दुरावे ॥
खीर खांड पकवान विविध ले प्रात हि
माहि जगावे ।

तेल सुगन्ध लगाइ प्राति सों तात नीर नहवावे ॥
भूषण वसन विप्रध मन भाए पलटि-पलटि पहिरावे ।
नयना आजि तिलक मृगमद करि दर्पण मोहि
दिखावे ॥

षट् रस व्यञ्जन माहि जेवावे हित सों बीरा खवावे ।
भंवरा चकई विविध खिलौना ले करि मोहि खिलावे ॥
विविध कुसुम अपने कर गुहि दी ले माला उर लावे ।
सुखद पर्यङ्क संवारि मृदुल अति तापर मोहि
सुवावे ॥

डोल भुलावे रथ बैठावे हिंडारा पलना भुलावे ।
चट्टु वसन्त जानि जिय अपने ले सुरङ्ग छिरकावे ॥

जन्म दिवस आवत जब मेरो आंगन चौक पुरावे ।
बाजे बहुविधि हारे बाजे वन्दनवार, बंधावे ॥
मेरे गुण गुणि जनपै मोको सप्त सुरूपि जो सुनावे ।
हरदो दूर्वाक्षत दधि कुङ्कुम मङ्गल कलस भरावे ॥
धेनु दिवावे हिजजनका मापै शुभग अशोष पढ़ावे ।
केतिक बात कहौ हौं हितको मापै कहिय न आवे ॥
मेरे प्रादुर्भाव दिवस दिन आनन्द उर न समावे ।
नव दिन नए भोग करि मोको हित सों
भोग लगावे ॥

घसि गुलाबके नीर सुचन्दन ले कपूर सों वसावे ।
शीतल वारि वयारि अति शीतल दे मेवा मोहिं
रिभावे ॥

शीतल नीर सुगन्ध सुवासित करि अधिवामन लावे ।
भरि भरि जन जनाय शोस पर मोतन ताप मिटावे ॥
मेरे लिये पवित्रा राखी अति सुन्दर जो बनावे ।
सबै भांति प्रीति व्रजजनको आपे करि जो सिखावे ॥
दशमी विजय जानि रघुवरका जब अङ्कुर शोस धरावे ।
बहुविधिपाक संवारि मोहि हित मणिदोपदान हो
दिवावे ॥

शरत् पूर्णिमा रास दिन मेरो नटवर वेष बनावे ।
मोर मुकट पोताम्बर काकनी सुरलो करहि गहावे ॥
सुरभी वरद न्योति कुहकी निशि पुनि पुनि लाइ
लहावे ॥
सुरपति मानभङ्ग प्रतिपद तब गो गिरिराज पुजावे ॥
कार्तिक शुक्ल एकादशीके दिन कुञ्ज महल
जो बनावे ।

पाट सुरङ्ग वसन पहिरावत प्रबोधनो पर्व मनावे ॥
अति मन्द कर्म जड़ कलियुग जन वृथा जन्म गंवावे ।
रसिक कहे श्रौवल्लभ करुणा विन इह फल कबहं
न पावे ॥

रामकली—चर्वरी

कुंवरि राधिका तव सकल सौभाग्य सोमा या वदन
पर कोटि शत चन्द्र वारो ॥

खञ्जन कुरङ्ग शतकोटि नयननि ऊपर वारने करत
जियमें विचारों ॥
कदली शतकोटि जङ्गन ऊपर सिंह शतकोटि कटि
पर न्योछावर उतारों ।
मत्त गज कोटि शत चाल पर कुम्भ शतकोटि इन
कुचन पर वारि डारों ॥
कीर शतकोटि नासा ऊपर कुन्द शत कोटि दशननि
ऊपर कहि न पारों ।
पक्क कन्दूर वन्धूक शतकोटि अधरनि ऊपर वारि
रुचि गर्व टारों ॥
नाग शतकोटि वेणी ऊपर कपोत शतकोटि
श्रीवा पर वारि दूरि सारों ।
कमल शतकोटि कर युगल पर वारन
नाहिन काउ लोक उपमा जु धारं ॥
दासकुम्भन स्वामिनो सुनख-शिख अङ्ग अद्भुत
सुठान कर्हा लगि संभारों ।
लाल गिरिवरधरण कहत मांछि तोलों सुख
जोली वह रूप क्षण क्षण निहारों ॥
अथ मङ्गलारती
मङ्गलं मङ्गलं ब्रजभुवि मङ्गलं ।
मङ्गलमिह आनन्द्यशोदा नाम सुकोर्त्तनमं-
तद्रुचरोत्सङ्ग सुलालित पालितरूपं ॥
श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुति सारं नाम स्मार्त्तजनाशयतापा-
पहमिति मङ्गलरावं ।
ब्रजसुन्दरो वयस्य सुरभीवृन्द सृगीगणं निरूपम-
भावामङ्गल सिन्धुचयाः ॥
मङ्गलमीषत् स्मितयुतमीक्षण भाषणमुन्नत
नासापुट गत मुक्ताफल चलनं ।
कीमल चलदङ्गुलिदल सङ्गत वेणु निनाद
विमोहित वृन्दावन भुवि जाता ॥
मङ्गलमखिलं गोपी शितुरति मन्यरगति
विभ्रम मोहति रासस्थित गानं ।
त्वं जय सततं गोवर्द्धनधर पालय निज दासान् ॥

१
भारती कीजे श्यामसुन्दरको ।
नन्दकुमार राधिका वरको ॥
भक्ति करि दीप प्रेम करि बातो ।
साधु सङ्गति करि अनु दिन-रातो ॥
भारति ब्रजयुवती मन भावे ।
श्याम लीला हितकरि हरिवंश गावे ॥
२
भारती कीजे सुन्दर वरकी ।
नन्दकिशोर जयोशानन्दन नागर नवल
ताप तन हरकी ॥
नव विशाल मृदु हास मनोहर अरण सुधा
सुख मोहन करकी ।
विहारोदास लोचन चक्रो नित अंश प्रिया
भुजधरकी ॥

रामकली—चरंती

शुभग श्यामकं सङ्ग राधिका विराजे ।
नयन आलस्य भरी सकल निशा सुख करो
कण्ठ हरि भुज धरी काम नाजे ॥
माणिक-कञ्चनतनो पीक दृग सोसनो अति ही
रसमें सनो रूप भाजे ।
श्रीत स्वामी गिरिधरणके मन वसो मन ही मन
हंसो सुख दियो भाजे ॥
३
हारि मानी नाथ अम्बर दीजे ।
नन्दनन्दन कुंवर रसिकवर मनहरण सुनहु
गिरिवरधरण नीति कोजे ॥
सकल ब्रज नागरो दासी तुम्हरो सदा तन मांभ
शीत अति होत भीजे ।
श्रीत स्वामी अमित गुणगणनि आगरे विनती
करति सबे मानि लोजे ॥
४
राधिका श्यामसुन्दर की प्यारी ।

नखशिख अङ्ग अनूप विराजत कोटि चन्द्र द्युतिवारी ॥
एक क्षण सङ्ग न छाड़त मोहन निरखि निरखि
वलिहारी ।

श्रीतस्वामी गिरिधर वश जाके सो वृषभानु दुलारी ॥

जगावति अपने सुतकी रानी ।
चठो मेरे लाल मनोहर सुन्दर कहि कहि मधुरो वानी ॥
माखन मिथी और मिठाई दूध मलाई आनी ।
हृगन भगन तुम करहु कलेज मेरे सब सुखदानी ॥
जननी वचन सुनि सुरत उठे हरि कहत बात
सुतरानी ।

नन्ददास कीन्हो वलिहारी यशुमति मन हर्षानी ॥

करत कलेज मोहन लाल ।
माखन मिथी दूध मलाई मेवा परम रमाल ॥
दधि ओदन पकवान मिठाई खात खवावत ग्वाल ।
श्रीतस्वामी वन गाय चरावन चले लटकि पशुपाल ॥

नव कुंवर चक्रचूड़ा नृपति सांवरो राधिके
तरुणि मन पदरानी ।

शेष गृह आदि वैकुण्ठ पर्यन्त लो लोक थाने
तव जु राजधानी ॥

मेघ भूप्यन कोटि बाग सींचत जहां सुक्ति चारो
भरत पानी ।

सूर्य-शशि पहरुवा पौन परजन्य इन्द्र चरणदासी
भाट निगम वानी ॥

धर्म कीतवाल शुकसूत नारद चारु बाल
सनकादि चर चारि ज्ञानी ।

सस्य गण पीरिया काल बहुवा जहां डांडिये
काम जन सुकृत निसानी ॥

नील मर्कत धरे कुञ्ज कुसुमित महल मध्य
कामनीयसे पठानी ।

पल न विकुरत दोज जात नहीं तहां कोज व्यास
महल नै लिये पौकदानो ॥

भली वृषभानु जानकी बेटो ।

निविड़ निकुञ्ज कुसुम पुञ्जनिपर श्याम वाम
अङ्ग लेटी ॥

रति निशि जागो सोवत भोर किशोर कुंवरि
गुजरेटी ।

पियके हियमें जिय ज्यों राजत नाहु वाहु बल भेटो ॥
नयननिकी सैननि कल मानो मनुमथ आमिष खेटो ।
लोभीलाल व्यासकी स्वामिनी कञ्चन राशि समेटो ॥

दधि मर्याति नन्द नरेन्द्र राणो करति सुत गुणगान ।
नील नोरद अङ्ग दिव्य दुकूलवर परिधान ॥

नैति कर्षति हर्ष धरकति वलय कङ्कण पान ।
स्वेदकणगण वदन विधु पर सुधाविन्दु समान ॥
केश कुसुमनि करत मणि ताटङ्क भलकनि कान ।
पयोधर पय श्रवत चातक कृष्णपति निधरान ॥
सहस आनन कहि सके नहीं व्यास भाग वखान ।
जगत् वन्दत मात पित्तनि गदाधर धरि ध्यान ॥

खञ्जरोट मोहे अलिकुल मोहे अखुजदल मोहे
नयननि ।

श्रीभगता मृग शावक मोहे मीन मांहे जल सैननि ॥
सुकता मोहे मर्कत मोहे विद्रुम मोहे रस ऐननि ।
प्रताप बल उड़राज मोहे नटवर मांहे गति नयननि ॥
आलस बलित ललित भुव पल्लव वल्लभपति

सुत युत चैननि ।
वलि कृष्णदास आश परिपूरण गिरिधर मोहे
सह सैननि ॥

नमो तरणितनया परम पुनीत जगपावनो कृष्ण
मनभावनी रुचिर नामा ।

अखिल सुखदायिनी सर्वसिद्धिहेतु श्रीराधिका-

रमण रति करण श्यामा ॥

विमल जल सुमन नव काननामोद युत पुलिन

अति रम्य प्रिय व्रजकिशोरा ।

गोप गोपी नवल प्रेम रति वन्दिता तट मुदित

रहत जैसे चकोरा ॥

लहरि भांवरि ललित तालुका शुभग व्रजबालव्रत

पूरणा रास फलदा ।

ललित गिरिधरण प्रिय कलिन्दनन्दिनी निकट

कृष्णदाम विहरत प्रबलदा ॥

११

राधे ये टङ्ग हैं रो तेरे ।

वैसे हाल मथत दधि कौन्हें हरि मनो लिखे चितेरे ॥

तेरो मुख देखत शशि लाज और कहो क्यों बांचे ।

नयना तेरे जलज जात हैं खञ्जन ते अति नाचे ॥

अपलाते चमकति अति प्यारी कहा करेगो श्यामहि ।

सुनहु सूर ऐसे दिन खोवति काज नहीं तेरे धामहि ॥

१२

दूध दोहनो ले रो मेया ।

दाज टेरत सुनि मैं आजं तब लो करि विधि घैया ॥

मुरली मुकुट पीताम्बर दे मोहि ले आई महतारी ।

मुकुट धखो शिर कटि पीताम्बर मुरली

कर लई धारी ॥

राधे राधे कहि मुरलीमें खरिकाहि लई बुलाई ।

सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसा बुद्धि उपाई ॥

१३

कुंवरि कछो मैं जाति महरि घर ।

प्रात ही आई खरिका दुहावन कहति दोहनो लेकर ॥

तव खरिकाहि कोज ग्वाल गये नहिं तिहि कारण

व्रज आई ।

जो देखों तो अजिर हि बैठे गैया दुहत कन्हाई ॥

तनक दोहनो तनक दुहत मोहि देखत रुचि लागी ।

तनक राधिका तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागो ॥

१४

हरि सों धेनु दुहावति प्यारी ।

करति मनोरथ पूरण मन हृषभानु महरकी वारी ॥

दूधधार मुख पर छवि लागत सो उपमा अति भारी ।

मानो चन्द्र कलङ्कहि धोवत जहां तहां बुन्द सुधारी ॥

हाव भाव रस मग्न हैं दोज छवि निरखति

लखितारी ।

गो दोहन सुख करत सूर प्रभु तोनहु भुवन कहारी ॥

१५

नन्दनन्दन एक बुद्धि उपाई ।

जे-जे सखा प्रकृतके जानि ते सब लये बुलाई ॥

सुबल सुदामा शोदामा मिलि और महर सुत प्राये ।

जा कछु मन्त्र हृदयमें हरि कौन्हों ग्वालनि प्रकट

सुनाये ॥

व्रज-युवती नित प्रति दधि बेचन वन वन मधुरा जाती ।

राधा चन्द्रावलि लनितादिक बहु तरुणी एक भांती ॥

कालिन्दीतट कालि प्रात ही द्रुम चढ़ि रहो लुकाई ।

गोरस ले जब ही सब आवें मारग रोकहु जाई ॥

भनो बुद्धि यह रचो कन्हाई सखनि कछो सुख पाई ।

सूरदास प्रभु प्रीति हृदयको सब मन गये जमाई ॥

१६

प्रात हि उठी गोप-कुमारी ।

परस्पर बोल जहां तहां यह सुनो वनवारि ॥

प्रथम हो उठि सखा प्राये नन्दके दरवार ।

अःइये उठिके कन्हाई कछो बारम्बार ॥

ग्वालटेर सुनत यशोदा कुंवर दियो जगाइ ।

रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाइ ॥

मुकुट शिर कटि पीत अम्बर मुरली लोन्हों हाथ ।

सूर प्रभु कालिन्दी तट गये सखा लोन्हों साथ ॥

१७

भली करो उठि प्रात ही प्राये ।

मै जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहि

बोलाये ॥

अब आवति हूँ है दधि लोन्हे घर घरतें ब्रजनारी ।
हंसै सबे करतारी दै-दै आनन्द कौतुक भारी ॥
प्रकृति प्रकृतिके जे सब राखे मझा पांच हजार ।
और पठाइ दिये सूरज प्रभु जे-जे अति हो कुमार ॥

१८

कहा हम हिं रिस करत कन्हाई ।
यह रिस जाइ करी मथुरा पर जहां है कंस कसाई ॥
हम अब कहा जाइ गोहरावें वसति तुम्हारे गाऊं ।
ऐसे ज्ञान करन लोगनके कौन रहे येहि ठाऊं ॥
अपन हो घरके तुम राजा सबको राजा कंस ।
सूर श्याम हम देखन बाढ़े अब सीखे एगंस ॥

१९

प्यारी पीताम्बर उर भटक्यो ।
हरि तोरी मांतिनकी माला कछु गर कछु
कर लटक्यो ॥
ढीळ्यो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटिफेट ।
आपु श्याम रिस करि अङ्गभ भरि भई प्रेमकौ भेट ॥
युवती न घेर लियो हरिका तब भरि भरि धरि
अङ्गवारि ।

सखा परस्पर देखत ठाढ़े हंसत देत किलकारि ॥
हांक दियो करि नन्द दोहाई आय गये सब खाल ॥
सूर श्याम को जानति नाहीं ढोठ भई है बाल ॥

२०

हंसत सख निसें कहत कन्हाई ।
मेयाको बाबाको दाज तृकी सोंह दिवाई ॥
कहति काहे हंसि हेख्यो काहे भौह सकोख्यो ।
यह अश्चर्य देखो तुम इनको कब हम वदन मरोख्यो ॥
ऐसो बातनि सोंह दिवावति अधिक हंसो
मोहे आवति ।
सूर श्याम कहि श्रीदामा सौं तुम काहे न
समुभावति ॥

२१

यह कहि उठे नन्दकुमार ।
कहा ठगी सी रही बाला पखो कौन विचार ॥

दानको कछु कियो लेखी रहो जहां तहां सोचि ।
प्रकट करि हमको सुनावहु मेटि जोरो दोचि ॥
बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांभु सकार ।
सूर ऐसो कौन जो पुनि तुम हि रोकनहार ॥

२२

राधा सौं माखन मांगत ।
और निके मटुकिन को खायो तुम्हरो कंसो लागत ॥
ले आई वृषभानुसुता हंसि सख लवना है मेरो ।
ले दोन्ही अपन कर हरि मुख खात अल्प हंसि हेरो ॥
सब हिनतें मोठो दधि है यह मधुरे कछो सुनाई ।
सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रजललना मन भाई ॥

२३

धन्य बड़ भागिना ब्रजनारी ।
खात ले दधि दूध माखन प्रकट जहां सुरारि ॥
नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि ।
शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि ॥
देखि सुख ब्रजनारि हरि सङ्ग अमर रहे भुलाइ ।
सूर प्रभुके चरित अगणित वरणि का पै जाइ ॥

२४

ग्वारिनो नन्द द्वारे नन्द गेह बूझै ।
इन हो तें जाति उत उत हो तें फिरति इत निकट हूँ
जाति नहीं नेक सुझै ॥
भई बेहाल ब्रजबाल नन्दलाल हित अर्पि तनमन
सबै तिनहिं दीन्हों ।
लोकलज्जा तजो लाज देखत लजो श्यामका भजो
कछु डर न कीन्हों ॥
भूलि गयो दधिनाम कहति ले हो श्याम नहीं सुधि
धाम कहं है के नाहीं ।
सूर प्रभुको मिलो मेटि भलो अनभलो चूनहरदी
रङ्ग देह काहीं ॥

२५

तब एक सखी प्रीतम कहति ।
प्रेम ऐसे प्रकट कीन्हों धीर काहे न गहति ॥

वज धरनि उपहास जहां तहां समुभि

मन किनि रहति ।

बात मेरी सुनति नाहीं न कहति निन्दा सहति ॥

मातपित गुरुजन नि जान्यो भलो खाई महति ।

सूर प्रभुको आन वित धरि अति हि काहे वहति ॥

२६

एक गाँवको वास धीरज कैसे के धरों ।

लोचन मधुप अटक नहि मानत यद्यपि यत्न करों ॥

वे ए ही मार्ग नितप्रति आवत हैं हों दधि ले निकरों ।

पुलकित रोम रोम गद्गद स्वर आनन्द उमगि भरों ॥

पल अन्तर चलि जात कल्पवर विरहानल जरी ।

सूर सकुचि कुलकानि कहीं लागि आरज पथहि डरों ॥

२७

मेरो मन हरि चितवनि अरुभानो ।

फिरत कमल द्वार ह्वे निकसे करत शृङ्गार भुलानो ॥

अरुण अधर दशन नि द्युति राजत जाह्नव

सुरि सुसकानो ।

उदधि तनय सुत पांति कमलके वन्दन भुरक माने ॥

यहि वस मग्न रहति निशिवासर हरि तजि

और न जानो ।

सूरदास चित भङ्ग होत क्यों जो जिहि रूप समानो ॥

२८

हैं सङ्ग सांवरके जे हों ।

होनो होय हाय सो अब ही यश अपयश काह्न न

डरै हों ॥

कहा रिसाइ करे कोउ मेरो कहु जो कहे

प्राण तजि दै हों ।

दै हों त्यागि राखि हों यह व्रत हरिरति वोज बहुरि

कब पै हों ॥

का यह सूर अजिर अबनो तनु तजि आकाश प्रिय

भवन समै हों ।

कायह ब्रजवासी क्रीड़ा जल भजि नन्दनन्दन सब

सुख ले हों ॥

२९

कबकी मही लिये शिर डोले ।

भूठे ही इत-उत फिरि आवत यहां आनि पै बोले ॥

मंह लों भरी मथनिया तेरो तोहि रटत भई सांभ ।

जानति हों गोरसको लेवा याहो वाखरि सांभ ॥

इत तो आइ बात सुनि मेरो कहे विलग जिनि जाने ।

तेरे घरमें तुही सगानो और बेचि नहिं जाने ॥

भ्रमन हि भगत भग्नि गई ग्वारिनि विकल भई

बेडाल ।

सूरदास प्रभु अन्तरयामी आइ मिले गोपाल ॥

३०

भई मन माधवकी अवसेरि ।

मान धरे मुग्ध चिनवति ठाढ़ो ज्वाब न आवे फेरि ॥

तव अकुलाइ चलो उठि वनको बोले सुनन न टेरि ।

विरह विवश चहुधां भरमति श्याम कहां कियो भेरि ॥

आवहु वेगि मिलहु नन्दनन्दन दानन करो निवेरि ।

सूरश्याम अङ्गमें भरि लौहां दूर किया दुःख डेरि ॥

३१

यह कहि मोन सोध्यो ग्वारि ।

श्याम रस घट पूरि उकलित बहुत धरो संभारि ॥

वैसे ही ठङ्ग बहुरि आई देहदशा विसारि ।

लेहु रो कोउ नन्दनन्दन कहे पुकारि पुकारि ॥

सखो सों तव कहति तू रो का कहां को नारि ।

नन्दके घर जाऊं कित ह्वे जहां है वनवारि ॥

देखि वाकी चकित भई सखि विकल भ्रम गहमारि ।

सूर श्याम हि कहि सुनाऊं गये शिर कहा डारि ॥

३२

कहा कहत है री माता मोसों ।

ऐसे वहि गई को श्याममङ्ग फिरि जो वृथा रिस

करति कहा कहुं तोमों ॥

कही कोने बात बोलि धो तेहि मेरे आगे कहे

ताहि देखों ।

तात रिस करत भ्राता कहे मारि है भित्ति विन चित्र

सुम करत रखों ॥

तुमहि रिस करति कहु कहा मोहि मारि हो धन्य
पिता माता भ्राता तुम ही ।
ऐसो लायक नन्दमहरको सुत भयो तिनहि मोहि
कहति प्रभु सूर सुन ही ॥

२२

श्याम नग जानि हृदय सुरायो ।
चतुर वर नागरी महामणि लखि लियो प्रिय सखी
सङ्ग ताहि न जनायो ॥
कृपण ज्यो धरत धन ऐसे दृढ़ किया मन जननी सुनि
बात हंसि कण्ठ लायो ।
गांस दियो डारि कहि कुंवरि मेरो वारि सूर प्रभु
नाम भूठे उड़ायो ॥

२३

सङ्ग व्रजनाहि हरि राम कीन्हें ।
सर्बानकी आशा पृरण करी श्याम ले त्रियन प्रिय हेत
सुख मानि लोन्हें ॥
मेरि कलकानि मर्यादा विधि वेदकी त्यागि गृहनेह
सुनि वेणु धाई ।
सबी जय जय करी मन हि सबजे धरो शङ्क काह न
करो आप भाई ॥
ज्यो महामत्त गजदृथ करनि लिये कल सब फारि
डर काहु न मानो ।
सूर प्रभु नन्दसुत निदरि निशि रस करी नाग नर लोक
सुर सबे जानो ॥

२४

रैन रस रास सुख कहत वीता ।
भोर भये गये पावन यमुनाके सन्निह न्हात सुख करत
अति बढ़ा प्रीती ॥
एक एक मिलत हंसि एक हरि सङ्ग रमिक एक
जलमध्य एक तीर ठाढ़ो ।
एक एक डरति एक अङ्ग भरि ले चलति एक सुख
लरति अति नेह बाढ़ी ॥

काहु नहि डरति जलस्थल क्रोड़ा करति हरति
मन निदरि ज्यो कन्तनारी ।
सूरप्रभु श्यामाश्याम सङ्ग गोपिका मिठी तन साध भई
मग्न भारी ॥

२६

श्यामाश्याम शुभग यमुना जलनि भ्रमि करत विहार ।
पीतकमल इन्दोवर मानो भोर हि भये निहार ॥
श्रीराधा अम्बुज कर भरि-भरि छिरकति बारम्बार ।
कनकलता मकरन्द भरत मानो हालत पीन सञ्चार ॥
अतमी कुसुम कलेवर वन्दे प्रतिविम्बित मनोहार ।
ज्योति प्रकाश सुघनमं खेलत स्वाति सुमन आकार ॥
धाड धरे वृषभानु सुता हरि लोहे मकल शृङ्गार ।
विद्युत जलद सूर मानो विधु मिलि अरवत
सुधाको धार ॥

२७

रीमे श्याम नागरी रूप ।
तैसिये लट बगरी उरपर अरवत नीर अनूप ॥
अरवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार ।
मना उगिलत राहु अमृत कनकगिरिपर धार ॥
कञ्च परशत श्यामसुन्दर नागरी रस भाइ ।
सूर प्रभु तन काम व्याकुल गये मननि जनाइ ॥

२८

श्यामा श्याम अङ्गमं भरी ।
उरज उर परगाइ भुजसो भुजा गाढ़े धरो ॥
तुरत मन सुख मानि लोन्हें नारी तेहि रङ्ग ढरो ।
परस्पर दोउ करत क्रोड़ा राधिका नव हरी ॥
ऐसे हो सुख दिआ मोहन सबे आनन्द भरी ।
करति रङ्ग हिलार यमुना डेम आनन्द भरी ॥
राम निशि अम दूरि कोन्हें धन्य धन्य यह धरो ।
सूर प्रभु तट निकसि आये नारि सङ्ग सब खरो ॥

२९

कहा करो नीके करि हरिको रूप रेख नहि पावति ।
सङ्ग हि सङ्ग फिरति निशिवासर नयन निमेष
न लावति ॥

बंधी दृष्टि ज्यों गुड़ी डोरि वश पाछे लागी धावति ।
निकट भये म्भी ये छाया मोकों दुख उपजावति ॥
नखशिख निरखि निहारोइ चाहति मन मूरति
अति भावति ।

जानो नहीं कहाते निज छवि अङ्ग अङ्गमें आवति ॥
अपनो देह आपकी वैरनि दुरत न दुरे दुरावति ।
सूर श्यामसौ प्रीति निरन्तर अन्तर मोहि करावति ॥

४०

मैं मन बहुत भांति समुभांयो ।
कहा करों दर्शन रस अटक्यो बहुरि नहीं घट आयो ॥
इनि नयननके नह रूप रस उनमें आनि दुरायो ।
वरजत हो बेकाज सुपत ज्यां पलक्या जो न सिधायो ॥
लोक वेदकुल निदरि निडर ह्वं करत आपनो भायो ।
मुख छवि निरखि चौंधि निशि खग ज्यां हटि
आपुन पौ बंधायो ॥

हरिको दोष कहा कहि दोजे यह अपन बल धायो ।
अति विपरीत भई सुनि सजनी सूर सुमरि जो मदन
जगायो ॥

४१

राधा तैं हरिके रङ्ग राची ।
तोते और चतुर नहि काज बात कहं मैं सांचो ॥
तैं उनका मन नहीं चुरायो ऐसो है तू कांचो ।
हरि तेरो मन अब हि चुरायो प्रथम हि तू है नाचो ॥
तुम अरु श्याम एक हैं दोज बाकी नाहीं बाचो ।
सूर श्याम तेरे वश राधा कहत लोक मैं खाची ॥

४२

राधा हरि अनुराग भरो ।
गद्गद मुख वाणो परकाशति देह दशा विसरी ॥
कहति इहै मन हरि हरि ले गये ए ही परनि परी ।
लोक सकुच शङ्का नहि मानति श्याम हि रङ्ग टरो ॥
सखी सखी सां कहति बावरी ए हि हमको निदरी ।
सूरदास प्रभु सों रति मानी भुरई हम सिगरी ॥

४३

कुल की लाज कहां लीं करि हों ।
तुम आगे मैं कहीं न सांची अब काह नहि डरि हों ॥

लोग कुटुम्ब जगत्के जे कहियत पहिले सबहिं
निदरि हों ।
अब यह दुख सहि जात न मोपे विमुख वचन
सुनि मरि हों ॥
आप सुखी तो सब हीं कै है उनके सुख कदा मरि हों ।
सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि अब कैं हों कुछ लरि हों ॥

४४

सुता सों कहति वृषभानुधरनी ।
कहां तू राधिका भोरतें फिरति है तेरो गति मोपे
नहीं जाति वरनी ॥
तेरि मोती लरो तब गुप्त करि धरो कहूं एहि मिस
सकुचि रही सुख न बोले ।
मनो खञ्जन चपल चन्द्र फन्द परे उडत नहिं
ताहिते कहं न डोले ॥
कहा तेरो प्रकृति यरो है लाडिली अब होतें
कहा तू जात गोरी ।
सूर कहै जननी बोले नहीं आजु तू परसि
धरि हों आइ खात खीरो ॥

४५

राधा अति हि चतुर प्रवीण ।
कृष्ण को सुख दे चली गृह हंसगति कटि क्षीण ॥
हारके मिस यहां आई श्याममणिके काज ।
भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीव्रजराज ॥
गांठि अक्षर छारिके माती लरो लोन्हीं हाथ ।
सखी आवत देखि राधा लई ताको साथ ॥
युवति बूझति कहां नागरि निशि गई एक याम ।
सूर व्यारो कहि सुनयो मैं गई तेहि काम ॥

४६

जागिये प्राणपति रैन वीती ।
चन्द्रकी द्यति गई पहे पीरो भई सकुच नाहीं दई
अति हि भोती ॥
माता पिता बन्धु गुरुजन अब हि जानि हैं लखें
जिनि कहं यह लाज भारी ॥

सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहि
 घरे रहतीं सबे नारी ॥
 उठे मुसकाइ अकुलाइ अतुराइके निकसि गये
 श्याम व्रजनारि जानो ।
 सूर प्रभु नन्दनन्दन दशं दे गये निरखि एकटक
 रही पल भुलानो ॥

४७

राधा सखी मिलि मन भाई ।
 जवते इन सीं नेह लगाया बहुत भई चतुराई ॥
 और भई इतनी तुम को सखी गृह जनसो निटुराई ।
 काहको मन ही नहि आनति हमहुं सबनि विसराई ॥
 तुम हा कुशल कुशल हैं एज आप स्वार्थी भाई ।
 सूर परस्पर दम्पति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥

४८

यह सखी अब लो कहां दुराई ।
 इतं टिवस हम कब हूं न देखो अब जु कहां ते आई ॥
 त्रिभुवनको शोभा सब गुणनिधि है विधि एक उपाई ।
 विद्यमान वृषभानुनन्दिनी सहचरि सब दुखदाई ॥
 अपने मन तकि तकि तनु तौलति विविजन
 सुन्दरताई ।
 दुसह रूपकी राशि राधिका कही कौन पुर पाई ॥
 राचि रह्यो रस सुरति सूर दोउ निरखी नयन निकाई ।
 चीन्हे हं चलि जाहु कुञ्ज गृह काडि देहि चतुराई ॥

४९

ऐसी कुंवरि कहां तुम पाई ।
 राधा हतं नखशिख सुन्दरि अब लो कहां दुराई ॥
 काको नारि कौनको बेटो कौन गांवत आई ।
 देखी सुनी न व्रज-वृन्दावन सुधिवुधि हरति पराई ॥
 धन्य सुहाग भाग याको यह युवतिन के मन भाई ।
 सूरदास प्रभु हर्षि मिले हांस ले उर कण्ठ लगाई ॥

५०

नन्दनन्दन हंसे नागरो मुख चित हर्षि चन्द्रावली
 कण्ठ लाई ।

वामभुज रमणी दक्षिण भुजा सखी पर चले
 बलधाम सुख कहि न जाई ॥
 मनो विम्ब दामिनी बीच नवघन शुभंग देखि
 क्वि काम रति सहित लाजे ।
 किधो कचन लता बीच हि तमाल तरु भामिना
 बीच गिरिधर विराजे ॥
 गये गृहकुञ्ज अलि गुञ्ज सुमननि पुञ्ज देखि
 आनन्द भरे सूर स्वामी ।
 राधिकारमण युवतोरमण मनरमण निरखि क्वि
 होत मन काम कामी ॥

५१

मन तो हरि ही हाथ बिकानो ।
 निकासो मान गुमान सहित वह में यह होत
 न जानो ॥
 नयन नि साटि करो मिलि नयननि उनही सो
 रुचि मानो ।
 बहुत यत्न करि हीं पवि हारो फिरि इत को न
 फिरानो ॥
 सहज स्वभाव ठगौरी डारो शौस फिरत अवगानो ।
 सूरदास प्रभु रस वश गोपिनि विसरि गयो
 तनु ज्ञानो ॥

५२

लोचन भये श्यामके चेरं ।
 एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेरि न हरे ॥
 हा-हा करत परत हरिचरण नि ऐसे वग भये उनहीं ।
 उनको वदन त्रिलोकत निज-दिन मेरो कही न सुनहीं ॥
 ललित त्रिभङ्गी क्वि पर अटक फटक मोसो तोरी ।
 सूरदास यह मेरी कोन्को आपुन हरि सो जारो ॥

५३

श्याम रङ्ग रंगे नयन ।
 धाये कुटत नहीं यह कैसे हू मिले पधिलि हू में ॥
 ये गोधिनु हिं टेरत वहां ते मासो लन न देन ।
 सूरज प्रभुके सङ्ग सङ्ग डोभन नैक हुं करत न चैन ॥

५४

लाचन भृङ्ग कोषुरस पागे ।
 श्याम कमलपदसों अनुरागे ॥
 सकुच कानिवनबेली त्यागी ।
 चले उड़ाइ सुरति रति पागे ॥
 मुक्ति पराग रस हि इन चाखो ।
 भवसुख फूलरसहि इनि नाखा ॥
 इनते लोभी और न कोई ।
 जो पटतर दोजे कहि सोई ॥
 गये तब हितें फेरि न आये ।
 सूर श्याम वे गहि अटकाये ॥

५५

नयन भये वश मोहन ते ।
 ज्यों कुरङ्ग वश हीत नादके टरत नहीं ता गोहनते ॥
 ज्यों मधुकर वश कमल कोषके ज्यों वश चन्द्र चकोर ।
 तैसेइ ए वश भये श्यामके गुड़िआ वश ज्यों डोर ॥
 ज्यों वश खाती बुन्दन चातक ज्यों वश जलके मीन ।
 सूरज प्रभुके वश्य भये ए क्षण क्षण प्रति जु नवीन ॥

५६

नयना मान अपमान सहा ।
 अति अकुलाइ मिले दो वरजत यद्यपि कोटि कष्टो ॥
 जाको बानि परो सखी जैसे तैसी टेक रहो ।
 ज्यों मर्कट मूठो नहीं क्रांडत नलिनी सुवास गहो ॥
 जंम नोर प्रवाह समुद्रहिं मांभ बहो सो बहो ।
 सूरदास इन तैसिये कोन्हो फिरि मोतन न चहो ॥

५७

सजनी मोते नयन गये ।
 अब लों आश रहो आवनको हरिके अङ्ग छये ॥
 जबते कमलवदन उन दर्शा दिन-दिन और भये ।
 मिनै जाइ हरदो चूना ज्यों एक हि रङ्ग रये ॥
 मोकीं तजि भये आप स्वार्थी वा रस मत्त भये ।
 सूर श्यामके रूप समाने मानो बुन्द तये ॥

५८

पिय निरखत प्यारी हंसि दीन्हो ।

रींभी श्याम अङ्ग-अङ्ग निरखत प्यारो हंसि नागर
 उर लीन्हो ॥
 आलिङ्गन दे अधर दशन खण्डि कर गहि चिबुक
 उठावत ।
 नासा सी नासा ले जोरत नयन नयन परशावत ॥
 यहि अन्तर प्यारी उर निरखो भभकि भई
 तब न्यारी ।

सूर श्याम मोकीं दिखरावन उर लाये धरि प्यारो ॥

५९

श्याम नारिके विरह भरे ।
 कबहुंक बैठत कुञ्जद्रुम नि तर कबहुंक ताने
 रहत खरे ॥
 कबहुंक तनकी सुधि विसरावत कबहुंक
 तन सुधि आवत ।
 तब नागरिके गुणहि विचारत तेंद्र गुण
 गुणि गुणि गावत ॥

कहं मुकुट कहं मुरलो रहो गिरि कहं कटि पोत
 पिछोरो ।

सूर श्याम ऐसो गति भातर आई दूतिका गोरो ॥

६०

ठाढ़े नन्द द्वार गोपाल ।
 बोलि लीन्हें देखि ललिता सैन दे तत्काल ॥
 दंसत गये हरि गेह ताके वोउ न जानत और ।
 मिली हरि को लाइ उर भरि चापि कठिन कठोर ॥
 कहो मेरे धाम कबहुं क्यो न आवत श्याम ।
 सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइ है यहि याम ॥

६१

वाम सङ्ग श्याम तय याम जागे ।
 कोक विद्यानिपुण सकल गुणमें मपुण सुरति
 संग्राम जुगि नहीं भागे ॥
 अङ्ग आलस्य भरे नयन निद्रा ढरे नेक शय्या परे
 निशा वोतो ।
 सूर प्रभु नन्दसुत चले अकुलाइके गये ता धाम
 रस काम जौतो ॥

६२

आजु बनो प्रियरूप अगाध ।
पर उपकार श्याम तन धारो पुरवत सब मन साध ॥
धर्मनीति यह कहां पढ़ी जू ह्रम हं बात सुनावहु ।
कहो कहां काको सुख दीन्हों काहे न प्रकट
बतावहु ॥
धनि उपकार करत डोलत हो आजु बात यह जानी ।
सूर श्याम गिरिधर गुण नागर अङ्ग निरखि
पहंचानी ॥

६३

कहां हैं श्याम कहां गमन कीन्हों ।
कहां तुम कबहं दर्श देत नहिं धोखे गये
आइ हम मानि लीन्हों ॥
नयन आलस्य भरे चरण उग लरखरे कहा हो
डरेसे कहो मोसों ।
रेन कहुं वसे त्रिय कौन सी रसे हो उर करज
कसे सो कहो गोसों ॥
भले जू भले नन्दलाल वेज भली चरण जावक
पाग जिन हि रङ्गो ।
सूर प्रसु देखि अङ्ग अङ्ग वानक कुशल मैं रही
रोभि वह नारि चङ्गी ॥

६४

अणो वो बन्दीदा हाल न जाना ।
दर्श पियासे नयन विहारी मिलि महबूबा हुण
वलिहार लुभाना ॥
तोपै वारी जामी वो आव पिया रे मनदो आशा
पूजामी दर्श देखामो ।
वलिहारियांदा प्राण विहारी अरजु हमारो सुन
छिन जामो ॥
तैनु की परवा नेह लगाय न आय सांवल दरद बन्दी
दा हाल विहारिन सुन इनकी सलाह ।
वलिहारियां दे दिलन लगी तुभ दर्शनदी चाह ॥
पलकादे पड़े पाय घरी घरी जीव जिवाव विहारी ।

किसनू भाव पिया निरमोही अरजु हमारो ॥
हुसन तुसाड़ा दिल बिच वसिळां भीर न भावै प्यारी ।
वलिहारियां नू लग वो गया सांवल रूङ्ग करारो ॥
जिअरा मोरा रे निशिदिन अकुलार्थ विहारो
दर्शन विनि ।
गुरुजन डर बाहर कबहुं निकस न पाजें समुभि
समुभि वलिहारि रहों घर अरो देखे किनि ॥
नितदाना कर फेरा वो नन्ददे ।
वलिहारियां तैनु की सिखलाया लोग हंसै गुरुजन
बहुतेरा वो नन्ददे ॥
बैठे दम्पती रतिराजे कोटि वारो तन सुदेश अङ्ग
अङ्ग भूषण वसन पहिरे वरन वरन ।
तैसिये कुञ्ज मृदुल सरस रसपुञ्ज तहां करत अमर
गुञ्ज जहां दोउ मिलि करत बातें मधुर मधुर हसन
मानो लागे फूल भरन ॥
नील पीत पट दुकूल कालिन्द्रो कूल मदन मवास
कियो आस पास सखिसमूह गावत कलमधुर सुरन ।
रङ्ग राग जमि रञ्जो जात नाहि कापै कछो रीभि
रीभि छवि निहारि लेत वलिहारि राधामोहन दोज
मनके हरन ॥
कामकी रति पाय परत ।
जीति लोक लोकपति ब्रह्मादि इन्द्रादि सुर नर सिह
गन्धर्व नाग जीते अति मद बाढ़ि रञ्जो ताहुको मन
हासन हरत ॥
व्रजयुवती मिलि नाचत गावत रङ्ग उपजावत
केलि करत ।
वारो विहारी वलिहारी तिहारो सङ्ग राधा प्यारो
जियतें न टरत ॥
तिहारो लालबाल भीरे हाल समुभि न परत धो कहा ।
ज्यों-ज्यों सुधि आवत मदन जगावत अति दुख पावत
व्याकुल विरह महा ॥
गिनति वोती रेन तारे सुनि श्याम नयन हमारे पल न
पाये दीन भए हहा ।

जो ते जिवारो वलिहारो दर्श देखावो सुनी सेज लेत
देखो प्राण अहा ॥

क्यों वो सुनदा श्याम प्यारा मेंड़ी अरज ।
कि करा साड़ा वसन विहारो वलिहारो या मन
लगानी अपनी गरज ॥

तेड़ी वो आशा बंदिया ।
मेहर करी वो मिलि वलिहारियांनू इशक तु सांड़े
फंदिया ॥

सुरली बजाई क्यों रे तु औचक द्वार खड़ा कान्हा
मैनवाणसो तान रस भरो सोवत जगाई क्यों रे ।
भोर भावते गुरुजन मेते लाज गंवाई क्यों रे मो सूखे
हँसि वलिहारो अनोखे प्रीति लगाई क्यों रे ॥
नन्द दे निमाना यार बे सुनि वंशीवाले गल मैं परो ।
अरज हमारी सुन वलिहारो कीतक सिरपई मैं डरी ॥
पलुड़ा नू छेड़ बे मेड़ो पनियानू जादियां ।

आजिजु होइ या ब्रजमोहन तेड़े वलिहारियांदे
पायें परेदो सांड़े खांदियां ॥

लोगवा जागे क्योंकर आवो मितवा व्याकुल होत
सुरली सुनि जिअरा आन कान जब लागी ।
हियरा भरो उमंग अनुरागन लाज नहीं मोहि त्यागी
को यतन वलिहारो मिलनको जाछ' बड़ी भागे
मोहन रस पागे ॥

तंडेरे मैं वारी वारी जावां सुन प्यारी जीवन हमारी।
कुछ भवन देवी सुरसेवी वलिहारियांनू अनो
जिवामी तोहि मिल वो विहारो ॥

६५

आरति करत सकल सुर साधा ।
चिन्तत चरण मिटे दुख वाधा ॥
मनकरि मारुत नन्दनन्दन गावो ।
सन्मुख होत चारि फल पावो ॥
बाल अर्कको तेज विराजि ।
शोभा सिन्धु छत्र शिर छाजे ॥
सीताको सुधि अण में लाये ।

रावणके जिन गर्व नशाये ॥
महाबाहु बल विदित जगत पर ।
राक्षस कुल कम्पत जाके डर ॥
केशरिनन्दन कपिकुलनायक ।
मङ्गलकरण सन्त सुखदायक ॥
सीताराम भक्ति रति ताकी ।
लई वलिहारि चरण रज जाकी ॥

६६

और सबे सुख तजिये मन ब्रज वसिये ।
छाणनाम कल कीरति गावत प्रेमपन्थमें धसिये
योग यज्ञ व्रत ध्यान न आवत काहेको काया वसिये ॥
धर्म कर्म बहकाये बीरे कर्म कीच क्यों फंसिये ।
पुलिन पवित्र वलिहारि परश रज ले-ले शिर
धर वसिये ॥

६७

हथा मोह मेटो कि न रघुवर ।
मैं मेरो मायाको चरो भयो रहौं नाहीं यमके डर ॥
कपट कुचाल करौं हौं कर्मवश सूफत नहि तव
चरण कल्पतर ।
जानकीमनभावन सुखसीमा करुणासिन्धु अयोध्या-
नागर ॥
जिन सुख पायो दशरथ सुत गायो गयो पारभवसिन्धु
अगम तर ।
इह दीन जानि जन अपनो सुनो वलिहारो कपालु
धनुषधर ॥

६८

आनि जिवामी मेड़ा जिया ।
नन्दनन्दन प्यारे लाल दिलीदी दारु बतलामी ॥
जो तू सानू छाड़ि पइती विरह दे हाथ विकामो ।
बूझे नौ हाल असाड़ानी भांवल बलिहारियांदे
घर आमी ॥
श्याम महीबत तेरो वो मन लोता नौ महरदे ।

सुरली बजावदां गावदांनो मोहन हत वलिकरि
गयो फेरदे ॥

६६

बटोही जागु रे कहा सोवै ।
शिर पर काल चढ़ा शर साधे श्वास श्वास भरि क्यो
दिन खोवै ॥

श्रीगोपोजनवल्लभाय नमः ।

विभास—तिताना

जागो जागो हो गोपाल ।
नाहि न अति साइये भयो प्रात परम शुचि काल ॥
फिरि फिरि जात निरखि सुख क्षण क्षण सब
गोपनके बाल ।
विनु विकसो मनु कमलकोषते ते मधुकरको माल ॥
जो तुम मोहि न पत्याउ सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल ।
तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा
नयनविशाल ॥

२

जागिये ब्रजराज कुंवर कमलकोष फूले ।
कुसुदिनिमुख सकुचि रहो भृङ्ग लता भूले ॥
तमचर खग रोर सुनिये बोलत वन राई ।
रांभत गो मधुर नाद वहरा हित धाई ॥
विधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रजनारौ ।
सूर श्रीगोपाल उठे परम मङ्गलकारौ ॥

३

प्रात भयो कृष्ण राजीवलोचन ।
सङ्ग सखा ठाढ़े गो मीचन ॥
विकसित कमल रटत अलिश्रेणी ।
उठो हो गोपाल गुह्रं तरो वेणी ॥
खीर खांड छत भोजन कीजे ।
सद्य दूध धोरी को पीजे ॥
सुत हित जानि जगावे नन्दरानो ।
परमानन्द प्रभु सब सुखदानो ॥

४

लाले नाहि न जगाय सकति सुनि सुवात सजनो ।
अपुने जान अजहुं कान मानत सुखरञ्जनी ॥
जब जब हो निकट जाउं रहत लागि लोभा ।
तनकी सुधि विसरि गई देखत मुखशोभा ॥
वचननको बहुत करत सोचत जिय ठाढ़ी ।
नयन नयन विचार परो निरखत रुचि बाढ़ी ॥
इहि विधि वदनारविन्दयुग्यशोमति जिय भावे ।
सूरदास सुखकी राशि कहत न बनि आवे ॥

५

भयो पाकलो पहर ।
कान्ह कान्ह कहि टेरन लागे बाबा नन्द महर ॥
ब्रह्ममुहूर्त भयो सांवरे राभन लागी धेन ।
उठे बलभद्र वक्रवा ढोलन गोपन पूरे वेन ॥
गोपवधू दधि मन्यन लागीं विप्र पढ़न लागी दंद ।
परमानन्ददासको ठाकुर गोकुलके दुख छेद ॥

६

प्रात समय उठि सोवत सुत को वदन उघाखो नन्द ।
रहि न सके अतिशय अकुलाने नयन निशाके इन्द ॥
शुभ्र सेज मधितें मुख निकसो गयो तिमिर मिटि मन्द ।
मानहु पर्यानिधि मथत फेन फटि दई है दिखाई चन्द ॥
सुनत चकोर शब्द उठि धाए सखोजन सखा सुकन्द ।
रहो न सुधि शरीर धीर मनु पिवत किरण गकरन्द ॥

७

भोर भयो जागो नन्दनन्द ।
सङ्ग सखा ठाढ़े जगवन्द ॥
सुरभि न पर्यहित वत्स पिवाए ।
पक्षीयूथ दशहु दिश धाए ॥
सुनि सर तक्यो तमचर सुर हाखो ।
शिशिल धनुष रतिपति गहि डाखो ॥
निशा घटो रविरथरुचि राजी ।
चन्द्र मालन चकई रति साजो ॥
कुसुदिनी सकुचो वारिज फूले ।

गुञ्जत फिरत अलोगण टूले ॥
दर्शन देहु मुदित नरनारी ।
सुरदास प्रभु देव सुरारो ॥

भोर भयो नन्द यशोदा जो बोलत जागो जागो
मेरे गिरिधर लाल ।

रत्न जटित सिंहासन पर बैठो देखन को आईं
ब्रजबाल ॥

नियरे जाइ सुपेती खैचत बहुखो हरि टांपत
वदन रसाल ।

दूध दही अरु माखन मेवा भामिनि भरि लाईं
है थाल ॥

तब हरि हर्षि गोद उठि बैठे करत कलेज तिलक
दे भाल ।

देबोरा आरति वारत हैं चतुर्भुज गावत गीत रसाल ॥

जागो कृष्ण यशोदा जू बोले इह अवसर कोउ
सोवे हो ।

गावत गुण गोपाल ग्वालिनी हर्षित दही
विलोवे हो ॥

गोदोहनध्वनि पूरि रह्यो ब्रज गोपी दीप संजोवे हो ।

सुरभी हंकर वक्ररुआ जागी अनिमिष मारग जोवे हो ॥

वेणु मधुर ध्वनि महुवर बाजत बेंत गड़े कर सेली हो ।

अपनी गाय सब ग्वाल दुहत हैं तुम्हरी गाय
अकेली हो ॥

जागे कृष्ण जगत्के जीवन अरुण नयन मुख सोहे हो ।

गोविन्द प्रभु जो दुहत हैं धोरी ब्रज गोपवधू मन
सोहे हो ॥

चिरइया चुह चुहानी सुनि चकईकी वाणी
कहति यशोदा राणी जागो मेरे लाला ।

रविकी किरण जानी कुमुदनी सकुचानी कमल
विकसानी दधि मथे बाला ॥

सुबल ओदामा तोको उज्वल वसन लिये
हारे ठाढ़े टेरत बाल गोपाला ।
नन्ददास वलिहारी उठि बंठो गिरिधारी सब
मुख देख्यो चाहे लोचनविशाला ॥

११
उठ गोपाल भयो प्रात देखूं मुख तेरो ।
पाछे गृहकार्य करों नित्यनेम मेरो ॥
विद्वित निशा अरुण दिशा प्रकट भयो भान ।
कमलमेके भ्रमर उड़े जागिये भगवान ॥

वन्दोजन हार ठाढ़े करत हैं केवार ।
मधुर वैन गान करत लीला अवतार ॥
परमानन्द स्वामी दयालु जगत् मङ्गलरूप ।
वेद पुराण गावत हैं महिमा अनूप ॥

१२
प्रात समय भयो सांवलिया हो जागो ।
नन्द यशोदाके मन आनन्द गाय दुहन को
भाजन मांगो ॥

रविके उदय कमल प्रकाशे ।
भ्रमर उठि चले तमचर वासे ॥

गोपवधू दधि मन्यन लागो ।
हरि जूकी लीला के रस पागो ॥

विकसित कमल चलत अलिश्रेणी ।
उठो गोपाल गुहं तेरी बेणी ॥

परमानन्ददास मन भायो ।
चरण कमल रज देखन आयो ॥

१३
उठो मेरे लाल गोपाल लाड़िले रजनी वीतो
विमल भयो भोर ।

घर घर दधिकी मथनिया बाजे द्विज करत
वेदकी ध्वनि घोर ॥

करो कलेज दधि अरु ओदन मिश्री बांटी परोसों
भोर ।

आशकरण प्रभु मोहन तुम पर वारों तन मन
प्राण अकोर ॥

१४

प्रात समय उठि चलहु नन्दगृह बलराम कृष्ण
 मुख देखिये ।
 आनन्दमें दिन जाइ सखी री जन्म सुफल
 करि लेखिये ॥
 प्रथम काल हरि आनन्दकारी लखि पाछे भवन
 काज कीजिये ।
 रामकृष्ण पुनि वन हि जाइंगे चरण कमल
 रस लीजिये ॥
 को इक गोपिका ब्रजमें सयानी श्याम महात्म्य
 सोई है जाने ।
 परमानन्द प्रभु यद्यपि बालक नारायण करि
 सोई माने ॥

१५

हों प्रभात समय उठि आई कमलनयन देखन
 तुम्हरो मुख ।
 गोरस बेचन चलो मधुपुरी लाभ होइ मारग
 पाजं सुख ॥
 करत कलेज श्याम मनोहर नेकु चिते कीजे
 हमतन रुख ।
 तुम सपने मोहि मिलिके बिकुरे कासों कहां इह
 रजनोजनित दुख ॥
 प्रीति जु एक लाल गिरिधर सों इह मिस करि
 सब बात जनाई ।
 परमानन्ददास वह नागरी नागर सों मनसा
 अरुभाई ॥

१६

मैं जान्यों जागे कन्हाई ताते यशोमती तेरे घर आई ।
 भेरे पिछवारे बैसैइ खरनिमों किन हू मधुरी
 सुरलो बजाई ॥
 जन्म सफल करि विनती चित धरि अपने कान्ह
 कि न देहु जगाई ।
 ले उच्छुक्र मोहनको यशोमती आंगन ठाढ़ी गोपी
 मुख देख रसिक वलि जाई ॥

१७

प्रात समय घर घरते देखनको भाई गोकुलनारी ।
 अपुनी कृष्ण जगाइ यशोदा आनन्द सृङ्गलकारो ॥
 सब गोकुलको प्राण जीवनधन या सुत पर वलिहारी ।
 आशकरण प्रभु मोहन नागर गिरिगावर्द्धन धारो ॥

१८

गोवर्द्धन गिरि सघन कन्दरा रैन निवास कियो
 पिय प्यारी ।
 उठि चले भोर सुरति रस भीने नन्दनन्दन
 हृषभानु दुलारी ॥
 उत विगलित कचमाल मरगजी अटपटे भूषण
 मरगजी सारो ।
 इत हि अधर मसि पाग रही धसि दुहुं दिशि
 ह्वि लागत अति भारो ॥
 घूमत आवत रति रण जीते करनि सङ्ग
 गरिवर गिरिधारी ।
 चतुर्भुजदास निरखि दम्पतिसुख तन मन धन
 कीन्हों वलिहारी ॥

१९

रजनी राज लियो निकुञ्ज नगरकी रानी ।
 मदन महीपति जीति महारण अमजल सहित
 जंभानी ॥
 परम सूर सौन्दर्य भुक्कुटिधनु अनियारे नयन
 वाण सम्भानी ।
 दासचतुर्भुज प्रभु गिरिधर रस सम्पति विलसी
 ज्यों मनमानो ॥

२०

राधे जू हारावली टूटी ।
 उरज कमलदल माला मरगजी वाम कपोल
 अलक लट छूटी ॥
 वर उर उरज करज कर अङ्कित वाहु युगल
 वलयावली फूटी ।
 कञ्चुकी चीर विविध रङ्ग रञ्जित गिरिधर
 अधर माधुरी घूटी ॥

आलस बलित नयन अनियारे अरुण उनीदे
रजनौ खूटी ।
परमानन्द प्रभु सुरति समय रस मदन नृपतिकी
सेना लूटी ॥

२१

आजु श्यामा जूके नयनकी बात सुन रो सखी
मोपे वरणि न जाई ।
सुधाकिरण बिच युग शुभ खञ्जन किये पान
मानो सोधत अघाई ॥
सुखन राग रङ्गीले रसमसे कहा कइ सुन्दरि-
सुन्दरताई ।

मर्कत विद्रुम कमल कोष में ले जावक को
रेखा बनाई ॥

अलस तिगोछे चाहत बिच हीं बिच ककुक
विकसि जव लेति जंभाई ।

मन्मथ जय करि हरि जीतन को दयो वाण
भ्रू-धनुष चढ़ाई ॥

देखि लाल लोचन विथकित भई परम
चतुरता सब विसराई ।

सूर श्याम रस रोभ रहे तहां तुम हम सहचरो
कौन बड़ाई ॥

२२

काहे को दुराव करति है रो देखिये फूल प्रकट हिये ।
तू वर मधुप प्रिय मुख कमल आय मकरन्द पिये ॥
शिथिल अङ्ग निशाके जागे विथुरी अलके स्वाद लिये ।
यौवनके मद माती ग्वालिन डगत चरण धरणी पै दिये ॥
नृपुर अरसात तरुणित मानो रति केलि किये ।
कृष्णदास स्वामिनी गिरिधरण रसिक रसिये ॥

२३

आजु पिय सों तू मिली रो मानो ।
अमजल कण भर वदनकी शोभा निरखि नभसि
उड़ु राज खिसानो ॥

त्रिभुवन युवतिन को सुख सबस जानति हों तव
मांभ समानो ।

कृष्णदास प्रभु रसिकमुकुटमणि सुवश किये
गोवर्धन रान्ने ॥

२४

आजु ककु देखियत है रगमगो काहे न संभरति
छूटेइ अलक ।

अधरनि रङ्ग कक्ष की वन्द टूटे नयन राते आई
आधेइ तिलक ॥

मर्कतस्तम्भवाहु नन्दनन्दन मिलि रहो रो हेम सलक ।
रतिरणरु जोत्यो काम-छत्रपति ताहो तें तेरे

फूल किलक ॥

कृष्णदास स्वामी सों प्यारी लीन्हों तें सुरति
झिण्डाल भुलक ।

मोहन नाल गोवर्धनधारी वदन कांठि है चन्द्रमलक ॥

२५

नव निकुञ्ज ते आवति बनी राधा चाल सुहावनी
मनको हरणी ।

विकसित वदन कमल की शोभा कहा कहां देखत
उदित तरणी ॥

तरुण जलद नव श्यामके सङ्गम रस भरि भेंटत
भूतल जरणी ।

कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय सों कौनी तें रसिक
रसोली करणी ॥

२६

मैं तेरो अधिक चतुराई जानो तें न कञ्चुको संभारी ।
आनन्दरसवश देह भूल गई मिलत गोवर्धनधारी ॥

कहां कहां गुणराशि अङ्ग अङ्ग चलत मधुर
गति भारी ।

कृष्णदास प्रभु रसिक लाल के तू अति प्राण पियारी ॥

२७

आई तू तिलक मिटाये ।
रतिरण गोपाल सङ्ग नखशर उर लाये ॥

कपोलन पर पोक लागो मैं कषाये ।
हरि सो मिलि मदन जोत्यो दाव उपाये ॥

कृष्णदास प्रभु सौ मिलि निशान बजाये ।
ऐसी को निमिष तजे गिरिधर पाये ॥

१८

ते गोपाल हेत कसुभो कसु की रंगाय लई
भलो भई सुफल करी आजु निशि सुहावनी ।
रोम रोम फूल चाय चपल नयन झुकुटी भाय
आभरण चल अङ्ग चाल डगमगौ सुहावनी ॥
शुभग सारी भूमक तन श्याम पाट कुसुम नीवी
तनसुख पचरङ्ग छोट आटनी सुहावनी ।
सोहत अलक विधुरी वदन मोहन लावण्यसदन
कृष्णदास प्रभु गिरिधर केलि अति सुहावनी ॥

१९

कसुकीके बन्द तरकि तरकि टूटे देखत मदन-
मोहन घनश्यामहि ।
काहे को दुगव करति है रो नागरी उमगत
उरज दुरत क्यों यामहि ॥
ककु सुसकात दशन-रुवि सुन्दर हंसत कपोल
लोल भूभामहि ।
रवि-शशि युगल परे रति फन्दन अवननि पालक
ताटङ्ग के नामहि ॥
वदनकमल पर अलक मधुपवर खसून नयन
लेत विश्रामहि ।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर रङ्ग रङ्गित
सुमुखि लजावति कामहि ॥

२०

भूमत अलक तेरे वदन-कमल पर अधिक नोके
लागत नयन अलसरी ।
कहा कहं रूप-शोभा उरज युगत नव ले चली
रसिकवर मङ्गल कलसरी ॥
जानी मैं ते निधि पाई निकुञ्ज-मण्डप मई जाके
करत ही नयन ललसरी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रतीति बाड़ी नख-पद-
पंक्ति सोहे मोहन ललसरी ॥

२१

कहि न परे तेरे वदनकी ओप ।
भलकनि नव मोतिन हि लजावति र्निरखत
शशि-शोभा भई लोप ॥
पद्म न लागति चाहति प्रिय तन उन्नत भौंह
घटाटोप ।
चपल कटाक्ष कुसुम-शर तामत फुरत अधर
ककु प्रेम-प्रकोप ॥
प्रात-समय आए श्याम मनोहर तम हीं लड़ावत
अपनी चोप ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर अति नागरवर धरे
वेष गोप ॥

२२

प्रात आवत बना वृषभानुनन्दिनी रणित नृपुर
चरण लटक मन्दालसी ।
सुरति-सुख-भाव अङ्ग अङ्ग भूषण-वसन अलक
फरकत ककु भांति मन्दा-लसी ॥
अधर अद्भुत रेखा प्रिया प्रियतम वेश सखीमण्डल
रसद नयन मन्दा-लसी ।
कृष्णदासनि नाथ रसिक गिरिवरधरण मन
हरो चारु चल भौंह मन्दा-लसी ॥

२३

अरुणउदय नोके लागत सुन सजनी हां-हां तेरे
नयन रसमसे ।
मानहु शरत्-कमल-सम्पुट मह युग अलि
मधुलम्पट विवश वसे ॥
श्याम खेत आलस रस भावित भावसमूह
कषाय कसमसे ।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर प्रिय सुखद
सहज अस्त्रन सौ मसमसे ॥

२४

ऐसे मानत ही अपने जिय मह प्रिय सौ
मिलत ही करोंगो लड़ाई ।

देखत वदन धीरज न धरो मन लाल गिरिधरण
हों जानि पाई ॥
कहा करौ सर्वस्व चोरो सखी रूप दिखाय
ठगोरी खाई ।
कृष्णदास प्रभु रसिकशिरोमणि ले भुज बीच
बातन अरुभाई ॥

२५

नयन मन्दालस भरे हैं लसत वदनचन्द्र भाहिं
प्रकाशित ।
गति मन हरति सकल जनताके उरज युगल
करलिनु उपदासित ॥
रति तव कोक-कला-परिपूरण भौंह रुचिर चित्रलेख
विकाशित ।
सुन कृष्णदास विविध युवतिनके ले यौवन
गिरिधरण विकाशित ॥

२६

सुर तालसे दुराव कित करत मानहु मिले
गोवर्द्धनधारी ।
अधर सुरङ्गे पीक कपोलन नख पद उरज सोहत
हैं चरणगति भारी ॥
मरगजी ओटनी कञ्चुकीके बन्द टूटे नीवीपट
श्रीव न होय सारी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सङ्ग जागी ताते
उमगति फूल अङ्ग अङ्ग सुखकारी ॥

विभास—चर्चरी

लाल गिरिधर सङ्ग लाडिलो भामिनी ललित
रतिरस केलि चारु सोहे ।
नव तमाल हि मानो नवल मालतो वेलि नवरङ्ग
विलासनिधि आरोहे ॥
कङ्कुक मुसकात चमकत दग्गन भलमलनि जनु
कङ्कं मुक्तामणि हार पोहे ।
सुन कृष्णदास अङ्ग अङ्ग वैभव सुसुखि सघन
हृन्दाविपिन मार मोहे ॥

विभास—यत्

राधा रङ्गभरी नहीं बोलति ।
मोहन मदनगोपाल लाल मो अपनो यौवन तोलति ॥
चाहति मिलन प्राण प्यारे को मेरो ही मन
टकटलति ।
छांटहि बहुत चातुरी भामिनी कहत हम सों
भकभोलति ॥
प्रात होन लाग्यो सुन सजनी अरु हीं
तमचर बोलति ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर-प्रिय-हित सारङ्ग-नयन
सलोलति ॥

विभास—अपताल

श्याम सिन्धु अङ्ग चन्द्रनादि गन्ध पूजित पट पीत
मदन जलजवत् शुभग तरङ्गिमा ।
युवती सरिता अनङ्ग सम्मिलित शाभा सोमन्त
गुण गरिष्ठ भाव सिन्धु सङ्गिमा ॥
वदन-कमल अलक-मधुप नयन-खञ्जरोट बाच
अद्भुत तिल-कुसुम नाक भौंह अङ्गिमा ॥
अवण श्रुति विमोहन चल कुण्डल ताटङ्क गण्ड
मण्डित मुसकानि अधर रङ्ग रङ्गिमा ॥
नखशिख भूषण अमोल मनहर मादक सुबोल
वैजयन्ती भूषित श्रीउर उत्तङ्गिमा ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सुरतिनाथ राधावर वेणु-
गान तान-शब्द युङ्ग युङ्गिमा ॥

१

तेरे प्रभावते गोपाल प्यारो बोलत वन ।
चलहि मिलहि न राधिकी न वसत साजे शृङ्गार तन ॥
तव देहो विद्युत्कला नन्द सुवन सावन धन ।
सोहहि किन कण्ठ लागि रति विलास उलसित मन ॥
नव निकुञ्ज कूजत कलवेणु युवतितापहरण ।
कृष्णदास प्रभु नटवर मोहन गिरिराजधरण ॥

४

जैसे तू कहति तैसे ही बने ।

भैरं जान सखी लीहि संभारि भामिनी अपने धने ॥
सुरति-सुधा-निधि श्याम मृदुल रस यामें कैसेके सने ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर गुण रसाल कौन गने ॥

५

मोपाली देख हि कि न आई री ।

आजु बने गोविन्द नव कमलनयन तो को हीं

लेन पठाई री ॥

तरणि-तनया-पुलिन विम्ब-शरत्-निशा जुहाई री ।

राकापति-कर-रञ्जित द्रुम-लता-भूमि सुहाई री ॥

गोवर्द्धनधरण लाल गान सेों बोलाई री ।

कृष्णदास प्रभुको मिलन युवतिन सुखदाई री ॥

६

सुन्दर नन्दनन्दन जो हीं पाजं ।

अङ्ग सङ्ग लागि मदन-मनोहर या जाड़ेको देश-

निकारो दिवाजं ॥

मृगमद अगरु कपूर कुङ्कुमा मिले अरगजा

देह चढ़ाजं ।

विविध सुगन्ध सुमन की सुनु सखि सघन निकुञ्जमें

सेज बिछाजं ॥

रागरागिणी उपज सुलय स्वर तानतरङ्ग कै

मधुर हि गाजं ।

कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक-शिरोमणि

सुविधि रिभाजं ॥

विभास—पटताल

जेहिं फन्द पिउ वेगि मिले करहि कि न सोई फन्द ।

विरह-पीर-हरण रसिक सुन्दरी सुन्दर गोविन्द ॥

तू ब्रजसरकी कुमुदिनी हरि वृन्दावनको चन्द ।

वचन-किरण-विगत अमृत पीवहिं श्रुतिपट खच्छन्द ॥

तू करिणी वर ललना नन्द सुवन अदगयन्द ।

कृष्णदास प्रभु गिरिधर रति सुख आनन्द कन्द ॥

विभास—यत्

हरि मोहनकी मोहन बानक ।

मोहन रूप मनोहर मूरति माहन मोही अचानक ॥

मोहन विरह चन्द्र शिर भूषण मोहन नयन सलोल ।

मोहन तिल भौंह मनमोहन मोहन चारु कपोल ॥

मोहन श्रवण मनोहर कुण्डल मृदु तर्दु मोहन बोल ।

कृष्णदास प्रभु गिरिधरण मनोहर नखशिख

प्रेम कलोल ॥

विभास—एकताला

तरणि-तनया-तट आवत हीं प्रात समय कन्दुक

खिलत देखो आनन्दको कन्दवा ।

नूपुर पद कुण्ठित पोताम्बर कटि बांधे लाल

उपरेना शिर मोरनको चन्दवा ॥

पङ्कज नयन सलोल मधुर मोहन बोल गोकुल

सुन्दरि-सङ्ग विनोद खच्छन्दवा ।

कृष्णदास प्रभु हरि गोवर्द्धनधारो लाल चारु

चितवन तोरे कञ्चुकीके बन्दवा ॥

विभास—यत्

जो भावे सो करति लाडिली हां री रसिक

गोपाल हि भावति ।

गुणकी राशि यत् ताल हि सम्मिलित प्रमुदित

राग विभास हि गावति ॥

तान बंधान सप्त स्वर संचे गति बहु भांति मिलावति ।

कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर छैल छवीले सुविधि

रिभावति ॥

२

तेरे वदनकी शोभा तोहि पै कहत बने जो

मुख जीभ होय लख कोटिक ।

चिबुक सांवल विन्दु छैल चतुर विधाता देखें

जिनको उदियो चखोड़ा टोटिक ॥

तिलक आधो ललाट छूटी उरज सुलट शिथिल

अङ्ग अङ्ग भाव स्फोटिक ।

कृष्णदास प्रभु गिरिधरण रसिक सङ्ग सुरति

हिंडोली प्यारी लिये निशि भोटिक ॥

३

रंगीले नयन तेरे हो कब देखीं गिरिधरन ।

अब्द सुख सुन्दरवर त्रिविध ताप हरन ॥

श्याम श्वेत अनियारि भाव विविध वरन ।
मीन कमल खण्डन अलि नृगज भए शरन ॥
श्रीराधा रस लम्पट कुच सरोज चरन ।
गायक कल्यादास हेतु मुरली तान डरन ॥

विभास—एकताला

शृकुटि-धनुष-युत नयन-कुसुम-शर जिहिके लगत
सो परि परि तानि ।

सहज हि शुभग हवीली सोई गोवर्द्धनधर
जाकी मानि ॥

हावभाव नव सुरति तरङ्गनि सब विधि कांक-
कला सोई जानि ।

कल्यादास प्रभु युवति-यूथ-पति करि लोन्हो तिहि
अपनो लानि ॥

विभास—यत्

इह मन कैसे के रहे राखो ।
जिहि मधुव्रत हो गिरिधर प्रियको वदन-कमल-
रस चाखो ॥

जो कहु मै कीन्हो परवश हो इतनो ही सत् साखो ।
बारबार बहुविधि समुभायो जंचो नोचो भाषो ॥
केहु न मानति महा हठोली कही तुम्हारी आखो ।
कहे कल्यादास कहां लां वरणो पांच चोर
मिलि काखो ॥

२

वलि वलि जाऊं रसिक गिरिधर प्रिय नौके आए
प्रात तमचरके बोले ।

इतो सङ्कोच कौन को हो मानत अधिक लजाय
रहे विन बोले ॥

सन्ध्या वदे बोल सांचे किये अनतसि मै जानो
करि हैं यहां रहि जाले ।

कल्यादास प्रभु ऐसी कौन तोसो कहि सके
त्रिजगमों त्रिभुवन तक ताले ॥

३

प्राणु लाल अति राजे बैठे वानिक सी छाजे
सुधि न कहु री गात प्यारी प्रेम मगना ।

लटपटी पाग अरु शिथिल चिकुर चारु उपटत
उर-हार प्यारी कण्ठ लगना ॥

आलस अरुण रस भरें रो विलोचन भरि भरि
आवत प्रियसो अनुरगना ।

गोविन्द प्रभु प्रिय जान शिरोमणि सुरति-रङ्गरस-
विभव-निशा जगना ॥

४

एक रसना कहा कही सखी री ललनकी
प्रीति अमोली ।

हंसनि खेलनि चितवनि जो हवीली
अमृत वचन मृदु बोली ॥

अति रसभरे मदन मोहन प्रिय अपने कर-कमल
खोलत बन्द चोली ।

गोविन्द प्रभुकी ही बहुत कहा कहां री जी-जी
बातें कही मोसो अपनो हृदय खोली ॥

५

तू आज देख री मनमोहन ए बलवीर राजे ।
मदनमोहन प्रिय मणिमन्दिरतें बैठे वानिकसी
आय छाजे ॥

लटपटी पाग मरगजी माला लटपटात मधुप
मधु-काजे ।

गोविन्द प्रभुके लु शिथिल अरुण दृग देखत
विथकित कोटि मदन लाजे ॥

६

रसमसे नन्दलला रे आये हो उठि भोरे ।
अरुण नयन वैन भूषण अटपटे देखियत अधरन
रङ्ग भारे ॥

कैतव वाद कत करत गुसाईं तहां जाहु जाके हो
अति प्राण प्यारे ।

गोविन्द प्रभु भले जू भले जानि पाए जैसे तन
श्याम तैसेइ मन कारे ॥

७

मदनमोहन प्रिय भयो न भोर ।

प्राचो दिग् नहीं अरुण देखियत अरु सुनियत
नहीं वन खगरोर ॥

बृहीत कण्ठ परस्पर दम्पती विभ्रेत कातर अति ज़ोर ।
गोविन्द प्रभु प्रिय रसिकशिरोमणि प्यारीके
वचननि लियो चित चोर ॥

लाल प्यारी अति विलक्षण वश किये रो सुहाग ।
विविध कुसुम सुवास शीतल विचित्र शय्या रची
जाते मदनमोहन निशा जाग ॥

बैठे कुञ्जके द्वार तब पद्य जोवत भरि भरि आवत
नयन विशाल तव अनुराग ।

दूतीके वचन सुनि प्रेम व्याकुल भई मिला जाय
गोविन्द प्रभुको मेटा हृदय दाग ॥

पक्ष खजूर जम्बु बदरीफल लेहो काछिनि टेरी द्वार ।
बालकयूथ सङ्ग बलमोहन चौके करत विहार ॥
सुन्दर कर जननी केनो दियो धाये तब हीं कुमार ।
हीरा रत्न सुपूरित भाजन ऐसे परम उदार ॥
उदर अङ्गुलि लगाय खात खात चले मीठे
परम रसाल ।

जूठी गुठली मारत गोविन्द को हंसत हंसावत ग्वाल ॥

तेरे वारने जाऊं महर-यशोदाके लाल ।
छाड़े उन भावत कैसे नीके लागत मधुरे
स्वर गावत सुरली बजावत परम रसाल ॥
विभास राग जमायो मधुर मधुर गायो प्रात शुभकाल ।
गोविन्द प्रभु प्रिय सुघर शिरोमणि अहो श्याम तमाल ॥

जहां नयन लगत तहां सों खगत अङ्ग अङ्ग
माधुरी जु वरणि न जाई ।

सुन्दर भाल भ्रू कपोल नासिका देखत रङ्गे जु लुभाई ॥
हंसत लालन मुख दशन जुन्हाई होति यह
छवि कहा कहीं देखि धों रो आई ।

गोविन्द प्रभुके जु सुन्दर वानिक पर वलि वलि
वलि वलि जाई ॥

तेरो मुख मानो जैसे री शरत्-शशि ।
दशन-ज्योति जुन्हाई वचन शीतलताई अमृत
हास सुहाई बोलत नयन मसि ॥
कस्तूरी तिलक भाल ऋतु कलङ्क छवि नक्षत्र माल
मणि मङ्गलसि ।

गोविन्द प्रभु नन्द सुवन चकोरवर पान करत
वर मन्मथ तापनसि ॥

इन्दु कुसुदिनी समेटी अरु चक्रवनि त्रिय भेटी
मुकुलित अलि सरस कमल मुकुलित भए नलिन ।
भयो प्रात मुक्ता गात सियरो अति सानो
लागी बोलन तमचर दीप-ज्योति भई मलिन ॥
कैसे जै हीं रसिक राय नन्द-गोप दुहृत गाय
जागे ब्रजवासी मोहि जात देखि हैं गलिन ।
गोविन्द प्रभु प्रेममग्न दम्पती अति कण्ठ लग्न
बढ़ाए छपा फिरिके शशि पश्चिम सके चलिन ॥

नव निकुञ्ज महल रस दोज री राजत रङ्गभीने ।
कुसुमित सेज भोर उठि बैठे आलस रस अंशनि
भुज दोने ॥

गौर श्याम तन नील पीत पट सभ्रम पलटि वमन
तन लोने ।

प्रिय विहारो प्रियासङ्ग सुरतिरङ्ग शुभग सिन्धु
ललितादिक दृग मीने ॥

बनी प्रिय राधा माधव केलि ।
प्रात समय सखि नवनिकुञ्जमें बढ़ी परम रस तेलि ॥
प्रियकी सुरली अपने अधर धरि लोनीं तान नवेलि ।
मोहन रीभि विवश हूँ दीनीं हीराहार हमेलि ॥
निरखि कमल मुख कहत भले जू भले सकल कला
प्रबेलि ।

ऐसी कबहुं न मोपै बाजी कहेँ कण्ठ भुजा उर भेलि ॥
 ललिता निरखत ठाढ़ी षोट चै रह्यो सुख
 सागर भेलि ।
 भाग सुहागै कहत नहि आवे बख्यो मन
 आनन्द रेलि ॥

१८

अति ही कठिन कुच उच्च दोच तुङ्गनिसे गाढ़े
 उर लगायके भेटो काम झक ।
 खेलत में लर टूटी उर पर पीक परो उपमा
 वरणनको भई मति मूक ॥
 अधरामृत रस ऊपरतेँ अश्ववायो अङ्ग अङ्ग सुख
 पायो गयो दुख दूक ।
 शीतस्वामी गिरिधारी राजा रूच्यो मन्मथ
 वृन्दावन कुञ्जमें मै हँ सुनो कूक ॥

१९

आज किशोर कुंवर कान्ह देखि रो-देखि आव
 गावत भावत नयनन चैन पावत सकल अङ्ग अङ्ग ।
 सुरलो कुणित शुभग वदन मदन मोचन लोल
 लोचन मधुप टोल मधुर बोल गुञ्जित सङ्ग सङ्ग ॥
 चरण नूपुर कटि सुमेखला रतिरण रस भरे रो
 श्याम कनक कपिस अम्बर समर करत मान भङ्ग ।
 शीतस्वामी गिरिधरण हरण तनके मनके सन्ताप
 भेटो रो भेटो रो विरह-वेदना प्रीति सों जीति अनङ्ग ॥

२०

यमुना-पुलिन शुभग वृन्दावन नवल लाल
 गोवर्द्धनधारी ।
 नवल निकुञ्ज नवल कुसुमित दल नवल नवल
 वृषभानु दुलारी ॥
 नवल हास नव नव छवि क्रीडत नवल विलास
 करत सुखकारी ।
 नवल श्रीविद्वसनाथ कृपावल नन्ददास निरखत
 वलिहारी ॥

२१

भोर ही छवि सों प्रवीण वीण बजावत ठाढ़ी ।

ललित राग अनुराग ललित गति ललिता
 ललित रूच आढ़ो
 लाड़िली लाल महलमें पौढ़े तिन्हे जगाय रिभायवेजो
 परम प्रीति गाढ़ी ॥

२२

केलि किये हरि नायकके सङ्ग भोर ही मञ्जनको
 उठि धाई ।
 नीलकी चोलीमें देह दोपे यमुना-जलमें जैसे
 चन्द्रकी छाई ॥
 ले डुबकी शलकेँ बिथुरीं जलते छिटकीं मुख ऊपर
 धाई ।
 दोच कर बार सुधारि लिये निकखो शशि फोरि
 पहार की ताई ॥

२३

तेँ निशा लाल सों रति मानी ।
 पग डगमग मग न परत सूधे मै तब हीं जानी
 शिथिल वसन कवरो केश राजत आनन सुदेश
 बोलत कछु लटपटात वानी ॥
 यह छवि मो मन भाई मिटो है चपलताई पीक
 लोक अधरन लपटानी ।
 मदन-मोहन नव किशोर रिभये श्यामा प्यारी
 धन्य धन्य धन्य नव निकुञ्जरानी ॥

२४

प्रात समय नव निकुञ्जके द्वारे ललिता ललित
 बजाई वीणा ।
 पौढ़े सुनत श्याम श्रीश्यामा दम्पती चतुर नवीन नवीना ॥
 अति अनुराग सुहाग लाड़िली कोटि कलान
 प्रवीण प्रवीणा ।
 विहारीदास वलि वलि जोरो पर तन-मन-धन
 न्यौछावर कोना ॥

२५

जागत ही जागत गई निशा वीति हो देखि
 सखी सुख देन ।

अपने अपन सुखसे हर्षत कर्षत सखी
भये मग मेन ॥

विद्युरी अलक पलक आलस बलित नयन वेन ।
चारो पहर विहरत यों सखी भोर भयो
विहारनिदासके हास टरै उर ऐन ॥

२६

लाहृतो लाहिली नव रङ्ग अपने लाल विहारीके सङ्ग
अलसाने में लाने प्राण-प्रिया-पति विपरीत रति सुख
यों दे अङ्ग अङ्ग ॥

विगलित कच-कुसुम शिथिल पाग मरगजो मङ्ग ।
विहारनिदासकी स्वामिनी श्याम हृि देख
सखी सुख प्रेमकी परनि टरनि रङ्ग अनङ्ग ॥

२७

रसिक लालके सङ्ग सङ्ग जागी री सुख चैन
सों रैन सगरी ।

शोभित शीर्ष कुसुम शिथिल अलके तामें कङ्क
कङ्क री मांग मोती बगरी ॥

अरुण नयन सलोल मोहन मधुर बोल रचो है
पोक कपोल प्रेम शुभगरी ।

सुवश किये विहारीदास वलि वलि प्यारी सुरति
निपुण नित सोहाग भाग-अनुराग अगरी ॥

२८

भोर हीं कर सों कर जोरें अङ्ग अङ्ग मोरें आलस
लेत जंभाई ।

प्रियके अङ्ग निशङ्क सबे निशा डुलसि विलसि
आनन्द में उनीदिये उठि आई ॥

अङ्गराग-अनुराग रहो फबि छवि वरणी नहि जाई ।
अति सुख भरि भरि उमग विहारनिदास सों
कहति ऐसे हों लाल लड़ाई ॥

२९

धन्य सुहाग अनुराग तेरो तूं सर्वोपरि राधे जू रानी ।
नख-शिख अङ्ग अङ्ग बानो प्रियतम प्राण समानी
रसिक किशोर सुरति-सुखदानी ॥

को जाने वरणे बपुरो कवि अद्भुत छवि नहीं
जात बखानी ।

विहारी प्रियसों रति मानी में जानी श्यामो
तोहि सब निशा सुखसों सिरानी ॥

३०

सुख पट ओट न करो पियारी ।
काहेको भूठे ही भुक भुकति रसिकनी
जहत हैं रसिक निहारी ॥

तू जो इतो हठ करति चतुर प्रिया रतिके चिह्न
देखिए निहारी ।

नवलकिशोरें मिली किशोरी मान तजि
विहारनिदास वलिहारी ॥

३४

करो कलेज बलराम-कृष्ण तुम कहति यशोदा मैया ।
पाछे वत्स-ग्वाल सङ्ग लेके चलहु चरावन गैया ॥

पायस सिता घृत सुरभिन को हित करि भोजन कीजे ।
जग-जीवन ब्रजराज लाड़िले जननी को सुख दोजे ॥

शीर्ष मुकुट कटि काछि काछिनी पोत वसन तन धारो ।
लेहु लकुट सुरली कर मोहन मन्मथ दर्प निवारो ॥

मृग-मद-तिलक अरण्य कुण्डल मणि कौसुम
कण्ठ बनावो ।

परमानन्ददास को ठाकुर ब्रजजन मोद बढ़ावो ॥

३५

प्रात समय उठि यशोमति-जननी गिरिधर-सुत को
उबटि न्हावति ।

करि शृङ्गार वसन-भूषण सजि फूलन रचि रचि
पाग बनावति ॥

छूटे बन्द वागो अति शोभित बिच बिच चोवा
अरगजा लावति ।

सूयन लाल फुन्दना शोभित आजुको छवि
ककु कहत न आवति ॥

विविध कुसुमकी माला उर धरि ओकर सुरली
बेत गहावति ।

ले दर्पण देखे श्रीसुख को गोविन्द प्रभु चरणन
शिर नावति ॥

५६

शुभग शृङ्गार निरखि मोहन को ली दर्पण कर
कर पियहि दिखावे ।
आपुन नेकु निहारिये वलि जाजं आजुकी छवि
कहु कहत न आवे ॥
भूषण-वसन रहे ठायं ठायं फवि अङ्ग-अङ्ग
अद्भुत चित हि चोरावे ।
रोम-रोम पुलकित तन सुन्दर फूलन रचि रचि
पाग बनावे ॥
अञ्जल फेरि करत न्यौछावर तन-मन अति
अभिलाष बढ़ावे ।
चतुर्भुज प्रभु-गिरिधर को रूप-सुधा पिवत नयन-
पुट टसि न पावे ॥

५७

आजु को शृङ्गार शुभग सांवरे गोपाल को कहत
न बनि आवे देखे ही बनि आवे ।
भूषण सब भांति-भांति अङ्ग-अङ्ग अद्भुत कान्ति
लटपटो सुदेश पाग चित्तको चोरावे ॥
मकर-कुण्डल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल
चितवनि लोचन विशाल कोटि काम लजावे ।
कहल श्रीवनमाल फेँटा कटि छोरनको चौरा
त्रिभुवन त्रियको धोरन मन न आवे ॥
मेरे सङ्ग चल निहार कुञ्ज महल बैठे हरि
हितकी चित बात कहं जो तेरे जिय भावे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर-धर कोटि मदनमूर्ति बड़
भागिनो ताहि गिनो जो जात ही लपटावे ॥

५८

माई रो आजु और का ही और दिन प्रति और ही
और देखिये रसिक गिरिराज-धरण ।
नित प्रति नव छवि वरषे सो कौन कवि नित ही
शृङ्गार वागे वरण वरण ॥
श्याम नयन अङ्ग-अङ्ग सोहत कोटि अङ्ग
उपजी शोभा-तरङ्ग विश्वके मनहरण ।

चतुर्भुज प्रभु-गिरिधर को रूप-सुधा नयन-पुट पान
कीजे जीजे रहिये सदा शरण ॥

५९

मरगजी उर कुन्दमाल लोचन अलसात लाल
उगमगात चरण धरणी धरत रैन जागे ।
शीर्ष ते खसि मोर-मुकुट भ्रुकुटौके तट आयो
निकट शिथिल चपल चन्द्रिका सुवांधि पाट तागे ॥
अतसी-कुसुम-तन सुभांति कहं-कहं कुङ्कुमकी कान्ति
मदन नृपति पीक छाप युग कपोल लागे ।
चीतस्वामी गिरिवर-धर मौरभ-रस-मग्न मधुप
सङ्गम गुण-गान करत फिरत आगे आगे ॥

६०

कमल-नयन श्यामसुन्दर निशाके आगे ही
आलस भरे ।
कर-नख उर राजत मानो अधं शशि धरे ॥
लटपटो शिर पाग बनी खसत वदन तिलक टरे ।
मरगजी उर कुसुम-माल भूषण अङ्ग-अङ्ग परे ॥
सुरति-रङ्ग उमगि रहे रोम पुलकि होत खरे ।
परमानन्द रसिक राय जाहोके भाग्य ताही के ठरे ॥

६१

सांवरे भले ही रति-नागर ।
अबके दुराये क्यो दुरत हो प्रीति जु भई उजागर ॥
अधर कञ्जल नयन रगमगी रची कपोलनि पोक ।
उर नख-रेखा प्रकट देखियत है परी मदनकी लीक ॥
पलटि परे पट तिलक गयो मिटि जहां तहां
काङ्क्षण गाड़े ।
परमानन्दस्वामी मधुकर गति भलो आपनी चाड़े ॥

६२

आलस उनीदे नयन घूमत आवत मूदे अधिक
नीके लागत अरुण वरन ।
जाने हों सुन्दर श्याम रजनोक चारो याम
नेक हु न पाए मानो पलक परन ॥
अधरन रङ्गरेखा और ही चित्र विशेष शिथिल
अङ्ग उगमगत चरण ।

चतुर्भुज प्रभु कहां वसत पलटि आए सांची कही
गिरिराज-धरन ॥

६२

सांभ जु आवन कहि गए लाल भोर भये देखे ।
गणत नक्षत्र नयन अकुलानि चारि प्रहर मानो
युग विशिखे ॥

कीन्ही भली जु चिह्न मिटाये अधरनि रङ्ग अरु
उर नख-रेखे ।

कुम्भनदास प्रभु रसिक शिरोमणि गिरिधर
तुम्हरे कैसे लेखे ॥

६४

इतनी बार तुम कहां रहे ।
सगरी रैन पथ चाहत चाहत नयन दहे ॥
कुम्भनदास प्रभु भए ताहीके वश जिन हीं गहे ।
गिरिधर प्रिय भले बोल निवाहे सन्ध्या जु कहे ॥

६५

निशा के उनीदे मोहन नयन रसमसे ।
काहे को लजात कहहुं धो कहा लालन कहां बसे ॥
डगत चलत आलस जंभात हो वदन रेखा
देखियत वसन खसे ।

कुम्भनदास प्रभु गिरिधर तुम भुजवन्धन करि
उर हि लाय कसे ॥

६६

अरुण उनीदे आए हो रसमसे निशाके चिह्न
कहां दुराय ।

नख पद प्राण प्यारीके मोहन कान्ति न छिपत
छिपाए ॥

कुङ्कुम रञ्जित उर वनमाला विलुलित मुख
मधुर जंभाए ।

गिरिधर नव केलि कला रस प्रमुदित कृष्णदास
आलि गाए ॥

विभाष—चर्चरो

आज सगरी निशा कहां जागे लाल कही जु
सांची शुभग सांवरे माधो ।

घोष मन्यन शब्द प्राणपति गृह गृह रक्षा मोहन
खर भकट भयो आधो ॥

कमल विकसित भए चक्रवाकी हंसी सुमुखि
पुलकित मुदित निज पति आराधो ।

विश्वमोहन वदन निरखि नभ चन्द्रमा सगण
लज्जित भयो प्रेम गुण बाधो ॥

ललित सुन्दर राग चर्चरो ताल धरि मधुप गावत
सुयश पिकनिकर साधो ।

कहे कृष्णदास गोवर्द्धन उदरण धीर प्रिय सुन्दरी
कृपण धन लाधो ॥

२

भली कीन्हीं लाल गिरिधर भोर आए बोल सांचे ।
युवति वल्लभ विरध कहियत मोही सों सब
सुविध बांचे ॥

ताही पै जु सिधारिये पिय जाहोके तुम सुरङ्ग राचे ।
यहां लों केहिं सिख पठये मानहु मन्त्री मते काचे ॥
अध सूचत श्वास स्थिर नहीं निशा प्रिया
रति वन्ध पाचे ।

सुनहि कि न कृष्णदास नागरी ज्यों नचाए
त्यों हीं नाचे ॥

२

अधिक नौके लागत रगमगे लाल आधो आधो
बतियां कहत मेरे प्यारि ।
खेलत प्राण प्यारी सों मोहन निशा जागे नयन
रतनारि ॥

मरगन्धो मृगमद तिलक माथे पर कलुक
जंभात अधर मसि कारि ।
अम जल कण कपोल मण्डलवर सिन्धुर रङ्गराते
भौह अनियारि ॥

आभरण वसन पलटि पहिरे अङ्ग नूपुर कुण्ठित
चरण सोहें भारि ।

सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर प्रिय पाए हीं
नेक करहुं न न्यारि ॥

४
 आवत बने सुन्दर नन्दनन्दन लटपटो पाग
 डगमगति चाल ।
 अरुण कपोल अधर मसि-कारे चपल नयन
 असरीधे लाल ॥
 रति जय लेख लिखि उर पद नख जीव्यो
 मदनगोपाल वत् अलिमाल ।
 तजि न सकत सौरभ-रस-लम्पट कुच कुङ्कुम
 राञ्छत वनमाल ॥
 पलटि परे पट कहहु कहां ते शिथिल अन्वि-
 कटि किङ्किणि-जाल ।
 छूटे बन्द खंद-कणिका तन काहे को लजात विरह-
 रिपुसाल ॥
 कृष्णदास प्रभु कितव दुरत हो नृगमद तिलक
 मरगजो है भाल ।
 मोहनलाल गोवर्द्धनधारी प्रकट भयो प्रिय सुयश
 विशाल ॥
 ५
 अरुण-उदय सुरति-केलि-रत लाल नोकी बने
 नव निकुञ्जते आवनी ।
 वनमाल रसमत्त सङ्ग अलिमण्डलो ता सों
 मिले त्रीमुखहिं सरस गावनी ॥
 चरण नूपुर दीप्ति कटि नृद्ध घण्टिका मधुर
 सुखरित नील पट पर सुहावनी ।
 रगमगो ओठनी प्राण प्यारीकी सुरति-अभिराम
 तन देख विसरावनी ॥
 काम-जय-पत्र रस उरसि कामिनी लिख्यो नख
 अङ्ग पंक्ति रसिकन हृदय भावनी ।
 शिथिल अलकावली गलित वरहापोड़ अरुण
 लोचन भौंह मन्मथ नचावनी ॥
 अम-खेद-कण गात लाल गिरिधरके निशा-कथा
 सुमिरि मन रुधिर सुसकावनी ।
 मदन-रस रहसि गायक कृष्णदास कहां आपने
 पीत पट दिये पहरावनी ॥

६
 काहे को दुरावत अपुनी केलि जाने हो हारं
 प्रियतम नागर ।
 मोहि दिखावहु बाँचि सुनावहु प्यारी करज
 अङ्ग तव उर नागर ॥
 निशाको बातें सबे प्रकट भई कत लजात हो
 कौतुक सागर ।
 कृष्णदास प्रभु गिरिधर चञ्चल युवति-तापहर
 सुयश उजागर ॥
 ७
 सन्ध्या बदे बोल मनमोहन प्रात आय कीन्हें
 सब सांच ।
 तनमन उहें अभासत प्रियतम काहेको नाल
 करत हो छ-पांच ॥
 इहा तो व्यथा सो जाने गिरिधर जाको लगी
 विरहकी आंच ।
 सुन कृष्णदास जाऊं बलि ताकी जिन लीन्हें
 सर्वस दे जांच ॥
 ८
 बने हो रसमसे आए प्रात ।
 आलस भरे वदनकी शोभा निरखि लजित जलजात ॥
 सन्ध्या बदे बाल किये सांचे काहे को लाल लजात ।
 कृष्णदास प्रभु गिरिधर चितवत युवति-नृगो तकि घात ॥
 ९
 बने हो रसमसे आए प्रात ।
 प्यारी नख-पद-रत्नावलि रस-रञ्जित नव रङ्ग गात ॥
 नखरेखा मोहन युवतिन मन प्रमुदित पुलक जंभात ।
 कृष्णदास गिरिधर चित चञ्चल ज्यों तरवरको पात ॥
 १०
 बलि बलि जाऊं रसिक गिरिधर प्रिय नोके आए
 तमचरके बोले ।
 इतो सङ्कोच कौन को मानत अधिक लजाय
 रहे विनु बोले ॥

सन्ध्या बदे बोल सांच किये अनत बसे में जान्यों
करि हैं यहाँ रहि जोले ।

छायादास प्रभु ऐसी कौन तों सों कहि सके
त्रिभङ्ग भौंह त्रिभुवन तक तोले ॥

११

कौनके भोराए भोर आए हो भवन मेरे जंघी
दृष्टि क्यों न करो कौनते लजाने हो ।

जाहीके भवन भावे ताहीके धारीये पायं काहे
ऐसी चाड़ परी कौन गहराने हो ॥

भोरी भोरी बतियन भोरवन लागि मोहि श्रीगिरिधर
तुम अति ही सयाने हो ।

छायादास प्रभु छाड़ो अटपटी रहो हो लाल आज
हों तुम्हें देखि मोके पहिंचाने हो ॥

१२

मदनमोहन प्रिय आए प्राप्त ।

चार याम जागे प्यारी सङ्ग अरुण नयन आलस
जंभात ॥

विन गुण मोतीमाल विराजत अञ्जन अधर
पोक लगी गात ।

ब्रजपति प्रिय तुम्हें ऐसी न बुझिये हम सों
फिरि तुम हंसि मुसकात ॥

१३

मदनमोहन प्रिय जागे रैन ।

आलस वश जंभात शिथिल अङ्ग अरुण तिहारै नयन ॥
उपटे उरहार प्रकट देखियत प्यारी कण्ठ लागि
दियो सुख चैन ।

ब्रजपति प्रियकी चालचलनि पर कोटिक वारों मैनि ॥

१४

सुन्दर लाल गोवर्द्धनधारी कहां तुम रैन वसे
मेरे लाल ।

आलस नयन वैन चल बोलत छूटे बन्द
डगमगती चाल ॥

सारङ्ग अधर रुचिर वय नखछत कुच प्रसङ्ग
उर विलुलित माल ।

करि रथहीन मीनपति जीव्यो चढ़ौ धनुष
मानो भौंह विद्याल ॥

नहीं सत्भाव कहति प्रियतम सों फिरति हो
पात पात डाल डाल ।

दाससुरारी प्रीति प्रौढ़नि सों देखति प्रकट
तुम्हारे हाल ॥

१५

आए हो उठि भोर रसमसे नन्दललारे ।
अरुण नयन वैन अटपटे भूषण देखियत अधरन
रङ्ग भारे ॥

कितव विवाद करत हो गुसाईं तहीं जाहु जाके
अति प्राण-प्यारे ।

गोविन्द प्रभु भले जु भले जानि पाए जैसे तन
श्याम तैसे मन कारे ॥

१६

निशाके उनोदे अति छवि लागत भरे प्यारी रङ्ग ।
आलस वलित ललित लोचन युग भरि भरि
आवत कुञ्ज कलि सुधिके प्रेम उमङ्ग ॥

शुभग उरसि पर विन गुण मोतीमाल कुङ्कुम
रचित उपटे हैं कुच उतङ्ग ।

गोविन्द प्रभु कत करहु दुराव ए सब कहत
तुम्हारे अङ्ग अङ्ग ॥

१७

प्रिय विनु जागत रैन गई ।
अवधि बदि गए न आए बड़ी बेर भई ॥
कछू कहत करत कछू कौन है सोख दई ।
सांच नहीं एको अङ्ग कहा रीति लई ॥
कैसे कीजे विश्वास भए हो विषई ।
रसिक प्रियतम रावरी है क्षण क्षण गति नई ॥

१८

ठीले ठोले पग धरत ठीली पाग ठरकि रही
ठीले से ठहरे ऐसे कौन पै ठहे हो ।
गाढ़े जु पिय हियके पयि ऐसी गादी कौन त्रिय
गाढ़े गाढ़े भुजन सों गाढ़े कर गहे हो ॥

लाल लाल लोचन उनीदे लागि लागि जात
 सांची कही पिय यों तो लाल लहे हो ।
 नन्ददास प्रभु सांची क्यों न बोली भयो प्रात
 कही बात प्यारे तुम रात कहां रहे हो ॥

१८

पाग खसी शिर पेंच लटपटी घूमत नयन उनीदे
 उजागरि ।
 पीक कपोल अधर मसि दाम, कङ्कण पीठि
 गङ्गो अति सुन्दरि ॥
 जात उते दूत पांव चले क्यों बोलत हो तुतरात
 लिये दरि ।
 प्रात समय उठि कहति सूर प्रभु आवत हो
 अनुराग भरे हरि ॥

२०

चन्द्रावलि-धाम श्याम भोर भये आये ।
 अति रिस करि रह्यो वाम रैन जागि चारि याम
 देखे जो द्वार कान्ह ठाढ़े सुखदाये ॥
 मन्दिर तें रह्यो निहारि मन हीं मन देति गारि
 ऐसे कपटो कठोर आये निशा वीते ।
 रिस नहीं सकी संभारि बैठी चढ़ि द्वार बारि
 ठाढ़े गिरिधारी निरखि कवि नख शिख हीते ॥
 विन गुण बनो हृदय माल ता बिच नख-क्षत रसाल
 लोचन दोउ दर्शि लाल कैसी रुचि बाढ़ी ।
 जावक रङ्ग लग्यो भाल चन्दन भुज पर विशाल
 पीक पलक अधर भलक वाम प्रीति गाढ़ी ॥
 क्यों आये कौन काज नाना करि अङ्ग साज
 उलटे भूषण शृङ्गार निरवत हो जाने ।
 ताहीके जाहु श्याम जाके निशा वसे धाम
 मेरे घर कहा काम सूरदास गाने ॥

२१

मैं जानी पिय बात तुम्हारी ।
 भोर भये मेरे गृह आये ऐसे भोरे भारी ॥
 छां आये मुख परसन मेरो हृदय टरत नहिं प्यारो ।

कपट चतुरई दूरि करो जू अपयश लेत उतारी ॥
 कहा सांच मैं खोवत करतें भूठे कहा फदशित ।
 सूर श्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवत ॥

२२

रैन जागि रति-रस पागि अनुरागि नव त्रिय सङ्ग ।
 मो सन्मुख कत आये हो दहनि पिय रसमसे नयन
 अटपटात वेननि तहइ जाहु जाके रङ्ग ॥
 विन गुण बनो माल पीक कपोलनि लाल जावक-
 तिलक कीन्हे रस वश अङ्ग ॥
 सूरदास प्रभु तुम रजनी विहाय आये प्रात भये
 मेरे जीति अनङ्ग ॥

२२

माईं आलु लाल लटपटात आये अनुरागि ।
 शोभित भूषण अङ्ग अङ्ग आलस भरे रैन उनीदे जागि ॥
 लटपटो शिर पेंच पाग छूटे बन्दनि बागि ।
 सूर श्याम रसिक राय रस-वश कोन्हे सुभाव
 जागि जहां सोई त्रिया बड़ भागि ॥

२४

मङ्गलकरण हरण मन आरति वारति
 मङ्गल आरती बाला ।
 रजनी-रस पागि अनुरागि जागि प्रात गात अलसात
 शिथिल वसन अरु मरगजी माला ॥
 बैठे कुञ्ज मङ्गल सिंहासन श्रीवृषभानु कुंवरि
 नन्दलाला ।
 ब्रजजन मुदित ओट हो निरखत निमिष न लागत
 नव निकुञ्ज-लता-द्रुम-जाला ॥

२५

रत्न-जटित कनक थाल मय्य सोहें दीपमाल
 अगरादिक चन्दन अति बह सुगन्ध माई ।
 घन-नन-घन घण्टा घोर भन-नन भालर टकोर
 तनन ततत थैर थैर करति है एकदाई ॥
 तन-नन-नन तान मान रागरङ्ग खर बंधान
 गोपीजन गाधें गीत मङ्गल वधाई ।

चतुर्भुज गिरिधरण लाल चारती बनी रसाल
वारत तन मन प्राण यशोदा नन्दराई ॥

२४

मङ्गल-आरती कीजि भोर ।

मङ्गल जन्म करण गुण मङ्गल मङ्गल यशोदा
माखनचोर ॥

मङ्गल मुकुट वेणु वनमाला मङ्गल-रूप ललन
मन मोर ।

जन भगवान् जगत्मय मङ्गल मङ्गल राधा
युगल किशोर ॥

२७

श्रीगोपाल जकी आरती करतु हैं ।
घण्टा ताल पखावज बाजि पञ्चमुखी बाती बरतु हैं ॥
शिव विरश्चि नारद इन्द्रादिक सब मिलि गावत
वीण बजतु हैं ।

श्याम प्रभुको देखत सब तन-मन-धन
वारि वारि डरतु हैं ॥

२८

श्याममुन्दर प्राण प्यारे क्षण क्षण जिनि होहु न्यारे ।
नेककी ओट मीन ज्यों तलफत त्यों तलफत
नयननके तारे ॥

मृदु मुसकानि वङ्क अवलोकनि उगमग चलनि
सहजमें सुटारे ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधर बानक पर कोटिक
मन्मथ वारे ॥

२९

वरणत तज न बने सुन सजनो रगमगो बेष वन्यो
गोपालको ।

रसना जो हाँहि सदा कोटिक रूप गोवर्द्धनधारी
लालको ॥

श्याम धाम कमनीय वरण सखी मानो तरुण घन
तरु तमालको ।

युवती-लता गात अरुभानी पान करत मधु
मधुप मालको ॥

नख शिख मदन कोटि लावण छवि भूषण वसन
नयन विशालको ।

कृष्णदास प्रभु सुरति सुधानिधि ताप हुरण तिय
विरह ज्वालको ॥

३०

श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस्पर
करत विहार ।

उन उनकी पहरो मोतिनकी माला उन उनको
पहरो नौसरको हार ॥

लटपटी पेंच संवारति प्यारी अलके संवारत
नन्दकुमार ।

सुरदास प्रभु नागरि नागर विपरीत भूषण करत
शृङ्गार ॥

३१

चिरई चुहचुहानो चन्द्रकी ज्योति परानी
रजनी विहानी प्राची पियरी प्रवानको ।

तारका दुरानी तम घटो तमचर बोले अवन
भनक परी राग ललितके तानको ॥

भृङ्ग मिले भार्या बिकुरी जोरी कोक मिले
उतरी प्रतिष्ठा अब कामके कमानको ।

अथवत आये गृह बहुरि उदय भानु उठो प्राणनाथ
महाजनन मणि जानकी ॥

ब्रज घर घर यही करत चबाब लोग बार बार
कहनि करनि डरनि घरनि धरनि पग आनको ।

सुरदास प्रभु नन्द सुवन सिधारो धाम सुनत
उठे छवि कृपाल कृपाके निधानकी ॥

३२

काहे न सेइये गोकुल नायक ।

भक्तनको ठाकुर भगवान् सकल सुखनिको दायक ॥
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक जाके आञ्जाकारी ।

सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि वरुण कुवेर भाण्डारी ॥
औरो नृपति कछो सब माने सन्मुख विनती कीजे ।

तुम प्रभु अन्तर्यामी व्यापक द्वितिय साखि क्वी दीजे ॥

जन्म कर्म अवतार रूप गुण नारदादि गुण गावे ।
परमानन्ददास श्रीपति यश अधम भले विसरावे ॥

१२

वलिहारी पद-कमलकी जिन मह शत लक्षण ।
ध्वज वज्राङ्कुश यव रेखा ध्यान करत विचक्षण ॥
ते चिन्तत भय-ताप हरत शीतल सुखदायक ।
नख-मणिकी चन्द्रिका ज्योति उज्वल व्रज-नायक ॥
वृन्दावन गोसङ्ग फिरत भूतल-कृत पावन ।
गङ्गादिक तीर्थ प्रसाद भक्तन मन भावन ॥
भक्ताधाम कमला निवास माया गुण वादक ।
परमानन्द ते धन्य जन्म जे सगुण अराधक ॥

१४

माई हौं आनन्द गुण गाऊं ।
गोकुलकी चिन्तामणि माधव जो मांगों सो पाऊं ॥
जबतें कमल-नयन व्रज आए सकल-सम्पदा बाढी ।
नन्दरायके द्वारे देखो अष्ट महार्हासिद्धिं ठाढी ॥
फूल्यो फूल्यो सकल वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजी ।
मागे मेह इन्द्र वर्षावे कृष्ण कृपा सुख जोजी ॥
कहति यशोदा सखियन आगे हरि उत्कर्ष जनावे ।
परमानन्ददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावे ॥

१५

विलगु जिन मनो रो कोउ हरिको ।
भोर ही आवत नाच नचावत खात दही घर घरको ॥
प्यारो प्राण दीजे जो पइये नागर नन्द-महरको ।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक राधिका वरको ॥

१६

सखी तेरे चपल नयन अरु बड़े बड़े तारे ।
हरि मुख निरखि न मात पटनिमें निशदिन
रहत उघारि ॥

जो आगे ते पत्य रोक्कते न श्रवण तो ना जानो
कहाँ चले जाते अपटारे ।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधरण रसिक ए कृपारस
सींचे अति बाड़े भारे ॥

२०

तेरे सुखकी निकाई मोपे वरणि न जाई ।
अङ्ग अङ्ग छवि छाई नयनन लागे सुहाई
ऐसी रचि पचि विधि विधिके बनारै ॥
भौहनकी कुटिलारै नयनन अरुणतारै नासिका
सुमन बनो अमर सुधारै ।
धौधो प्रभुके मन ऐसी भाई कहत न ककु बनि घाई
और सौहेंको सौहें तेरिये दोहारै ॥

२८

कोऊ मैया बेर बेचन आई ।
सुनत हि टेर नन्दराव वरमें भौतर भवन बुलाई ॥
सूखत धान परे आंगनमें कर अञ्जुली बनाई ।
ठुमक ठुमक चलते अपने रंग गोपोजन वलि जाई ॥
लिये उठाय रिभाय कर गोपो सुख चूमत न अघाई ॥
परमानन्द स्वामी आनन्दे बहुत बेर जव पाई ॥

२९

नन्दकिशोर पै रो करन बाहनो न पाऊं ।
गोरमके मिस रस ही दंढत मोहत मोहन मीठी
तानन कैसेके दधि छिपाऊं ॥
गोरस मेरो घर हि बिके है काहेको वृन्दावन जाऊं ।
आशकरण प्रभु मोहन नागर यशोमती जाय सूनाऊं ॥

३०

भोर ही दान मांगत मोसों गिरिधर ।
प्रातहि उठिके चली जो नगर को बेचन दधि
मटुको धरि शिर पर ॥
जो तुम हमसो रारि करहुंगे तो हम सब मिलि
उलटि जाहिं घर ।
सांची कहो धीं बात व्रजपति प्रभु तुम कौन टव
परो तिहारो मनहर ॥

३१

हों तकि लागि रह्यो रो माई ।
जब गृहते दधि लै निकसे तब मैं बांह गह्यो रो माई ॥
हंसि दीन्हो मेरो सुख चितयो मीठी सो बात
कह्यो रो माई ।

ठगि लु रही चेटक सो लागो परि गई प्रीति
 सही री माई ॥
 बैठी नेकु जाउं वहिहारो लार्ज दौर दही री माई ।
 परमानन्द सयानी ग्वालिन सर्वस्व दे निवही री माई ॥

४२

सुन्दर सांवरे मुरली अधर धरी ।
 सुनि सिद्ध समाधि टरी ॥
 सुनि थके व्योम विमान ।
 सुरवधु चित्र समान ॥
 ग्रह नखत तजत न रास ।
 वाहन बंधे धुनि पास ॥
 सुनि आनन्द उमगि भरे ।
 चल थके अचल टरे ॥
 चल अचल गति विपरीत ।
 सुनि वेणु कल पद गीत ॥
 भरना भरे पाषाण ।
 कन्दर्प मोहे गान ॥
 सुनि खग मृग मौन धरी ।
 फल तिन हुकी सुधि विसरी ॥
 सुनि धेनु मृग थकि रहे ।
 लण दन्त ह नहि गहे ॥
 वहरा न पीवे चीर ।
 पक्षी मनो सुनि धीर ॥
 द्रुमवेली चपल भई ।
 नव अङ्गुर प्रकट नई ॥
 तहां विटप चञ्चल पात ।
 हरि निकट को अकुलात ॥
 अङ्गुरित पुलकित गात ।
 अनुराग नयन चुचात ॥
 सुनि चञ्चल पवन थक्यो ।
 सरिता जल चलि न सक्यो ॥
 सुनि थक्यो मन्द समीर ।
 उलट्यो जु यमुना नीर ॥

सुनि ध्वनि चली ब्रजनारि ।
 सुत देह गेह विसारि ॥
 मनमोहन रूप धरो ।
 तब काम को गर्व हरो ॥
 नव नील तन घनश्याम ।
 नव पीत पट अभिराम ॥
 नव मुकट नव वनदाम ।
 ए लावण्य कोटिक काम ॥
 मन मोह्या मदनगोपाल ।
 तन श्यामल नयन विशाल ॥
 श्रीमदनमोहन लाल ।
 संग नागरी नव बाल ॥
 नव कुञ्ज यमुना कूल ।
 देखत सूरदासहिं फूल ॥

४३

चलीरी मुरली सुनिये कान्ह बजाई यमुना तीर ।
 तजि लोक लाज कुलकी कानि गुरुजनकी भोर ॥
 यमुना जल थकित भयो वहरा न पीवे चीर ।
 सुर विमान थकित भए थकित कोकिल कीर ॥
 देहकी सुधि विसरि गई विसरा तनकी चीर ।
 मात तात विसरि गए विसरो बालक वीर ॥
 मुरली धुनि मधुर बाजे कैसेके धरो धीर ।
 सूरदास मदनमोहन जानत हो परपीर ॥

४४

गोकुल गांव रसीलो पिय को ।
 मोहन देखि मिटत दुख जिय को ॥
 मोर मुकुट कुण्डल वनमाला ।
 या छवि सों ठाढ़े नन्दलाला ॥
 कर मुरली पीताम्बर सोहे ।
 देखत रतिपति को मनमोहे ॥

चाल

देखत रतिपतिको मन मोहे चकितसो डोलत फिरे ।
 धीर कहु न सुहाय तनको बैठि उठत गिरत फिरे ॥

मोहि मदन वाण समान लागे पीर नेकु न आवहीं ।
 और कछू उपयुय नाहीं श्याम वैद्य बुलावहीं ॥
 मैते तजौ लाज गुरजनकी ।
 अबै मोहि सुधि न परे या तनकी ॥
 लोक कहे इह भई मति बीरी ।
 सुत-पति छाड़ि फिरत वन दौरी ॥

चाल

छाड़ि सुधि न संभार तनकी कृष्ण छवि हिरदे वसी ।
 मदनमोहन देखे भावे विहंसि कुञ्जल में धसी ॥
 कुञ्जधाम किशोर ठाढ़े केसर खीर बनाइके ।
 चन्द्रिका पर वारि डारों वलि गई या भाइके ॥
 भार परी इह घर पर वास ।
 नित उठि कौन करे यह सास ॥
 इत नयन बांधो प्रण भारी ।
 निरखत रहत सदा गिरिधारी ॥

चाल

निरखिवो करे श्यामसुन्दर सहस्र कनक प्रकासरी ।
 कालिन्दीके तीर ठाढ़े अवण सुनिये बांसरी ॥
 मदन मूरति श्याम देखत मरी मनकी आसरी ।
 सूर हरिको सुयश गावत सदा चरण निवासरी ॥

४५

वृन्दावन नव निकुञ्ज ठाढ़े उठि भोर ।
 बांह जोरि वदन मोरि हंसत सुरत रतिकी करि
 ककु सकुचत पुनि लजात नयनन की कोर ॥
 करत कबहुं वेणुनाद अधर प्याइ सुधाखाद
 पक्षीगण प्रसुदित मन बोलत चहुं ओर ।
 रसिक प्रियतम छवि निहारि उदयो जनु घन विचारि
 बार बार उमगि उमगि नाचत हैं मोर ॥

४६

आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख वर्षत अति
 निरखि युगलवर ।
 गौर श्याम अभिराम रस भरे लटक लटक
 पग धरत अवनपर ॥

कुच कुङ्कुम रञ्जित मालावलि सुरतिनाथ
 श्रीश्याम कामधर ।
 प्रिया प्रेमके अह अलङ्कृत चित्रित चतुर शिरोमणि
 निज कर ॥
 दम्पति अति अनुराग मुदित कल गान करत
 मन हरत परस्पर ।
 हित हरिवंश प्रशंस परायण गायन अलि
 खर देत सुघर तर ॥

४७

जोई जोई प्यारो करे सोई सोई मोहि भावे
 भावे मोहि जोई जोई सोई सोई करे प्यारो ।
 मोको ता भावतो ठीर प्यारके नयनन में
 प्यारी भयो चाहें मेरे नयनन को तारो ॥
 मेरे तन मन प्राण हते प्रियतम प्रिय
 अपने कोटिक प्राण प्रोतम मोसों हारो ।
 हित हरिवंश हंस हंसनी श्यामल गौर
 कहो कौन करे जलतरङ्गनि न्यारो ॥

४८

प्रात समय दोज रस लम्पट सुरति युद्ध जय युत
 अति फूल ।
 अम वारिज घन विन्दु वदन पर भूषण अङ्ग अङ्ग
 प्रतिकूल ॥
 ककु रङ्गो तिलक शिथिल अलकावलि वदन
 कमल पर अलिकुल भूल ।
 हित हरिवंश मदन रंग रंगि रहे नयन वैज
 कटि शिथिल दूकूल ॥

४९

आजु तो युवती तेरो वदन आनन्द भयो पियके
 सङ्गमके सूचत सुख चयन ।
 आलस दलित बोल सुरङ्ग रंगे कपोल विथकित
 अरुण उनीदे दोज नयन ॥
 हचिर तिल लेस कोरति कुसुम केश शिर सोमन्त
 मानो तेन ।

करुणाकर उदार राखत कहु न सार असन
वसन लागत जब देन ॥
काहे को दुरत भीर पलटे पीतम चोर वश किये
श्याम सखी शत मैन ।
गलित उरसि माल शिथिल किङ्किणी जाल हित
हरिवंश लतागृह सैन ॥

५०

प्यारे बोली भामिनी आज नोकी यामिनी ।
भेंटि नवीन मेघ सौदामिनी ॥
मोहन रसिक राय रो माई तासे जो मान करे
ऐसी कौन कामिनी ।
हित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी राधिका रमण
से मिला गजगामिनी ॥

५१

कौन चतुर युवती प्रिया जाहि मिलत लाल
चोर ही रैन ।
दुरत क्यों बदुरे सुन प्यारे रङ्गमें गहेल चैन में नैन ॥
उर नख चन्द्र विराजि पट अटपटे से वैन ।
हित हरिवंश सुरति राधापति प्रमथित मैन ॥

५२

प्रात समय उठि हरि नाम लीजि
गोविन्द नाम लीजि आनन्द सों सुखमें दिन जाय ।
चक्रपाणि करुणामय केशव विघ्न विनासन
यशोदा माय ॥
कलि मल हरण तरण भवसागर भक्त चिन्तामणि
कामधेनु ।
ऐसी मीरन नाम कृष्णको वन्दनीक पावन पदरेनु ॥
शिव विरिञ्चि इन्द्रादि देवता मुनिजन करत
नामकी आस ।
भक्तवत्सल ऐसी नाम कल्पद्रुम दग्दायक
परमानन्द-दास ॥

५३

छवीले लाल छवि तेरी मोहि नोकी लागतु है ही
तन मन यौवन वारों रे ।

भोर भए आए मेरे चङ्गना हीं पलकन सों
पग भारों रे ॥
सुख दीजि रस लीजि रैन को हीं चितनेनेकु नटारों रे ।
कृष्णजीवन लहरामके प्रभु सङ्ग नव, र्तत् नृङ्गार
सिंगारों रे ॥

५४

नयन मेरे घंघट में न समात ।
सुन्दर वदन नन्दनन्दन को निरखि निरखि न अघात ॥
अति रसलुब्ध महामधु-लम्पट जानत न एको बात ।
कहा कहीं दर्शन सुख माते आंठ भये अकुलात ॥
बार बार वरजत हीं हारो तज टेव नहिं जात ।
सूर रसिक गिरिधर विनु देखे अल्प कल्प शत जात ॥

५५

अंखियन वाहो टेव परी ।
कहा करों वारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरो ॥
चितवत रहत चक्रोर चन्द्र लो नहीं विसरत
एक घरी ।

यद्यपि हटक हटक हीं राखति त्यों त्यों होति खरो ॥
चुभि जु रही वा रूप जलदमें प्रेम पीयूष भरो ।
सूरदास गिरिधर तन परशत लूटत निशि सगरो ॥

५६

राधे वसन श्याम तन चीन्हीं ।
सारङ्ग वदन विलास विलोचन हरि सारङ्ग जानि
रति कीन्हीं ॥
सुधापान करिके नोकी विधि रछो शेष शशि
सुद्रा दीन्हीं ।
सूर सुवेश आहि रतिनागर भुज आकर्षि
वाम कर लोन्हीं ॥

५७

राधे तू अति रङ्गभरी ।
मेरे जान मिली मोहन सों अञ्जल पोक परी ॥
छूटी लट टूटी नकवेसरि मोतिनकी दुलरी ।
मैं जानो तू फौज मदनकी लूटि लई सगरी ॥

अरुण नयन सुख शरत् निशाका सत् कुसुम
गलित कवरी ।

सूरदास प्रभु नगधरके सङ्ग सुरति समुद्र तरी ॥

५८

श्याम श्यामा सीं अति रति कीनी ।

अमजल विन्दु वदन यों राजत मनो शशि पर
मोतिन लर दोनो ॥

सुक्तामाल टूटि यों लागति जनु सुरसरी
अधोगति लीनी ।

सूरदास मनहरण रसिकवर राधा सङ्ग सुरति
रस भीनी ॥

५९

श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परश दोउ
करत शृङ्गार ।

इन पहिरो वाकी मोतिन माला उन पहरो
वाकी नौसर हार ॥

पंच संवारे छषभानु नन्दिनी अलक संवारत
नन्दकुमार ।

हंसि सुसकाय करत दोउ बातें वदन निहारत
बारम्बार ॥

लटपटो पाग मरगजी माला कहि न जात शोभा
सुखसार ।

श्रीभटके प्रभु युगलकी दूर्ती मेरे आंगन करत विहार ॥

६०

सखो रो और सुनहु एक बात ।

आजु गोपाल हमारे आए उठत प्रात ही प्रात ॥

कहुंके नयन उनादे मोहन अपने घरको जात ।

आगे हार नन्द हुते ठाढ़े ताते गए न सकात ॥

लटपटो पाग अटपटे भूषण आलस युक्त जंभात ।

मानो शाह दण्ड ले छाड़े दे दे चुहटौ गात ॥

ऐसी भांति कहां हुते मोहन मैं बूझि सुसिकात ।

ताते कहु उत्तर नहिं आयो सूर श्याम सकुचात ॥

६१

सुन्दर घनश्याम लाल पङ्कजलोचन विशाल

आंगन ब्रजरागो जूके ठुमक ठुमक धावे ।

पहुंचो कर बनो चारु कण्ठमें विचित्र हार लटकन
लटके सुठार कहत न बनि आवे ॥

रुनन भुनन धरे पाइ निरखि मुदित यशोदा माइ

किङ्किणी क्षति नूदुर ध्वनि अवण सुख बढ़ावे ।

श्रीविठ्ठल विहारो अङ्ग कोटि वारिके अनङ्ग ठाढ़ो
युवतो अपार मनमें ससु पःत्रे ॥

६२

प्रात समय आवत लालस भरे युगल किशोर

देखे कुञ्चनको खोरी ।

लटपटो पाग कुटे बन्द प्रियके प्रियाको वेणो

बियुरी छूटो कच डोरो ॥

ललितादिक देखति जु नयन भरि अति अद्भुत

सुन्दर वर जोरी ।

विठ्ठल विपुल पुहप यर्पन तत्र तत्र टूटत है

अब हो ही होरी ॥

६३

आजु बनो लाड़िलो प्रियतम सङ्ग आवति ।

सोधि भाजो लट छूटो प्रियके अंग भुजा पाड़े

सखा सुघर विभास हिं गावति ॥

अमजल विन्दु निशाके सुख सूचित मोहन वदनसों

वदन मिलावति ।

विपुल विपुल कल रसिक विहारोलाल आनन्द

समुद्र मथि मदन भलावति ॥

६४

आई भोर भये प्यारो छूटो लट बगरो ।

बांह जोरि लाल सङ्ग निगा किये कुञ्च रङ्ग

खवश किये विहारो कुंवरि अगरी ॥

निशाके चिह्न फीके गौर श्याम तन छवि पदनख

पर वारीं जितो तेरो नगरी ।

विट्ठल विपुल केलि मनहु कच्छन वेलि अरुभी
कुच्छतमाल आवे कुच्छ डगरी ॥

६५

प्यारी तेरी चाल चितवनि बांकी ।
बांके वसन आभरण बांके वङ्क रंख उर आंकी ॥
वङ्क स्वभाव मिलन बांकी प्रिया वङ्क कोर ही भांकी ।
विट्ठल विपुल विहारी बांके मिले ताते तू
फिरत निशांकी ॥

६६

ज्यों ही ज्यों ही तुम राखत हो त्यों ही त्यों ही
रहियत है हो हरि ।
और अचरचे पाइ धरो सु तो कहो कौन के पेंड भरि ॥
यद्यपि हों अनभायो कियो चाहों कैसे करि
सकों जो तुम राखो पकरि ।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी पिञ्जराके
जनावरलों तरफराइ रहो उड़वेको कितो कुकारि ॥

६७

काहको वश नाहीं तुम्हारी कृपाते सब होय
विहारी विहारनि ।
और मिथ्या प्रपञ्च काहको भाषिये सो तो है हारनि ॥
जाहि तुम सों हित ता सो तुम हित करो
मत्र सुख कारनि ।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी
प्राणनक आधारनि ॥

६८

कबहुं कबहुं मन इत उत जात यातं कौन है
अधिक सुख ।
बहुत भांतिनेते घर आनि राखो माहिं तो
पावतो दुख ॥
कोटि काम लावण्य विहारी तामे मुहचहां सब
सुख लिये रहत रख ।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी दिन
देखत रहों विचित्र सुख ॥

६९

आइये जू आइये जिनि दिवाइये मो मन रिस ।
शिथिल अङ्ग पग धरत डगमगे भूठे ही करत
मातेको मिस ॥
अब जु पाये हो मेरो जो समोध करत तरसाए
प्राण सगरो निस ।
गोविन्द प्रभु पिय जाय शिरोमणि ओसन कैसे
जात तिस ॥

७०

नवल निकुञ्ज महल रस दोज री राजत हैं रङ्गभीने ।
कुसुमित सेज भोर उठि बैठे रस आलस
अंशनि भुज देने ॥
गौर श्याम तन नील पीत पट सभ्रम पलटि वसन
तन लीने ।
प्रिय विहारी प्रिया सङ्ग विलसे अति सुरति रङ्ग
शुभगसिन्धु ललितादिक टग मीने ॥

७१

चञ्चल ली चली री चित चोर ।
मोहन को मन यों वश कर लियो ज्यों चकरी
सङ्ग डोर ॥
जोलों न देखत तव मूर्ति तोलों पलकन लागत
निमिष न ओर ।
नन्ददास प्रभु प्रेम मग्न भये नागर नन्दकिशोर ॥

७२

प्रात समय जागी अनुरागी सोवत उठी री श्याम
जूकी सङ्गिया ।
बार संवारति उठी री दक्षिण कर वाम भुजा बकुटी
भरि अङ्गिया ॥
भालमें सुहाग भारी कञ्चुकी की छवि न्यारी
पहरे कसूंभी सारी सोधे रगबगिया ।
अग्र स्वामिनी लड़ाई बहुत कौहीं बड़ाई
फूलो फूलो फिरे सब रैन रङ्गरङ्गिया ॥

७२
 हों जु निभर्मी बैठो पिय औचक मूँदे री
 पाछे ते नयन ।
 अछन अछन पग धरत धरणिपर आवत जाने मयन ॥
 हों इतने ही चौकि परी मेरी आली मेरो छतिया
 धीर धरय न ।
 जगन्नाथ कवि रायके प्रभु रीभि हंसे तब हों हुं
 हंसो वर सुख कहत बमय न ॥

७४
 आवनि कुञ्जते पोह पाँरी ।
 पिय जंभात अरसात रसमसा ललन खुवावत बीरो ॥
 सुरति शिथिल अङ्ग अङ्ग परस्पर अङ्ग भुज
 भरि लोन्हीं श्याम रसीरो ।
 विद्वल विपिन विनोद विहारी नहीँ ललितादिक नारी ॥

७५
 श्यामके भुजन बोच राखि है सुरति सींच साई
 सुकुमारी जागो तमचर शरते ।
 हा हा कान्ह उदय भान अब हीँ होय गो जान
 धुकर धुकर छातो गुरुजन डरते ॥
 मधुर वचन कही प्यारे को भलो मनायो चुम्बन
 अकोर देति निरवारि गरते ।
 आंगनमें ठाढ़े आइ ललिता लीति बलाइ
 सुर स्वामीनी राजे आनन्दके भरते ॥

७६
 तेरे नयन लोने री जिन मोहे श्याम सलोने ।
 अति ही दीर्घ विशाल विलोल कारं भारे पिय
 रस रिभये कीने ॥
 वदन ज्योति चन्द्र हृते निर्मल कुच कठोर अति
 ठोन बोने ।
 तानसेन प्रभु सों रति मानी कस्यन कसोटो कसोने ॥

७७
 हों गई बहुरा मिलावन श्यामने वा मारी ।
 धरपो मूर्छि परी सुन सजनी तनइ की सुधि बिसारी ॥

सखी एक जब जल मुख धोयो क्रम क्रम अंचरा
 संभारी ।
 सुरके प्रभु बरजो इन अंखियन ये सब ही ते न्यारी ॥

७८
 चले उठि कुञ्ज भवन ते भोर ।
 उगमगात लट कत लर छूटी पहरे पीत पटोर ॥
 अरुण नयन आलस युत घूमत विवि मुख
 चन्द्र अकोर ।
 गिरि गिरि एत गलित कुसुमावलो शिथिल शीर्ष
 कच डोर ॥

लपटित वसन रसन मणिभूषण कुण्डल सों लट छोर ।
 परमानन्द मिलो गिरिधर सों रससागर भकभोर ॥
 ७९
 गुजरी शशिवदनो सुन्दर यौवन वाली ।
 शिर कनक मटुकिया गो-रस बेचन चाली ॥

८०
 चली दधि बेचन किशारो कुंवरि है गजगामिनी ।
 नखशिख रूप अनूप सुन्दर दशन द्युति मानो दामिनी ॥
 श्यामा पियारी कुल उज्यारी विमल कीरति जजरो ।
 यौवन वाली सरस सुन्दर चन्द्रवदनो गुजरी ॥
 हृन्दावन भीतर श्याम मनोहर घेरो ।
 हों तुम्हे जान न देहीं लेहीं दान निबेरो ॥

८१
 लेहीं दान निबेरि आपनो करो नन्द दुहाइयां ।
 जाति चोरो बेचि नित प्रति आजु पकरन पाइयां ॥
 बोलि ग्वाल लुटाय दूं दधि करो जो भावे मना ।
 घेरो मनोहर श्यामसुन्दर ग्वालिनी हृन्दावना ॥
 छाड़हु मेरो अंचरा हट जिनि करहु गोपाला ।
 सुन्दर मनमोहन प्यारं अवार हात नन्दलाला ॥

८२
 नन्दलाल होत अवार प्रति अण सघन वनमें
 अति डरों ।
 मेरे सङ्गकी सब बेचि बगदों कहा उत्तर घर करों ॥

कब कब तुम्हारी दान लागे वादि भगरो ठान ह ।
 वलि जाचं मानो कछो मेरो लाल अंचरा छाड़ ह ॥
 अति चतुर ग्वालिनो अन्तर नेह बढ़ायो ।
 श्याम मनोहर जिय को प्यारो पायो ॥

८८

पायो मनोहर श्यामसुन्दर सुरति सुख मानो रली ।
 नव नेह अति रस रङ्ग बाढ़यो दान दे उठि घर चली ॥
 कहत श्रीहरिदास नागर कामिनो गुणसागरी ।
 जिन रसिक श्रीहरिराय मोहे अधिक चातुर नागरी ॥

८९

दधि मयति ग्वालि गतिभेद सेँ ठाढ़ी ।
 यौवन मदको भुक्ति नागलोक सेँ वेणी करकत
 कटि छवि बाढ़ी ॥

तनसुख सारी घनबेलि को लहंगा कसुको
 रेशमकी बनी उरोज गाढ़ी ।
 सूरको प्रभु तहां फिरि फिरि देखत मानो
 सांचे भरि काढ़ी ॥

९०

अति ही अरुण हरि नयन तिहारै ।
 मानहुं रति सेँ भए रगमगे करत केलि पिय
 पलक विसारै ॥

मन्द मन्द डालत शङ्कित ह्रै शोभित मध्य,
 महा रतनारै ।

मानहु उकसि कमल सम्पुटमें उड़ि न सकत
 चञ्चल अलि बारै ॥

हिलि मिलि तमगण रैन जनावत रतिरस सुगत
 भ्रमत अनियारै ।

मनहुं सकल युग जीति करन को काम वाण
 खरसार संवारै ॥

अटपटात अरसात युगल पुट कहुं घूमत कहुं
 करत उघारै ।

मनहु मत्त मर्कत मणि अङ्गण खेलत खञ्जरीट
 चटकारै ॥

बार बार अवलोकि कुरखियन कपट नेह मन
 हृत हमारै ।
 सूर श्याम देखत सचुपावत दुख मोचन लदेचन
 रतनारै ॥

९१

उठे प्रात तोतरात कहत तोतरी तोतरी बात
 मांगत हैं दधि माखन लाइये यशोदा मात ।
 बाजत नूपुर सुहात नाचत त्रैलोक्यनाथ
 देखत सब गोपो ग्वाल नयनन नाहीं अघात ॥
 नन्द सुवन सुखदायी चिरञ्जीवो री कन्हारै
 जोवति सुख चाहि चाहि या निधि को माई ।
 बाल केलि देखि आई रोम रोम सचुपाई
 श्रीवल्लभ हरखि निरखि लेत हैं बलाई ॥

९२

कटि पीत पट सुख सुरली मुकट शीर्ष
 कांख लकुट नटवरको चटक ।
 तिलक ताटङ्ग कान कुण्डल कपोल वनमाला को
 लटक तामें चटक मटक ॥
 वपु घनघटा तामें मोतीहार बग ठठा सुन्दर शुभग
 पग पावरी खटक ॥
 ब्रजकी भटक दधि चोरी की सटक ऐसी सिंह
 मूर्ति पुनि मनकी अटक ॥

९३

जो सेँ हरि आपुनपो न जनावे ।
 तो सेँ सब सिद्धान्त स्मृति युत पढ़े सुने ते न आवे ॥
 सुनि विरिञ्चि नारायण पै नारद सेँ कहि दोन्हों ।
 नारद कही वेदव्यास सेँ आपुन खोज न कीन्हों ॥
 वेदव्यास औषधकी नाई पढ़ि मन ताप नशायो ।
 तिन पै सुनि शुकदेव परीक्षित राजाको लु सुनायो ॥
 यद्यपि नृपति सुनी ब्रजलीला दशम कछो शुकदेवा ।
 सर्वात्मा भाव नहिं उपज्यो ताते करो न सेवा ॥
 श्रीभागवत अमृत रस मधिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम ।
 करि आवर्ण दूरि ब्रजजनके हाथ दिये पुरुषोत्तम ॥

सञ्जा अब मृङ्गार भोग रस श्रीवल्लभ प्रकटायो ।
करि कृपा अपने जोधिन पर जगजीवन खाद चखायो ॥

८५

गोविन्द दधि न विलोवन देही ।
बार बार पाय परति यशोदा कान्ह कलेज लेही ॥
बांधि कटि पट सुद्र घण्टिका मुदित नन्दजू को राणी ।
कञ्चन चीर हार उर मणिगण वलय घोष मृदु वाणी ॥
एक-एक ते होय देव दैत्य सब कमठ मन्दराचल जानी ।
देखत देव लक्ष्मी कम्पी जब गही गोपाल मथानी ॥
कृष्णचन्द्र ब्रजराज रमापति भूतल भार उतारी ।
परमानन्ददास को ठाकुर ब्रज वसि जगत् उधारी ॥

८६

जान्यों जान्यों रो सयान तेरो प्राणेश्वर सों
ते कियो मान भयो है विद्वान ।
प्रिय को तेरो हि ध्यान मेरो शीख सुन कान
जामें बसे प्रान ता सा कौसो धौ गुमान ॥
सुन रो मुरली गान आछी नोको मीठी तान
सङ्केत-स्थली रचो कुसुम-वितान ।
सूरदास प्रभु जान सकल शिरोमणि मान
मदनमोहन तेरे सुखको निधान ॥

८७

प्रिय हृदय राखत हैं निशि दिन आजु कहां तू
रात रह्यो रो ।
बिच बिच नाहीं नाहीं करत सब तियनमें तुम सो
कठिन कह्यो रो ॥
मो गुरीब पर कीजे कृपा ऐसी मति तेरो किन हूं
धोई सही रो ।
रसिक प्रियतम सो मिलि प्रभात अति रुचि
ता सो निबह्यो रो ॥

८८

बारो कन्हैया रो मोहि भावे ।
आछी मीठी तान गावे मुरली बजावे नयनन
मांभ रिभावे ॥

निरखि परखि देखि जिय को भरम गयो सांवरी
मूर्ति मेरो सर्वज्ञ चुरावे ।
अति ही अचगरो गैन को प्रभु प्यारो सब गोपिन
को नायक कहावे ॥

८९

आली रो पीरो पद भई है निकसि ठाढ़ी भई
हार कुण्ड ऐनके ।
रथ खींचो वदन निरखत ही जी मों जान्यो चन्द्रमा
ताते धोखे रैनके ॥
नयन कुरङ्ग जानि अियमें आयो सत् भाव
आधो विम्ब द्युति आधो हित रक्षा चैनके ।
सूरदास सखि श्याम मोतीमाल तारागण और उपमा को
देखि मदनमोहन प्रिय सङ्ग सुख मैनके ॥

अथ श्रीयमुनाके पद

तू यमुना गोपाल हि भावे ।
यमुना यमुना नाम उच्चारे धर्मराज ताको न चलावे ॥
जो यमुना को जानि महातम जो यमुना
जल पान करे ।
जो यमुना अवगाहे निशिदिन चित्रगुप्त
लेखो न धरे ॥
पद्मपुराण कथा इह पावन धरणी मुख वाराह कह्यो ।
तोर्थ महात्म्य जानि जगत् गुरु इह प्रसाद
परमानन्द लह्यो ॥

९

दोज कूल खम्भ तरङ्ग सीढ़ी मानो श्रीयमुना
जगत् वैकुण्ठ नखनी ।
अति अगुकूल कलोलनके भर लिये जात हरिके
चरणन सुख देनी ॥
जन्म जन्मके दुक्त दूर करणी काटत कर्म
धर्म धार पेनी ।
श्रीत स्वामी गिरिधरण पियारी सावल गात
कामल दल नेनी ॥

निरखत ही मन अति आनन्द भयो प्रात हो देखि
प्रभाकर कन्या ।
जल परशत ही सकल अघ भाजे ज्यों हरि देखि
हरिणकी सन्या ॥
और जीव का औरनकी गति मेरी गति हो
तुम ही अनन्या ।

ब्रजपतिकी तुम अति ही पियारी तुम सङ्गमते
सुरसुरि धन्या ॥

मेरे कुल कर्म कलि मघ नाशन देखि प्रवाह
प्रभाकर कन्या ।
वह देखो पाप जात जित तित बहे ज्यों मृगराज
देखि मृग सन्या ॥

दे पयपान पुत्र लों पोषत जननी कृतार्थ
धन्यवह धन्या ।

दियो चाहि गदाधर जूषे चरण शरण अति
प्रोति अनन्या ॥

अथ योगदाजीके पद

आगे आगे रथ भगीरथ जूको चख्यो जात
पाछे पाछे आवति तरङ्ग रङ्ग भरी गङ्ग ।
भलमलात अति उज्वल जलकी ज्योति अवनि
रवनि मानो शीर्ष भरे मोती मङ्ग ॥
जाय परशे हैं भूप कबके भस्म रूप ठौर ठौर
जागि उठे होत सलिल सङ्ग ।
नन्ददास मानो अग्निके यन्त्र कूटे ऐसे
सुरपुर चले धरे देव अङ्ग ॥

विभास—चरनो

जय भगीरथ नन्दनो मुनिचय चकोर चन्द्रनी
नर नाग विबुध वन्दनो जय जङ्ग बालिका ।
विष्णुपद सरोज जासि ईश शीर्ष पर विभासि
त्रिपथ गाय पुण्य पाथ पाप बालिका ॥
विमल विपुल वहसि वारि शीतल त्रयताप हारि
अमरवर विभङ्ग तर तरङ्ग मालिका ।

निज जन पूजो पहार शोभित शशि धवल धार
भञ्जन भवभार भक्त कल्प बालिका ॥
निज तटवासी विहङ्ग जलचर स्थल पशु पतङ्ग
कोट जड़ित ताप शिरस सरस पालिका ।
तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंश वीर विचरत
मति मेह गेह महिष कालिका ॥

२

श्रीगङ्गा जगतारण को आई ।
भगीरथ तपस्या कीन्हीं शिव ली शीर्ष चढ़ाई ॥
पापी दुष्ट अजामिल गणिका पतित परम गति पाई ।
परम पुनीत प्रीति ब्रह्मादिक वेदव्यास मिलि गाई ॥
नाम लेत तुव ध्यान धरत है तारत बार न लाई ।
विप्र गदाधर भरहाज कुल केवल गङ्गा सहाई ॥

३

जो जन गङ्गा गङ्गा कहै ।
जन्म जन्मके कोटि दुक्त सब छिन ही मांभ दहै ॥
ज्ञान करत ते मन वाञ्छित फल तत्क्षण तुरत लहै ।
ब्रजपतिकी प्यारी सङ्गमते बहु सुख देन चहै ॥

श्रीवल्लभ गुणमान

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतकी श्रीविठ्ठल प्रभुका
उठत ही रसना लोजिये नाम ।
आनन्दकारी मङ्गलकारी अशुभ हरण जन पूरण काम ॥
इहलोक परलोकके वन्धु को कहि सकत तिहारै
गुणग्राम ।
नन्ददास प्रभु रसिक शिरोमणि राज करो
श्रीगोकुल सुखधाम ॥

२

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतकी पुण्य पवित्र विमल
यश गाजं ।
सुन्दर शुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि
दृग दृगन सिराजं ॥
मोहन मधुर वचन श्रीमुखके अवण सुनि सुनि
हृदय वसाजं ।

तन मन प्राण निवेदि वेद विधि यह अपुनपो
हो सुभल कराजं ॥
रहो सदा चरणनके आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाजं ।
नन्ददास कह मागत हो श्रीबल्लभ कुलको
दास कहाजं ॥

प्रात समय श्रीमुख देखन को सेवक जन ठाढ़े
सब हार ।
जय जय जय श्रीवल्लभ नन्दन दर्शन दीजे परम उदार ॥
सुन्दर श्याम सुभगता-सीमा मेघ गभीर मधुर
गिरि धार ।
नयनन निरखत होत परम सुख अश्रुण सुनाए
वचन सुदार ॥
अवण मङ्गल जगभवन मङ्गलरस पुरुषोत्तम
लोला अवतार ।
जन भगवान् जाय वलिहारी अगणित लोला
महिमा नहिं पार ॥

प्रात समय उठि के जो सदा श्रीवल्लभ नन्दनके
गुण गैये ।
फिरि कर जोरि रूप चिन्तन करि उन हीके
चरणन शिर नेये ॥
सब साधनको सार इहै पद बार बार समुझैये ।
कहे हरिदास मानि शिख मेरो श्रीविठ्ठलनाथके
दास कहैये ॥

प्रात समय उठिके जो सदा श्रीवल्लभ नन्दनके
गुण गाजं ।
श्रीगिरिधर गोविन्द जूको नाम ले श्रीबालकृष्ण
जूको शीर्ष नवाजं ॥
श्रीगोकुलनाथ जूको प्रणाम करि रघुनाथ जू
देखे नयन सिराजं ।
श्रीयदुनाथ जू सङ्ग खेलत घनश्याम जू इनकी
प्रोति हो कहा सराजं ॥

यह अवतार भक्त हित कारण जो गाजं तो
राम पद पाजं ।
विनती करि करि मांगत ब्रजपति निशदिन
इनको दास कहाजं ॥

प्रात समय सुमिरो श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठलनाथ परम
हितकारो ।
भवदुःख जात भजन सुख पावत कलि मल हरण
प्रताप महारी ॥
पाये छोड़ि शरण नहिं कब हूं बांह गइकी
साज विचारी ।
आन आश्रय छाड़ि भजो पद हारिकेश प्रभुकी
वलिहारी ॥

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको परम पुनीत विमल
यश गाजं ।
अम्बुज वदन शुभग नयना अति अदणन ले
हिरदे बैठाजं ॥
जब जन निकट रहत चरणन तर पुनि पुनि
निरखि निरखि सुख पाजं ।
विष्णुदास प्रभु करो कृपा मोहि श्रीवल्लभनन्दन
दास कहाजं ॥

विशद सुयश श्रीवल्लभ सुत को प्रात उठत
अनुदिन नव गाजं ।
कलि मल हरण चित्त धरि राखूं उपजे परम
सुख दुःख बहाजं ॥
भक्त भ्रमर औ भक्तिरस जाने माने मन सों तिन हू
को छाजं ।
श्रीतखामो गिरिधारीके सुमिरण अष्ट महासिद्धि
नवनिधि पाजं ॥

श्रीलक्ष्मण सुत कामल प्रफुलित प्रकटे श्रीवल्लभ
कुलके दिनेश ।

आनन्दे तिहुं पुरके सब जन आनन्दे शिव
सनक सुरेश ॥
श्रीभागवत विस्तार करण को निज जन सब को
अति सुख देन ।
जन त्रैलोक्य जाय बलिहारी शीतल भए श्रीमुख
निरखत मनन ॥

१०

गायो न गोपाल मन लायो न रसाल लौला
सुनो न सुबोधिनी न साधु सङ्ग पायो है ।
सेयो न सवाद करि घरो अध घरो हरि
कबहुं न कृष्ण नाम रसना कहायो है ॥
वल्लभ श्रीविठ्ठलेश प्रभुको शरण आय
दोन हूँ के मूढ़ क्षण शोर्ष न नवायो है ।
रसिक कहाय अब लाज हूँ न आवे तोहि
मानुष शरीर धरि कहा धों कमायो है ॥

११

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज
पायो न प्रसाद साधुमण्डलीन जायके ।
धायो न धमकि वृन्दाविपिनके कुञ्जनमें
रह्यो न शरण जाय विठ्ठलेश रायके ॥
नाथ जू न देखि कक्यो क्षण हं क्वीलो क्वि
सिंह पौरि पख्यो नाहीं शोर्ष हूँ नवायके ।
कहे हरिदास तोहि लाज हूँ न आवे जिय
जनम गंवायो न कमायो कछु आयके ॥

१२

रूपरस माधुरी भग्या सलोनो पिय मुख देखे
प्रभात बात कछू कछू रतिरी ।
अरसात गात श्री जंभात मिले जात टग
उर भुज श्रीवा क्वि रस उभरतिरी ॥
कुण्डल कपोल अधर अरुण रहे लसि
अङ्ग अङ्ग रङ्ग सों तरङ्गता डरतिरी ।
प्यारे लाल वल्लभ रसिक पर तन मन
रोभि रोभि अंखियां न्योकावरि करतिरी ॥

१२

भोर ही श्रीवल्लभ वल्लभ कइये ।
आनन्द परमानन्द श्रीकृष्ण मुख सुमिरे
अहसिद्धि पइये ॥
श्रीर सुमिरो श्रीविठ्ठल विठ्ठल श्रीगिरिधर गोविन्द
ह्रिजवर भूप ।
श्रीबालकृष्ण गोकुलपति रघुपति यदुपति
नवघनश्याम स्वरूप ॥
पढ़ो सुसार श्रीवल्लभ वचनामृत जपो अष्टाक्षर
मन्त्र करि नेम ।
अन्य अरण कीर्तन तजि निशिदिन सुनो सुबोधिनी
धरि जिय नेम ॥
श्रीर सेवो सदा नन्द यशोमति-सुत प्रेम भक्ति
सहित जिय जानि ।
अन्याअय असमर्पित लेनो असदु अलाप
असदु सङ्ग हानि ॥
नयननि निरखो श्रीकालिन्दो श्रीर निरखो सुखद
ब्रजधाम ।
इह सम्पति श्रीवल्लभ ते पैये हरिजन नहीं
काहू सों काम ॥

१३

प्रात ही लीजे श्रीवल्लभ नाम ।
श्रीविठ्ठल श्रीगिरिधर गोविन्द श्रीबालकृष्ण सुखधाम ॥
श्रीगोकुलनाथ अनाथके तारण श्रीरघुनाथ
परिपूरण काम ।
विष्णुदास सुमिरो तन-मन सों सुन्दर सुन्दर
श्रीघनश्याम ॥

१४

प्रात समय नन्दनन्दन श्यामा देखे मैं आवत कुञ्जगली ।
नव घनश्याम तरुण दामिनी मिलि राजत रूप
अनूप अली ॥
लटपटो पाग शोर्ष कर मुरली लोचन घूमत
भांति भली ।

शिशिलित चीर मरगजो अंगिया काम कामिनो
देखि छली ॥

चार याम निशि जागत बीती उर उमग्यो
अनुराग बली ।

कज्जल अधर नयन बोरी रङ्ग मदन नृपतिको
चमू दली ॥

सूर वदन पङ्कज रस पीके अलक मधुपको पांति चलो ।
प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखति तरणि उदय
जैसे कमल कली ॥

१६

उनींदो आंखें रङ्ग भरी दुरत नहीं पट भोट ।
मीन खञ्जन मृग हीन भए हैं और कमलदल वारि
डारों लख कोट ॥

दुरत मुरत भूपकत अनियारी चञ्चल करत हैं चोट ।
चतुर विहारो प्यारोको छवि निरखत बांधत
सुखको पोट ॥

१७

पल भूपकि भूपकि आवत उनींदो अंखियां भई ।
हरबरात उठे पट पलटि परे पह फाटन क्यो न दई ।
नेक करो विश्राम वाम बोलिअ मेरे हो धाम हों
करों टहन जो तुम सो है चाप नई ।
सकुचो जिनि सांचो मानिये चतुर विहारो
गिरिधारो पिय जे नई रिभवार रिभई ॥

१८

सपने हू न विकुरिये हों हरि सो मन यों वाछे ।
श्यामसुन्दर बहु नायक सुखदायक सबङ्गिन को
मोहि कबहं न पूछे रो आछे ॥
नन्दनन्दन जु अनत रस कीन्हों काम जरावत रो
सौति साल दूजे ताछे ।
तानसेन प्रभुके विकुरि ज़रद भई मोहि निहारन
आवे रो जो कोज पाछे ॥

१९

प्रात समय उठि आये हो मेरे नन्दनन्दन आलस
भरे नीके ।

पीक कपोल अधर मसिं सोहत विन गुण माल
विराजत होके ॥

पाग लटपटो भाल भङ्गावर पर्ग परये तुम काङ्ग तोके ।
स्रोतस्वामी गिरिधरण भले तुम और विराजत
वन्दन टीके ॥

२०

भोर भये नतकुञ्च सदनते आवत लाल गोवर्द्धनधारो ।
लटपटो पाग मरगजो मान्ना शिशिल अङ्ग डगमग
गति ग्यारी ॥

विन गुण माल विराजत उर पर नख सत हेज
चन्द्र अनुहारो ।
स्रोतस्वामी जब चितए मोतन तब हों निर्गख
गई वलिहारो ॥

२१

भोर भए आये मेरे तुम आज कहां निशि
वसे नन्दसुत ।
कहा कही अङ्ग अङ्गकी शोभा पीक कपोल
नयन आलस युत ॥

कहा निहारत हो मोको अब जिनि परशा
मोहि चले जाउ उत ।
जानो बात तिहारि मनको स्रोतस्वामी गिरिधरण
बडे धुत ॥

२२

लला जिनि मेरो बांह गहो ।
मारग में लोग देखें दूरि ठाढ़े रहो ॥
मनमें है कौन बात सोई क्यो न कहो ।
ठाठो कहा दैत ऐसो नेक लाज लहो ॥
कहेंगो जाय राय जू सो बाट रोकत हो ।
कैसे हम आवें जाहिं पनिघट पथ हो ॥
तुम हि तो कछु नही विचार लरकारि वश हों ।
रसिक प्रीतम छाडि देहु हंमत हैं सब हो ॥

२३

पैजनो पकर मीन रही चूरी चुप कर
सुनिये न वैन ब्रजराज ब्रजनारीके ।

सांभ हीते सोए किधो रिसमें समोए कहै
 कालिदास को री जाने चरित्र विहारी के ॥
 कारणके मनोरथ कारण कारण चारु
 चरणके सङ्गो रङ्गी अति सुकुमारीके ।
 जानिये न देहु हा हा एजु महा मुखर है
 मुखर हैं मन्द काहे नूपुर प्यारीके ॥

२४

शोध लेत मन्द जेठानी देवरानी मिलि
 सोइबंके मिसु न उसास लेत सास है ।
 कालिदास दोऊ रूप रेख देख पाय तन
 यो ही उन मानो काम केलि को विलास है ॥
 आली वनमालो को न खालो परं एक दिन
 देखे बिन कियो जात का मा उपहास है ।
 दूती सङ्ग रसिक मुरारि को पहुंचि रहै
 नारि सुकुमारि जो वयार सङ्ग वास है ॥

२५

खामी की कहा है सब नख तन जाई जाके
 भीतर सुहाये भांति भांतिके बहुत है ।
 कालिदास लागे पुण्य पौनके भक्कारन ते
 आए चहं ओरन ते छाया इत उत है ॥
 जगत् जलधि मध्य जम्बू द्वीप रची विधि
 सीय सम काशी ताके गुण अद्भुत है ।
 पञ्च क्रोस भर जाकी क्रोस भर भर सब
 जवीन को पुञ्ज होत पलमें मुक्त है ॥

२६

चूर्मा कर कमल ए अमल अनूप तेरे
 रूपके निधान नेक मोतन निहार दे ।
 कहै कालिदास मेरे पास हंसि हेर हरि
 धरि माथे सुकुट लकुट गहि डार दे ॥
 कुंवर कन्हैया मुखचन्द्रकी जुनैया नेक
 मेरी ओर लोचन चकोरन विचारि दे ।
 मेरे कर मेहुदी लगी है नन्दलाल मेरी
 लट अटकी है नेक वेसर सुधार दे ॥

२७

प्यारी तन भूमि तामें रूप मार दागर है
 यौवन गभीर मुख शोभा को धरत है ।
 दोपत तरङ्ग नयन वारिज से शोभित हैं
 उरग सौ वेणी जिय देखत उरत है ॥
 कहै कालिदास गाल गाड़न भ्रमर मध्य
 लाल मन वाह तामें दौर पसरत है ।
 वेसरको मोती मानो कर है सिकन्दर को
 बार बार डोलके मने सो करत है ॥

२८

प्यारी चलो कि न लालन पै ए री
 लालन का मन ताप सिरावन ।
 तू को री है मैं तो दूती हीं लालकी
 आई है क्यों इत ताकी बोलावन ॥
 ठाढ़े कहां हरि हैं यमुना तट
 छोड़े कबे भई बेर मों आवन ।
 नीके हैं श्याम कहे सहजा कवि
 पाई निकाई कहां मनभावन ॥

२९

द्वादश नयन एकादश से कुच
 प्यारी कहां दश है हमते ।
 नव से बने भूपग आठ लसे नहि
 सात कोज षट् है तुमते ॥
 मणि पञ्च सो मध्य कटि चित चार
 यथा बिनु बार तथा विनुते ।
 अटिके रचि तीन दोज मति छोड़ि
 कहा रही एक सी है हठते ॥

३०

कोयला भई कोयल कुरङ्ग तन कारो कियो
 कूट कूट केहरि कलङ्क लङ्क हदलो ।
 जर जर जम्बू नद अधरङ्ग विद्रुम भो
 द्विया फाट दाड़िम त्वचा भुजङ्ग बदली ॥
 ए री चन्द्रमुखी ते कलङ्गी कियो चन्द्र अब
 बोले ब्रजचन्द्र वै किशोर आप अदली ।

छार शीर्ष डारै गजराज वै पुकार करे
पुण्डरीक बूझोरी कपूर खायो कदली ॥

३१

नवल नवोड़ा यह ओढ़नी न वोढ़ जानै
प्रिय पास पोढ़वेकी सार कहा जानी है ।

मेरे लायवेकी लाज कीजै आज वलि जांव
आतुर न हूँ इह अब ही अयानी है ॥

यह रस रीति कहा जानत है मेरे लाल
रस हीमें रम हीमें बातें कहे मानी है ।

मेना मी पढ़ाई जब पहर अढ़ाई पर-
तीत मैं बढाई तब केहूँ केहूँ आनी है ॥

३२

आज ली अछूती छाती काहूँ के न रङ्ग राती
यौवनके मद माती मोठे मन रीनकी ।

खञ्जन से नयन राती चूनी श्री चुरी राती
देख देख सकुचाती बोल नाहि मीनकी ॥

केतिक मनीती सा मानो यह चन्द्रमुखो
है तो चित चोर नन्दलाल बड़े भौनकी ।

भूठ नाहि बोलत यदुनाथ की सों बार बार
या की ठग लाई हों बेव्याही विन गौनकी ॥

३३

मेरो मी जी करि मेरी मी आंखन
जो ते विकोल ही जी करि गाढ़ो ।

आए री आय चितै क्यों न देख
यहै चितचार चितोत है ठाढ़ो ॥

ब्रह्म भनै माई कान्हके भौ घर
बाहर धैरीको वारिठ बाढ़ो ।

यहै मुख देख कहै दुखहाई री
लाज करो और घूँघट काढ़ो ॥

३४

तिय सांभ समय हरि आवन जानि
शृङ्गार संवारि महा सुख दे ।

अति आतुर हार निहार अटार
विचार मनोभव चित्त सुदे ॥

मणि वेद प्रकाश प्रभाकरनाथ
लखे वकावा नहि होत जुटे !

निश हूँ दिनकी सुख पाय भले
चकई हूँमि चाहति चन्द्र उदे ॥

३५

विरह अनल बरी खरी प्रेम मनहरी
चटपटी परी विन हरि अकुलात है ।

सुध बुध हरी कुलकान लोक लाज टरी
नाथ चित धरी आश अति विललात है ॥

घरी घरी दीरघ उसाम ले उदामन री
लगी ठग मुरी खेद कम्म सब गात है ।

नयन जल चलै ए री पावसकी भरो जैसे
रेत भरी घरी चली जात दिन रात है ॥

३६

सुख नेह नहीं सुध देत नहीं
तजि गेह वहीँ न रही अटकी ।

टकि एक तके कार टेक विके
कन नक लजै हटकी छटकी ॥

चकि के तकि के छल ते छकि के
थकि नीथ चितै सुखमा नटकी ।

फटकी मन ते भटकी तन ते
भटकी अंखियां टटकी अटकी ॥

३७

सुन्दर सरोवर में बांक हैं कमल किधों
फूल नरगिस कैमे नये नये जात हैं ।

दौरि मधु कके मोन देखत दुरत जल
कैधों खेलें खञ्जन खरी से न चुगात हैं ॥

कैधों मृगनाथ सब शीर्ष नाथ नाथ रहै
कैधों अलि गुञ्जमाल केतकी सुहात हैं ।

नाथ नयो ग्वारिनिसो आचका हीं देखि कान्ह
लाज सों लजानि नयन लाज सों लजात हैं ॥

वारणमामा

सुफल फूल सोहै हरी वलि मोहै
लपटाने द्रुम सो प्रफुलित जहां है ।

भ्रमर मत्त बोले करे खग कलोलै
 सखी साथ डोलै रसिक रस महा है ॥
 नहीं गरम शीतल पौन त्यां त्रिविध बल
 अचल साज सुखके सुखी सब तहां है ।
 अहो नाथ मानो सुखट चंद्र जानो
 धनुष ले मदन दंड विरही कहां है ॥
 शशाङ्क
 विमल रूप सर है अचल प्रेम स्थिर है
 वरुण नाल कर नयन परमान लीजे ।
 कछु कण्ठ लाजे बचै पत्र राजै
 वितै मीनलावन्नका नीर जोजे ॥
 मुदित देखि माधव तरण प्रात बांधव
 सहित नाथ साधव सुमकरन्द पीजे ।
 तुम्हें तो पुहुपको इहै नेम एकै
 मधुप कच्छ मेरे दृगन वास कीजे ॥
 जेष्ठ
 तरण के दवनमें अवनि के तपनमें
 निकसि को भवनतें दिने रैन जानो ।
 जहां सदन शीतल तजे तिय न पिय ले
 छुटे यन्त्र जल रस बरस मेघ मानो ॥
 सघन कुच्छवन वन तरङ्ग जाग वन गण
 सखी साथ बनकं बनो कलि ठाना ।
 तजो द्रोह उरते वसो साथ कर नाथ
 सुख जेठ के हो कहां लो बखानो ॥
 अषाढ
 घटाश्याम सागर लहरि दौर बादर
 गरज फेर धुरवा अनल वीज बोहै ।
 सुमन भूमि मणि है लसै देव धन है
 सो वोहित भरो कबि सुधा वृष्टि मोहै ॥
 करि मद गवन ऐनहि मकर दवन
 काड़ कहिये चलन उर न मारुत समो है ।
 सलिल जन्तु खग नेह गभीर पग नाथ
 आषाढ़ मानो उदधि ह्वै लसो है ॥

श्रावण

सुशोति अचल कन्दारा वारि कुन्ते
 सदन फूल फल चारु हरिये वसुन्धर ।
 वरस मेघ बुन्दै छुटे यन्त्र जल त्यों ०
 पुहुप पुण्यहर नीर सारङ्ग पुरन्दर ॥
 गरज खग भ्रमर नाद बाजे वधू इन्दु
 वामा लसे ज्यों सुमन को धनुर्धर ।
 प्रिया ले तड़ित् साथ यों श्याम घननाथ
 श्रावण बनो है मदन बाग सुन्दर ॥
 भाद्र
 लसै दन्त प्रकपंक्ति मारुत महावत
 नमै है सो खररगा चाप राजै ।
 रुधिर मो वलित अङ्ग सौदामिनो त्यों
 तजै शुण्ड जल मध्य भरै मेघ छाजै ॥
 गरज वीर धुरवा धुजा चित्त कांपै
 देखि गददार खग मैन सङ्ग्राम काजै ।
 बनो नाथ सुख सैन सज देखिये मोसों
 भाद्रो सघन कामहस्तो विराजै ॥
 आश्विन
 सुमन श्वेत जे ते धरा मध्य ते ते
 बिक्काए किधों भूमि होरा लसै सो ।
 सुधा वृष्टि कर पूरकै सुरसरी फेल
 पारे परो पत्ररूपा विभै सो ॥
 किधों नाथ ले कर खरो सारदा जौन
 असुत लिख्यो ऐन क्षीरोद जैसो ।
 विमल चन्द्र आश्विन विमल चांदनी है
 विमल रूप जैसो विमल साज तैसो ॥
 कार्तिक
 गरम भौन यौवन सो अङ्ग अङ्ग सोहावन
 सने हो सगुण ज्योति सुखदायका ।
 चाह शिरपर बसै श्याम तम नाशक अभिराम
 सायक मदनके अलन पायका ॥

बाट कटते बुझे रात रसमें जगे
 कोट सोचे भस्मके करण लायका ।
 नाथ नेह न घटे छवि प्रकाश न मिटे
 दीप कार्तिक कि धौं यूथ नव नायिका ॥
 मार्गशीर्ष
 पावन सरस जे अपावन सलिल न्हात
 पावन परै सङ्ग ले चार सोहै ।
 तसै कोक विरहो लखै नायका बन्द
 नायक कदाचित् विगसो लसो है ॥
 बढे रैन ज्यों ज्यों दृढ़े श्रोत त्यों त्यों
 सुसंयोग सुखमें बिना गन को है ।
 बड़ो चाह करके बड़ो बार लो नाथ
 हिल मिल रहो नैम भगहन गह्यो है ॥

पौष

पौषमास तन व्यापत श्रोत ।
 मिल हैं कब सांवरे मोत ।
 बिन प्रिय को जाड़ा नहिं जाय ।
 ससक ससक सारी रैन विहाय ॥
 हरि बिन मोहे नेक न सुहावे ।
 विरह धूम अत ही मचावे ॥

माघ

छिप्यो शीतकर शीतकर और देख्यो
 बली भीतिकरको कुहिर यो छयो है ।
 छप्यो सूर यो सूरको तेज कर मन्द
 डरके कारण शीघ्र नभ छिपि गयो है ॥
 बसें घरनि मंदन सबे भारके शङ्क
 तू लो अतूलोक वच तन दियो है ।
 नहीं कम्प है अति शिशिर भाघ त्रास
 अहो साथ हो नाथ यह प्रण लियो है ॥

फाल्गुन

बने वन सुमन अलि सघन घन चहं यूथ
 वन वन तिया दामिनी सी हसे ।
 छविनि दिशि उमड रङ्ग बरष भेघ पिचका
 गरज गान खग आन उरमें वसे ॥

तिय गुलाल भरी इन्दु वामा छई वेल
 तैसो पवन पथ पथि चलतखे ।
 नाथ ऐसे समय कौन भग पग धरे
 मास फाल्गुनको ए साज पावस लसे ॥
 आनन तड़ाग पर राजत गभोर नीर
 सरल सेवार सम कूल केश छायो है ।
 भुकुटो भ्रमर पात मानो वितरात जात
 तें उर तरङ्ग आड़ अधिक सोहायो है ॥
 मोन सैन वीशा नयन तारासे करनफूल
 ताको भुक भुक आवे मिसाल लिख पायो है ।
 ललित निचो भिन बच फरकत ऐसे
 मानो मन्मथ घेर जालमें बभायो है ॥

चैत्र

लागि मन मूठ और जउसी लगी है उर
 और है गई सुध रहो न शरीर है ।
 है है गयो मोहि सो तो पूछ तब है है कोक
 केतको कहै है न सुनै है ले लगी रहै ॥
 जाहि लागै प्रेत ताहि केतिक दुख देत याके
 लागि जिअत याते अधिक अधोर है ।
 एरी भरो वोर भरी छातो पर पोर तब हो
 मिटेगो जो पै छातो पर पोर है ॥

श्रीकृष्णाय नमः

रहस्य—तिताना

जागे हो रैन सब तुम नयन अरुण हमारे ।
 तुम कियो मधुपान हमत हमारो मन काहे
 तें ज नन्ददुलारे ॥
 नखचत प्रिय अङ्ग पोर हमारे उर कारण कौन
 पियारे ।
 नन्ददास प्रभु न्याय श्याम घन बरसे अनत जाय
 हम पर भूम भुमारे ॥

२

आलस उनीदे नयन लाल तिहारि कहां तुम
रैन विताए ।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अञ्जन
नखाए ॥

जावक भाल उर विन गुण माल हृदय नख चिह्न
दिखाए ।

नन्ददास प्रभु बोल निवाहे भोर होत उठि धाए ॥

३

प्यारो तरि आनन दृग आलस्य युत राजत रममसे ।
नव किशोर अङ्ग मङ्ग रैन रङ्ग रसे ॥
शिथिल वसन रमन दशन अधरन क्षत लसे ।
पीक छाप युग कपोल प्रिय मुख लागि हसे ॥
मैं जानं पहिचानं मव विधि प्रियतम गुण यसे ।
प्रिय विहारी लाल ललित उरोजन बिच बसे ॥

४

कहा तुम सांचो कहां तें जु आए भोर भए नन्दलाल ।
पांक कपोलनि लागि रही है घूमत नयन विशाल ॥
लटपटो पाग अटपटो बन्दिश उरसि मरगर्जी माल ।
क्षणदास प्रभु रसवम करि लीन्हो धन्य वही व्रजबाल ॥

५

कौन पुण्य करी नारि हू अवतरी श्रीहरि दीन
थई मान मांगि ।
जिहना अविगतां अमर जनन बल है तेरे
कमलावर कण्ठ लागि ॥
यह याग करा योग ध्यान धरो बहुत ए
आदरी देह कष्टे ।
तोहं तें हरि स्वर्ण न पेखिये प्रेम दृष्टे ॥
अपे सिंहासन महज सोहिये सदा भुवन वैकुण्ठ
तनु मन्यभावे ।
तेहं था अपि धिक छे मन्दिर माहेरु प्रेम
पोताम्बर पलङ्ग आवे ॥

भक्तवत्सल तनु विरद पोत वहे एम कहे समर्थ
वेदवाणो ।
नरमैयानो स्वामी सुखतनो सागर कीधो करुणा
मुने दीन जाणो ॥

६

आज उजागर अङ्ग आलस्य भरो माहेरे मन्दिर केम
आव्या ।
भुवन भूल्या वर भामिनी भोगिया साथे साहेलड़ी
मैन लाव्या ॥

पीत पट बिसारा नील अम्बर धरा अधर
अञ्जन तनी रेख लागी ।
धन्य तें पुण्य पूर्य तप करी कामिनी तुम्हारे साथ
जो रैन जागी ॥
अलस असता तना रङ्ग सलता थया तिलक अर्ध रह्यो
शुभग भाले ।

अमजल केलि करीगोलूं सोहे घनू अधर तनो धक
लोचन विशाले ॥
कारज कही काई कारण मन तनु भले पधार
प्रात पेहलां ।
मन विना मलबूं तें नरमैयो एम कहे बलीने
पधारजो काल बेलां ॥

७

पलङ्गा या थर कुसुम माला बडे बांधि सबेह
कर लाज लोपी ।
जोऊं माहरे मन्दिर थी कौन मूका बसे शुरे
करसे पेली रोक कोपी ॥
तन्यो वनमालीनि अम्यो वन बेलड़ी नीर नहीं
सींचो तोश्यानि रोपी ।
अमर जायातना फूल मकरन्द मा हृदयकमल
माहां रह्यो रे ओपी ॥
प्रीति करो तम्यो प्रेमता पातसीं तन मन प्राण
सङ्ग रह्ये रे सीपी ।

कहे नरसैयो ताहरी रोस जेम जतरे तेंम
सुख सेन ए मलेरे गोपी ॥

ध्यान धरि ध्यान धरि नन्दजोना कंवरन ऊं थकी
अखिल आनन्द पाय्ये ।

अष्ट महासिद्धि ते द्वार जभी रहे देहना दक्षत
ते दूर वाय्ये ॥

मोरना पुच्छनो मुकट मस्तक धयो मकराक्षत
कुण्डल अवण भलके ।

नीलवट तिलकते शुभग केसर तनू कण्ठ मुक्ताहल
द्वार ललके ॥

पोताम्बर तनी पलवट कटितटे त्रिभङ्गी
उभला वेणु बाए ।

कदम ना द्रुमतले राधिका रस भयां हरि जीने
सङ्गे अलापि गाए ॥

वृन्दावन महा मुरलीकी ध्वनि सुनि गोपिका
के रड़ा वृन्द आवे ।

नरसयाने मने आनन्द अति घनो पुष्य मुक्ताफल
लेइ बधावे ॥

रहत रजनो ज्यारे पाकलौ घट् घरो साधु पुरुष
त्यारे सुइ नरि रेहेबुं ।

निद्राने परहरि सुमिर वा श्रीहरि एकतू एकतू
एम केहेबुं ॥

योगिया होय तेने योग संभालबो भोगिया होय
तेने भोग तजबो ।

वेदिया होय तेने वेद उच्चारवो वैष्णव होय तेनो
विष्णु जपबो ॥

शुक वी होय तेने सकल अन्य साधबो दातारे
दन्त धावन करबुं ।

पतिव्रता नारिने कन्तने पूछबुं बचन कहते
शीर्ष धरबुं ॥

आपना धर्म थी कथा कहं प्रीकबो मन शुद्ध
बुद्धि करो कपट मेहली ।

भणे नरसैयो हरिनो क्षपा थकी जाता आवी
रड़ा दात सेहली ॥

आजुकी बानिक पर हो लाल हीं वलि वलि गई ।
विगलित कच सुमन पाग टरकि रहो वाम भाग
अङ्क अङ्क अरसई ॥

अरुण नयन भूपकि जात अरु जंभात बार बार
कपोलनि छवि छई ।

धन्य सुहाग भाग ताको गोविन्द मुरली प्रभु
सङ्ग सब निग वितई ॥

मैया तेरो रो मांहन अति हो सयानो देत
अटपटी गारो ।

कुञ्जमहलमें अक्षल फारो हंसि हंसि दे दे तारो ॥
गोरस टोरे मनको जोरे माट दहाके फारि ।

उठाउकी डोरो कस बांधो चौदह भवन बन्द तोरे ॥
अधरपान परिरक्षण चुम्बन कहीं कहा लजानी ।

शुक नारद सों लीला अगोचर सूर कितिक वर वानी ॥

तुमसों बोलिवेकी माहीं ।
घर घर गमन करत गिरिधर प्रिय चित नाहीं
एक ठाहीं ॥

कहा कहं सुन्दर घन तुम सो जो होत मन माहीं ।
कृष्णदास प्यारीके वचन सुनि हृदय मांभ सुसकाहीं ॥

नन्दजोनू आंगन परम सोहामनुं अतिरलि आमनुं
कृष्णकी धूं ।

व्यापि वैकण्ठ कैलाश ब्रह्मा सदन इन्द्रना लोक था
अधिक की धूं ॥

सकल तीर्थ जहां विठ्ठल वासी वसे इन्द्र अज
ईश जहां देव सघला ।

भक्त विना भूधरो वश्य नहीं कोयने एकते
 एकपे अधिक डगला ॥
 मात उमाहसे नाथ सन्मुख धसे एम विलसे
 प्यारो प्रेम प्राते ।
 नरन्याना रामो श्रीकृष्णजी बाललीला रसे
 एह जु रीते ॥

१४

जिनि बोली पिय मोसो आज ।
 जहां वसे निशि तही सिधारी मोते कहा है काज ॥
 सगरी रेन मोहि मग जोवत गई दही मदनकी दाज ।
 क्षीतस्वामी गिरिधर दृग जोरत आवत नाहि न लाज ॥

१५

अरुण नयन देखियत है आज ।
 वसे जहां निशि तही सिधारी रसिकनके सिरताज ॥
 मग जोवत मोहि रेन विहानी तुम्हें नहीं कहु लाज ।
 क्षीतस्वामी सा कहति भामिनी यहां नहीं कहु काज ॥

१६

हरिजूकी बालक लाला भावति ।
 माखन दूध टहोकी चोरी साई यशोदा गावति ॥
 शकट विभङ्ग पूतना शोषण लणावत वध कान्हा ।
 जखल वन्धन जमल उधारन भक्तन का सुख टाकां ।
 वत्स चरावन मुरली बजावन यमुना काहु विहारी ।
 परमानन्द दासको जावति हन्दावन मञ्जारी ॥

१७

जागत जागत रेन विहाना ।
 कहि गये सांभ आवन मेरे गृह वसे अन्त
 रति मानो ॥
 उर बिच नख अत प्रकट देखियत यह शाभा
 अति बानी ।
 भाल महावर अधरनि अञ्जन पीक कपोल निशानी ॥
 निशि समय जोवत वीती मोकी आये प्रात
 यह जानी ।
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण सिधारी तहां जो तुम्हरे
 मनमानो ॥

१८

प्रियसुत सुग्ध विनोदे वद विपिने किं किं विहितं ।
 पल्लवचय मतिवल्गव मधुना कुत्र शिरसि निहितं ॥
 गौरिक चित्र विचित्रित वदनं कुत्र कृतं ललितं ।
 कचचय मतिसय मेचक रूपं वरहि तेन प्रेषित
 पिच्छ कलितं ॥

पायित मति घर्म निवारण कृत ये निर्मल नीरे ।
 उपविष्ट विटप च्छाये सुत कुत्र गोपसहित मितो-
 माया वद भुक्तं भवतावन तोरे ॥
 चारित मति कोमल लणवति देशे गोकुल मथ कुत्र
 कण्टकनिचय मिथो खलु लग्नचरणं ॥
 विलसित मिति वद कया लीलया भवता बालकुले ।
 वृहि कुत्र मिलितै रथ धावित मति विपिने विपुले ॥
 स्थेय मितो वलभद्र युतेन सदा भवतातिभयेन ।
 रति विज्ञापित महरु मदोयं मानय बहु विनयेन ॥
 कपय सदा सुहृदावर सूना गृह दासे हरिदासे ।
 श्रीवल्लभ वर चरण कमल सेवन विरचित पदवासे ॥

१९

कुत्र गतं निशि गोकुल नायक अन्य हृदय हित
 पञ्चम शायक ।
 नैव करण महां समुचित मिह ब्रजयुवता जन
 बहु सुखदायक ॥
 वदसि विनय वचनानि नतानि विसन्ति हृदय
 मतिमानं ।
 चित्त मितर युवतीषु लग्नमिति नैव मानये तव
 सम्मानं ॥
 प्रकट मखिल मङ्गेषु दृश्यते संप्रति चिह्नचयं ।
 कृत विरहित मथ कष्टं मानये नाथ वचन विनयं ॥
 दर्शयसि शिथिल मुष्णोषं रूप मथो विकलं ।
 चित्त मिदं निज दुःख कृते भवता सुन्दर सकलं ॥
 कुङ्कुम शृगमद गन्ध रेणु युत वनमाला हृदये ।
 कथमेवं करणं घटने शृणु मदभि मखं सदये ॥

नक्षत्राणि मया गणितानि निखिल निशि रहसि
निकुञ्चे ।
अहमपि सुखीयता हताशभूवसन्ति आभिर पुञ्जे ॥
जागरणारुणनयन युगं कुरु निर्मल मिह नीरेण ।
विहितं कथ मुनि युञ्जं भवता वट युवती वीरेण ॥
श्रीवल्लभ पद कमल रेणु वल्लभ हरिदास वरापि
विपाके ॥

२० .

साय मिह सो जयति बालकं माता ।
अति सुगंध मृदुल दुग्धोदनं निज मुखे सपदि
विदधातु मम सकल सुखदाता ॥

ध्रुव

प्रति कमले यदपि वचन मभियाचते तदपि तेन
खलु भोजनीयं पुरा ।
खेलनायं ततो बालक रखिल गोकुल जनैरिति वदति
डिम्भ किमिति त्वरा ॥
विपिन चरितं तथा कि मिति वस मत्पुरं दर्शति
प्रायशो गोपकुल पालकं ।
वीजयति दक्षिण करेण कमलालयं माजयति
वामतो वदन मपि शालकं ॥
सुख विगलितं पयोविन्दुचय मद्भुतं प्रोक्षति प्रबलतर
दत्त दृष्ट्या ।
भवति सुखिता परं निज सन्तु दर्शने वदन लावण्य
पीयूष दृष्ट्या ॥
लोकसिद्धा मथो कथयति प्रियं कथा मतिःसित
सुगंध सुख दत्त नयना ।
नेव सहते परं भोजन विलम्बनं भावित स्वच्छ
पर्यङ्क शयना ॥
बालचरितानि ललितानि खलु गायति प्राण
सदनानि रदनानि दृष्ट्या ।
श्रीत करोतीह रोमाञ्छति प्रति पदं हसति रोदिति
परं मनसि हृष्ट्या ॥

अङ्ग सुपवेश कर युगल मनु धावयति मुखगतं
ताम्ब ल मथ सुखे दत्वा ।
उत्सङ्गमारोग मृदुल शयने मुदा शाययति
वनखिल रुद्र मत्वा ॥
निज वदन चर्चितं पीयूष गर्भितं भुक्त शोषित
मथो यच्छ हरिदासके ।
वल्लभाधोश पदकमल सेवन विहित भाव भर
संजात भक्ति सुख याचके ॥

२१

उषसि वद गोकुलाधोश कृत आगतं ।
इतर युवती जनित चिह्न शत वलित वर मृदुल
देहिक्षण सपदि मानसा गतं ॥
किमु गृहं विस्मृतं नाथ मनिमि स्थितं मदृष्टं
दुःखजन स्मरण मागतं ।
याहि निज भवन मति भाषणं त्यज मया शृणु दया-
रहित मम नैव सुरक्षा गतं ॥
मान मुन्मूलयितु सुगंधे तो भवमि वद कथ
मुन्नि स्मारयसि विरह परिषागतं ।
अधिक मधिकं सपदि समुदयति मानसे दोष गणनं
निखिल नाथ कुपथागतं ॥
यत् तव मानसं विषय कृत लानसं गच्छ तत्रैव यत्
सुखमागतं ।
तस्मनोरथ मखिल याशु पूर्य हरे विरह हर
दुःखभर महत्त विरहागतं ॥
परमहं वेद्मि ननु विस्मरा मीगनहि विस्मर त्यहह
गोकुलनृपहृद्यागतं ।
त्वमपिहि स्मारयितु मागतो गोकुलाधोश कर वै
किमुत कल्प समुपागतं ॥
एत देवास्ति विज्ञापनं नाथ मतिष्ट हृदये सतत
मथ तु यथागतं ।
याहि कुरु शयन मति जागराणु तरे लोचने समय
परिताप मनसागतं ॥

इति वचन जातमति मानिनी वदन सञ्जात माकण्ठं
 तनु हृदय कमलागतं ।
 पुरयसु गोपिकाजन मनोरथ मखिल मद्भुताकार
 गति शयित शरणागतं ॥
 देहि वल्लभ चरण राजीव रंगुमपि विषयि जनसङ्घ
 दुर्भति विरोधागतं ।
 धर्म रहितं महित मति दौषकारकै रहङ्ग हरिटास
 मथ चरण शरणागतं ॥

वन्द वल्लभ वर तनुजं ।

भक्ति शरण शरणी कृत साधन साधन रहित
 सकल मनुजं ॥
 सुन्दर रूप विबोधित भाव वशीकृत गोकुलनाथं ।
 निरुपम भाव विभावित चतुर तमं मम विद्वलनाथं ॥
 हरिसम्बधवती समुदाय विविध सम्बन्ध सहायं ।
 अतुल्य वचन तोषित तरुणीजन जीवन पतिमतिमायं ॥
 मनो वधा गोचर कृत विज्ञापित निजगण महिमानं ।
 निज सेवक सेवित पटकमल युगाहित हृदयालानं ॥
 प्रवृत्ति कृत व्रत जीव सुखान्त्य रसमय मञ्जुल रूपं ।
 श्रीभागवत विवृति बोधन निज जनमति शोधन भूषं ॥
 निज पायुष विजित विधु मण्डल मण्डित मदन
 सरोजं ।

अखिल मनोमोहन निज सुखमा विरहित
 मान मनोजं ॥
 मृगमद सम्भ सहज तिलक शोभित शोभगनिधिभालं ।
 कुञ्चित चिकुर समाव्रत वदन विनिर्जित
 मधुकर मालं ॥
 कृपयति समयि कदापि हृदाकिङ्कर किङ्कर हरिटासे ।
 भवसु पुनं गोपीपति चरण-कमल भावं पदवासे ॥

२३

भजे सखि गोकुलेशं ।

नन्द भवन भूषणं नख भूषित हृदयेशं ॥

ध्रुव

मन्दहास फुल्ल नास रुचिर मुख सरोजं ।
 वदन चन्द्रकिरण कान्ति रहित मानमनोजं ॥
 वदन कमल मधुप वदति राज दलक पुञ्जं ।
 वर्धसुकुट तट विलासि बहु विचित्र गुञ्जं ॥
 युवती मुख कमल मधुप चञ्चल तर नयनं ।
 अनुपम निज निहित भाव सतत कृत मृगनयनं ॥
 भ्रूतट धृतमाट विहित वत्तलमसिविन्दुं ।
 मुखजित पीठूष भरित चारु विलस दिन्दुं ॥

श्रीकृष्णाय नमः ।

ललित—तिताना

जागहु जागहु हो गोपाल ।
 नाहिं न कति सोइयत है प्रात परम शुचिकाल ॥
 फिर फिर जात निरखि मुख क्षण क्षण सब
 गोपनिके बाल ।
 विन विवसे मानो कमल कोषते ते मधुकरकी माल ॥
 जो तुम मोहि पत्याउ न सूर प्रभु सुन्दर
 श्याम तमाल ।
 तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा नयन
 विशाल ॥

२

प्रात समय आवत हरि राजत ।
 चन्द्र जड़ित कुण्डल सखि श्रवण नि ताकी किरण
 सूर तन लाजत ॥
 सातइ राशि मिली द्वादशमें ता भूषण अवलङ्कृत
 छाजत ।
 जलज तातत्य कण्ठ नाम धरि ताकी पंक्ति सुकुट-
 शिर साजत ॥
 पृथी दही तात ताके कर मुख समीप मधु
 धुनि बाजत ।

सूरदास प्रभु सुनहु मूढ़ हो भगत नि वश अभगनते
भाजत ॥

१

आजु अति शोभित है तन श्याम ।
मानहु रो जौते नन्दनन्दन मनसिज सों सङ्ग्राम ॥
मुकुलित कच न समात मुकुट रुचि रोष अरुण
दोउ नयन ।
अम सूचित गति भांति आलस्य वश बोलत
वनत न वैम ॥
नखक्षत श्रेणि प्रखेद गातते चन्दन गो कुछ कूटि ।
मदन सुभट के शर सुदेश मानो लगे कवचपट फूटि ॥
दशन अङ्ग सह पीक प्रकट भए सन्मुख शभग प्रहार ।
सूरदास प्रभु परम शूर में जाने नन्दकुमार ॥

४

आए आए सुरति रङ्ग रस माते ।
मानहु क्षण विश्राम निमित्त प्रिय अमित भए
हैं ताते ॥
डगमगात मग धरत परत पग उठत न वेगि तहाति ।
ज्यों गज मत्त चरण संकल कर गहि आनत ता ठाँति ॥
उर नख क्षत कङ्कण क्षत पाछे शोभित हैं रुचि राते ।
मदन सुभटके वाण लागि तनु निकसि गए उहि घाँति ॥
साँचे करत बोल अपने हैं टरत न मर्यादाते ।
सूर श्याम कहि गए आइ हैं पगु धारे तेहि नाते ॥

५

उनींदे कान्ह आए रो मेरे नयन भरे रसमाते ।
डगमग पाइ धरत धरणो पर वेणु बोलत अरुभाते ॥
सब अङ्ग शीतल अमजल भीने बारम्बार भुपाते ।
कज्जल रेखा रही अधरन पर काहेको श्याम लजाते ॥
विन गुण माल विराजी उरपर नखक्षत नाहिं छिपाते ।
सूरदास प्रभु साँची कही तुम कौन त्रिया रङ्ग राते ॥

६

आजु श्यामाजूके नयनकी बाँते सुनरो सखी मोषे
वरणि न जाई ।

सुधा किरण बिच युग शुभ खञ्जन किये पान मनो
सोवत अघाई ॥
सुम्बन राग रङ्गोले रसमसे कहा कहुँ सुन्दरि
सुन्दरताई ।
मर्कत विद्रुम कमल कोष में ले जावकको रेखा बनाई ॥
आलस तिरछे चाहत बिच ही बिच ककुक विकसित
जब लीत जंभाई ।
मन्मथ जय करि हरि जीतन को दयो वाण भू
धनुष चढ़ाई ॥
देखि लाल लोचन विथकित भए परम चतुरता
सब विसराई ।
सूर श्याम रस रीक्ति रहै तहां तुम हम सहचरि को
कौन बड़ाई ॥

७

भोर हु भए प्रकट श्यामा जू तउ रजनो मन आनति ।
प्रिय अङ्ग रुचि लोचन पथ पूरित निशि अंधियारो
मानति ॥
अल्लिगण श्रेणी रटत नीरजनिपर सुनि रसना
रट लागति ।
पर न कृत करणी माधव सों आनन्द शयन सुवानति ॥
सूरदास सहचरो सब प्रमुदित विरुद्ध यत्न कर
भानति ।
दिन पुनि प्रकट विनोद रजनीके तरणि उद्योत न
मानति ॥

८

कहाँ ते लाए हो इन साथ ।
आलस्य भरी रो जंभात जे अलि निपुण वसे तुम्हरे सङ्ग
मधुप गन्ध ले और न भाषत गावत गुणगण गाथ ॥
हों तुम ते सूखे हो बूझति तुम तो उलटे हो तरजत
हमपर हम जो कहा भरि लीन्हीं भाथ ।
ब्रजपति रसिक तुम बेज रसिक जिन किये
चतुर्भुज सुनि प्रिय गोकुलनाथ ॥

कहाँते आए हो उठि प्रात अङ्ग अङ्ग हो अरसात ।
सब अङ्ग हो अरसात नयन अरुण रगमगी दोउ घूमत
आवत सुधि न ककु तन चिह्न बने सब गात ॥
लटपटो पाग मलगजो माला पोताम्बर उरपर जु
विराजत मन्दमन्द सुसकात ।

यह छवि निरखि निरखिके ब्रजजन हसति
परपर लेति वलैया फूले अङ्ग न मात ॥

आए आए हो तुम प्रियतम प्रात हो बैन अनृत वसे ।
रजनी मुख अवधि बंदो हमसां बोल तिहारि नसे ॥
अञ्जन अधर भाल जावक रङ्ग प्यारी पग शोर्ष घसे ।
अटपटे भूषण मलगजो माला आधे शिर पाग लसे ॥
आलस्य वश डगमगत चरण गति जित तित
जात खसे ।

ब्रजपति प्रिय ललनाको वचन सुनि नगधर नेकु हसे ॥

आए आए हो तुम श्याम कहांते भोर हि भवन
हमारि ।
कहि गए हमसां वसे औरके सांचे बोल तिहारि ॥
सगरो बैन मोहि मग जोवत गई विरह व्यथा
भई भारि ।

ब्रजपति प्रिय तुम हो बहु नायक तज मेरे
नयननके तारे ॥

आए आए हो मनभावन कहांते भोर हि नन्ददुलारे ।
तुम कियो रति सुख हमे दियो अति दुःख
सांचे हो बोल तिहारि ॥

तुम कियो मधुपान हमको तिहारो ध्यान
ऐसे कैसे बने प्राण प्यारे ।
अब नो सिधारी तहां बैन वसे हो जहां गोविन्द प्रभु
पीय हमारे ॥

रङ्ग रसिक नन्दनन्दन रसिक भामिनौ मृगनयन
कमल नयन नागर नागरी ।

गिरिधर कल हंस हसनो मानो गोपतरुणि दोऊ
सम तूल गुणन सागर सागरी ॥
करब केलि वनविहार निरखि जोट लौजित मार
गावत मिलि वदन चारु ललित रागरी ।
खग मृग पशु सुनत नाद पिवत अधरसुधा स्वाद
कृष्णदास वदत वाद सुफल भागरी ॥

प्यारी तेरे नयन रगमगी निश पिय सङ्ग जागे ।
अरुण वरण शोभित आलस्य भरे अतिशय
रति रस पागे ॥
पलकपीक भौंहे रमि रहीं आली मानो कमल पागरी ।
कृष्णदास गिरिधरण प्रिय सङ्ग हसि हसि हसि हसि
सुख लागी ॥

नींद न परी बैन सिगरी सुंदरिया मेरी जु गई ।
याहीते भटपटात उठि आई चटपटी जियमें
बहुत भई ॥
तुम्हरो कान्ह पनघट खेलत हो बूभहु महरि हांस
होय लई ।
विसरत नहीं नगीनो चाखो जिय ते टरत न
भलक नई ॥

चतुर्भुज प्रभु गिरिधर चलो मेरे घर देहों दधि
चाहो जितई ।
मेरो व जीवनि मोहि को देहा तव चरण की चैरो
हो हीं युग वितई ॥

कहि धों री नवेली कहां ते देखे नन्दनन्दन ।
बूभो री मालता कहां ते पायो तन चन्दन ॥
कहि धों कुन्द कदम्ब वकुल चम्पक ताल तमाल ।
कहि धों कमल कहा कमलापति सुन्दर नयन
विशाल ॥

कहि धों री कुमुदिनो कदलो ककु कहि कोविद
कण वीर ।

कहो तुलसी तुम सब जानत हो कहां घनश्याम
शरोर ॥

कहि धौं भुगी मया करि हम पर कहि धौं मधु
पर शाल ।

सूरदास प्रभुके सङ्गी तुम हो सब दीनदयाल ॥

१७

नवल लाल वृषभानु दुलारी आवत कुञ्ज भवनते भोर ।
इन तन बनो मलगर्जा सारी प्रिय उर माल रहौ
विनु डोर ॥

आलस्य वश अंश नि भुज धरि धरि आवत अति
छवि पावत ।

मधुपमाल सौरभ वश गुञ्जत सुयश तिहारि गावत ॥
वृषभानु पुरातन गई लाडिली नन्द सदन गए श्याम ।
श्रीत स्वामी गिरिधरण रङ्गीले विलसे चारो याम ॥

१८

मेरे तुम आए भोर भए प्रिय रैन कहां गंवाई ।
कौन नारिके वश परे मोहन सांचो कहो कि
न जानि परो चतुराई ॥

उर हि हार विनु डोर विराजत शिथिल अङ्ग सब
नखछत देत देखाई ।

श्रीत स्वामी गिरिधर कहो मोसो रसिक शिरोमणि
जावक पाग रङ्गाई ॥

१९

राजत दोउ रतिरङ्ग भरे ।
सहज प्रीति विपरीत निशा सब आलस्य सेज परे ॥
अति रणवीर परस्पर दोऊ नेक हु कोउ न सुरे ।
अङ्ग अङ्ग बल अपने अस्त्र नि सो रति सङ्ग्राम लरे ॥
मग्न सुरभि रहे सेज खेतपर इत उत कोउ न डरे ।
सूर श्याम श्यामा रति रणते एक पग पल न टरे ॥

२०

करि शृङ्गार दोऊ अरसाने ।
प्रथम बोख तमचर सुनि हर्षे पुनि पौढ़े दोऊ
अरसाने ॥

रतिरण जूझि याम त्रय नोके सेज परे उठि पुनि
सुरभाने ।

मानो सूर खेत सम लरिके गिरे उठत फिरि गिरत
लजाने ॥

२१

बोले तमचर चारो यामको गजर मारो पवन भयो
शोतल तमित गमिता तई ।
प्राची अरुणानी भानु किरण उजारी नभ छिपे उड़गण
चन्द्रमा मलीनता तई ॥

सुकुली कमल वत्स बन्धन विछोहो ग्वाल चरै
चली गाय दुजपैती करको दई ।

सूरदास राधिका सरस वाणी बोलि कहै जागो
प्राणप्यारे जू सवारे कौ समय भई ॥

२२

छोटी छोटी गोड़ियां अङ्कुरियां छोटी छविली नख
ज्योति मोती मानो कञ्ज दलनि पर ।
ललित आंगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै भुनुनु भुनुनु
बाजे पैजनी मृदु मुखर ॥

किङ्किणी कलित कटि हाटक रतन जड़ो मृदु कर
कमल नि पहुचियां रुचिर वर ।

पियरी पिछोरी भीनी और न उपमा भीनी बालक
दामिनी मानो ओढ़े ठाढ़ो वारिधर ॥

उर बघ नख कण्ठ कटुला भडूले बार वेणी लटकन
मसि विन्दु सुनि मनहर ।

अङ्गुन रञ्जित नयन चितवनि चित्त चोरै सुखशोभा
पर वारों अमित असम शर ।

सुटुकी बजावत नचावत नन्दघरनि बालकेलि
गावति मल्लावत प्रेमसौं भर ॥

किलकि किलकि हंसे दुहुं दूध दंतुली लसे सूरदास
मन वसे तुतरी वचन वर ॥

२३

आई तू डगमगाति पेंडाति जभाति रगमगौ
रङ्ग भरिके ।

चन्द्र उदय मुख देखति ही री कर दर्पण प्रतिविम्ब
निहारि धौ पीकलीक नयन छवि परिकै ॥
बियुरे अलक सुथरे मुख ऊपर मनो सुधा पीवत
अलिमाल आनन्द हरिकै ।
सूरज प्रभु रमिक राय रस वश कौन्ही बनाय सुख
दौन्ही मन अघाय नवला नव रीभे मन ढरिकै ॥

२४

नवन निकुञ्ज नवल रस दाऊ राजत रङ्ग हि भान ।
कुसुम नि सेज भोर उठि आवत आलस्य युत
अंशनि भुज दानि ॥
अरुण नयन कुच नखरेख विराजत अमजल वसन
पलटि तन लीनि ।
सूरज प्रभु प्रिय प्यारी को मुख निरखत सखिन
सहित ललिता टग कोनि ॥

२५

दोउ वनते ब्रजधाम गये ।
रति सद्ग्राम जीति पिय प्यारी भूषण सजत नये ॥
वे ब्रज गये आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत ।
मनमा वाचा कर्मणा ए दाऊ एकी पल न विमारत ॥
जैसे मौन नीर नहि त्यागत खण्डित हठ पूरन ।
सूर श्याम श्यामा टोउ देखी इत उत कोउ न अधूरन ॥

२६

रास रमि अमित भई ब्रजवाल ।
निगि सुख दै यमुना जल ले गये भार भयो
तिहिं काल ॥
मन कामना भई परिपूरण रह्यो न एकी साध ।
षोडश सहस्र नारी सङ्ग मोहन कान्ही सुख आगाध ॥
यमुना जल विहरत मन्दनन्दन सङ्ग मिली सकुमारि ।
सूर धन्य धरणी वृन्दावन रवितनया सुखकारि ॥

२७

राधे छिरकत कैल छवीली ।
कुच कुङ्कुम कक्षुकि बन्द टूटे लटक रह्यो लट गौली ॥

वन्दन शिर ताटङ्ग गण्डपर रत्न जड़ित मणि लोली ।
गति गयन्द नृगराज सुकटि पर शोभित किङ्किणी
मथ्यो खेल यमुना जल अन्तर प्रेम मुदित
रस भौली ।
नन्दसुनु भुजग्रीव विराजित भाग सोहाग भरोली ॥
वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुन्दुभि सरस बर्जौली ।
सूर श्याम श्यामा रस क्राडत यमुन तरङ्ग थकीली ॥

२८

प्यारी चितै रह्यो मुख पियको ।
अञ्जन अधर कपोल नि वन्दन लाग्यो काहू त्रियको ॥
तुरत उठी दर्पण कर लीन्हे देखो वदन सुधारो ।
अपनो मुख उठि प्राप्त देखिके तब तुम अनूत सिधारो ॥
कज्जल वन्दन अधर कपोल नि सकुचे देखि कन्हाई ।
सूर श्याम नागरि मुख जोषत वचन कछ्यो नहि जाई ॥

२९

क्यों मोहन दर्पण नहिं देखो ।
क्या धरणी पर नख नि करोवत क्यों मोतन नहिं
पेखो ॥
क्यों ठाढ़े बैठत क्यों नाहीं कहा परा हम चूक ।
पीताम्बर गहि कही बैठिये रहै कछ्यो ह्वै सूक ॥
उधरि गयो उरते उपरना नख क्षत विन गुण माल ।
सूर देखि लटपटो पाग पर जावकको छवि लाल ॥

३०

भोर ही श्यामा श्याम खरे ।
जलद नवीन मिली मनो दामिनी वर्षि निशानि भरे ॥
शिथिल वसन तन नीलपौत द्युति आलस्य युत पहिरे ।
ककुक बुन्द पर रति अमकणिका बादर वरण करे ॥
भूषण विविध भांति मिड़वारी रतिरस उमगि भरे ।
कज्जल अधर तमोल नयन रङ्ग अङ्ग अङ्ग भील परे ॥
प्रेमप्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे ।
शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुखजात तरे ॥

२१

ऐसे हि ऐसे रैन विहानी ।
 चन्द्र मञ्जीन चिरैया बोली सुनी काककी वानी ॥
 वे लुब्धे अनृत हि काङ्क के मनकी आश भुलानी ।
 कपटी कुटिल क्रूर कहा जाने श्यामनाम जिय पानी ॥
 कोकिन्ध श्याम श्याम अलि देखो श्याम रङ्ग है पानी ।
 श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूर श्याम सो वानी ॥

२२

मैं जानी जहां रति मानी ।
 तुम आये हो मेरे ललना जब चिरिआं चुहु चुहानी ॥
 मुखकी बात कहा कही ठानी बात नहीं पहिचानी ।
 इत पर अंखियां रसमसानी अरु पगिया लटपटानी ॥
 भाल जावक रङ्ग बनानी अधर अञ्जन प्रकटानी ।
 विन गुण बनी माला सब अङ्ग अङ्ग उलटी निशानी ॥
 सूरदास प्रभु गुण निधानी अन्तर गतिकी जानी ।
 धन्य त्रिय तुम को जो सुखदानी सङ्ग जागत रैन
 विहानी ॥

२३

ऐसे हि सुख सब रैन विहानी ।
 भोर भये निज धाम चले दोउ मन मन नारि
 सिहानी ॥
 प्यारी गई हृषभानु पुरातन श्याम जात नन्दधाम ।
 प्रमोदा महल द्वार ही ठाढ़ी उनि देखा वह वाम ॥
 प्रात चले वन ते ब्रज आये मन मन करति विचार ।
 सुनहु सूर सकुचत ठठुकत ता गृह गये नन्दकुमार ॥

२४

वन तनते आये अति भोर ।
 राति रहे कङ्क गाहन घेरत आये ही ज्यों चोर ॥
 अङ्ग अङ्ग उलटे आभूषण वन झमें तुम पावत ।
 बड़ भागी तुम ते नहि कोई कृपा करत जहां आवत ॥
 औचक आइ गये घर मेरे दुर्लभ दर्शन दीन्हों ।
 सूर श्याम निशि ही कहुं जागे भावति अङ्ग अङ्ग चीन्हों ॥

२५

आजु अति रैन उनीदे लाल ।

तुम पौढ़ी मैं चरण पलोटी जिय जिनि जानो ख्याल ॥
 सुमन सुगन्ध सेज है डाली देखति अङ्ग बेहाल ।
 मेरे कहे काह कहु भोजन करौ न मदनगोपाल ॥
 निशि अम भयो पीर मोहि आवति सुनति परस्पर
 बाल ।
 सूर श्याम शुनि वचन कपट त्रिय भरि लीन्हो अङ्ग माल ॥

२६

राधा हरिके गर्व भरी ।
 सखियन को आगम जब जान्यो दैठी रही खरी ॥
 उत ब्रजनारि सङ्ग जुरिके सब हंसति करति परिहास ।
 चलो न जाइ देखिये रो वा राधाको उजुहास ॥
 कैसो वदन अङ्गार कौन विधि अङ्ग दशा भई कैसी ।
 सूर श्याम सङ्ग निशि रसकी ये निधरक ह्वै वह वैसी ॥

२७

श्रीकृष्ण कृपाल कृपानिधि दीनबन्धु दयाल ।
 दामोदर वनवारी मोहन गोपीनाथ गोपाल ॥
 राधारमण विहारो नटवर सुन्दर यशोमतिबाल ।
 माखन चोर गिरिधर मनहारो सुखकारी नन्दलाल ॥
 गोचारण गोविन्द गोपपति जिय भावन मञ्जुल ग्वाल ।
 श्रोतस्वामी सोई अब प्रकटे कलिमें वल्लभ लाल ॥

२८

हरि सौं तू बैठी दे कपोल कर ।
 मानत नाहि नयन नीर डारति उसकति कृतियां
 करत धर धर ॥
 चरणनि शीर्ष नाइ मनाइ लइ ले ले पङ्कपहे
 निकुञ्ज घर ।
 तोरि गढ़ मान गोविन्द को प्रभु जाति रतिपतिरूप
 सुखद मर ॥

२९

पहरि केसरो सारो प्रिया प्रिय सुख करखत ।
 देखत निज रूप नयन नि भरि भरि अङ्ग अङ्ग परशत
 अरु परखत ॥
 बोलत तुतरात लागत सुहावन सींचे ब्रजजन
 अमृत वर्षत ।

गोविन्द प्रभु गति गयन्द चलत भावत सब नि जिय
हंसि हर्षत ॥

४०

प्रात ही आयि हो नन्दलाल ।
जावक भाल अधर मसि अञ्जन पीक लगाये भाल ॥
लटपटी पाग उर्नादे नयननि उरसि मलगजो माल ।
सोत स्वामी गिरिधरण बनी कवि चलत मन्दगति
चाल ॥

४१

मृदु कपोल लोल युगल कुण्डल कृत शोभं ।
हीरक कृत चिवुक भूषण विरचित विष्णोभं ॥
कण्ठ शोभि मुक्ता मणि भूषण धृत शोभं ।
भाव भरतया वशीकृत युवतो जन जोधं ॥
कटितट गत पीत वसन शोभित निज रूपं ।
पद नख सुखमा विमान सुर नर मुनि भूपं ॥
विज्ञापन मेतदेव मानय मम वचनं ।
श्रीवल्लभ चरण कमल कृपया कृत रचनं ॥

४२

प्रिय सखि विरहे विपिन विचरणं विरहि मशुज शरणं ।
गोकुल पति पद भावता मति शयितशो करणं ॥

ध्रुवं ।

विविध विटप युत लताहृन्द सन्दर्शन जनितानन्द ।
शिशिरित निखिल शरीर पवन विचलित नव कुसुम
मकरन्दं ॥

मुदिर मुदित मानस घननाद विलासि रव अवनं ।
अद्भुत पद्मति युग दर्शन कृत हृदय दुःखय विहरणं ॥
फलित रसाल शाल शाखागत पिक कूजितक सुखं ।
स्थल कमलाहित शोभोपमित युवति जन सरस मुखं ॥
हरित रसालोकन चिन्तित हरिरूप नाम युगलं ।
संवर्द्धित हृदयाहित राग गान कृति रथित गलं ॥
गगन विलसदति घन घनहृन्द विलोकन कृत
सुखदानं ॥

कम्पित शाखागत मृदु पल्लव चलन विहित सम्भानं ॥

विविध स्थल विरचित लीला विज्ञापन बहुतर निपुणं ।
प्रिय सखि सुख निचय विचारणं परमानस कृपणं ॥
ईदृश दशायुतं हरिदासं दर्शय गहन किहारं ।
हृदय निहित हरिवल्लभ वर पद नख विद्युति
सखिहारं ॥

४३

मानिनि धो मा सहसे किमिति वियोगं कुरु हरिणा
सम्भोगं ।
वारय तदधर पौयूषेण विषम चेतो भवरोगं ॥

ध्रुवं ।

निज हस्तौ रचिताति मृदुल तर कुसुम रचित
शयनेन ।
प्रति पद मवलोकित पद विज्ञात चपल चकित
नयनेन ॥

भावित शयन शयित भवती सन्दर्शन जनित सुखेन ।
कृपयिष्यति दयितेति तोषभसन्तति हसित सुखेन ॥
पुनरपि तालहृन्द कृत पवन विशेष वशित हृदयेन ।
अम विन्दु निकलयता वदन कमल मनसा सदयेन ॥
कूट लाल कतति नयन समागति रति जागरभितेन ।
मार सरै रति परुष तरैरिह विरह दशनितेन ॥
सुख कमलाहित गन्ध लोभ गुण भर गणित या सेन ।
स्थान तट ललित हीर शोभा भर सतत स्मृत रासेन ॥
संवाहित सरसिज सुन्दर भावित पद कमल युगेन ।
सकरुण हृदय कमल सम्पादित भाव वदेक सुगेन ॥
श्रीवल्लभ पद कमल विमल मति हरिदासे सदयेन ।
मनसा सखि भावय निज भावं भाववतो विनयेन ॥

४४

हरि मनसर सरसिज नयने ।
कुरु शयनं हरिणा सह सुन्दरि रचित कुसुम शयने ॥

ध्रुवं

विरह भाव समुदित हृदि ताप निवारय गीत गुणं ।
प्रत्य वठा टागगिनि रूपम सुखमा परिभावन निपुणं ॥
चिर मवलोकित पद कमलाकृति तरु पल्लव निचयं ।

चिन्तित चरण चमत्कृति चित्रित दृष्टि रचित
विलयं ॥

भाववशाशयि विहित विनोद विशेष निधान विचारं ।
भावित रुचिरावयव विलोकन विहित नयन सञ्चारं ॥
भावित भवतो परिरम्भण कृत सम्भ्रम जनित सुखं ।
मधुराधर पीयूष प्राण सम्पुटित सलाल सुखं ॥
भावित मानापनयन करयुग धृत पद कमल वरं ।
नख विधु किरण कौमुदी मोद विनोद विशेष परं ॥
अनुसंहित निज विरह दशा समुदित मानस सन्तापं ।
अन्येषिततनु दाहि विनाशक शोतल कमल कलापं ॥
शिशिरोपाय विधान विहित निज जम्ब सफल विवासं ।
श्रीवक्त्रभ वर चरण कमल परिमल लोभित हरिदासं ॥

४५

मानिनि तव पद पतिताहं ।
अङ्गी कुरु गोकुल पति सङ्गं येन सपदि भविता
हरि ताहं ॥

भुवं ।

मानय विनय वचन मति दानं तवमेलन करणे
सुहिताहं ।
नैव भुञ्चित मति रोषवती भवति कृपया दासो
विहिताहं ॥
अवलोकयति पथं तव सुन्दरि मान वारणे सखि
निहिताहं ।
इति जानी हि चरण परिचरण निरन्तर करण दोष
रहिताहं ॥
भवतो रति सम्पादन कृतये निरुपधि गोकुलपति
रचिताहं ।
यदि ना यासि वृथैव भवामि तदा निपुणैकमध्ये
लिखिताहं ॥
त्यजसि न मान महो कथमपि तदीतर युवतीभीरतो
वर्जिताहं ।
यदि न भवति मम विहित मिदं सखि किमु
कथयामि मध्य वनिताहं ॥

वदनामृत कर किरण चकोरं दर्शय सुखितं
भूलठिताहं ।

इतर सखो जन साहं कृत बहु वचन रचन शोचन
मृतिदाहं ॥
जीवन मपि मम दुर्लभ मधुना यदि निज सङ्ग भङ्ग
गमिताहं ।
कथं दर्शयिष्यामि सुखं पुनरपि हरिणा बहुधा
लपिताहं ॥
इति सहचरि वचनानि कृदाकरण अति वदति
सखि सखि चलिताहं ।
श्रीवक्त्रभ वर चरणरेणु हरिदास मदीय कृपा
वलिताहं ॥

४६

विरहे सुन्दर वर्षा समये ।
वद जीवामि कथं मम दाषै रतिशयिते रिह सखि
विपरोते सदये ॥
वर्षति जलदे विरहा नलदे गोवर्द्धन शिखरे ।
पर पुष्पे शत व्युष्टं कूजति वदति केकि मुखरे ॥
लसति भूमि रति हरिता पवन विचलिते तृण निचये ।
इन्द्रगोप कैतव निज मूल विलसदनुरागमये ॥
विविध शिलासु अह निज रूप युता सुविराजति नाथे ।
निज मुख दर्शन जनितानन्द विलास गोत गुण गाथे ॥
नव घन मध्य शोभिता सुसुखि दृश्यते सित
स्वकमाला ।

मेघनाद मनुर्गजति मुरली अरति रसं सुरशाला ॥
उदयति विद्या दतीव चञ्चला चानयतीह जनं ।
असित मेघगण विरचित तमसा बहु भौषयति वनं ॥
रञ्जित रुचिर कुसुम्भ वसन परिधान विराजित रूपे ।
गायति मेघ समागम राग निरुपधि गोकुल भूपे ॥
इति विज्ञापित मतिशय करुणे विरहित हरिदासेन ।
श्रीवक्त्रभ पद कमल पराग धारिणि विरचित वासेन ॥

४७

सततं विचरति वृन्दा विपिने ।

गोकुल पति रति गोपाल बालकै राहूदैपि दिने ॥
 निज वदनेन वदति मामानि गवामति रति वचनेन ।
 मनसि मोदते विपुल रसागत सरस कुञ्ज रचनेन ॥
 निर्मल नीर धीत शिखरोपरि रुचिर शिला मुपविश्य ।
 सुदुक्ते भवन समागत मन्त्रं निज गोपेशु निविश्य ॥
 अत्यङ्गुलि दल विदध कलानि दधानि रुचिर हस्ते ।
 मध्य मोदनं तमुते दृष्टिं जननौ कृत शस्ते ॥
 पिबति विमल पानीयं यमुनाया मञ्जलि बन्धेन ।
 प्रतिविम्ब पश्यति सुचिरं निज लाचन सम्बन्धेन ॥
 मृदु वाटयति वेणु मति मधुरं चर्नात धनु सङ्गे ।
 हरति ताप मध्य कानन देशा विरचित तृण भङ्गे ॥
 कनक चपक गत फेन समूहं पिबति गोप मथितं ।
 शिग्रियतीह बालकुल हृदयं बहु विरह व्यथितं ॥
 श्रीवल्लभ पद कमल पराग राग रञ्जित हृदयं ।
 हरिदासं सुखितं भादै रपि कुरु दुर्जन विलयं ॥

४८

चरणं वहि सरस हृदये ।
 व्यथतेसि तृणमूलै रतिपदमिति चिन्तकमये ॥
 नाङ्ग समुचित मिह धरणा विचरणं सुन्दर
 सति कमले ।
 उद्धटभाव निरन्तर निर्गत नयन नीर विमले ॥
 शीरपि कुरुते सपदि सहायं ।
 यद्यपि वन चलने तदपि वाधते मामक हृदयं ॥
 चरण चिह्न कलने यद्यपि भूमि रथो रस
 सहिता त्यजाति तथापि हरे ।
 इह यदि गन्तुं क्षण सुत्सहसे कर वै सपदि करे ॥
 ब्रज सम्बन्धि गवा मुनगं किमु गोपाजनहृन्दे ।
 दोषमथो चेतसि चिन्तयसे लौकिक मति मन्दे ॥
 किमिति विभेषि ताप संश्रुष्टे धारयितं चरणं ।
 फणफण धृत पदपद्म किमद्भुत मेव तव करणं ॥
 कर्दमजनित दुःख मर्धयसि पदा जनितानन्देन ।
 भूमेरहह वियोगे विहितं किमु मयि गोविन्देन ॥

श्रीवल्लभ पदकमल सदागति सङ्गत गन्धयुतेन ।
 योजय निज चरणं करुणामय दास सरस हृदयेन ॥
 मित्र मायाहि करवै पयो मन्यन मिह
 भोजनोयं त्वया ।
 पत्रं विरचित रुचिर पात्र निहितं हरे ननु विधेया
 ममो परि दया ॥
 शोतलं भये ति ननु भाव सुन्दर हरे मृगु वने यत्न
 विहितं मया ।
 किमिति हि विलम्बसे तिष्ठ मम सन्निधौ
 गोपसुतमण्डली विहित विनया ॥
 दर्शनानन्द गोविन्द सम्पति यथा भवति दुःखालि
 रथ रचित विलया ।
 दृष्टतर नीलमणि मञ्जु मुखलग्न मधु दुग्ध कण
 परम शौभैकनिचया ॥
 तिष्ठ कथयामि परमद्भुता मथकथा मयि किमपि
 मधुवचन मुदित मथ चैकया ।
 मामहह कानने करुणया योजय प्रणत पति
 गोकुलाधीश पदवया ॥
 आयामि किमपि कथयामि तव कर्णयो
 रतिशयित गुप्तमथ लोक विरचित भया ।
 मञ्जु कुञ्जे रचय सङ्केत मद्भुतं शौघ महमायायामि
 चरणगति कृतरया ॥
 विजयिष्यामि परमति रमण सन्धुमे दर्शनोयो
 हरे भक्त कृपया ।
 योजनीयो स्निग्धनु सपदि भवता कदा कार्य करणे
 रसिक जननाथ सहितया ॥
 दर्शयिष्यति कदा मत् प्रभु स्वामिनो सहस वदनं
 विहित विपरीत मिच्छया ।
 मदभिनन्दन मथोदत मनसा कदा कर्णयिष्यति
 सुरति सङ्ग्राम कृत जया ॥
 देहि निज दास्यमिह वल्लभाधीश पदकमल सेवन
 विहित भक्तिज फलाशया ।

सतत-सहितेपि हरिदासके करुणतम-विलस-
विपिने सरस नृत्यत तधिया ॥

५०

यथाह शृणु मा याहि वनं किमुचितमितिगमनं ।
चारणोयमिह गोपैरभितो ब्रजनृपधेनुषनं ॥

भु.वं

करवैष्टत-वसन-भूषाभिरलंकरणं तव देहे ।
रहसि विराजित-विपुल-विताने वस मामक-गेहे ॥
अतिसुगन्धमुद्गर्जनमतिशयशुद्ध-गन्धतेलं ।
ज्ञानमथ कुरु नीरै रणोरुकीकुरु चैलं ॥
कच्छपटं परिधेहि तिलकमपि वितनु विपुलभाले ।
तनुमुशोशं शिरसि विधेयं यथितालकमाले ॥
नूपुर युगमतिचपलं पदयोरुत भुजयोरपि धेयम् ।
कङ्कणचयमथ मध्यमङ्गदं गुच्छसहितमपि देयम् ॥
हृदय-मध्य-मणि-मुक्ताजडित-पदकं नाथ विधेयम् ।
मुक्ताकनकमालिकायुगलं जय जगदखिल भजेऽयम् ॥
उपविश पर्यङ्के मृदुरम्ये कुरु सुन्दर-शयनम् ।
तनु वे कर-कृत-मङ्ग-मर्दनं शिशिरीकुरु नयनम् ॥
इति सरसं वचनं राधाया रतिरसभावयुतम् ।
शृणु वल्लभवर-चरण-कमल-तलगत-हरिदासनुतं ॥

५१

हरिरिह दिवसैवेसति वने ।
गोचारणमपि कुरुते गोपै रभितो विटप-घने ॥

भु.वं

नैव रोचते किमपि सुसुखि मम हरि-विरहित-सदने ।
विरहवह्निरपि तनुते दाहं हृदये नृप-मदने ॥
द्रष्टुमहो कामयते नयनं गोपतनय-वदनम् ।
अलिकुल-सदृशालकमतिरहितं सुगन्ध-दुग्धरदनं ॥
नासासततं विहितदुराशा देहकमल-गन्धम् ।
आदातुं तस्या ननु तनुते सैव हृदयबन्धम् ॥
रसना कुरुते सततं मनोरथमधर-रसं पातुम् ।
वागपि रमानुरागवती विदधाति मनो गातुम् ॥

—०—

श्रीकृष्णाय नमः

षट्—तिताणा

वने आज नन्दलाल सखि प्रेम मादक पिधि
सङ्ग लसना लिये यमुना तीरे ।
फूली केशर कमल मालती सघन वन मन्द सुगन्ध
शीतल समीरे ॥
नीलमणि वरण तन कनक मण्डित वसन परम
सुन्दर चरण परसि माला ।
मधुर मृदुहास परकाश दशनावली छवि भरे
इतरात दृग विशाला ॥
क्रिये चन्दन खौर वदनारविन्द मकरन्द लब्धे
भ्रमर कुटिल भलके ।
हलत कुण्डल लटक चलत जब श्यामघन मणिनकी
कान्ति कल गण्ड भलके ॥
एक चम्पक तनी कृष्ण रस माती करे राग पञ्चम
सङ्ग लागि सोहे ।
एक हरि मुख निरखि धरि रह्यो ध्यान मन चित्र
सम भई हरि हियो मोहे ॥
एक दामिनसी भुज मेलि शीवा बात कहन मिस
प्राय सुख सुख सौ लायो ।
एक नव कुष्मभं खैचि रह्यो कटिबन्ध आपना लाल
चित चार पायो ॥
एक श्याम छि हेरि शुभग लोचन भरि विहंसि
बोली भले कान्ह कपटी ।
एक सोंधे भरी कूटे बारन खरी चन्द्रमुखी विन
कञ्चुकी रौफि लपटी ॥
एक श्यामा कनक कञ्ज वदनी प्रेम मकरन्द भरी
हरि निरखि बिकसी ।
ताके रस लोभि रह्यो लपटि सांवरो भ्रमर प्राण
प्यारी भुजन बीच जु लसो ॥
रसिक मणि रङ्गभरे विहरे हुन्दा विपिन सङ्ग सखि
मण्डली प्रेम पागी ।

कहे भगवान् हित राम राय प्रभु सुमिरि सोई
जाने जाहि लग्न लागी ॥

२

आज नन्दलाल मुख चन्द्र नयनन निरखि परम
मङ्गल भयो भवन मेरे ।
कोटि कन्दर्प लावण्य एकत्र करि वारों तब हीं
जब हि नेक हेरे ॥

सकल सुख सदन हर्षित वदन गोपवर प्रबल दल
मदन जनो सङ्ग घेरे ।
कहो कोउ कैसे हु नाहि सुधि बुद्धि रहे गदाधर
मिथ गिरिधरण टेरे ॥

२

नवल ब्रजराज को लाल ठाढ़ो सखी ललित
सङ्केत वट निकट सोहे ।

देखि री देखि अनिमेष या वेषको सुकटकी लटक
त्रिभुवन मोहे ॥

खेद कण भलक कछु भुकी सो पलक मानो प्रेमकी
ललक रसरस किये ।

परम बड़ भाग वृषभानु नृपनन्दिनी राधिका
अंग पर बाहु दिये ॥

मणि जड़ित भूमि रही नव लता भूमि रस पुञ्ज
शुभ कुञ्ज छवि कहि न जाई ।

नन्दनन्दन चरण स्पर्श हित जानि यह मुनिके
मन नि मिलि पात लाई ॥

परम अद्भुत रूप सकल गुणभूप यह मदन मोहन
विना कछु न भावे ।

अन्य हरिभक्त जिनकी कृपाते सदा कृष्ण गुण
गदाधर मिथ गावे ॥

४

पाकली रात परछाही पातनकी मेरो लालजी
रङ्ग भौनो डोलत द्रुम द्रुम तरनि ।

अन हि देखत वने लागि अद्भुत मने ज्योतिकी
घातसों निकसि रही सब धरनि ॥

कृष्णके दर्शकी अङ्गके स्पर्शकी भई री मग्ग
तब मई हां मज्जन करण ।

नूपुर ध्वनि श्रुतत चकित हो थकि रही परि गयो
हृष्टि सोपालस्योवरे वरण ॥

जुरकशी पाग पर मोर चन्द्रिका बनी कमलदल
नयन भ्रू वङ्ग छवि मनहरण ।

धाई तब गहन को रस बचन गहन को आवति
छवि सों अति चरण सों धर धरण ॥

रोम रोम रमि रह्यो मेरो मन हरि लयो नाहि
विसरत वाकी भुक्तनिमें भुज भरन ।

कहे भगवान् हित राम राय प्रभु सो मिली लोक
लज्जा गई भई हो परवश परन ॥

५

सुकुट माथे धरे खीर चन्दन करि माल सुकृता गरे
कृष्ण हेरे ।

पीत पट कटि कसे कान कुण्डल लसे निशिदिना
उर वसे प्राण मेरे ॥

मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक
दोहनी खरिक नेरे ।

लाल लोचन बने ललित रस में घने मैनेसे
अनगने ग्वाल टेरे ॥

किङ्किणी काछनी देत शोभा घनी देखि कौसुभ
मनी सुर ककेरे ।

प्रभु छवोले रङ्गीले रसीले आली लग्नकी
मग्गमें मन वसेरे ॥

६

कृष्ण कथा विन कृष्ण नाम विन कृष्णभक्ति विन
दिवस जात ।

ते प्राणी काहे की जीवत नहि मुख वदत
कृष्णकी बात ॥

अवण कथा नि श्यामसुन्दरकी राभकृष्ण
रसना न स्फुरात ।

मानुष जन्म कहां पावे गो ध्यान धरे घनश्याम गात ॥

जो यह लोक परम सुख राखत अरु पर लोक
करत प्रतिपाल ।
परमानन्द दासको ठाकुर अति गम्भीर दीनामाथ
दयाल ॥

आज उठि भोर नव कुञ्ज कानन सखी ठाढ़ी
भई राधिका रङ्ग भीनो ।
विलसि सुख सङ्ग नवरङ्ग प्रिय श्यामघन कामको
सैन सब जोति लोनी ॥
शुभग विकसित वदन नयन अति रसमसे मोरि
सुख हंसी कहु सकुच कोनी ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरण सङ्ग नागरी जागि सब रैन
आनन्द दीनी ॥

हैं चली री जाजं जहां मोहन मुरली मधुर
मधुर ध्वनि बाजे री ।
यमुना पुलिन शुभग वृन्दावन मदन गोपाल
विराजे री ॥
सजल नील घन वरण श्याम तन दशन दामिनि
छवि छाजे री ।
मोर मुकुटको शोभा निरखत इन्द्रधनुष अति लाजे री ॥
कुण्डल अरण्य कण्ठ कौस्तुभमणि आनन्द मुख हि
प्रकासे री ।
चरण धरण कहत न बनि आवे कौतुक कुञ्ज
विलासे री ॥
घुंघरवारे अलक नि भलके चन्दन तिलक ललाट री ।
अमल कमलदल मञ्जुल नयनन जोहत हैं
मम बाट री ॥
हरि ठाढ़े हैं कल्पतरु वर तरे मोहि देखि हंसि
देहें री ।
अति ललवाइ लटक सं चले जब सुध बुद्धि सब
हरि लेहें री ॥

जाको मन मिलि रक्षा री लक्षणों ताको अकथ
कहानो री ।
कहै भगवान् हित राम राय प्रभु सुमिरण माभ
समानी री ॥

हैं मिली री तहां जहां खोरि सांकरो सुन्दर
श्याम सबोना री ।
इत ते हैं जात उत ते वे आवत ओटे पोत
उठाना री ॥
हंसि मुसिकाइ लटकि जब बोले पूकत हैं वधू को
नारी ।
हैं सकची मोपें उत्तर न आयो इन ठग ठगी
ठगोना री ॥
चित्र लिखो सो रहि गइ तत्क्षण मनो पढ़ि डारो
टोना री ।

घुंघट चापि चिबुक चितवनिमें भूलि गई
सखि भोना री ॥
मात पिता सुत बन्धु खिजोरो मेरो मन मोछो
मोहना री ।
वंशीधर गिरिधर पर वारो अब कहु और न होना री ॥

१०

अरी मोर मुकुट कुण्डल भलकन अलकन उर
मन मेरो जो हरो ।
मुरली ध्वनि अरण्य सुनि सजनी काम धाम
सब को विसरो ॥
बावरे लोग मारे भटकी घरकी नहीं जानत
पैड़ परो ।
भावे सो होय हरि सङ्ग न छाड़ों यह व्रत जिय
निश्चय जो धरो ॥
काहेको लोक लज आवे सखि काइ सों काइको
काज सरो ।
चन्द्र सखी सोई बड़भागिन बालकण्ठ प्रभु
वारो वरो ॥

११

अरी आज सखी वनते बने आवत गावत श्याम
सखागनमें ।

गति गुञ्जत अमित गयन्द हुकी लखि कौन रहे
अपने मनमें ॥

पगिया सिर लाल रङ्गी भुकि भाल सों पीत भगा
भलके तनमें ।

ए उपमा उपजी जियमें मानो चपला लपटी
श्याम घनमें ॥

घुंघरारी लट लटके मुख पर राजत है रज गोधनमें ।
चित्त लिखी सी रहि गई तत्क्षण वृन्दावन प्रभु
वृन्दावनमें ॥

१२

काहर कारो नन्द दुलारो मो नयन नि को तारो री ।
प्राण पियारो जग उजियारो मोहन मित्र हमारो री ॥
दृगमें राजत हियमें छाजत एकक्षण नाहिन न्यारो री ।
सुरली टेर सुनावत निशिदिन रूप अनूप संवारो री ॥
चरण कमल मकरन्द लुब्ध हूँ मन मधुकर
गुञ्जारो री ।

रसरङ्ग कंलि हवीले प्रभु सङ्ग हित सों सदा
विहारो री ॥

१३

आज व्रजभूमि नवरङ्ग शोभा बनी रास खेलत
नवल सङ्ग प्यारो ।

माधुरी रूप रस केलि सोहावनी चन्द्रिका मोर
हवि देत न्यारा ॥

हलत कुण्डल चिलक पीत पट अति सरस कर
कमल फूल लीन्हें विहारो ।

लग्नमें मग्न मोहन निरखि नेह सो रङ्ग
रसमूल राधे विहारो ॥

सखी नितंत बनी बनी ठनी हित सनी बजत
सुरली मधुर स्वर सुखारो ।

युवतीके दृष्टमें प्रेम पूरण पगी युगल जग प्राण
जीवन अधारो ॥

गगन सुर गण देखन हयो ए अलो शिव
विरिञ्चि सबभ सुधि बुद्धि विसारी ।
हवि हवीलो हवीले हकी होइ जब युवतिन
प्रीत्यु सर्वस्व हारी ॥

१४

निरखि त्रिभुवन घनी प्रेम पूरण सनी माधुरी
रूपरसमें तुभानी ।

हवि हकी सांवरी अब किते जावरी लग्न मन
मोहनी सुधि भुलानी ॥

लाग सों चित्त लुभ्यो नेह हियमें खुभ्यो लाज
कुलकानि जियते कुड़ानी ।

अङ्ग सब रङ्ग हरिके रङ्गी हूँ अङ्गी कोउ कहो
बावरी काउ सयानो ॥

देखि सुन्दर वरण मनहरण सुखकरण नागरी
नवल हित बनिके ठानी ।

रसिक जीवन हवीले प्रभु प्राणधन चरणके शरण
सुखमें समानी ॥

१५

जयति गोकुलानन्द गोविन्द गोपालक तालक
तालगीत-नृत्यकारी ।

हिम-मणि-मण्डलो मध्य घन नीलमणि-मोहनी
नन्दमन्दिर-विहारो ॥

जयति बालगोपाल सुविशाल लोचन-युगल
गरे रुचिर व्याघ्रनखमणि-सुरारी ।

सुघट कटि किङ्किणी नाद उच्चाट पदन्पुर-रणित
गति नृत्यधारो ॥

जयति ललाटपटघटित-तिलक कस्तूरिका कुटिल
अलकावली मुख विकाशी ।

दक्ष दक्षिण हस्त पूपपर पायस वाम कर नवनीत
ब्रह्मराशि ॥

जयति पूतनाप्राण-हत शकट उच्चाट करि असुर
दृष्टावर्त धरि धरणी आनि ।

नीलगिरि श्रीजगन्नाथ शिशुरूप कृत कौन मति दास
माधव बखाने ॥

१६

सरस रस रङ्ग भोने नवल हरि रसिक वर प्रात ही
जात इतरात सोहे ।

परम प्रीतिके ऐन हित हुलसि जागे रेन चैन चित
निरखि द्युति मन मोहे ॥

मन्द मृदुल हसनि क्वि लसनि मुख माधुरी
ललित कच कुटिल टुग वङ्ग भाहे ।

मदन गोपाल अवलोकि धीरज धरे कहो री सजनी
ऐसी बाल को हे ॥

चकित चितवत चित्त करत चञ्चल चखनि
विसरि गति विवश भावरी हो हे ।

शोभा को सदन सुवदनकी ज्योति लखि होत है
कोटि रवि शशि लजो हे ॥

लपटि उद्गार उरहार कञ्चन वसन प्रेम शृङ्गार
तन मन लगो हे ।

केवलराम वृन्दावन जीवन क्वि सब सखी
दृगनिर्षो रूप जोहे ॥

१७

शरत् रजनी रुचिर शशि सुखद चांदनी मुदित
मोहन रसिक रास राचे ।

लैत गति लटकि भ्रू मटकि मदन मोद सों
नवल नटवर ललित खल्प नाचे ॥

रीभि भीजी कुंवरि लाल सङ्ग ताल क्रम उच्चरे
मधुर स्वर सरस सचि ।

उरपति लङ्क हुर मई नई नई गति सों सङ्गीतके
रङ्ग माचे ॥

मेन मोहित चन्द्र यकित खग मृग विवश वांसुरी
ध्वनि सुनत मुनिन बाचे ।

केवलराम वृन्दावन जीवन धन्य युगलवर सदा
विलसत दृगनि दर्श जांचे ॥

षट्—चर्चरी

राधिकारमण गिरिधरण गोपीगाथ मदनमोहन
कृष्ण नटवर विहारी ।

रास लीला रसिक व्रज युवति प्राणपति भकल
दुःख हरण गो गणन चारी ॥

सुख करण जगतरण नन्दनन्दन नवल गोपपति
नारिवल्लभ सुरारी ।

चीत स्वामी हरि सकल जीव उद्धार हित
प्रकट वल्लभ सदन दनुजहारो ॥

२

आज दधि मन्थन करे भामिनो प्रेमथी हर्ष
आनन्द भरी गीत गाए ।

रई माहे करी रञ्जु वे इ कर धरा घमरनो शब्दते
अति सुहाए ॥

प्रेम पुलकित तनी कृष्णरस मा सनो किङ्किणी
नाते अति घोष थाए ।

उरजना भार थी कटिते लचका करे सुन्दरी
शोभा ते कहो न जाए ॥

ते समय कान्हजो आवाने आचका पेटो घर माहे
नवनीत खाए ।

युवती ए जान्यू को धंसी गयुं श्रीरुडे मेलो मंथानते
चालो धाए ॥

सुन्दरी अवतां जोइ श्रीकृष्णजी तजीने माखनते
क्षण पलाए ।

नरसैना स्वामी थी गोपी विनती करे माजसो
माजसों चित सुराए ॥

श्रीकृष्णाय नमः ।

देवशाब्दार—तिताला

आजु अति राजत दम्पती भोर ।

सुरतिरङ्ग के रसमें भोने नागर नन्दकिशोर ॥

अंशन पर भुज दिये विलोकत इन्दुवदन विम्ब भोर ।

करत पान रस मत्त परस्पर लोचन लक्षित चकोर ॥
 छुटी लटन लाल मन करण्यो ये वाके चित्त चोर ।
 परिरक्षण चुम्बन आलिङ्गन सुर मन्दिर कल घोर ॥
 पग उगमगत चलत वन विहरत नव निकुञ्ज घनघोर ॥
 हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥

२

व्रज नव तरुणि कदम्ब सुकटमणि श्यामा आजु बनी ।
 नख शिखली अङ्ग अङ्ग माधुरो मोहं श्याम धनी ॥
 यो राजति कवरो गंथति कच कनक कञ्ज वदनी ।
 चिकुर चन्द्रकण बोच अर्ध विधु मानो असत फनी ॥
 शोभग रस शिर अवत पनारो प्रिय श्रौमन्त टनी ।
 शुकुटी काम को खण्ड नयन शर कज्जल रेख अनो ॥
 तरुण तिलक ताटङ्ग गण्ड पर नासा जलज मनो ।
 दशन कुन्द सरसाधर पङ्कव प्रियतम मन समनो ॥
 चिवुक मध्य अति चार सहज सखि श्यामल
 विन्दु कनी ।

प्रियतम प्राण रत्न मम्पुट कुच कञ्चकी कसि वतनो ॥
 भुज मृणाल बल हरति वलय युत स्पर्श सरस अवनी ।
 श्याम शोष तर मानो मिडवाग रचो रुचिर रमनो ॥
 नाभि गर्भोर मोन मोहन मन खेलन को हृदनी ।
 कस काटि प्रथ नितम्ब किङ्किणि त्रत कदलि
 खम्ब जघनो ॥

पद अम्बुज जावक युत भूषण प्रियतम उर अवनी ।
 नव नव भाव विलोकि भाम इमि विहरत है
 वर करनी ॥

हित हरिवंश प्रशंसित श्यामा कीर्ति विशद घनी ।
 गावत अवणनि सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥

३

देखत नव निकुञ्ज सुनि सजनी लागत है अति चारु ।
 माधविका केतकी लता ले रण्यो मदम आगारु ॥
 शरत् मास राका निशि शीतल मन्द सुगन्ध समीर ।
 परिमल सुब्ध मधुव्रत विथकित नदत कोकिल कोर ॥

बहुविध रङ्ग मृदुल किसलय दल निर्मित

• प्रिय सखि सेज ।

भाजन कनक विविध मधुपूरित धरे धरणि पर हैज ॥
 तापर कुशल किशोर किशोरो करत ह्रींस परिहास ॥
 प्रियतम पाणि उरज वर परशत प्रिया दुसवती वास ॥
 कामिनि कुटिल शुकुटि अवलोकित दिन प्रतिपद

प्रतिकूल ।

आतुर अति अनुराग विवश हरि धाइ धरत भुजमूल ॥
 नागर नोवी बन्धन मोचत ऐंचति नील निचोल ।
 वधु कपट हठ कोप कहति कल नेति नेति मृदु बोल ॥
 परिरक्षण विपरीत रति गति सरस सुरति निज केलि ।
 इन्द्रनील मणिमय तरु मानो लसत कनकको बलि ॥
 रति रण मिथुन ललाट पटल पर अम जल

सीकर सङ्ग ।

ललितादिक अञ्जल भक्त भोरति मन अनुराग अभङ्ग ॥
 हित हरिवंश यथा मति वर्णन कृष्णरसासृतसार ।
 अवण सुनत प्राण वारति राधा पद अम्बुज सुकुमार ॥

४

आजु वन क्रीडत श्यामा श्याम ।
 शुभग बनी निशि शरत् चांदनो रुचिर कुञ्ज अभिराम ॥
 खण्डन अधर करत परिरक्षण ऐंचत जघन दुकूल ।
 उर नखपंक्ति तिरोछी चितवनि दम्पति नोरस समतूल ॥
 वै भुज पान पयोधर परशत वाम दिशा प्रिय हार ।
 वसननि पीक अलक आकर्षत समर अमित शत् मार ॥
 पल पल प्रबल चोपरस लम्पट अति सुन्दर सुकुमार ।
 हित हरिवंश आगु व्रण टूटत ह्यो वलि विशद विहार ॥

५

आजु वन राजत युगल किशोर ।
 नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी उठे उमोदे भोर ॥
 उगमगात पग धरत शिथिल गति परशत नख
 शशि छोर ।
 दशन वसन खण्डित सुखमण्डित माला तिलक
 ककु थोर ॥

दुरत न कच करजनिके रोके नयन अरुण अलि चोर ।
हित हरिवंश संभारन तन मन सुरति समुद्र भुकोर ॥

६

वनकी कुञ्जी निकुञ्जनि डोलनि ।
निकसत निपट सांकरो बोथिन परशत नाहि
निचोलनि ॥

प्रातकाल रजनो सब जागे सूचत सुख दृग लोलनि ।
आलस्य बलित अरुण अति व्याकुल कहु उपजति
गति गोलनि ॥

निर्तन मृकुटो वदन अम्बुज मृदु सरस हास मृदु
बोलनि ।

अति आसक्त लाल अति लम्पट वश कोन्हें विनु
मोलनि ॥

विलुलित शिथिल श्याम छूटो लट राजत रुचिर
कपोलनि ।

रति विपरीत सुम्बन परिरम्भण चिबुक चारु
टक टोलनि ॥

कबहुंक अमित किसलय शय्या पर सुख अञ्चल
भक भोलनि ।

हित हरिवंश दास हिय सौचत वारिद केलि
कलोलनि ॥

७

प्रोतम दोऊ बने मरगजे बागे ।
नव निकुञ्जते निकसि प्रात हो पिय पाछे धन आगे ॥
खण्डित अधर पयोधर मण्डित गण्ड विराजत दागे ।
छूटो लट टटो मणि माला अ घंघट छवि पागे ॥
नख शिख विशिख कुसुमकी सेना छूटे हेरन बागे ।
व्यास स्वामिनी को सुख सर्वस्व विलसो श्याम सभागे ॥

८

कहाँलो अलके देही ओट ।
चञ्चल चपल सुरङ्ग छवीलो आनि बन्यो मग जोट ॥
खञ्जान मीन कमल अति लाजल उपमा दीजे कोट ।
सूरदास प्रभु कहां लग वरनी नाहि न रूपकी टोट ॥

९

भलो यह खेलिवेको बानि ।
मदनगोपाल लाल काङ्गकौ नाहि न राखत कानि ॥
देखि यशोमति कर्तव्य सुतके यह ले माट मथानि ।
फोरि टोरि दधि डारि अजिरमें कौन सहे
दिन हानि ॥

अपने हाथ ले देत वनचर को दूध भात छत सानि ।
जो वरजों तो आंखि दिखावे पर घर कूद निदानि ॥
ठाढ़ी हसति नन्द जूकी रानो मूँदि कमल मुखपानि ।
परमानन्द दास जानत है बोलि बूझि दे आनि ॥

१०

ठाढ़ी यशोदा कहे ।
यह ब्रजके लोग लालके गोहन लागे रहे ॥
जाके भवन जात न कबहुँ सो भूठे आनि गहे ।
एक गाँउ इक वास वसे वो कैसे जात निबहे ॥
तुम जिन खोजो मात यशोदा सबनि को जीवन यहै ।
परमानन्द आंखि जरो जाकी जू टेढ़ो दृष्टि चहे ॥

११

सुनहु धों अपने सुतकी बात ।
देखि यशोमति कानि न राखत ले माखन दधि खात ॥
भाजन भानि डारि सब गोरस बांटत है करि पात ।
जा वरजों ता उलटि डरावत चपल नयनकी घात ॥
जो पावत सो लेत चपल हठि नेक हु नाहि डरात ।
हों सकुचति अञ्चल कर धरिके रहो टांपि सुख गात ॥
गिरिधर लाल हाल ऐसे करि चले धाय मुसिकात ।
चतुर्भुज दास सङ्ग हों आयो बुझि सोह दे सात ॥

१२

जो तुम सुनहु यशोदा मोरी ।
नन्दनन्दन मेरे मन्दिरमें आजु करत थे चोरो ॥
हों भई आनि अचानक ठाढ़ी कछो भवनमें को रो ।
रहे छपाइ सकुचि मोचक होइ मनहु

भई मति भोरी
मोहि भयो माखन पछितावो रोतो देखि कमोरी ।

जब गहि बाँह कुलाहल कोन्ही तब गहि चरण
निहोरी ॥

लागी लीन नयन जल भरि भरि मैं हरि कानि
न तोरी ।
सूरदास प्रभु देव निशा दिन ऐसी अलक सलोरी ॥

१२

हा हा और सुन गो कोज ।
बहुरि गालि मुखत जिनि काढ़े जो हम जाने दोज ॥
बालक काढ़ निपट भोरो है पांयो चलन सिखायो ।
तासो कहति भवन अपनेमें चोरी माखन खायो ॥
घर ह करत कलिक क्रम क्रम जो कोउ बहुत निहोरे ।
सो क्यों अनत सकुचको लरिका कर्किक के बन्द तारे ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण चन्द्र को भूठेही लावति खोरे ।
है है काह और गोप को इनहीके अनुहारे ॥

१४

मित उठि देन उराहनी आवे ।
यह जु ग्वाली यौवन मदमाती भूठे ही दोष लगावे ॥
कहि धीं भाजन धरं वराये कहां मेरो मोहन पावे ।
लरिका अति सकुमार गहे कर हलधर सङ्ग खिलावे ॥
कबहुं क कहति कचुकी फारी कबहुं क और बतावे ।
कबहुं क रई मथानी लेके आंगन शोर मचावे ॥
मन तेरो लाग्यो कमल नयन मैं उत्तर बहुत बनावे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुख इह मिस क्षण क्षण
देखी भावे ॥

१५

अरी मेरो तनक सो गोपाल कहा करि जाने
दधिकी चोरी ।

काहे को आवति हाथ नचावति जीभन कर ही थोरी ॥
कब छीके ते माखन खायो कब दधि मटुकी फोरी ।
अङ्गुरिन करि कबहुं नहीं चाखत घर हा
भरी कमोरी ॥

इतनो बात सुनी जब ग्वालिन विहसि चली
मुख मोरी ।

परमानन्द नन्दरानीके सुत सो जो कहु कहे सो थोरी ॥

१६

ढोटा रक्षक माखन खायो ।
काहे को हरई होति री ग्वालिनि धब ब्रज गाजि
हलायो ॥

जाको जितनो तुम जानत हो दूनो मोपे लोह ।
मेरो काह रहे इकलो तब सबे आशिष मिलि देह ॥
कमल नयन मेरो अखिय नि तारो कुल दीपक
ब्रज गीह ।
परमानन्द कहत नन्दरानी सुत प्रति अधिक सनेह ॥

१७

तुम नौके दुहि जानत गैया ।
चलिये कुंवर रसिक नन्दनन्दन लागीं तिहारि पैया ॥
तुम हि जानि करि कनक दोहनी घरसे पठई मैया ।
निकट हि है यह खरिक हमारो नागर लेउं वलैया ॥
देखियत परम सुदेश लरकई चित चुह्यो सुन्दरैया ।
कभनदास प्रभु मानि लई रति गिरि गोवर्द्धन रैया ॥

१८

मोहन पूरे हो सत् भाइ ।
कहत लाल नौके दुहि देही ग्वालि तिहारी गाइ ॥
आतुर हौ दोहनी कनककी करते लोनीं धाइ ।
देही वेगि पाटकी नाई बछरा चोखे जाइ ॥
हंसि हंसि दुहत अरु कहत रसीली बातें बहुत
बनाइ ।

चतुर्भुज प्रभु सहज हि रति जोरो गिरिगोवर्द्धन राइ ॥

१९

लाल तुम कैसे दुहत हो गाइ ।
कहुं बैठे कहुं दृष्टि दोहनी धार कहुं चलि जाइ ॥
यह दुहियो हम कबहुं न देख्यो ग्वालि कहति
समुभाइ ।

जो कहु हुतो तनक सो वामें सिरतो दियो लुटाइ ॥
मेरी सास खरी रिसहारी अब मोहि देखि रिसाइ ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरण लालपे सर्वस्व चली हराइ ॥

२०

पिछोड़ी बांझन देहो दान ।
सूधे मनु तुम लेहु गुसाईं राखी हमारो मान ॥
मार्ग रोखी रहै नन्दनन्दन सब गुण-रूपनिधान ।
वदन मोरि मुसकाइ भामिनी नयन वाण सन्धान ॥
नन्दरायके कुंवर लाडिले सबके जीवन प्राण ।
परमानन्द स्वामी मोहन हो तुम ते कौन सुजान ॥

२१

मोहन तुम कैसे हो दानी ।
सूधे रह्यो गहे पति अपनी तिहारि जीकी मैं जानी ॥
हम गूजरी गंवारि अहोरो तुम हो सारङ्गपानी ।
मटुकी लई उतारि शीघ्रते सुन्दरि अधिक लजानी ।
कर गहि चीर कहा ऐंचत हो बोलति चतुर सयानी ।
सूरदास प्रभु माखनके हित प्रेम प्रीति चित ठानी ॥

२२

आज दधि देखो तेरो चाखि ।
कहि धो मोल किते बेचेगी सत्य वचन सुख भाखि ॥
जोई तू कहे सोई हो देहो सङ्ग सखा सब साखि ।
जो न पत्याइ ग्वालि तू हमको कण्ठयो ले राखि ॥
ले चले सङ्ग घर दाम देन को जनयो नेकु कटाखि ।
कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धर रसवश लियो तताखि ॥

२३

रसक चाखन दे री दह्यो ।
अकुत खाद अरण सुनि मोपे नाहिन परत रह्यो ॥
ज्यो ज्यो कर अम्बुज कुच भम्पति त्यो त्यो
मर्म लह्यो
नन्दकुमार छवीलो टोटा अञ्जल धाइ गह्यो ॥
हरि हठ करत दास परमानन्द इह मैं बहुत सह्यो ।
इन बात नि खायो चाहत हो सेत न जात बह्यो ॥

२४

किशोरी अङ्ग अङ्ग भेटो श्याम हि ।
छायातमाल तरल भुज शाखा लटकि मिसी ज्यो
दाम हि ॥

गिरिवर धरण सुरति रति नायक रति जीव्यो
सङ्गाम हि ।
सुर कहे ए उभय सुभट विच क्यो जु वसे रिपु
काम हि ॥

२५

किशोरी देखत नयन सिरात ।
वलि वलि जाउं मुखारविन्दकी चन्द्र मन्द ह्वै जात ॥
श्याम कण्ठकी तामें शोभित कञ्चन कलस न मात ।
मानो मदन दोउ कुच जपर नील वस्त्र फहरात ॥
नकबेसरि और उरभि पीताम्बर देखत सुनि सुरभात ।
या सुख देखे सूरदास प्रभु उड़े पुराने पात ॥

२६

सघन कुञ्जते उठे भोर हो श्यामा श्याम खरे ।
जलद नवीन त्रिया मिलि दामिनि वर्षि निशा उघरे ॥
शिथिल रसन पट नील पीताम्बर आलस्य युत पहिरे ।
ककुक बुन्द रति अम कणिका बादर वरण करे ॥
भूषण विविध हुती मिडवारो अतिरस उमडि परे ।
कज्जल अधर तमोल नयन रस अङ्ग अङ्ग भिल परे ॥
प्रेम प्रवाह कुटो मानो सरिता टूटी माल गरे ।
शोभा अमित विलोकि सुर सुख नाहि न जात तरे ॥

२७

देखि सखि चार चन्द्र इकठोर ।
चितवति रह्यो नितम्बिनि प्रिय सङ्ग सार सुताकी ओर ॥
हे विधु नील श्याम-घन जैसे हे विधुको गति गोर ।
ताके मध्य चार शुक राजत हे फल आठ चकोर ॥
शशि शशि सङ्ग प्रवाल कुन्द अलि तहां अरुभि
दो मोर ।
सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि वलि वलि युगल
किशोर ॥

२८

यशोमति आनन्द कन्द नचावति ।
पुलकि पुलकि इलसाति देखि सुख अति सुख
पुञ्ज हि पावति ॥

बाल युवा हृदा क्रियोर मिलि सुटकी दै दे गावति ।
 नूपुर खर मिश्रित ध्वनि उपजत शिव विरिञ्चि
 विस्मावति ॥
 कुञ्चित ग्रन्थित अलक मनोहर भूपक वदन
 पर आवति
 जनु भगवान् मनहुं घन विधु मिलि मकर चांदनो
 लजावति ॥

२९

मांगत दधि माखन उठि प्रात ।
 हों दधि मथन करनको बैठो तहां आई अररात ॥
 कल्लो यगोदा रियो रोहिणी फंसि हंसि बैठे खात ।
 ब्रजपति प्रिय और मागत हैं कहि कहि तोतरी बात ॥

३०

तुमपे कौन दुहावत गया ।
 गूढ़ भाव सूचित अन्तर गति अति सुकामकी नेया ॥
 गूढ़ प्राति तासों मिलि कोजे जो हाइ तिहारो देया ।
 ज्यों भावे त्यों मिलत सबनि सो इहे सिखाई मैया ॥
 ले जु रहै कर कनक दोहनो बैठे हो अधपेया ।
 परमानन्द स्वामी हठ मागो ज्यों घर खसम गुमैया ॥

३१

वसे मेरे नयन में नन्दलाल ।
 सांवरो सूरत माधुरी मूरति राजीव नयन विशाल ॥
 मोर मुकुट मकराक्षत कुण्डल अरुण तिलक दिये
 भाल ।
 शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजत कौस्तुभ मणि वनमाल ॥
 बाजबन्द जरी के भूषण नूपुर शब्द रसाल ।
 दाम गोपाल मदनमोहन प्रिय भक्तनके प्रतिपाल ॥

३२

क्यों विसरे वह गाइ चरावनि ।
 वाम कपोल वाम भुज पर करि दक्षिण भौंह
 उचावनि ॥
 कोमल कर अङ्गुलि गहि मुरली अधर सुधा वर्षावनि ।
 चढ़ि विमान जी सुनत देव तिय तिन हु मोह
 उपजावनि ॥

हार हास उर स्थिर चपला अरु अद्भुत रूप
 मिलावनि ।
 दन्त धरे टण रहति चित्र ज्यों गैयन सुंधि विसरावनि ॥
 मोर मुकुट श्रवण नि पल्लव कटि मङ्गल स्वरूप
 बनावनि ।
 चरण रेणु वाञ्छत कम्पत भुज सरितन गमन
 थंभावनि ॥
 आदि पुरुष जो अचल भुतिब्धे सङ्ग सखागुण गावनि ।
 वन वन फिरत कबहुं मुरली कर गिरि
 चढ़ि गाइ बुलावनि ॥
 लता विटप मन माह प्रकट ह्वे फलभर भूमि
 नवावनि ।
 तत्क्षण हरित होत प्रति अवयव मधुधारा उपटावनि ॥
 सुन्दर रूप देखि वन लाला मत्त मधुप खर गावनि ।
 आदर देत सरोवर सारस हंस निकट बैठावनि ॥
 बल सङ्ग श्रवण पुहप शोभा गिरिशिखर नाद
 पुरवावनि ।
 विविध भांति वन गमन विचक्षण नूतन तान बतावनि ॥
 सुनत नाद ब्रह्मादिक सुरगण अधिक चित्त मोहावनि ।
 चलत ललित गति हरत ताप ब्रजभूमि शोक
 विनशावनि ॥
 ब्रज युवती मन मेन उदय करि स्थिरता ठहरावनि ।
 दिव्यगन्ध तुलसी माला उर मणि धर गाइ गनावनि ॥
 वेणुनाद वञ्चित करि सब हरिणी भौंह छिड़ावनि ।
 कुन्ददाम शृङ्गार सकल अङ्ग यमुना जल उकरावनि ॥
 सुदित सकल गन्धर्व देवगण सेवा उचित करावनि ।
 गिरिधर वत्स ले ब्रजगैयनके आवत चरण कुवावनि ॥
 वेणु बजावत ब्रज सुख देवे गाय नि ले ब्रज आवनि ।
 गावत गोप विशद कीर्ति सङ्ग फिरत वर भावनि ॥
 घमत् मद दृग देत मान ककु श्रुति कुण्डल
 भलकावनि ।
 बदर सट्टय आनन सब सूचित विधु ज्यों अङ्ग
 सिरावनि ॥

गुण गावत ह्वै प्रकट रूप सों घोष वियोग बुझावनि ।
चारि याम हरिके सङ्ग क्रीड़त लीला माह समावनि ॥
यह लीला चित वसो लसो नित गोपीजन सुख
पावनि ।

दोजी दास रसिक को यह फल व्रज जनपद
रज धावनि ॥

२१

जब ते श्याम शरण में पायो ।
तब ते भेंट भई श्रीवल्लभ निज पति नाम बतायो ॥
और अविद्या छाड़ि मलिन मति श्रुतिपति सों
दृग दृढ़ायो ।

कृष्णदास सब युग जन खोजत अश्व निश्चय
मन आयो ॥

२४

प्रकटे श्रीवल्लभ राजकुमार ।
जय जय श्रीगिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्ण जु उदार ॥
गोकुलपति व्रजपति श्रीयदुपति शोभित तन घनश्याम ।
कृष्णापति श्रीकल्याण राय जू रसिक जननि
सुखधाम ॥

श्रीसुरलो धर प्रभु बालक श्रीवल्लभकुल सकल समान ।
विष्णुदास गोपाल लीला वपु गावत वेद पुरान ॥

२५

श्रीगोकुल युग युग राज करो ।
या सुख भजन प्रतापते क्षण इत उत न टरो ॥
पावन रूप दिखाय प्राणपति पतितन प्राप हरो ।
विश्वविदित दीन गति प्रेत निज गति नियम धरो ॥
श्रीवल्लभकुल कमलनि दीपक यश मकरन्द भरो ।
नन्ददास प्रभु षट्गुण सम्पन्न श्रीविठलेश वरो ॥

२६

जे जन शरण गए ते तारे ।
दीनदयाल प्रकट पुरुषोत्तम श्रीविठल नाथ ललारे ॥
जितनौ रवि छायाको कणिका तितने दोष हमारै ।
तुम्हरे चरण प्रताप तेजते ते-ते तत्क्षण तारे ॥

माला कण्ठ तिलक माधे दे शङ्ख चक्र वपु धारे ।
माणिक्यचन्द्र प्रभुके गुण ऐसे महापतित निस्तारे ॥

२७

महा श्रीवल्लभ के ह्वै गाजो ।
चरण अम्बुज गहि मान ग्रन्थ तजि स्वामी
पदते भाजो ॥

गोता भागवत निगमसे साखी तो भाहे को लाजो ।
गीतगोविन्द विखमङ्गल सोमा को कहि सके
अनदाजो ॥
श्रीपुरुषोत्तम इन हो ते पेंये यह दृढ़ मति तुम साजो ।
सगुण दास कहे युवती सभामें गिरिधर महल
विराजो ॥

२८

अपुन पै अपनो सेवा करत ।
आपुन प्रभु आपुन सेवक ह्वै अपनो रूप उ धरत ॥
आपुन धर्म कर्म सब जानत मर्यादा अनुसरत ।
स्रोतस्वामी गिरिधरण श्रीविठल भक्तवत्सल वपु धरत ॥

२९

हम तो श्रीविठल नाथ हि जाने ।
आन देव सेवन कत करिए नहि कहु उरमें आने ॥
कोज भजो सुरपति कोज गणपति व्रत कोछ
भजो वेद पुराने ।
कोज रवि चन्द्र भजो शिव शङ्कर कोज भजो
प्रकट प्रमाने ॥

कोज भजो सनकादिक मुनि नारद कोज भजो
कर्म निदाने ।
कोज भजो अंश कला अवतारे कोज अक्षर
क्षर थाने ॥

कोज भजो नेति नेति कहि निर्गुण कोज भजो
पद निर्वाणे ।

कोज भजो तन्त्र मन्त्र यन्त्रनको फिरत सबे भहराने ॥
कोज भजो नव अरु सात पदार्थ मुक्ति ले सके दाने ।
करुणानिधि गिरिधर भजि दृढ़ करि हरिलोला
रस पाने ॥

४०

श्रीवल्लभके नन्दन फिरि आए ।
 वेई रूप वेई फिरि क्रीड़ा करत आपु मन भाए ॥
 वे फिरि राज करत श्रीगोकुल वेई रीति प्रकटाए ।
 वेई शृङ्गार भोग क्षण क्षणके वेई लीला गाए ॥
 जे यशोमति को आनन्द दीन्हो सो फिरि ब्रजमें आए ।
 श्रीविठ्ठल गिरिधर पद अम्बुज गोविन्द उर में लाए ॥

४१

प्रगट्यो प्राची दिशि पूरण चन्द्र ।
 यो ही प्रगटे श्रीवल्लभ गृह सुन नर मुनि आनन्द ॥
 अद्भुत रूप अलौकिक महिमा जन जनतायो भाण्यो ।
 श्रीतस्वामी गिरिधरण श्रीविठ्ठल लोक वेद मत राख्यो ॥

४२

यह कलि परम शुभग जन धन्य श्रीविठ्ठलनाथ
 उपासी ।
 जो प्रकटे ब्रजपति विठ्ठलेश्वर तो सेवक ब्रजवासी ॥
 ब्रजलीला भूल्यो चतुरानन कुल टारो ब्रतरासी ।
 अब लो गठ अवगणत अभागी करत परस्पर हासी ॥
 आत्या सहित आपु भए हैं हित् दीन्हो नर प्रकासी ।
 देखियत लोक स्वरूप अलौकिक ज्यो गङ्गा सरिता सो ॥
 परिहरि सदन सदा हरि यश गावत मुक्ति
 भक्तकी दासी ।
 वदत न कछु भीम भव-वैभव भजनानन्द उपासी ॥

४३

यशोदा कहा कहीं हों बात ।
 तुम्हरे सुतके करतव मोपे कहत कहे नहिं जात ॥
 भाजन फोर डोरि सब गोरस ले माखन दधि खात ।
 जो वरजो तो आँख दिखावे रंचहु नाहिं सकात ॥
 और अटपटो कहां लो वरमा कुवत पाणि सो गात ।
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके गुण ही कहति कहति
 सकुचात ॥

४४

स्वास्तिन तोहि कहत क्यों आयो ।

मेरो कान्ह निपट बालक क्यों चोरी माखन खायो ॥
 बूझि विचारि देखि जिय अपनि कहा कहीं हों
 तोहि ॥
 कछुकि बन्द तोरे यह कैसे सो समीझि परति
 नहिं मोहि ॥
 चतुर्भुज दास लाल गिरिधर सो भूठी कहति बनाय ।
 मेरो श्याम सकुच को लरिका पर घर कबहुं न जाय ॥

४५

बालक ही ते चोरी ए हो जानत ।
 माखन दूध धख्यो उन छाड़्यो बहोरि अचानक
 भाजन भानत ॥
 अब हीं लाल मेरो सर्वस्व मूस्यो और उलटे तुम
 कैसी कैसी वानत ॥
 कुम्भन दास प्रभु सङ्ग लागी डोलति गोवर्द्धनधर
 अज हुं न मानत ॥

देवगान्धार—अटताल

मानि मानि री मोहन द्वार ठाढ़े ।
 तेरी तो प्रकृति आने पियकी पीरो न जानि बातें तो
 बहुत उफाने त्यों त्यों ते हृदय आगार कपाट
 दिये गाढ़े ॥
 वर्षे रैन कारो तो सो बहिं लगी भारी ऐसे री
 लालन पर तन मन धन वारि फेरि प्राण दीजे काढ़े ।
 सुनत वचन प्यारी कण्ठ लागी गिरिधारी गोविन्द
 प्रभुको हृदय प्रेम जल सो बुभायो आए विरहानल
 दाढ़े ॥

२

कछु व कही न जाइ तेरी उनकी विकट बात ।
 आन आन प्रकृति कैसे बनि आवे जो तू डार डार
 ता वे हैं री पात पात ॥
 अब कहा कहति सोइ जाइ कहीं प्रियतम सो छाड़ि
 देहु इत उतकी पांच सात ।
 अब एते पर गोविन्द प्रभु सुमुख मनावत तेरो
 बातनि बातनि भयो प्रात ॥

१
विनती करतु प्यारी की सखी लालन सुरली नेक
बजाइये ।
जानति हों सकल कला गुण नि शिरमौर ढौव्यो
दोजत तातें घोष राजकुंवर हम हु तान हे सुनाइये ॥
जैसे खग मृग द्रुम पशु वेली सरिता मोह्यो तैसे
हमारी सखि निको मन रिभाइये ।
गोविन्द प्रभु सकल कला प्रबोध तातें हमारे
श्रवणनि सुख उपजाइये ॥

४
लहते दे मेरो उरहार ।
जाइ कह्यो गी नन्द राय सो यह तेरो व्यवहार ॥
मेरो दुलरी मेरो कङ्कण मेरो गजरा हार ।
तेरे घरको मोल सबै मेरो सहज शृङ्गार ॥
बहुत टिनन को भ्रगरो ठान्यो उर मणि कञ्चनहार ।
भ्रगरति भ्रगरति गई कुञ्जमें व्यास कियो निर्वार ॥

५
कुङ्कः सदन तें मदन जीति उठे घन दामिनी से भोर ।
व्रज तरुणो वृषभानु नन्दिनी नागर नन्दकिशोर ॥
राजत है वनमाल शीव उर बनी बलाका डोर ।
मनहु पाकशासन शरासन सो शीर्ष चन्द्रिका मोर ॥
परिभृत वेणु हंस हंसनि मन चातक नयन चकोर ।
सुरली अधर मधुर कल गरजत ललित राग
मिलि घोर ॥

वर्षे प्रेम नीर रस सरसे दर्श अनुपम जोर ।
देखि प्रभु ऐसे मनमोहन आवत व्रजकी खोर ॥

६
भली तुम आए मेरे प्रात ।
रजनी सुख कहुं अन्त कियो प्रिय जागे सारी रात ॥
भ्रपि भ्रपि आवत नयन उनौदे कहा कहुं यह बात ।
ज्यों जलरुह तकि किरण चन्द्रको प्रति सभौत
मुंदि जात ॥
कहुं चन्दन कहुं वन्दन लाग्यो देखियत सांवल गात ।

गङ्गा सरस्वती मानो यमुना अङ्ग हि मांभ लखात ॥
भली करी प्रथ बोल निबाहे मेरे यह प्रभात ।
श्रीत स्वामी गिरिधर शुनि बातें वदन मोरि
सकुचात ॥

७
सांचे भए आए प्रभात ।
नन्दनन्दन रजनौ कहां जागे कहिये सांवल गात ॥
पीक कपोल नि लगे तुम्हारे जावक भाल लखात ।
उर हि विराजत विनगुण माला मोतन लखि
सकुचात ॥

भली करी अब तहीं पग धारो जहां विताई रात ।
श्रीत स्वामी गिरिधर काई को भूठो सांचे खात ॥

८
मोहन करतें दोहनि लीनी गोपद वहरा जोरें ।
हाथ धेनु स्तन वदन त्रियातन छोरि हांकि छल छोरें ॥
आनन रह्यो ललित पय छीटे छाजत छवि तृण तोरें ।
मानहु निकसि कलङ्क कलानिधि दुग्धसिन्धु
मधि खोरें ॥

दे घुंघट पट आठ नील हंसि कुंवर मुदित सुख मोरें ।
मनहु शरत् शशि को मिलि दामिनि घेर लियो
घनघोरें ॥

यह विधि रहसत विलसत दम्पति हैत द्विय
नहिं धारें ।
सूर उमगि आनन्द सुधानिधि मनो विलावलि फोरें ॥

९
अब हो देखे नवल किशोर ।
घर आवत ही तनक भए हैं ऐसे तनके चोर ॥
कछु दिन कारि दधि माखन चोगी अब चोरत
मन मोर ।

विवश भई तन सुधि न संभारति कहति बात
भई भोर ॥
यह वाच्यो कहत ही लजानो समुक्ति भई जिय बोर ।
सूरश्याम सुख निरखि चलो घर आनन्द लोचन लोर ॥

१०

युवती एक आवत देखो श्याम ।
 हुमकी आंठ रहे हैं आपुन यमुना तट गई वाम ॥
 जल हलोरि गागरि भरि नागरि जब ही शीर्ष
 उठायो ।
 घरका चलो जाइ ता पाकें शिरते घट ढरकाया ॥
 चतुर ग्वालिक कर गह्यो श्यामका कनक लकुटिया
 पाई ।
 और नि सो करि रहे अचगरो मोसो लगत कन्हाई ॥
 गागरि लै हंसि देत ग्वालिक कर रोता घट नहिं लेहो ।
 सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि तब कि लकुट
 कर देहो ॥

११

गोपिका अति आनन्द भरी ।
 माखन दधि हरि खात सखनि सङ्ग अति
 आनन्द खरी ॥
 कर लै ल मुख स्पर्श करावति उपमा बड़ी सुभाई ।
 मानहु कञ्ज मिनत शशि को लिये सुधा कीर
 कर आई ॥
 जा कारण शिव ध्यान लगावत शेष सहस्र मुख गावत ।
 सोई सूर प्रकट ब्रज भोतर राधा मन हि चोरावत ॥

१२

मन मन हंसति राधिका गोरो ।
 ऐसे श्याम रहत ब्रज भोतर बूझति है भई भोरी ॥
 तुम उनको कहूं देखे हैं के शुनी कहति हो बात ।
 चतुराई नीके गहि राखो मुख मुरिके सुसिकात ॥
 कब हूं ता कहूं सङ्ग परि हो तब हो लीजो चीनि ।
 सूर श्यामको पीताम्बर मेरो बेसरि लीजो छीनि ॥

१३

तुमको कैसे श्याम लगे ।
 न्हात रहो जलमें सब तरुणो तब तुम कहां खगे ॥
 अङ्ग अङ्ग अवलोकन कौनों कौन अङ्गपर रहे पगे ।
 भूष्यो न्हान ज्ञान तन भूषो नन्द सुनु उतते न उगे ॥

जानति नहीं कहूं नहिं देखे मिलि गई ऐसे
 मनहु सगे ।
 सूरश्याम ऐसे तें देखे मैं जानति दुःख दूरि भगे ॥

१४

श्याम अति राधा विरह भरे ।
 कबहूं मदन कबहूं आनि हीं कबहूं पीरि खरे ॥
 जननी आतुर करति रसोई देखि देखि हरि जात ।
 कहा अवेरे करति तू अब री भूख लगी अति प्रात ॥
 मैं वलि जापो श्याम घन सुन्दर अब बैठो तुम आइ ।
 सूर सखा सङ्ग सबे बोलावहु हनधर नहीं बताइ ॥

१५

मेरे नयन नि हीं सब खोरि ।
 श्यामवदन कवि निरखि जु अटके बहुरे नहीं बहोरि ॥
 जो मैं कोटि यत्न करि राखति घूँघट अट अगोरि ।
 तो उड़ि मिले वधिकके खग ज्यों पलक पिञ्जर
 नि तोरि ॥
 बुद्धि विवेक बल वचन चातुरी पहिल हि लई
 अंजोरि ।
 अति अधीन भई सङ्ग डोलति ज्यों व गुड़ो वश डोरि ॥
 अब धां कौन हेत हमसो बहुरि हंसत मुख मोरि ।
 मनहु सूर दोउ सिन्धु सुधा भरि उमगि चले मिति
 फोरि ॥

१६

मैं जानी पिय मनकी बात ।
 धरणी पगनख कहा करोवत अब सीखे ए घात ॥
 तुम जानत जिय हम हि सयाने अरु सब लोक
 अयाने ।
 रैन वसत कहूं भोर हमारे आवत नहीं लजाने ॥
 यह चतुरई पढ़ो ताही पे सौ गुण हमते न्यारो ।
 धन्य धन्य सूरदास के स्वामी काहे हमन विसारो ॥

१७

पिया पिय नाहिं मनायो माने ।
 श्रीमुखवचन मधुर मृदु मादक कठिन कुक्षिय हुते
 जाने ॥

शोभित सहित सुगन्ध श्याम काच कल कपोल
अरुभाने ।

मनहुं विष्णुद अस्यो कलानिधि तजत नहीं
विनु दाने ॥

बाल भाव अनुसरति भरति दृग अय अंशुकन आने ।
जनु खच्चरीट युगल जठरातुर लेत सुभञ्ज अकुलाने ॥
नयन निकट ताटङ्क गण्ड मण्डल पर कविन वखाने ।
जनु खद्योत चमकि चलि सकत न निश्रिगत
तिमिर हिराने ॥

यह शुनिके अकुलाय चले हरि क्तत अपराध क्षमाने ।
सूरदास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि सुसकाने ॥

१८

कितते आये हो नन्दलाल ऐसी कौन बाल जा
धोखे तुम आइ द्वार ह्वै भांके ।
मिटति नहीं चितवनि हित चित को आ है टेव
तिन तिन में पहिंचाने नयन बांके ॥

कबहुं जंभात कबहुं अङ्ग मारत अटपटात
मुख बात न आवत रैन कहं धां थाके ।
सूरदास प्रभु रसिक शिरामणि रसिक रसिकई
जानि नाम लेहु रहे जाके ॥

१९

मैं जाने हो जू ललना तहीं निशि धरिये जहां नयो
नेहरा ।

मंहु कौ हलभराई मोहू सों कहन आये जियकी
जासों ताही सों तुम विनु सूनो वाको गेहरा ॥
निशाके सुखकी बात कहे देत अधर नयन उर
नख लागि छवि देहरा ।

वेग सवारे पग धारिये सूरके स्वामी ना तब भीजे
गो पियरो पट आवतु है पिय मेहरा ॥

२०

जोई जोई प्यारे करे सोई मोहि भावे भावे मोहि
जोई सोई सोई करे प्यारे ।

मोकी व भावति ठौर प्यारेके नयन निमें प्यारे भये
चाहें मेरे नयननिके तारे ॥
मेरे तन मन प्राणहु ते प्रियतम प्रिय अपने कोटिक
प्राण प्रियतम मो से हारे ।
श्रीहित हरिवंश हंस हंसिनी श्यामल गौर कहो
कौन करे जनतरङ्गिनी न्यारे ॥

२१

प्रात समय दोऊ रस लम्पट सुरति युद्ध जय युत
अति फूल ।

प्रेम वारिज घन इन्दु वटन पर भूषण अङ्ग हि
अङ्ग विकूल ॥

कछु रञ्जो तिलक शिथिल अलकावलि वदनकमल
मानहु अलि भूल ।

श्रीहित हरिवंश मदन रङ्ग रङ्गि रहे नयन वेंन कटि
शिथिल दुकूल ॥

२२

आजु तो युवति तेरो वदन आनन्द भरो पियके
सङ्गमके सूचत सुख चैन ।

आलस्य बलित बोल सुरङ्ग रङ्गे कपोल विथकित
अरुण उनीदे दोउ नयन ॥

रुचिर तिलकलेश कोर्ति कुसुमकेश शिर सोमन्त
भूषित मानो तेन ।

करुणाकर उदार राखत कछु न सार अशन वसन
लागत जब देन ॥

काहेको दुरति भिर पलटे प्रियतम चार वश किये
श्याम शिखै शत् मैन ।

गलित उरसि माल शिथिल किङ्किणी जाल श्रीहित
हरिवंश लता गृह सेन ॥

२३

आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख वर्धत अति हर्ष
युगल वर ।

गौर श्याम अभिराम रङ्ग भरे लटक लटक
पग धरत अवनि पर ॥

कुच कुङ्कुम रञ्जित मालावलि सुरतिनाथ श्रीश्याम
धाम धर ।
प्रिया प्रेमके अङ्ग अलङ्कृत चित्रित चतुर शिरोमणि
निज कर ॥
दम्पति अति अनुराग सुदित कल गान करत
मन हरत परस्पर ।
श्रीहित हरिवंश प्रशंस परायण गायन अलि स्वर
देत मधुर तर ॥

२४

प्यारि बोलि भामिनी आजु नौकी यामिनी ।
भेंट नवीन मेघ सौदामिनी ॥
मोहन रसिक रायरी मारी ता सों जु माम करै ऐसी
कौन कामिनी ।
श्रीहित हरिवंश अरण नि श्रुत श्रीप्यारी राधिका
रमण सों मिली गजगामिनी ॥

२५

कौन चतुर युवती प्रिया जाहि मिलत लाल
चार हूँ रैन ।
दुरवत क्यों बहुरं श्रुनि प्यारं रङ्गमें गहिलि चैन
में नयन ॥
उर नख चन्द्र विराजे पट अटपटे से वैन ।
श्रीहित हरिवंश सुरति राधापति प्रमथित मैन ॥

२६

आजु निकुञ्ज मङ्गुमें खेलत नवल किशोर नवीन
किशोरी ।
अति अनुपम अनुराग परस्पर श्रुनि अभूत
भूतल परयोरी ॥
विह्वम स्फटिक विविध निर्मित घर नव कर्पूर
पराग न थोरी ।
कोमल किशलय शयन सुपेशल ता पर श्याम
निवेशित गोरी ॥
मिथुन हास परिहास परायण पीक कपोल कमल
पर भीरी ।

गौर श्याम भुज कलह मनोहर नौवी बन्धन
मोचत डोरी ॥
हरि उर मुकुर विलाकि अपनपौ विवृक्षम विकल
मान युत भोरी ।
चिबुक सुचारु प्रलाह प्रबोधित प्रिय प्रतिविक्ष
जनाह निहोरी ॥
नेति नेति वचनानृत श्रुनि श्रुनि ललितादिक
देखाति दुरि चोरी ।
श्रीहित हरिवंश करत करधूनन प्रणय कोपि
माखावली तोरी ॥

२७

अति हि अरुण तरं नयन नलिन री ।
आलस्य युत इतरात रगमगे भये निशि जागरमे
खिन्न मलिन री ॥
शिथिल पलक में उठति गोलक गति विधयो
मोहन मृग सकतु चलि न री ।
श्रीहित हरिवंश हंस कल गामिनि सम्भ्रम देति
भंवरिनी अलिन री ॥

२८

बनो राधामोहन की जोरो ।
इन्द्र नीलमणि श्याम मनोहर सात कुम्भ तन गोरी ॥
भाल विशाल तिलक हरि कामिनी चिकुर चन्द्र
विच रोरी ।
गजनायक प्रभु चालि गयन्दिनिगति वृषभानु
किशोरी ॥
नील निचोल युवति मोहन पट पीत अरुण
शिर खोरी ।
श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति सुरतिरङ्ग में बोरी ॥

२९

आजु भावारी किशोर भावतो विचित्र और कहा
कहों अङ्ग अङ्ग परम माधुरी ।
करत केलि कण्ठ मेलि बाहुदण्ड गण्ड गण्ड अर्ध
सरस हास रासमण्डल युरी ॥

श्याम सुन्दरी विहार बांसुरी नृदङ्ग तार मधुर घोष
 • नूपुरादि किङ्किणी सुरी ।
 देखति हरिवंश आलि नृत्यनी सुगन्ध चालि वारि
 फेरि देति प्राण देह सौं दुरी ॥

१०

मञ्जुल कुल कुञ्जदेश राधा हरि विशद वेश
 राकानभ कुमुदबन्धु शरत् यामिनी ।
 श्यामल द्रुत कनक अङ्ग विहरत मिलि एक सङ्ग
 नोरद मनो नील मध्य लसति दामिनी ॥
 अरुण पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल
 सौरभ युत शीत अनिल मन्द गामिनी ।
 किसलय दल रचित शयन बेलात प्रिय चाटु वैन
 मान सहित प्रति प्रतिकूल कामिनी ॥
 मोहन मन मथत मार परशत कुचनी विहार वेपथ
 युत नेति नेति वदति भामिनी ।
 नर वाहन प्रभु सुकैलि वहु विधि भर भरित भेलि
 सौरत रस रूप नदी जगत् पावनी ॥
 चलहि राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान
 रास रच्यो श्याम तट कलिन्द नन्दिनी ।
 नृत्यत युवती समूह रागरङ्ग अति कतूह बाजति
 रस मूल सुरलिका आनन्दिनी ॥
 वंशीवट निकट जहां परम रमण भूमि तहां सकल
 सुखद वहे मलय वायु मन्दिनी ।
 जाती ईषदु विकाश कानन अतिशय सुवास
 राका निशि शरदु मास विमल चन्दिनी ॥
 नरवाहन प्रभु निहारि लोचन भरि घोष नारि
 नख शिख सौन्दर्य काम दुःख निकन्दिनी ।
 विलस हि भुज श्रोव मेलि भामिनी सुखसिन्धु भेलि
 नव निकुञ्ज श्यामकैलि जगत् वन्दिनी ॥

११

मन्दके लाल हरो मन मोर ।
 हों अपना मोतिन लर पोवति कङ्कर डारि गये
 सखि भोर ॥

वह विलोकनि चालि छविली रसिक शिरोमणि
 मन्दकिशोर ।
 कहि कैसे मनु रहे अवण शुनि सरस मधुर
 मुरलीकी घोर ॥
 इन्दु गोविन्द वदनके कारण को भये नयन चकोर ।
 श्रीहित हरिवंश रसिक रस युवती तू ले मिलि
 सखि प्राण अकोर ॥

१२

अरुण अधर तेरे कैसे के दुराजं ।
 रवि शशि शङ्खि भजन किय अपवश अद्भुत रङ्गनि
 कुसुम बनाजं ॥
 शुभ को सेवक शिव कौसुभ मणि पङ्कजदल नि ले
 अङ्ग नि लुपाजं ।
 हर्षत इन्दु तजत जैसे जलधर सो भ्रम टूँडि
 कहां हों पाजं ॥
 अश्व न दश्व कछू नहिं व्यापत हिमकर तपे ताहि
 कैसेके बुभाजं ।
 श्रीहित हरिवंश रसिक नवरंग पिय भृकुटि भौंह
 तेरे खञ्जन लराजं ॥

१३

अपनी बात मोसों कहि रो कामिनी आंगी मोगी
 रहति गर्वको माती ।
 हों तोसो कहत हारो सुनि रो राधिका प्यारी
 निशिको रङ्ग क्यों न कहत लजाती ॥
 गलित कुसुम वेणी सुनि रो सारङ्ग नयना छूटो लट
 अंचरा वटत अरसाती ।
 अधर नि रङ्ग रङ्ग रच्यो रो कपोलनि युवती चलत
 गजगति अरभातो ॥
 रहसि रमी छविले रसन वसन ठीले शिथिल
 कसनि कञ्चुकी सर राती ।
 सखि सों शुनि अवण वचन मुदित मन चली
 श्रीहित हरिवंश भवन मुसुकाती ॥

१४

आलु मेरे कहे चलो मृगनयनी ।
 गावति सरस युवति मण्डल में प्रिय सङ्ग मिले भली
 पिक वैनी ॥
 परम प्रवोण कोक विद्या में अभिनय निपुण
 लाग गति लेनी ।
 रूपराशि शुनि नवल किशोरी पल पल घटति
 चांदनी रेनी ॥
 श्रीहित हरिवंश चली आतुर मन राधारमण
 सुरति सुख देनी ।
 रहसि रभस पालिङ्गन चुम्बन मदन कोटि कुल
 भई कुचेनी ॥

१५

आजु देखि ब्रजसुन्दरो मोहन बनी केलि ।
 अंग अंग बाहु दै किशोर जोर रूपराशि मानो
 तमाल अरभि रही सरस कनक बेलि ॥
 नव निकुञ्ज भ्रमर गुञ्ज मञ्जु घोष प्रेमपुञ्ज
 गान करत मोर पिकनि अपने स्वर सो मैलि ।
 मदन मुदित अङ्ग अङ्ग बोच बोच स्वर तरङ्ग
 पल पल हरिवंश पिवत नयन चखक भेलि ॥

१६

शुनि मेरो वचन ह्वोला राधा ।
 तें पायो रसमिन्नु अगाधा ॥
 तू हषभानु गोपकी बेटो ।
 मोहनलाल रसिक रस भेटो ॥
 जाहि विरिञ्चि उमापति नाए ।
 तापै तें वन फूल बिनाए ॥
 तेरो रूप कहत नहिं आवे ।
 श्रीहित हरिवंश ककुक यश गावे ॥

१७

खेलत रास रसिक ब्रज मण्डन ।
 युवति नु अंग दिये भुज दण्डन ॥
 शरद् विमल नभ चन्द्र विराजे ।
 मधुर मधुर सुरली ध्वनि बाजे ॥

अति राजत घनश्याम तमाला ।
 कञ्चन वेलि बनी ब्रजवाला ॥
 बाजत ताल मृदङ्ग उपङ्गा ।
 गान मयत मन कोटि अनङ्गा ॥
 भूषण बहुत विविध रङ्ग सारी ।
 अङ्ग सुगन्ध दिखावति नारी ॥
 वर्षत कुसुम मुदित सुरयोषा ।
 शूनियति दिवि दुन्दुभि कल घोषा ॥
 श्रीहित हरिवंश गमन मन श्यामा ।
 श्रीराधारमण सकल सुख धामा ॥

१८

मोहन लालके रस माती ।
 बन्धु गुप्त गोवति कत मो सों प्रथम नेह सकुचाती ॥
 देखि संभारि पीत पट ऊपर कहा चूनरी राती ।
 छटो लर लटकति मोतिनको नख विधु अङ्कित छाती ॥
 अधर विम्ब खण्डित मख मण्डित गण्ड चलत
 अरुभाती ॥
 अरुण नयन घूमत आलस्य युत कुसुम गलित
 लटपाती ॥
 आजु रहसि मोहन सब लूटी विविध आपनी थाती ।
 श्रीहित हरिवंश अयण शुनि भामिनि भवन
 चली सुसुकाती ॥

१९

तेरे नयन करत दोऊ चारी ।
 अति कुलकात समात नहीं कहुं मिले हैं कुञ्ज
 विहारो ॥
 विथरी मांग कुसुम गिरि गिरि परे लटकि रही
 लट न्यारी ।
 उर नख रेख प्रगट देखियति है कहा दुरावति प्यारी ॥
 परो है पीक शुभग गण्डन पर अधर नि रङ्ग सुकुमारी ।
 श्रीहित हरिवंश रसिकिनी भामिनि आलस्य
 अङ्ग अङ्ग भारी ॥

४०

नयन नि वारो कोटिक खञ्जन ।
 चञ्चल चपलं अरुण अनियारे अग्रभाग बन्धो अञ्जन ॥
 रुचिर मनोहर वङ्ग विलोकनि सुरति समरदल
 गञ्जन ।
 श्रीहित हरिवंश कह्यो न बने छवि सुखसमुद्र
 मनरञ्जन ॥

४१

राधा प्यारी तेरे नयन सलोल ।
 तै निज भजन कनक यौवन तन लिये हैं
 मनोहर मोल ॥
 अधरनि रङ्ग अलक लट छूटी रञ्जित पीत कपोल ।
 तू रस मग्न भई नहिं जानति ऊपर नील निचोल ॥
 तेरे कुचयुग पर नखरेखा प्रगटानो शङ्कर
 शिर शशि टोल ।
 श्रीहित हारवंश कहति कछु भागिनो अति
 आलस्यसो बोल ॥

४२

रो सजनी आजु गोपाल रास रस खेलतु पुलिन
 कल्पतरु तीर ।
 शरद् विमल नभचन्द्र विराजे रोचक त्रिविध समोर ॥
 चम्पक वकुल मालतो मुकुलित मत्त मुदित
 अलि कीर ।
 देशी सुगन्ध राग रङ्ग नीको ब्रज युवतिनकी भोर ॥
 मधवा मुदित निशान बजायो व्रत छाड़्यो मुनि धोर ।
 श्रीहित हरिवंश गमन मन श्यामा हरत मदन
 घन पीर ॥

४३

आजु नोकी बनी राधिका नागरी ।
 ब्रज युवति यूथ में रूप अति चतुरई सोलह शृङ्गार
 गुण सबनते आगरी ॥
 कमल दक्षिण भुजा वामभुज अंश सखि गावति
 सरस मिलि मधुर स्वर राग रो ।

सकल विद्याविदित रहसि हरिवंश हित मिलित
 नव कुञ्ज वर श्याम बड़ भाग रो ॥

श्रीकृष्णाय नमः

विनायक—तिताला

धन्य आजु यह दर्श दियो ।
 धन्य धन्य जासों अनुरागे तन जानी नहिं और वियो ॥
 हम ता श्याम यह भली भावतो भले भली मिलि
 भली करी ।
 यह मेरे जिय अति हि अचम्बित तो विकुरत क्यों
 एक घरी ॥
 जाहु तहीं सुख दोन्हों मोको वै शुनि के रिस पावेगो ।
 सूर श्याम अति चतुर कहावत वह सों मन न
 मिलावेगो ॥

२

क्यों आये उठि भोर यहां ।
 काहे को इतनो शरमाने रैन रहै फिरि जाहु तहां ॥
 हम को कहा इतो गरवाई उनही वरो न
 संभारो जू ।
 उन आये ह्यां नाहीं जान्यो अज हं लै पग धारो जू ॥
 हम हं बोलि वहां हीं लोजो डर उनके हम हू कोली ।
 सूर श्याम तिन हो सुख दोजियो विलसे सङ्ग
 तुम को ले ॥

३

रसिक रसिकई जानि परी ।
 नयन नितें अब न्यारे हूजे तब हो तें अति रिस
 निमरी ॥
 तुम यौवन अरु सो नवयौवनि एते पर सब गुण
 नि भरी ।
 साज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि द्विय
 भइरी ॥

अञ्जन अधर कपोल नि वन्दन पीक पलक छवि
देखि डरी ।

सूरश्याम रति चिह्न दिखावन मेरे आये भले डरी ॥

बार बार मैं कहति हों प्रिय तहीं सिधारो ।
आये हो मनहरण का हरि नाम तुम्हारो ॥
भली बनी छवि आजु की क्यों लेत जंभाई ।
रैन आजु सोये नहीं रति काम जगाई ॥
वह रति तुम रति नाथ हो हम कैसे भावे ।
सूर श्याम तुम बहु गुणी जे तुम हि रिभावे ॥

आय गई ब्रजनारी तहां ।
सोंह करत प्रिय प्यारी आगे आनन्द विरह महान् ॥
प्यारी हंसो देखि सखियनि को अन्तर रिस है भारी ॥
नयन सैन दे अङ्ग अङ्ग निरखति प्रिय शोभा अधिकारी ॥
श्याम रहे मुख मंदि सकुचि के युवति परस्पर हरे ।
सूर प्रभु अङ्ग अङ्ग अनूप छवि कहं पायो कहि केरे ॥

तब नागरी कहति सखियनि सों एते पर ए सोंह करे ।
दर्शन प्राप्त देत है हमको निशि और निके चित्त हरं ॥
तुम ही देखि लहु अङ्ग बानिक एते पर क्यों सहे परे ।
कृपा करे अब तहीं सिधारो मो आगेते अब जु टरे ॥
यह छवि देखि सनाथ भई मैं अब ताहीं पर जाइ ठरे ।
सूर श्याम रिस देखि चले डरि कहे सखी
अब ह्यां न फिरे ॥

प्रिय छवि निरखत नागरी अङ्गदशा भुलानी ।
अन्तर्गत आनन्द भरा ललिता हर्षानो ॥
सहचरि सों कहि सुमन ले हरि फेट भराये ।
अति अधीन प्रिय हूँ गये वश परे पराये ॥
मार्ग सुमन विक्राव हो पग निरखि निहारै ।
फूले फूल धर धरे डलिया चुनि डारै ॥
ऐसे वश प्रिय वामके सुख सूरज जाने ।
जे जेहि भाव निहारि भज तैहि तैसे माने ॥

लाल उनीदे भये ।

राजत हैं रतनारे नयन मानहु नखिन नये ॥
पीक कपोल ललाट मझावर वन्दन वृलित खये ।
जनु तन जामें सद्य अरुण दल कामके वोज बये ॥
विन गुण हार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेश ठये ।
अञ्जन अधर सुधामन्त्र लिख्यो रति दिचा ले न गये ।
सूर श्याम विथुरे कच सुख पर नख नाराच हये ।
ता ऊपर आनन्द इन्दु जनु मानहु समर जये ॥

नयन उनीदे भये रङ्ग राते ।

मानहु सुरङ्ग सुमन पर सजनी फिरत भङ्ग मदमाते ॥
प्रेम पराग पांखुरी पलदल प्रफुल्ल मदन लता ते ।
शुभग सुवास विशाल विलोकनि प्रकट प्रीति
करि ता ते ॥
तैसो ई मारुत मन्द जम्हावरि मिलत मुदित
छवि या ते ।
सींचे सूरश्याम माननि कर हित सों कलि कला ते ॥

काहे को प्रिय भोर हो मेरे गृह आये ।
इतने गुण हमपे कहां जे रैन रमाये ॥
ताहो पै पग धारिये चकित मैं जाने ।
विनगुण गड़ि माला रहो नहीं कहं विहराने ॥
आये हो सुख देन को ऐसो हितकारो ।
सूर श्याम तुम को को वैसे नारी ॥

कृपा करी उठि भोर हो मेरे गृह आये ।
अब हम भई बड़ भागिनी निशि चिह्न देखाये ॥
जावक भाल नि सोहियो नौके वश पाये ।
नयन देखि चकित भई क्यों पान खवाये ॥
अधर नि पर काजर बन्यो बहु रङ्ग कढ़ाये ।
वन्दन विन्दली भाल की भज आप बनाये ॥
यह मो सों तुम ही कहे उर अत अरुणायै ।
सूर श्याम यश राशि हो धन्य त्रिया हंसाये ॥

११

हृषिं श्याम त्रिकवांश गही ।
 चूक परी हमें को यह बख्शो भावन को कहि
 गये हरो ॥
 रिसनि उठी भङ्गराज भटक भुज कुवत कहा पिय
 शरम नही ।
 भवन गई आतुर है नागरि जे आई सुख सब कही ।
 मेरे महल आलु ते आवहु सोह नन्दकी कोटि कही ।
 सूरदास जब लौं जग जोषी मिलो नहीं वरु
 काम दही ॥

१२

बहुरि मिलहुगो कालि हो चित समझि सयानो ।
 मेरो कछो न क्यों करे क्या होहि अयानो ॥
 अमल हि ओषध अनल है सब जानि रहो हो ।
 काहे को हठ करति हो वे काज वही हो ॥
 धरणीधर व्याकुल खरे रो गर्व गहली ।
 सूर कछो मुनि मानि ले मैं कहति सहेली ॥

१४

नन्दसूनु बहुनायक अनृत हि रहे जाई ।
 वह अभिलाष करति रही ता को विसराई ॥
 वासर ऐसो हो गयो निशि याम तुलानी ।
 नारि परी अति सोचमें विरह अकुलानी ॥
 भावन कहि गये सांभ हो अज हं नहीं आये ।
 की धौं कतहुं रमि रहे फग परे पराये ॥
 वे हो है बहु नायकी लायक गुण भारो ।
 सूर श्याम कुमुदा भवन सुधि करि पग धारो ॥

१५

भली कीर्णो आए हो ललना हमारे भोर भए भोरें ।
 हम हिं दिखावन रतिके चिह्न जानति हों
 उनि किये बहुत निहारे ॥
 काहे को होत उधारे प्रीतम लोक निहारि
 देखि है खोरे ।
 रसिक प्रीतम तुम आई सिधारो जाके निशि बसि
 भए दृगनि लाल लाल डारे ॥

१६

भली करी जू आए सवारे ।
 बहुरि प्रभात काठ दोहोइगो प्रकट देखिये
 अह नि नारि ॥
 पहने पीत नील पट छोटे ऐसीको चतुर धन भावत ।
 एते मान देह सुधि भूली तुम ही आपुनपो विसरावत ॥
 पाउ धारिये बहुत वेर भई कर गहि कनक तलय
 बैठारि ।
 परमानन्द प्रभु तुम से ओर को सन्धा वचन वदे
 नहिं टारि ॥

१७

रसिक शिरोमणि नन्दलाल । (रङ्ग भोने हो)
 लाड लड़ाई नवल बाल ॥ ”
 जावक लागो सोहे शिथिल पाग । ”
 प्रिया मनाये भूरि भाग ॥ ”
 रूप छके लोचन घुमात । ”
 प्रेम उमगि ऐं ड़ात गात ॥ ”
 उर सोहे मलगुजी माल । ”
 मदन मत्त डगमगी चाल ॥ ”
 बाहु ओं उगद्योक फूल । ”
 दिये है उसीसो सुखको मूल ॥ ”
 अलक निकसि रही शोभा देतु । ”
 काम केलिके विजय केतु ॥ ”
 महकि रहो तन अति सुवास । ”
 अलि गावत कीर्ति रास रास ॥ ”
 जाही सों मिले हमें चैन । ”
 सहि न सकत वह गूढ़ सैन ॥ ”
 राम राय प्रभु सुगत हसे । ”
 कोउ भागवान्के हिये वसे ॥ ”

१८

रति रसकेलि विलास हास रङ्ग भोने हो ।
 कोउ सुन्दरि नारिके लगे गात रङ्ग भोने हो ॥
 अरुण नयन अति रसमसात रङ्ग भोने हो ।

मनो भोर भये जलजात रङ्ग भीने हो ॥
 बोलत बोल प्रतीतिके रङ्ग भीने हो ।
 सुन्दर सावल गात लाल रङ्ग भीने हो ॥
 प्रिया अधर रस पान मत्त रङ्ग भीने हो ।
 कहत कई बात लाल रङ्ग भीने हो ॥
 अति लोहित दृग रगमगी रङ्ग भीने हो ।
 मनो भोर जलजात लाल रङ्ग भीने हो ॥
 चाल शिथिल भ्रू भाल शिथिल रङ्ग भीने हो ।
 शशि सुख शिथिल जंभात लाल रङ्ग भीने हो ॥
 केश शिथिल राकेश शिथिल रङ्ग भीने हो ।
 वयक्रम शिथिल सिरात लाल रङ्ग भीने हो ॥
 गोविन्द प्रभु नन्दसुत किशोर रङ्ग भीने हो ।
 बहुनायक विख्यात लाल रङ्ग भीने हो ॥

१८

सांभके सांचे बोल तिहारि ।
 रजनी अनृत जागि नन्दनन्दन आए हो निपट सवारि ॥
 आतुर भए नोल पट ओटे पोरे वसन विसारि ।
 कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर भले वचन प्रतिपारि ॥

२०

तुम्हारे पूजिये पिय पाइ ।
 कौसी कौसो उपजत तुम पै कहत बनाइ बनाइ ॥
 असन अधर क्यों श्याम भए क्यों परे पट पलटाइ ।
 रुचिर कपोल पोक कहां लागी उर जयपत्र लिखाइ ॥
 गिरिधर लाल जहां निशि जागे तहीं देहु सुख जाइ ।
 कुम्भनदास प्रभु छाड़ी अटपटी अब तुम्हें को
 पतिआइ ॥

२१

कहो धों आज कहां वसे लाल भोर भए आये
 डगमगत पग ।
 खरे सकारे क्यों उठे मोहन बोलत तमचर खग ॥
 कज्जल अधर लटपटी पाग उर विलुलित कुसुम
 माल कुच पर स्त्रग ।
 अरुण नयन आलस्य जंभात प्रिय रैन कियो जग ॥

रतिके चिह्न तन प्रकट देखियत काहेको दुराव
 करत श्याम शुभग ।
 कुम्भनदास प्रभु रसिक गिरिधर परे चतुर
 नागरो फग ॥

२२

कहो धों कहां तुम रैन गंवाई लाल अरुण
 उदय आये ।
 कौन सकोच श्याम घनसुन्दर तमचर बोलत
 उठि धाये ॥
 आंखि देखि कहा सांखि बूभिये रतिके चिह्न
 तन प्रकट लगाये ।
 कुम्भनदास सुजान गिरिधर काहे को दुरत प्रिय
 जानि पाये ॥

२३

ऐसी बात न लालन क्यों मन मानि ।
 उत्तर बनाइ बनाइ तासो कहिये जो इह न जानि ॥
 रतिके चिह्न प्रकटत देखियत है कैसे दुरत दुरानि ।
 कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर हो तुम खरे सयानि ॥

२४

आज अरुण अरुण डारे लालके दृगनि लागत हैं भले ।
 वन्दन परे पगन अलि माना कज्जल दलनि पर चले ॥
 लालको पगिया में न समात कुटिल अलि संभिले ।
 नन्ददास मधुप पुञ्ज मानो सोवततें कलमले ॥

२५

आवत लाल गोवर्द्धनधारी डगमगी चाल लटपटी पाग ।
 आलस्य रैन सरस रङ्ग रञ्जित प्रियाप्रेम नव नव
 अनुराग ॥
 विलुलित माल मलगुजी उरपर सुरति समरकी
 लगे पराग ।
 कुम्भन श्याम अधर कल गावत रतिसुख भाव
 विलास्य राग ॥
 पलटि परे पट नील सखीके रस मह भीलत
 मदन तड़ाग ।

दृग्दावन वीधिनि अवलोकत कृष्णदास लोचन
बहु भाग ॥

२६

कहां दुरत प्रिय जान शिरोमणि रतिके चिह्न
देखियत है न्यारे ।

अरुण नयन घूमत आलस्य सह ककुक जंभात
अधर मसि कारे ॥

श्याम अङ्ग नभ नख पद न्यारे चन्दन छांट बने
मानो तारे ।

अवर अनेक कहां ला वरणो रह नागरता जु
आए हो सवारे ॥

मोहनलाल गोवर्द्धनधारो कटितट नील वसन
बने प्यारे ।

कृष्णदास कहुहु धौं प्रोतम चतुर पीत पट कहां
विसारे ॥

२७

माया कीर्णों बलवोर आए तमचरके बोल ।

नागर नन्दलाल कंवर पहिरे नोल निचाल ॥

मोहन रगमगी अलसात कमल नयन अति सलाल ।

अधरनि नख रेख बनो अरुण श्याम कपोल ॥

मृगमदको तिलक रच्यो सिन्दूरके भोल ।

ऊपर नख चिह्न रतून क्यो दुरत अमोल ॥

कृष्णदास प्रभु गिरिधर मांगत मनओल ।

अपनो पोताम्बर दै लियो मदन माल ॥

२८

मोहन कुन्ददाम उरपर कुच कुङ्कुम रञ्जित बनो ।

गन्ध लुब्ध अलि पंक्ति न तजत केलि धन धनो ॥

मोहन अधर श्याम मुख जंभानि सङ्गम श्वास सनी ।

अवर चिह्न अगणित प्रिय न गनो गणना गनी ॥

कृष्णदास प्रभु नवरङ्ग युवति नि चिन्तामनी ।

गोवर्द्धनधरण धीर रसिकनि चूड़ामनी ॥

२९

लाल तेरे अपल नयन अनियारे ।

नन्दकुमार सुरति रस भीने प्रेम रङ्ग रतनारे ॥

ककु असरीधे चकित चहं दिशि नव वर यौवन वारे ।

मानो शरद् कमल पर खञ्जन मधुप अलक वृचरारे ॥

ए जु मीन घनश्याम सिन्धु में विलसत लेत भुलारे ।

गोवर्द्धनधर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु पारे ॥

३०

सोई भली जिन तुम विरमाये ।

पूजा करि भामिनो सब निशि तव पद उर नख

कुसुम चढ़ाये ॥

अरुण दिशा अब हो नहिं देखी रटत मधुप

कमल नि समुदाये ।

रूपनिधान रसिक नन्दनन्दन कौन सकोच

सवारे आये ॥

सन्ध्या वदे बोल मनमोहन कोर्णों भली और

अवराए ।

आलस्य नयन जंभात अधर वर रतिके चिह्न नहिं

दुरत दुराए ॥

अपने पीत पट दिये सखे को छोनि लए नोल

वसन पराए ।

कृष्णदास प्रभु गिरिवर धर प्रिय युवति सदसि

उदार कहाए ॥

३१

लालन तहां हो जाहु जाके रस लम्पट अति ।

सालस्य नयन देखियत रसभरे प्रकट करत

प्यारी रति ॥

अधर दशन क्षत वसन पीक सह अरु कपोल

अमविन्दु देखियति ।

नख लेखनि तन लिखी श्यामपट जयपताका रण

जीव्यो रतिपति ॥

कैतव वाद तजो पिय हम सौं जैसे तन श्याम

तैसे हो मन हो अति ।

गोविन्द प्रभु पिय पाग संवारहु गिरत कुसुम

शिर मालति ॥

२९

आसु खरे ईं शिथिल देखियत हो बहु रसभरे लाल ।
सब निशि जागे अति शिथिल अक्षय दोऊ अम्बुज
नयन विशाल ॥

शिथिल भूषण कटि वसन शिथिल अति शिथिल
मलगुजी माल ।

लटपटो पाग शिथिल अलकावलि विगलित
कुसुम गुलाल ॥

शिथिल शिखरु शीर्ष लटक रहे आए भोग
उगमगत चाल ।

शिथिल वेणु ककु कहत आनकी आन गोविन्द
प्रभु प्रिय हो बेहाल ॥

विलास—एकताला

जानि पाए हो ललना वलि वलि ब्रज नृपति कुंभर ।
जाके सब निशि जागि आये तहां ईं अनुसर ॥
अपनी प्यारीके रतिके चिह्न हम हि दिखावत
आए देत सोन दाढ़े पर ।
गोविन्द प्रभु सांवल तन तैसे ईं हो मन जनमत ही
तब हं युवति प्राण हर ॥

वलि वलि पाउ धारिये आजु ककु मेरो लहनो
ब्रजनृप सुत भोर आए हो रसभर ।

भई बड़ी बार पाउ धारिये हमनि वाजी वास्या
अगर जावा से वीरा ले आगे धरं ॥

कहि न सकति एक बात लालन जाके निशि वसे
ताके वसन पलटि परे ।

गोविन्द प्रभु प्रिय जान शिरोमणिके बल दोऊके हरे ॥

प्रात समय दधि मथति यशोदा प्रमुदित कमल
नयन गुण गावति ।

अति हि मधुर गति कयह सुघर अति नन्द
सुनुके चित हि बढ़ावति ॥

नील वसन तन सलिल सजल मन दामिनि
विम्ब भुजदण्ड चलावति ।

चन्दन इनि लट लटकि हवेली मनहु अमृत
ईस राहु सुरावति ॥
गोरस मथत नाद एक उपजत किङ्किणु सुनि सुनि
श्रवण रमावति ।
सूर श्याम अक्षल गहि ठाढ़े काम कसोटी कसि
दिखरावति ॥

नन्दजूके बारे कान्ह छांड़ि दे मथनिया ।
बार बार कहे माता यशोमति रनिया ॥
नेकु रहो माखन देहो मेरे प्राण धनिया ।
आरि जिनि करो वलि गई हं न्योहनिया ॥
सूर नर सुनि जाको ध्यावे सुनि जनिया ।
सूर श्याम देखि सब भूली गोप धनिया ॥

नेक रहो माखन द्यो तुम को ।
ठाढ़ी मथति जननि दधि आतुर लवनी नन्द सुनु को ॥
मैं वलि जाओं श्याम घनसुन्दर भूख लगी तुम्हे भारी ।
बात कहूं की बूझति श्याम हि फेर करत महतारी ॥
कहत बात हरि कछु न समुझत भूठे हि भरत
हुंकारी ।
सूरदास प्रभुके गुण तुरत हि विसरि गई नन्दनारी ॥

वातन ही सुत लाड लयो ।
तब लो मथि दधि जननी यशोदा माखन करि
हरि हाथ दयो ॥
लै लै अघर परस करि जेवत देखत फूस्यो
मात हियो ।

आपु हि खात प्रशंसत आपु हि माखन रोटी
बहुत प्रियो ॥
जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वध
करि नन्द त्रियो ।
यह सुख निरखत सुरज प्रभु को धन्य धन्य पल
सुफल जियो ॥

०
 दे रो भैया दोहनी दुहि हों मैं गया ।
 माखन खाये बल भयो करि नन्द दुहैया ॥
 कजरी सेदुरी धूमरो धोरो मेरो गया ।
 दुहि ब्याजं मैं तुरत ही तू करि दे घैया ॥
 ग्वालनि को सर दुहत हं बूझहु बल भैया ।
 सूर निरखि जननो हंसो तब लेति वलैया ॥

बाबा मोकों दुहन सिखायो ।
 तेरे मन प्रतीति न आवे दुहत दुहत अङ्गुरिय
 नि भाव बतायो ॥
 अङ्गुरिन भाव देखि जननो तब हंसिके श्याम हि
 कण्ठ लगायो ।
 आठ वर्षको कुंवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहति पायो ॥
 माता लै दोहनी कर दोन्हों तब हरि हंसत
 दुहन को धायो ।
 सूर श्याम को दुहत देखि तब जननो मन अति
 हर्ष बढ़ायो ॥

जननी मथति दधि दुहत कन्हाई ।
 सखा परस्पर कहत श्याम सों हम हंत तुम
 करत चंडाई ॥
 दुहन देहु कछु दिन अरु मोकों तब करि हो
 मो सम सरिआई ।
 जब लों एक दुहोगे तब लों चारि दुहों तो
 नन्द दोहाई ॥
 भूठे हि करत दाहाई प्रात उठि देखहिंगे तुम्हरो
 अधिकार ।
 सूर श्याम कछो कालि दुहेंगे हम हु तुम ह
 मिलि होड लगाई ॥

१०
 उठि प्रात ही राधिका दोहनी कर लाई ।
 महरि सुता सों तब कछो कहं चली अतुराई ॥
 खरि क दुहावन जाति हो तुम्हरी सेवकाई ।

तुम ठकुराइनि घर रहो मोहि चैरी पाई ॥
 रीती देखी दोहनी कत खीभत धाई ।
 कालि गई अवसर के ह्रां उठे रिसाई ॥
 गाइ गई सब प्याइके प्रात हि नहिं आई ।
 ता कारण मैं जाति हों अति करत चंडाई ॥
 यह कहि जननी सों चली व्रज को समुहाई ।
 सूर श्याम गृह द्वार ही गौ करत दुहाई ॥

११
 सुता महर वृषभानुकी नन्द सदन हि आई ।
 गृह द्वारे ही अजिरमें गउ दुहत कन्हाई ॥
 श्याम चितै मुख राधिका मन हर्ष बढ़ाई ।
 राधा मुख हरि देखिके तन स्मृति भुलाई ॥
 महरि देखि कीर्ति सुता तेहि लियो बोलाई ।
 दम्पति को सुख देखि के सूरज वलि जाई ॥

१२
 आजु भोर ही राधिका यशोमति गृह आई ।
 महरि कछो हंसि दधि मथो वृषभानु दुहाई ॥
 शुनि आयस ठाढ़ो भई कर नेत सुहाई ।
 रोतो माट विलोव हो चित जहां कन्हाई ॥
 उनकी गति हा कहा कहां जिन दृष्टि चुराई ।
 लई या नोई वृषभ सों गइया विसराई ॥
 यशोदा निरखे दूरितें मनमें मुसिकाई ।
 सूरदास दम्पति कथा मोपे वरणि न जाई ॥

१३
 महरि कहति रो लाड़िलो किहि मथन शिखायो ।
 कहुं मथनी कहुं माट है चित कहां लगायो ॥
 क्यों भैर घर आइ के तै सब विसरायो ।
 मथन नहीं मोहि आव हो तुम सोह दिवायो ॥
 तिहि कारण मैं आइके तव बोल रखायो ।
 तब नन्द घरनी मथि दधि यहि भांति बतायो ॥
 हंसि बोली तब राधिका कछो अब मोहि आयो ।
 सूर निरखि मुख श्यामको तहं ध्यान जगायो ॥

१४
 दधि मथति ग्वालि गर्वीलो रो ।

रुनक भुनक कर कङ्कण बाजे बाहु डुलावति
टोली री ॥

कण्णदेव दधि माखन मांगत नाहिं न देति
हठीली री ।

भरी गुमान विलोवनि लागो अपुने रङ्ग रङ्गीली री ॥
हसि बोख्यो नन्दलाल लाङ्गिलो कङ्क एक बात
कङ्गीली री ।

परमानन्द नन्दनन्दनको सर्वस्व दियो है छवोली री ॥

१५

दधि मन्थन करे नन्दरानी हो ।
बारे कनैया आरि न कीजे छाड़ि न देहु मथानो हो ॥
वारी भेरे मोहन कर पिराङ्गी कौन चित्तमें ठानो हो ।
हरि सुसिकाइ जननि तन चितयो सुधि सागरकी
आनो हो ॥

जे गुण सरस्वती छन्दनि गाए नेति नेति मधु
वाणो हो ।

परमानन्द यशोदा रानो सुत सनेह लपटानो हो ॥

१६

प्रात समय उठि यशोमती दधि मन्थन कीन्ही ।
प्रेम सहित नवनीत ले सुनके मुख दीन्ही ॥
घौटि दुग्ध घैया कियो हरि रुचि सो लीन्ही ।
मधु मेवा पक्वान्न ले हरि आगे कीन्ही ॥
इह विधि नित्य क्रोड़ा करे जनना सुख पावे ।
गोविन्द प्रभु आनन्दमें आंगनसे धावे ॥

१७

भूलो दधिका मन्थन करिवो ।
देखत रसिक नन्दनन्दन का डगमगे पग धरिवो ॥
रहि गई चिते चित्र जैसे एकटक नयन निमेष
न धरिवो ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण जनायो नाहीं मैं मणि
माणिक्य हरिवो ॥

१८

देखा रो माई कैसी है ग्वालिन उलटी रई मथनिया
बिलोवे ।

विनु नेती कर चञ्चल पुनि पुनि नवनीते टकटोवे ॥
निरखि स्वरूप चाँडटि चित्त लाँघ्यो एकटक
गिरिधर मुख जोवे ।

कुम्भनदास चिते रही अकबक औरे भाजन धोवे ॥

१९

ए री आनन्द में दधि मथति यशोदा कनक
मथनिया घूमे ।

निरत कान्ह ललित लोचन पग परत अटपटे भूमे ॥
चारु चखोडा मध्य कुटिल कण अम सुकृता ताहू मे ।
मनो मकरन्द विन्दु ले मधुकर सुत हित प्यावत भूमे ॥
बोलत श्याम तोतरा बतियां हसि हसि दतियां दूमे ।
सूरदास वारी छवि जपर जननी कमल मुख चूमे ॥

२०

आज सखी री प्रात समय दधि मन्थन उठी अकुलाई ।
भरि भाजन मणि खम्भ निकट धरि नीत लियो
कर जाई ॥

सुनत शब्द हरि ता समीप हसि उठि आए हरवाई ।
मोही बाल विनोद मोद अति नयननि नृत्य दिखाई ॥
भूलो तन प्रतिविम्ब विलोकति रोभो सहज स्वभाई ।
चितवनि चलनि हरो चित चञ्चल चिते रही
चित चाई ॥

माखन पिण्ड लयो दोज कर तब ग्वालि रही
सुसिकाई ।

सूरदास प्रभु सर्वस्वको सुख सको न हृदय समाई ॥

२१

छवि सों डोलति भुज छवि सों डोलति कटिपर
बेषी या विलोवनि पर वारों री कोटि नाच ।

दधिको घुमर अरु ध्वनित चाल अरु ध्वनित
घण्टिका ध्वनित जे नूपुर करत सांच ॥

गौर आरक्त अति शोभित सुख अमको वदन ऐसो
मनहु कनक लागी आंच ।

धौधौके प्रभुको मन मोहति एई कर भेद इह नेतकी
सैंच खांच ॥

२२

भावत हरिके बाक्ष विनोद ।
 कौसो राम निरखि सुख प्रहसित प्रसुदित रोहिणी
 मात यशोद ॥
 अङ्गन पङ्क राग तन शोभित चल नूपुर ध्वनि सुनि
 मन मोद ।
 परम सनेह बढ़ावत मात निरव किरव
 किठत उठि गोद ॥
 अतिशय चपल सदा सुखदायक निशदिन रहत
 केलि रस ओद ।
 परमानन्द प्रभु अम्बुज लोचनि फिरि फिरि चितवत
 ब्रज जम कोद ॥

२३

बालदशा गोपालकी सब काङ्ग भावे ।
 जाके भवनमें जात हैं ले गोद खिलावे ॥
 श्यामसुन्दर मुख निरखि के अविरल सचु पावे ।
 लाल बाल कहि गोपिका हसि भलो मनावे ॥
 चुटकी दे दे प्रेमसो करताल बजावे ।
 परमानन्द प्रभु नाच ही शिशुता हि जनावे ॥

२४

बालविनोद गोपालको देखत मोहि भावे ।
 प्रेम पुलकि आनन्द भरी यशोमती गुण गावे ॥
 बल समेत घन सांवरो आंगनमें धावे ।
 वदन चूमि कोरा लियो सुत जानि खिलावे ॥
 शिव विरिञ्चि मुनि देवता जाको पार न पावे ।
 सो परमानन्द ग्वालिको हसि भलो मनावे ॥

२५

हरिको विमल यश गावत गोपाङ्गना ।
 मणिमय अङ्गण नन्दरायके बालगोपाल तहां
 करे रङ्गना ॥
 गिरि गिरि उठत घुटुरुअनि टेकत जानि पाणि
 भरो छगनको मङ्गना ।
 धसर धुरि उठाय गोद ले मात यशोदाके प्रेमको
 भंजना ॥

त्रिपद पुहमिना पीत वन आलख भयो अब जो
 कठिन भयो देहरो को लङ्घना ।
 परमानन्द प्रभु भक्त वत्सल हरि रुचिर हार वर कण्ठ
 सोहे बङ्घना ॥

२६

मणिमय अङ्गण नन्दके खेलत दोज भैया ।
 गौर श्याम जोरो बनी वलि कांवर कन्हैया ॥
 नूपुर कङ्कण किङ्किणी रुन भुन भुन बाजे ।
 मोहि रहि ब्रजसुन्दरी मनसा सुत लाजे ॥
 सङ्ग सङ्ग यशोमति रोहिणी हित कारण मैया ।
 चुटकी दे दे नचाव हो सुत जानि कन्हैया ॥
 नील पोत पट ओढनी देखत मोहि भावे ।
 दाललीला विनोद सो परमानन्द गावे ॥

२७

यह तन वारि डारों कमल नयन पर सांवलियो
 मोहि भावे रे ।
 चरण कमलकी रेणु यशोदा ले ले शिरसि चढ़ावे रे ॥
 ले उछंग मुख निरखन लागो राई नोन उतारे रे ।
 कौन निरामो दृष्टि लगाई ले ले अञ्जल भारे रे ॥
 तू मेरो बालक तू मेरो ठाकुर तोहि विश्वधर राखे रे ।
 परमानन्द खामो चिरञ्जीवहु बार बार यां भाखे रे ॥

२८

तनक कनक की दोहनी दे दे रो मैया ।
 तात दुहन सिखवन कञ्ची मोहि धारो गया ॥
 हरि विषमासन बैठिके मृदु कर धन लीन्हों ।
 धार अटपटी देखिके ब्रजपति हंसि दीन्हों ॥
 गृह गृहते आई सबे देखन ब्रजनारी ।
 सचकित तन मन हरि लियो हंसि घोष विहारो ॥
 द्विज बुलाइ दक्षिणा दई मङ्गल यश गावे ।
 परमानन्द प्रभु लाड़िलो सुखसिन्धु बढ़ावे ॥

२९

बाबा जी मोहि दोहन शिखाज ।
 गाय एक सूधो सो मिसवहु हों नौके दुइके बकदाज ॥

ले मोई मिली चरण निमें लाडिलो कंवर मोवत
वत्सराज ।
पाणि पयोधर धरे धेनुके भाजन वेगि भरो उबटाज ॥
तब नन्दरानी नयन सिरानी द्विज बुलाइ दक्षिणा
दियाज ।
वारि फेरि पीताम्बर हरि पर परमानन्द दासहिं
पहिराज ॥

१०

बोलन लागे भया मैया ।
बाबा कहत नन्दरायसीं अरु हलधर सीं भैया ॥
खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया ।
परमानन्द दासको ठाकुर ब्रजजन केलि करैया ॥

११

नन्द जूजे लालनकी छवि आछी ।
चरण पैजनियां घुम घुम बाजे चलत पूंछ गहि वाछी ।
अधर अरुण दधि मुख सीं लपट्यो अति राजत
तन छोटें छाछी ।
परमानन्द प्रभु बालक लीला चितवनका फिरि पाछी ॥

१२

हरि लीला गावति गोपीजन आनन्द ही में
निशि दिन जायो ।
बाल चरित्र विचित्र मनोहर कमल नयन ब्रजकं
सुखदायी ॥
दाहन मण्डन खण्डन लेपन गृह मञ्जन सुत
पति सेवा ।

चारि याम अवकाश नहीं क्षण सुमिरन कृष्ण
देवदेवा ॥
भवन भवन प्रति दीप विराजित कर कङ्कण नूर बाजे ।
परमानन्द प्रभु घोष कुतूहल देखि भांति सुरपति
लाजे ॥

१३

सो गोविन्द तुम्हारो ब्रज बालक ।
प्रकट भए घनश्याम चतुर्भुज धरे दनुजकुल कालक ॥

कमला पति त्रिभुवन पति नायक भुवन चतुर्दश
नायक सोई ।
उत्पत्ति प्रलय कालको कर्ता जाके किये सबे
कछु होई ॥
सुनहु नन्द उपनन्द कथा इह ईश शीर समुद्र को
वासी ।
वसुधा भार उतारन आयो परब्रह्म वैकुण्ठ निवासी ॥
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक विनती के इहां ले आए ।
परमानन्द दासको ठाकुर बहुत पुण्य तप कै
तुम पाए ॥

२४

प्रात समय गोपी नन्दरानी ।
मिश्रित धन्य उपजत हियो सर दधि मन्यत
अरु माट मथानी ॥
तोच्छा लोलके पोल विराजत कङ्कण नूर कुणित
एक रस ।
रज्जु कर्षत भुज लागत छवि गावत सुदित
श्यामसुन्दर यश ॥
चञ्चल अचपल कुच हारावली वेशी चल खसित
कुसुमाकर ।
मणि प्रकाशन ही दीप अपेक्षा सहज भाव राजत
ग्वालिन घर ॥
चढ़ि विमान देवता गोकुल अमरावती विशेषी ।
परमानन्द घोष कुतूहल जहां तहां अद्भुत
छवि पेखो ॥

२५

आछि आछि बोल गड़े ।
कहा करौ उत्तर नहिं निकसत श्याम मनोहर
चतुर बड़े ॥
मेरे नेक आव रो भामिनि रहसि बुलावत रुख चढ़े ।
परमानन्द स्वामी रति नागर प्रीति वखवन
कंवर लड़े ॥

२६

देखो माई हरि ज की लोटनि ।

यह छवि निरुखि निरखि नन्दरानी अंसुआ पूरि
 • टरि परत करोटनि ॥
 स्पर्शत आनन मगु रवि कुण्डल अम्बुज श्रवत सोप
 सुत जोटनि ।
 चञ्चल अधर चरण कर चञ्चल चञ्चल अञ्चल
 गहृत बकोटनि ॥
 लेति छिड़ाइ महरि कर सों कर दूर भई देखति
 दुरि ओटनि ।
 सूर निरखि मुसिकाइ यशोदा मधुर मधुर बोलत
 सुख बोटनि ॥

३७

माधव तनिकसो वदन तनिकसे चरण भुज
 तनिक माखन ।
 तनिकसो कपोल तनिकसो शुकुटी तनिक हसन
 हरि लेत हैं मन ॥
 तनिकसे अधर तनिकसो दतियां तनिकसे वसन
 तनिकसे आभरन ।
 तनिक हिं तनिक सूर निरवारों तनिक लपा कीजे
 तनिक शरन ॥

३८

बाल विनोद अङ्गनमें की डोलनि ।
 मणिमय भूमि शुभग नन्दालय वलि वलि गई
 तोतरी बोलनि ॥
 कठुला कण्ठ रुचिर केहरि नख वज्र माल लई
 नन्द अमोलनि ।
 वदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकनि
 मधुपगण टोलनि ॥
 लोन्धो कर स्पर्शत आनन पर कलुक खात कलुक
 लग्यो कपोलनि ।
 कहे जन सूर कहां लों वरषों धन्य नन्द जीवन
 जग तोलनि ॥

३९

गोपाल दुरि है माखन खात ।

देखि सखो शोभा जो बढी है श्याम मनोहर गात ॥
 उठि अवलोकि ओट ठाढो छे किहि विधि है
 लखि लेत ।
 चकित नयन चङ्गं दिशु चितवत भीर सखनिका देत ॥
 सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत दूह आकार ।
 जगु जलरुह तजि वैर विधु सों लिये झिलत उपहार ॥
 गिरि गिरि परत वदनते उर पर हे दधि सुतके विन्दु ।
 मानहु शुभग सुधाकण वर्धत प्रियजन आगम इन्दु ॥
 बालविनोद विलोकि सूर प्रभु शकित भई ब्रज नारि ।
 पुरत न वचन वर्जिबे को मन रह्यो विचारि विचारि ॥

४०

देख्यो मैं दधि घृतमें दधि जात ।
 एक अर्चभो सुनि री सजनो रिपुमें रिपु जो समात ॥
 तापर कीर कीर पर पङ्कज पङ्कजके हे पात ।
 सुन्दर वदन विलोकि श्यामको चिते नन्द मुसिकात ॥
 ऐसी प्रीति बढी पसुयाले कहत कही नहीं जात ।
 ऐसी ध्यान धरत जे हरि को तिनही सूर वलि जात ॥

४१

शोभित कर नवनीत लिये ।
 घुटरुन चलत रेणु तन मण्डित मुख दधि लेप किये ॥
 चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन को
 तिलक दिये ।
 लट लटकन मानो मत्त मधुपगण मादक मधुहिं पिये ॥
 कठुला कण्ठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये ।
 धन्य सूर एको पल यह सुख का शत कल्प जिये ॥

४२

बाल विनोद खरे जिय भावत ।
 मुख प्रतिविम्ब पकरिवे कारण हुलसि घुटरुवनि
 धावत ॥
 कमल-नयन माखनके कारण करि करि सैन बतावत ।
 शब्द जोरि बोख्यो चाहत हरि प्रकट वचन नहिं
 धावत ॥

अनेक ब्रह्माण्ड खण्डकी महिमा शिशुता माह

दुरावत ।

सूरदास स्वामी सुखसागर यशोमति प्रीति बढ़ावत ॥

४२

नन्दधाम खेलत हरि डोलत ।

यशोमती करति रसोई भीतरि आपुन किलकत

बोलत ॥

टेरि उठो यशोमती मोहन कहि आवहु घुटुरनि

धाई ।

वैन सुनत माता पहिंचानो चले घुटुरनि पाई ॥

लै उचाइ अचल गहि पौकति धूरि भरो सब देख ।

सूरज प्रभु यशोमती रज भारति कहां भरो यह खेह ॥

४३

धन्य यशोमति बड़ भागिनि लिये कान्ह खेलावे ।

तनक तनक भुज पकरिके ठाढ़े होन शिखावे ॥

लरखरात गिरि परत हैं चलि घुटुरनि धावे ।

पुनि क्रम क्रम भुज टेकिके पग हक चलावे ॥

अपने पाइन कब चलो मो देखत धावे ।

सूरदास यशोमती इह विधि सो जु मनावे ॥

सहा-विलास—तिताला

चलन चहत पाइन गोपाल ।

सै लगाय अङ्गरो नन्दरानी मोहन मूर्ति श्याम

तमाल ॥

उगमगात गिरि परत पाणि पर भुज भ्राजत

नन्दलाल ।

जनु ओधर ओ धरत अधोमुख धुकति धरणि मानहु

नमि नाल ॥

धूलि धौत तन नयन नि अचन चलत अटपटी चाल ।

चरण कणित नूपुर ध्वनि मानो सर विहरत जैसे

बाल मराल ॥

लट लटकनि मानो चारु चखोंडा सुठि शोभा

शिशु भाल ।

सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजे जगमें बहुकाल ॥

२

गहे अङ्गरिया सुनुकी नन्द चलन शिखावत ।

अरवराय गिरि परत हैं कर टेकि उचलत ॥

बार बार बकि श्याम सों कहु बोल बौलावत ।

हिधा हे दतियां भई अति छवि सुख पावत ॥

कबहुं कबहुं कर छाड़ि नन्द पकरे फिरि गावत ।

कबहुं धरणि पर बैठि जात मनमें कहु आवत ॥

कबहुं गोद ले हर्षिके जियमें बहु भावत ।

सूर श्याम मुख देखि महर मन मोद बढ़ावत ॥

३

वलि वलि जाउं मधुर खर गावहु ।

अब की वेर मेरे कुंवर कन्हैया नन्द हि नाचि

दिखावहु ॥

तारी दे दे अपने कर की परम प्रीति उपजावहु ।

आन यन्त्र ध्वनि गुनि उर तपकत मो भुज कण्ठ

लगावहु ॥

जिन शङ्का जिय करहु लाल मेरे काहे को भरमावहु ।

बाहु उचाइ कालिकी नाई धोरी धेनु बुलावहु ॥

नाचहु नेक जाउं वलि तेरी मेरे साध पुरावहु ।

रतन जड़ित किङ्किणि पग नूपुर अपने रङ्ग बजावहु ॥

कनक खम्भ प्रतिविम्ब आपनो नव नवनीत खुवावहु ।

परम दयालु सूरके उरते हरि टारे नहिं भावहु ॥

४

चलत श्यामपे राजत पैजनि पग चाय मनोहर ।

उगमगात डोलत अङ्गणमें निरखि विनोद मग्न

मोहे सुर ॥

अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरति गहे

अङ्गरो कर ।

मनहु धेनु लण छाड़ि वत्स हित प्रेम पुलकि चित

द्रवत पयोधर ॥

कुण्डल लोल कपोल विराजत लटकन ललित

लटुरिया भूपर ।

सूर श्याम सुन्दर अवलोकनि विहरत बालगोपाल

नन्द घर ॥

५

कल बल ते फिरि हारि परे ।

नव तरङ्ग कमीन जलद पर मानहु हे शशि

आनि अरे ॥

तब गिरि कमठ सुरासुर सर्प हिं धरत न मन

मह नेकु डरे ।

तिन भुज भूषण भार परत कर गोपिनके आधार धरे ॥

विम्ब वदन मानहु मयि काख्यो विहसनि मनहु

प्रकाश करे ।

सूरश्याम दधि भाजन भीतर निरखत सुख सुखते

न टरे ॥

६

सिखवति चलन यशोदा मैया ।

अरबराह कर पाणि गहावति उगमगाय धरयो

धरे पैया ॥

कबहुंक सुन्दर वदन विलाकति उर आनन्द भरि

लेति वलैया ।

कबहुंक कुलदेवता मनावति चिरञ्जीवो मेरो

लाल कन्हैया ॥

कबहुंक बलको टेरि बुलावति इह अङ्गण

खेलहु दोज मैया ।

सूरदास स्वामी सुखसागर अति प्रताप बलकत

नन्दरैया ॥

७

भावत हरिके बालविनोद ।

श्याम राम सुख निरखि निरखि सुख प्रसुदित

रोहिणि जननि यशोद ॥

अङ्गन पङ्क परसत तन मण्डित चलत कुणित नूपुर

मनोमोद ।

परम सनेह बढ़ावत नारिन निर्दिकार बैठत

चढ़ि गोद ॥

आनन्दकान्त सकल सुखदायक निशदिन रहत

केलि रस ओद ।

सूरदास प्रभु अम्बुज सोचन फिरि फिरि चितवत

व्रजजन कोद ॥

८

आंगन श्याम नचाव हो यशोमति नन्दरानी ।

तारो दै दै गाव हो मधुर स्वर वानो ॥

पायन पुर बाज हीं कटि किङ्किणो कूजे ।

नाहीं नाहीं एहियन अरुणता फल विम्बन पूजे ॥

यशोमति गान श्रुने श्रवण तब आपु हि गावे ।

तारो बाजत देख हो पुनि तारो बजावे ॥

केहरि नख उरपर रुरे श्रुठि शोभाकरी ।

मनहु श्याम घन मध्य में नव शशि उजियारो ॥

गभुवारे शिर केस हैं बने घूंघरवारे ।

लटकन लटके भाल पर विधु मध्य गण तारे ॥

कठला कण्ठ चिवुक तरे सुख दशन विराजे ।

खञ्जन विच शुक आनिके मनो परो दि राजे ॥

यशोमती सुत हि नचाव हो छवि देखति जियते ।

सूरदास प्रभु श्यामके सुख टरत न हियते ॥

९

माधव तनक चरण अरु तनक तनक भुज तनक

वदन बोले तनक से बोले ।

तनकसे कारनि पर तनक माखन लिये देखत

तनक याके सकल भुवन तनक कपोल ॥

तनक श्रुने जो यश सो पावत परम गति तनक कहत

ता सो नन्द सुवन ।

तनक रोभ पर देत सकल तनु तनक चितौनि

चितके हरन ॥

तनक हसनि सुसकानि तनक पुनि तुतरे वचन

उच्चरण ।

तनक हि तनक तनक करि आवे सूर हि तनक

देजे तनक शरण ॥

१०

आज सखी मणि खन्ध निकट जहां है

गोरसक्ती गोरी ।

निज प्रतिविम्ब निरखि सिखवत शिशु प्रकट करो
जिनि चोरो ॥
अर्ध विभाग आज तेँ हम तुम भली बनी यह जोरी ।
माखन लेहु कतव डारत हो तुम बालक मति भोरी ॥
हिस्सा न लेहु सबे चाहत हो यहै बात है थोरी ।
मिथी रुचिर थीर चाहत हो देउ कहा भरि भोरी ॥
शुनि प्रिय वचन धैर्य न रछी तब रसिक हसी
सुख मोरी ।
सूरदास प्रभु सकुचि चले हरि सघन कुञ्जकी खोरी ॥

११

बाल गोपाल विराजत आज ।
इन्दु वदन दधि विन्दु परे तन कर नवनीत
मनोहर साज ॥
किधों प्रकट मकरन्द कमल में कोन्हों उदित समाज ।
कुञ्चित केश सुदेश नवल तन मिलि आए हैं
करनको राज ॥
सुटकी दे जु नचावति सुन्दरी कटि किङ्किणि
नपुर कल बाज ।
दास गोपाल मदनमोहन कवि चितवत सकल
विसारे काज ॥

१२

बड़ भागिन गोकुल की नारि ।
माखन रोटी दे जु नचावति पगदाता मुख लेत
पसारि ॥
शोभित वदन कमलदल लोचन शोभित केश मधुप
अनुहारि ।
शोभित मकर कुण्डल कवि शोभित मृगमद
तिलक लिलारि ॥
शोभित गात चरण भुज शोभित शोभित
किङ्किणी करत उचारि ।
शोभित नृत्य करत परमानन्द गोपवधू वर
भुजा पसारि ॥

१२

खेलत घर आंगन गोविन्द ।
निरखि निरखि यशोमती सुख पाकति वदन
मनोहर राका इन्दु ॥
कटि किङ्किणी चन्द्रमय मणिको लट मुकताहल
जाल ।
परम सुदेश कण्ठ केहरि नख विच विच वञ्ज प्रबाल ॥
कर पोहोंची पाइन पनसूरा तन राजत पट पौत ।
घुटुरुन चलत वत्स सङ्ग विहरत सुख मण्डित
नवनीत ॥
सूर विचित्र चरित्र कान्हेके वाणी कहत न आवे ।
बालदशा अवलोकि सनक मुनि योगध्यान विसरावे ॥

१४

हों वलि वलि जाओँ छवीले लालकी ।
सूर धूरि घुटुरुवनि डोलनि बोलनि वचन रसालकी ॥
छिटकि रहौ चहँ दिग् जु लटुरिया लटकनि
लटकन भालकी ।
मोतिन सहित नासिका नथुनी कण्ठ कमलदल
मालकी ॥
कहु एक हाथ कहुक मुख माखन चितवन नयन
विशालकी ।
सूरदास प्रभु प्रेम मग्न हूँ टिग न तजत
ब्रजबालकी ॥

१५

बार बार यशोमती सुत बोधति आओ चन्द्र तोहि
लाल बुलावे ।
मधु मेवा पकवान मिठाई आपु खात पुनि तोहि
खवावे ॥
हाथ हि पर तोहि लीन्हे खेले नेकु नहीं धरणी
बैठावे ।
जल भाजनमें करि के उठावे याही में तू तन
धरि आवे ॥

जलपुट आनि धरणी पर राख्यो गहि आन्धो
 वह चन्द्र दिखावे ।
 सूरदास प्रभु हंसि मुसिकाने बार बार दोऊ
 कर नावे ॥

१६

खोंगो री मैया चन्द्र हि खों गो ।
 कहा करों जलपुट भौतरको बाहिर लपकि
 गहों गो ॥
 इह तो कलमलात जब महिषां कैसे कर जु गहोंगो ।
 वह तो निपट निकट ही देखत वरजि इ न रहोंगो ॥
 तेरे प्रेम उदित भयो माता बीराये न बहोंगो ।
 सूर श्याम कह कर गहि ब्याधों शशि तन ताप दहोंगो ॥

१७

ले हो हरि चन्द्र ले ।
 कमल नयन वलि जाइ यशोदा नीचे नेकु चिते ॥
 जा कारण तुम शुनि सुन्दर सुत कीर्णो इती अने ।
 सोइ सुधाकर देखि दामादर या भाजन में है ॥
 नभते निकट आनि राख्या है जलपुट यत्न सुते ।
 अब अपने कर काढ़ि मनोहर जाहि भावे ताहि दे ॥
 अगम गगन गति ते आन्धो है पक्षो एक पठे ।
 सूरदास प्रभु इतनो बातको कत मेरो लाल हठे ॥

१८

सोहत दधिकी छींट श्याम गात ।
 जब जननीके करतें ले दोऊ करे करि कछु डारत
 उरपर कछु कलकें हंसि खात ॥
 और मांगतमें होत विलम्ब तब धरणी में लोटि जात ।
 रसिक प्रीतम सों करति निहारे रानो यशोमति मात ॥

१९

महा महोत्सव गोकुल ग्राम ।
 प्रेम सुदित गोपी यश गावति ले ले श्यामसुन्दरको
 नाम ॥
 जहां तहां लोला अवगाहति खरिक खोरि दधि
 मन्थन धाम ।

परम कुतूहल निश अरु वासर आनन्द ही वीतत
 सब याम ॥
 नन्दगोप सुत सब सुखदायक मोहन मूर्ति
 पूरण काम ।
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधर आनन्द निधि नख सिख
 रूप शुभग अभिराम ॥

२०

हों वारी नवनीत प्रिया ।
 दिन उठि देन उराहनो आवति चोरा लावति
 घोष त्रिया ॥
 तुम बलराम सङ्ग मिलिके इह आंगन खेलो
 दोऊ भैया ।
 निरखि निरखि नैननि शत्रु पाजं प्राण जोवन
 तन सांवरिया ॥
 जोई भावे सो लेहु मेरे प्यारे मधु मेवा दधि दूध घैया ।
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधर काके घर तुम इ ते कछु
 बहुत श्रेया ॥

२१

कान्ह सो कहति यशोदा मैया ।
 मेरे मोहन अन्त न जइये घर हि खेलो दाउ भैया ॥
 ए तरुणो यौवन मदमाती भूठे हि दोष लगाने दैया ।
 तुम तो मेरे प्राण जोवन धन अधिके दूध
 पिवाभोंगो घैया ॥
 चतुर्भुज दास गिरिधरण कछो तब हों वन जाभों
 चरावन गैया ॥

सुनि जननी मन अति हर्षानी मुख चुम्बति
 अरु लेति वलैया ॥

२२

घर घर डोलत माखन खात ।
 ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग लिये सने भवन धंसि जात ॥
 जब ग्वालिन जल भरि घर आई तब हिं भजे
 सुसिकात ।
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल सों नाहिं न कछ
 विसात ॥

२१

मोहन चलत बाजत पैजनो पग ।
शब्द सुनत चकित ह्वे चितवत त्यों त्यों ठुमकि
ठुमकि धरत हैं डग ॥
सुदित यशोदा चितवति ग्रियु तन ले उच्छङ्क लावे
कण्ठ शुभग ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल को ब्रजजन निरषत
ठाढ़े ठग ठग ॥

२२

मेया मोहि बड़ो करि ले रो ।
दूध दही छत माखन मेवा जब मांगों तब दे रो ॥
कछू हवश राखहु जिनि मेरो जोइ जोइ मो ही
रुचे रो ।
हों हूं सबल सबहिन महं जे से सदा रहों निभें रो ॥
रङ्गभूमि मह कंस पहारों घोसि बहाजं नेरो ।
सूरदास खामोको लीला राख्या मथुरा जे रो ॥

२३

क्रीडत प्रात युगल यदुवीर ।
माखन मांगत मात न मानति भुक्त यशोदा तीर ॥
मध्य जननी मन्मुख सङ्कर्षण ऐंचत कान्ह
सिरो शिर चीर ।
मानहु सर सुनि सङ्ग उभय हिन कर मराल
अरु नील कटीर ॥
सुन्दर श्याम गह्वे कवरी कर सुक्ता माल गह्वी
बलवीर ।
तारन नभ छया आपापनु मानहु लेत निवेरें सोर ॥
सूर सु छवि इह वरणि न आवे उपमा कहा परति
नहिं धीर ।
सनक सनन्दन नित्य उठि ध्यावत अरु गावत
जाको सुनि कीर ॥

२४

बाल दशा गोपालकी सब काङ्ग प्यारो ।
ले ले गोद खिलाव ही यशोमति महतारो ॥

पीत भगुलि तन सोह ही सिर कुलह विराजे ।
शुद्ध घण्टिका कटि बनी पाय नूपुर बाजे ॥
सुरि सुरि नाचे मोर ज्यों सुर नर सुनि मोहे ।
कृष्णदास प्रभु नन्दके आंगनमें सोहे ॥

२०

ऐसे सरिका कतहुं न देखे बाट सुचालि
गांउकी माई ।
माखन चोरत भाजन फोरत उलटि गारि दे
सुरि सुसिकाई ॥
तब हीं देन उराहनो आई कहा करों जो ना
कहि आई ।
सुनहु यशोदा तुम ठकुरायनि तुम भों कहत
मेरी बोरार्ई ॥
पाछे ठाढे मोहन चितवत धीरे हीतें चारो लाई ।
परमानन्द दासको ठाकुर पचयो चाहत चोरो खाई ॥

२८

तेरे लाल मेरो माखन खायो ।
घोर दुपहरी देखि घर सुनो डोरि टंडोरि अब हिं
घर आयो ॥
खोलि कपाट पैठि मन्दिरमें सब दधि अपन
सख नि खवायो ।
कीकें हु तें चढ़ि जखल पर अनभावतो धरणी
ढरकायो ॥
दिन दिन हानि कहां लो सहिये ए टोटा लु भले
ढङ्ग लायो ।
परमानन्द प्रभु बहुत बचनि हों पूत अनोखी
तें हि जायो ॥

२८

बहुते उपजत या टोटा पे कंसो धों ले ले आवत ।
हरि हरि हरि देखो रो माई जागो जू बात दुरावत ॥
विघमानद दधि दूध पुरायो फिरि फिरि मोहि
बोरावत ।
चतुर चोर विद्या सम्पूरण गढ़ि गढ़ि छोलि बनावत ॥

जो न पतियाहु सोह ले मो सों सांचो शपथ करावत ।
तेरे बच जात जे हे शिव ता पर हाथ दिवावत ॥
वदन मोहि मुसकाइ चलो है फिरि उरहन मिस
भावत ।

परमानन्द दासको ठाकुर श्याम मनोहर भावत ॥

१०

भाजि गयो मेरो भाजन फोरि ।
कहा कहां शुनि मात यशोदा अरु खायो माखन
सब चोरि ॥
लरिका शत पचास सङ्ग लोन्हें रोके रहत
गांवकी खोरि ।

मार्गमें कोज चलन न पावत लेत दोहनो हाथ
मरोरि ॥

समुझि न परे या टोटाको रीति घोष गोरस टंढोरि ।
आनन्द फिरत फागु सौ खेलत-तारो दे दे
हसत मुख मोरि ॥

को यह कुंवर कौनको टोटा सब ब्रज बांध्यो
प्रेमको डोरि ।

परमानन्द दासको ठाकुर लेति वलैया अक्षर खोरि ॥

११

आओ गोपाल शृङ्गार बनाऊं ।
अति सुगन्धकी करों उबटनो उदमोदक नहवाऊं ॥
अङ्ग अङ्गोछि गुहं तेरी वेषो फूलन रचि रुचि भाल
बनाऊं ।

सुरङ्ग लाल जुरतारो चीरा रत्न खचित शिर पेंच
सजाऊं ॥

वागो लाल सुनहरी छापा हरी हजार चरण विरचाऊं ।
पटुका सरस बैजनी रङ्गकी हसलो हेम हुमेल धराऊं ॥
गजमोतिनके हार मनोहर वनमाला ले उर
पहराऊं ।

ले दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि उर नयन
सिराऊं ॥

मधु भेवा पक्कास मिठाई अपने कर ले तुम्हें जीवाऊं ।

विष्णुदास को इह छपाफल बालचरित हों
निशदिन मार्ज ॥

१२

पीताम्बरको चालना पहिरावति मैया ।
कनक छाप ता पर दियो भोनी एक तैया ॥
सुथन लाल चुनावकी जरकशी घोरा ।
हसलो हेम जगावको उर राजत होरा ॥
ठाढ़ी निरखे यशोमती फूली अङ्ग न माय ।
कज्जर ले विन्दुका दियो ब्रजजन सुसिकाय ॥
नन्द बवा मुरलो दर्ई एक तान बजावे ।
जोई सुने ताको मन हरे परमानन्द गावे ॥

१३

नयनन देखि री गिरिवरधर ।
सहचरो कहति द्वितीय सहचरो सों प्रेम सुदित
प्यारी राधावर ॥
भूषण भूषित अङ्ग मनोहर कनक कान्तिहर ।
चित्त वृत्त हरत विश्व युवतिनके सर्वस्व देत
उदार कमलकार ॥

उपमा काहि देहुं को लायक वरणो कहा किशोर
वयसवर ॥

सुरति अन्त लटकत ब्रज आवत कृष्णदास बड़ भाग
कल्पतर ॥

१४

राधे वसन श्याम तन चोन्हीं ।
सारङ्ग वदन विलास विलोचन हरि सारङ्ग जानि
रति कौन्हीं ॥

सुधा पान करिके नोकी विधि रच्यो शेष सुद्रा
फिरि दीन्हीं ।

सूर सुवेश आहि रति नागर भुज आकर्षि वाम
कर लौन्हीं ॥

१५

कमल मुख देखत लपति न होइ ।
इह कहा जाने बात सुहागिन रह्यो निशा भरि सोइ ॥

ज्यों चकोर चाहत उडराजे रही चन्द्र मुख जोइ ।
नेकु अकोर देति नहिं राधे चाहति पिय हि निचोइ ॥
हरि तो अपुनो सर्वस्व दीन्हो एक प्राण वपु दोइ ।
भजन भेद न्यारो परमानन्द जानत विरला कोइ ॥

२६

कमल मुख देखत को न अघाय ।
सुनि री सखी लोचन अलि मेरे मुदित रहे अरुभाय ॥
सुतामाल लाल उर ऊपर जनु फूलो वन घाय ।
गोव नधर अङ्ग अङ्ग पर कृष्णदास वलि जाय ॥

२७

माई कौन गोपके ए दोउ नागर टोटा ।
इनकी बात कछु कहत न आवे गुणन बड़े देखत
के छोटा ॥
अप्रज अनुज सहोदर दोऊ गौरश्याम यंथित
शिर चोटा ।
सन्तदास वलि उभय सूरतकी लीला ललित सर्व
विधि नोटा ॥

२८

तू मेरी लाज गंवाई हो यशोमतिके टोटा ।
देह विदेही हूँ गई मिलि घंघट चोटा ॥
कमल नयन तुम कुंवर हो हलधरते छोटा ।
हैल क्वीले रूप सभई लोट कपोटा ॥
श्रीगोपाल तुम चतुर हो हम मतिकी बोटा ।
परमानन्द सो जान हो जाहि प्रेमको चोटा ॥

२९

मद गजराज कीसी चाल ।
भुजवर दण्ड सुण्डकी शोभा हरि लीन्हो नन्दलाल ॥
चरण कच कुञ्चित अनेक अङ्गुशसे लटकत भाल ।
चामर चार अवतंश मञ्जरी मदकण अमजल जाल ॥
गन्ध अन्ध आवत अलि घेरे गुञ्जत मञ्जु रसाल ।
मीर पक्ष फहरात वात वश जनी भलकत हैं टाल ॥
धातु विचित्र बनी तन शोभा गल गल दामन माल ।
हठि कुलधर्म टाह टाहत हैं नयन कटाक्ष विमाल ॥

घनन घनन घण्टिका कणित कटि उपजत
शब्द सुताला
खनन खनन सङ्कल से नूपुर बाजत लज्जित मराल ॥
युवतीहृदय सरस सरसिजमें जनु खेले बहु काल ।
मानो अङ्ग अङ्ग लपटाने उनके मनसे बाल ॥
सुरली रव गुञ्जार सुनत ही कम्पित चित्त व्रजवाल ।
रस रूसनो गदाधर यों भयो वन वेली बेहाल ॥

३०

भालु मृङ्गार निरखि श्यामा की नीकी बन्धो
श्याम मन भावत ।
यह क्वि तन हि लिखायो चाहत कर गहि के
नख चन्द्र दिखावत ॥
मुख जोरे प्रतिविम्ब विराजत निरखि निरखि मनमें
सुसिकावत ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर श्रीराधा अरस परस दोउ
रीभि रिभावत ॥

३१

प्रात समय नन्दनन्दन श्यामा आवत देखे कुञ्जगली ।
नवघनश्याम तरुणि दामिनि मिलि राजत रूप
अनूप अली ॥
लटपटी पाग शीर्ष कर सुरली लोचन घूमत
भाति भली ।
शियलित चीर मलगुजो अङ्गिया काम कामिनी
देह क्वली ॥
चार याम निशि जागत बीसो उर उमग्यो
अनुराग बली ।
कज्जल अधर नयन रङ्ग बीरो मदन नृपतिकी
सैन्य दली ॥
सूर वदन पङ्कज रस पीके अलक मधुपकी पंक्ति चली ।
प्रफुल्लित प्रीति परस्पर देखियत तरुणि उदय ज्यों
कमल कली ॥

३२

देखि री वाके चञ्चल तारे ।

कमल मीन कहं कहां एती छवि खञ्जन झ न जात
अनुहारे ॥

बे देखि चार कुटिल भुज ऊपर कुञ्चित अलक
मनो अलि वारे ।

बिडरत भजत मानहु छाड़े रथ जगु सशङ्क शशि
लङ्कर डारे ॥

बे देखि निमिष नमत मुरली पर कर मुख नयन
एक भए चारे ।

मानो जलरुह सो बे ऋतु जे विधु करत नाद वाहन
बुचुकारे ॥

हरिको रूप सकल ब्रजमोहन सब युवती जन
प्राणधन वारे ।

सूर सखो निज रही चिते तन मन क्रम वचन चित्त
अनृत न जा रे ॥

४२

बने हैं विशाल कमलदल नयन ।
ताङ्ग में अति चार विलोकनि गूढ़भाव सूचित
सखि सैन ॥

वदनसरोज निकट कुञ्चित कच मनहु मधुप
आए रस लैन ।

तिलक तरुण शशि कहत ककुक हसि मोहन
मधुर मनोहर वैन ॥

मदन नृपतिके देश महामद बुधि बल वसि
न सकत है चैन ।

सूरदास प्रभु दूत दिन हि दिन पठवत चरित
बुनोतौ दैन ॥

४४

मनोहर नयन की यह भांति ।
मानो दूरि करत बल अपने शरत् कमलकी कांति ॥

इन्दीवर राजीव कुशोशय जीते सब गुण जाति ।
अति शोभा आनन्द कन्द टुंग फूले दिन अरु राति ॥

खञ्जरीट मृग मीन विराजत उपमाको अकुलाति ।
चितवनि चार विलोकनि चञ्चल एकी चित्त न समाति ॥

अन्तर करत निमिष लागि अन्तर युग हि समान
विहाति ।

सूर सखी अति रसिक राधिके निमिष खरे अनखाति ॥
४५

आलस्य युग देखियत जो भामिनी ।
राजत हैं रतनारे नयननि प्रिय सङ्ग जागत
गई यामिनी ॥

बाहु उठाय जोरि जमुहानी एहानी कमनीय
कामिनी ।

भुज छूटत छवि यों लागत मानो टूटि भई हे टूक
दामिनी ॥

कुच उतङ्ग पर रत्नी कञ्चुकी शोभित त्रिबली उदर
खामिनी ।

मानो मदन नृपतिके तंबू हरि मन जीव्यो
राधिका नामिनी ॥

विधुरी अलक शिथिल कच डोरी नख अत लुरित
मराल गामिनी ।

द्विगुण सुरति करि श्रीगोपाल भजि प्रसुदित
विद्यादास खामिनी ॥

४६

जा रस रसिक कीर मुनि गायो ।
याहो रटत रटत निशि वासर शेष सहस्र मुख
पार न पायो ॥

गावत शुक नारद मुनि सारद कमल कोकरस
तउ न चखायो ।

तरणितनया तट निकट वंशीवट हुन्दावन वीथिन
बहायो ॥

सो रस रसिकदास परमानन्द ले राधा उर बीच
दुरायो ।

यद्यपि रमा रहत चरणन तर निगमनि अगम
अगाध बतायो ॥

आनन्दकी निधि नन्दकुमार ।

परब्रह्म नट मेघ नराकृति जगमोहन लीला अवतार ॥
 अषणनि आनन्द लोचन आनन्द मनमें आनन्द
 आनन्द मूर्ति ॥
 गोकुल आनन्द गोपिन आनन्द आनन्द यशोदा
 आनन्द मूर्ति ॥
 सब दिन आनन्द धेनु घरावत वेणु वजावत
 आनन्द कन्द ॥
 खेलत हसत कुन्हल आनन्द राधापति
 वृन्दावन चन्द ॥
 शुक सुनि आनन्द भक्तन आनन्द निज जन
 आनन्द हास विलास ॥
 चरण कमल मकरन्द पान करि अलि आनन्द
 परमानन्द दास ॥

विलासल—तिताला

सेवा औ गोपाल की मेरे मन भावे ।
 मनसा वाचा कर्मणा उर आन न आवे ॥
 करि दण्डवत सनेहसों सन्मुख शिर नावे ।
 लोचन भरि भरि भावसों हरि दर्शन पावे ॥
 प्रेम नियम निश्चय करि हरिके गुण गावे ।
 यह प्रताप फल परशुराम हरिभक्ति दृढ़ावे ॥

२

यह न होय जैसे माखन चोरी ।
 जात किते बल बाहु छड़ाए मूसे धन सम्पत्ति
 सब मोरी ॥
 तब तिन दिनन कुमार कान्ह तुम अपने जान
 हम हु मति भोरी ।
 अब भए कुशल किशोर कान्ह तुम हम भई सजग
 समान किशोरी ॥
 नख शिखते चित्त चोरि सकल अङ्ग चीन्हें पर कत
 करत मरोरी ।
 एक सुनि सूर हरो मेरी सर्वस्व अरु उलटी
 डोलों सङ्ग डोरी ॥

१

अब मेरी खेलन जात वलैया ।
 जब ही मोहि देखि लरिकन सङ्ग तब हो खिभावत
 हैं बल भैया ॥
 मोसों कहत तात वसुदेव हैं देवको तेरी मैया ।
 मोल लयो कछु दे वसुदेव हि करि करि यत्न
 बढ़ैया ॥
 अब बाबा करि कहत नन्दसों अरु यशोमतिसों मैया ।
 ऐसे कहि कहि मोहि खिभावत तब उठत मोहि
 खिसैया ॥
 पाछे नन्द सुनत हैं ठाढे तब हसि हसि उर लेया ।
 सूर नन्द बलराम हि हटक्को शुनि मन हर्ष कन्हैया ॥

४

माखन खात पराये घरको ।
 नित प्रति सहस्र मथानी मथिये मेघ शब्द
 दधि माट घमरको ॥
 कितक अहीर जीवत घर मेरे दधि मथि लेत
 माखन कोमरको ।
 नव लक्ष धेनु दुहत जिनके नित बढ़ी नाम है
 नन्द महरको ॥
 ताके पुत्र कहावत हां तुम चोरो करत
 उघारत फरको ।
 सूर श्याम तुम कितनो क खेहो दधि माखन
 मेरे जहां तहां ठरको ॥

५

नन्द घरनि सुत भलो पढ़ायो ।
 ब्रज वीथिनि पुर घरनि धरणी में बाट घाट
 सब शोर मचायो ॥
 लरकनि मारि भजत काङ्कके काङ्कको
 दधि दुग्ध लुढ़ायो ।
 काङ्कके घर करत भंडाई में ज्यों त्यों करि
 पकरि सु पायो ॥

अब तो याहि जकरि करि बांधों इन सब
तुम्हारो गांव भजायो ।
सूर श्याम भुज गहि नन्दरानो बहुरि कान्ह
अपने हित लायो ॥

लालन वारी तेरे या मुख जपर ।
माई मेरी दीठि जिनि लागे कबहूँ मसि विन्दु
काधों भूपर ॥
सर्वस्व मैंने पहिले ही दियो नान्हीं नान्हीं दतियां
दूपर ।
अब कहा सूर करे न्यौछावर अपने हो
लालन लटूपर ॥

जब नन्दलाल नयन भरि देखे ।
एकटक रही संभार न तनको मोहन सूरति पेखे ॥
श्यामवरण पीताम्बर काछे अरु चन्द्रनको खोर ।
काटि किङ्किणि कसराव मनोहर सकल त्रियनके
चितके चोर ॥
कुण्डल भलक परत गण्डनि पर आइ अचानक
निकसे भोर ।
श्रीमुख कमल मन्द मृदु मुसकनि लेत कर्षि
मन नन्दकिशोर ॥
मुक्तामाल राजत उर जपर चितए सखी जबे
इह भोर ।
परमानन्द निरखि अङ्ग शोभा ब्रज वनिता डारति
लृण तोर ॥

बांधों आजु तोहि को छोरि ।
बहुत लङ्गरयो कीन्हों मोसो भुज गहि अब
जखलसों जोरे ॥
जननी अति रिस जानि बंधाए चिते वदन लोचन
जल ठोरे ।
अखलसां कटिसों गहि बांधी दाम बहुत सब तोरे ॥

यह श्रुनि ब्रज युवतो सब धाई कहति कान्ह अब
काहे न चोरि ।
सूर श्यामको बहुत सतायो चक परो हमते यह भोरि ॥
कहा करों हरि बहुत खिभाई ।
सहि न सकी रिस रिसमें भरि गई दई बहुत
ढोयो जु कन्हाई ॥
मेरे कहे नाहिने मानत करत आपनी टेक ।
भोर उराहनो ले ले आवति ब्रजकी वधू अपनेक ॥
फिरत जहाँ तहां धूम मचावत घर नहिं रहत सचेत ।
सूर श्याम त्रिभुवनके कर्ता ता सों यशोमती
कहत अचेत ॥

यशोदा तेरो मुख हरि जोवे ।
कमल नयन हरि हलक नि रोवे बन्धन छोरि रो
जननी यशोवे ॥
जो तेरो सुत खरोई अचगरो अपनो कोख को जायो ।
कहा भयो जो घरको टोटा चोरो माखन खायो ॥
तुरत दोहनी दह्यो जमायो जा क्षण पूजन पायो ।
ता घर देव पित्त काहे को जा घर कान्हर आयो ॥
जाको नाम लेत अब भाजे कर्म फन्द सब काटे ।
सोई हरि प्रेम दांव रो बांधि जननी सांठि लिये डांटे ॥
सूरदास प्रभु भक्त हेतु ह्वे देह धरे तुम पाए ।
दुःखित जानि दोऊ सुत कुवेरके तिन हित आपु
बंधाए ॥

जाहु चली अपने अपने घर ।
तुम सब हिन मिलि ढौठ कखी यह अब धाई
बन्धन छोरन वर ॥
मोकीं अपने बाबाको सों कान्ह हि अब न पत्याउं ।
भवन जाहु अपने अपने सब लागति तिहारि पाउं ॥
मोको जिनि बरजोरो कोऊ देखो हरिके ख्याल ।
सूर श्याम सों कहति यशोदा बड़े नन्दके खाल ॥

१२

तब हि श्याम एक बुद्धि उपायी ।
 युवती गई घरनि सब अपने गृह कार्य जननी
 अटकायो ॥
 आपुन गए यमल अर्जुन तर स्पर्शत पत्र
 उठे भहरायी ।
 दिये गिराय धरणि दोऊ तरु वर तब कुवेर सुत
 प्रकटे आई ॥
 हे कर जोरि करत दोऊ स्तुति चारणजाति न
 प्रकट दिखाई ।
 सूर धन्य व्रज जन्म लियो हरि धरणीकी
 आपदा नशाई ॥

१२

धन्य धन्य धन्य ऋषि आप हि पाए ।
 आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रकट
 देह धरि आए ॥
 धन्य नन्द धन्य मात यशोदा धन्य अङ्गन जहां
 बैठि खिलाए ।
 धन्य श्याम जहां दाम धाए धन्य जखल धन्य
 माखन खाए ॥
 दोनबन्धु करुणानिधान प्रभु राखि लिये
 शरणागत आए ।
 सूर श्यामके चरण शीर्ष धरि स्तुति करि
 निज धाम सिधाए ॥

१४

कौन मेरे आंगन ह्वे जु गयो ।
 जगमग ज्योति वदनको माई सपनी सो जु भयो ॥
 हों दधि मेलि भवन शनि सजनी लेनु गई जु मथानो ।
 कमलनयनकी नाई चितयो वह मूर्ति मैं जानी ॥
 कर नहिं चलत देहगति थाको बहुत खेद मैं पायो ।
 परमानन्द प्रभु चरण शरण गहि रहतो कित
 गृह आयो ॥

१५

नन्दके लाल हरो मन मोर ।

हों अपने मोतिन लर पोहति कांकर डारि गए
 सखि मोर ॥
 वह विलोकनि चारु हवीलो कुटिल कमान
 भौंड़की कोर ।
 कहु काको मन रहे अरण्य शनि सरस मधुर
 सुरलोको घोर ॥
 शशि विचित्र वदनके कारण तरसत हैं दृग
 विहङ्ग चकोर ।
 सूरदास प्रभुके मिलिवेकी कुच औफल हों करत
 अञ्जोर ॥

१६

इनि नयन निसों मानी हारि ।
 अनुदिन ही उपरान्त आन रुचि बाढ़ी सब लोग
 निसों रारि ॥
 तदपि निडर चलि जात चपल दोऊ घूँघट सघन
 कपाट उधारि ।
 निगम ज्ञान प्रतिहार मझाबल लाज लकुट कर
 रहत निवारि ॥
 श्रीगोपाल कौतुक मन अपीं तबते चतुरनि भई
 चिन्हारि ।
 सूरदास लोभनि के लोने सिरपर सही जगत्की गारि ॥

१७

सखी हों जागों तो कोऊ टिग नाहीं उठि लागो
 अकुलान ।
 मैं जान्यो सांच हि मिले माधव भूलि रह्यो अनुमान ॥
 नींद हि में सुरभाइ मदन हों राखी प्रथम पञ्च सन्धान ।
 तामें और तिमिर माई रो चपल कुटे छवि वान ॥
 सूर शक्ति जैसे लक्षण तन वह व्रणको कहु
 अङ्ग न आन ।
 लाजं सुजीवन मूरि मुकुन्द हि ज्यों व रहे तव प्राण ॥

१८

रहि रो भ्वालि यौवन मदमाती ।
 मेरे छगन मगन से लाल हि कत ले उछंग
 लगावति छाती ॥

खीभक्त ते अब ही राखे हैं नान्हीं नान्हीं उठति
दुग्धकी दांती ।

खेलन देखुर जाहि आपने डोलति कहां
इती इतराती ॥

उठि चली ग्वालिन लाल लागे रोवन तब यशोमती
लाई बहु भांती ।

परमानन्द ओट दे अञ्जलि फिरि आई नयननि
सुसिकाती ॥

१८

गावत गोपी मृदु मधुवाणी ।
जाके भवन वसत त्रिभुवन पति राजा नन्द
यशोदा रानी ॥

गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी ।
गावत शिव कालगण गन्धर्व गोकुलनाथ माहात्म्य
जानी ॥

गावत चतुरानन गज-आनन गावत शेष सहस्र
सुख रास ।

मन क्रम वचन प्रीति पद अम्बुज अब गावत
परमानन्द दास ॥

२०

अङ्ग सब मिलि लागे दुःख दैन ।
अपनी पिशुनता कहा कहीं सखि वध ना कियो कुचैन ॥
लोचन अमर भए उड़िवेका वदनकमल मधु लैन ।
कान नेम व्रत लियो सुननका विना वदन विधुवैन ॥
नासा खसत वचन नहिं निकरत मन न धरत
ककु सैन ।

पगंन चलत इक पेंड़ नोठि के तन पुर पसरो मैन ॥
अब लाज ब्रजनाथ निकट तोहि तो लों इह सबे सहै न ।
सूर निमिष सम होत युग हि युग क्यों विरमाजं रैन ॥

२१

इह बल कितकु जानि यदुरायी ।
तुम जु चली हम अबल निपें तें तरकि वहां छिटकायी ॥
कहि यत है अति चतुर सकल विधि जानत
भीर उपायी ।

तो जानों जो अब एकी क्षण सकी हृदय ते जायो ॥
सूरदास स्वामी श्रीपतिको भावत अन्तर भायो ।
सहि न सके रति वचन उलटि हसि लोन्हीं
कण्ठ लगायो ॥

२२

श्यामा तू अति श्याम हि भावे ।
बैठत उठत चलत गोचारत तेरो ही नाम ले ले गावे ॥
पीत हि पीत सुमन भूषण सजि पीताम्बु उर लावे ।
चन्द्रवदनि शनि मोर चन्द्रिका शीर्ष सुमुकुट बनावे ॥
अति आसक्त दर्श सभ्रम मिलि अङ्ग अङ्ग सत्तु पावे ।
विकुरत तोहि कासि राधे कहि कुञ्ज कुञ्ज प्रति धावे ॥
तेरोइ ध्यान धरे तन निरखत वासर विरह नसावे ।
सूर श्याम रसराशि रसिक सखि कैसे अन्तर आवे ॥

२३

मानि मनावो मौन रही ।
सकुच समेत सखी उठि आतुर वनकी गेल गही ॥
विधु सुख निरखि मंदि करि लोचन पुनि
विधुवदन चही ।

दर्श स्पर्श तदरूप आजु निज भूमि नख लेखि कही ॥
पुहप सुरङ्ग सारङ्ग रिपु ओठि दिग्वावत चतुर लही ।
पाणिसे परसत शीर्ष परस्पर सुसकाने तब ही ॥
दृण तोरे दिन जात जिते गुण काटति रेख महो ।
सूर श्याम बहुरो मिलि विनसहु जानि अवति अब ही ॥

२४

न्याय दिन दूलह हो नन्दलाल ।
रीति विकाय तहां वसे जहां नव दुलही ब्रजबाल ॥
शिथिल पाग गति डगमग हो वसन मलगजे गात ।
शोभित हो तुम रसभरे मानो व्याह भए जागे रात ॥
नयन ललोहे घूमरे हो चितवत चित्त हरि लेत ।
कहे भगवान् दित राम राय प्रभु हसन वधाई देत ॥

अलया-विलासन—तिताला

ग्वालिन पूरण प्रगव्यो नेहु ।
दधि भाजन शिरपर धरे ताहि कहति गोपाल हि लेहु ॥

ब्रज चौधिनि ब्रजपुर गलो हो जहां तर्हा हरिनाम ।
 समुभाई समुभे नहीं ताहि शिख दे विथखो ग्राम ॥
 लज्जा लहरि तरङ्गिणी हो गुरुजन गहिरी धार ।
 दुहु कूलनि परिमिति नहीं ताहि तरत न लाई बार ॥
 सरिता निकट तड़ागके दीन्हें कूल विदारि ।
 नाम मियो सरिता भई अब कौन निवारे वारि ॥
 दीपक तो मन्दिर जरे हो बाहर लखे न कोय ।
 तृण परसत प्रखलित भई अब गुप्त कहानि होय ॥
 पान किये ज्यो वारुणी हो मुख बोलत न संभार ।
 धरणि धरत पग उगमगे वाके विद्युरी अलक ललार ॥
 कौन सुने कासों कहों हो कौनि सुरति सकोच ।
 कौनि डर पथ अपथको अब को उत्तम को पोच ॥
 विधु भाजन ओछो रच्यो हरि शोभासिन्धु अपार ।
 उलटि मग्न तामें भई अब कौन निकारन-हार ॥
 चित्त चुरायो नन्द के हो मुरली मधुर बजाय ।
 जिहि लज्जा जग लाजिये सो लज्जा गई है लजाय ॥
 प्रेम मग्न भई ग्वालिनी हो सुरदास प्रभु सङ्ग ।
 श्रवण नयन मुख मासिका हो ज्यो कञ्चुकी भुजङ्ग ॥
 कहा करों वैकुण्ठ छि जाई ।
 जहां नहीं नन्द जहां नहीं यशोदा जहां नहीं
 गोपी ग्वाल नहीं गाई ॥
 जहां नहीं जल यमुना को निर्मल और नहीं
 कदम्बकी छाई ।
 परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रजरज तजि मेरी
 जाइ वलाई ॥
 अद्भुत एक अनुपम राग ।
 युगल कमल गजपर क्रीडत ता पर सिन्धु करत
 अनुराग ॥
 हरि पर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले
 कञ्ज पराग ।
 रुचिर कपोत वसत ता ऊपर ता पर एक अमी
 फल खाग ॥

फल पर पुष्प पुष्पपर पल्लव तहां रहत शुक पिक
 मृग खाग ।
 खञ्जन धनुष चन्द्रमा ऊपर तहां वसतृष्णक
 मण्डिधर नाग ॥
 इह रस विरस होत नहिं कबहुं शोभा क्षण हु
 करत नहिं त्याग ।
 सुरदास स्वामिनी रसिकवर तव हेतु बाढ़ो
 सिन्धु सुहाग ॥

ललित कथा एक कहों लड़ेते नेक एक सुनहु
 छाड़ि दे पारि ।
 सूर्य वंश नृपति दशरथ के भए सुभट सुन्दर
 सुत चारि ॥
 तामें बड़ी रामचन्द्र राजा जनक सुता जाके वर नारि ।
 पञ्चवटोकी चले राज्य तजि तात वचन माथे पर धारि ॥
 श्रवैकुण्ठनाथ धरणीधर विहरत वन तापस
 अनुहारि ।
 मार कुटिल सबल राक्षस अति कानन वसत विन्न
 सब टारि ॥
 कपट रूप रावण सीताको ले गयो लज्जा
 सिन्धुके पारि ।
 जानकी हरण सुनत सुरज प्रभु चौकि उठे लयो
 धनुष संभारि ॥

सुनु सुत एक कथा कहूं प्यारी ।
 कमल-नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक शिरोमणि
 देत हुंकारी ॥
 दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रकट भए
 सुत चारी ।
 तिनमें राम एक व्रतधारी जनक सुता ताके वर नारी ॥
 तात वचन मानि राज्य तज्यो है भ्राता सहित
 चले वनचारी ।

तिन उठि जाइ कनक मृग भारो राजीवलोचन
केलि विहारी ॥
रावण हरण सीय को कीन्हों सुनि रघुनन्दन
नींद निवारी ।
परमानन्द प्रभु चाप रटत कर लक्ष्मण देहु जननि
भ्रम भारी ॥

६
अहो मेरो प्राण पियारी ।
भोर हि खेलन कहां धों सिधारी ॥
कुङ्कुम भाल तिलक किन कीन्हों ।
किन मृगमदको विन्दु दीन्हों ॥

७
विन्दु सु मृगमद दियो माथे निरखि शशि
संशय परो ।
एक भरत निशाको कला पूरण मान मद दर्पहि हरो ॥
हेरि मुख हसि कहति जननी अल्प वेणी किन गुई ।
सूरके प्रभु मोहि आस्यर्थ रची किन मन्मथ भई ॥

८
नन्द-महर घर मैया सोहे ।
जिन मेरो वदन जू फिरि फिरि जोहे ॥
खेलत बोलि निकट बैठारो ।
कहु मनमें आनन्द कियो भारी ॥

९
मनमें जो आनन्द कियो भारी निरखि सुत
विह्वल भई ।
बाबा जूको नाम बूझो ताहि हसि गारी दई ॥
पाटी तो पारि संवारि भूषण गोदमें सेवा भरी ।
सूरके प्रभु हर्षि मनमें विधाता सों विनती करी ॥

१०
इह सुनि बात कीर्ति मुसिकानी ।
मैं मन्दरानीके जियकी जानी ॥
मेरी सुता है रूपकी रासी ।
वे तो कान्ह बनवासो उदासी ॥

११
कान्ह उदासी बनवासो रङ्ग ठङ्ग इह कहा बने ।
कनक मणि टिग रतन अमौलिक कांच कञ्चन
क्यों बने ॥
ललिता विशाखा सों कछो भुकि लखो तजि तुम
कित रही ।
सूरके प्रभु भवन बाहिर जान मति दोजो कर्षी ॥

१२
दिन दश पांच अटक जब कीन्हों ।
कंवरिको कृष्ण दिखाई दीन्हों ॥
सुरभि परी तन सुधि न संभारे ।
कंवरि कुण्डसी भुजङ्गम कारे ॥

१३
कारे भुजङ्गमसो प्यारो मारङ्ग हारे सबे ।
एक नन्दनन्दन मन्त्र विनु आलो इह विष दाको
नहीं दबे ॥
मनुहारि करि गोहन बुलाए सकल विष देखत नसे ।
सूरके प्रभु जोरो अविचल जोयो युग युग मन बसे ॥

१४
विहसि उठी तब वदन पखारो ।
निरखि मोहन तन अक्षर संभारो ॥
सुरि बैठी मन भयो हुलासा ।
कीर्ति गई अपुने पति पासा ॥

१५
अपुने सु पतिपें गई कीर्ति प्रीति रीति बढ़ाइये ।
मन्त्र कीन्हों व्याहको सब सखो मङ्गल गाइये ॥
हृन्दावन में रच्यो स्वयंवर पुष्य मङ्गल छाइये ।
सूरके प्रभु श्याम दूलह राधिका वर पाइये ॥

१६
विधिवत् विधि सब कीन्हों ।
मङ्गल भरि के भांवरी दीन्हों ॥
विविध कुसुम वर्षावे ।
तहां मानिनि मिलि मङ्गल गावे ॥

कन्द

गावे जू मानिनि मिलिके मङ्गल कहति कङ्कण
छोर ह ।
ऐसे नहीं गिरि उचकि लीन्हो लाल हसि मन
मोर ह ॥
छोरो न छूटे डोरना इह प्रीति रीति अनिमन भई ।
सूरके प्रभु युवति जन मिलि गारो मन भावती दई ॥

१२

जिन व्रत धरिके देवी पूजी
तिनके मन अभिलाष न दूजी ॥
देवी नन्द सुत होहु पति मेरे ।
याही होय अनुग्रह तेरे ॥

कन्द

करि अनुग्रह वर दियो जब वर्ष भर लो तप कियो ।
त्रैलोक्य सुन्दर पुरुष भूषण शील गुण नाहिं न वियो ॥
उबटि खोरि शृङ्गारि सखिय नि कुञ्ज चोरो आनी ।
वर्षभर जा का तप किया साधरी विधना वानी ॥
सुकुट रचि के मोर बनायो ।
सो माथे धरि हरि वर आयो ॥
तन सांवर है पोत दुकूल ।
जाहि देखि धन दामिनी भूल ॥

कन्द

दामिनी घन छवि कोटि वारो जब निहारो मुखछवी ।
कुण्डल विराजत गण्ड मण्डित नहिं न शोभा
शशि रवी ॥
या छविकी उपमाको नाहीं सकल है गुण जाही ।
मानो मोर निर्रत सङ्ग डोलत मुकटकी परछांही ॥
गोपी न्योते आई ।
सुरलो धनि पठे ज बुलाई ॥
तहां सब मिलि मङ्गल गाए ।
बहु विधि फूलन मण्डप छाए ॥

कन्द

छाए जो फूल निकुञ्ज मण्डप पुलिनमें वेदी रची ।

बैठे श्रीश्यामा श्यामवर त्रैलोक्यकी शोभा सची ॥
इत कोकिल गण करे कुलाहल उत, सकल व्रजनारो ।
आई जु न्योते दुहं दिशते देति आनन्द गारो ॥
रास मण्डलमें सब भुज जोरो ।
हरि हैं श्यामल राधा जू गोरो ॥
पाणि गृहण विधि जब कीन्हो ।
मण्डल भरि भांवरो दीन्हो ॥

कन्द

दीन्हो जो भांवर रास मण्डल प्रीति गांठि
हृदय परो ।
शरत् निशा पूर्णिमा विमल शशि निकट हृन्दा
शुभ घरो ॥
गाय गीत पुनीत सखियनि वेद रचि मङ्गल धनो ।
इत नन्दसुत हृषभानुतनया रासमें जोरो बनी ॥
मन मनसे नव राती ।
दुम फूल अनगन अनभांती ॥
वन्दी जन हरि यश गावे ।
मघवा बहु वादित बजावे ॥

कन्द

बाजे सुबाजे सकल नभ सुर पुष्पाञ्जलि वर्ष हीं ।
सुनि दिव्य व्योम विमान दीपक जैसे मधुकर हर्ष हीं ॥
शुनि सूरदास हि भयो आनन्द पूजी मनको आशा ॥
आनन्दनन्दन लाल दूलह दूलहिनी श्रीराधा ॥

१३

श्रीललिता जूके आजु बधायो ।
श्रीहृन्दावन व्याह रचायो ॥
आली न्योति पठाई ।
वे मङ्गल निधि न्योतेो ल्याई ॥

कन्द

ल्याई जु न्योतो साजि सखियनि मण्डली
अद्भुत रची ।
बांधि वन्दनवार चहुं दिश व्याह विधि वेली सची ॥
सङ्केत देवी पूजि ललिता रहसि अति आनन्द भरी ।

नवल राधे दुलहिनी को दूलह वर पायो हरौ ॥
 देवो बहु भाँति पुजाई ।
 विधना दूलह विधि आनि मिलारै ॥
 सोइ राधे जिन हरि आराधे ।
 त्रेम लग्न सोई हरि सङ्ग साधे ॥

कन्द

साधि हरि सङ्ग लग्न ललिता रहसि मङ्गल गाइयो ।
 विविध कुसुम विचित्र सों रचि महा मण्डप छाइयो ॥
 उबटि राधे दुलहिनी तन श्यामके उबटन कियो ।
 मृङ्गार करि सिर गूँथि मीरो मुकुट मोहनके दियो ॥
 कर सों कर जोरि बैठाये ।
 भाँवरि टै टै हसिके फिराये ॥
 तब हंसि ललिता दर्ई है बधाई ।
 वे ता फूली अङ्ग न माई ॥

कन्द

फूली अङ्ग न माइ ललिता रङ्ग मरि अङ्ग अङ्ग रहो ।
 या व्याहकी रस रीति सखि री जाति नह
 मोपे कही ॥

धन्य धन्य दिन इह रात्रि धन्य धन्य धन्य निज
 कुल शुभ घरी ।
 धन्य धन्य नन्दकुमार दूलह दुलहिनी राधा वरी ॥
 दूलह वो होत सयानो ।
 ओराधा जूके रूप लुभानो ॥
 क्षण एक विलम्ब न कीजि ।
 आंचर सो जोरनो कीजि ॥

कन्द

कियो अक्षर जोरनो मिलि सखी चार गोनेको कियो ।
 करि दिये कुञ्ज प्रवेश दोऊ धन्य ललिता को दियो ॥
 नवल सखी अनेक छवि पर वारने हो बलि गई ।
 आजु अचल सुहाग को कहु जात नहीं मोपे कही ॥

१५

ब्रज दूलहकी सुघर घोरी ।
 विधना मानो सांचे ठोरी ॥

वाको ललित वदन मन मोहे ।
 अरण कपोल चमकि चित पोहे ॥
 वाके लोचन चञ्चल तारे ।
 मानो हे नग दीप उच्यारे ॥
 वाके काननकी छवि ऐसी ।
 काम कतरनी चञ्चल जैसी ॥
 वाके दन्त बतीसी हीरा ।
 जोभ ललित खाये मानो वीरा ॥
 वाके अरुण अधर अति दीसे ।
 फूल भरै जब हरे हरे हीसे ॥

फूल भरै सुदेश हीसत दृगनि अति सुख पाइये ।
 भिरे नन्दनन्दन प्राणपतिकी सुघर घोरी गाइये ॥
 वाके केस वार सुठार मनो मखतूल मोतिन सुहो ।
 मन रिभावन मनहु सावन मासमें फूली जुहो ॥
 वाकी पीठिकी जिनि डोठि लागो मिलि रहो
 मोटी पुठी ।

भिलमिले प्रतिविम्ब तापर मानो मैन घटा उठो ॥
 वाको पूँछ चामर अति बाढी ।
 मन्मथ मानो सांचे धरि काढी ॥
 वाके कञ्चन नाल बनाए ।
 चरण शरण चन्द्र चलि आए ॥
 वाके चारो खुर अति भलकें ।
 दृग निरखत लागे नहीं पलकें ॥
 वाका छैल छविली छाती ।
 मखमलकी पश्म सुहाती ॥
 बाकी चाल विचक्षण सीहे ।
 देखत सबके मन मोहे ॥
 वाकी नख शिख रूप सुहायो ।
 मखमली उर तान बनायो ॥

कन्द

मखमली उरतान भलमले पर रतून जटित

लगाम जी ।

जीन परम प्रवीण जगमगी मानो मूर्ति काम जी ॥
सवार नन्दकिशोर दूल्हा चित्त सब दिनके हरे ।
हर्षि राई खोन वारे भारती यशोमती करे ॥
धन्य धन्य यह सुख श्याम घन प्रभु दृगनि अति
सुख पाइये ।

मेरे नन्दनन्दन प्राणपतिकी सुघर घोरी गाइये ॥

१६

बूझति जननी कहां हुती प्यारी ।
कहां रह भाल तिलक रुचि दीनों किन कच
गूथि मांग शिर पारी ॥
नन्दघरनि यशोमती कहियत है मोसों कछो
हमारो प्यारी ।

तिलक चांवरी भेलि गंभामें फरिया फारि दई
मोहि सारी ॥

मेरो नाम बूझि बूझि बाबाकी तेरो नाम बूझि
दई हसि सुगारो ।

मोतन चिते चिते टोटा तन कहु सविता
तन भोल पसारी ॥

बोलि लये वृषभानु भावतो हसि हसि बातें
बूझि दुलारी ।

सूरदास रससिन्धु बड़ो अति दम्पती मनमें रह
विचारी ॥

अथ कुब्जा मङ्गल

सेरन्धो सोई उठि फरकत बाहु सुलोचन वाम ।

सुन्दर सगुन भए आजु ऐहें मेरे सुन्दर श्याम ॥

७६

श्यामसुन्दर आइते रह साइके गरे लाइ हैं ।
दे अलिङ्गन प्रेम सो मन सुखसमूह वर्षाई हैं ॥
मन हि मन हुलसाति अति ही प्रेमपुञ्ज बढ़ाई हैं ।
पूरण करि हैं मनोरथ सब अङ्ग सङ्ग लगाई हैं ॥
भूषण विविध रचे अङ्ग अङ्ग प्रति कहे न जाई ।
कक्षुकि कसि जो लई श्याम अङ्ग भलके अधिकाई ॥

७६

अधिकाइ भलके सुरङ्ग चूनरि लाल रङ्ग सुहावनी ।
पीत लहंगो बन्यो हि अतलस देखि मनुकी भावनी ॥
टोउ जो लोचन आजि सुख नयन सेर्न बनावनी ।
चूरी दहं कर पहरि हरी सुपरम फाव फावनी ॥
वेणी शुभग गुह्री सुगन्ध तैल लगाइके नौके ।
सब हि बनाव कियो जाते हरण होय मन पीके ॥

७६

प्रियके मन हरहि जैसे ऐसी मोतिन मांग भरी ।
टीकावलो बहु परम सुन्दर जटित नग जगमग करो ॥
बेसरि रुचिर नासा विराजि माणिक्य बनी अति
करहसरी ।

हार हाटक जटित नग सब चलत मोती थरथरी ॥
फूलन सेज रची परम मृदुल पय फेन समान ।
तकिआ रुचिर धरे गलमसुरी मानह चन्द्रभान ॥

७६

चन्द्रभानु सम गलमसुरी मानो देत शोभा अति घनी ।
चादर विछाई लगाइ सौरभ बहु सुगन्धन सों सनी ॥
इह विधि मनाहर साजि बेठी महा सुभट
कञ्चनतनी ।

हुलसाति पुलकति मन हि मनमें आइ हैं
त्रिभुवन धनी ॥

फूल हरा जो धरी अपने हाथ सुधारि संवारी ।
नखशिख रूप बना मन्मथ कोटि देउं वलिहारी ॥

७६

वलिहारि मन्मथ कोटि छवि पर और उपमा
साज ही ।

क्षण भवन क्षण बाहर विलोकति साज सब
विधि साज ही ॥

सुसिकाति मन मन विवश हूँ के अदभुत छवि
छाज ही ।

मङ्गुल मनोरथ करति मन मन आइ हैं प्रिय
आज ही ॥

प्राणपति आद गए निरखत ही भई उठि ठाढ़ी ।
हृदय लगाने लई आनन्द लहरि उमगि अति बाढ़ी ॥

कन्द

बाढ़ी जु आनन्द लहरि बहुविधि श्यामसुन्दर
वश परी ।

रतिकेलि भोगविलास सब निशि जागि याके
सङ्ग करी ॥

जो गाइ है इह रसिक लीला परम रस आनन्द भरी ।
कहि सूर वाके सब मनोरथ पूरि हैं मधुहा हरी ॥

श्रीयमुनाजीके पद

श्रीयमुना करुणा मई विनती सुनि लीजे ।
दर्शन ते पावन सदा सुमिरत अघ छीजे ॥
मञ्जन तब जल पावनो मन शुद्ध करि लीजे ।
गावत वेद पुराणमें यम ते सुख जोजे ।
भाव भक्ति वरदान ही मोकी वर दोजे ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरके गाथा गुण रस भोजे ॥

२

श्रीयमुना गोपाल हि भावे ।
जे यमुनाके दर्शन कोन्हें कोटि जन्मके पाप नसावे ।
जे यमुना स्नान करत हैं धर्मराज लेखो न गणावे ।
जे यमुना जल पान करत हैं बहुरो सङ्कट और
न आवे ॥
पद्मपुराण कथा सब ऊपर धरनी सारवाह यश गावे ।
ते तार्थ ए प्रगट जगत्में परमानन्द प्रसादे पावे ॥

श्रीगङ्गाजीके पद

परमेश्वरी देवी मुनि वन्दे पावन देवी गङ्गे ।
वामन चरण कमल नख रञ्जित शीतल वारि तरङ्गे ॥
मञ्जन पान करत जे प्राणी त्रिविध ताप दुःख भङ्गे ।
तीर्थराज प्रयाग प्रकट भयो जब बनी यमुना
वेणी सङ्गे ॥

अगीरथ राज सगरकुल तारण वाक्कीक यश मायो ।
तब प्रताप हरि भक्ति प्रेमरस जन परमानन्द पायो ॥

अथ आरतो

बाती कपूरको ज्योति जगमगी आरतो विठ्ठलनाथ
विराजे ।

घण्टा ताल पखावज आवज सप्त स्वरनि
सारदा साजे ॥

या छविकी उपमा कहा कहीं कोटि काम
निरखत लाजे ।

श्रीवल्लभ प्रेम प्रताप भरे नित आनन्द मङ्गल
गोकुल गाजे ॥

२

श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम रूप ।
सुन्दर नयन विशाल कमल रङ्ग मुख मृदु बोलत
वचन अनूप ॥
कोटि मदन वारों अङ्ग अङ्ग पर भुज मृणाल अति
सरस स्वरूप ।
देवीजो बड़ धारण प्रगटे दास शरण लक्षण
सुत भूप ॥

३

रूप स्वरूप श्रीविठ्ठल राय ।
वेद विदित पूरण पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ गृह
प्रकटे आय ॥
लटपटी पाग महारस भीने अति सुन्दर मन
सहज स्वभाय ।
श्रीत स्वामो गिरिधर श्रीविठ्ठल अगणित महिमा
कहो न जाय ॥

४

श्रीवल्लभ सुत परम कृपाल ।
तैसेह श्रीगिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्ण जू
नयन विशाल ॥
महामोह दोष दुःखो जन प्रकट भए षट्
दर्शन ईश ।
श्रीव अनेक किये कृतार्थ कोमल कर धरत पर शीश ॥

जाको दर्शन सुर नरको दुर्लभ शरणागतको
सुलभ अपार ।

जन्म मरण भवबन्धन छूटे जिन श्रीमुख देख्यो
इक बार ॥

श्रीवल्लभ ब्रजपति श्रीयदुपति मोहन मूरति
श्रीघनश्याम ।

जन भगवान् जाय वलिहारी इह शुनि जपों
तिहारो नाम ॥

धन्य धन्य माता तू तुलसी बड़ी ।

नारायण ले माथे चढ़ी ॥

जे कोऊ तुलसी की सेवा करे ।

कोटि पाप क्षणमें परिहरे ॥

जे कोऊ तुलसी को फेरो देत ।

सहज जन्म सुफल करि लेत ॥

दान पुण्यमें तुलसी होय ।

कोटिक फल पावे नर सोय ॥

जे घर तुलसी करत निवास ।

सो घर सदा कृष्णको वास ॥

कृष्णदास कहे बारम्बार ।

तुलसीकी महिमा अपरम्पार ॥

यमुना जल घट भरि चली चन्द्रावली नारि !

मार्गमें खेलत मिले घनश्याम सुरारि ॥

नयन निसों नयन जुरे मन रह्यो लुभाइ ।

मोहन मूर्ति जिय वसो पग धरो न जाइ ॥

तबकी प्रीति प्रकट भई यह पहिली भेंट ।

परमानन्द ऐसे मिले जैसे गुर चेंट ॥

सुन्दर टोटा कीनको सुन्दर मृदु वानो ।

जीन बतायो म्बालिनी जायो नन्दरानो ॥

सुन्दर भास तिलक दिये सुन्दर सुसकानो ।

सुन्दर नयननि हरि लियो कमलनि को पानो ॥

सुन्दरता तिहुं लोक की या ब्रजमें जानी ।

परमानन्द यशोमती सब सुख लपटानो ॥

कमल-नयन कमलापति त्रिभुवनके नाथ ।

एक प्रेमते सब बने जो मन होय हाथ ॥

सकल लोककी सम्पदा जो भागे धरिये ।

भक्ति विना माने नहीं जो कोटिक करिये ॥

दास कहावत कठिन है जो लों चित्त राग ।

परमानन्द प्रभु सांवरो पैयत बड़ भाग ॥

भावति भोर भये कुञ्ज वन ते कहुं कहुं अरुमे

कुसुम केशमें ।

रति रस रङ्ग भीनी सोहे सारी तन भीनी भूषण

अटपटे अङ्ग अङ्ग छवि देखियत सुदेशमें ॥

ओपमें ओप भई विरहज ताप गई शरत् चन्द्र

नहीं गणति लेशमें ।

चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सङ्ग निशा जागी युवती

शिरोमणि घोष देशमें ॥

मांग मलगर्जी तिलक आधो अधर नि रङ्ग

आइं सगसगाति ।

चपल नयन आलस्य हि बनावत भौंह भुजङ्गनि

लसलसाति ॥

मानके शृङ्खल खूटे चोली के बन्द टूटे वदनकी

ज्योति ककु अवर हि भांति ।

कुच नखरेखा बनी किलकत काम तनी मानहु

कनक घट माणिक्य कांति ॥

पलटि परे पट कहहु कहे ते बोलत बाल ककु

अटपटाति ।

केश कुसुम शशि पद नख पूजत चलत मधुर

गति उगमगाति ॥

सुरति समर जीव्यो मदन नृपति ते ताही ते अधिक

फुली अङ्ग न माति ।

कृष्णदास स्वामी लाल गोवर्धनधारी सङ्ग रति
विलास सुख भले बीती राति ॥

११

आई रति रण जीते भामिनी बांधी काछ कटितट
पट फिटक ॥

रिभयो सकल कला गुण नागर ककु तेरे नयननि
मह चेटक ॥

भले नछत्र भले सगुण निर्मे सखी कमल नयन
सों ते बदी सहेटक ॥

ऐसी कही अब हीं आवति हीं आपुन चलो जहां
वस हेटक ॥

उगमग चरण धरति धरणो तल गजमद ब्रसत
निरखि गतिकी लटक ॥

ब्रसत भुजङ्ग निरखि शिर वेणा भूषण निरखि
ब्रसत मणि हाटक ॥

मोहन लाल गोवर्धनधारी कर वर कमल गही
तुम्हारी लट ॥

काम केलि शय्या पर नचई कृष्णदास प्रभु
सुरतिरङ्ग नट ॥

१२

याही गुणते सुन हो प्यारी तू मोहन गोपाल हि भाई ।
सकल शृङ्गार साजि मृगनयनी अवसर भले वेगि
चलि आई ॥

लहंगा लाल भुमककी सारी पचरङ्ग शिर
ओढ़नी बनाई ॥

नव रङ्ग उर तनसुखकी चोली कसुंभी वरण
प्रिय हेतु रंगाई ॥

मृगमद पत्र लिखि कुचयुग बिच कुसुमनि
माल अनुपम माई ॥

उर कर शिरसि कनक मणि अलङ्कृत निरखत
रतिपति रञ्जो लजाई ॥

कृष्णदास स्वामी सुखसागर तासों सखिन मा
अबभाई ॥

मोहन लाल गोवर्धनधारी अपनी जानि इसि
कण्ठ लगाई ॥

विलावल—चर्चरी

तू जू प्रीतमकी भावती लाल भावतो तेरो ।
मन ही मन मिलि रही मोहि देखत कियो
रतिरण भेरो ॥

हिलग हृदय महंकी जानिये शुभग दूरते नेरो ।
कृष्णदासनि नाथ छेल गिरिधर पायो
रसिक सुख केरो ॥

२

अति रगमगो देखियत है प्यारो इसति वदति
पालस्य सों बोल ॥

उगमगि चलति प्रकट दश हिमकर पद नख
पूजन चञ्चल लोल ॥

गौर अङ्ग महं अधिक बने सखि कदम्ब कुसुम
रङ्ग पीत निचोल ॥

पलटि परे तेहं नहिं जाने रसमें मग्न माना
मदन कलोल ॥

कृष्णदास स्वामी सङ्ग सजनी निशि भूली प्रिय
सुरति हिंदोल ॥

मोहन लाल गोवर्धनधारी दे सधंख तू लोन्हीं मोल ॥

३

कहां लो वरणीं तेरे वदनकी ज्योति भलक ऊपर
वारों कोटि चन्द ॥

श्रवण पाल ताटङ्क सोहत मानो रवि शशि युगल
परे मन फन्द ॥

उपमा कहत न ब कमलकी नाक शुक मोहित
भौंह खच्छन्द ॥

खुन्नन भीत न तजत अलक अलि अति शोभन
लपट मकरन्द ॥

कृष्णदास प्रभु गोवर्धनधर अत्र मिले मैं देखे
टूटे कसुको बन्द ॥

भिन्न सेतु विहरत तू करिषो अति नागर हरि
मत्त गयन्द ॥

शोभा वर्णि न जाई रो माई जो मुख जीभ होइ
लख कोरो ।
नन्दरायकी अङ्गरी लागी गिरिधर प्रिय बलरामकी
जोरी ॥

बड़े भाग देखे नौ तन भई जतिक कहं ते ती
ते तो थोरी ।
कृष्णदास वलि वलि चरणनकी तनमन फूल
गावे नाचे होरी ॥

कञ्चन मणि मर्कत रस ओपो ।
नन्द सूनके सङ्गम सुख वर अधिक विराजत गोपी ॥
करति विधाता गिरिधर प्रिय हित सुरति ध्वजा
सुख रोपी ।

वदन कान्ति से सुनि रो भामिनि सघन चन्द्र
श्री लोपी ॥
प्राणनाथके चित्त चोरन को भौंह भुजङ्गनि कोपी ।
कृष्णदास स्वामी वश कोन्हें प्रेमपुञ्जकी चोपी ॥

कटितट सोहत है मणिदाम ।
पीत काछ पर अधिक विराजित न्याय लजावत काम ॥
कोहै न मोहन को चित्त मोहति चपल कुटिल
भ्रू वाम ।

अनुक्षण रटत वेणु कल कूजित शुनि राधे तव नाम ॥
तेरे नील पट ओटि रसिक वर लेत दिवसके याम ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर शुभग सीमा अभिराम ॥

हैल छवीलो लाल रङ्गीलो देखहि किन कानन आई ।
रूपनिधान रसिक गिरिधर प्रिय हौं तोको लैन
पठाई ॥

सघन निकुञ्ज नवल चित्रसारी विविध लता
कुसुम नि छाई ।

पिक अलि सङ्ग करत कोलाहल मलय पवन
वहे सुखदाई ॥

रतिपति ऋग बांध्यो खेलनके कमल पत्र ले
सेज विछाई ।
कृष्णदास प्रभु सुरति सुधानिधि युवति, सभा इह
कीर्ति गाई ॥

सांवरे गोविन्द सङ्ग रङ्ग निशि जागो सोहै लोचन
उनींदे मानो बन्धुकाके फूल ।
सुनहि सुन्दर सुजान गावर्द्धननाथ मिले सुरतिके
हिन्दोलना ते लीन्हीं प्रेमभूल ॥

मदन कला अति रसाल सङ्गीत कला सुनि पुनि
रूपराशि ऐसा कौन तेरे सम तूल ।
कृष्णदास स्वामिनी मनोज भेष राधिका वदन
ज्योति निरखि नभसि सघन चन्द्र भूल ॥

ए तेरे तन लागो प्यारे अङ्गकी ओप सो रङ्ग
शुनि सखि काहे को दुरावति ।
अपने सयान न गणति अवरको जैसे तैसे हमारे
तू नयन चुरावति ॥

बोलनहार तुहो युवतिनि महं मो सिन क्यों
बातन बीरावति ।
घरके भेद न जानति नागरि मनकी प्रीति आंखिनि
ससुभावति ॥

मोहन लाल गोवर्द्धनधारी सौ रहसि मिली कोकिल
खर गावति ।
कृष्णदास प्रभु नटवर नायक रसिक शिरोमणि
सुविधि रिभावति ॥

ए मेरे मन भावत मदनगोपाल ।
छैल मनोहर हैम लता युवतिनि श्याम तमाल ॥
ए री शम्भु दग्ध मन्मथके अनुक्षण अबहि
करत प्रतिपाल ।

चन्द्रावन भुवि सुरति सुधानिधि कूजित वेणु रसाल ॥
कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि अम्बुज नयन विशाल ॥
नव भूषण कुच बिच धरि राख्यो गोवर्द्धनधर साल ॥

११

अरुणोदये आवर्ति है रसमसो सुसुखि उरसि
वर लचकत हार ।
पीत काङ्कनी कटितट बांधे तू हि भई मानो
मन्दकुमार ॥

मोर चन्द्रिका सुकुट धरे शिर युवति भावको
विगत विचार ।
प्रियकी सुरली अपने अधर धरे कर कूजति सह
लोचन अनुसार ॥
तन्मय रसिक लाल गिरिधर सों देखति दश दिशि
सुरति विहार ।
कृष्णदास प्रभु अपने रूपरस वश कियो सर्वस्व
दान उदार ॥

१२

प्रियके प्रीतिको फूल जनावत रो तेरे नव लोचन चल ।
अरुणोदय सरसीरुहको ओ जीतन चाहत अरुण
तेज बल ॥
मिटत नहीं अभ्यास अधरको सुरति सेज कूजो
सुकण्ठ कल ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सङ्गम भोजे उरज विमल
सुख अमजल ॥

१३

तेरे उर सोहत सुनि सुन्दरि प्रिय सङ्गमको
अमजल बूंद ।
कुच ऊपर मञ्जरी विराजत मगडु अमृत घट
दीर्घी रति मूंद ॥
सुख जंभात जीतति अम्बुज वन मोहति रसिक
दशन कलि कूंद ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर रस भरि वश कियो मदन
उगत पद खूंद ॥

१४

हरि भज भामिनि शुभग सयानी ।
शरत् कालकी घटा सदृश तू कत गरजति अलसानी ॥

हों पठई नवरङ्ग राय पति साँधि अमृत मधुवानो ।
विरह अनल सशङ्कित प्रीतम रसिक राय सुखदानो ॥
दूत धर्म अति निपुण दूतिका सरल स्वभाव हि आनो ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय के अवसों कण्ठ
लपटानी ॥

१५

तेरे चपल नयन युग खञ्जन ते नोके ।
तापहरण अति विदित विश्व महं देखत शतदल
लागत फीके ॥
श्याम श्वेत राते अनियारे गिरिधर कंवर विशद
सुख जीके ।
सुनि कृष्णदास सुरति कौतुक वश प्यारी दुलरावति
अपने पीके ॥

१६

तेरे चरण की हों शरण ।
राखो राखो दयाल मूर्ति रसिक गिरिवरधरण ॥
काम क्रोध यदा दाह्यो कुविधि लाग्यो शरण ।
कृपा दृष्टि जिवावन घनश्याम अम्बुज चरण ॥
निरखि नखमणि ज्योति वैभव मुदित अन्तःकरण ।
कृष्णदास नि तेरोई बल विरह जलनिधि तरण ॥

१७

अधरचन्द्र तिलक श्रीराधेके कुङ्कुमको ता महं
मृगमद रसविन्दु ।
मानहु श्याम मन लागि रञ्जो श्यामसुन्दरको
चिबुक मोहन श्याम विन्दु ।
सखिन ते दुराउ करत पीकृत बिच कुच युगमहं
अमजल विन्दु ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर जानो रीभि दियो सुखन
सोहत पीक विन्दु ॥

१८

देखि रो नयननि गिरिवर धर ।
सहचरी कहति द्वितीय सहचरी सों प्रेम मुदित
प्यारी राधावर ॥

भूषण भूषित अङ्ग मनोहर वसन मनोहर कनक
कान्तिहर ।

चिन्तित हरत विष्णु युवति निके सर्वस्व देत उदार
कमलकर ॥

उपमा कहा कहीं को लायक वरणों कहा
किशोर वयसवर ।

सुरति अन्त लटकत ब्रज आवत कृष्णदास बड़ भाग्य
कल्पतर ॥

१८

राधा रङ्ग भरी नहिं बोलति ।

मोहन मदन गोपाल लाल सों अपना यौवन
त लति ॥

चाहति मिलन प्राण प्यारी को मेरो इ मन टक
टोलति ।

छांट हि बहुत चातुरी भामिनि कत हमसो भ्रुक
भोलति ॥

प्रात होन लाग्यो सुनि सजनो अब ही तमचरी
बोलति ।

कृष्णदास प्रभु गिरिवर धर हेतु सारङ्ग नयन
सलोलति ॥

२०

एक हि हाथ टेके ठाढ़ी दधि मयनियां शीर्ष लिये ।
अगरति भरि बात कहति ठीठ भई दुजो कर
हरिसुख निपट निकट किये ॥

चलति फिरि चलति जाति नाहीं चलि जानत
सतर भौहें किये ।

कृष्णदास प्रभु तन भुकि स्पर्शति नयन और
वेन और हिये ॥

२१

चखी जाति उत गेहको सुरि सुरि हरि देखति इत ।
कबहुं कें इहि मिस ठाढ़ी हूँ लावण्य हि सुधारति
कबहुं भोड़ति अञ्जल बनाइ बनाइ टिग जित तित ॥

भूठैइ सोच सोच सोच रहति पुनि उगरति
अटपटाति कहु भूखी सो भ्रमित चित ।

कृष्णदास प्रभुके रूपगुण मन अरुभो ताते सुरभि
न सकति भकति अकति हित ॥

२२

काहे बांधति नाहिं न कृटे केश ।
शशिसुख पर घन धारा कृटी ककुक जु चलो उर देश ॥
अङ्ग अङ्ग यह शोभा कहा कहुं निशि जागि आई
और ही वेश ।

कुम्भनदास अति ओपते ओप भई गोवर्द्धनधर
मिले ब्रज युवति नरेश ॥

२२

मोतिन मांग विद्युरी शशिसुख पर मानो नचत्र
आये करन पूजा ।

अञ्जल फरहरात उरपर कांधो कामध्वजा ॥
विरह राहुते कृटि सकल कला विमल भई देखत
सुखजा ।

कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर अधर सुधा कियो पान
कण्ठ मेलि उदार भुजा ॥

२४

तू तो आलस्य भरी देखियत है री रसी ।
रजनी चोरि ताते आंखिन लागी अरु अकेली
भामिनी कुल्ल बसी ॥

घर विरोधते रूसी काहु जानो नवनको दिन
गति हीनसी ।

कुम्भनदास गिरिधरके कण्ठकी यह जानति हों
तैं तो गिरी पाई मोतिन माल लसी ॥

२५

अजब देखियत वदन उहडह्यो प्यारी रगमगी
नयन तेरे रङ्गभरे ।

मानहु शरद कमल ऊपर उम्बद युगल खञ्जन लरे ॥
रसिक शिरोमणि लाल सुश्रीतल कमल कर उर धरे ।

कुम्भनदास कहि काहे न फूले गिरिधर प्रिय
सब दुःख हरे ॥

२६

काहेते आज विद्युरी प्यारी क्यों न बांधइ अलक ।
 भौंह काळन नयन रतनारे मानो न लागी पलक ॥
 रतिरस सुखकी फूल जनावति मद गयन्दकी
 चाल मलक ।
 कुम्भनदास मिली गिरिधर को मानो कोटि चन्द्रकी
 भलक ॥

२७

जानो मैं आजु मिलो प्यारे सों ते अपनो भावतो
 ही री कियो ।
 सकल रेन साथ रसरङ्ग खेलत पलक सों पलक न
 लागन दियो ॥
 कण्ठ लागि भुजा दे शिरहाने रसिक लालको
 अधर सुधारस पियो ।
 कुम्भनदास प्रभु गिरिवरधर को अङ्क भरि भेंटि
 जुड़ायो हियो ॥

२८

रसमसे नयन तेरे निशाके उनींदे ।
 काहेको दुरति जू उलटो बात प्रात ही जो ध्वनो दे ॥
 वदन आलस्य में आलस्य की जंभाय वो अति
 अलसात वचन छीदे ।
 कुम्भनदास प्रभु गिरिधर मिले तो हि सकल
 अङ्क सेवो दे ॥

२९

सखो री जिनि व सरोवर जाहि ।
 अपने रसको तजि चक्रवाकी विछुरि चलति
 सुख चाहि ॥
 सकुचत कमल अकाल पाइके अलि व्याकुल
 दुःख दाहि ।
 तेरे सहज आन यह गति इह अपराध कहि काहि ॥
 यह अद्भुत शशि रच्यो विधाता सरस रूप
 अनुसाहि ।
 कुम्भनदास प्रभु गिरिधर सागर देखत उमंगे ताहि ॥

३०

नन्दनन्दनके अङ्कते सुरली सुन्दर चतुर हरति ।
 नूपुर सुख मंदिके अङ्कन अङ्कन पग धरणि धरति ॥
 कनक वलय कङ्कण भुजानि युग उछे पुकरति ।
 कुम्भनदास गिरिधरके मुद्रित नयन देखति चकित
 मन्द हास रस जागनते डरति ॥

—०—

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीसरस्वत्ये नमः ।

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ।

अथ ध्रुपदादि गान प्रारम्भः ।

देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेशं प्रणमाम्यहं ।
 सङ्गोतरागकल्पद्रुम रागसागरप्रकाशितः ॥
 नीलाम्बरा वेष्टितगौरदेहां
 विम्बाधरां कुण्डलमण्डितास्यां ।
 श्रीकृष्णवक्त्राम्बुजदत्तनेत्रां
 भजामि राधां सकलार्थसिन्धुः ॥

भगवानुवाच—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
 मङ्गला यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

अथ नादनहिमा—

सुखनि सुखनिधानां दुःखितानां विनोदः
 अत्रणहृदयहारी मन्मथस्याप्रदूतः ।
 अतिचतुरः सुगम्यो वल्लभो कामिनीनां
 जयति जयति नादः पञ्चमस्रोपवेदः ॥

अथ भैरवरागध्यान—

गङ्गाधरः शशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः
 सर्पेर्विभूषिततनुः गजकृत्तिवासा ।
 भास्वत् त्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी
 शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः ॥

धैवतांस ग्रहन्त्यास क्वचित् गान्धार ईरितः ।
प्रथमा मूर्च्छना ज्ञेया भैरवे परिकीर्तिता ॥

भैरव—चीताला

सा रे रे ग म प ध नि सप्त स्वर मो मनमें ऐसे आए ।
आरोहो अवरोहो सरगमको ऐसे होत
नि ध प म ग रे सा ॥

पुनि द्विगुण कीज्ये ता ऐसे लीज्ये स्वरनको तब
आवे सबनको मतिमें कण्ठ को सुधार ।
धानिसा निसारे सारेग रेगम गमप मपध पधनि
धनिसा सानिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा ॥

दूसरा भाग

द्विगुण सरगम कियो विचार गुरुनपे सिखके
स्वरन को सुधार ।

सारेसा सारेगरेसा सारेगमगरेसा सारेगम पमगरेसा
सारे गम पध पम गरेसा सारे गम पधनि सा ॥
निध पम गरेसा नि ध प म ग रे सा धप मगरेसा ।
पमगरे सा मगरेसा रेसा सारेसा सारे गसा सारे
गमसा सारे गमपसा ॥

सारे गम प ध सा सारे गमपधनिसा सानि सानिधसा
सा नि धपसा सानिधप मगसा सानि धप मगरे सा ।
सा नि नि धनि नि धप सानि नि धप मग पमगरेसा
मग रेसा धुरपद मध्य सदा रङ्ग बनाई ॥

२

ग नि रे साग ममपनि नि पग सम्पूर्ण गुणियन
मिल गायो ।

सप्तस्वर तोन ग्राम कोमल अति लेहो नि नि नि
धधध पपप ममम गगरेसा ॥

३

गाग मगरेसा सामगा पनिध प म म प म गमगरेसा ।
मपधसा सा रे सा नि नि सा नि नि ध निसा
नि निध सासा निध निनि धप धधपम पपमग
मम गरेसा ॥

सप्तसुर सम्पूर्ण में यों सरि गम विचारि सा सारेसा ।
रे रे रे गरेग गगमगम ममपम पपपध प धध धनि
धनि निनि सानि सासा ॥

सानि सानिनिनि धनि धध धपध पप पमप मम म
गम गग गरे गरे ।

रे रे सारेसा सोई गुरुन मन मान अति डरे ॥

निरे सासा गम प ध सा राग भैरव भ्रमत

सङ्गीत गायो ।

मम पप मम पधसा सासारे सामगरेसा नि सानि
ध प नि नि नि धधध पपप ममम मगरे सा ध्यायो ॥

संपूर्ण सप्तस्वर इकईश मूर्च्छना गमधप मगरे

सानि ध सारे गसारे गम ध सानि ध प मगरे सा ।

गम धनि सा नि सा नि ध नि धप ससगसा मननि

ध प म ग रे सा ॥

४

जय सारदा भवानी भारती विद्या नाम वेद यश गावे ।
वाणी वाक् इडा देवी सरस्वती मन भावे ॥

मङ्गला ज्ञानरूपा वरणमालनो वीणा पुस्तकधारिणी
जे तोड़े ध्यावे ।

कहे विलास त्रय ताप मिटे निर्बोध बोध होवे

वाञ्छित फल पावे ॥

५

महा वाक्वादिनो सम्मुख ह्ये अब ह्ये हो ।

याहि ते त्रिभुवन मानो याते तू भवानी ज्यो

ज्याके मनकी इच्छा सोई सोई पूजे हो ॥

रिद्धि सिद्धि तब ही पाइये मात जब तव चरण

छूजे हो ।

तानसेन यह प्रसाद मांगत जहां तहां जुरत फुरत

रसरङ्गकी तहां करतु जे हो ॥

६

चन्द्रवदनी ऋगनयनो तारा मध्य तारका गङ्गपुतरी

कासिन्दी इह विधि डोरे बनाय कीर्ती त्रिवेनी ।

छूटि पोत कण्ठ दोषक मुखकी ज्योति होत तामें

गुप्त सरस्वती मिसी ऐन मैनी ॥

सुन्दर रूप अनुपम शोभा त्रिविध रजोगुण सतोगुण
तामस गुण राजतै लाल खेत श्याम तरण तारणी
मुक्ति देनी ।
निर्घत ही आनन्द होत तव दर्श स्पर्शत ही
तेरो रूप अपरम्यार कहां लो बखाने तानसेनी ॥

०

सरस्वती सुप्रसन्न हो मोको वाक्वानी ।
षड्ज ऋषभ गान्धार इन इन स्वरण साधे तब
रागरङ्ग गुरुप्रसाद आवत तानसानी ॥
रूपकी निधानी इन्द्राणी सिंहलानी महिषासुरमर्दनी
जगज्जननी गुणनिधानी ।
तानसेन मांगी तान ताल स्वर श्रीदुर्गे भवानी
कीजिये दया मोहें दीन जानी ॥

८

जो कोई ध्यावे सरस्वती चरण शरण को ताको
देत विद्या वाक्वानी ।
अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो फल की दानी ॥
वाक्ववादिनी तू ही माता आदि ज्योति रूप निधानी
इन्द्राणी शिवानी मङ्गला ज्ञानरूपा सारदा वरदानी ।
तानसेन सेवक यह मांगी तान ताल राग रङ्ग दे
दया कर मोहें दीन जानी ॥

९

तू आदि भवानी जगजानी मानी सर्वाणी
सर्व कला दे विद्या वरदानी ।
अम्बे जगदम्बे असुर संहारणी तरुण तारणी
तान ताल शुद्ध रागरङ्ग अक्षर देवानी ॥
सप्तस्वर तीन ग्राम इकईश मूर्च्छना उच्चाश कोटि
तिनके लक्षण सब जियमें आनी ।
वैजू बावरो रावरो सेवक यह मांगी मूर्तिमान
राग भेरे गरेमें समानी ॥

१०

जय सरस्वती गणेश महादेव शक्ति सूर्य सब देव
देहो मोय विद्यावर कण्ठ पाठ ।

भैरव मालकोष द्विण्डाल दीपक श्रीमिष मूर्तिवन्त
हृदय रहे ठाठ ॥
सप्तस्वर तीन ग्राम इकईश मूर्च्छना बाईश सुर्त
उन्चाश कोट ताल लाग डाट ।
गोपाल नायक हो सब लायक आहत अनाहत
शब्दसों ध्यायी नाद ईश्वर वसे मो घाट ॥

११

तुम हो गणपति देव बुद्धिदाता श्रीर्ष धरे गज शुण्ड ।
सिद्धेश्वर नाम तुम्हारो कहियत जे विद्याधर
तीन लोक मध्य सप्त हीप नव खण्ड ॥
जे जे ध्यावे ते ते फल पावे चन्दन लेप किये
भुजदण्ड ।
तानसेन तुमको नित्य सुमिरत सुर नर मुनि
गुह्य गन्धर्व शुण्ड ॥

१२

पूजो रे गणेशको गुनि ।
रिद्धि सिद्धिके दाता विघ्नहरण दुनि ॥
जिन ध्यायो तिन पायो मन इच्छा भनि ।
बख्शके प्रभुको ध्यावत सुर नर मुनि ॥

१३

सम्बादर गज-आनन गिरिजासुत गणेश एक रदन
प्रसन्न वदन अरुण वेश ।
नर नारि गुह्य गन्धर्व किन्नर यक्ष तुम्बर मिलि
ब्रह्मा विष्णु आर्ती पुजवत महेश ॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि मूषक वाहन विद्यापति तुम्ही
सुमरत तिनको शेष ।
तानसेनके प्रभु तुमको ध्यावे अविघ्न-रूप
विनायक रूप स्वरूप आदेश ॥

१४

साधो विद्याधर गुणनिधान गुणदाता सरस्वती
माताको कर आदेश ।
नमोनमः रिद्धि सिद्धिके स्वामी सकल विद्या प्रवेश ॥

ज्यो इनको ध्यावे मन इच्छा फल पावे
दूर होत तनके क्लेश ।

तानसेन प्रभु तुम हीको ध्यावे ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

१५

ए गणराज महाराज दे विद्या जगदीश ।
सप्त स्वरसो गाजं बजाजं सर्व राग रागिणी
पुत्रवधुन सहित छतीश ॥

लेत बाईस सुरति इक्कीस मूर्च्छना उनश्वास
कोटि तान आवे दैन ।

ताललय सङ्गीत मत सो सप्त ध्याय सो बुद्धि प्रकाश
होय तानसेन प्रथम छः राग तीस रागणी ए ऐन ॥

१६

आगु नी शोस सप्तस्वर तीन ग्राम उरपति रप लाग
उठि भेश ।

अतीत अनाघात सम विषम लेश तानसेन तब
गुणी कह्यावे वरेश ॥

१७

प्रथम नाम गणेश को लेहे जा सुमरे होवे
सर्वसिद्ध काज ।

गौरीनन्दन जगवन्दन लम्बोदर नाम जपत सकल
सृष्ट सुर नर मुनि शेष राज ॥

विघ्नविनाशन सब दुःखनाशन मङ्गलदायक दुःखिटराज ।
तानसेन तीरो स्तुति करे सब देवन सरताज ॥

१८

गौरीनन्दन सदा सुखदायक जय जय जय गुरु गणेश ।
कोटि विघ्न भञ्जन खण्डन सर्वदुःख शत्रु गञ्जन
जाके पिता महेश ॥

भक्ति मुक्ति अभय वर प्रसन्नवदन पूजे इन्द्रादि देव
श्री दिनेश ।

महानाद सेन कहे मै मांगत हं तुमसो दीजे अनेक
सुख सम्पत्ति स्तुति कर थके फणीश ॥

१९

प्रथम मनाजं गणेश ।

गौरीनन्दन जगवन्दन लम्बोदर नाम जपत सकल
सृष्ट सुख शेष ॥

२०

प्रथम नाम गणेश को लोजिए जा सुमरे होए
सिद्धि काम ।

जय गिरिजानन्दन जगवन्दन लम्बोदर तोहि जपत
आवे रिद्धि सिद्धि होय सुख धाम ॥

अष्ट सिद्धि नव निद्धि पाये सुख विद्याम ।
कहे वैजू बावरो निशदिन सुमिरो नाद विद्या
प्राप्त होय लिए नाम ॥

२१

मुरारी त्रिभुवनपति इन्द्र ऐरावतपति शेष नाग हैं
फणपति ।

शौर उदधि सलिलपति कौस्तुभ मणि रत्न पति ॥
दिनकर दिनपति शशि उडगणपति हनुमान् बलपति
नारद भक्त पति मृदङ्ग साजन पति ।

चिर चिरञ्जीव रहो शा अकबर नरपति तानसेन
ताननपति ॥

२२

सङ्गत समुद्र सो भेद उक्त युक्ति साधे वानी ।
प्रथम आकार भूमि साधे सप्तस्वर तीन ग्राम
स रि ग म प ध नि क रह वर्ष बनाए तानसानी ॥

२३

कर्तार तुमको कीन्हो सब लायक मेरो मुद्रिकल
कर दो आसान ।

जो तोहे तक आवे मन इच्छा फल पावे सब दान ॥
गुणियनको सुखदायी महाराज बहादुर गुणनिधान ।
राखत सब को मान सुन्दर सुजान ॥

२४

प्यारे पठई कि धो तू आप हीते लागो री मनावन ।
प्राणेश्वरके सुखकी बतियां पै न होये री हो नीके
जानत जैसी तुमहो सिरी लागी बनावन ॥
या स्वरनको कान न कराहुं ॥

२५

अनन्त ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म श्रीश्रीधर महाराज ।
कृपासिन्धु भक्तपाल सुखकर रख ले मेरी लाज ॥
यह विनती कबूल कीजिए तुम जगत् शिरताज ।
श्रीलक्ष्मीनारायण कार्य पूर्ण करो सरो आछि काज ॥

२६

जात न मोपे चख्यो सजनी री जाय कहो क्यों न
आवे सवेरे ।
कि धों उपाय तु हीं कर वेग न पाय परे ॥
कहु आगे की श्रीरो भांति भई उरकी अब श्रीर
लखे रङ्ग डारत घनेरी ।
काहे ते हो बढ आए नितम्ब गई कटि काहे ते
अब मेरी ॥

२७

महम्मद रसूल अल्लह कीन्हों तुम्हें ज्ञातपाक ।
तुम जो रहे कादर की बन्दगी में मन बिच
करम कर एक ही ताक ॥

२८

कीजिए कृपा मोपे दुर्गे भवानो दया करो
जगज्जननि तेरे ही चरण लागी ।
योगयोगेश्वरि भोग महेश्वरि जगत्तारणि
तव नाम जपत भय भागी ॥

२९

चली चण्डमुण्ड मारवे को महाकाली कठिन कर
मुख लाली दरसत है ।
भर भर घटे घट कलन ट्टावन दानव विहारत
अट अट कह विहसत है ॥
ओटे गज खाल गरे मुण्डन के माल नयन लाल हसे
लाल जजमो लसत है ।
महा विकराल देवी दैत्यनको काल ताको वदन
विशाल जगो ज्वाला निकसत है ॥

३०

सर्वाणी सर्वकला माई सरस्वती सारदा
श्यामसुन्दरी शूलहरणी ।

कुमदहरणी कामदायिनी काली कल्याणकरणी
कुन्दरदनी ॥
कमलवदनी क्रूरक्रन्दनी नित्य कारका चन्नी
काशोरानी कारिणी कालहरणी ।

परमेश्वरी पार्वती परम पुण्य पावनी ॥
परम्परा चण्डपापहरणी पावनी पृथुकरणी ।
जगराज दास श्यामवरणी महाकाली तारण तरणी ॥

३१

सरस्वती आदिरूप नाद ब्रह्म वीणा बजावत ।
मनावत पूर्ण गुणी मन इच्छा फल पावत ॥
मणिको मन्दिर सोनेको कलसा जगमग ज्योति
लागी धाता पग ध्यावत ।
इडा देवी वाक्वाणी सारदा तानसेन की दीजि
खरताल रागरङ्ग शुद्ध मुद्रा गावत ॥

३२

मोहन सृष्टिके आधार तन को अब राख
लीजि गोपाल ।
नयन प्राण सुख दीजि तनते दुःख दूर कीजि
इतनी विनती मेरो श्रुनि लीजि हाल ॥
पतितपावन करुणासिन्धु दीन दुःखभञ्जन अनेक
रूप लीलाधारी भक्तवत्सल युग युग भए कृपाल ।
मदनमोहन मधुसूदन सुरारो गज मुदामा द्रौपदी
सहायकारो तानसेन प्रभु भक्त प्रतिपाल ॥

३३

मो सों ज्यों अवध बढ गए सांभ किए आए भोरभए ।
ऐसी की चतुर सुघर नारी जिन तुम्हें विरमाए
ऐसे सुख दए ॥
अधरन अञ्जन कइं पीक पलक लोक शौरन सो
चित्त ही बहू भांतन सों लए ।
शाहनके शाह आज वहां पाय धरो जहां कीन्हें
नेह नए ॥

३४

तोको प्यारे पठई कि धों तू आपते आई मनावन ।

प्राप्येवरेके मुखकी बतियां ऐन होवे नारी हों नौके
जानत जैसी तू मोसो री लागी बनावन ॥
या मुख की अब कान न करहों अनमिल पियसो
कह्यो न परत तेरो भीहें तनावन ।
कहा कहीं राजाराम सो तो सी री पठावे हमारे
गृह बनावन ॥

अथ होली रङ्गोन गान प्रारम्भः

मङ्गलाचरणम्—

नमामि हृदये शैशलोलाक्षीराब्धिशायिने ।
लक्ष्मोसहस्रलीलाभिसेव्यमानकलानिधे ॥
येषां शोभदयशोदासुतपदकमले नास्ति भक्ति रंराणां ।
येषामाभौरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्तारसज्ञा ।
येषां श्रोकणालीलालितपदकथास्वादरो नैव कर्णे
धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति नियतं
कीर्तनस्थो मृदङ्गः ॥

जन्मान्तरसहस्रेषु तपोध्यानसमाधिना ।
नराणां क्षोणपापानां कृशे भक्तिः प्रजायते ॥
मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः ।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनो हरिः ॥
गोलाके गोकुले राधाकान्तो यहिभुजः स्वयं ।
वासुदेवगृहे साक्षात् चतुर्भुजः स्वयं हरिः ॥
ब्रह्मोति परमात्मेति कृष्णस्तु भगवान् स्वयं ।
परब्रह्म स्वयं ज्योतिः कुतस्तेजस्विना विना ॥
कृषिर्भवाचकः शब्दः शिष्य निवृत्तिवाचकः ।
तयोरेक्यात् परब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥
वसन्ते वासन्ती कुसुमसुकुमारैरवयवै
र्भूमन्तो कान्तारे बहुविहितकृष्णानुशरणां ।
अमन्दं कन्दर्प उ्वरजनित-चिन्ताकुलतया
बलहाधां राधां सरसमिदमुच्छे सहचरी ॥
अथ वसन्तध्यानम्—
दूताङ्कुरे नैव कृतावतंसो विचूर्णमानो ऽरुणनेत्रपद्मः ।
पोताम्बरो काञ्चनचारुदेहो वसन्तरागो युवतीप्रियम् ॥

वसन्त—यत्

ललित-लवङ्गलता-परिशोलन-कोमल-मलय-समोरे ।
मधुकरनिकर-करम्बित-कोकिल-कूजित कुञ्ज-कुटीरे ॥
विहरति हरिहर सरस-वसन्ते ।
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहजनस्य दुरन्ते ॥
उन्मद-मदन-मनोरथ-पथिक-वधुजन-जनित-विलापे ।
अलिकुल-सङ्कुल-कुसुमसमूह-निराकुल-वकुलकलापे ॥
मृगमद-सौरभ-रभस-वशंवद-नवदल-मास-तमाले ।
युवजन-हृदयविदारण-मनसिज-नखरुचि-किंशुक-जाले ॥
मदन-महोपति-कनकदण्ड-रुचि-केशर-कुसुम-विकाशे ।
मिलित-शिलीमुख-पाटलि-पटल-कृत-स्मर-तूष्ण
विलासे ॥
विगलित-लज्जित-जगदवलोकन-तरुण-करुण-
कनहासे ।
विरहि-निकृन्तन-कुन्त-मुखाकृति-केतकि-दन्तुरितासे ॥
माधविका-परिमल-ललिते-नवमालिकयातिसुगन्धौ ।
मुनि मनसामपि मोहन-कारिणि तरुणाकारण-बन्धौ ॥
स्फुरदतिमुक्त-लता-परिरम्भण-पुलकित-मुकुलित-चते ।
वृन्दावन-विपिने परिसर-परिगत-यमुना-जल-पूते ॥
श्रोजयदेव-भणितमिदमुदयति हरिचरण-
स्मृति-सारम् ।
सरस-वसन्त समय-वनवर्णनमनुगतमदन-विकारम् ॥

भैरवी—धमार-यत्

कान्ह ऐसा वंशी बजाई मोह लई नई नार ।
श्यामसे सैन कर रह्यो है सन्मुख रोभ रह्यो है
रिभवार ॥
जदे वर्षकी जो पहरि है चूनर अंगियाकी रङ्ग
गुल अमार ।
दे अक्षरः मुख जपर ठाढ़ी सोहत जुरद किनार ॥
कान्ह जू कहा दोगे मोको देखी ऐसी नौकी नार ।
नख शिख ठोक चन्द्र जैसी सुख वाको कुच मानो
जैसे अमार ॥

वयस की है थोरो उमङ्गकी है पूरो विष पिचकारी
ज्यों कचनार ।
मतिकी चङ्गुर ज्यों परख की पारखी तुम हूँ सों
सरस सुनार ॥

१
ए रो मोसों होरी खेलन आये श्याम कुंवर नन्दलाल ।
अबोर गुलाल की भोरी भर भर डारत रङ्ग गुलाल ॥
केशर रङ्ग पिचकारी छिरकत डार प्रेमकी जाल ।
कृष्णानन्द रङ्गमें भोजोई फगुवा लए ब्रजबाल ॥

४
डारत केशर पिचकारी सखी मोपै कुंवर कन्हैया ।
वाट घाट मोहे रोकत रुंधत कहा करुं मेरो देया ॥
वन कुंजनमें कुच भुज टकटोरत सङ्ग ही लोग
खरे हैं चबैया ।
लाज सकुच काङ्गकी न माने देङ्गो में नन्द दुहैया ॥

५
मोरं सइयां ले आए गवनवां री मैं तो खेलों
होरी गर लाय लाय ।
बहुत रही बाबुल घर सजनौ अब पियके रङ्ग में
रङ्गी हूँ आय
गुण अवगुण सब माफ करे है कृष्णानन्द में
रहो हूँ समाय ॥

६
श्याम जू डार दई हो धूमधाम होरी की ब्रजमें
मग चलन न पावे कोज नार ।
लरे भगरि मुख मीजि वरवश गारो गावे दे दे तार ॥
अबोर गुलाल लाल धुमडनमें रही न काङ्गकी संभार ।
रसिक सनेह रस वश कर लई मोहन कृष्ण सुरार ॥

७
भली वेणु बजाई रावरे हों कान्ह होरी धूम मचाई ।
सप्त खरन इकईश मूर्खना मधुर मधुर सुखदायो ॥
उफ मृदङ्ग भी रबाब खरमण्डल सुरली ताननःकाई ।
रसिक छैल रस वश कर डारो भैरवी गाय सुनाई ॥

८
बाबुल घर दुलहन बहुत रही अबपल हूँ
पिया पय धाय ।

बाबुल तेरो व्याह रच्यो है हरे हरे बांस मंगाय ॥
गुड़िया खेलोनो रहै ताकमें नहीं खेलनको दाय ।
सात सहेली में रहो अकेलो सइयांके देश चल जाय ॥
गुण अवगुण ले चला गहो शरण पिया पे जाय ।
श्रीकृष्णानन्द में रङ्ग गई दुलहन ब्रह्म में रङ्गी समाय ॥

९
ऐसो टीठ सांवरो रो गोरी कर घर लिपट रङ्गो
वरजोरी ।
तक भुक भिभक रही मो मनमें सास ननदकी
है मोहे चोरी ॥
का करुं कित जाजं सखी री श्यामसुन्दर को लागी
मोहे तोरौ ।
सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति डारो रङ्ग मले मुख रोरी
कृष्णानन्द रङ्ग भरि सुरति फगुवा लेहो कृष्ण पे
किशोरी ॥

१०
कछु कही संभार मनमोहन लाल होरी खेलन
मो से आए हो ।
काङ्ग सों लपटत भी भटपत काङ्ग सों काङ्ग से
अङ्ग लगाए हो ॥
अतर अबोर अरगजा केशर पिचकारिन रङ्ग छाप हो ।
रसिक छैल अब मानत नाही होरी धूम मचाए हो ॥

११
मोरे बाबुलके घर आज सखी मोरे बाबुलके घर
आज पिया होरो खेलन आए लेके साज ।
लोक सकुच सब ही दूर डारुं खोल घूँघट
पट तज हूँ साज ॥
पांच पचीस लिए सङ्ग सखियां नानाविध ले समाज ।
श्रीकृष्णानन्द में रङ्ग रङ्गे हों नेक न जाइ हों भाज ॥

१९

मोरे बाबुल दौनों गवनवा में तो चली हं सद्ग्यांके
नगर ।

आ मोरो गुड्यां गरे लागो हमरे फेर के न होइ है
मिलनवा ॥

नैहरमें हमं खेल गंवायो सासुर भए है चलनवा ।

पांच सहेली तामें अकेली सद्ग्यांको भयो है
अवनवा ॥

चार कहार मिल डालिया ले आवो कहां को
करो हो रवनवा ।

म्हाय धोय नए वस्त्र पहर केसर तिलक चन्दनवा ॥

सज मृङ्गार दुलहन बन बैठी लाज सकुच उनमुनवा ।

बिदा करन कुटुम्ब सब आये नाज और बम्हनवा ॥

निरखत हो सब रह गये लोगवा नैनन नीर पुरनवा ।

अन्त चले ही बने अब होत कहा है काहको
वश न चलनवा ॥

अन्त बिदा हो चली है दुलहन पिय पिय लगी
रटनवा ।

कहे कबीर सुन री दुलहन पियके घर ले चरणवा ॥

१२

कछु कह न गए समभाय मोरे राम यौवन
हमसे विदा मांगे ।

काहके हाथ लिखूं ब्रज पाती काहुके हाथ सन्देश
मोरे राम ॥

आये वसन्त विरहके मांभ में पियके मिलन
अन्देश मोरे राम ।

एक वन टुंढ सकल वन टुंढा करि योगनके भेष ॥

जबते गए पिया भए वहां हीके फेर नहीं मिल्यो
प्राणेश ।

कृष्णानन्द में रङ्ग रही हीं आय मिलो मोहै
नटवर वेश ॥

१४

मोरे नयनके ऊपर मारी सद्ग्यां पिचकारी ।

भर पिचकारी मुखपर मारी भोज गई तन सारी ॥
अबीर गुलाल ले रङ्ग में बोरी गावत दे दे तारी ।

कृष्णानन्द सीं फगुवा लीन्हें तब छांके वनवारो ॥

१५

इन मोहन वनवारो ने मोहै भीर हीं आन जगाई ।

कह न सकत कछु लाजकी मारी नई नई प्रोति
लगाई ॥

अङ्ग छुयो जिनि बांह गहो मेरी हा हा करूं परूं पाई ।
हा हा सरक जा इस्क रङ्गीले देती मैं राम दुहाई ॥

१६

कोज मेरो कहा करेगो मैं तो पिया सङ्ग खेलीं होरी ।

अपने अपने मन्दिरसे निकसी कोई सांवरी कोई गोरो ॥

पिया मेरो पियकी सजनी पिय मोंकी रङ्गमें बोरी ।

कृष्णानन्द में रङ्ग गई हीं फगुवा ले हीं बहोरी ॥

१७

अजी तुम सांची कहो होरी खेल कहां आए ।

अधरन अञ्जन पीक कपोलन भाल मचावर लाए ॥

डगमगान पग धरत धरणी में तीन तिलक कहां पाए ।

रसिक छैल भ्रमर घर घरके वैन तिया विलमाए ॥

१८

कैसे समभाऊं कान्ह यौवन कहा मानत नाहीं ।

उमंगे यौवन ज्यों आवण भादों देती मैं राम दुहाई

अब के पिया मिल ले हमसे करो हो मेरो सहाई ॥

१९

हम से आंख छिपाए जात गौरी तेरो फैल

रहो कजरा ।

नासर पिया सीं मिल आई सजनी टूट गई दुलरो

तिलरी गजरा ॥

२०

मोरी चटक चुनरिया रङ्गाव सद्ग्यां तो से ना खेलीं ।

सालू सरस कुसुमकी अंगिया मैं अपने रङ्ग में रखीं ॥

२१

मोरे सद्ग्यां ने कीन्हो अवनवा मैं ते खेलूंगो होरी

पोके नगर ।

पांच पचीस लीहों सङ्ग सखियां अबीर गुलाल ले
रङ्ग रङ्गी हँ सगर ॥

२२

काहे मार गए पिचकारी मोरे श्याम सुरङ्ग
चुनरिया में दाग परो ।
रपट भपट लपट गह्वी बहियां नयन सैन दे
आय अरो ॥

२३

आवो बलमजो हमारे छेरे अबीर गुलाल मलों
सुख तेरे होरीके दिनन में ना कर भेरे ।
महम्मद शा पिया चतुर रङ्गीले दूर वसो या वसो
मेरे नेरे ॥

२४

कान्ह जो आदेंगे मेरे होरी खेलनको देखुंगी मैं बड़े
खेलार ।
फगुवा लूंगी तब जान दूंगी रसिक हेल रिभवार ॥

२५

आज रङ्ग है री ब्रज रङ्ग है लिये ग्वाल सखा
सब सङ्ग है ।
रङ्ग ही रङ्ग चहुं ओर सखी री फागु खेलनमें
उमङ्ग है ॥

रङ्गमहल ओ रङ्ग ही मजलिस रङ्ग वसन
कृष्ण रङ्ग है ।
रङ्ग सुरङ्ग पिचकारी रङ्ग ले बाजत मधुर मृदङ्ग है ॥

२६

रे होरी खेलनको प्यारी आवो नो हमार गली ।
अबीर गुलाल उड़ावो मनमान्यो फूलो गुलाब की
कली ॥
अतर अरगजा पिचकारी केशर ले घूँघट ओट चली ।
प्यारे जियकी प्यारी वल्लभ गावत होरी अली ॥

२७

होरी खेलनको कैसे जाजं रे प्रिय सुखसो न
बोलै एक बार ।

हो अजान कहु जानत माहीं परम चतुर प्रिय
सब गुणन भरे हैं ओकृष्ण रङ्ग कर्तार ॥

२८

जिन भिजवो कृष्ण मुरारो कर गहे पकरत
जाट नार ।
लपट भपट बरजोरी करत है गावत दे दे तार ॥

२९

ए हो निपट ठोठ गिरिधारो लाल मोहै रङ्ग
होमें बोरे री ।
अबीर गुलाल मलत सुख मेरे हियसो हिय जोरे री ॥

३०

छवि तोरी मोहै प्यारी लगत है कहां लगाए
गुलाल लाल ।
सुन्दर छवि देख मन अटक्यो वंशो बजावत नन्दलाल
खेलन आए बनवारी लाल ॥

३१

लङ्कर माती फागुनमें एक ओर भोर भई गोपिनकी
एक ओर ग्वालके बाल ।
चहं ओरते मारत पिचकारी भोजी अतर गुलाल ॥

३२

अलबेली बारे कान्ह लाल तेरी मुरली
अधिक सोहावे ।
नयन प्राण सब तेरे हो वशमें जो मन रङ्ग बन आवे ॥
मधुर मधुर स्वर अधरन धर हरि रस भरो
तान सुनावे ।

सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति बार बार वलि जावे ॥

३३

सखी मोरे अंगियामें अबीर मलो री ।
बहियां मरोरी चुरियां फोरो ऐसो रङ्ग करो री ॥

३४

जागे मेरे भाग्य मैं तं तुम सङ्ग खेलूं होरी ।
रसके कारण वश कर लोहीं कम्पन लागो छातो मारो
अपने प्रियसे मैं होरी खेलां सास ननदकी चोरो ॥

२५

सांवरे रसिया अनेक खेल कहां शीखे वेणु बजाय ।
तानन माननसो वश कीन्हीं जादू साज सजाय ॥

२६

नयन विरहिया तेरे प्रियारे रङ्ग रस वश कर लीन्हों
जिया रे ।
बांक बख्श कहे जादू डारो सुन्दर श्याम मेरी
सूरत विसारे ॥

२७

अलबेली भई मदमाती सइयां पै रङ्ग डारोंगी ।
चोवा चन्दन अतर अरगजा मुख मींङ्के बदला
लेओंगी ॥

२८

ए री मैं तो बार बार नित्य नई होरो खेलन
प्रिय पेंठाई ।
अम्बा बीरे टेसू फूले और फले जाही जुही ॥

२९

मैं तो डारुंगी रङ्ग गुलाल लाल सइयां मेरे आए ।
मैं तो भर भर केशर पिचकारी पियपै नाए ॥
धन्य भाग्य सुहाग है आए श्याम दर्शाए ।
मैं तो सोती थो रङ्गमहलमें सुख नींद लगाए ॥
अब मैं तो पड़ीं अचानक जाग पिया मेरे धाए ।
इन विरहने खायो मांस हाड़ भयो साये ॥
अब मैं हाड़ लै के कित जाऊं सइयां मोहे चाहै ।
इन अंसुवनकी बड़ी बूंद धरणोंमें पड़त है
मेरो जरत हियरा बुभाय सइयां मोहे चाहै ॥
सामीषमालीकी प्रीति पुरानो नित्य नई ।
अब मेरो दिन दिन बढ़त सुहाग सइयां मोरे
आए मैं तो डारुंगी रङ्ग ॥

भैरवी—खेमटा

छि छि हारिले श्याम राधार काछि पारिले ना राधाय ।
जिनिलेन किशोरी होरो काज किये खेलाय ॥
जित्वा बोले कुञ्जे एले बस्ले प्रतिप्राय ।
दिये खेलाय भङ्ग है त्रिभङ्ग धरले राधार पाय ॥

३

यदि खेलवे होरो बंशीधारी श्याम निकुञ्जे चल ।
राजपथेर माभि मरि लाजे ननदी कि बलवे बल
श्यामख ॥

३

सोइ केमने आनवो जल केमने मुख वांचाय ।
हाथे लिये पिचकारी आबोर खेलाय ॥
मत्त गज जिनि गति हेरि श्यामराय ।
हृदय कांपिछे पद भये नयन नाचाय ॥
आमार रूप आमार हैल जप्पालेर प्राय ।
व्रजवासी कुञ्जे आसि होरो खेलवे गांवो वासो,
छड़ाइचे कुङ्कुम आबोर खेलाय गुलाल उड़ाय ॥

४

यमुनाते नीरे याइते ना पारो पथे
मत्त होइये फिरे बह्विहारी ।
एके मोरा गोपवाला नाहि जानि होरो खेला
तबु नाहि छाड़े काला देय रङ्ग भारी ॥

५

भोर ही आये मेरे गृह लाल होरो खेलन को
मदनगोपाल ।
लाल गुलाल में लाल बने हैं लाली लाल बने हैं
लाल ॥

६

होरी दे ख्याल बिचो दिल साड़ा अटका ।
सांवरे देलल साड़ा दिल सटका ॥
मनमोहन सोहन गवरू रङ्ग डारत असाड़ा चीर
अटका ।
अलबेली पाग सलीनी अंगिया जरकशी जामा
कटि तट पटका ॥
लाल गुलाल ले गालां मलदा अजब खेल है नागर
नटका ।
रसिक खेल हुन्दावन कुञ्जन में लगा रहत ध्यान
निशा दिन घटका ॥

सखी मेरे श्यामनि धूम मचाई ।
या आंगनमें कोऊ निकस न पावे पिचकारिन
रङ्ग छाई ॥

जन मींजो अनार गुलाबो कर लाई कुन्हलाई
जात नार ।
फूलसी होत है चतुर नार काह जानि नाजूक
नरको सार ॥

तोरो गारो मोहे प्यारी लगतु है निकस गई सुन्दर
मुख ते ।
चन्द्रमुखी मृगलोचनी कामिनी ऐसे दीप्त चन्द्रकी
भलकते ॥

सन्ती खिलो होरी समाज जगमें माच रही है धमार ।
दश कपट लिए करमें डफ और रबाबों कर दे तार ॥
पांच पचीस लिए सङ्ग अबला हंसि हंसि मिलि
गावत गार ।

ज्ञानको रङ्ग ध्यान पिचकारी हंस हंस नाम रङ्ग
दो डार

कहे कबीर शूनो भाई साधो जगमें खिलो संभार ॥

नागर है के आप रूप है रो ।
हारी या नु हारो तरे मोको ये माना चूरो ॥
चोखे देह कागू पुन कारे राग नारी पाइये बरजोरी ।
को रे इह निवेदन फेरि देवा मानक जो नाहीं
ए मत होरी ॥

फगुवा मांगन आयो रो मेरी बारो कान्ह मोखे ।
अबीर गुलाल केशर रङ्ग ले के उमड़ घुमड़ रङ्ग
छायो ॥

ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग ले होरी राग जमायो ।
अन्यानन्द में रङ्ग रङ्गे हैं फगुवा लयो मन भायो ॥

११
रङ्ग भर दीन्हो वसन हमारे रे सांवरै हो कान ।
प्रीचक आय भकभोरी मइको लपक भपक गहो
छाड़ दई कुलकान ॥

१४
कान्ह ऐसे अनोखे खेलारो वनवारी ने रङ्ग डार
दई पिचकारो ।
सालू सुरङ्ग कुसुभी अंगिया भोज गई रङ्ग सारी ॥

१५
मस्तो फागुनकी कोजिए ज्यों चाल चलत गज हस्तो ।
गुलाब अतर चोवा चन्दन मुख मलि जाने न पावे
नार दूर खिस्तो ॥

१६
बरज्यो माने नहीं न नार होरी खेलत सब द्वार द्वार ।
बाजत बीन मृदङ्ग भांभ डफ और साज कटो तार
दे दे तार गार गावत है रहो नहीं काहु संभार
डफकी धनि धुंकार ॥

१७
मोपे मोहन मदनगोपाल दए रङ्ग डार ।
नख शिख अङ्ग रङ्गमें बोरो मारि केशर पिचकार ॥
मोरे नयनके मार चला पिचकारी ।
भर पिचकारी मोरे मुख पर मारी
भोज गई तन सारी ॥

१८
सखि मेरे यौवन धूम मचाई ।
जो कोउ पकरत बांह लोगनमें देति मैं रामदुहाई ॥

१९
पिया मोको सुरख चुनरिया रङ्गा दे ।
चोवा चन्दन और अरगजो केशर रङ्ग भरा दे ॥

२०
होरी खेलत ताहे आवत लाज काहेको प्रीति लगावत ।
एक तो रही करहैयाकी पातर उंमगी जोवनवां
सतावत ॥

२१

ता दिन रङ्ग भये हँ जा दिन प्रियको मैं देखन पैहँ ।
योगिनी होके मैं वन वन डोलूँ अङ्ग विभूति रमै हँ ।
बालकी गलसेली बने हँ सपक भपक गर लै हँ ।
प्रिय मोरा मैं प्रियकी सजनी प्रिय पर जियरा रमै हँ ॥

२२

सखी नयनसे नयन मिलाय रही सैन में फागुवा
मनाय रही ।
ताशिकी अंगिया जालीकी कुरती छतियनसों छतिया
सुझाय रही ॥

२४

अलबेली अकेली प्रियसों खेले होरी रे वृन्दावनकी
कुञ्जगली ।
सालू सरस कुसुम्भी अंगिया और रङ्गमें रली मली ॥

सिन्धु-भैरवी-यत्

होरी खेले यौवन मदमाती इन सांवरेने वेषु बजाई ।
व्रजकी सखी सब दूर निकस गई गोकुल धूम मचाई
राधा कृष्णणी और सत्यभामा कुञ्जा खेल खेलाई ॥

२

मैं तो आप ही रङ्ग में बोरी कन्हैया मोपे रङ्ग न
डारो ।
व्रजकी सखी सब बन बन आई हम ही पे रङ्ग मारो ॥
भर पिचकारी मुख पर मारी भोज गई रङ्ग सारी ।
बरज रही बरजो नहीं माने ऐसे ढीठ वनवारी
रसिक छैल व्रज कुञ्जविहारो हा हा कर मैं हारी ॥

३

जात कहां हो आज होरी जान न पाय ।
सासके तोर छैल नहीं माने गारो देत बनाय
रुचत चीर श्याम नहीं मानत सुरली देहे बजाय ॥

४

बीरी प्रियको मनाय ले फागुनके दिन चार ।
रूप यौवनको गुमान न करिए बीती जात बहार ॥
प्रिय चातुर तू निपट अनारी प्रिय चरणन चित्त धार ।
कृष्णानन्द में रङ्ग री सुहागन लोक लाज तज डार ॥

५

मेरो हरवा चुभि चुभि जाय होरी मैं ना
खेलूँ गी फाग ।
अञ्जल पकर मेरो सब रस लीन्हों नैक न आई लाग
नासर पिया सों होरी खेलों घर घर तेरो भाग ॥

६

कान्ह मैं खेलों तोसों फाग मोरे गरवा लग लग जाय ।
बहियां मरोरत कुच मुख मोड़त नयनसे नयन
मिलाय ॥

७

सखी मैं कैसे खेलूँ होरी मोरे नयन वा
लग लग जाय ।
मनमोहन मन रस वश कर लीन्हों भिरे मनवाने
पग पग जाय ॥

८

पिचकारो मो पर मारी लली घेर घेर बोरत सारी ।
अपने री अपने मन्दिर से निकसी कोई सांवरी
कोई गोरी ॥

९

कौनके व्रजको हजारदार मेरी अंगिया कर
दीन्हों तार तार ।
मेरो ही रङ्ग मेरो पिचकारो मोहे भिजावत
बार बार ॥

१०

चित्त फागुन गावत गारो भगवत भजन विसार
विसारी ।
हो हो करत हलाक दिवस निशि घर घर फिरत
है रतनारी ॥
नाचत गावत ताल बजावत तरह तरह के बेश
सुधारी ।
अशुभ अनैक बनाय विविध विधि मुखसे कहि
सपेति डारी ॥
ले ले धूरि उड़ावत धावत मदमाती नहीं टारत
ते टारी ।

नग्न गात्र नहिं होश वसन के हंसत हसावत
लागन गारो ॥
देखत झाखन पुरजन रिपुजन मागत फागुन
हा तपसो चोरो करि जनको तन डारत छाती पीटत
होरो जारो ।
लक्ष्मीपति नहीं मिले लाभ ककु नाहक हो नर
भरे कुचारी ॥

सुलतानी-भैरवी—पशुती

होरो बा महरु आमद वक्त बहार आमद ।
मे पा शम्बर आरजे खूबा अतर अबीर गुलालरा ॥
रङ्ग आमेज बखूबी करदम् ये गुले रखे लालरा ।
अज मए नाव बरामदे के मौसमे अजब
किनार आमद ॥

तुमने ए गुलसन चमन मचाई होरो ।
गुल तो सब खार हुये तेरो बन आई होरो ॥
अब गुलाल उठता है और रङ्गकी पड़ती फुहार
जिस तरफ देखते हैं अब्रमी छाई होरो ।
कुङ्कुमाबाजी है और खेल है मस्त मग्न
प्यारे क्या खूब तेरे दिलको खुश आई होरो ॥
यह मजे हमने जो देखे प्यारे के यहां आकर
खूब सा खुश हुवा दिल आई क्या भाई होरो ।
बुलबुल चहचहे करे कुमरियां मस्त फिरें
फूल फल भूम रहे हाय क्या आई होरो ।

सिन्धु-भैरवी—पशुती

आया फागुनका महीना होरो सब गाय रहे ।
कोई वीण और कोई चङ्ग मृदङ्ग बजाय रहे ॥
कोई कुङ्कुमा उड़े गुलाल धुमड़ उड़ाय रहे ।
कोई नाच नाच सङ्कोत भाव देखाय रहे
इशक रङ्ग में रङ्ग के होरो धूम मचाय रहे ॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

लाल तेरे बलिहारी प्यारो मान न कीजे ।
शेष विहाय धाय हिय सौ लग अधर सुधारस पीजे ॥

मौज सरोज भरे हरि हा हियरा हियरा धर लोजे ।
भाग्यन सौ फाल्गुन प्रिय पायो जन रामलला
सुख दोजे ॥

बौरी मान न कर री तेरे यौवन की नवल बहार ।
यह यौवन तरुवर की कैया रहत नहीं दिन चार ॥
भाग्यन से फाल्गुन प्रिय पायो तन मन कर बलिहार ।
प्रिय चतुर तू निपट अयानी लाज बकुच तज डार ॥

प्रिय विदेश में तो भई हं बावरी का सङ्ग
खेलो मैं होरो ।
निशिदिन तरफत वोतत जात है कारी भई
रङ्ग गोरी ॥

रे मोरे होरो के खेलैया रङ्ग भरि मारी पिचकारी ।
अबौर गुलाल कुङ्कुमा मारत हमदम में तुमपे
वारो ॥

गोरी कुञ्ज भवन में हरि सङ्ग खेलो फाग ।
धन्य यौवन गुण तेरो तरुपता धन्य धन्य तेरो सुहाग ॥

गोरी मनमोहन ते काहे करत हो मान ।
भाग्यनसे फाल्गुन प्रिय पायो ऐसे सुन्दर नवल वर
कान ॥

गोरो सोच समझ तू का पर करत गुमान ।
यह संसार कोज नहीं तेरो शरण गहो हरि आन ॥

सिन्धु-जङ्गला भैरवी—तिताला

सांवरा साड़ा भोज गई रङ्ग चोलियां मानू क्यों
मारदा पिचकारियां ।
नागर मन्द महरदा बे कैला तू अलबेला रङ्ग रङ्गोला
मैं भी अकेली तू भी अकेला मैं तेड़े नास राजी होइयां ॥

२
रे मैं ता भौचक हो रही पिचकारिन काहे को मारी
भर पिचकारो मुखपर मारी भोज गई तन सारी ॥

३
रे दयो मारे पिचकारिन काहे को मारी ।
रंग पिचकारो मुख कुच मारी भोज गई तन सारी ॥
तैने मेरी सारी भिजाई देया कुञ्जभवन गिरिधारी

लाल ।

अतर गुलाल कुच मुख मींजत गावत है दे दे कर
ताल ॥

४
छेलने डारो गुलाल रो मैं तो सगरी भोज गई आज ।
चोवा रे चन्दन और अरगजा मारो पिचकारी
ब्रजराज ॥

५
हरे हरे हरि हरे हरे हीरो हर हरे बेर मेरे घरे खरे ।
हरि हरि हरे हरे हरत कहरत मन बेर बेर
रङ्ग भरे ॥

हर हरे वसन आभूषण हरे हरे हरि हरि मित
सब हरे हरे ।
हरि हरि बोलत सब कुञ्ज हो हो हो हो बोलत
ररे ॥

६
धन्य भाग्य सद्ग्यां सङ्ग सोई चूक परि जाते प्रिय
विछुरे योग नेम धन्य रे ई अमृत फिरत द्वार दशो
दिशा उरन देवे कोई कोई ।

प्रिय सङ्ग न जाऊंगी यह कुसाज विन धोए
जाके पिया जग मांभ सराहें सोई सोहागन
होई होई ॥

जिन नहीं प्रीति करी सद्ग्यां सङ्ग विषय वीज ले बोई ।
निशदिन लहर देत उर भीतर मन्ध न लागी
कोई कोई ॥

गावे गूदर यह प्रीति पुरानी उदित रहे नहीं गोई ।
को हरिका गुण गावत सराह रे पिसल तिन पोई पोई ॥

७
सजनो अज हूं न आयो प्रिय मेरी ।
एक विरह जैसे सेज दोपक नाहीं अंधेरा ॥
को ऐसे बिच प्रिय को मिलावे सारी जहां बिच हेरा ।
योगिनी होके डारुं फेरा ॥
आन पड़ी विरहके सागर विषय पान न बेरा ।
विन प्रिय को मोहे पार उतारे प्राण जीवन धन मेरा
अब रे लहर भावत बहु बेरा ॥
अवध नियरानी प्रिय नहीं आए आगम होत अन्धेरा ।
गावे गूदर मोहे शपथ सद्ग्यांकी काम कटक दल
घेरा अब रे जगत् दो दिनका वसेरा ॥

८
जो कोई राम ररे सोई जाने ।
जे जे भजे सो सुरपुर गएज नरज भक्ति सयाने ॥
ताकी महिमा क्या कहिवे को सागर दुहु सकुचाने
अजी सागर दुहु सकुचाने ॥
प्रिय मिलवे को सहज भाव है सहज दोनता वानी ।
जाके जप तप मान महीये वेदहु कहत बखानी ॥
जाकी गति मति ऐसी आवत है तबे भाग कहु जानी ।
गावे गूदर जब गुरुकी दया तब भी लगे अरु ध्यानो ॥

९
पिया मनमोहन मेरे प्यारे ने सखी भार ही
हीरो मचाई ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर सारी सुरङ्ग भिजाई ॥
लपट भपटके बहियां गह पकरो हरि हंस
कण्ठ लगाई ।

सुन्दर श्याम कमलदल लोचन चित्त मेरो लियो
चोराई ॥
बाजत वंशी अधर मधुर स्वर रसभरी तान शनाई ।
कण्ठ रसिक रङ्गभीने रङ्ग में हीरो धूम मचाई ॥

१०
हीरीके रङ्ग माते आए कौन त्रिया सारो रैन खेलाए ।
लाल गुलाल सो लाल बने हो बोलत वचन प्यारे
तोतराए ॥

मोतियन हार चुभे हैं उर में अबोर अरगजा
गाल लगाए ।
भर पिचकारो मोहे मारो बागे अङ्गके सब ही रङ्गाए
कण्ठ रसिक प्यारे वहीँ सिधारो जिन कुच भुज
सो तन लिपटाए ॥

११

साची कहो हमसे पिय प्यारे आज होरो रङ्ग
कहाँ मचाए ।
अबोर गुलाल कुङ्कुमां केशर कौन तिया सो
मुख हि मलाए ॥
अधर अञ्जन भाल महावर बोलत वचन सद्दयां
तोतराए ।
होरोमें वनवारो तिहारी कोरी किशोरो जेने रैन
जगाए ॥

हमसो अवध बढ अनृत विलम रहे भोर भए तब
वदन देखाए ।
सूरश्याम तुम वहीँ सिधारो को पहिंचानत
काके आए ॥

१२

सद्दयां होरो खोलो ताहीं जहाँ सारो रैन गंवाई ।
कौन नवल तिया तुम्हें रङ्ग रङ्गे रस वश कर
विरमाई ॥

१३

मेरे नयनके ऊपर मारो सद्दयां पिचकारी ।
भर पिचकारी मोरे मुखपर मारो अंगिया भोज
गई सारो ॥
वरज रहो वरजो नहीं मानत हा हा कर कर हारो ।
रसिक कण्ठ रस वश कर डारो बार बार वलिहारी ॥

१४

कोई मेरा कारे करे गो मैं तो पिय सङ्ग
खेलूंगी होरी ।
अपने रो अपने मन्दिरसे निकसी कोई सांवरी
कोई गोरी ॥

भैरवी—तिताला

सुन्दर मनमोहन प्यारे नन्ददुलारे होरो खेलन
आए मेरे धाम ।
कौन नवल तिया तुम्हें खेलाए रङ्गाए जगाए
चारो याम ॥
अधरन अञ्जन पीक कपोलन जावक तिलक लगाए ।
अबोर गलाल मुखसे लपटाए तीन तिलक
सूर प्रभु कहां पाए ॥

भैरवी—यत्

होरो खेल कहांति आए कौन तिया सारो रैन जगाए ।
अबोर गुलाल लाल मुख लागे रोरो अधिक सुहाए ॥
जागे पागे अनुरागे श्याम जू होरो रङ्ग रङ्गाए ।
सूरश्याम सांची कहो मोसे तीन तिलक कहां पाए ॥

भैरवी—तिताला

पिचकारो मारी वनवारी रे बिगारी है सारो
हमारी रे
बहियां मरोर डारी मुखसे दई गारी हा हा हा
कर हारी रे ॥
सङ्गकी सखी सारी देखे निहारी गावत सभी
दै दै तारी ।
अबोर गुलाल मुखमें मल डारी फाग रथो अति ही
हरि भारी
ब्रजको नारो रस वश कर डारी छाड़ो सूरश्याम
तेरे जाऊं वलिहारो ॥

२

भैरवी उदय आए हरि मेरे सांभके वचन कहां गए
तेरे होरो में कहां रङ्गे रे ।
लाल गुलाल लाल ललित लखि लीला लाली ले
लासन लिये संगेरे ॥
काके केलि किये कौनके काङ्गकी कान करी
त्रिभङ्गे रे ।

रस वश कर लिए सूरके प्रभुको भगुवा लीन्हें कौन
रङ्ग पगे रे ॥

भैरवी—यत्

मोरे प्रियके यौवन वा ठरकि जात ए हो कासे
कहं मैं जियकी बात ।

सूनी सेज प्रीतम नहीं देखो ता पर विरह
लायो घात ॥

सुख सपने की सम्पत् सजनी नयन खुले नहीं
भावे हाथ ।

गावे गूदर मोहे चैन न पावे जबते प्रिय मेरो
विछड़ो साथ ॥

काफ़ी-भैरवी—यत्

मोरे प्रियके जीवन वा करत जोर ए रो ए हो सूनी
सेज मैं करत शोर ।

ताशकी अङ्गिया मसकन लागी उमग आए दोज
बन्दको तोर ॥

ए तो यौवन सद्दयां का खेलोना कहां छिपाजं
अङ्गके चोर ।

सारी अवध मोहे बैठ गंवाई तरप तरप जिय
भयो हू भोर ॥

योगिनी होके मैं भस्म चढ़ाजं प्रियको मैं दूदूं
कौन शोर ।

गाये गूदर प्रीतम वश नहीं जन्म गंवायो कहीं
मोर मोर ॥

भैरवी—यत्

हमसे कहा छिपावे छिनरिया तोरी भोज गई
सब सारी ।

कर्म करावत नयन दुरावत सैन लगावत मारी ॥
वसन भूषण तेरे कहंके कहं देखे रङ्ग परे

तोपे भारी ।

हों जो गई थी खेलनको अचपल अबके फाल्गुन
तोरी बारी ॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

चलो प्यारी होरोके मौसमको बहार री ।
तोसे खेलों फाग चलके फगुवा ले हों मन भाए
वाही सुमनके बाग री ॥

पौल-भैरवी—यत्

होरो खेलन सद्दयां अजहं न भाए वोती जात
बहार री ।

तुम विन लाल गुलाल अंधेरी बनी अंसुअनकी
पिचकार री ॥

भैरवी—यत्

अनी मैड़ा सांवलिया यानी होरी खेले उसी दे नाल ।
सांवली सूरत माधुरी मूरत करदा होरो दा ख्याल ॥

२

सूरत दा मतवाला मैड़ा होरी खेलन
योगीया यानी ।

कानन कुण्डल गल बिच सेली अलख अलख
बुलायानी ॥

अमानी एक योगी आया लाल दुशाले वाला ।
भिच्चा दे दी लीदा नहीं सूरत दा मतवाला ॥
बाग लगाया बगीचा लगाया बीच लगाई क्यारी ।
उस क्यारी में क्या क्या बोया इश्क महांमत यारी ॥

२

श्याम कैसी धूम मचाई होरी खेलत रङ्ग रचाई ।
अबीर गुलालके बादर छाए नई नई तान सुनाई ॥

भैरवी—चर्चरी

ए हो नन्दनन्दन ब्रजराज आज मोसे नाइक
रार करे ।

असुर पकर रङ्ग मोपे छारे आंखन अबीर भरे ॥
देखत बाल हृष ज्यों ठाढ़े तनक न लाज करे ।
छविनायक हम वसवो छाड़ो को नित उठ भ्रगरे ॥

२

छिप छिप कुङ्कन में रहत कहेया ।
जिन कोज बेचन जावो ले दहिया ॥

भरज वरज काहू की न मानत दिन ही लूटत कोज
नाहीं पुहैया ।
सुन लो झूख हमारी सब ही राखी लाज चाहे
जो गुसैया
बैठ रहो गृहमें छविनायक नाहीं तो हंसि है
व्रजके वसैया ॥

मेरी अंगिया भीजे पिचकारी ना लावो ।
ऐसे ठीठ लफ्फर न देखों मनमें कछू तो सजावो ॥

क्यों फिकत हो गुलाल लाल मेरी आंखन में खटके ।
हीं यमुना जल भरण जात थी शिरको चुनरिया
भटके ॥

धूमधामसे खेले होरी उफ मृदङ्ग लागे बाजन ।
चित्त ठुत्त तधन शिखर सङ्गे ले खेल मचावे साजन ॥
अपने री अपने मन्दिरसों निकसो कचन थार सब
विध ले साजन
कोई लपट कोई भपट रङ्ग ले कोई मरो जात है
साजन ।

रसिक छैल गोकुलकी गेल मध्य खेल मथो ऋतु
फाल्गुन ॥

होरी धूम मचाई हो कान्ह बाजत वीणा मृदङ्ग
सुरली तान ।

अबीर गुलाल केशर रङ्ग छिरकत चन्दन वन्दन
सों धो सान ॥

म्बाल बाल सब सङ्ग शोभित नाचत गावत
ले ले तान ।

रसिक कृष्ण प्रभु रस वश कर लीन्हों यौवनको
मांगे मोसे दान ॥

ए हो री हो री चलो री नन्द महर जू कौ पौरी
होरो होय रहो री ।

बहोरि न पैहो री ऐसो री समय री उठो री
निरखो री मनमोहन जो होरो ॥
कहो री किशोरी गुलाल लहो री पीत पिछोरी
छिरकि रङ्गोरी ।
कृष्णरूप प्रभुको परसो री फगुवा लहो री मन
मानो री गोरो ॥

श्याम तै ने होरो में धूम मचाई कोज गैत चलन
नाहीं पाई ॥

काहूको लपटत भपटत दपटत काहू काहूको
कुच शकाई ॥
जबते लगी है वसन्त पञ्चमी तबते मति बीराई ।
कृष्णरूप रङ्गो व्रज वनिता जादू टोना चलाई ॥

इन मनमोहन मोहे रस वश कर रङ्ग डारो ।
व्रजके विहारी वनवारो गिरिधारो मोरो सुरङ्ग
चुनरिया भरो सारो ॥

चोवा चन्दन वन्दन कुङ्कुमा अबीर गुलाल केशर
पिचकारो ।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग भांभ भनक रबाब किन्नरी
गावत सब मिल दे दे तारी
कृष्णरूप रसवश कर लई सब व्रजवनिता चरण
स्पर्श कर भई वलिहारी ॥

लफ्फर बिच ठाढ़ो हो री हम ही सों वरजोरो करत है
भर भर मारे पिचकारी ।
लपट भपटके मोहे पकर लीन्हों है अंगिया दई
मोरी फारी ॥
वरज रहो वरजो नहीं मानै मैं हा हा हा
कर हारी ।

अबीर सगावत कुच मुख मीड़त रङ्गरस देत है
तारी ॥

११

मैं तो डारूंगी रङ्ग गुलाल लाल मेरे आए ।
केसर रङ्ग बनाय राखूंगी अबीर गुलाल उड़ाए ॥

१२

तेरे मनमें कहा रे कन्हैया गुलाल मुख मींजत
वरजोरी चटके ।
नयन लगावत अङ्गुरी नचावत हंस हंसके दैया
कैसेके मटके ॥

तबन्धी बारी काई नहीं छांडी आय देखावत
अपनी चटके ।
रसिकराय पुरुषोत्तम प्यारे अपनी बेरको गयो रे
सटके ॥

१३

मैं लाज भरी नहीं बोली सांवरै कैसी धूम
मचावत है ।
पहले तो मोहन सूधे बोलत पाछे गारी सुनावत है ॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन
वरसावत है ।
लपट झपट बहियां गहे डारी पुरुषोत्तम अङ्ग
लगावत है ॥

१४

मैं गमने नहीं जइ हूं राम ॥
नवल बहुरिया चली गमनको कर दुलहनके भेध ।
नयन रोवै जो हंसैं मैं तो चली हूं पियाके देश ॥
गमने न जइ हूं टोने चलइ हूं नैहर धूम मचै हूं ।
जो मेरे गमनेकी बात चलै है तापर विष खै हूं ॥
चलत चलत मोरे पांव पिराने सासुर है बहु दूर ।
गुण अवगुण मो भैं एको नाहीं क्या ले मिलहुं हुजूर
कहे कबीर पिया मैं पायो बाजत अनाहत तूर ॥

१५

अलबिली भई मदमाता सद्दयां पै रङ्ग डालूंगी ।
चोवा चन्दन अतर अरगजा मुख मीड़के बदलो
निकालूंगी ॥

फगुवा लैहों पकर मोहनको सुन्दर रूपछवि
भालंगी ।
पुरुषोत्तम प्रभुसों होरी खेलन नन्द मङ्गर
घर चालूंगी ॥

१६

सद्दयां नयन मारो पिचकारी रे ।
आय अचानक पकर लई मोहे दई है गारी
उघारो रे ॥

१७

मैं तो चली हूं सद्दयांके देश नगर मोरे बाबुलदी तो
गमनवा रे ।
आवो सद्दयां गरे लागो हमारे भोर कद होवै
मिलनवा रे ॥

१८

कहां खेले हो होरी अजी तुम सांचो कही ।
छलकी बतियां हमसों करत ही चले जावो छेला
वाहीके रहो ॥
नयनन किन यह अज्ञान दीन्हों नवल तिया को
चाह चहो ।
पुरुषोत्तम कहां होरी खेले सगरी रैन मोको
अनङ्ग दहो ॥

१९

इन मोहन वंशीवारने अरे मोहे भोर ही आन
जगार्ह रे ।
कह न सकत कहु लाजकी मारो नई नई
प्रीति लगार्ह रे ॥
अङ्ग न छुवो भुज न गहो मेरो हा हा करूं परूं
पार्ह रे ।
हा हा सरक जा इग्रक रङ्गीले देतो मैं राम
दुहार्ह रे ॥

२०

अब तो रंगाजंगी सारी सद्दयां मिले मोहे चतुर
खेसारी ।
रङ्ग वाही रङ्गरेज, वाही है हर रङ्गकी छवि ग्यारी ॥

बहु रूप बहु भेष किये है सुन्दर सरस अपारो ।
ब्रह्मरङ्ग प्रसुओं होरो खेलै एक हो रङ्ग रङ्गारी ॥

२१

ए रो मेरे पिचकारी मारो चटक सों कहा री कहीं
सांवरे की मटक ।

हा हा करों सङ्ग लागो हो पावै काङ्गकी नहीं है
सांवरेको भटक ॥

लपट भपट अक्षर गह लीन्हों बहियां पकर लीन्हों
मीरो भटक ।

अबीर गुलाल केशर पिचकारी पुरुषोत्तम नहीं
माने हटक ॥

२२

सांवरे सङ्ग खेलन दे रो अबके फाल्गुनमें सुन रो
सजनी ।

मीहे जिन हटक एरी मनदिया तरपत वीतत
दिन और रजनी ॥

अबीर उड़ाजं गरी लगाजं लाज छाड़ कुलकाने
तजनी ।

तव यश गाजं मोहन रिभाजं कहा काम है काङ्ग
सों वाही भजो जो तेरो भजनी ॥

२३

वे छैला रङ्ग डार गयो रौ भीज गई मीरो सारी
सगरी ।

हों यमुना तट भरन गई जल वरजोरो मीरो
फोरी गगरी ॥

मानत नाहीं आन काङ्गकी चलन न पावै कोज
मग डगरी ।

मीहन डीठ भयो या ब्रजमें कैसे वसै यह ऐसी
नगरी ॥

२४

आज रङ्ग है री ब्रज रङ्ग है री मनमोहन मिले
मनभावन री ।

श्यामसुन्दर प्रिय मेरे डेरि आइला मेरे जियाके
जियावन रिभावन री ॥

२५

वरजोरी कहैया मोसे आय कीनो रें ।

आय अचानक रङ्ग भरी मोहे वरवश गरवा लगाय
लीनो रें ॥

हों गुरुजनकी लाज सकुच रही अक्षर भपटके
लपट लीनो रें ।

मीहनकी कवि देखत रङ्ग गई विवश भई कछु कहत
न आवै अनोखो छैलवा रङ्गभीनो रें ॥

२६

नयो होरी को खेलार होरी खेल न जाने ।
काङ्गको दलत और मलत काङ्गको काङ्गको
सुनावत ताने ॥

लाज सकुच सब डार दई है मानत न काङ्गकी
आने ।

रसिक रङ्ग रङ्ग ही में बोरो काङ्गको न पहिंचाने ॥

२७

होरी खेलन कैसे जाजं री पिया मुखसे न बोलत
मोसे श्याम ।

पौरनके सङ्ग रलियां करत है री सकुचावत मोरो
देख छाम ॥

यह गति मोरो भइली सजनी मौजसे जानत
सगरो श्याम ।

कंत न पूछत बात री मेरो धन्य सुहागिन
भयो है नाम ॥

२८

चटक चुनरिया रङ्गा दे रें मइको रङ्गा दे ।
यह चुनरो मेरे नई खोठने की साख यतनसे
बना दे रें

में तो कूंगो भेष योगिनीका लागी लगन मोरो
तुमसे कफायत टढंगी वन वन तइको लगा दे ॥

२९

कहां खेले हो होरो अजी तुम सांची कही
मन्दनन्दन सांवरे पूजों तिहारि दोज पाव रें ।

हमसों खेल कहि और सङ्ग खेले कौन नवल तिय
घर धरे पांव रे ॥

भाल मझावर अघरन अफन तीन तिलक कहां
पाए रावरे ।

रसिक रङ्ग रगमगे रङ्गमें पाग पेंचके सवारों ठांवे रे ॥

२०

सठ चल री पिया सङ्ग खेलें फाग आछे रहस रहस
गरे लाग लाग ।

यह अवसर नहीं है भूठनकी मेरे कहे तू तज वैराग
छविनायक आए तोहें मनावन सीत सराहत
तेरे भाग ॥

२१

फगुवा मांगे नन्दको छैल मोसे ।
सुन री सखी में क्या कहं तोसे इतनो बात में
पूछूं तोसे ॥

तनियां टटोलत हो हो बोलत आय जुरत है
मोरे अगोसे ।

रसिक छैल छाड़त न गैल बहियां पकर सारी
अंगिया कोसे ॥

भरवी—यत्

होरी खेलन आई है बन बन चतुर सुघर छिल
मिलके नार ।

हम तो चाहत रससों खेलन वे तो मारत
पिचकार धार ॥

बाजत वीणा रबाब मृदङ्ग डफ मुहुवर भांभ
सुरङ्ग कटतार ।

चन्दन वन्दन बूका रोरी छिरकत सबपे
रसरङ्ग डार ॥

२

सन्मुख आय यशोमतीको लालन मेरे मन को
मोह लियो ।

जात रही यमुना जल भरण को कीधों मुरली
फूंक नयो ॥

एको घरी नहीं चैन है जीको तबसे वैसे जरत हियो ।
कुलकी लाज तजे गोकुल मा सुन्दर श्यामने

दर्य दियो ॥
तन मन धन है मोहनो मूर्ति करो न्योछावर

लोक तियो ।
नाहीं तो नीच मृत्यु है वियोगिनी विन मनमोहन

नीज जियो
मोहनको हियो वश कै तुम काजिम प्रेमके मद भर
भरके पियो ॥

३

होरी खेलन नहीं आए नन्दलाल कौन नवल तिया
तुम्हें विरमाए ।

रजनी अनृत कहां जागे मोहन रहस रहस गर लाए ॥
मोतियन हार चुभै कर कङ्कण अघरन तंबोल खवाए ।
रसिकराय रगमगे रातके फगुवा दिए मन भाए ॥

४

सखी इन मोहन ने धूम मचाई ।
होरी अवसर पायके रङ्गरस वश कर डारी सब
प्यारो हमरी चूनर भिजाई ॥

५

आज सुहागकी रैन री गावो बधावा सब मिलके
सुवासन ।

गुणी गन्धर्व सब मिल मङ्गल गायो जैहों सुमन री
वासन ॥

६

कछु कहे न गए समभाय मोरे लाल हमसे
विदा मांगे यौवनवा मोरे राम ।

काहके हाथ लिखूं ब्रज पाती काहके हाथ
सन्दे शवा मोरे राम ॥

जबसे गए पिया भए हैं वाहीके किन सीतलिन
विरमाए मोरे राम ।

अब तो दर्य वेग दो प्यारे तलपत जिय वेग आए
मोरे राम ॥

ए री में तो बार बार नित्य नई होरी खेलन
पिय पे गई ।
अम्मा मीरे ऐच् फूले और फूली है लुई ।
नए नए हुम नए पल्लव नई ऋतु और तन्वी नई नई ।
नवल तिया नव पिया नव यौवन रसिक रङ्ग
पिचकारी दई ॥

का गुलाल पिया मोपै डारो ऐसो चटक रङ्ग
अङ्ग हमारो ।
भावो सद्दयां सुभे देख सेजपर चन्द्र जैसा मुखड़ा
यौवन जैसे तारो
क्याणन्द सागि सर मेरे आनन्द केलि मदन
विस्तारो ॥

अनी आई सद्दयो होरी दी बहार रो ।
अधीर गुलालके बादर छाप रङ्गकी परत फहार रो
केशर दो पिचकारो चला दे मानो बरसत मेघ
अपार रो ॥

सूही सारी मेरी बिगर जायगो मत मारो पिचकारी
हो लाला मत मारो पिचकारी हो ।
अधिक मोलकी सारी हमारो जरकशी छोर
संवारी हो ॥
कारी कामर कटि काछनी तुम्हारि कोज न सकत
बिगारी हो ।
प्रेमरङ्ग पिचकार सों भिजई चितवत वस कर
डारी हो ॥

नयन गुलाल से लाल बने हो लाली न छिपत
सलाकी सलोनी ।
कुछ गलिनमें अलिन की टोली में टोहो कपोल
मिली है मिलोनी ॥

रङ्ग रङ्गीली सी पीली पिछौरी छोर सों गीली
गुलाब कलोनो ।
प्रेमरङ्ग प्रभु परकीया मोहन हारे सो हियसो
सगाए लोनी ॥

मेरो चुनरो वनवारी भिजई ।
अब कैसे जाऊं ब्रज मोरी सजनी दधिकी मटकिया
छोम लई ॥
बहुत सही न कही यशोमती सो कौन कौन
सुतको सिखई ।
छविनायक जो रही सोई राखै जान दे जौन
गई सी गई ॥

देखो अब हीं जात है वनवारी मेरी आंखन चोवा
रङ्ग भर डारी ।
धाय धाय पकरै गर लावै बहियां पकर
अंगिया फारो ॥
राज करे यशोदा तेरो मन्दन दिनके होत है ठगवारो ।
वरज रही वरजो नहीं मानत लपट भूपट
खैचत सारी
क्याणन्द फाग रस मातो चितरातो तेरी वलिहारो ॥

रङ्ग भरे घर आए सद्दयां मोरे धन्य विरहिनीको
भाग रो ।
सब सखियन मिल मङ्गल गावो चलो हो
सुमनके बाग रो ॥
चलि के पूजो गौरी गणपति जिन मोरे दिङ्गल
सुहाग रो ।
कचन थार कुसुम केसर रङ्ग तब खेलो प्रियसे
मैं फाग रो

ऐसो निष्ठुर रङ्ग डारो कहेया मोरी अंगियामें खग
गयो दाग रो ।

अधोर गुलाल कुङ्कुमा केशर हमसे मचायो फाग रो ॥
 ग्वाल बाल सखा चङ्ग दिश घेरे केह मग जाजं मै
 भाग रो ।

गावै गूदर घर जाने दे मोहन रहौ चरणमें लाग रो ॥

१६

कासे कङ्ग मै तो जियकी हाल कीन्हौ सांवलिया
 ने बावरी ।

जा तन लगै सोई तन जानै जाको विरह को घाव रो ॥
 मेरे मन वसी सांवरी सूरत अब पति रहौ कै जाव रो ।
 विरहको सागर सूक्त नाहौ भई हं भ्रमरको मै
 नाव रो ॥

एक विरह दूजे लाज गुरुजनकी तीजे मिलन को
 चाव रो ।

नहीं रोवत नहीं हसत दुर्जन लखि सौतिन
 लगायो दाव रो

गावै गूदर उर वसहु विहारो मोई छवि भावत
 राव रो ॥

१७

होरो खेलन अजङ्ग नहीं आयो मेरे यौवनको नवल
 बहार रो ।

तब कहा करि ही प्रीतम प्यारे ज्यो अब हीं लहु
 सभार रो ॥

हम को नहीं सइयां तुमको लाज है लायो तू
 केहकी डार रो ।

सबते गयो भयो वांही के दे गयो विवश पहार रो ॥
 गावै गूदर मै तेरो कहाजं अब भरसो केह हार रो ।

ढरक जान अज हं नहीं आयो यौवनको नवल
 बहार रो ॥

१८

मैं छोटी तोड़े लाज न आवे धरवश गरवा
 लगावत रो ।

सपट भपट भकभोरो मइकी नयनसो नयन
 मिलावत रो ॥

मैं अबला तुम सुघर चतुर हो पिचकारिन
 रङ्ग चलावत रो ।

रसिक रङ्ग रस वश कर डारी फगुवा लेत मन
 भावत रो ॥

१९

हमारे कर्मगत याहो लिखी तुम करहु सौत सङ्ग
 राज रो ।

सब सखियां मिल फाग खेलत हैं नानाविध
 कर साज रो
 कृष्णानन्द तिहारी तिहारो सौं तोहि न आवत
 लाज रो ॥

२०

महिमा छाव रहौ चारो युग अवध पुरो खेलै
 फाग रो ।

सौताहरण मरण दशकन्धर लङ्कपुरी लायो आग रो ॥
 तें तीस बन्ध छूटे देवतनके आनन्द कारण शुभ
 लाग रो ।

लङ्काराज्य विभीषण दीन्हौ मिलते ही बड़ भाग रो ॥
 गावत वेद भेद रघुपति को नारद शारद नाग रो ।
 अज महेश श्री वाल्मीक सुख खग हं भाष्यो काग रो ॥
 त्रेता चरित्र कियो नानाविध ताही भजो भय त्याग रो ।
 गावै गूदर रङ्ग सेजं सियावर या रङ्ग को अनुराग रो ॥

२१

मेरो मन उरभियो बार बार होरी खेलत अकेली
 नार रो ।

जाकी इच्छा सब जगको मोछो ब्रह्मा रुद्र त्रिपुरार रो ॥
 जो कोई गए भए वांही के मार्ग रङ्ग मोहनी
 डार रो ।

खेलत हार गए मही जपर बड़े बड़े नर अवतार रो ॥
 नर वपुरनको कौन चलावै डूबे बड़े मंभ धार रो ।

गावै गूदर मन समझके खेलो फाल्गुन रूप
 बाजार रो ॥

२२

जीन नगरसे मैं खेलन निकसी वाही नगर को मैं
जांव रो ।
है वा नगर उगर बहु तेरा लखो न परे वह गांव रो ॥
जो हेरो मोड़े रामनगरमें अनाहत वाको ठाव रो ।
गावै गूदर गुरुदेव बतायो सब रङ्ग वा को नाव रो ॥

२२

इच्छाकारी प्रगट भई होरी खेलत उत्पत्ति माया रो ।
आदि ज्योति कर्तार शब्द करि उत्पत्ति तीन
बनाया रो ॥
इन तीनों विस्तार किए महिमा सब उपजाया रो ।
पति आप ही उत्पत्ति पुनि आप ही आप ही
आन लखाया रो ॥

निर्गुण ब्रह्म सगुण हो आप वेद विदित गुण गाया रो ।
आदि अन्तमें सब जग मोह्यो किन हूं अन्त
न पाया रो ॥
अक्षर ब्रह्म नाम अनन्त एक है घट घट में
लखाया रो ।
गावै गूदर यह रङ्ग अलौकिक लौकिक रङ्ग
समाया रो ॥

२४

इन्द्रादिक सुर सङ्ग लिये उमापति फाग मचायो रो ।
वृषभ चड़े शिव शोभित सुन्दर सिंहोनाद बजायो रो ॥
चमकत शिखर रविकी किरण सम लाल पुष्प
रङ्ग छाया रो ।
नारद मुनि कर वीणा बजावत सारद सङ्गुचित
गायो रो ॥
मुण्डमाल आभूषण तन्धन नन्दीगणको पठायो रो ।
सुनत खबर रश्मादिक आयी नृत्यत सबको
रिभायो रो ॥
सामवेद ब्रह्मा मुख उच्चारत आनन्द प्रेम बढ़ायो रो ।
शिवसो फगुवा लीन्हो गौरी बहुविध नाच नचायो रो
रामरङ्ग हर वर धर दीन्हो लीन्हो कर सुख पायो रो ॥

२५

होरी हो रहो है नन्दके द्वार ।
अबीर उड़त औ कुङ्कुमा मार ॥
कोज ब्रजनारी चलत नहीं गैलन गारी गावत
नन्ददुलार ।
मृदङ्ग वीणा औ ताल डफ भजनकत पिचकारन
परी धार ॥
राधा धाय आय मुख मीड़त मोहन तन
धर लीन्हो द्वार ।
श्याम देख सकुचाने मन ही मन ले गुलाल कर
कुच पे डार
रामरङ्ग प्रभु अपन रङ्ग में बोर दई सब ब्रज को नार ॥

२६

कौन स्वरूप संवारुं सखी रो मोरी आज
गमनवाको रात रो ।
जब सन्मुख होइ हूं प्रीतम सो कैसे करुंगी
मैं बात रो ॥
जो सुख कियो भयो दुःख आखर मोरे जिय
कछू न सुहात रो ।
मिलनेको आई सखी सहेली भई सइयां के
मैं सात रो
गावै गूदर मेरो नैहर छूटो अब सासुरके मैं जात रो ॥

२७

आज संदेसा आयो सइयांको मोरे करह गमनवाको
साज रो ।
नैहरमें हम खेल गमायो सासुरको बड़ लाज रो ॥
सासुर में धौं कहा सुख होइ है मेरो छूटो नैहरको
राज रो ।
गावै गूदर जो पिया नहीं राजी तो नैहर आवै
मोहि बाज रो ॥

२८

फाग सुहाग मोरे घर नित्य है भोजो हूं मैं तो
पियाके रङ्गमें ।

मो पै कोई पिचकारी न मारे लाल वसत है
मोरे अङ्गमें
सुरमट तनक उ नहीं मोड़े भावत जबसे परी हं
सुराबके सङ्गमें ॥

१८

मोड़े बोरी सोई रङ्गमें कान्हा और कीन्हों जोई
मनमाना ।
भिजवत मरुको सब छिन जाना घर करि हं
मैं कौन बहाना ॥

कौन अपना कौन बिगाना राखोंगी जाकी काना ।
दास रङ्गो है श्यामके रङ्गमें वाहो भावै रङ्ग न आना ॥

१९

मनमोहन मोड़े अपनाय लई और सबनसों
छोड़ाय लई
मनमोहन रङ्गे मोरे रङ्गमें मैं मनमोहन रङ्ग मई ॥
जान अजान जान भए दई ये कैसी आन ठई ।
नहीं जानी कछु हरि अन्तर गति दास फंसी है
आय नई

२०

जा दिन सदस्यांको देखन पद हों वा दिन रङ्ग
मचै हों री ।
पिय भैरा मैं पियाकी सजनी पिया पै जियरा
सुभे हों री ॥

रङ्ग वही रङ्गरेज वही मैं तो सुरङ्ग चुनरिया
रङ्ग हों री ।

भैरे तो जिय में ऐसी आवत है लपट भपट गरे
ले हों री ॥

बालनकी खेली जो बनै हों अङ्ग विभूति रमै हों री
छानानन्द यही आशा चित्त हर्षि धाय उर ले हों री ॥

२१

फाल्गुन का मस्त महीना ।

अबीर गुलालके बादर छाए वसन रङ्गाय सब ही
को दौना ॥

हो हो हो कर गारी गावत कोइ काइ को गार्हीं
सखी चीना ।
कोई नाचत कोई मृदङ्ग बजावत कोऊ डोलत है
रङ्ग में भीना ॥

२२

चले जावो लला अब हां रे अबीर गुलाल मो पै
जिन डारो ।
भर पिचकारी भैरे मुखपर डारो सारी अक्षर फारो ॥

२३

श्याम कैसी सुरलिया बजाई है ए हो ध्वनि सुन
उठ धाई ब्रजकी नार ।
सुरली बजाय सबको मन मोहो मारी केसर
पिचकार ॥

२४

आयो वसन्त कन्त घर नाहीं कैसे के चैन आये
मोरी गुइयां ।
एक वन फूल सहस्र वन फूले कोयल कुहुक सुनाये
मोरो गुइयां ॥

भैरवी—तिताला

साधो खेल लो जगमें होरो राम नाम है सांचा ।
धरणी जल तेज पवन आकाश ए पांचो पचीसो
मिलके जांचा ॥

काहेको भ्रम भूलत हो भूठ तजो सब वाचा ।
जलसे उपजै जलसे फूलै कुबुद्धि तजे यह कांचा
कहै कबीर गूं गीका सपना गूं गा होय कर वाचा ॥

भैरवी—थत

गोरी आया होरीका खेलार री ।
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गकी परत फुहार री
छानानन्द हर्ष उर बाढ़ो नव तनमन दोन्हों
मैं वार री ॥

२

ए हो मन्दनन्दन जू ठोठ लङ्करवा सखी मोरी
बहियां मरोदि री ।

सोतन के वे शरण गए हैं सखी मोरा हरवा तोरे री
उनकी चुनरिया रङ्गमें भिजोई मेरी तनियां
टटोरे री ॥

ए हो निपट ढोठ गिरधारी लाल ए री मुझे
रङ्ग ही में बोरे री ।
रसिया नेक कहा नहीं माने कर वरजोरे री ॥
अबीर गुलाल मलत मुख सखी री टुक नयन
जोरे री ।

ख्याल खुशाल करत अलबेला नन्द जूका किशोरे री ॥

ए हो मनाय लेत गोरो को सावरो सन्मुख
अबीर चलावे ।

सङ्ग मोरे सोवत अङ्ग ही छिपावत अपनो
भेद न बतावै
अङ्गुरी सैन पिया मोहे जगावै वरवश गरवा लगावै ॥

कहि दीज्यो हमारो राम राम जो काङ्ग की
मिलहिं श्याम ।

वगर नगर और हारे ही हारे होरोके खेलनकी
धूमधाम ॥
उमड़े यौवन पिया मानत नाहीं कैसे के राखूं मैं
धाम धाम ।

भूख पियास राधिका छाड़ा ध्यान तिहारो अष्ट याम
कृष्णानन्द अरज इतनी मोरी क्यों छोड़ी प्रभु
ऐसी वाम ॥

भैरवी—तितारा

हो होरी खेलदा कांवर कन्हाई ।
कित बल जावां अनौ जाने न पह्यां बि भर
पिचकार चलाई ॥
लै अबीर असी मुख डारदा कुच धर कण्ठ लगाई ।
हा हा करे दियां मन सकुचे दियां मैं नू अकेली पाई
रामरङ्ग मोहन मैड़ी गाल सुन कर धर रंगमें
भिजाई ॥

हो सांवरिया भर पिचकार चलाई ।
कोटि उपाय कियो री सजनो तब हूं दर्द न आई ॥
कुच मुख करते धर लियो मेरो ग्वाल सों गारो गवाई ।
उरहन देन चली री नन्द पै यशोमतो आगे सुनाई ॥
मगमें चली भेंट भई श्याम सो अङ्गमें भर समुभाई ।
रामरङ्ग दोऊ रङ्ग एक भए घरको सुध विसराई ॥

डफ ताल बजावै होरो खेले कन्हाई हो नव
ग्वाल बाल ।

मोहन पीत वसन तन पहिरे उर मोहे वनमाल
पूर्ण चन्द्र बनो मुख जाको कंस को है यह काल ॥

ए सखी आय भुलाई हो ।
दूरत निरखत है नन्दनन्दन देखत चली पराय
भपट श्याम धर लोन्हीं मन ही मन पछताय कुच
धर लाल बनाई हो ॥

गोरस खाय मटकी धर फोरत कंसको करत पुकार हूं
मैं अबला ककु जोर न मेरो आखर जात गंवार
और अबीर उड़ाई हो ।

सङ्ग सखा मिल इत उत देखत कण्ठ सों कण्ठ लगाय
हा हा करत है चरण परत है कोई न होत सहाय
रामरङ्ग प्रभु लपटाई हो ॥

होरो याङ्ग ब्रजमें नन्दनन्दन जू खेलत ।
बाजत बाजे बहुविध साजन भर भर भर रङ्ग मिलत ॥

पिचकारी मारन आई रे हो सांवरो सलोनी
पिय प्यारी ।
सांवरो सलोनी गोरी बन बन आई मैं अपने
साहब पर वारी ॥

नन्द महरवाके सुघर लाल मो को गेंद की चोरी
सगावत री ।

कुच तनियां और अङ्ग निहारत तापर घात
लगावत री ॥

लागो रहत सघन वनकुञ्चन जब देखत मोहे
आवत री ।

ठाढ़े देखत है सब ब्रजवासी ता बिच आपत्ति
मचावत री

गावै गूदर में तेरी चैरी काहे को हास करावत री ॥

८

कौन खेलाए साजन विन बावरी ऐसो डोलूं
हरि विन होरी ।

तेल फुलेल सभी तज दीन्हों पान खान विसरो री
अब गिर दीन्हों सद्गयां तोरे वश मैं जावो तो जावो
रहो तो रहोरी ॥

९

होरी के दिनन तोको साज न आवै
मो को वर वश नयन लगावै री ।
एक तो रही करहैयांकी पातर उमंगे यौवन
सतावै री ॥

१०

कहा कही वाको सब नारी गणमें ए रो मेरे
पिचकारी मारी चटक सो ।
एक तो टीठ और पैड़ा न छोड़े हो जो डरो मैं
वाके अटक सो ॥

कुछ मुखसे कहीं तो निपट लजात है और अक्षर
गहत है भटक सो ।

हा हा करे और हो हो अचपल फिरके नाचै दिया
और ही मटक सो ॥

सिन्धु—भैरवी

मेरा हरवा चुभि चुभि जाय होरो मैं ना खेलौंगी
फाग ॥

अक्षर पकर भोरा मुख मल लीन्हों नेक न आई लाज ।
अबीर गुलाल मख्यो मुख मेरे कृष्णामन्द ब्रजराज ॥

पील—भैरवी

अतर गुलाब और चोवा चन्दन मेरे मल मल
जात वदन में ।

गड़े पकरूं तो हाथ न आवै छिप छिप जात कुञ्चनमें ॥
लपट भपट बहियां गड़े लीन्हों चिपट जात
छैला तनमें ।

वरज रही वरज्यो नहीं मानै कहा जानूं क्या
वाके मनमें ॥

हा हा करत हों पदयां परत हों पिचकारी
न मारो अंगियनमें ।

अचपल होके लागो ही आवै जब देखूं तब ठाढो
अङ्गनमें ॥

१

होरो खेलत मन्दमन्द री भानुसुता प्रिया
चन्द्रवदन री ।

भोड़ल अबोर गुलाल विविध ले अतर गुलाब
चन्दन री ॥

पिचकारिन की मार परस्पर देख रतिपति
लज्जित मदन री ।

वृन्दावन मध्य खेल रथो है कुञ्चभवन वन सघन
सदन री

जानकीदास रङ्ग ब्रज छायो वोधिनि वोधिनि मुख
सदन सदन री ॥

२

लाल गाय गाय ले ले नाम इमार मो को गारी
देत सबनमें ।

जात रही गोकुल दधि बेचन जब देखूं तब वन घनमें ॥
और सखिन सों मुख हू न बोलै मोरे लपट जात

अङ्ग अङ्गनमें ।

कौन उपाय करों ब्रज आली ऐसी वसो वाके
तन मनमें

गावै गूदर सास मनद चवाहन भठ सांच लगावै
भवनमें ॥

अब जान न पड़यो हो लला तुम आन पड़े
 वश मेरे लला ।
 गारी मैं दूंगी दिवाजं सबनमें मुख मोड़ूंगी
 मैं तेरे लला ॥
 पिचकारिन मार गए कुच्छनमें कलका बदला
 हरे लला ।
 कुन्दनदास प्रभु पकर लिए है मन माने फगुवा
 देरे लला ॥

होरी खेलत हो हो रे लला बहियां न गहो बहियां
 न गहो तुम जावो चला ।
 काङ्क को लपट और भपट काङ्क को पकरत
 हो जू चपला ॥
 अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर पिचकारन मार दई
 है भला ।
 नन्द महरके ठीठ लङ्गरवा सुन्दर रूप देखाय कला ॥
 आज रङ्ग होरी मा रङ्ग है साजन मिला बुरा भला ।
 निजासुहान भीलिया जग उजियारा मंह मांगी
 बर मला ॥

पिया मसि आंख छिपाए कहा होत ए रो तेरो
 फेल रहो कजरा ।
 पिया नाशर को मिल आई जो तुम टूट गई
 दुलरो हार गजरा ॥

को खेलै तो से होरी बहियां पकर भकभोरी लला ।
 वरज रही वरजो नहीं माने वरवश मलत
 सुख रोरी लला ॥

यशोदा लाल ब्रजराज साडसो होरी खेलन
 मोसे आयो री ।
 कर लोने कछन पिचकारी केशर रङ्ग भरायो री ॥

अबीर गुलाल लिए भर भोरो चोवा चन्दन
 लिपटायो री ।
 ख्याल करत अलबेलो मोहन रसिया खेल कहायो री ॥
 फाल्गुनकी ऋतु आई सखी होरो खेलों गो
 कुच्छविहारी से ।
 केशर रङ्ग रंगूंगी पोताम्बर फगुवा लूंगो
 गिरिधारी से ॥
 चोवा चन्दन लिपटाजंगो अङ्गमें केलि करूं
 वनवारी से ।
 ख्याल खुशाल मन भाए फगुवा लूंगो खेल
 खेलारी से ॥

अनियारे घनश्यामके नयन रङ्गमें भरे रतनारे री ।
 निरखत लगत छके रो तरसके उमंग भरे कजरारे री ॥
 चितवत चित्त चोराय लेत हैं चञ्चल चपल अपारि री ।
 ख्याल खुशाल लोभाय लियो मन नख शिखते
 सुकुमारे री ॥

आज होरी खेलै पिय प्यारी री ।
 अबीर गुलाल को धूम मची है रङ्ग भर मारी
 पिचकारी री ॥
 बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ गारो देत सब नारो री ।
 जानकोदास निरखि या छवि पर बार बार
 बलिहारी री ॥

खेलन आए नन्द गांवते रङ्गभीने वरसाने ।
 मृगमद रङ्ग अरगजा चोवा नरनारो सब साने ॥
 विन काजर कजरारी अंखियां चढ़ीं मदन खरसाने ।
 छायाजीवन लक्ष्मीरामके प्रभु प्यारे जो धर धर
 धरसाने ॥

तक तक मारै पिचकारी मोरो अंगिया रङ्ग सों
 भर डारो ।

वरजोरी मसत गुलाल वदनमें भोज गईं तन सारी ॥
 देखत पुरजन गुरुजन सब ही मानो विनती हमारी ।
 अक्षर पकर बहियां भक्तभोरी तापर देत हो गारी ॥
 अबीर उड़ावत धूम मचावत गावत दे दे तारी ।
 कृष्ण रसिक प्रभु होरी खेलत गोकुल गैलमें न्यारी ॥

१४

केशर को पिचकारी भर मारी मेरे लग लग
 जावै तनमें ।
 अबीर गुलाल धीर चोवा चन्दन ले मस मस जावे
 वदनमें ॥

मेरे लपट भपट कर बहियां गड़े लीन्हों चिपट
 गयो मेरे अङ्गनमें ।

जहां देखूं तहां आगे ही ठाढ़ो घर घर ब्रज
 वन घनमें ॥

लपक भपक मेरे पाछे अरो है भाग जात है सदनमें ।
 कृष्ण रसिक सङ्ग लागो ही आवै होरी खेलावै
 फाल्गुनमें ॥

१५

छवि स्वामीकी रङ्ग अनादरी किये बहुत निखेद रो ।
 सूत्रकारकी वाणी सुनकर अजमुख भाष्यो वेद रो ॥
 पायो न आदि अन्त विन वाको ज्ञान ध्यान
 कर भेद रो ।

गावै गूदर सब थाके खेल कर रह गयो भेद
 अभेद रो ॥

१६

मनमोहन चतुर खेलार बन बनके समझ क्यों न
 जइये रो ।

बनके जइए प्रिय को रिभइए तब मन वाको
 लुभइए रो ॥

सुघर न होय सुघर है जइए ना तर क्रूर कहइये रो ।
 अशरफ़ पिया मेरो अति हो रङ्गीलो वा सो प्रीति
 लगइए रो ॥

१७

अपने रङ्गमें रङ्ग ले रङ्ग रङ्गीले खेल छवीले ।

निज।सुहीन श्रीलिया मङ्गवृष इलाही प्रेमप्रोति
 प्रसङ्गीले ॥

भैरवी—यत्

उमड़े यौवन पर रङ्ग न डार ए हो मने करूं
 तोसे बार बार ।

यह विरहन भई नौदकी मातो यौवन भयो तेरे
 गरे को हार

गावै गूदर पिया वेग खबर ले सूखे पत्र नहीं
 जुड़ेंगे डार ॥

२

नयन विरहिया तेरे पिया रे रङ्ग रस वश कर लीन्हों
 जियारि ।

अंधियारे कारे कजरारे अञ्जल रतनारे हैं मतवारे
 बांक बख्श कहै यदुरायो सो विन सइयां पियारे
 सुरत विसारे ॥

२

पिया को मनाजं मैं पइयां परीगी करूं योगिनको
 भेश रो ।

गेरुवा वसन भस्म तन ब्याजं शीर्ष बढ़ाजं मैं केश रो ॥
 पिया वसै हिय में जानत नाहीं टूटू जङ्गल परदेश रो ।
 गावै गूदर पिया अपनो मैं पायो जब गुरु दयो
 उपदेश रो ॥

भैरवी—तिताला

जो यह फाग रथो भवसागर अजब खेलारी को
 खेल रो ।

नटवा एक कला बहुतेरी रङ्ग सबन में मेल रो ॥
 समझ बूझ मन आदि अन्त तक राख्यो न कोई
 अडेल रो ।

गावै गूदर जो जियके डरे नहीं सोई सोई रङ्ग
 बिच डेल रो ॥

२

श्रीगणेश अहिवात दे हमको फाल्गुन पियको
 मनावत रो ।

कचन थार सुगन्ध पुहुप से नित्य सठ देव
मनावत री ॥
सोनेको हुन धरो शिर ऊपर धूप दीप मन भावत री ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर ताल नृदङ्ग
बजावत री
कहे गूदर सुनी गौरीसुत मैं तेरे यश नित्य गावत री ॥

सुघर पिया हो रसिया होरो खेलन मो पै आए ।
सब ही वसन रङ्गाए तनेमन रङ्ग बनाए ॥
गोप भ्वाल वार ब्रजके सखा लिए अबीर गुलाल
उड़ाए ।
चावा चन्दन और अरगजा केशर रङ्ग छिरकाए ॥
जंगला—भेरवी
होरोके खेलैया भर भारी पिचकारी हो ।
सुरङ्ग चुनरिया सब ही बोरो ले गुलाल मुख
डारी हो ॥

होरो के खेलैया मोसे कोन्हीं वरजोरी हो ।
हौं यमुना जल भरन जात रही वर वश बहियां
मरोरी धर भकभोरी हो ॥
कचनकी पिचकार केशर रङ्ग भर छिरकत
मेरी ओरी हो ।
चीर भटकावत टिग टिग आवत प्रेमरङ्ग प्रभु मांजि
मो सौं दोज करजोरी हो ॥

रे खेलवैया स्वामी आज मैं पायो नन्दकमार
ऐसो कौन देहो रङ्ग डार !
अबीर गुलाल केशर कुसुम रङ्ग भर भर अपने हार ॥
ऐसी होरी खेलो मोहन से कर गहे करो विहार ।
सरभियो सखी मानो तलाहुमन में हून मोहे
नाच नचायो बहु बार ॥
सोई सोई नाच करो मोहनके अबके दाव है हमार ।
जाने न पावै नन्दमहर को सब सखियन को
करो सुहार ॥

दो कर मैं बांधो मनमोहनको प्रेम मोहनो डार ।
फगुवा लीहु देहु रङ्ग भरि भरि डार सुमनको हार
गावै गूदर प्रभु पद गहे लीजे जीवन तन मन सुधार ॥

श्याम मोहे भोर हो पान जगाई ।
कहे न सकत कहु लाजको मारो नई नई तान सुनाई
कृष्णानन्द निरखि प्रभुको मुख पानन्द उर न समाई ॥

हमरो उमङ्ग चाहे होरी खेलनको सखो तेरे यौवन
ने धूम मचाई ।
सोती थी मैं अपने मन्दिर में मोहे विरहने
पान जगाई ॥
सब गोपिनमें नाचत राधा कान्ह ने सुरली बजाई ।
जो लागन में बांह पकरि है दूंगां मैं राम दुहाई
अपने सइयां की मैं बालो भोला अंगिया कहाँ
मशकाई ॥

रे कनैया गुलाल मले और कुच पकरत है तेरे
जिय में कपट ।
नयन सैन करे और अङ्गुरी नचावै कहा होत है
लाख मटक ॥
तरुणो बारी नारी आवै ब्रजमें सबको देखावै
अपनी चटक ।
राज करो ऐसो खेल यह अचपल आपी खेले
और जावे सटक ॥

मोरे सब अङ्ग भीजे मारो सइयां पिचकारी ।
अति बारी सुकुमारो नवल तिय अपने सइयां की प्यारी ॥
सिन्धु—भेरवा
बीरो डोले डगरमें तुम समभत नहीं गंवार ।
फाल्गुन के मिस उर अक्षय दे यौवन भार संभार ॥

सखी री आज डगरमें खिलंगो पिय से फाग ।
पिया मेरा मैं पिया को रे सजनी धन्य धन्य
मेरो भाग ॥

१
री बीरी पिय को मनाय ले फाल्गुनके दिन चार ।
प्रिय चतुर तू निपट अयानी वीतो जात बहार ॥

२
हमरी सुध बासम अज झं न लई री ।
आए वसन्त कान्त घर नहीं तो यौवन जात दई री ॥

३
मैं तो सगरी भिजोई सङ्करवाने छैलवाने डारो
गुलाल री ।

चोवा री चन्दन और अरगजा अबीर
उड़ावत लाल री ॥

भंभीटी-भैरवी—चौताला

सुन्दर वदन पे सोहत लाल गुलाल मदन गोपाल ।
सुकुट सटक मृकुटी मटक कुण्डल भलकन
दृगन चमकन कटि पट पीत बजावत सुरली तान
रसाल ॥

बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग मुरचङ्ग औ जलतरङ्ग रङ्ग
छिरकत हर्षत ब्रजवधु डार दई उर सुमन वनमाल ।
मन इच्छा सो फगुवा लोनों कीन्हों सब भातो
नयनन अस्त्रन आज पकर वैवश कीन्हों नन्दलाल ॥

२
अधर धरे री वांशरी नृत्यत मण्डल झाम ।
धनि सुन गोपी भुक भूमत बढ़ो अधिक तन काम ॥
ले गुलाल मुख मीड़त मेरो देखत सगरी वाम ।
चर्च रही ब्रजकी वनिता सब जाय कहोंगी धाम ॥

जङ्गला—भैरवी

फाल्गुनके दिन चार खेल ले होरी ।
इस यौवनका मान न करिए यह यौवन दिन दो री ॥
रत तें आए कुंवर कन्हैया उत तें राधा गोरी ।
सखी सखन को सङ्ग ले दोऊ खेलत छण किशोरी ॥

भंभीटी-भैरवी—तिताला

गोरी अंगिया तोरी सोधे में बोरी ।
नयन तिहारि कटाक्ष सगत हैं अधरन पर
मोतियनकी जोरी ॥

चन्द्र सो वदन तेरो रो गोरो होरी की ऋतु घोरी ।
कटि केहरि कदली सी जङ्गा औ श्रीफल कुच
दोऊ बनो री
रसिक रङ्ग को रस वश कर लोनों चितवन
दृगन ठगोरी ॥

१
रङ्ग में बाट चलत यशोदाके लालन बोर दई
मोरी सारी ।
आवत घी मैं अपने घरते मिल गयो मोड़े अचानक
आरी ॥

सागर रङ्ग बनाय सुहृन्मत बहियां पकर दे मारी ।
सारीके बदले सारी लेजंगी और देजंगो गारो ॥

२
बोर दई अंगिया मेरी रङ्गमें ।
धर बहियां भकभोरी मोरी रस वश कर लई
अपने ठङ्गमें ॥
गारी गावत नयन नचावत पिचकारी भर
मारी अङ्गमें ।
चन्दन वन्दन अबीर गुलाल ले वरजोरी मुख मीड़त
रसरङ्गमें ॥

३
ए नन्दनन्दन ब्रजराज कुंवर सो एरी मेरो
बाष्ठा अधिक सनेह ।
सब सखियन मिल आई महर घर मोहन मांझो
दो चार दिना होली को अवसर घटे तो दूनो लोह ॥
अबीर गुलाल चन्दन वन्दन ले केशर कुङ्कुम
गालन देह ।
रसिकराय को रस वश कर लियो मनमान्यो
फगुवा लोह ॥

४
बली जात मदमाती गोरी ।
आगे नाचत कान्हर प्यारि पीछे नाचत राधा गोरी ॥

बाजत ताक मृदङ्ग चङ्ग रङ्ग वीचा रबाव वांगरी
भोरी ।

भरत परखुर सखियन मोहन बलिहारी बोलत
हो होरी ॥

होरी खेलत ब्रजराज आज वनकुञ्ज में ।
अम्बवा मोरे वन घन फूले अमरन पंक्ति
कोयलिया बोले रसिक आनन्द पुञ्ज में ॥

बसा जा रे कनैया मैं गारी देत हं काहे को
खड़ा मोरे तीर रे ।

भर पिचकारो मेरे मुखपर मारी आखर जात
अहीर रे

छापानन्द रहत अलबेलो काङ्ककी होर न पीर रे ॥

मनमोहन ने मेरी अंगिया रङ्ग भर डारो ।
इस अंगिया में लाल लगे हैं मोतिन लगे है भारी ॥

तोरे लला ने मोसे अचानक प्रीति करो रे ।
प्रीत करो कुछ रोति करो रे ॥

हो यमुना जल भरष जात रही शिरपर गागर
रङ्ग को भरी रे ।

हृन्दावन की कुञ्ज गलिन में हंस हंस बहियां
आन घरी रे ॥

ऐसो ठीठ लंगर मनमोहन चोलिया टटोलत
घरो घरी रे ।

छापानन्द भई मैं बावरो खड़ो पुकारत हरी हरी रे ॥

मनमोहन वनवारी सांवरो होरी को छैल बग
रङ्गो री रङ्गमें ।

आलबास सङ्ग लिए होरी गावै उत राधे सखी
लिए है सङ्ग में ॥

सांवरे ने मरोरी गोरी बहियां मोरी ।

मेरो रङ्ग मेरी पिचकारी और अबीर गुलाल
की भोरो ॥

कर भकभोरी छोनके हंस हंस और सखियन सो
खेलत होरी ।

कारे काहें कहु बन नहीं आवै घर सो निकसी थी
सासको चोरी

नहीं तो वज्रहन ऐसो रिभावती जात भूल
बाकी वरजोरो ॥

मैं अपने मोहन सो होरी खेलौंगी बनाय बनाय ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर रङ्ग बरसाय बरसाय ॥

कान्हा कारी कमरिया तो पै कौन रङ्ग डारो ।
सुरङ्ग चुनरिया हमारो भिजोई तुम्हरो कहा बिगारो ॥

रसिया होरी खेलन मोसे आए ।
रंगे वसन अङ्ग लगत सुहाए चौवा चन्दन लिपटाए ॥
अबीर गुलाल उड़ावत गावत ऋतु रस छकन छकाए ।
ख्याल खुशाल कारन चित चाहत यौवन उमङ्ग
उठाए ॥

नन्दराय को कांवर लाइखो भयो री अनोखो
खेलारी ब्रजमें ।

रङ्गत केशर रङ्ग अबीर लगावत करत फिरत
मतवारी ब्रजमें ॥

होरी खेलन आई सब ब्रज गोरियां ।
कोई कर लिए कश्चन पिचकारी कोई लिए
भर भर रङ्ग कमोरियां ॥

कोई लिए अतर अरगजा केशर कोई लिए कुङ्कुम
चन्दन रोरियां ।

कोई लिए अबीर गुलाल सखी कर कोई चतुर
कोई लागत भोरियां

कारत श्याम श्याम रङ्ग मिलके ब्रजकुञ्ज में मिल
एक ठोरियां ॥

१०

श्याम तेरे देखन की मोरे नयनन बान परी ।
मोहनौ मूर्ति निरखत हारी चितवन नेह भरी ॥
अब चित चाहत केलि करो ब्रज कुञ्ज कुञ्ज सगरी ।
ख्याल खुशाल मदनमोहन प्रिय निज वश प्राण करी ॥

१५

अभी मन मेरा मखी री मनमोहन मोह लिया ।
रूप मोहनौ डार ठगौरी चित्त वश कियो हिया ॥
कहा री करुं कहु कहत न आवै क्या जानूं
कहा किया ।
ख्याल खुशाल देखाय प्रीति को छकन छकाय दिया ॥

१८

होरी माच रही है आज नन्दनन्दन जू के द्वार ।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत दै तार ॥
भर भर भोरी गुलाल उड़ावत रही न काह संभार ।
आवो सबै मिल होरी खेलै यह फालगुन दिन चार ॥
एक और भांभ उफ बाजत और मुरली भनकार ।
एक और तरुणी और बारी गावत दै दै तार ॥
ऐसी धूम मची है ब्रज में होरी होरी पुकार ।
अबीर अरगजा चन्दन वन्दन केशर की पिचकार ॥
अम्बर भिजोवत काह को न मानत ऐसे लङ्कर
बट पार ।

काह को भपट और लपट काह को काह को
देत हैं गार

सूरदास प्रभु फागु रची है बार बार वलिहार ॥

२०

हो मृगनयनी चलो होरी खेलन को ।
हुन्दावन में खेल रथो है उघर उघर रङ्ग मेलन को ॥
मनमोहन सोहन हैं रसिया ता सों छाड़ी मान
उठो मेलन को ।
छथ रसिक को रस वश कर लो छाड़ देहो सब
फैलन को ॥

२१

दोज सुघर लाल होरी खेलत नौके समाज ।
इत श्रीराधारारणो गोरी उत सांवरे ब्रह्मराज ॥
नाना वसन आभूषण पहनके युगल अङ्ग छवि छाज ।
राजत है गौरश्याम अङ्ग द्युति कोटि कोटि रतिराज ॥
गोपो गोप सब आए बन बन विविध मण्डली साज ।
चित्त उमङ्ग सब गावत नाचत बाजत एक खर साज ॥
डारत रङ्ग गुलाल उड़ावत नैक न आवत लाज ।
कुलकी कान मान गुरुजनकी मन चित्त सों
गई भाज ॥

लखि लखि हंस हंस करत परस्पर मनमाने
सब काज ।

नर नारी सब यह सुख विलसत कोज अटा
कोज छाज ॥

है सुरनी सिर मन्दिर मोरी है देव शिरताज ।
दासी दास हिय उर निरन्तर यहि छवि सों विराज ॥

२२

मोहे भोर ही जगावत रे काड़ेको पानके ।
जिन सखियन सङ्ग रैन गंवाई आशकू वही
जावो जानके ॥

२३

हाथ मटुकिया रङ्गकी भरी रे सद्ग्यांकी बाट देखों
कब को खरी रे ।
उनहीं के रङ्ग में भर पिचकारी मुख पर मार
दा घरी घरी रे ॥

२४

कान्ह रङ्ग डार दियो मो पर मोर सास सुने
देहे गारी ।
मैं तुमको पहंचानत नाहीं स्वामी सुने मोहे
मारि अनारी ॥
ऐसे लङ्कर तुम लाला काहे बिगारी सारी ।
छथ रसिक मन भायो अब तो मैं तेरे वलिहारी ॥

भैरवी—तितावा

रे कन्हैया सांवरै मोहे रङ्ग भर डारी ।

भर मारौ पिचकारौ केसर रङ्ग सुरङ्ग चुनरिया

बिगारौ ॥

सङ्गकी सखी सब दूर सटक गई हा हा हा कर डारी ।
कृष्ण रसिक ने रस वश कर लीन्हों गावत दे दे तारी ॥

२

रङ्ग डारी भंगिया भीजो चुनरी अब कैसे

घर जाऊं कन्हैया ।

सास ननदिया और जेठनिया हंसा करेंगे

नरमारो रे देया ॥

सखी सहेली कोज टिग नाहीं वरवश मोरो

बहियां मरोरो रे वेया ।

कृष्ण रसिक रस वश कर डारो अब तो छोड़

लागूं तोरो पैया ॥

३

बाला पर नहीं कर रे मोहे छाड़ दे मोहे जान दे

यमुना जाके घाट ।

हीली में तुम धूम मचाई गारो गावै नचावै लै काट ॥

अगर बगर के लाग सुनत है मोहे सास ननदी नाट ।

सङ्गर ठोठ बनवारो सांवरै रोक रङ्गो मांभ बाट ॥

४

रो ग्वालनी खेलतमें मेरो गेंद क्यों लई है चुराई ।

ग्वालबाल सङ्ग खेल मन्थो तै भंगियामें डराई ॥

सपट भपट बहियां गहे खान्हीं एक गई दो पाई ।

अबौर गुलाल मसो मुख रोरो पिचकारिन सी

भिजाई

कृष्णरूप हो गई री ग्वारन सुधबुध सब विसराई ॥

५

श्यामसुन्दर ब्रजमोहन प्यारे होरो खेलन आए हैं ।

अबौर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग

छाप हैं ॥

चन्दन वन्दन बुझा रोरो सब थारन में भर लाए हैं ।

सखी श्याम को श्याम सखिन को ले ले सुख

सपटाए हैं ॥

वीणा सटङ्ग सुरचङ्ग डफ बाजत होरो राग

जमाए हैं ।

गोकुल महावन श्रीग हृन्दावन ब्रजमें धूम मचाए हैं ॥

हो हों कर बोलत सब डोलत आनन्द उरन

समाए हैं ।

सुर नर मुनि सब देखत ठाढ़े सुधबुध सब विसगाए हैं

कृष्णरूप अनूप महा कवि निरख सब हो सुभाए हैं ॥

धूम—भैरवी

मोहे गरवा लगावै रे अकेली जानके ।

भौह कमान नयन सृगलाचन तक तक मारत

वानके ॥

२

डगर मोरो रोके कन्हैया श्याम तोहे मारुंगो

संनन में ।

सुन री सखी में का कङ्कं ता को गारा दे गया

वेनन में ॥

३

मोहे होरो खिलावे लाल मनमाहन ।

भर पिचकारा मुखपर मारं अबार गुलाल लगावे

लाल मनमाहन ॥

गारा—भैरवी—तितावा

ऐसो खेलारी रसिया मोरा होरा में करत है

वरजोरो ।

आप खिले और मङ्गको खिलावे बहियां पकर

मोहे रङ्ग में बोरे और कहे हरि हो हरि होरो ॥

ब्रजकी सखी सब बन बन पाई मनमाहन घर

मचा है होरो ।

हाथ लिए पिचकारो प्यारो अबौर गुलाल मले

मुख रारो ॥

२

रस नाहीं रे बालम बहुत दिनन को थोरा ।

जो तेरा जी नहीं माने बालम खोल चाली मारा ॥

सखी री खेलों पियासे मैं फाल्गुनके दिन चारो ।
पिया मारा मैं प्रियका री सजना सरया मिरा
प्राण अधारो ॥

सांवरे ने मगमें जात नन्द जूके लाइलेने रङ्ग भर
मारो पिचकारो ।
बरज रङ्गी वरण्या नही माने बहुविध से समभाय
वर वश ही मेरो बहियां मरोरत ऐसे निपट बनारो ॥

नन्दमहर जूके सुघर कन्हैया सो मैं तो उनहीं सो
रङ्ग मचाऊंगी ।
कृष्णानन्द सोहाग फाग को हर्षि श्याम सङ्ग
लाजंगी ॥

कंकोटी-मेरवी—तिताला

गोरिया होगिया खेल रो ले पिय सङ्ग कर कर प्यार ।
नन्दनन्दन तेरे हारे आए भर ले रङ्ग पिचकार ।
भाग साहाग तिहारा रो भालो घर बैठे आए है
मुरार ।

कृष्णरसिक रसवश कर ले रो अबीर गुलाल को डार ॥
कैल मेरो अंगिया में पिचकारो मार गयो ।
लपट भपटके बहियां गहे लान्हीं अचरा पकर लयो ।
होरो के मिश पाय के प्यारे जो तुम कहो सो सयो ।
कृष्ण रसिक अब छाड़ दे प्यारे जो कुक भयो
सो भयो ॥

क्यों भर मारी पिचकारो बे हैला ।
सुरङ्ग चुनरिया सब हां भिजोई ता पर दर्ई है
गारो बे हैला ॥
सङ्गकी सखी सब दूर निकस गई हा हा हा कर
हारो बे हैला ।
कृष्ण रसिक सब रङ्ग में बारी अपने वश कर डारो
बे हैला ॥

सांवरा सखोना मिरा प्यारा बे होरो खेलन
मेरे घर आया बे
गावदा बजावदा धूम मचावदा साडाँजिय
ललचाया बे ॥
अबीर गुलाल उड़ावदा आवदा सब सखियां दे
मन भाया बे ।
कृष्णरसिक रस रङ्ग दे नालो रइस रइस गर
लाया बे ॥

होरो खेल ले हरिके सङ्ग प्यारो मान न करिए ।
मदनमोहन सोहन तै पायो चरण कमल
चित्त धरिए ॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग भरिए ।
कृष्णरसिक को रस वश कर ले चरण जाय तुम परिए ॥

होरो को कैल बन रङ्गो री रङ्ग में ।
मनमोहन ब्रजवासी सांवरो इत ब्याल बाल
लिए होरो गावे उत राधे सखी लिए है सङ्गमें ॥
ताल पखावज आवज मुरलो घोषा नृदङ्ग रबाव
गावे सङ्गमें ।
रसिक रङ्ग ब्रज धूम मचाई खेल मन्थो भारो
भीजे अङ्गमें ॥

मैं अपन मोहन सो होरो खेलौंगी रङ्ग बनाय बनाय ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर रङ्ग बरसाय बरसाय ॥
लपट भपट मोहे पकर लान्हीं है कलका
बदसा चुकाय चुकाय ।
रसिक कैल सो फगुवा लूंगी पौताम्बर लेहुं
छिनाय छिनाय ॥

सब ही छाड़ मोही रंग में भिजोई आज कान्ठ
होरो खेलत दिया ।

खाज तजो सब जगकी रङ्गीले कौन घरा याको
नाम कन्हैया ॥

८
होरी खेलै मनमोहन खेलवा ब्रजमें सखी ऐसो
धूम मचो है ।
केसर रङ्ग लिए फिरत रङ्गीले कोऊ न ग्वालि वाके
रङ्ग में बचो है ॥

१०
मनमोहन सो तेरी अखियां लगी होरो खेल ले
गुनर बाल ।
फोंट अबोर गुलालको भर ले तेरे घर आए
मदनगोपाल

कुसुम केसर घोरके मल ले रसिक रङ्गीलो ग्वाल ।

११
प्यारो तेरे नयन दी पिचकारियां ।
तन मन प्राण सब हो भिजावत गावत यश
सुकुमारियां ॥
तोहो ते होरो रहत वृन्दावन मूल फूल फल डारियां ।
सुन सुदु वचन साल ब्रज जीवन भर लोन्हों
अकवारियां ॥

१२
अब हो जिन लीजे पिचकारी ।
कांजी लाज बड़नको तेरे अङ्ग अङ्ग पोताम्बर
ता में दूर गहो विहारी ॥
आवन दे आगे लागे जब तोहे भरष सुकुमारो ।
कथादास हित फेर पाछे हूँ भर लीजे अकवारो ॥

१३
सखी भेरो मन डुलसानो वसन्त बहार आई ।
कोकिल कंजत भ्रमरन गंजत अंबुवा मोराई ॥
अबोर गुलाल कुसुमाकेसर पिचकारिन रङ्ग छाई ।
टैलू फूले और फूले कुसुम द्रुम कण्ठ रसिक पाई ॥

१४
ब्रज में धूम मचो होरी खेलै नन्दको लाल ।
घर घर तें वनिता सब आई अबार लिए भर थाल ॥

कोई सखो ठाढ़ी रङ्ग खिरकत है कोई सुख
मसत गुलाल ॥

बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ घंघरू आ कठताल ॥
प्यारो लाड़लो श्याम नचावत देत सखी सब ताल ।
कोऊ सखो पटका गहे ठाढ़ी कोई रोक रहो
ब्रजवास ॥

फगुवा दे घर आओ लला यशोमती नन्दके बाल ।
खाल सखो चरणन वलिहारो निरखत भई निहाल ॥

१५
खिले सांवरो ब्रज में फाग ।
डगर बगर में धूम मचो है डफ मृदङ्ग सङ्ग सुरलो
बजावे गावत वंशो में भिंभाटा राग ॥
काङ्कके भाल गुलाल लगावे अपनो बार को
जावे भाग ॥

विष्णुदास को पास बुलावे पकर लगावे लाग ॥

१६
खेलन लागे ब्रज में होरी नन्दमहरके साल ।
बाजत वोषा मृदङ्ग चङ्ग वांशरो श्री रबाव कठताल ॥

१७
पायन दूंगो मैं जो दान हो कोऊ ऐसो पिय को
मिलावे प्यारो रे ।

सांवरे होरीके दिनन में मो पै सब रङ्ग डारो रे ॥
अबोर गुलाल केसर पिचकारो भर भर मारो रे ।
धर बहियां भक्तभारो मोरो फेर हो गयो न्यारो रे ॥
सास ननद सा अब कहा कहि हूँ लाजन मारो रे ।
रसिक रङ्ग रस वश कर डारो कछु चेटक डारो रे ॥

१८
छाड़ो खेल मोरो गैल चतुर तोहे मारुंगो सेनन में ।
तेरो ई रङ्ग तेरो पिचकारो ताहे वोधुंगो रे नयनमें ॥
दृग कटास पिचकारो कर हो वश करूं वैननमें ।
रसिक रङ्ग सो फगुवा ले हों जब देखी जाननमें ॥

१९
रब्बा आन मिलावे फाल्गुन में माहोवाला ।
अपने रा अपने मन्दिरसे निकसो ओटे ज़रद दुयाला ॥

कोई नाचत कोई नाचत आवत कोई सखा
देत है ताखा ।

रसिक छैस प्रभु भान मिलो तुम मोहन
मदनगोपाला ॥

२०

अंगिया ताशको रङ्गभीनी यौवनवाके साथ ।
दूर से वचन कहो मेरे प्यारे कुवन न देहो हाथ ।
भूषण ठीक भए अङ्ग अङ्गके मोतियन विधरे माथ ।
गावै गूदर दोऊ समय बराबर जब जिय होत सनाथ ।

२१

आज महरके भयो है जगाती ।
छीन लीहो लकुट कामरी मूर्ख म्वालिन
महो की माती ॥

दुग्ध लुटाय छीन लीहं वसन तेरो कर मीनत
रहि हौ पछताती ।

जाकर कहि हौ कंसरावसे पकर मंगावे तेरो
जन्म संघातो ॥

असुर संहारन जन प्रतिपालन माता यशोदाको
पूत न नाती ।

मारो कंस संशय जिन जानो को सन्माने अहोर को
जातो ॥

तव डर वश प्रभु चरण गह्यो है जब सर्वज्ञ
लगायो छातो ।

अज महेश सुर नर सुनि गन्धर्व जाकी रटना करत
दिन राती

गावै गूदर सो कियो वन क्रीड़ा जो भावै मन
चार साहाती ॥

२२

छेल मेरे नयनन में मनमोहन लागि रह्यो ।
दृष्टि परे नन्दनन्दन जब ते सब व्रत नेम बह्यो ॥
विन देखे मोहिं कस न परतु है दर्द न जात सह्यो ।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन जब ते मो चित्त हा ॥

मेरे चित्त बसो है साबरो सुरत जो कहु भयो
सो भयो ।

जानकीदास श्याम रङ्ग राची जग उपहास सख्यो ॥
२२

हूंगी मैं नन्द दुहैया बहियां नाहीं गह्यो ।
देखत है सब लोक नगरके मानो श्याम कह्यो ॥
होराके मिश माहन प्यारे जो तुम कह्यो सो सख्यो ।
जानकादास प्रभु फेर मिलौंगो अब टुक
चिपटि रह्यो ॥

२३

कौन बहो ऐसो हारी रे छैसा ।
पचरङ्गा चनर एकङ्को कोहीं रङ्ग सरबोरी रे छैसा ॥
अबार गुलाल कुहुमा कीसर अङ्ग अङ्ग रङ्ग
रोरी रे छैसा ।
जानकीदास हा हा कर हारी ताज रसिक नहीं
छोरी रे छैसा ॥

२४

मेरो मन उमग्यो होरी खेलनको ।
मोहनके कुहुम को चोटै उघर उघर अङ्ग मेलन को ॥
उमग्यो मनुवा रहत न रोक्को पियको भुजन
भुज मेलन को ।
जानकीदास विलास रास सुख सरस रङ्ग रस
रेलनको ॥

नङ्गला—मैरवी

अरे भायानो हो माई होरीको अङ्गार री ।
अबार गुलालको बादर छायो रङ्गकी
परत फुहार री ॥

रे मेरे होरोके खेलैया रङ्ग भरि मारी पिचकारो ।
उड़त गुलाल अबीर कुहुमा हमदम मैं तेरे
बसिहारो ॥

सह्यां मो से रूसो रो कोऊ जाके मना सारो ।
जो पिया मोसे रूस रहो है विनतो करुं तिहारो
लिख लिख पतियां पठवों मैं पियाको ऐसा सखा
कोऊ जा रो ॥

१
जिन मोरी अंगिया भिजोई देया मैं तो उन्हीं को
रङ्ग में भिजाऊंगी ।
सङ्गकी सखी सखा सब से मैं तो कुञ्जगलीन को
जाऊंगी ॥
गारी भी दूंगी और रार करूंगी मैं ता राधा कन्हैया
बनाऊंगी ।
बदला लूं तो अबीर उड़ाऊं जद अचपल हो होरी
गाऊंगी ॥

४
मेरी अंगिया रङ्ग में बोरी भला मेरी जान भला
तुम से खेलौंगो हो हो होरी ।
बरजोरी हाथ लगावत छतियां सकुचावत है गोरी
हा हा करूं घर जान दे छैलवा बहुत दिननकी
थोरो ॥

५
आए फाल्गुन मास भूमाभूम खेलूंगी होरी ।
सुख मीडूं गर लाय पिया सी फगुवा लो रो ॥
सदयां को सुहाग होहुं फाल्गुन में काकी चोरी ।
पिचकारिन रङ्ग केसर छिरकों अबीर गुलाल
ले हों भर भोरी ॥

६
होरी मैं ना खेलूंगी फाल्गुन री मोरे हरवा
बुभि बुभि जाय ।
सुख मीडत वरजोरी कान्ह मोहे वरवश गरवा लगाय
कृष्णानन्द लाल गिरिधरके लागत फिर फिर पाय ॥

७
आए फाल्गुन में चल गोरी मद गज चाल चलाए ।
लोकलाज कुलकान तजी सब पिय लए गरवा लगाए ॥

८
बनवारी गह्वी मोरी बहियां आज ।
अब देख सखी गई सगरी लाज ।
हों ज्यों अचानक घरते आई मोहे मिथ्यो है
जीर समाज ।

धाय लई लपटाय चाय सो निपट डीठ वाको
नाहीं लाज ॥
निश दिन रार करत है सब सो अब वशबो
यहां नाहीं काज ।
छविनायक यासो तज दीजे अचल करे अब
ब्रज में राज ॥

भैरवी—यत्

उठ चल री पिया सो खेल फाग आछे रहस रहस
गरे लाग लाग ।
यह अवसर नहीं रूठनके मेरे कहे तू तज वैराग
छविनायक आए तोहे मनावन सीत सराहत
तेरो भाग ॥

९
बन बन होरी खेलै ब्रजकी नारी मनमोहनके
सङ्ग कर शृङ्गार ।
बाजत वीणा रबाब भांभ डफ सुरचङ्ग औ
सुरलो सितार ॥
कोज गावत मीठे खर रवि सो कोज नाचत गति
दे दे तार ।
कोज गुलाल कोज अबीर उड़ावत कोज कुङ्कुम
पिचकारो मार ॥

कोज कर गहे हंस हंस मुख मोजत कोज गर
लावत बहियां डार ।
शिव ब्रह्मादिक औ सनकादिक निरख हर्ष बहु
सुमन भार
छविनायक सुख कहां लग वरणीं थाक रघो
रवि रथ अपार ॥

३
सावलिया अब न सहींगी बहुत सही तेरो गारी ।
ऐसे भए तुम नन्दके लायक ब्रज को रीति बिगारी ॥
जो तुम कहियो एक सांवर तो मैं कहियो चारो ।
जाय कहौं मैं नन्द बबा सो तुर्त देहि निसारो ॥
खेलत फाग श्रीवन्दावन में गावत दे दे तारो ।

अबीर गुलाम कुङ्कुमा केसर मारत भर भरके
पिचकारी
ऐसा ठोठ सूरको खामी कैसे बचै कोज
व्रज का नारी ॥

री जीवन कैसे होय गो इन कान्हा ने चेटक लायी ।
उरभू रह्यो मोरी सुरभक्त माहों इन चंखियन
वैर वसायो ॥
ए मन मानत ना सजनी कोटि भांति समझायो ।
कल न परत विन देखे सजनी मोहन रूप लुभायो ॥
तन मन नयन में सांवरी सूरत दर्शत हो सुख पायो ।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन कोटिक मदन लजायो
मग्न रूप दृगन में वश गयो कान्ह हिं कान्ह
छवि छायो ॥

काफ़ी—भैरवी

खाल बाल पिचकारी सङ्ग ले आज कान्ह चढ़ि
आयो रो ।
होरी गार सुनावत मद्द को कर में कुङ्कुमा
छिपायो रो ॥
छिपत न बनत कहत है राधिका ललितादिक को
बुझायो रो ।
आय लुरी प्यारी टिग गोपी होरी को साज
मंगायो रो ॥
दोज दल भुक्त कहत आवत है नयन की सैन
बतायो रो ।
भांभ सृदङ्ग ताल डफ धुमकत मोहन वंशी
बजायो रो
रामरङ्ग श्रीवन्दावन में होरी खेल रचायो रो ॥

पील—भैरवी

पकर ले जै हों नन्द बबापे हारे पे धूम मचावत रो ।
आप गावत गारी मो को सुनावत भपट भपट
टिग आवत रो ॥

कोज एक खाल अबीर ले आवत कोज पिचकार
चलावत रो ।
लेके कुङ्कुमा फेंक्यो सखिन पर भोड़ल अबीर
उड़ावत रो ॥
बाजत वीणा ताल डफ धुमकत होरी राग
जमावत रो ।
निकसन नहीं पावै व्रजवनिता फिर फिर वंशी
बजावत रो ॥
महल सो भुंड निकल सनसुख भई पकड़ मोहन
को छकावत रो ।
रामरङ्ग गिरिधर पर वश भए फगुवा लिए मन
भावत रो ॥

जङ्गला—भैरवी

धन्य धन्य भाग्य जीवन जन्म आज होरी खेलन
मोहन मेरे आयो रो ।
कौन रङ्ग हारों सांवरे पै जिन मेरे मनको
लोभायो रो ॥
कचन धार कुसुम केसर रङ्ग अबीर गुलाल
उड़ायो रो ।
कौन पुष्प प्रगटे मारे सजनी घर बैठे धन पायो रो ॥

काफ़ी-सिन्धु-भैरवी—यत्

आज होरी खेलत में जबसे देखी वा सुन्दर सांवरे
की भलक पे भलक ।
सखी कहा कहों मेरी अब लो न लागो नेक हू
तबसे पलक पे पलक ॥
एक तो मुकट पीताम्बरकी शोभा निरख
दूजे दृगनकी छवि और दशनकी चमक पे चमक ।
तीजे चाल चलत अति लागी भली वाके दोज
कपोलनकी थलक पे थलक ॥
वगमाला गरी अरण्य कुण्डल परे मीठे वैन करे गाय
मनको हरे नृत्य करत खरी नीकी लागी वाके
सुख ते अमकी बुन्दनकी ठलकपे ठलक ।

चोवा चन्दन भरगजा काहू से मलत काहू पे अबीर
गुलाल फेंकत काहूके मुखपर पिचकारन भर भर
देत है रङ्गकी छलक पे छलक
एते गुण देख्य प्यारिके एरी सखी वाके प्रेमकी
जियामें मौज भई मोहि और भी ऐसी के सुध न
रही वाकी वंशीकी सुन के ललकपे ललक ॥

२

इतनी कीई कहियो हमारो मनमोहन ब्रजराज
सांवरै सो ए हो नारी ।
पाय स्पर्श कर दर्शन कीण्यो हूं जो दोज जोर
कर ठाढ़ी
फिर पाछे इतनी कह दोण्यो मोहे काहे को
विसारी न लो सुध एक हू बारी ॥
फाल्गुन आयो भांभ उफ बाजै भीर भई अति भारी
मोहे तो आशा तिहारि मिलनको भूल गई सुध सारो
पिया तरफत हूं न्यारी ।
मोहे गुलाल लाल विन तेरे भई है रेन अंधियारो ।
अंसुषनको अब रङ्ग बनो है नयन बने पिचकारी
पिया छोरत हूं हारी ॥
हृन्दावनको कुच गलिन में टूँड़त टूँड़त हारी ।
दो दर्शन मोहि अपनो मौजसे ए हो कण्ठसुरारो
पिया मोहि आशा तिहारो ॥

२

अरे वारे मनको कपट कहां तज रे ।
जो तू आपन भलो रे चाहत बोरि नीको वचन
मेरो मान ले रसिया देख प्यारि समज रे ॥

४

आज श्याम मेरे हारे ही आए होरो खेलन
अति चाव भरे ।
अङ्ग अङ्ग रङ्ग सो भीज रही है अबीर गुलाल
भुजन पे परे ॥
मीर सुकट पीताम्बर सो है और सुरली अधरान धरे ।

मौज ऐसी छविके वलिहारो निर्वत ही दुःख
दग्ध हरे ॥

५

क्या खूब ऐसी आन बजाई बन में कान्ह वांसरी ।
सखी ध्वनि सुन निकसन लागो सांसरी ॥
यसुनाके तीरे गज गोकुलको भूल गई सब चरन
घांसरी ।

होरो की धूम मची या ब्रज में आयो फाल्गुन
मास री
मौज हो तो मोहो या वंशोवारि विरङ्कका
मनमें लागी फांस री ॥

परज—भैरवी

होरो खेलन को जो आए हो मो सों तो आवो
श्याम पर भांभके घटको ।
सुखसे विराजो धाम तिहारो उतारो पीताम्बर
खोली कटको ।
करते सुरली धरो सो बड़ावो शीर्ष ते अपने या
मीर सुकट को ।
सरज रङ्ग डारो हरे गुलाल मलो नेक नेक सो
उघारो घूँघट को
ऐसे नरम करके कर पकरो जो न लगे मोरो
बांह को भटको ॥

२

ए तो खेल है मन मिलवे को ना तो बरजोरो
को है नहीं नटको ।
जब हम तुम मिल मौज करन लागे तब है
का को डर कौन को खट को ॥

टाढ़ी—भैरवी

आज होरो खेलनको मैं पाई हों चित्त धर ले
कर अबीर गुलाल रङ्ग ।
सुन्दर चतुर सुघर खेलारो जब जानोंगी तब
दोगे मेरो सङ्ग ॥
बाजेंगे वीणा रवाब सुरलिका भांभ चङ्ग और नदङ्ग ।

मौज होवैगी तन तन मेरे जब जिय होवैगी
प्यारे उमङ्ग ॥

२

सुनो री मोरी सकल सभा ए री बूबाके खेलसे
राम बचावे ।

काह सो लपट और भपट काह सो धर पटके
अङ्ग लगावे ॥

हौं जो गई होरी खेलन को लाख तर से रचावे ।
हौं जो कहत वे मानत नाहीं अपनि हो बात
मन भावे ॥

चोवा चन्दन और अरगजा अबीर गुलाल उड़ावे ।
धर बहियां भकभोरो मोरी अचपल होके भावे ॥

३

फाग में खांग मचावै अरी तू तो आपी खेले
कोज खेल न पावे ।

काह को दलत और काह को मलत है कोज
गोकुल कैसेकै जावे ॥

वाके रङ्ग को सब ही जानत है पकर करके भिजावे ।
उन को कहा कोज कह न सकत है वो तो अचपल
होरी गावे ॥

४

जिन जावोरी आज जल यमुना भरण मग ठाड़ो
है कान्ह जोरी पकरत रन ।

वरजोरी करत खेलत है होरी आपन देह नहीं
काह घरन ॥

भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी छतियन पर
रङ्ग लाग्यो है डरन ।

या रङ्ग से कैसे घर जाऊं सास ननद लग
लागी लरन ॥

वाही सोचकी मारी भरत हं धक धक जियरा
लाग्यो है करन ।

विष्णुदास प्रभु से कहा कहिये उनकी हंसो औरन
जो को डरन ॥

५

मन्दलालने देखो री चुनरिया रङ्ग बोरो ।

दया री करत फिरत वरजोरी ॥

होरो धूम मचाई मोरी माई निपट^{निर्लज्ज} भयो
कंवर कन्हाई कुच्छगलिन में मटकत डोलत वरजोरी ।
हंस हंस घूंघट खोलत विष्णुदास घर सास लरिगी
मोतियन की लर तोरी ॥

६

मन देखत मोर मुकुटकी लटक गयो आली री
आज हियते सटक ।

केसर तिलक अलक घुंघरारी श्रवण दोज कुण्डल
है चटक ॥

हौं दधि बेचन जात वृन्दावन मार्ग सो जो गई री
भटक ।

बीच मिले यशोमती के हँस होरी खेलत आवत
भटक मटक ॥

बहियां पकर मेरो चूनर भटकी मटकी दधिकी
दई जो पटक ।

बुधिविहारो खेलारी होरी को न मानत काहकी
नेक अटक ॥

७

जिन निकसी कोज आज डगर होरो खेलत श्याम
कन्हैया ।

वोणा रबाब भांभ डफ वाजै जलतरङ्ग सुरली
सनैया ॥

बालबाल मधुमाते आवत गावत नाचत दे घुमरैया ।
पिचकारिन मारत भर भर वा दिन ते जो अचानक

आई मोपर दृष्टि परी बलभैया
भपट करी ठाढ़ी सखियन में छीन लयो मेरो

दूध दहैया ॥

८

वरजोरी तोरी तनी अंगिया विहंस गरे लायो
गहे बहियां मुख मलो अबीर गुलाल अतर ।

कोटि यत्न कर सौँह देवाईं दोज करजोर परीं हं
 पद्म्यां बहु विनतीं हारो कर कर
 ब्रजवासी सब लोक बुरे हैं देत दोष मोहि लाग लगेया
 छविनायक जैसे हम देखे तैसे न देखे काहू ठगेया
 सुध आवै कांपों धर धर ॥

८

जब मोसे होरो खेलो सांवरी मनकी कपट तज दे रे ।
 लाजुल काहे को बहियां मरोरत रसिया अंगिया
 फारी आवै आवै लजा रे ॥

१०

सांवरो रङ्ग डार गयो मोरीं आंखन बीच अबीर ।
 यमुनाके नीरे तीरे वंशिया बजावै आखर जात अहीर ॥

११

लागत निकस जात सुन्दर मुखते तेरी गारी
 मोहि प्यारी ।
 बेसर की मोतियन भ्रमक चन्द्रकी चमक सोहत
 न्यारी ॥

१२

होत है मूर्ख क्या जाने नारि की सार री कलाई
 फूल हूँ से सुकुमार ।
 मुख मीजत निपट गंवार री कर लाई कुम्हलाई
 जात नार ॥

फूलसी होके चतुर कुम्हिनी कहा जाने मूर्ख
 नारकी सार ।
 केहरिसो कटि शुक नासिका कदली जङ्ग कुच है
 मानो अनार
 सुन्दर प्यारी निहार रसिक रङ्ग बार बार बलिहार ॥

काफ़ी जंगला—विताला

कोज चलन न पावै बाट ।
 फाल्गुन में जो देखे सोईं मातो डोलै रङ्ग
 गुलालके ठाट ॥
 अबीर गुलाल की धम मधी है गोकुल गांवके घाट ।
 रसिक छैल प्रिय होरी गावै राग तानकी लिए डाट ॥

२

खेलै सांवरो होरी यमुनाके तीर ।
 बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ खरधनि मिल
 उठत गम्भोर ॥
 सुन धनि मन्द मधुर सुरलीकी सुनिजन धरत
 न धीर ।
 दुरो-सुरी भ्रपट लपट नन्दनन्दन केसर छिरकत
 नीर ॥
 बहियां पकर सुसक्याय राधिका हरि मुख लाय
 पबीर ।
 औरसरङ्ग रोभ यइ ब्रजको हम क्यों न होत अहीर ॥

३

ए हो मनाय लेत गोरी को सांवरो सन्मुख
 अबीर उड़ावै ।
 सङ्ग मेरे सोवत अङ्ग छिपावत अपनो भेद न बतावै ॥
 अङ्गुरी में पिया मोहि जगावै लाख तरसे रिभावै ।
 ठौर ठौरको भ्रमर है रसिया चितवत मोहि लजावै ॥
 लपट भ्रपटके पकर लेत है अङ्ग सो अङ्ग लगावै ।
 रसिक रङ्ग रस वश कर डारो पद्म्यां पर जो मनावै
 कर लिए पिचकारी केसर की भर भर रङ्ग चलावै ॥

४

सांवरो मोहि दे गयो गारी ।
 भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी भीज गईं तनसारी
 गारोको गारो टोनाको टोना चितवन में छवि न्यारी ॥

५

हो जानी रा तेरे वश मैं नहीं आई रे ।
 आप तो बैठो मानमन्दिर में मेरे जियरा को लयो
 है लोभाई रे ॥

६

आन पड़े वश मेरे लला कैसे जान पावोगी
 जान न दूंगी ।
 गारो मैं देजं देलाजं भीरन सो फेंट पकर कर
 फगुवा लूंगी ॥

ऐसो डीठ बलवीर तेरो वीर री दैया ।
अंगिया फार मेरो भाजन तोरो या यमुनाके तार
री दैया ॥

काफ़ी—सिन्धु

होरी खेलत भ्रमर सुजान अपने पियाके शरन में ।
वाको खेल सब वोही जानै आपी मग्न है अपने
रङ्गन में ॥
तनमन तार तम्बूर बजत है कङ्क कामर कङ्क
नौके वरन में ।
साज समाज ध्वनि सुन सारी ब्रजके खेलैया लुकाने
घरन में
अपने कहेया ले यौवन पद्म देखावत हरिके चरण में ॥

यद दोज खेलत हो हो होरो ।
नन्दनन्दन ब्रजराज सांवरो श्रीवृषभानु किशोरी
परमानन्द रूप रसभीने अबीर लीए भरभीरी
चलो तब खेलन होरी ॥
भुज भर अङ्क सकुच गुरुजनकी मिल फिर जात
छुटो री ।
छूटी छट कुण्डल सो उरभी विसर पीत पिछोरी
चलो सुरभावन को री ॥
कर कङ्कण कञ्चन पिचकारी लै कंसर रङ्ग बोरो
छिरकत रङ्ग हुलस हिय हर्षत निरखत हरि
मुख मोरी करै चितवन चित चोरी ।
धन्य वृन्दावन धन्य वंशीवट जहां यह रास रचो री
श्रीरसरङ्ग रीभ ब्रज ऊपर वारो वैकुण्ठ करो री ॥

ए री मोहै श्यामसुन्दर रङ्ग डारो केशर रङ्ग
पिचकारिन मारी ।
बरजोरो कर पिया मुख मीडत है देखत है
सखी सारो ॥
विनती करत हं मानत नाहीं ऐसो अनोखो
खेलारी ।

गरवा लगावत नाहीं उरत है गावत मीठी गारो ॥
या ब्रज में भयो अनोखो कहेया न जानो कड़ा
गति करी है हमारी ।
रसिकरङ्ग प्रभु धूम मचाई तक तक के मारत
पिचकारी ॥

देखो री वरजोरी मो से खेलत है हो हो हो होरो ।
अबीर लगाकर सारी भिजोई अंगिया फारी
तनिया टटोरी ॥
कञ्चनकी पिचकारी चलावत नाजुक बहियां
अचानक मरोरी ।
रसिकरङ्ग ब्रज धूम मचाई हो हो हो हो
धूम मचो री ॥

आज उफ बाजन लागे री श्यामरो मेरो सगुन
मनावै री ।
घरी घरी पल क्षण कल न परत है उन विन ककु न
सुहावै री ॥

समुझ दे हो कान्ह लाजको गारो ।
गारो देत है तारो देत है सुन ले सीख हमारी ॥
तुम तो भए हो ब्रजके ठाकुर सास सुनेगी हमारी ।
कल्याणन्द कहत मनमोहन देखहु हृदय विचारो ॥

देखो चलो जात है बनवारी मेरी आंखन चोवा
रङ्ग भर डारो ।
कौन जात तेरो मथुरा नगरिया बीच मिले मोहै
ठगवारी ॥
चितवतके मन लियो है मोहन गावत है नाचत
दे तारी ।
रसिक रङ्गरस वय कर डारो ब्रजमें धूम मचो है
भारी ॥

नाहक हम सो रार मचावे वरजोरो हम सो
सैन चलावे ।

नित्य ही वसैत रहत वृन्दावन वंशीके बीच बीच
तान सुनावे ॥

हा हा करुं मैं परियां परु मैं धर मरु को सब
रङ्ग रङ्गावे ।

पूर्णानन्द आशा ब्रजचन्द्रकी फगुवा मांगूं यही
मन भावे ॥

रसिया ना मानै मोरो अखियन भरत गुलाल ।
अछन अछन पाछे अलबेलो निरख नबेलो बाल ॥
रङ्ग भरी गोरी गई बोरो करत अटपटे ख्याल ।
दया सखी घनश्याम लाडले भुज भर करत निहाल ॥

तैं मेरी सारी भिजोई सारी रे ।
रसिया मूर्ख बनारो रे ॥

चेर लियो आ सब अखियन में पिचकारी मो पै
मारी रे ।

बार दियो मोड़े आपन रङ्ग मा विनती करके
हारी रे ॥

बहियां पकर मोड़े गरवा लगायो सास सुने देगी
गारो रे ।

कहा करुं कहु बन नहीं आवत नेह लगायो
कारो रे ॥

होरो मैं ना खेलों मेरी अखियन डारो गुलाल ।
सारो भिजोय रसिया गारो गावत है मुंह आपन तू
संभाल ॥

री मन समभक्त नाहीं कैसेके मन समभाजं ।
फाल्गुनके दिन रुस रहे हैं जिय चाहे पिया को
ले भाजं ॥

कहा करों गुहियां कौन यतन सो रसिया के मन भाजं ।

कल्याणन्द अब निशि वासर मैं श्याम सुरति
चित्त लाजं ॥

सांघरे को मै रङ्ग में रङ्गूगी ।
यह फाल्गुन ऋतु भाई सखी रे चित्त में उमङ्ग
भरुंगी ॥

ले नन्दनन्दन कुञ्ज कुञ्ज ब्रज होरोकी रेन जगूंगी ।
काहसे मैं नाहीं डरुंगी ॥
फगुवा लीहों मनाय मोहन को मनमाने हाल
करुंगी ।

वृन्दावन वीथिनके माहीं केलि अनेक करुंगी
नेहरस माहिं परुंगी ॥
अबीर गुलाल मलुंगी कपोलन मिल पिया ना
हट लुंगी ।

रीभ रिभाय करुं वध अपने मन ही मोह डरुंगी
चितै चित्त माहिं ठगूंगी ॥

होरी की ब्रज धूम मचाई ।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी सो भांवरमान जाई
रङ्ग रहे रङ्ग वसन केशरके अबीर गुलाल उड़ाई
कुञ्जन बिच छवि रही छाई ॥

नाचत गावत ग्वाल ग्वालनी मिल खरराग सुहाई
कोई लिए ताल तम्बू रे सारङ्गी कोई डफ मृदङ्ग
बजाई सरस बाजत सहनाई ।

कोई फगुवा मांगत हरि जो सों दीजे कुंवर कन्हाई
नित्य प्रति ख्याल खुशाल देखावै मदनमोहन यदुराई
चितै चित्त लियउ चोराई ॥

होरी खेलन आए हमारे ।
केशर रङ्ग भरे पिचकारी उमंग उमंग उमंगा रे ॥
फेंटन भरे गुलाल कुंवर नन्द लागत अधिक पियारे ।
हेल ब्रजराज दुलारे ॥

ग्वाल बाल सङ्ग शोभित शोभा उर बिच उमंग अपारे ।

वरजोरी रङ्गत सुही मेरी सारो मुखमें अबीर लगा रे
टरत कहीं नाहिं न टारे ॥

उर सावत न डरत हो रसिया यौवन उमंग अपारे ।
ख्याल खुशाल करत ब्रजमोहन महिमा भगम
अपारे परे गुण जान तिहारे ॥

१८

होरी खेली कुंदर ब्रज गोरी ।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत ललित केशर रङ्ग बोरी
चोबा चन्दन लिपटावत अङ्ग अङ्ग लेत चिते
चित्त चोरी रूपकी डाल ठगोरी ॥

१९

मची कैलासमें होरी ।
दूत गौरी उत शङ्कर शम्भु भारी रङ्ग रचो रो ॥
सुर नर मुनि सब देखत ठाढ़े बोलत हो हो होरी ।
बजत डमरु घनघोरी ॥
नन्दी भङ्गी कार्तिक स्वामी सङ्ग लम्बोदर हु बहोरी ।
उड़त गुलाल लाल भए अम्बर बाजित

बहुत बजोरी

बोले सब हो हो होरी ॥

ब्रह्मा सनक सनन्दन सौनक सनातन प्रेम रहो बोरी ।
सारद गुणी गन्धर्व हाहा ह्रह्र नाना यन्त्र सजोरी
नारद सङ्ग वीणा नचोरी ॥
शिवके दास तहां निरखत हृषत आनन्द उरमें
बढ़ोरी ।

दृषभ वाहन जटा गङ्गा है जाके शेष गरे लिपटो रो
बोले हर हर हो होरी ॥

२०

ललना नागोही आवै या गोहन सोहन ।
हौं तरुणो और नहीं ब्रज में है कोई तू
समभावे या मोहन ॥

२१

होरी बाजना बाजम ।
निशिदिन मुझको ध्यान है उसका गोयद अजा
जान हूं राजम ॥

सुद्रा पहरो भस्म चढ़ाऊं खुदरा चूं वैराग साजम ।
दिल खुश होके फाग मचाऊं दस्त वगर दम भी
अन्दाजम ॥
जो शीरीं सब उसके देखं बर खुशरो फिरहाद
विनाजम ।
आशक हो के होरी खेली गर बीनद जानाए जाजम ॥
मदके माते रैन न सोए खूनी नयन मस्त चि
साजम ।
सुन्दू औघड़ बल बल जावे गर आयद आं बन्दे
नेवाजम ॥

खमाच—अल या

या मोहनसे कोज पूछो तो भला मेरी नाहक
बहियां मरोर डारी ।
मैं ने कहा कियो याको नाम लियो मंहसे बात
कही कोई गारी ॥
दही कछु डारो बिगारो देखो नयन मिलाय कुई
करते पिछोरी ।
या तो भई सो भई हों कीन्हों गई ताह पर देखो
लङ्करकी निठुराई चूमो मुख उर लाई अंगिया
दरकाई खोल घूँघट ले अबीर गुलाल दियो
आंखन डारो रो
और सिगरो अङ्ग चारो रङ्गसे रङ्ग सखी कहां
लोक हूं वाकी मौजमें आयो सो कियो मो सङ्ग
होरी होरीके मिश्र करके वरजोरी ॥

२

मैं तो आई हेल तेरे हारे किये प्रेम अति मनमें
आश होरी खेलनकी मेरे प्यारे ।
एक क्षण में मेरे पाप कटे मेरो चूनर पर पिया
अपना रङ्ग जो तू डारे ॥
हौं निर्गुण गुण एक न मोमें तुम्हरे चरण निहारे ।
बहियां गहो मेरी अपनी मौजसे नन्दनन्दन
ब्रजराज दुखारि ॥

३

हो रही रङ्ग हो हो हो होरी ।

डगर डगर बगर बगर धूम मची सगरे नगर
 ओ मद भरे निरखत नर नारी चहुं ओरी ॥
 रङ्ग सो धुरत काङ्ग सो न डरत निशदिन माहि
 चितवो करत नटवर वपु भेष धरे हैल नन्दको री ।
 गहत हार करे विवाद कुच भुज सो करत रार
 ऐसे धरो मोहिं आय लाज गई मोरी ॥
 बाजत मृदङ्ग ताल वोणा खञ्जरी रसाल
 भनक भनक घनन घनन आनन्द घनघोरी ।
 नन्दनन्दन आनन्दकन्द सब जग उजियारो चन्द्र
 वर्षत रसरङ्ग आज नन्द जू की पोरी ॥

कान्हा सुन ए रा सखी मो से होरी मचाई ।
 लपट भपट बहियां भकभोरी अबीर गुलाल लगाई ॥

ए सुन मन मेरे यार ।
 अपने विसात को सोच तनक चल रीतिकी चाल
 कुचाल को तज रङ्ग कुरङ्ग समय को देख या
 जग की जब जाने गो तू चौसर खेलनकी सार ॥
 घटके घरसे दगावाजी की नरदको बाहर वेग निकास
 धर्म सत्य को बांधके युग रख पांच तत्वके पंज में
 गर्वके छुके रोक ले पहले कपटकी पी पे न पी
 पानी अपमानको अपने पास फेंक डार ।
 कचो पकी सीख ले न काङ्ककी घटी बढी को समझ
 जिया में कोज लपेटे तोहे फूल संघाके चार खूंटके
 वान गमेके वाके न दावमें आ वरसे जसर मेहके गुण
 कहीं खेत को होवत है रख अपने हो दमकी
 गोटों पै शुमार ॥

वचन और मेरे तीन कोनी सुन एक तो बढ
 विचारका नियम मत कर दूजिका भाग काङ्क पै
 न कर सुभे पांच दो छे दो आठ नव दश ग्यारि दो
 कोई सी जिनस होवे विन दिए साहबके पूरे नहीं
 परत है काङ्क को मांग बाही पै जो पालत है
 सब संसार ।

तोजी और सन सीख न कचे बारे गुण चौदह विद्या
 मेरो पन्द्रह याद सोले तो से कहत हो जामें तेरो
 सत्य रहै पूरे अठारे बीसे फिर तो सब खेलारो
 तेरे भागे है अनारो
 कर मीज मेरे मित्र तेरे हाथ रह्यो जीत नहीं
 आवेगी कबहुं टिग तेरे हार ॥

काफ़ी—देग

आज होरो खेल को ए होरो कही री चलो होरो
 होरा होरो कान्ह सों कहीं क्यों न होरो ।
 गुलाल भोरिन धर होरो रङ्ग पिचकारी भर हारो
 कर कर के हो हो री
 अपनी मीजसे फगुवा लीन कारण फेंट गहो री ॥

मै भिजाजंगो पाग मेरी चुनर भोजी फेंट पकर
 मोसे फगुवा मार्गै अपनी वेर जावे भाग ।
 कहा करुं कहु बन नहीं आवै पिचकारन लिए
 हाथ आज आदिल पिया मैं विनती करत हूं रङ्ग
 डारोगी आज ॥

फाल्गुन काम हते तरकारो भेवा भरके लाया है ।
 सो लोन्हों है वनवारीने यह बात मदनको ब्रज घर
 घर सुन हर एक एक अपने धाम छोड़ बाहर
 यही कहता धाया है ॥
 बन बनके सगरी ब्रजसुन्दरी चलो अपने अपने
 मन्दिरसे घर मोहनके यही कहते हुई हो हो के
 मग्न अन्दरसे ए वीर वर्ष दिनके पाछे हम
 ब्रजवधुअनके भाग्यन ने फिरके यह बोल सुनाया है ।
 जो जो गई ताहे ठठोली से काण्हर कही आगे
 आ री आ री आ देखीर तेरी मेन बहमका कड़ी
 लीज मो कहे रतालूको निर्मली भूल गई तू तो
 आप जो मृङ्गार आई अब कहीं तूने यह सुन
 पाया है ॥
 तुम्ह कारण क्या क्या खांग कसे रूप रनकदू देख ले

तू रख मन में फट रही फटकी थी मोसे जी लागा
 जरने तोसे मैं पूछूं सांच बता कित गई सुकचरो
 वो तारो किन सेंध लगा यह बताया है ।
 गुंइया गई और देखावन को अपने यौवन छेरे
 वाके रङ्ग राता लुगरा पहर हारक पग सुकच नाल
 धरतो भुई पर गुजरी दहने जाटिन छेरे और बीच
 अहीर सब ने मिल यह गीत बनाया है ॥
 जो ना रस बेगुण पूरो थी वा पे ठाकुरको भयो
 कर्म गो भीर में थी सो आए आप गए ले पलकमें
 रस पागने वाके मोठे देनन आगे शकरकन्द दीज
 भए फीके फिर यह कह गरे ले लगाया है ।
 तब वो नेह चोलाई घट में कछो भई कुशल गम
 दूर हुवा मनसे गइयां दुःखकी बतियां चित्त चुका
 अब सांवत हुवा कुवखी धरकी आमधीयाले सूहेका
 अचरा करमें वाके यह कह सुसकवाया है ॥

४

एक छेर छार गोपिनयको प्यारे यह सोच भयो
 प्यारी जो रूसी है तिन्हें अब मनाइये ।
 करके मन में विचार एक नार समझदार पठवाई
 उनके द्वार कछो बुला लाइये ॥
 सुन के यों उठ बोली मोहे न समझाइये ।
 कहोंगी करोर वा पर हों नहीं जाऊंगी कहे दोहीं
 तुमसे एक बार आप जाइये ॥

अङ्गला—तिताला

सुन सुनके सुघर चतुर सजनो लै लै कुछ कुछ बनके
 नाम समझाने लगी उस नारी जग उजियारीको ।
 सरस संवारी सब गुण भारो पोतम प्यारी भानु
 दुलारो को ॥

१

किस मिस तोहे समझाऊं प्यारी और कहूं तो है
 कैसे अनार ।
 जगत् को सब ज्ञान जी रहों तेरे तो सो अष्ट याम
 फल पावै नरनार ॥

दाना होय क्यों बनत बे दाना सहे तू तो प्यारे
 को वचन न टार ।
 काह्न को सिखाए मोको आलोबालो मूः दे अङ्गलो
 पकर चलवार ॥
 तो पै तो है आ सेवत मोगो बेर बेर जो करत है रार ।
 याते में क्यों चिरझोव अपने परखो प्रात हो बोल
 तिहारे हटकी खोवानी समझ जा मनमें कम रख
 जिन अदरख पो सो प्यार ॥
 को ए भी नासपातो है कहा तू और जीव पिस्ता है
 हर बार बार ।
 अब ही आम होंगो बात गाव में फलसे पै लोग
 करेंगे विचार ॥
 हरवा खरबूजा पगी फैल यह भो तरबूज के मनमें
 निहार ।
 सङ्ग तेरे को लेके लगी रहत है आय अकेले
 दुष्ट हज़ार ॥
 वे स्वांगी कर बाना रङ्गी फाल्गुन में चरचेंगे पुकार ।
 मान वचन वाहे दबा दाम में अलख अपने नो
 उधार ॥
 छेर छुवार नो कर ते कर देख दाख वा को व्यवहार ।
 उन तो अब लों तेरी है राखी न नोको भाति सों
 बात सुधार ॥
 सुंघबनी बूतनकी बनेके निरख परख रोट को
 दे विसार ।
 भली ही तू इत में अनन्या सोखी तेरो वसफ तालु
 रसना से है न्यार ॥
 कथ ज्यो होवै मी ठाकुर है वांको नाम नखटा
 कर छार ।
 जैसे सीरी सीताफल पायो रामचन्द्रकी दयासे अपार
 अपनी मौजसे सदा फल देगो राधा तोहे कण्ठ सुरार ॥

१

जब इतनो इतनो समझायो वाको उस सखी
 सयानी ने ।

तब वारो आभरण सोले शृङ्गार किए ले दर्पण
महरानीने
हंस हंस के यही अपनी मौजसे कहतो चलो वा
सजनी से क्या सुनके जिय हुलसाया है
फाल्गुनका महतानीने ॥

चञ्चल चवैया रो आलो यशोदाको लाल देखो
हां मोरे ललना हों दधि बेचन जात रही ब्रज
नाहक रार मचाई ।
तेरो चेरो तेरे चेरे को चेरो ऐसे नाच नचाई ॥
हा मोरे ललना हमरे सङ्गकी दूर निकस गई
मोहन बहियां मरोरो ।
सास ननदिया रिसावै मो सों मुख मल दर्ई रोरो ॥
मैं तो वरसानेको ग्वारनो रे तुम हलधर जोके बीर ।
मौराके प्रभु फगुवा लीन्हों मोहन श्याम शरोर ॥

आज हरि ब्रज गोपिन पकरे ।
मोर मुकट मुरली पीताम्बर सब ले छोर धरे ॥
पहराई चूरी चुनरिया बेंदी अति कजरे ।
चरण गूजरी कर कङ्कण बाजू बन्दन बाँह वरे ॥
सीसफूल और नासर बेसर को मोती माँग भरे ।
केश पकर के कांस पकाड़ी ताङ्ग मो नाह डरे ॥
उस मोहन को वश ज्यो कियो नारी न छूटो
पांव परे ।
फगुवा देत लेत नहीं सुन्दर अब धौ कहा करे ॥
नारी शृङ्गार सबे पहराए नाच नचाए लगाय गरे ।
सूर श्याम वैकुण्ठ निवासी हा हा करत खरे
मन भाया सखी फगुवा लीन्हों प्रेम मग्न में
आन टरे ॥

सखी हों तो रङ्गीली अपने रङ्गमें कोज जिन
मारो पिचकार ।
हों बीरो होरी खेल न जानों सब जग चतुर खेदार ॥

ना मुख मलों अशोर अरगजा ना तन सजों शृङ्गार ।
लब से भई हं मग्न वैरागन बाढो रूप अपार ॥
अनोखे कान्ह मेरी चूनर रङ्ग भर डारो ।
बाट चलत मेरो मुख मसलत ही और देत ही गारो ॥
कहा करुं ककु कह न सकत हं लागो लाज तिहारो ।
मग्न कहत निपट जिन बिगरो मानो बात हमारो ॥
सुन ए रो सखी आज ए रो ए रो सखी आज
विलम्ब रहै कहं काना ।
हम को कहत तुम पलङ्ग बिछावो उनको बात
हम माना ॥
आवन दे पिया अपनी बार कहं नित्य उठ ठग
ठग जाना ।
सोले शृङ्गार बतीसों आभरण अङ्ग सजै मन माना ॥
डोलत फिरत और तियनमें मोसे हंस हंस जाना ।
खिलत होइ है ब्रजकी सखिन में अई है तो
करि है बहाना ॥
गोकुल दूंदो वृन्दावन दूंदो उनका कौन ठिकाना ।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन नन्दमहर जूके छाना ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहत कुण्डल भलकत काना ।
सांवरे मुखपर तिलक विराजै जा सों लग्यो
मेरो जाना ॥
वंशी बजावत गावत नीके मोह लिया मिरा प्राणा ।
सूरदास स्वामी तेरे दर्श को हरि चरण कमल
लगो ध्याना ॥
सांवरे मो पै डार दियो मेरे आंखन बीच अशोर ।
यमुनाके तीर मुरली बजावै आखर जात अशोर ॥
ए रो अशोर गुलाल मो पै डार दियो
अचानक आन परो रो ।
उफ बजावत गारो गावत नाहक उलझ परो रो ॥

११

सारी मेरी सारी भिजोई केशर भर मारी पिचकारी ।
 अंगिया रंगिया रङ्ग में रङ्गी है ऐसे चतुर खेलारी
 सङ्गकी सखा सब दूर निकस गई बहियां मरोर
 दई गारी ॥

१२

श्याम मोहे चोरी लगाई ऐसी हारी मचाई ।
 खेलत गेद गिरो यमुना में तै मोरी गेद चुराई ॥
 हाथ डाल अङ्गिया बीच देखौं एक गई दोय पाई ।
 दोऊ भुज पकर लपट अङ्गन मेरो मुख चुम्बत
 मुसकाई ॥

नेक न लाज करत काङ्गकी ऐसी लगर कन्हाई ।
 कृष्णानन्द श्याम चोरी मिस लियो मोहि अपनाई ॥

१३

मेरे आंगन खेलै फाग री माई सांवलिया ।
 हमरी चुनरिया रङ्ग से भिजोई अपनी बचाई
 पाग री माई सांवलिया
 कृष्णानन्द बलिहारी गई मैं धन्य धन्य मेरो
 भाग री माई सांवलिया ॥

सोरठ—तिताला

अब मेरो चुनरो में टाग परो अनारी से काम परो ।
 यह मतवरवा मानत नाहीं जियरे के वैर परो
 कृष्णानन्द न मानत ब्वालिन दोऊ भुज गहि पकरो ॥

१

गोरी ए री सांवलिया तै रङ्ग बोरी भीज गई
 रङ्गरस में ।
 श्याम रङ्ग निशदिन सुख वरसत बलिहारो तरे वश में
 कृष्णानन्द अथाह प्रेम में गावत तरो यश में ॥

काफ़ी—तिताला

अपना लाल मोहे मांगि दे री फाल्गुनके दिन
 चार सखी री ।
 गजमोतियन सौं धार भरींगी करि के सोरही
 अङ्गार सखी री

कृष्णानन्द आश मेरो पुजवहु पद्मयां परों बार
 हजार सखी री ॥

सोरठ—तिताला

सद्मयां विदेश मोरे आयो फाग री ।
 जिनके पिया परदेश गए हैं उनके भाग्य भयो
 विरह दाग री
 कृष्णानन्द मनावत ठाढ़ी आव पिया हंस गरे
 लाग री ॥

२

आज कान्ह सङ्ग खेलौं मैं होरी सुन्दर वार
 सुगन्ध लगाए ।
 अधर विद्रुम मुख पानकी लाली दर्शन चमक
 चपला चमकाए
 टगन देख मृग ह ललचाने चन्द्रवदन मानी
 चन्द्र लजाए ॥

धानी—काफ़ी

नन्दके छोहरा मेरो मन लियो सुरली बजाय ।
 इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीच में ठाढ़ी लजाय ॥

परज—काफ़ी

आज अनोखी नारी श्याम सङ्ग खेलत होरी ।
 सब सखियां मिल बन बन आई अबीर गुलाल
 लिए भर भरोरो
 कृष्णानन्द प्रेमरस माती चित्त रातो सब
 ब्रजकी गोरो ॥

काफ़ी—अरिया

आज होरी खेलत देखी छवि जो मोहनकी लागी
 सुन्दर मेरे मनमें निपट ।
 उर वनमाला मकराकृत कुण्डल कटि पोताम्बर
 शीर्ष सुकट ॥

उत ठाढ़ी ब्रजवनिता सकल दृढ़ इत ब्रजराज
 कुमार किये हट ।
 वे मारत पिचकारिन तक तक ये फेकत अबीर
 गुलाल भपट ॥

ये उघटत वे नृत्यत हंस हंस त त त ता धेई धेई
उलट पलट ।
मीज निरङ्ग प्रभु की ए शोभा को सारद की गई
बुद्धि उचट ॥

काफ़ी—सिन्धु

ए रो तू तो कहत हो जात है लेन यमुनातट
शिरपरकी बूटो ।
उत जाय अकेली नन्दलाल सो होरी खेखन पे छूटो ॥
भीजे वसन गुलाल मुख लागि अंगिया दरकी
माला टूटी ।
तेरो सांच तो प्रगट है मीज भी कैसे कहै हम भूटी ॥

काफ़ी—टोड़ी

जैसी तू खेलत है गो होरो मोहन ऐसी तो काङ्ग
नयन देखी न सुनो ।
तेरे चलन को निरख निरख कर कहत हैं सब
नरनारी पुराने गुनो ॥
चन्दन अबीर गुलाल केशर रङ्ग यह देखो नेक
वहां न दुनो ।
मेरे तो मनकी मीज में यह आवत उर लाजं
मुख चूमूं तेरे पगको भुनभुनो ॥

२

होरी खेलत लपट भपट मनमोहन मनमें कपट
नाहीं काङ्गकी षट ।
भपट पट भटक डारो गुलाल अबीर भीज गई
सारो ह्वे गई गट
पट लट कुट हट अङ्ग अङ्ग में बिधरो मीज मेरे
रङ्गी चुनरो चटक ॥

३

मोरे सइयांके मनमें परो है गांठ ए रो ए मैं कौन
यत्न सों खोलौ ।
सब सखियां मिल बन बन आईं मैं बेठी विष घोलीं ॥
अबके फाग पिय भए हैं वैरागी नगर नगर मैं डोलौ ।
कृष्णानन्द विसरत निशदिन धोर धरौ मैं को लौ ॥

४

मन छल लीन्हो छैल छलैया छलक ।
नेक देखाय यौवनको भलक ॥
मनमोहनको मोहिनी मूर्ति छूट रहो मुखड़े पै
अलक ठलक ।
जब ते चितवन देखी तबते नाहीं लागत है पलक ॥
अब कहा करि हो उपाय सखो रो चित्त चाहत
पिया मिलन कुलक ।
ख्याल खुशाल करुंगी कुञ्जन में जोलों चाहे
जिय तौलों तलक ॥

५

बारी वयस या रस में भरे तेरे नयन मैं है
कन्हैया रे ।
निरखत करत प्राण वश वेग ही चञ्चल चपल
छलैया रे ॥
उरभ रङ्गे पर सुरभत नाहीं ऋतु रस सुख
विलसेया रे ।
यौवन उमङ्ग भरे चित्त चोरत नेहके रङ्ग रङ्गैया रे
ता पर ब्रजमें विहार करत है ख्याल खुशाल
करैया रे ॥

६

तनक सुनी मुरलीकी भनक मेरो मन गयो
हाथ सों देया ।
वंशी सुनो बहुतेरी बाजत बहुत देखे हम
वीणा बजैया ॥
रूप स्वरूप लखे हम लाखन वैन मिले चितवनके
हरैया ।
काङ्ग सो षटको न मन अबतक चैन गई जबसे
दिन रजनी या दुःखको है कौन हरैया ॥
विरह व्यथाकी मारी मरत हूं शीषधको है कौन
देवैया ।
जासों मिटत मोरे जियकी कसक काङ्ग ब्रजवासी
गरे डारो फांसी कित गयो जासम फांसी देवैया ॥

चिपत वश गयो अब फन्द परो है फांसी डार गयो
घोर कन्हैया ।

ऐसो फांसी में ता तपक तपक मो पै जादू चलाई रे
मोहन लूट गई अब नाहीं पुकैया ॥
मोहनके छल सोई है काजम बांच रहे बलराम
दुहैया ।

याही सुरत में परो अबतक राम हो सो अब
काम परैया ॥

काफ़ी—विन्धु

पायो रो धर कंवर कन्हैया ।
गृह गृहते निकसो ब्रजवनिता आपु अकेले न
सङ्ग सहैया ॥

काङ्ग छोन लई कर मुरली काङ्ग मुकुट काङ्ग
पोत पिछैया ।

पहरायो घांघरो चीर अनवट बेसर और हंसैया ॥
कर चूरी कङ्कण जरावके तरवन कनक कनो
चमकैया ।

मोतिन मांग भरी मोहनको अञ्जन दृगन दिए
वरपैया ॥

हरि हि नचावत ता ता थैया अद्भुत खेल खेलावै
रुंगैया ।

अजून छाड़ दयो अपने के पग पग देत है राज दुहैया
सूर श्याम सौ फगुवा लीन्हो रसवण कर लीन्हो
बल भैया ॥

२

प्यारो तेरे नयनन में कहु टोना ।
मोड़ लियो रस फाग लाग में सुन्दर श्याम सलोना ॥
खेल छाड़ तक लाग रह्यो मैं प्यारो नन्द टिटोना ।
ब्रजनिधिकी मूठ उड़त है जीव करत है ज्यों
मृग छोना ॥

३

मैं तो सांवरे सङ्ग खेलन जइहँ घर बैठे कहां लौ
जीव तरसै हँ ।

मत कोई मुझे हटको रो सखी आज बवाकी सौं
मैं विष खै हँ ॥

और रङ्ग सब फोके लागे पियरे पट सौं हियरा
हुलसै हँ ।
प्यारे गोपाल सोहात यहो मनमोहन मित्र हिए
लपटे हँ ॥

४

भटकी मेरो चीर मुरारो ।
रङ्ग गागर शोर्ष से भटकी बेसर मुकर गई सारो ॥
रेशम बन्ध कुचन के तोड़े ऐसे अनोखे खेलारो ।
पार परोसन सखी सहेली हा हा हा कर हारो ॥
ऐसो शिचा दई काङ्ग तिय ने मानत ना वनवारो ।
यमुना तट चीर जो फारो ॥

५

आज खेलंगी फाग बनाय लाल मेरे हारे ही आप ।
हमरो चुनरिया रङ्ग सो भिजाई अपनो पाग बचाए ॥

६

तुम छोन लो छिना लो करसे पिचकार ।
अबोर गुलालके बादर छाए केशर रङ्गको
परत फुहार ॥

७

श्यामा श्याम सौं आज खेलत फाग नई ।
नन्दनन्दनको राधा कोन्हीं माधव आप भई ॥
यमुना तट विहरत प्रमोद में नव छवि रङ्ग रई ।
बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ अबोर आकाश छई ॥
सखा सखी हो सखी सखा हो यशोमती भवन गई ।
उलख्यो रूप देखि श्रीपति को मति गति पलट गई ॥
फगुवा दियो मंगाय सांवरे कञ्चन रत्न मई ।
सूरश्याम को वदन विलोकत उघर गई कूलई ॥

८

गोकुल में खेलते होरी ।
नन्दनन्दन वृषभागुसुता मिल अरस परस भक्तभोरो
राधा भिजाई पाग पिछोरी उन चुनर रङ्ग में बोरी
निरखि छवि काम लजो रो ॥

अबीर गुलाल कुङ्कुमा चन्दन वन्दन ले छिरको रो
भर पिचकारो श्याम जू मारो भानुसुता रङ्ग बोरो
कहे हरि होरो है होरी ।

सखा सखी मिल देखत ठाढ़े भारो खेल रच्यो री
उन तोरी वाक्री मोहनमाला उन लई है पीत पिछीरो
कहां जावो माखन चोरो ॥

उत तें सखी सब दौरके पाई श्याम को पकर
लयो री
नारि शृङ्गार बनायके सुन्दर भूषण सब हि सजो रो
नचाए है नन्दकी पोरी ।

फगुवा दे हो तब जाने पै हो भील देहु बलकारी
वा दिनकी सुध भूल गए हो ता दिन चीर हरो री
करो अब काहे न ठगोरो ॥

अब कैसे जावोगे नन्दलला जू आन पड़े वश मोरो
सुरली बजावो नाचो गावो रिभावो ब्रजगोरो
तताथैया नाच नधी रो ।

सूरश्याम सो फगुवा लीन्हां मन इच्छा फल कोरी
नन्द यशोमतो देखत ठाढ़े हर्षी सखी चहुं ओरो
आनन्द अति उर हि बढो रो ॥

२

ब्रज में हरि होरी मचाई ।
इत सों निकसो कंवरि राधिका उत सो कंवर कहाई
खेलत फाग परस्पर हिलमिल सो सुख वरणि न जाई
सो घर घर बजत बधाई ॥

बाजत ताल मृदङ्ग भ्रांभ डफ मञ्जोरा सहनाई
वरसत अबीर कुङ्कुमा केशर रङ्गो सकल ब्रज छाई
मानो मेघवा भर लाई ।

राधा सैन दई सखियन को भुंड भुंड उठ धाई
लपट भपट गई श्यामसुन्दरको घर वश पकर ले पाई
लालको नाच नचाई ॥

फगुवा दए विन जाने न पै हो करि हो कोटि उपाई
लेहो चुकाय सरस वा दिन को तुम मम चोर चबाई
बहुत दिन दधि मेरी खाई ।

सुसकति हो मुख मोर मोर तुम कहां गई चतुराई
कहां गए वो पिता तुम्हारे कहां गई यशोमतो माई
लालको लेत छुड़ाई ॥

छीन लियो पीताम्बर मुरली शिर सो चुनरी चोड़ाई
बेदी भाल नयन बिच कज्जल नकबेसर पहराई
मनो नई नारो बनाई ।

रहस विलास रच्यो हुन्दावन ब्रजवनिता यदुराई
राधा श्याम युगल जोरी पर सूरदास बलि जाई
प्रीति उर रहत समाई ॥

१०

राधामोहन खेलत फाग ब्रज रङ्ग छाय रहो ।
सखी सङ्ग ले भानुनन्दिनी सखा लिए ब्रजराज
सुरली बजाय रहो ॥

अबीर गुलाल लाल पै डारत भारत केशर पिचकार
लाली समाय रहो ।

बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग डफ भ्रांभ ताल करताल
साज सब साहब बजाय रहो ॥

सखा सखिन को सखी सखनको भक्तभोरत
रङ्ग छाय रहो ।

ब्रजमण्डल बीच धमार गोपो सब खेल रहो घन
ज्यों घुमड़ाय रहो

सूर श्याम श्यामा मिलि विहरत ब्रजकुञ्जन
उमड़ाय रहो ॥

११

आयो है फाल्गुन मास कहे सब होरी होरा ।
एक ओर हृषभानुनन्दिनी एक ओर हरि
हलधर का जोरा ॥

ब्रजनारी गारो देवे कौज भजि भजि आवत
तजि तजि खोरा ।

जान न पावै गहो री श्यामको सबे धरे
यौवनको तोरा ॥

रहि न सको कौज अपने घर मनो कामको
फिरो है टिंठोरा ।

कृष्ण जीवन लक्ष्मीरामके प्रभु सों होत है भक्तभोरो
भक्तभोरा ॥

१२

तुम चलहु सबै मिलि जाहिं खेलन होरियां ।
अपनी अपनी सुरङ्ग चूनरो मोतिन मांग भरो
रोरियां ॥

थरहरात अधरन पर मोरो अंगिया केशर बोरियां ।
चावा चन्दन अगर कुङ्कुमा भरि भरि लई
कमोरियां ॥

अङ्ग सुअङ्ग गोपाल विराजत भली बनी यह जोरियां ।
केहरि लङ्क नितम्ब विराजत गजगति चाल
चलोरियां ॥

पिचकारो मोहन पर डारत विहंसी घूँघट मोरियां ।
बाजत ताल मृदङ्ग और डफ पढ़ पढ़ बोलत बोलियां ॥
नयन आंज मुख मांड श्यामकी सब मिल करत
कलोलियां ।

सुरदास प्रभु सब सुख क्रीडत विहसत व्रजकी
खोरियां ॥

सिन्धु—भैरवी

आज सांवरे को मैं रङ्ग सो भरोंगी अबीर गुलाल
लिए मुख मोड़ोंगी ।
जो सांवरो मोसे एक कहेंगे एककी लाख करोर
कहोंगी ॥

२

जावो रे सइयां को ले आवो रे सइयां नहीं आयो रे
मेरे धन्य धन्य बढो है सुहाग ।
मैं सोती थो चढ़ मन्दिर में सुख नींदड़ी मैं तो
पड़ी हूँ अचानक जाग ॥

३

अंगिया बैजनी अटकीली है सुन्दर बाल ।
लाल पलङ्ग पर ज़रद किनारी ता पर उड़त गुलाल ॥

४

जब लालनको खबर पाई ऐसी होरो मैं खेलंगी
माई ।

तेल फुलैल सबो हम देवे अबीर गुलाल उड़ाई
यौवन हार मृङ्गार सब भूषण अङ्ग अङ्ग रई
हवि छाई ॥

५

सांवरेके चरित्र सुनो रो ।
एक समय व्रजकौ बनिता सब हर्षि चलीं
जल ओरो ॥
मञ्जन हेत धसी यमुना में कीई सांवरी कीई गोरी ।
करे जल सों भक्तभोरी ॥

वाही समय व्रजराज सांवरो अम्बरतट पहुंचो रो ।
लेके चीर कदमके जपर चढ़ गयो नन्दकिशोरी
सुदित मन आनन्द शोरी ॥
ताही समय सब टूटन निकसी काहू न द्रष्ट परो रो ।
ता में प्रवीण सखी एक बोली देखो कदम पर को रो
चोर सब के ले धरो रो ॥

जामें एक सुघर व्रजवनिता ऐम अधिक रसबोरो ।
शीर्ष निवाय कहत पट दीजे हा हा करत बहीरी
श्याम सों दोज कर जोरी ॥
बोले श्याम मधुर रस बतियां तुम सब लाज तजो रो ।
लाज छोड़ जब सन्मुख ऐही तौ पट देहों गोरो
टेक यह जानो मोरो ॥

तब सब मिल मन यही विचारो कृष्ण टेक
नहीं छोरो ।
लाज छोड़ जब सम्मुख भई वनिता ऐम प्रीति उरभो रो
वसन सब ही के दियो रो ॥
मोर-मुकुट-मुरलीवालेको यह होरो रङ्गबोरो ।
पलमें पार कियो भवसागर ता सो मन अटको रो
सूर सुरभावत गोरी ॥

६

व्रज में चलो खेलिये होगी ।
कञ्चन थार बनावो सखी रो तामें अबीर भरो रां ॥
भर भर लो रङ्गकी पिचकारी सब मिल खेलै चलो रो ।
ऐसो गति उनकी करो रो ॥

अबीर गुलाल कुड्कुमा केशर मोहन सुख ही
मलो री ।

नारो भेष बनाय श्यामको पीत पिछोरो छोरी
नचावो नन्दकी पोरी ॥

सब सखियन मिल धरो है कृष्णको दोज कर
पकरो री ।

आंख आंज लहंगा पहरायो चूनर रङ्गमें बोरो
कहे हरि हो हरि होरी ॥

पकर कान्ह यशोमती पै लाई मन भावतो करो री ।
सूर श्यामसौ फगुवा लीन्हीं मन इच्छाफल को रो
मोहनको रङ्गमें रङ्गी री ॥

मेरे सद्दयां के मन में परी है गांठ ए री ए मैं
कौन यत्नसों खोलूं ।

सब सखियां मिल बन बन आईं ऐ री ए मैं बैठौ
विष घोलूं अबकी फाग पिया भए वैरागी ननर नगरमें
ढढोलूं ॥

समुझ क्यों न दे रे ए रे कान्ह लाजकी गारी ।

ससुर हमारे अस्सो वर्षके सास हमारी बारी ॥

सद्दयां हमारे पलना भूलत हैं ह्रं मैं भुलावन हारी ।

अगर सुने मेरी बगर सुने रे सास सुने दे गारी ॥

भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी भोज गई तनसारी ।

मोहे भिगोवत मोहे विगोवत देत सबनमें तारी ॥

कहा भए ब्रजके ठाकुर तुम सास सुनेगी हमारी ।

ऐसो टीठ कछो नहिं मानत लोक लाज कुल डारो

कृष्णानन्द कहत हौं फिर फिर हौं तेरे वलिहारो ॥

काहे हमसे रुसे विधाता गुण अवगुणके ही

तुम दाता ।

तुम ही एक और नहीं स्वामी और भूठ जगत्

कर नाता ॥

जनकी चूक सदा प्रतिपालक गुण अवगुण कर सब

जग जाता ।

गावै गूदर जन शोक निवारण जस बालकके पिता
धीर माता ॥

१०

गोकुल कैसे जाऊं री दैया बीच वसे बटपार कन्हैया ।

ता मग नाच नचावत आवत मानत नाहिं न
नन्द दुहेया ॥

एकसे एक सखी गुण आगर मधुवन देखो न
कोई जवैया ।

गावै गूदर कोज कैसेके निबहै सब गलियन बिच
धूम मचैया ॥

११

वीते अवधि तेरो खेल न हुइ है यौवन अकार्य
काम न अइ है ।

जो ककु रूप संवारो नैहर अन्त समय कोई सङ्ग
न जइ है ॥

मिलनको आई सखी सहेली ऐसो पिया को कौन
मनइ है ।

गावै गूदर हम सासुर जावै नैहरमें को पार लगइ है ॥

१२

होरीके दिननमें गुमान करदा मोहना आवदा री ।

गावदा बजावदा सुरली सुनावदा सांवला मेरे मन
भावदा री ॥

१३

होरी खेलै ब्रजराज दुसारी ।

बालबाल बहु सङ्ग लिए गिरधर नव रसिया उमंग
अपारी ॥

रङ्ग रहे अङ्ग वसन आभूषण अवीर गुलाल कान्ति
छवि छारी ।

करनि कानक पिचकारी राजत चितवन मन
चित्त उरभारी ॥

वृन्दावनकी कुण्ड कुण्डमें रङ्ग रङ्गके फल खिलारो ।

रसिक सुगाल विलोकत शोभा निखप्रति राधावर
सुखकारो ॥

१४

तै तो मुख ह न बोलै री चुनरिया रङ्ग डारी हमारी ।
भर पिचकारी मोरे विरहने मारी भोज गई तन सारी
कृष्णानन्द मैं दासो तिहारी सुनिये अरज विहारी ॥

१५

तरे वधमें गोरी भोज गई रङ्ग रसमें चोलो नहीं
सांवलिया ।
रैन कहीं जागे आये बालम भूठी-भूठी खात
कसम दैया ॥

१६

जावो लला तुमसे को खेलै हारी धर बहियां
भकभोरी मोरी ।
यह मोहन तून मोहिनी डारी भर मारी छतियां
पिचकारी मोसो करत बरजोरा जोरी ॥

१७

मोरे होरो के खेलैया रङ्गभरी पिचकारो मारी रे ।
चोवा रे चन्दन और अरगजा अबीर लिए भर
भोरी रे ॥

१८

भोजत चुनरी प्रेमरस बूंदन ।
आरतो साजके चली है सुहागन अपने सइयांके दूंदन ॥
चट्टी गगन खुल गई किवाड़ी गुरुके चरण लागे
भूलन ।
सरस बन्द किनारी लागे प्रेमके लागे फूंदन
कहै कबीर गोरो यही विध भोज मिट गए
दुःख दूंदन ॥

१९

ए दोज खेलत फूले फाग री ।
आयो वसन्त फूले वन टेसू बोलत चातक मोर
जाग री ॥
उमङ्ग आनन्द अवधि अधकाई भूपहार होरो होन
लाग री ।
बाजत नृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग धनि मन्द खरन भए
मधुर राग री ॥

सुगत अवण शिव विधि उठ धाए नहीं भावत जप
योग याग री ।
इतते राम सखा सुर आए उत सोता लिए सखी
साज री ॥

लौन समाज सिया ललित लाडली करत हंसो रस
रूप राज री ।
अबीर गुलाल राम दिशि छूटत उत सोता लिए
अमृत गागरी ॥

मचो कीच मग बीच अवधपुर मुनि मण्डित मानो
मकर प्रयाग री ।
भोज जात तन चोर चादरे पट आभूषण उरमाला
चाचरी ॥

महाराज महाराणीको भयो है अरुण तन
नए बाम री ।
वे सखी ओट अटा चढ़ देखत रति मलीन
अति प्रगट उजाग री ॥

उभकि उभकि विधुवदन देखावत रस लसत डसत
मानो मन ही नाग री ।
ललिता रो सिय ललित लाडली चली राणी
कुलकान त्याग री ॥

लपट भपट गई लिपट लालको पिय प्यारीके
परम भाग री ।
फगुवा ले हौं तब जाने दे हौं भीने पट औ भपट
भाग री
तुलसीदास सङ्गुल जानके लीन्हों वरसे मूल मांग री ॥

२०

रघुवर से कहियो मोरी ।
सुनो हनुमन्त अज्ञानो नन्दन कहियो सन्देशा
निहोरी
सीस निवाय चरण गहे लीजो कीजे विनता मोरो
रामजू सो दोज कर जोरी ॥
अगुपति कीर्ति सुनी है जिनकी तिनको धनुष
जिन तोरी ।

ते भुजबल अब कितहि दुरावत रावण दुष्ट हनो री
 कहत यह जनककिशोरी ॥
 दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा खान पान विसरो री ।
 वन उपवर्षिं जाय परो हूँ तेरो ही ध्यान धरो री
 राम राम मुखसे कहो री ॥
 केतिक दूर लङ्कगढ़ तुमसे जिनसे सृष्टि रचा री ।
 हा रघुनाथ कौशिल्यानन्दन शीघ्र ही कष्ट हरो री
 भक्तन प्रतिपाल करो री ॥

कहै हनूमान् धीर धरो माता लङ्का करुं जिमि होरी ।
 रावण कुम्भकरण सब मरि हैं मेघनाद हनो री
 देजं तेंतीस बन्द छोरी ॥
 तुलसीदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अवधि
 आशा रची धोरी ।
 प्राणदान दीजे रघुनन्दन गावत कीर्ति तोरीं
 प्रीति अब करहु बहोरी ॥

२१

दशरथनन्दन जनककिशोरी अति सनेह अनुराग
 लाग री ।
 अवध कुंवर प्रिय चतुर शिरोमणि जनक लाडली
 परम नागरी ॥
 सिया गात रङ्ग श्याम चुनरिया लालनके शिर पीत
 पाग री ।
 जगमगात भूषण अङ्ग दम्पति रत्न यत्न मणि
 जरी तागरी ॥
 प्रिय गुलाल भरि फेंट कुङ्कुमा सीय सखी लीन्हें
 रङ्ग गागरी ।
 मलत गुलाल सीय मुख लालन लालन मुख सिय
 मलत आगरी ॥
 गाय बजाय खेलते होरी अवध पुरीके भाग्य जाग री ।
 सखी जानकी प्रपन्न सीय सङ्ग नाचत होरी
 गाय राग री ॥

दोहा

अवधराजके लाडली छवि सालनी प्रिय तोर ।

सखी प्रपन्न जानकी मोह सखी मति मोर ॥
 अवध शोर होरी परो चलो सकल नरनारि ।
 सखी प्रपन्न जानकी सब विधि सुखी निहारि ॥

२२

वरजत री रङ्ग डार दियो अब डारोगे तो जानोगे ।
 अंगिया भीजो खुश रङ्ग सारी गारो देगोजं तो
 मानोगे ॥

२३

कौन तरह से फेंकत ही जू अबोर गुलाल
 होरोके दिनन में देखो लला भेरो आंखन खटके ।
 काह सो न डरों मैं तो तुम सों लरोगो पाग
 भिजोजंगो अबकी फागमें जैसे श्याम मोरो चुनर
 भटकै ॥
 रङ्ग भरे कुङ्कुमा जो प्यारे मेरे पिचकारिन होइ
 टटके ।

जिन त्रियनमें मान करत हौं उनह को सुख ले
 मलो उमङ्ग सो अपनी बार देखे कैसेके मटकै ॥

२४

मिथला दोऊ होरी मचाई ।
 इतसे कुंवरी जनककी उतसे अवध कुंवर रघुराई ॥
 केसर रङ्ग गुलाल परस्पर डारत मोद बढ़ाई ।
 मनहुं मेघवा भर लाई ॥
 बाजत वीण मृदङ्ग मञ्जीरा जरतरङ्ग सुरनाई ।
 सखिन घेर सिय वल्लभको तब पकरि लली
 टिग लाई लालको नाच नचाई ॥
 कर सों धनु शर छीन वनमाला सारी नील ओढ़ाई ।
 नय चूरी चक्षु अस्त्रन रक्षित जावक पग दर्शाई
 मनो नई नारी बनाई ॥
 अब सब भूल गए मनमोहन कहां खोई चतुराई ।
 नेह नहीं हम आप लगावें कहां कौशल्या माई
 तुम्हें जो लेत कुड़ाई ॥
 विन पाए फगुवा नहीं छोड़े कोटि करो रघुराई ।

सैवक शर धर सब रस चाख्यो तुम चित्त चोर चवाई
सदा सौगन्ध खाई ॥

हसत लसत रचि फाग जनकपुर सखी सखा
अधिकारि ।

सीताराम युगल जोरी पर सखी जन तो बल जाई
प्रेम हिय रझो समाई ॥

२५

जनक पुरकी सखियन के सङ्ग होरी खेलत
चारो कुमार ।

अबीर गुलाल कौ फेंट भरी है मारै केसर पिचकार ॥
बाजत मृदङ्ग वीणा मुहचङ्ग गावत दे दे तार ।

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न उत जानकी सङ्ग लिए वार ॥
सीता रामको राम सीताकी बोलै हो हो
होरी पुकार ।

रामदास प्रभुको छवि निरखके वार वार वलिहार ॥
२६

मेरा सीता सन्देशा जाइयो पुन मैं तैड़ी बल जादियां ।
पुन टूट्ठन नू हों जो चली रो वैरीने बोया कांटा
के पुन मोड़े आन मिले नाहीं तो मरना कबूल ॥

२७

श्यामसुन्दर सङ्ग खेलत होरी ।
गोपीवन्द रूपगुण आगर तिन मध्य श्रोत्रभानु
किशोरी ॥

ताल मृदङ्ग बजावत गावत अबीर गुलाल
सङ्गावत गोरी ।
जानकीदास निरखि दम्पति छवि हर्ष हर्ष
भारत ढण तोरी ॥

२८

श्यामसुन्दर सङ्ग खेलन पाइयां ।
रङ्ग रङ्गीली धारी खेल छवीली चञ्चल चपल
अङ्ग दिग्य धाइयां ॥

अतर गुलाल अरगजा केसर पिचकारी भर भर
रङ्ग बरसाइयां ।

जानकीदास विलास सकल सुख निरख निरख
ब्रजमोहन को सुख हर्ष हर्ष हिय मोद बढ़ाइयां ॥

२९

बागबहार निरखत वन रानो ।
सब सज आई सहेली ग्वाल कहत मनमोहन जानो ॥
सठ धाए वनवारी बागमें छिप रहे कोऊ न जानो ।
जब राधामोहन गुण गाए वंशी शरत् सुनानी ॥
धाय आई जहां मोहन ठाढ़े कर धर मृदु मुसक्यानी ।
फूल रही गुलाबों दी कलियां आनन्द मग्न मनमानी
प्रेमरङ्ग वृन्दावन विहरत जहां नन्दनन्दन वृषभानु
राजधानी ॥

३०

निडर डगरके कगर ठाढ़ो रे ।
हम जानत हैं सब बात विहारो ग्वालबाल क्यों
पुकारो रे ॥
आज हमारे साथ सङ्गातिन चकित चौक क्यों
निहारो रे ।
फाल्गुनके दिन भाग्यन पाए अबीर गुलाल संभारो रे
प्रेमरङ्ग से भिजाय पाग पट सोहत श्याम सो
हारो रे ॥

३१

कारो कामरवारी काहा मैं ना खेलौं तो सो जो मैं
होंगी ब्रजरानी ।
दान देत मटकी दे पटकी अटकी विलास करो
कहंत मोड़े सो वार वार बोरानी ॥
भाज गई सङ्गकी सखियां सब दुर्जन लोक निहारो रे ।
प्रेमरङ्ग प्रभु मोड़े न सुहावत सबसी न हमन
विसारो रे ॥

३२

विरम रहे कासे खेलूंगी फाग ।
हित चित्तकी न कही सुनी आली मोड़े दियो वैराग ॥

३३

यसुना कैसे के जालं रो होरी खेलै मोहन पनघटवा ।
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लै वंशी अटकी तटवा ॥

वीणा मृदङ्ग बजावत छफ मुरली नाचत सङ्गीत
छ्यों नटवा ।

रसिक कृष्ण प्रभु खेल प्यारे धम मचाई नन्द महरके
नागरनटवा ॥

२४

कहीं उरभे श्याम गोकुलमें मैं तो टूटूँ फिरी
मधुवनमें ।

ऐसा यतून बतावो सखी रा जो पिया आवै
फाल्गुनमें ॥

विना फगुवा लिए जान न देखौं याही बात मेरे
मनमें ।

धूम मचै हं अबोर उड़े हं रसिक कृष्ण रङ्गी रङ्गनमें ॥
२५

आए री श्याम नहीं आए यह फाल्गुन विरह बढ़ाए ।
इस कुवरीने कहु मन्त्र पढ़ो टोना कियो राखे
हरि विरमाए ॥

मैं लीके लाल गुलाल लाल विन क्या करूं मोहे
विन वीरन न सुहाए ।

मोहे रङ्ग भयो बेरङ्ग रङ्गीले श्याम विन मेरी
उनसे व्यथा सुनाए
मेरी बुद्धिविहारी लाल सो इतनी जा कहो मोहे
अबके आन जिवाए ॥

२६

बुभावो फाल्गुन चलो जात पिया को ले आवो री
मेरे विरह की आग ।

मैं तो सोती थी मण्डपमें सुखनींदरो मैं तो परी हं
अचानक जाग ॥

२७

कोई पिया मनाए ली चार दिन फगुवाके बहार री ।
कृष्णानन्द कहत पुकारके यह भूठो संसार री ॥

२८

होरीके दिनमें कन्हैया भला अब तोरी बन
आई हो ।

जब रहे राज्य हुक्म कांसासुर तब कहां नन्द
दुहाई हो ॥

तब रहे वन वन गज चरावत अब पाई
ठकुराई हो ।

अब तुम छोड़े पीत वसन तन कामरिया
विसराई हो ॥

नेन अनन्त नेहके गाते कहो सखी तुम्हरी बड़ाई हो
राज्य दई प्रतिपालके ठाकुर युग चारो चल आई हो
गावै गूदर प्रभुभक्त जान के लीन्हें अह लगआई हो ॥

२९

होःहोरोके खेलैया सद्दयां मारे मोके गरवा न
लगावत ।

वालापनको नेह विसारो सेजरिया नहीं आवत ॥
ऐसा नहीं मित्र कोज जग माहीं चूक मोरो
बख्शावत ।

गावै गूदर सद्दयां चतुर खेलारी वाको कोज
समुभावत ॥

३०

होरीके खेलैया मेरो अबधि वीत गई सारी हो ।
सब रङ्ग नैहरमें हम खेलि गंवाये मोहे निडर है
सासुरारी हो ॥

निशदिन चितवा नजर न आवै बालम सुरत
विसारी हो ।

विना प्रिय पीतम कर्म विहीनी सर्व खेल गई
हारी हो ॥

अब प्रतिपाल करो मोरे स्वामी अपनो ओर
निहारो हो ।

गावै गूदर गिर दियो है सद्दयां परदेह डारो हो ॥

३१

कासन फाग खेलीं जगमाहीं वीते अबधि सद्दयां
माहीं अह है ।

फाल्गुन जह है बहुर फिर अह है गयो यौवन फेर
नहीं रह है ॥

यौवन जोर छाँड़ तब वरकी पल ऋण ठरत ठरत
ठर जइ है ।

बालापन खेलत में खोयो तरुण विषय हृद चिन्ता
जरइ है
गावे गूदर सब फाग खेलै जग हमरा सइयां कबहूँ
सखी अइ है ॥

२१

खेलनके में जाऊँ देया मोहि यों हो सतावे ।
सास खेलै और ननद खेलै और खेलै देवरानी जठानी
सङ्गकी सखियां सब ही खेलै मोहे सास तो
लाज बतावे ॥

वाखलमें मोहे छोड़ जात है रङ्गसे भरो सब आवत
है मोहि तो दाव बतावे ।
अचपलके देखनको ए सखी देखनको भेरा जिया
ललचावे ॥

२२

तेरी हमसे कइ क्लिपावे छिनरिया भीज गई
सन सारी ।
कर सुकरावत काहे दुरावत नैन मिनावत दारी ॥
वसन भूषण तेरे कङ्कके क ' कुछ रङ्ग परो तो
पै भारी ।
तू जो गई खेलनको अचपल अबके फाल्गुन तेरी
बारी ॥

२३

कौन शहजादानी तेरी बोलियांनि ठोलियां ।
मोहे पड़ो डर गुहजन दी तू गारी गादा रङ्ग होरियां
ऐसी न कोजिए निडर नन्द दे केसररङ्ग भिजई
मोरी बोलियां ॥

२४

बन आई है चतुर नारी होरी रङ्ग भरी ।
सूझो सारी घेर घाँघरो अंगिया बूटेदार रीरी
आड़ धरो ॥
मोतिन मांग भरी वनिता के मानौ गङ्गा धसी
हरिहार अञ्जन देख धरो ।

छूटी लट वनिताके मुखपर मानौ नागिनी सो
उस जाय बेसी पीठ परो ॥

चिन्म—धमार

बाँह कुवो जिन कान्ह हमारी हों जानत हों
तिहारी रीति ।
घोरन सो होरी खेलत ही मोसों करत मुख
देखी प्रीति ॥
जावो लला उन ग्वारनके टिग बाँहो सुनावो विरह
की गीत ।
कैसे जिय पतियाय दर्श विन सुनो न राजा
काके मीत ॥

चिन्म—यत्

मदमाती नारी घर हूँ कैसे आवै ।
तोरी बाँह बनी पङ्घुँची जब वाङ्गकी दोष लगावे ॥
चिन्म—बांसवाड़ा-यत्

चल देखन जइये आज दुलहन बन आई ।
घर घरते सब बन बन आई लै लै रङ्ग सब रसभरे
छूटी लट मुख ऊपर आई घंघटके बल जाई ॥

२

लला यह यौवन मतवारे अंगिया रङ्गराती ।
होरीके रङ्गमें गोरी बनो सुसकाय चली चित्त चोरी
सांवरे से लंगवार खड़े अरे ठगवारेने गारी दीनी ॥

३

श्यामा श्यामके सोंधि भोने बाल ।
इतते आए श्याम मनोहर उतते गोपो ग्वाल ॥

४

होरी खेलन आए कहु खेल न जानो ।
उर वनमाला गली पग लो करमें सुरली मुख पानो ॥
चन्दन भाल विशाल पिताम्बर पाय लगी याही बानो ।
जो लगी नारी खेलारि न जाने मोहन कौन्ह पयानो ॥
तो लगी जाउ चले चुपके गृह वेग सिखावन मानो ।
जो हठ ठान रहोगे इहां तो परमरङ्ग यह जानो ॥

वर वश गड़े कर है लखनागन ।
गाल गुलाल मला अलि आयो अनोखा खेलैया
ऐसो खेल कबहूँ नहीं दीख नयन ॥
खाल गुलाल दूरतें डारत टारत अखल लेत वलैया ।
ले पिचकारी चलाव भायसों हाथ जोरि पग परत
कन्हैया ॥

बांके नयन सन करत सैन भीरन भीर चिते टग
कोर निहोरत चोरत चित्त चलया ।
गावत गारौ जीय जोई भावत धावत म धमारि
मचैया ॥

करत परस्पर सरस सैन अरु भर हरि परम
रङ्गसो लगत नाहिं न नेक उपैया ।
कहा करूँ अब जाउं कहां भजि कान्ह भयो
कुलकाम हरैया ॥

सिन्धु—काफो

आज खेलौंगो होरो श्याम मेरे हारे हो आय आय ।
युक्ति सों अचरा पकर कर ठाढ़ी फगुवा लौंगो
मनाय मनाय ॥

हमारी अंगिया सब रङ्ग बोरी अपनी पाग
बचाय बचाय ।
कृष्णानन्द वलिहारी मन मोछो रागिणौ गाय गाय ॥

२

खेले सांवरो होरो यमुनाके तीर ।
बाजत ताल नृदङ्ग भांभ डफ खरधनि मिल उठत
गभार ॥
सुन धनि मन्द मधुर सुरलौकी मुनिजन धरत न धोर ।
दुरि मुरि भ्रपट लपट नन्दनन्दन केसर
छिरकत नीर ॥

बहियां पकर मुसक्याय राधिका हरि मुख लाय
अबीर ।

ओरसरङ्ग रीभ यह ब्रजकी हम क्यों न होत अहीर ॥

१

मैं गमने नहीं जइहूँ रे राम ॥

नवल बहुरिया चली गमनेका कर दुलहनके भय ।
नयन रोवै जी हंसै मैं तो चली हूँ पियाके देय ॥
गमने न जइ हूँ टोना करि हों नेहर धूम मचे हूँ ।
जो जो मेरे गवनेकी बात चलैये वा पर माहर खैहूँ ॥
चलत चलत मेरे पाव पिराने जेहर भर गई धूर ।
मैं तो हूँ पूछूं बाट बटोहिया नेहर केतिक दूर ॥

सिन्धु—भैरवी

ऐसो फागु मचाए खेलन पुरवासी आए ।
केसर रङ्ग बनाय विविध विध होज फुवारे भराए ॥
गड़े बहियां एक एक को लै लै तिन मध्य
तिन्हें न्वाए ।

बाजत ताल नृदङ्ग भांभ डफ लै लै जंचे खरन
मिलाए ॥

बेषु वांशरो बाजै मधुर खर सुन गन्धर्व लजाए ।
अटन चढ़ी निरखत सब नारी फेंकत कुडकुम
गुलाल उड़ाए
नील पोत पटको चमकन में मानो घन दामनी
छिपाए ॥

२

सखी यशोदाके ललाने मोड़े गारी दर्ई रे ।
डगर चलन नहीं देत काहुको ऐसी करत नई रे ॥

२

आज सोहाग को रेन बनासे नेह लगाया ।
बनरी बनरा युग युग जोवै बनरो ने भर पाया
कृष्णानन्द यही सुख जग का जो टूँड़ा सो पाया ॥

४

खेलन आई रङ्गराती होरी बाल ।
सांवल गोरी ले लै दीरो भर भर मुठी गुलाल ॥
इतते आई नवल राधिका उतते आए मन्दलाल ।
इनके सङ्ग सब गोप वधू हैं उनके सङ्ग सब बाल ॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है यह दिन दोनदयाल ।
मन माने का फगुवा लै हों जे हो कहां गोपाल ॥

१
आज ब्रज होरी खेलै नन्द साङ्गलो ब्याल बाल
लिए सङ्ग ।
उफ धंकार सुरली खर मिलकर बाजत वीणा मृदङ्ग ॥

६
देखी देखी सखी रो लालन आए मोरे ।
डगमगात पग धरत धरणी पै आए खोल तन
टगन की कोरे ॥

बदल गई बनमाला गरीकी कुट रही पीत पीछोरे ।
छविनायक मुख द्युति कहलानो जैसे चन्द्र भए भोरे ॥

७
छाड़े छाड़े हँसवा बहियां नाहों मरोरे ।
नाहक रार करत हो हम सो काह लीन मैं तोरे ॥
घाट बाट मेरी कहू न जानी भूल परी याही भोरे ।
छविनायक भई बार जान दे अब नहीं अब हों
बहोरे ॥

८
सखी ए रो तुम्हारे यौवन बटपार ।
चलत मुसाफिर मार लेत हैं प्रेमकी फांसो डार ॥
जीन फांसो नहीं छूटन पावत कर नहीं सकत पुकार ।
छविनायक जगमें सोई बाचे जेहि राखे करतार ॥

९
होरी खेलै राधामाधव ब्रजकुञ्जनकी खोरो !
अबीर गुलाल उड़ावत गावत वसन केसर रङ्ग बोरी ॥
मृदु सुसक्यात परस्पर ठाढ़े श्याम राधिका गोरी ।
ब्याल खुशाल करत नन्दनन्दन चितवनमें
चित्त चोरी ॥

१०
जावे रो पिय पास खबर मेरी कीन सुनावै ।
सब सखियां मिल बन बन खेलै सो जियरा पछतावै ॥
ना हमको पतियां लिख भेजे ना फिर आप ही आवै ।
सोच सोच तुम दिन दिन वोतत रैन नौद
नहीं आवै
काजम प्रियकी आशा लगी है ना जानों कब आवै ॥

११
नन्दनन्दन ब्रजराज कहेया मोसे नाहक रार करो रो ।
हृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें बहियां पकर मरोरी
कृष्णानन्द न्योछावर तन मन कर दीहो मैं तारी ॥

१२
सदयां विदेश गमन कियो है का सङ्ग खेलूं फाग रो ।
जिनके सदयां नित घर हो रहत हैं उनके धन्य धन्य
भाग रो
कृष्णानन्द रहत निशिवासर श्यामचरण मन लाग रो ॥

१३
छैलवा बहियां पकर मुख मोजन लागे अब तो
तोरो बन आई रे ।
हमारे सङ्गको दूर निकस गई मोहे अकेली
कर आई रे ॥
हा हा करत हों पैयां परत हों जिन कोउ देखै
कन्हाई रे ।
कृष्णानन्द मोहि ब्रज वीथिन लियो श्याम अपनाई रे ॥

१४
बावरी मोहि कर गयो योगी ।
रूप मोहनी डार कियो मोहि सिसकत हों
ज्यों रोगी ॥

पहिले भीठो बात सुनाई पाछे किए उ वियोगी ।
कृष्णानन्द ध्यान निशिवासर तेरे हि मिलन संयोगी ॥

सरपरदा—तिताला

मनमोहन पिया होरी खेलन आए जागे सखी
मेरे भाग रो ।
कञ्चन थार कुसुम केसर रङ्ग सुमन सुगन्ध पराग रो ॥
अबीर गुलाल अतर अरगजा देहों श्याम पै डार
रो खेलों मैं हरि सो फाग रो ।
धन्य धन्य कृष्णचरण सखी पाए फगुवा ले हों लाज
त्याग रो ॥

२
मनमोहन मन ही में मेरे होरो खेलन कहां
जाऊं रो ।

पूरणब्रह्म भिरे घट हो के चन्द्र नाहक, क्यों
भटकाजं री ॥

ज्ञानको झूझ ध्यान पिचकारी अपने सदयां सो
रङ्गाजं री ।

भांति भांति को रङ्ग बना है एक ही रङ्ग रङ्गाजं री ॥
नटवा एक कला बहु तेरो पार न पायो काजं री ।
माया मोह भ्रम सब त्यागी तौ कृष्ण रसिक
दर्शाजं री ॥

याही सोचमें भई हूँ बावरो रैन गंवाई सोय ।
हमरी चुनरिया पियकी पगरी दिन दिन मैली होय ॥
पियकी प्यारीको को समुभावे जो पिय चाहे सो होय ।
टांडा लाद चलो वनजारा हालर हालर होय ॥
बाला रे पन सब खेल गंवायो तरुण तिया मुख जोय ।
हृह भए बहु चिन्ता बाढो नैन गंवायो रोय ॥
क्या सुख ले घर आजं संझ्यांके बैठो हूँ यौवन खोय ।
सोवत सोवत बहु युग बीते ना जानों भिरी क्या
गति होय
शाह कबीर दया सत् गुरुकी गुण अवगुण सब
गए हैं धोय ॥

कारी कामर वा पै कैसे कुसुम भिरो मन तो सांवल
रङ्ग पाग्यो है ।

सोवत जागत विहरत निशदिन हरि चरण चित्त
लाग्यो है ॥

कामिनी कामिनो कामसे लागत मोह मदन मन
त्याग्यो है ।

पौर रङ्ग मोहे नीको न लागत मोहन रङ्ग मन
पाग्यो है ॥

भांति भांतिको रङ्ग बनो है कृष्ण रङ्ग अनुराग्यो है ।
काम क्रोध मद लोभ मोह सब देख दूरते भाग्यो है ॥
सुरदास प्रभु हरि चरणनमें स्मरण चित्त
अनुराग्यो है ।

कहे कबीर सुनो भाई साधो आनन्द अनाहत
जाग्यो है ॥

सदयां नहीं घर मोरे री सजनो का सङ्ग खेलूं मैं
होरो री ।

कृष्णानन्द आनि मिल प्यारे विनवत दोऊ कर
जोरो री ॥

फागकी घातें सौ सौ जाने ऐसे खेलारी सों हरिए री ।
सब सखियां मिल बन बन पारिं लै गागर रङ्ग
भरिए री ॥

अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकादिन रङ्ग
हरिए री ।

जहांपनाके चरणन नीचे चल गोया घर करिए री ॥

आमदा बूदं रफता बूदं ए बीबी होखी कुजा
बूदी तुम ।

दर दीलत पर चल शाह यमनके बजावत मृदङ्ग
खेलके खर रङ्ग गाय बजाय दिखा बूदी तुम ॥

ओ यशोमतीके टीठ लंगरवा काहे को मो को
रङ्गमें बोरे ।

क्यों तोरी होरोमें आग लगाजं पैड़ पड़ो है
नाहक मोरे ॥

तोरी प्रीति को कौन ठिकाना ऐसे के जोरे ऐसे के
तोरे ।

प्रीति की रीति तुराब से सोख ले जियत मरत
कवई नहीं होरे ॥

आयो री आयो वसन्त सुहावन ।

आवो री सखियां सब हिल मिल के नए नए रङ्गसों
वसन रंगावन ॥

नई बहार नई फटतु लागी नई नई कविसों
पियाको रिभावन ।

अबकी वसन्त पिया अङ्गनमें आए मो घर फागु
मचावन
भई तुराब पियाकी छापा काड़े न होरीकी
धूम मचावन ॥

१०

कासे खेलूँ मैं होर। हमरे तो सङ्गकी सभौ
मतवारी रे ।
भर पिचकारी मुखपर मारी बोर देत रङ्ग सारो रे
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गकी परत फुहारो रे ॥

गारा—वत्

महरामें ध्वनि धुकार मची ।
तब खेलन लाग हो होरी आनन्द सुख सो रची ॥

वङ्गल—धमार

ए रो हो यह मान लेहो जू बात भली बुरी ऐसो
अन्तर जैसे दिन भी रात ।
प्रथम विहस मधुकर ही लगत है पाछे मन पछतात
बासपनो भी तरुण वृद्ध गुरु सो समझे जात ॥

२

पियसों कैसी होरो खेलों सखी रो मोहनसों जाय
अपनो जिय जाने ।
चोवा चन्दन अबीर कुङ्कुमा केसर रङ्ग भोकोँ तब
मेरो मन माने ॥

३

अमक अगला सो आई फाग खेलनकी चोप ।
ऐसो रूप बिराज रहो है जैसे कनक धरो घोप ॥
वर्ष वर्षके बाजे बाजे सुनि जुर आए गोप ।
छविनायक भुजा गड़े गर लाई लख सखी भई अलोप ॥

४

आए कुंवर कान्हेया आज ।
काङ्ग सो लपटत भपटत दपटत रङ्ग भाए चाए
करत लीन्हें नामा साज ॥

५

सरो दोख सीते आज सरो ।
घर घर नाक अङ्गरिया बोलत रोशन जात करो ॥

६

आली रो नरनारी बौरानी बहुर हो होरी में
धूम मचाणी ।
कौन कौन पर भीर परी है काङ्ग काङ्गी न जानी ॥

७

एहो फिरत या गोकुलमें ए रो वो तो श्याम कहावै ।
जा बातनते साज लगत है तेहो बात सुनावै ॥
ज्यों ज्यों खोजे मन ही मन में त्यों त्यों अङ्गुरी
नचावै ।
कारो वदन अचपल बांको रो दौर हो दौर मेरे आवै ॥

८

या ब्रजमें को खेले दर्ई होरो ।
अबीर गुलाल आंखनमें डारत ऐसी कहा जोराजोरी ॥
माथे तिलक गरे जयमाळा गरवा लगार्ई वरजोरी ।
रङ्ग पिचकारो छिप छिप मारत मुखसों बोले
हो हो होरी ॥

९

मोहन होरो खेले आज ।
वीणा रबाब सृष्टङ्ग भांभ डफ सब ही बने हैं साज ॥
केसर रङ्ग धरी भर गगरो तुम आवनके काज ।
सखी समूह भाग्यन हम पायो दूर करो यही साज ॥

१०

यौवन मदमाती गुजरिया कर आई पिय सों रार ।
भर मारी पिचकारी चुनर पर मोहन अतुर खेसार ॥
चोवा चन्दन अतर अगरोजा मुख मोहो कर प्यार ।
छविनायक यह जीवन को फल मिलों गर
बहियां डार ॥

११

भ्रपट पिचकारी मारी निपट निडर रङ्ग भरके ।
अब कैसे जाऊँ ब्रज मोरो सजनो सब वैरो भए हैं
अरके ॥
ता पर वरवश अङ्ग लगार्ई कर दोख कर सो
पकरके ।

हविनायक मोड़े जब सुध आवे छरका रहों हिय
धरके ॥

१९

मोरी छत्तियन मारे गेंदवा री होरी अब न जंहीं
खेलनवा ।

अबीर गुलालको धूम मचावे मोरे सुखसे मले
अबिरवा

होरी खेल मोड़े गरवा लावे ऐसो ठीठ निलजवा ॥

२०

ए री कुंवर कन्हैया चलत फिरत मेरे गोकुल में
पास ही पास ।

घरते निकसवो दुग्धवार भयो मोड़े आन परो एक
गाँवको वास ॥

उरत फिरत मन ही मनमें नाहिं न सुन पावे
मेरी सास ।

पकर कोरे छिपत हैं ऐसे अचपल जो फूलनमें वास ॥

२१

भैरी अङ्गिया भोज गई सारी हां रे लाल पिचकारी
न मारो ।

भर भोरी अबीर गुलाल लिए है मेली छतियन
पर पिचकारी जिन डारो ॥

विभाग—चावर

मैं छिरको तोपे गुसैया मोरी रङ्ग से भर दे गगरिया ।
वो ही रङ्ग मोड़े रङ्ग क्यों न दे रे रङ्गू तोरी पगरिया ॥

विभाग—धमार

मोहन मो पै रङ्ग न डारो मैं तो भई हं रङ्ग
सरबोरी ।

भर मुठी अबीर गुलाल डारो बोलत हो हो होरी ॥

२

चला री आज कान्ह सो होरी खेलें यामें कहु
लाज नाहीं ।

अपने जियमें विचार देखी ऐसो जो वर है जगमाहीं ॥
सुर विरधि मईश जे हि ठूँड़त नहीं पावत

तेहि काहीं ।

धन्य भाग्य वाके दर्य जो हरि सङ्ग रहत डार
गरवाहीं ॥

३

एरी यह फाल्गुन वीतो जात सखी री कब
खेसौगी होरी ।

है अभाग्य धिग् जीवन उनको ज्यो होरो में कोरी ॥
जोवन सुफल आज है उनको प्रेम पिया रङ्ग बोरी ।

अथ अथ पल पल अवधि घटत है रही जात
अब थोरी ॥

निकस जात पर हाथ न आवे ज्यो पतङ्गकी डोरी ।
लोक लाज कुलकी मर्यादा यह सब मन सो तोरी
दिलमिल एक रङ्ग हो बैठो मग्न रूप हरि सो री ॥

४

हां रे होरो हो रहो ।

सब ही सुहागन खेलन निकसी हों ही दुहागन
सो रही ॥

५

यह निघरक भयो ब्रज में खेलत हो हो कर होरो ।
कैसे के निकसो मग में सजनी सबके मुख मोड़त
है रोरी ॥

रङ्ग डार गयो मोड़े सरबोरा कहा कहु मो पै
पढ़ डारो री ।

सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति बहियां मरोर मोड़े
भक्तभोरी ॥

६

रे जधो को खेले ब्रज होरी ।

मन हर लीनों नन्दनन्दन जू कुंवर राधिका गोरी ॥
अन्तर गति को व्यथा हमारी जानत नाहिं न कोरी ।

कहा कही विश्वासी सुर प्रभु सो प्रीति अचानक
तोरी ॥

७

जोवन को गोरी अङ्गिया में जो छिपावत री ।

अति मदमाती चाल चलत है देखत मन
बसचावत रो ॥

८
 ऐसे ठीठ कन्हैया सेन मोहे गुलावत री ।
 इन्द्रावनकी कुण्डगलिन में फिर फिर बोषा
 बजावत री ॥

९
 जा सों प्रीतिरीति करि मानी लालन वाही के रहिये ।
 तुम सांचे कि धों वे सांचे हैं सोहैं करि कहिये ॥
 गुण गरबीले गुण न गनत हो यह जोह कैसे सहिये ।
 आए हो बलिहारी प्रण करि तुम्हें न ऐसे कहिये ॥

१०
 लाल कैसे भलकत आवत यह तन में वाकी
 यौवनकी धूम ।
 यह शीश में रङ्ग केसरको समंगे भावत जाके
 उमङ्ग की झम ॥

११
 होरीके दिननमें कान्ह करत बरजोरी ।
 यमुना निकट पनघट वंशोवट चेरि फिरि चहुं ओरी ॥
 ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लै भरे द्वारे आय ओरी री ।
 जानकीदास रसिक ब्रजमोहन गोहन रहत परो री ॥

१२
 कहे सब होरी होरी मची है धूम चहुं ओर ।
 चार दिना हंस खेल ले प्यारि आवत होरो भोर ॥
 एक दिन धूर उड़ेगो आखर बचे नहीं कर कोर ।
 जानकीदास शरण सत् गुरुकी उबरे गगनको खोर ॥

१३
 आज मैं निहारे आली रैन में महल माहीं लाल
 गुलाल सो रङ्ग रगमगी ।
 पेंच छूटे पागके अटपटे बोले बैन नयन सो उनींदे
 नयन सुगन्ध सगमगी ॥
 सुन्दर सलोने गात अलसात जंभात देखत नयन
 अघात मणि नग सो जगमगी ।
 विवश अनेक प्रेमरङ्ग अङ्ग लाय धाय धाय सोह
 दे सोवाए तक नैक न उगमगी ॥

१४
 जासंगौ गंवार खेलारी आंखिन डारो पियकारी ।
 नई सुरङ्ग सारी भिजवत हो कहा यह बात तिहारी ॥
 अबोर गुलाल अकाश पे डारत आली खड़ी
 सब न्यारी ।

मो पै भक भक भपट भपट अहो प्रेमरङ्ग
 प्रभु तिहारी ॥

१५
 होरीके दिननमें मेरा मन लीता ।
 भटक लई मैड़ी सुरङ्ग चुनरीया सुखन गालों दीता ॥
 अबोर गुलाल भर भर के डारदा भए उसदे
 मन चीता ।
 पुरुषोत्तम प्रभु सांवरि गबरु साड़े नाल करो मीता ॥

१६
 ब्रजमें धूम मची खेलत होरी उफ नृदङ्ग धुधुकार ।
 ताल पखावज आवज वंशो और बाजत कठतार ॥

१७
 लाल तुम खेले कहां हो होरो खेलन की यह रीत ।
 नख शिख भेष बनाय गोपिन को छलन आए
 मोहे मीत ॥

कर कपटो भूठी सुख बतियां याह ते लियो जग जीत ।
 कोटि उपाय करो इन्द्रमणि प्रभु इहां नहीं है प्रतीत ॥

सोरठ—धमार

यौवनकी मदककी डोरि नारो मतवारी करे
 कस्त सङ्ग रङ्गरलियां पुनी ।
 लरे भगरि मुख मीड़े सबनके कोज उर कुवे खीभि
 दुनी ॥

रङ्ग वरसे जैसे ऋतु वर्षा में गुलालको बादर उनी ।
 वामे त्रिया मुख यों दोसे मानो जैसे निकस्यो शशि
 शरत् पुनी ॥

१
 निपट रङ्गभीनी देखियत है तू आज नार ।
 उसटी अङ्गिया माथे टेढ़ी सारो की कोर सोहत
 है भलके बिधुरे वार ॥

लपट भपट मोहन को पकरत गावत दे दे तार ।
खेल रचो वृन्दावन वोधिन राधे मन्दकुमार ॥

१

हो हो होरी खेलन आए अहो मेरे आए ।
बलिहारी तेरे पायनको शोभा आन देखाए ॥
धन्य भाग्य मेरे है सजनो मोहन दर्शन पाए ।
पलकन सों मग भारो सखो रो मनवाञ्छित
फल पाए ॥

४

तुम विना हिय में भई पौर अति भारी ।
आय मिले होरोमें महम्मद शा सदा रङ्गोले बारी ॥
चहँ आर डफ बाजन लागे अज हँ सुध न संभारी ।
या होरो मेरे कैसे कटेगो विरह पौर अति भारी ॥

विहाय—धनार

राज हाँ ऐसो चहल सों होरी खेलत महाराज
श्रीनाथ ब्रह्मादुर कोज न खिले इस रङ्ग सों ।
नर नारिनको जूरो वस्त्र पहरायके तःये भोडर
अवार जूरतार उड़ावत है इन ठङ्ग सों ॥
चन्दन चन्दन बुझा रोरो अतर अरगजा
गावत रागरागिणी बाजत ताल मृदङ्ग सों ।
होरो धूम मचौ अति भारी रङ्ग नाचत है सब दं दे
तारी लपटत है सब अङ्ग सों ॥

सिंहूरा—धनार

तब जानोगी चतुर खेलैया होरी खेलन मोसों
आवोगी ।
हमरी चुनरिया रङ्ग सो भिजोई अपनी पाग अचावोगी
कृष्णानन्द कहत गिरधारी रस सागर सुख पावोगी ॥

२

यौवन मदमाती ग्वारनो ऐड़ी डोरे कुम्हानमें ।
नयन रतनारे कज्जर भरे तन छाया रहो में
यौवनमें ॥

१

मन्दके खेल छाड़ दे गेल जिन कुवो मोरो गगरिया ।

हा हा करत हँ पहयां परत हँ त्यज देहो मधुरा
गगरिया ॥

केयर रङ्ग को भेह वरसावत है इत अबीर छाया
रहो बदरिया ।
जैसी भोजी मोरो सुरङ्ग चुनरो तैसी भिजोई
पगरिया ॥

४

मार्हंगी गेद गुलाल कुडकुमा डारहंगी रङ्ग
बुलाय बुलाय ।
चन्दन चन्दन बुझा रोरो अतर अरगजा लगाय लगाय ॥
गाळं बजाळं रिभाळं मोहन को होरी राग
जमाय जमाय ।
अदारङ्ग पिय फागुवा ले हो होरी खेल
मनाय मनाय ॥

५

अति मदमाती डोरे सब ही तियनमें तू रो
चतुर खेलार ।
तन सों रङ्ग भोनी सारी सोहत गर पुहुपनके हार ॥
भपट पात पट खैचै मोहन को लाज सकुच
सब दर्ई है डार ।
सदा रङ्गमें भोज गई है फगुवा लिए छाड़े सुरार ॥

६

काइको रो सकाय रई हो प्यारे होरीमें क्यों न
करत मोखे रङ्ग ।
भलो बुरो नित्य कहत रहत चर्चा हमारी
सौतनके यह ठङ्ग
अबके फाल्गुन पिया रूस रहोगी अबीर गुलाल उड़ाई
आज में तुम हो राव राजा प्रथम साहब मैं भौ
बेरी उमङ्ग ॥

सीरठ—धनार

नयन लगी तेरे मोहनके सङ्ग ए रो बीरी अब काइ
लाज लजाय ।

जित देखो तित चापी चाप है दूजा कौन समय
साख बातको एक बात है सब तज हरि चित्त लाय ॥

१

निडर निडर नटवर सो क्या चले हो गोरो ।
सुन यह अब कंस मारि राज्य कर लाग्यो रो
प्रेमरङ्ग बाललीला हम सो करे ठगोरी ॥

१

बहुरिया वरजत ही तेने काहेको रङ्ग डरवायो
एकी भार ।

एक भिलमिलो रे ता में दीसत हियके हार
रङ्गमें सगबग तू भई रो अङ्गिया फरवाइ डार ॥

४

मदमाती बहुरिया होरो बालम सङ्ग खेलिये ।
बाज सकुच सब तज गुरुजनकी प्रियके भुजन
भुज मैलिये ॥

केसर रङ्ग पिचकारी भर भर श्यामसुन्दर पर रेलिये ।
जानकादास विलास सकल सुख सरस रङ्ग
रस केलिये ॥

सोरठ—तिताला

चल देखिये वरसाने वहीं है रङ्गोली होरो ।
निकसी भवन भवन सो कर ले गुलाल रोरो
गावत है मीठी गारी सब प्रेम रङ्गमें बोरो ॥
अबोरकी घुमड़में पकरे है नन्दलाला ।
फगुवा हमारो दीव्ये इस कहत है ब्रजकी बाला ॥
कोई ताल मृदङ्ग बजावे । कोई रागरागिणी गावे ॥
होरो खेल खेल आई महल महलमें ।
महरचन्द्र मोहन प्यारे खेलत है चहल पहलमें ॥

२

होरो खेलौ पिया सी सारी रैन कहे देत नयन
पीर मुखके दैन कौन रसिया लगाई दृगन सेन ।
पोक लीक अधरन वसन गुलाल भए जागी पागी
लागी अङ्ग अङ्ग राग रङ्ग रङ्गो प्रगट देखियत
मदन मेन ॥

विहान—तिताला

सांवरो सखिनमें कैसे वेणु बजावे ।
ठन्दावनको कुञ्ज गलिनमें हंस हंस गङ्गा लगावे ॥

सोरठ—धमार

आज मन्दिर उफ बाजन लागी प्रगट जहते नभ
सरसत घेरी ।
अबीर गुलालके बादर छाए गरजत है औ
वर्षत है रो ॥

सोरठ—यत्

प्यारी ने वश कीन्हो कुञ्ज विहारो ।
कुञ्ज भवनमें दामिनो सो दमको मार गई पिचकारी ॥
चन्द्रवदनो नयन मृग खञ्जनसे वरसाने कौ नारो ।
लाल लाडलोको छवि निरखत हूँ इयक रङ्ग
वलिहारी ॥

२

पिय मत मारो पिचकारी मोरो भिजगी चूनर सारो ।
ठन्दावनकी कुञ्जगलिनमें गल विच बहियां डारो ॥
हमरे ख्याल तुम ना परो सदयां हम हं
चखला नारो ।

नन्द बबाको दोहाई देत है मानो कुञ्जविहारो ॥
हा हा करत हं पदयां परत हं तुम जौते हम हारो ।
सेवा सखो चरणको दासी बार बार वलिहारी ॥

२

नयन लगे तेरे मोहनके सङ्ग ए रो बीरो अब
काहे को लजात ।
घुंघट दूर कियो मुख तें जब ज्योति में ज्योति समात ॥

४

होरो खेलौ सखी मै तो रसिया कुञ्जविहारी से ।
कुञ्ज कुञ्ज ठन्दावन माहीं आगोवर्षनधारो से ॥
रङ्ग में रङ्ग घनश्याम लालको वश कर प्रीति
अपारी से ।
अबीर गुलाल लगाज कपोलन ख्याल खुशाल
खेसारी से ॥

५
नन्ददुलारे षट्पु रङ्ग में रङ्ग रङ्गे हो हो होरो
मेरे आए री ।

होरी खेलतेँ लिए ग्वाल बाल सङ्ग नेह उमंग
उमंगाए री ॥

गावत फाग बजावत सुरली छवि अपार
रहे छाप री ।

ख्याल खुशाल करत गोकुल में राखे प्राणपियारे री ॥

६
कुञ्ज कुञ्ज में होरी खेले राधा गोरी ।
रङ्ग तरङ्ग नन्दनन्दन नेहके अबीर लगा वरजोरी ॥
गल बहियाँ दिए वन वन डोलत चितवत
चन्द्रचकोरी ।

ख्याल खुशाल करत मन भाए श्रीवृषभानु किशोरी ॥

७
ऐसी वंशी बजाई री माई भोहन लाला
सुगत भनक सठ धाई सखी री परसे है मदन
गोपाला ।

श्यामसुन्दर मनमोहनौ मूर्ति सङ्ग लिये
ग्वाल भी बाला ॥

मीर मुकुट पीताम्बर सोई सर वैजयन्ती माला ।
कृष्णानन्द रहत निशि वासर प्रेम अमी मतवाला ॥

८
क्या बान परी पिया तोरी री मो सौं खेलन
आयो होरो ।

अबीर गुलाल के बादर छाप मुख मोहन को रोरी ॥

९
जा दिन पिय सौं होरी मचेगी सन्मुख होंगी
लजाय लजाय ।

और सखी सब वन वन जे हैं गए गए रङ्ग
रङ्गाय रङ्गाय ॥

अवगुण मेरो पिया सब जानत किहू विध राखीं
छिपाय छिपाय ।

पञ्चतन पाक करम दे वज्रहन फगुवा लोंगो
रिभाय रिभाय ॥

१०
मेरो सुरङ्ग पुनर रङ्ग बोरी री तो खे अत्र न खिलीं
कान्ह होरी री ।

निपट ठोठ नन्दराय लाइले काइको करत
वरजोरी री ॥

वरज रही वरयो नहीं मानत लागो हो आवत
ओरो री ।

ख्याल खुशाल करत चित्त चाहत कुञ्ज निकुञ्ज
ठोरो री ॥

११
मन मोह लियो हो होरो श्रीव्रजराज दुलारे ने ।
होरीके दिन में नयन मिला कै नन्दराय जोके
बारने ॥

चितवन में चित्त चोर लियो है मोहन सुरलोवारे ने
ख्याल खुशाल देखाय परस्पर रसिया प्राण हमारे ने ॥

१२
शाबाश रङ्ग में भोजत अङ्गिया दरकी ।
छतियन हाथ लगावत भिभक्तत चुरियन
सुरकी करकी ॥

वरजोरी रोरी मुख मोजत नई नई बात नगरकी ।
मोह जान बलिहार छिपाई तैं करो घर घरको ॥

१३
मेरो अब कैसे निकसन होय देया होरी खेलें
कहैया ।

हौं दधि बेचन जात हुन्दावन छीन लछो दहिया
महिया ॥

सासर जाऊं तो सास लड़त है पोहर जाऊं
सड़े मैया ।

इत डर उत डर मोहि सखी री मोहन नाचत
ता घैया ॥

पूनर मेरी सब रङ्ग बोरी और भिजोई पामरिया ।

सुरश्याम को कैसे भिजोऊं थोठ लई कारी
कामरिया ॥

१४

होरी दोऊ खेलै हो परस्पर आज ।

गुलाल बलक मुख लपट रह्यो है कुडकुम
बेदी विराज ॥

वसन आभरण अतर रस भीने देख मदन आई लाज ।
सुखसमूह निरख हित आनन्द युग युग करो
तुम राज ॥

१५

सठ री ग्वारन कर नृपार होगीकी आई बहार ।
अबीर गुलाल से फेंटन भर परे केशरकौ पिचकार ॥
जब आवैंगे मेरे श्याम कन्हैया शिरको कुडकुम
भर धार मार ।

सुरदास प्रभु सोई सुहागन जा तेरे आगे
खेले धमार ॥

१६

अब सुख मोड़ैंगो गड़े पाए हो मोहन ।
लिये गुलाल फिरत थी कवकी सुखन बनी
मां गोहन ॥
कज्जर देऊं बनाय लालके जैसे दृग टिग सोहन ।
उदयरज प्रभु मदनमोहन प्रिय निमिष न
करो विछोहन ॥

१७

सुन्दर श्याम सखीने ने सखी मोरे नयनसे नयन
मिलाय ।
जैसे काग भुजङ्ग डसत है सखी मेरो बाल बाल
लहराय ॥

१८

सांवलिया रङ्ग मानो हो जी राज गाढ़े अरज
करो हो फाल्गुन आयो ।
मिलि खेलन रो चाव होरी मैं भाग्यन रह
दिन पायो ॥

ब्रज दुलहन था सां पर सां केशरो रङ्ग मिलायो ।
रुडा लागो हो बलिहार विहारो रुडो धारो
खेल सुहायो ॥

१९

रसिया जाने न देशां हो राज रसिया अब मैं
खेलौंगी होरी ।
अब मैं मोल लई नई सारी दैया ता है सुख
मोड़ैंगो वरजोरी ॥

२०

मन पाग गयो श्यामसुन्दर कान्ह प्यारे सो सङ्ग
लागोई खेले होरी ।
दधि मेरी खाई मटुकिया फोरी माखन कर
गयो होरी
अटक गयो मतवारी राजसङ्ग खेलौ होरी ॥

२१

होरी खेलन तुम आए रसिया अबीर गुलाल लिए
भर भोरी ।
काङ्कके हाथ में अतर अरगजा काङ्क खड़ी है
रङ्ग में बोरी
अपने पोसे होरी मैं खेलूं एक सांवरो एक गोरो ॥

२२

कैसे खेलूं फाग दैया मैं कैसे खेलूं फाग ।
जिनके पिया परदेश सिधारे जियरा नित वैराग ॥
वै ठाकुर ठकुराई करत हैं मैं तो विनकी दासी ।
माछे अङ्ग जराय मदन सखी रो छाड़ चलो
अविनासी ॥

२३

ए हो नन्दनन्दन ब्रजराज श्याम मोरी सखी मेरी
बहियां मरोरे री ।
सोतनके घर जायके मेरो हरवा टटोरे री
और कौ चुनर छू न सके है मेरो घूँघट खोले री
ए री मेरी गागर ठोरे री ॥

२४

हो होरी खेलें सब चायन गोपी गोरस रस मचे ।
 डफ मृदङ्ग ध्वनि वांशरी बजाए मगके कलोलन
 आप ही आप में सब रङ्ग रचे ॥
 खेल मन्थो ब्रज वीथिन कुच्छन गावत रागन सचे ।
 आनन्द बन्धो अपार गोकुल में नरनारी सब नचे ॥

२५

जैये री केहि विधि यमुना तट विचवा ठाड़ो
 ब्रजराज ।
 काल को भय अब सों नहीं भ्रम भयो बहोर करे
 ठङ्ग वेसो ही आज ॥

२६

सुनत डफ दौरी आई ग्वार दौरी आई हार ।
 अबोर गुलाल के बादर जाए रङ्गकी परत फुहार ॥
 अब तो आन वश परे हो हमारे कहां जावोगे
 नन्दवार ।

सुरली लई है छिनायके श्याम जू को चलत दे
 गई गार ॥

२७

अब तुम तो नौकी तानके सुनैया रिभैया रङ्ग में
 भिजोई हमारी चीर ।
 हम वरजत तुम मानत नाहीं ए राजा उमराव
 अभीर ॥

२८

ए री डफ बाजन सागे री नगर में होरी खेलन
 आए कंवर कन्हैया कुबरी ।
 पनिया भरन कैसे जाऊं सजनो री बीच ठाढो
 श्याम डगरी ॥

२९

एक ग्वालन आवै रङ्ग भरी डगरी गोवर्द्धन की
 गैल री ।
 हेला बनी रहत वाके रीभ सो रिभवत मोहन
 खेल री ॥

३०

कान्हकी प्रीति में लोकलाज सब त्यजी एते पर
 अपने कोई न भए ।
 मेरो मन आली यह नयनन उरभायो है कौन
 को दोष अब कैसे के दए ॥
 फूले वन टेसू नहीं भावत है मो को यह देखत हं
 लहलहात पात हरे नए ।
 कैसे समझाऊं जिय मानत नाहीं दर्श विना
 आयो री फाल्गुन दो चार दिन गए ॥

३१

प्रेम नगर को पैडो ग्यारो भूल कोज मत जाव री ।
 मनमोहन सुरली ध्वनि टेर सुनाय करत है बावरी ॥
 अबीर उड़ाय चीर लै भाजत ता पर कहत मेरे
 गुण गाव री ।
 अक्षर गहि मुख मीड़त दरस कतहं देखो
 यह ग्याव री ॥

सोरठ—धमार

आज मधुवन में कान्हर बन बन खेलत फाग ।
 मेरी चुनरिया बोरैगो रङ्ग मे में भी भिजोऊं
 वाकी पाग ॥
 तत वित तघन शिखर बाजत गावत सोरठ राग ।
 जिन जिन सुरलीकी भनक सुनी है धन्य धन्य
 उनके भाग ॥

३

गोकुल आज धूम मची है होरी खेलत ब्रजभान ।
 मृदङ्ग भाँक कठतार डमरू डफ बाजत
 सुरली की तान ॥
 ब्रजकी सखी सब सुन कर धाईं उनके भए हैं
 आदर मान ।
 उठ चल अब मिल नन्दलाल सो इतनो कहा
 मेरो मान ॥

मन्दिर आज हो रही होरी खेलत लक्ष्मिधारी ।

ब्रजकी सखी सब बन बन पार्ईं कोज सांवरी
कोज गोरी ॥
एक के वसन पर रङ्ग डारत है एक के मुख मसत
है रोरी ॥
एककी कुच पर मारत है कुङ्कुम कहे कर
हो हो होरी ॥

सिंदूरा—धमार

दस्त पिचकारी भर भर फेकत प्रिय मो पर
उपजत अनेक रङ्ग ।
मदमातो त्रिया कृतियां डैल सो सन्मुख भूमत
प्यारी सङ्ग ॥

सोरठ—धमार

क्यों कर गाजं मैं देश प्रिया परदेश जियाको
अदेश ।
अपने यौवन को विभूति रमाजं कानों बीच मुद्रा
पहराजं मैं तो कियो योगिनि को भेश
आदेश हमारी सुन पथिकवा अचपल सो कहियो
यह सदेश ॥

सोरठ-पहाड़ी

ब्रज कुञ्जन जाय पकर थ्याईं नन्दके लाला ।
हा हा करावत पाय पशावत ब्रजकी बालगोपाला ॥
एक सखी कर पकर नचावत बहुत बजावत गाला ।
नयनन अञ्जन खञ्जन करके लोग कहे ब्रजवाला ॥
आन यशोमति यह छवि देखो मोहन मुरलीवाला ।
पाय पैञ्जनी अधिक विराजे बेंदो भाल विशाला ॥
बैसरकी छवि कहां लगि वरनों भूम रहो
मोतिमाला ।

हृन्दावनकी कुञ्ज गलिन में खेलत नन्दके लाला
सुरश्याम छवि कहां लग वणों मोह लई ब्रजवाला ॥

२

सांवरे मोहन होरी भली खेल पाए ।
अमुरागि पागे रस पागे डग अति ही छवि छाए ॥
कहं अञ्जन कहं भाल महावर कहं केशर रङ्ग साए ।
औरसरङ्ग साची कही मो से कौन सुघर फगुवाए ॥

२

चित्त मेरो लाग गयो श्याम रङ्गोले प्यारि सो ।
तब ते उन सो मेरो नेह लगे है मैं तो चाहों
व को बारि सो ॥
कारो रङ्ग प्यारो डग कारो का रे बचेकोज कारि सो ।
सन्मुख होत चाहत जिय निकसत रहत वाही के
संभारे सो ॥
ठीर ठीर नीको छवि जो है सोहै लाल हमारे सो ।
जो देखै सगुण में काज्जम सो देखे निर्गुण न्यारे सो ॥
मेरी सुरङ्ग सुमरिया बोरी रे तोखे अब न खेलें
कान्ह होरी रे ।
निपट टीठ नन्दराय लाइले काहे को करत
बरजोरी रे ॥
वरज रहो वरज्यो नहीं मानत लागो हो
आवत ओरी रे ।
ख्याल खुशाल करन चित चाहत कुञ्ज निकुञ्जन
ठोरी रे ॥

देश-पहाड़ी

माईं नन्दके लाला कैसी वेणु बजाईं री ।
वेणु बजाय के मन हर लोन्हों सुधबुध विसराईं री ॥
सुनत वांशरो ग्वालिन धाईं रोभ बूभ दधि खाईं री ।
मीठे खर अधरन धर टेरत जियरा लेत चोराईं री
कृष्णानन्द मदनमोहन ने मोहि लियो अपनाईं री ॥

पौल—धमार

मो पर रङ्ग न डारो कन्हैया सास ननदी मोहे
देगी गारी ।
भर पिचकारी मुखपर मारी भोज गई तनसारो ॥

पौल-पहाड़ी

तेरी वलि जाजं सांवरे नेक जो वेणु बजाव ।
हा हा करुं औ पदयां परुं तोरे वेग मधुर ध्वनि
मोहे सुनाव
तेरी मुरलिया मन हर लोन्हों घर अङ्गन न सोहाव ॥

विनती मोरी मान ले तोहे मोहन ने बुलाई ।
 सङ्ग सखी मोमें सभी छिटकाई कुजा मन विसराई ॥
 तेरी सौं मीहे प्यारी राधिका राधा ए राधा रट लाई ।
 बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ घंघरुनको सरसाई ॥
 चोवा चन्दन और अरगजा केसर माट भराई ।
 सुन सखियन को वचन लाडली हर्ष हुलस उठ धाई
 लालदास चरणनके प्यारे देखत कण्ठ लगाई ॥

देव—पराई

बावरी बन आई तुम्हे किन होरी खेलाई ।
 सास कहे मेरो बारी बहुरिया अङ्गिया ते यक्ष
 कहां दरकाई
 सासुजोके पुत्र ननद जूके वीरन जिन मोरो
 मति बौराई ॥

पहाडी—यत्

कान्हर कर एकराई पकर जाय ग्वाल ग्वालनो ।
 कोक कहत गोपा दहो को दान दे एक कहे
 कंसकी पालनी ॥
 एक कहे फगुवा मांगनको आई एक कहे
 छाड़्यो मालनो ।
 एक कहे रङ्ग भर हारो खेलन आई एक कहे
 ग्वालकी बालनी
 प्रेमरङ्ग प्रभु फगुवा बनाई लूट में पाई लालनो ॥

फिर कपटी कारो कोकिल बोली सुनत मदन
 वश तन मन डाली ।
 मैं जान्यो भर गई शीत ते कि न कपोत वन
 कानुक खोली ॥
 अलिङ्गल कुसुम मान तुपक लाए विरहके वाण
 वियोगकी गोली ।
 प्रेमरङ्ग पिचकार चलैगी प्रभु विना प्रबल
 परैगी होली ॥

मेरो जान्यो मेरो कान्ह मैं खेचोगी होरो ।
 अक्षर आय ले गयो अब कुजाजोको भोरी ॥

पीनू—यत्

मो पर रङ्ग न डारो कन्है या सास ननदिया
 लरैगी मोरी ।
 हा हा करत सौं पैयां परत हौं चेतो मैं ए री तोरो ॥
 अक्षर गुलाल कुङ्कुमा मारत और करत बरजोरी ।
 कृष्णानन्द कहत कर जोरे पुनि पुनि करत निहोरी ॥

सोरठ—यत्

रसिया हो राज होरी रङ्ग राचे ।
 न्हारी पुनर सब हो भिजोई केसर कीच रङ्गी माचे ॥
 बाज रहै छे वोणा मृदङ्ग धनि गावत खर में साचे ।
 रसिकविहारी पिय प्यारी मिल खेलै तत धेई
 तत धेई नाचे ॥

सुनरी में रङ्ग जिन डारो सांचो कही वचन दो
 हमको जब खेलत तुम सङ्ग ।
 हौ मनमें ऐसे ललचाने देख विराने गोरे अङ्ग
 उनके मन में ऐसी आवत है अब भर लीजे निसङ्ग ॥

रे जधो को खेलै ब्रज होरो ।
 मन हर लियो नन्दनन्दन जू कंवर राधिका गोरो ॥
 अन्तर्गतकी व्यथा हमारो जानत नाहिं न कोरो ।
 कहा कहौं विश्वासी सुरको प्रीति अचानक तोरी ॥

हो हो होरी खेलन मेरे आए ।
 बलिहारी इन पायनकी जो पिय तुम भान देखाए ॥
 शीतल भईं आज अंखियां सुफल कामना पाए ।
 देख अदारङ्ग यों डोरि कैसे सुघर बनाए ॥

कहां तोहे टेव परो वनवारी मोहे पैड़े जात
 छेरनकी ।

खाजन सन हों भीजी जात हों सङ्ग सखा नेरनकी ।
हों यमुना जल भरन पठार्ह की वैर घेरनकी ।
करैगी चबाव मो घर अब सास नगद जेठानो
देरनकी ॥

रसिया जानि न देशी हो राज रसिया अब मैं
खेलींगी होरी ।
अब मैं मोल लई देया तोहे मुख मोडींगी वरजोरी
हो रसिया ॥

सौरठ—धमार

ए रो अति धूम डारो आज ब्रज में होरी खेलत
मन्दलाल ।
काङ्गकी बहियां पकर भकभोरत काङ्गको अङ्ग
लगाय करत बेहाल ॥
हों न जाजं आली अब दधि बेचन राज करो उनको
अनोखो ख्याल ।
जहां पावत तहां रङ्ग में भिजोवत पनिया भरनते
बैठ रही ब्रजबाल ॥

हो हो होरी हो हो होरी सब जग होरी हो
रही हो ।
सब ही सुहागिन खेलन निकसो हों दुहागन
सो रही हो ॥
अवसर सब ही वीत गयो है ना जानो कौन
गति बही हो ।
गुण अवगुण ले चलहुं सहर्यां पै जायके चरण दोई
गही हो ॥

हो हो होरी हो रही है मन्दलालके द्वार ।
ब्रजवनिता सब मिलके धाई तनकी रही न संभार ॥
अबीर गुलाल के बादर छाप सरस रङ्ग निहार ।
नाचे गावै ताल बजावै भदवा कहे बार बार ॥

आयो फाल्गुन मास रो सजनो उमंग चोप बैठी
जाय अब होरी खेलिये कृतपतिके सङ्ग ।
दुःख भाजे सुख प्राप्त होये जब गह्वरी लीजे
चरणकमल से रङ्ग ॥

आवो रो सखी चल अकबरके सङ्ग रीभ भीज
खेलिये रङ्ग ।
फाल्गुन मास में रार न कीजे
सोतनके हिय हुलास न दीजे
ए रो बजत तार भांभ डफ मृदङ्ग ॥

आज रची श्यामसङ्ग होरी सङ्ग नवल राधिका गोरी ।
करन कमक पिचकारिन भरत रङ्ग धावत आवत
जोई गावत भावत सोई अबीर गुलाल मुख मसत
चलत हंसि चपल चमकित चोरी ॥
हरि सङ्ग ग्वालबाल करे अनगन ख्याल कोऊ
डफ मृदङ्ग बजावत गावत फाल्गुन मुरलीकी ध्वनि
घनघोरी ।
कृष्ण रङ्ग निरखि हर्षि सुर नर नाग मन में सिहात
लखि गोपिनको अनुराग सुरपति सारद सराहत
सुहाग भाग्य यह ब्रजसुख सब शोरी ॥

कोऊ कुंवर कान्ह वरजे मेरो हियरो लरजे ।
अति ही चपल छल बल न करत कल लगेई रहत
सङ्ग तजत न एक पल छल बल करत न डरत
काङ्गकी डर कैसे कर जल भरजे ॥
निपट चबाई यह ब्रजकी लुगाई भाई नाइक कलङ्क
लगाई करत हंसार्ह आई कही अब कैसे करजे ।
कृष्णरङ्ग अब मन्दकी दुहाई नेक भुज गहे चलत
पराई ब्रज दुरि जाई वांसरी बजाई गाई अधिक
रिभाई पाई करत अपनी गुरजे ॥

तुम नए भए दधि दानी मानत न काङ्गकी कानी ।

अति ही निडर न डरत गुरुजन डर वर वश सरत
अरत नित्य ही नित्य नन्दके छेल बोच गेल पैल
गह बतियां करत छल सानी ॥

काहं न च्छाई अब ताई ठकुराई ऐसी यही पुर
बसत सदई चल आई हम कांसरायको राजधानी ।
छाणरङ्ग अब कोज कैसे के बसाई ब्रज तिनकी
चबाई सही जाई न कन्हाई सब ग्वालके बाल
कसहाई सङ्ग पाई नित्य करत ठगाई हम जानी ॥

८

बालम तुम विन कैसे खेलौं होरी ।
वीती जात ऋतु फाल्गुन अजहं न लीहीं सुध मोरी ॥
जैसे मीन जल विन तरफत सो गति भई है मोरी ।
सुन रे पथिकवा जाय कही उन से सन्देसवा
लोगनकी काहा चोरी
छपा करो आवो लालन अब बहुत गई रही थोरो ॥

१०

मोर पिया रे बालम परदेश होरी मैं ना खेलौं ।
होरी अहोरी सब जग होरी मैं केहे सङ्ग रङ्ग
भर रेलौं ॥

सोना लेने पो गए सूना कर गए देश ।
सोना मिलो न पो मिले रूपा हो गए केश ।
अपने सइयां को टुंढन निकसी कर योगनकी भेश ॥

११

होरो मस्त भयो डोले होरी को निपट निडर
घनश्याम ।
उगर चलन नहीं देत लेत गहि रोकत है सब श्याम ॥
मम में धरत सो करत डरत नहीं उभक्त फिरत
घर घर आठो याम ।
जानकीदास हंस मन्दिर में धंस लै लै बुलावत नाम ॥

सोरठ—बग

माहक मनदी वैर परी है यो होरीको दांव रसिया ।
देत गारी ब्रजमारी बोले न भूखड़ी कठिन स्वभाव
रसिया ॥

नेड़े भाय हंसिके दुःख हरिये जो तुम प्रीतिन चाव
रसिया ।
बलिहारियां रे आशा पुजावो हंसत खेलत घर
भाव रसिया ॥

२

कान्ह मूंद घर में छिप बैठो ए रे बोरो फेर होरी
पाई री ।
उफ सुरली धनि बहोर बजैंगे जेन लो लाई रो ॥
तनमन नयन में माहिनी मूर्ति निशचिन छाई री ।
लाल गुलाल भरे मुख देखन उठ उठ धाई रो ॥
गुरुजन दुर्जन करत चबाई लाज लजाई री ।
प्रेमरङ्ग में भीज रही हौं मति बीराई रो ॥

सोरठ—तिताना

कान्ह तोहे ऐसी मति कौन दर्ई ।
देख पराई नारो सलोनी होरी करत नई ॥
डार गुलाल आंज आंखन में भुजा भर अह लई ।
केसरको पिचकार मारके बहियां पकार लई
छाणजीवन अबलाको यह गति देखौ काहं न भई ॥

२

मुख मल डालौंगी बहोत चले इतराय लाल ।
सब सखियन में ऐडोई डोले मुख में मले गुलाल ॥

१

ऐड़ी बैड़ो डोरे कुञ्चनमें अरे लाल मतवारी
ब्रजनार ।
काहके मुखसे अबार मलो रो काह पे भर पिचकार ।
ऐसो होरी खेले किफायत रङ्ग दियो संसार ॥

जयजयवली—तिताना

माई आज तो मोहन सङ्ग रङ्ग भर खेलौंगी ।
लोकलाज पायन सो पोछोड़ीय पे लौंगी ॥
निदरौंगी आर्य पथ न डरौंगी ।
हूँ निधरक अङ्गवार पियको भरौंगी केसर रङ्ग
रङ्गीसो करौंगी ॥
बेसरके मोती काज फगुवा अरौंगी ।

कलित त्रिभङ्गी रसदरनि ठरोगो
रतिपति रण व्रजपति सों सरोंगी ॥

आप हो रगमगी रैन के लाल गुलाल से रङ्गरङ्गीली ।
सोधि भीने बालकी बालके अङ्ग लगी ताते
अङ्ग अङ्ग ठोले ॥

कर सङ्केत कही निश आवन भोरे बोरे नखशिख
खगोले ।

रे.मरङ्ग अवगुण गुण मानत लगत ही कण्ठ लगत
हो रसीले ॥

आज सखी होय रही होरी नन्दनन्दके द्वार ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर भर भर रङ्ग पिचकार ॥
छिरकत रङ्ग श्याम पै राधा श्रीवृषभानु कुमार ।
मलत गुलाल श्याम मुख मोहन गावत मिल व्रजनार ॥
ताल मृदङ्ग भांभ उफ बाजै नाचत गोपीग्वार ।
रागरङ्ग आनन्द नन्दके द्वार द्वार वलिहार ॥

अदभुत फाग मन्थो गोकुल में गोपम्बालनी
देखन आई ।
फाल्गुनके दिन चार सखी री चर्चा करैंगे सब
लोग दुगाई ॥
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक सन्मुख
लड़वे को धाई ।

छिपत फिरत भीजत कुञ्जन में पकर मोहन जू की
आखें अझाई ॥

हों कहा करों री कैसे रहे कुलकान या व्रज में माई ।
एक यौवन मद हकी फिरत है निडर करमको
होरी आई ॥

नयो यौवन सुन्दर नारिन ले पकर करत मन भाई ।
गुलाबकी प्रभु माधव मनमोहन रसकी धूम मचाई ॥

ऐसी खेसारी रसिया मोरा होरी में करत है
वरजोरी ।

आप खेलै और मदको खेसावे बहियां पकर मोड़े
रङ्ग में बोरी ॥

व्रजकी सखी सब बन बन आई मनमोहन घर
राची है होरी ।
हाथ लिए पिचकारो प्यारी और आय कहे
हरि हो हर होरी ॥

होरी खेलों में तो मोहनके सङ्ग रङ्ग में लेहों
भिजाय ।
फगुवा लेहों तब जानि देहों पीत दुकूल लेहों
छिनाय ॥

व्रजकुञ्जन में खेलत होरी नन्दनन्दन वृषभानु
किशोरी ।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत रङ्गत केसर रङ्ग
अङ्ग वरजोरी ॥
चितवत चित्त चोराय लेत है रसिया नागर
श्रीराधा गोरी ।

कहीं यमुना तट कहीं वंशोवट धूम फाल्गुन
ऋतु चारो श्रीरी ।
निरखत रसिक खुशाल श्याममुख जैसे
विलोकत चन्द्र चकोरी ॥

कैसे भरों दिन रैन लङ्गर सङ्ग लागो ई डोले
फाग को अवसर पाय सखा मीरो अक्षर खोले ॥

खेल ले कुञ्जा पिय सङ्ग होरी पूरी भई मन
इच्छा तोरी ।

श्यामके नयन लगे हैं तो सों सन्मुख आव न
कर चित्त चोरी ॥
बहियां पकर भट छीन ले कामर बोर दे रङ्ग में
पीत पिछोरी ।

कैसे मोहन को वय में किए तै हाथ मलत है
राधागोरी ।

मान तुराब का कहना इतना मान न कर
वृषभानु किशोरी ॥

११

अबोर मल्लिंगो कपोल तिहारि यशोदा लाल
ब्रजराज दुलारि ।

यह ऋतु फलगुन छाया रही है जो तुम आए हो
धाम हमारि ॥

रेन जगाय खेहो रस रसिया खेल छवोले
प्राण पिया रे ।

ख्याल खगुल भरे मनमोहन यौवन उमंग उमंग
उमंगा रे ॥

१२

अबको फागुका रङ्ग न पूछो धूम मची है
श्रीवृन्दावनमें ।

श्यामविहारी चतुर खेलारी खेलत है होरी
सखियनमें ॥

कर में लिए कञ्चन पिचकारो अबोर गुलाल
भरे दामनमें ।

अङ्ग निहारत ताक के मारत दाग सगावत
उजरे वसनमें ॥

कैसे कोज अब घर से निकसे ठाढ़ो है ढीठ
लङ्कर अङ्गनमें ।

मो को कहा वो दूँदे पावै मैं तो छिपी तुराब के
मनमें ॥

१३

उगर उगर उगमगी उगन सों होरोके मदमाते आए ।
सगर वगर जिय भगर भगरके रससमुद्र

पानन्द बहाए ।

अगर तगर लै जगर जगर मुख लक्ष्यानन्द रूप
अन्वहाए ॥

१४

मन छीन लियो कियो वशकी एक बात कभू
न कियो वशकी ।

प्रेम प्रीति को यह फल पाया बात करो डर है
तू देखकी ।

लक्ष्यानन्द मोहिनो मूर्ति रहै करेजे मेरे कशकी ॥
१५

ऋतु फालगुनकी आई माई श्याम हमारी
साज गंवाई ।

वरवश चुनर छोर लई वह देत रही मैं राम दुवाई ।
लक्ष्यानन्द एक नहीं मानी ऐसा लङ्कर ढोठ कन्वाई ॥

१६

ए री लाल मिले औ साज रहै ऐसी बतावो
कोज युक्त ।

जामें प्रकट न होय प्रीति यह ऐसी मन्त्र देहो
मोहे गुप्त ॥

सास ननद औ गुरुजनको डर एकी नाहीं
बनत यह सुक्त ।

श्याम दर्श होरी गावत है देखो लेत तान नई उक्त ॥

१७

आतुरकी भए छिन मं जो सूरत रूप सजेगो ।
अब भक्तभोरुं बोरुं रङ्ग में तारी दे दे आलो
पुञ्ज नचेगो ।

लक्ष्यानन्द करारजं हा हा प्यारि निशदिन मोहि
भजेगो ॥

१८

होरी रङ्गरातो अङ्ग यौवन उमङ्ग मातो सांवरो सो
खेल गैल मांभ ढिग परिवो ।

मैं तो केतो कौनों अभी बीच में हो निकसवे को
आय अति निडर अरेल आन अरिवा ॥

केतिक ठगोरी एक ठोरोके निहारो ऐसी सुभकी
निहारन में चित्त सब हरिवो ।

चेटक हो हाथ में कि धौं गुलाल हों न जानों
ताड़ो साथ कहां भेरी आंखनमें भरिवो ॥

१९

अति रङ्ग रसिया ब्रजकी वसिया होरी में मोहि
श्याम मिलो री ।

अतर सुगन्ध गुलाब अति भीने घ्यारे अङ्ग
लगी री लगी री ॥

कर कञ्चन सोहत पिचकारी केसर रङ्ग
भरो री भरो री ।

घट घूँघट पट खोल लाल मुख अबोर मली री
मली री मली री ॥

२०

बागके बगर अनुराग भर भर खरी खेलती है फाग
मनमोहिनी गोपालकी ।

राज करे इन्दु अरविन्दुसेन काज आज देखत ही
मञ्जु शोभा वदन विशालकी ॥

भृकुटी तिलक पर वारुणी पलक पर ए बर्षं
अलक पर भलकके गुलालकी ।

कालीदास ललक लली ही छवि टलकके छवि
मुक्तनमें कपोल और भालकी ॥

२१

होरी लागी कान्ह अब ही तें समदात फिरी
जरे ऐसो ख्याल जी मैं लाज टर जायगी ।

चलैगी पी पिचकारी तो तिहारो सों बिगर जै है
नई ज़रतारी मेरी सारो भर जायगी ॥

भूठी मान मूठी लेजे मुख तुम तानत ही गद्दयां के
चरैया ही वलैया डर जायगी ।

परैगी गुलाल मेरो आंखन में लाल तो गोपाल
आज ब्रजमें जवाल पर जायगी ॥

२२

भली भई होरी आई घर आए घनश्याम ।
सोग कहै टोनवा पढ़ डारो ए राधाको काम ॥

धन्य तेरो भाग्य सुहाग भावती और न दूजी वाम ।
कृष्णजीवन लक्ष्मीरामकी इच्छा पूजिए वेग ही श्याम ॥

२३

बनवारी लाज विसारी ऐसो रङ्ग डारत भोज गर्ई
तनसारो ।

धाय धाय नन्दधाम कहै तो हे मुख मोड़ीं
गिरिधारी ॥

पाहे ठाढ़ी सब पार परोसन हंसत खेलत सब
नरनारी ।

लाज सकुच सब तज डारो है एक मूँठ तै लाज
विसारी ।

एती निठुराई कौन बदे कान्ह जिन देहो गारी ॥

२४

सखी आज बाग में फाग रच्यो होरी खेलत
संसारचन्द ।

जित जावत तित रङ्ग मचावत बाजि मन्दिरला
घर घर आनन्द ॥

उड़त गुलाल अबोर अरगजा विचित्र अतर सुगन्ध ।
रङ्गमहलमें रङ्ग मच्यो मानो कुञ्ज भवन में खेलें
गोविन्द ॥

२५

ए री आज खेल ले पिया सङ्ग होरी बांह जोरो ।
होँ जो मनावत तू नहीं मानत सुन रो राधा गोरो ॥

२६

ए री आज पिया अपने सङ्ग खेलौंगो होरी ।
अबोर गुलाल अतर अरगजा सुगन्ध लिए भर भोरी ॥

फाल्गुन मास में लाज केह काम कौ वे हैं
कृष्णकिशोरी ।

खेलें फाग सब अपने पिया सों कोई सांवरी
कोई गोर ॥

२७

सखी मांगे दे री अपने नाह दिन चार ।
अम्बा मीरे टेसू फूले और फूली कचनार ।

कृष्णानन्द सोहाग भरी तू देखहि लाल बहार ॥

२८

फाग खेलत मार मार भाजत हो हो हो रो बड़ी
फागको खेलैया ।

लगाए लगत न कुटाए कुटत अब कहा करी ए
मेरी दैया ॥

हंसन अभिरतें देत न मोहे नन्दको है दरैमारो
कन्हैया ।

भाजत भाजत लागत लागत को वह नयो
लाग लगेया ॥

१८

आवो सङ्घ्यां तुम मन होरी खेलै केसर रङ्ग
बनाय बनाय ।

आनन्द बैलि मचावै दोऊ अबौर गुलाल
उड़ाय उड़ाय ।

कृष्णानन्द सुफल कर जीवन पहर्यां लागत धाय धाय ॥

१९

कैसे भरौं दिन रैन सखी सङ्ग लाग्यो ई होरे ।
मेरे तो सङ्गकी दूर निकस गई मेरो अक्षर छोरे ।
कृष्णानन्द प्रेम रस मातो प्रीति मथानी आनि टटोरै ॥

२०

मनाई ऋतु लाल सौं धन्य धन्य माई तेरो सौं
देखाई देत चैन सुखपर नांह ।

भौंडल मीडो और तियन मिल जानत मन मांह ॥
दरकी चोली प्रगट क्यों करै कुछ सरकाय

राखी दोऊ बांह ।

हित मेरी भांख सुख सङ्गची है क्यों मैं सांचे
कहं हांह ॥

२१

होरी के दिनन में सुनिए री बीरी मोहै लग्यो
वैराग हो ।

जो आवै सो रङ्ग ही में बोरै जो जियै सो खेलै
फाग हो ।

कृष्णानन्द विचार कठिन है प्रीतमको अनुराग हो ॥

२२

गौनेकी रात में भोर ही दुखहिन बेट रही विन ही
अनबोले ।

गात सो छाती छिपायके सुन्दर नारि निवाय
दुराय कपोले ॥

देखनको सुर भाई सबै तिय ननद जेठानी करै
सो कसाले ।

एक हंसै एक बांह गहै एक अक्षर ऐंचके
घंघट खोले ॥

२३

आयो फाल्गुन मास लाल अब खेलूंगी फाग
बनाय बनाय ।

भली बनी अवसर आली सब खेलन बाग
बनाय बनाय ।

होय एकट्ठी अब घेर लिए हैं दीजे सब ही
गिनाय गिनाय ॥

२४

होरी में मोहि श्याम ठगां री ।
वदन जोर मुख मोर चोर चित्त ले गयो कर
वरजोरी अहोरी ॥

फिर फिर पूछत राधे सबनको मेरो मोहन कित
गयो है चोरी ।

केलि खेल सब भूल गयो मोहै मन तो नेवाज
कहां अटको री ॥

२५

नन्द महरको लाडलो खेले होरी सङ्ग लिए
वृषभानु किशोरी ।

अबीर गुलाल कुङ्कुम केसर चन्दन वन्दन
बुझा ले रोरी ॥

राधामाधव खेल रण्यो है सुख बाढ़रो चहुं ओरी ।
रसिक खेल रस वध कर लौन्हीं श्रीवृषभानुकी पोरी ॥

२६

आये फाल्गुन मास कह पठवेकी ना रही ।
सुख मल हों अब रस वध कर हों अब लों
बहुत सही ॥

मेरे मनकी भांवर प्यारे जब पिचकारन रङ्ग छही ।
रसिक खेल प्रभु व्रजके रसिया मनमाने फगुवा लही ॥

२७

होरी खेलिये माई अपने लालन सङ्ग धाय ।
रूप यौवनकी अति ही माती रहस रहस गर साय ॥

चोवा चन्दन चन्दन रोरी अबीर गुलाल उड़ाय ।
रसिक खेल को रस वध करि हों ले हों
फगुवा मनाय ॥

४८

होरी आई माई अपनो करके ख्याल मेरो कहा
मान ले ।

एकन पै छिरकै रङ्ग एकन पै अबीर गुलाल
एक नीकी तान ले ।

जानत नाहीं अपनो परायो रसिक खेल समझ
बूझ पहँचान ले ॥

४०

जो खेलौ तो सूधे खेलौ ही तुम चतुर खेलार ।
आंखि गुलाल लाल मत डारो सुनिये जु नन्दकुमार ॥
रस राख्यो जो चाहो मोहन समझ अबीर
भरो एही बार ।

हमरे तुम्हरे खेल दूर तब कस बजाव वलिहार ॥

४१

होरी में होरो कही रो किशोरी जाय के कोऊ
व्यथा यह मोरी ।

फागमें लाग बड़े अनुराग सुहाग सनेह को
चाहत गोरी ॥

प्यारे तिहारि निहारि विना यह भारे कटे दिन
रैन निगोरी ।

सागर आगर रूप उजागर नागर हो के मोहे
विछोरी ॥

४२

अहो रो चलो रो खेलौ रो होरी नन्दकी पोरी
मचोरो है होरी ।

बाजोरी साजोरी ज्यों घनघोरो खेल रथो रो
दृषभानु किशोरी ॥

अबीर मलो रो सुख मीजत रोरो हो हो रो हो
हो रो बहोरी कही रो ।

रागसागर प्रभु गुण आगर नागर रूप उजागर
दृग देख ठगो रो गोरी ॥

सखी होरी ख्यालमें गोरी किशोरो आज
अनुपम रीति लहो ।

पहले भपट पीत पट खैंचो ठाढ़े रहे करि
जा के तही ॥

गुलाल सो छायो गोपालको प्यारी फगुवा ले हो
किस बात कही ।

पिचकारिन बहुरङ्ग मारो लला अब आन पड़े
वध मेरे सही ॥

४३

होरी खेलिये रो मेरो सजनो अपने प्रिय सङ्ग जाई ।
रूप यौवनकी अति ही माती देखिये तेरो स्वभाई ॥

ये फाल्गुन भाग्यन ते पायो मन में समझ बनाई ।
पीको पाय के जान न दोजे फेर अवसर कहां पाई ॥

रस ही हाथ रहेगो तेरे हों जो कही तेरे
हितकी सुनाई ।

मान किए लालन कहां पइ हो सौतन हो को चाई ॥

सिन्धु—धमार

होरी होय रही है नगर में खेलत कृष्णकिशोरो ।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत है गोरी ॥

अपने अपने घर तें निकलो एक सांवरो एक
रङ्ग में बोरी ।

केसरकी पिचकारी चलावत बारी वयस
दिननकी घोरी ॥

९

अवानक रङ्ग भरो कहा धरो जिया में तुम आए
बदो मैं ठांव ।

अपनोसो जो करत न चूको मत कहियो राधे नांव ॥
ए हो लाज के रङ्ग में बूढ़ रहा हों देखत सगरो गांव ।

तेरो चतुराई तोही बनाई पूजो तेरो पांव ॥

९

फाग रथो व्रज में अब खेलत है श्रीनन्द कंवर
दृषभानु किशोरी ।

जैसे ही राधा वैसे ही माधव दोऊ करत बतियां भोरो ।

सखी सखी मिल देखन जइये आन रूप सब
ब्रज ही बनो रो ॥

खभावती—तिताना

आज ऐसो होरो सइयां मैं ना खेलूं मेरे सुखपर
अबीर मसो रो ।
कल्याणन्द पकर उर लावत नागर नवल किशोरी ॥

रङ्गभोने आए होरीके दिनन में धाय धाय ।
महाराज तुम जयन मुबारक भई प्रीति अधिकाय ॥

तुम आए हो मेरे होरो खेलन को भूल गई
काल्हकी बात ब्रजलाल ।
जिन सो खेलिये उन सो जाय खेनो अपने उमंग
ख्याए विनागुण उरमाल ॥

सूधी नजर क्यों न हमसन बोले अञ्जन अधर
महावर भास ।

लक्ष्मणदास जागे भाग्य मरे नयनन निरखत
अब तो भई है निहाल ॥

मेरी साँह न मानत धाय धाय डारत भोरन गुलाल ।
भर पिचकारी रङ्ग भर लावत धूम मचावत ओट
पाय के कर ख्याल ।

शम्भु नन्दलाल हठ धरणा वरजि होत गरे की माल ॥

होरी खेलत नन्दनन्दन ब्रज में सखी भर पिचकारिन
न बीरत ।

कैसेके जाओ सखी पनघटवा धर बहियां
भक्तभोरत ॥

ले गुलाल वर वश मुख मीड़त अपनी बार
मुख मोरत ।

मञ्जुल मधुर बजाय वांशरी टग जोरत चित्त चोरत ॥

होरो खेलिए प्यारे विना अब कैसे ।

अम्बा बीरे टेसू फूले सखी हमरे बालम कित
विलम्ब रहे ॥

मेरे सुघर कनैया गोकुल खेलत होरो रे ।

एक ओर सङ्ग सखा लिए मोहन एक ओर राधा
गोरी रे ॥

बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ पिचकारिन रङ्ग
बोरी रे ।

श्रीरसरङ्ग निरख दोज छवि चिरञ्जीव रहे
यह जोरी रे ॥

खभावती—तिताना

रङ्गभोने कान्हा रङ्गभोने कैसे होरो मचाई ।
हौं यमुना जल भरण जात रहो पैडेमें गगरी छिनाई ।
श्याम तोहे देती नन्द दुहाई ॥

सिन्धु—धमार

भगरा मैं क्यों ठानोंगो पिया मोरा इन
सो तनियां वश कीनो ।

तुम विन मेरो श्रीर कौन है ऐसो सुघर प्रवीनो ॥
याह् वास को वसवो कठिन है सीतनके आधीनो ।
आजम पिया सो विनती करत है मैं तेरे ही रङ्गभीनो ॥

होरी धूम मची अति जोर शोर सुनि डफ मृदङ्ग
धुधुकार ।

फूल रहे वन उपवन कुञ्जन पुञ्जन भ्रमर गुञ्जार ॥
प्रथम फाग अनुराग श्याम पर सब ही नारिन तन
मन वार ।

जानकीदास भए पूरणप्राप्त सुर वर्षत सुमन फुहार ॥

खेलत है लाल फाग बाजत मृदङ्ग चङ्ग वीणा
रबाब सङ्ग ।

अबीर गुलाल चोवा चन्दन अरगजा वर्षत रङ्ग ।
कूटे पिचकारी हंस मुख हो डारत केशर रङ्ग ॥

फाग रण्यो है ब्रज में अब खेलत है श्रीनन्दकुमार
हृषभासु किशोरी ।

गुलाल अबीरकी मूठें छूटत रङ्गकी परत फुहार
सुख बोलत हो होरी ॥

जैसे ही राधा वैसे हो माधव दोऊ करत हैं
बतियां भोरी ।

चलो सजनी रो मिलके देखें आनन्द रूप स्वरूप
बनो री ॥

खणावती—तिताला

अब मेरे मुखपर डारो गुलाल कान्हर वाके
जियमें कछु चीर ।

लाज शर्म काह्नकी न मानत मूठ चलावत दौर ॥
ए बातें कहं देखीं न सुनीं जियमें करत नहीं गौर ।
सुमतिको साहब लोग तिनको मोह छष्ट को मौर ॥

सिद्धरा—चाचर

तुम नीकी तानके सुनैया रिभैया रङ्ग में भिजोई
हमरो चीर ।

हम वरजत तुम मानत नाहीं वे राजा उमराव अमीर ॥

ना देया मैं अब न जाऊंगी बीच ठाढ़ो दधिको
छिनैया कन्हैया ।

नाम ठाम वाको भूल गई कहत है ब्रजको
वसैया कन्हैया ॥

डर लागत है कांपत है यातें बांह गई कोऊ
देखे लगेया ।

आन पड़े जब मो पै मिहरबान कौन वहां हटकेया ॥

लाल पधंचाने हैं लु तुम वाही सङ्ग नीके नीके ही
निशा जागे ।

अरुण वरण नयन कहे देत और रैन कहे देत
ऐसे प्रेम प्रीति रस पागे ॥

और सङ्ग रङ्ग मदमाते तापे सुरङ्ग रङ्ग केसर बागे ।
भोर भए जब आए मेरे गृह तुम बात बनावन लागे ॥

आयो फाल्गुन मास महा सुख सजनी रजनी
लागत प्यारी ।

त्यज हठ मान लाज गुरुजनकी भर मारो पिचकारी ।
कृष्णानन्द दियो बुलसायो अब क्यों ककत विचारी ॥

अबीर गुलालकी धूम मची है पिचकारन भर लाय ।
चोवा रे चन्दन और अरगजा सुख मोधि लपटाय ॥
बाजत ताल नृदङ्ग भांभ डफ धनिरहो है
चहं दिश छाया ।

बार बार वलिहारी अब खेलै फगुवा ले है मनाय ॥

भलो री तेरो यौवन तू ही जात है आयो है
फाल्गुन मास ।

पिय नहिं आवत विरह सतावन उलट जात तब
आश्वास ॥

कहा कहीं कछु कहे न सकत हूं जैसी सास
नमद कीर्णों है दास ।

नित्य कसकत है आय जियमें मेरे मोहन
प्रेमकी फांस ॥

होरी हो रहो है या ब्रजमें खेलत नन्दकुमार ।
बाजत ताल पखावज सुरली नाचत दे करतार ॥

हा होरी वे खेले माई जिन लालनकी सुध पाई ।
उड़ रे काग अमर अति कारि उड़ क्यों न पिया
पास जाई ॥

जो पिया देखहुं स्रप्रमें मन राखीं समुभाई ।
तेल फुलेल सभी हम छाड़ो अङ्ग विभूति रमाई ॥
योगन हो के वन वन डूँदा मैं जाय पण्डित पुछाई ।
तीर्थ व्रत किए बहुतेरे गङ्गा यमुना में न्हाई ।

सरदास स्वामी तो हे मिलन को जो मिलिया सो
सुखदाई ॥

कृष्ण कंवर सो होरी खेलन सब ब्रज वनिता मिल
कर पारी ॥

भोरी भरो गुलाल कुङ्कुमा हाथन ले मोहन
पर धारै ॥

१०

जी सो होली खेलौ अपने प्रिय सो रिभाय
रिभाय रिभाय ।

गुलाल अबीर मुख माड़ोंगी महारात्र महीप को
रङ्ग में भिजाय भिजाय भिजाय ॥

सिन्धु—तिताला

होरी खेलिए री अति मदमाती नारी पीतम
टिग बोरी ।

अबीर गुलाल कस्तूरी कुङ्कुमा पकर पकर
बाह वरजोरो ॥

२

अति मदमाती डोरे सब तियन में तू री अतुर खेलार ।
तन सोहे रङ्गभीनी सारी गर पुहुपन को हार ॥

३

फाग खेलौंगी लाल सो बन बन शुभ चरो पल पल
दिन दिन गन गन ।

अबीर गुलाल ले मुख मोड़ोंगी केसर छिरकों
गारी दोंगी छन छन ॥

४

सकल व्रज धूम मची है आयो फाल्गुन मास ।
बाजत मृदङ्ग पखावज आवज करत परस्पर हास ॥

५

धूम मचाई वगर में आवत है ठीठ कन्हैया
खेलत होरी ।

केसर रङ्ग में सर्वस्व बोरी नेक न छोरी पोरो ॥

६

फाल्गुनके दिन चार रहे अजङ्ग न आए लाल मेरे ।
सुहाग भरी खेलूंगी अपने प्रिया सो करुंगी
रङ्ग नए नए ॥

७

काहे को रिस खाय रहे प्यारे होरो में क्यों न
करत मो से रङ्ग ।

भली बुरी नित कहत रहत चर्चा हमारी सोतन
को याही ठङ्ग ॥

अबीर गुलाल उड़ाऊं आज में सङ्ग ।
तुम्हारे राव राजा प्रथम शाह मैं भी चेरी उमङ्ग ॥

सिन्धु—धमार

लाल ज लाल तन मेरे भीनी चनर अब तुम
केह विधि जै हाँ ।

कोज कहे रावरो बतियां छतियां कैसे कुवे हों ॥

सिंदूरा—धमार

लाल मेरो बहियां मरोरी डगर बिच ठाढ़ो
मुख मीड़त है रोरो ।

अतर गुलाब केसर रङ्ग पिचकारी रङ्ग को
परत है भीरो ॥

२

आज धन्य भाग्य सखी री फाल्गुन में प्रिय पायो ।
धन्य वसन्त धन्य होली रङ्ग है धन्य प्रभु मेरे आयो ॥

३

वनवारो लाल विसारी ऐसो रङ्ग डारत भीज
गई सारी ।

पाछे ठाढ़ो सब पार परोसन हंसत खेलत सब ही
नरनारी ॥

लाज सकुच सब तज डारा है एक मूँठ तें
लाज विसारी ।

ऐसी निठुराई कौन बदी है को कहे तो है गिरिधारी ॥

खन्नावतो—तिताला

आज असाड़े फाग है सद्यो नाल मोहन दे
खेलौंगी होली ।

अबीर गुलाल मलों मुंह उसदे रङ्ग चन्दन रोली ॥
सबे सद्ययां देहो बधाइयां गावो फाग अमोली ।

बुद्धिविहारी साड़े अङ्गन आया चन्द्र पया
मिड़ी भीली ॥

२

वेखोनी यह नागर नन्ददा व्रज बीचे खेल कहावे ।

रत्ने इत्य गुलाब माल दाबे जोराजोरी मुंह लावे ॥
कुडियां नाल मजाक कर दा हंस हंस गालियां गावे ॥
बुद्धिविहारो फाग बहाने घर घर धूम मचावे ॥

१

सालू मैड़ा रङ्ग लाइस मोहन रङ्ग नाल भरया ।
डोल दहीं भरो मैड़ी चाली कौन्हा में करया ॥
एह तां होय नन्द घर जुल्मी इसको लो जी डरया ।
बुद्धिविहारो मनदा नाहीं ना मिन्नत साल डरया ॥

४

लड़ लड़ सालूदा सांवले बड़ी दूर असाने जाना ।
होया सगुन तैड़ा डोली दा सालू भोजा शाहाना ॥
जालम सच पूछे जो मैड़ी कछो की करसां बहाना ।
डोली दहो नाही यों गमकाई केहा बुण पछताना ।
बुद्धिविहारो तेहारी जटेती कर दा जोर धिगाना ॥

५

वे जधो नाल परायां की जोर ।
पुत्र पराए होत न अपने कीते यत्न करोर ॥
ब्रजवासी असी दिन्न दे कचे औ सबहिं एक ठोर ।
कंस बहाना कर के साथी लीता कान विछोर ॥
कोथे वंशो तां कीथे गछपां कीथे माखन चोर ।
बुद्धिविहारो दे विछरम सानू पएमा मले होर ॥

६

जिन करो रार मो सों जापो जी जावो अपने हार ।
जिनके रस वश भए मनमोहन जहां जावो तहां
नई बहार ॥
मेरो प्रीति को कौन भरोसो जहीं रहो तहां इतबार ।
इच्छा पुरवी वाही तिया की जिन गर लिपटाए
भुजा डार ॥

०

अब सखी कैसे निकसे बाहर मग में रोकत
टोकत ब्रजनार ।
ब्यालबाल कान्ह अपने सङ्ग ले मारत केसरं
पिचकार ॥

डगर बगर तिय चलन न पावे ऐसे ठोठ होरो के
खेलार ।
आनन्द रसिक ब्रज वीथिन डोलत छेला नन्दकुमार ॥

८

यीवन मदमाती नार अक्षर संभार ॥
मस्त महीना फाल्गुनका रङ्ग छिरणो पिया
पर डार रे ॥
गहेली गहेली डोलै अपने अङ्गन में पिया को
नयन निहार रे ।
अनुरागी रस पागो जागी मद छको गावत होरो
दे तार रे ॥
हंसत सुसकात देत है गारी मचल रही कर के
रार रे ।
न डरत करत न काङ्ककी कान इच्छा ऐसी
अधिक छिनार रे ॥

९

कैसे कर कोज निकसे पनियां भरन बिच ठाढ़ी
लङ्कर बटपार खेलै होरी ।
रङ्ग पिचकारी ले सबन पै डारी और मुख मीजत
है रोरी ॥
ऐसो निर्लज्ज भयो डोरे ब्रज में तरुणी वारी नाहिं
न छोरी ।
रस वश कर लेत मनमोहन होरी रङ्ग रचो रो ॥

१०

ए री आज मथुरानगर में दधि बेचन को गई ।
मोर मुकट कुण्डल को छवि देखत सुध बुद्धि भूल गई ।
इत डर है मोचे सास नन्द को उत नेह
लागो री नई ॥

११

मोहन होरो गावे सुन जियरा है सरजे ।
अण भीतर अण बाहर अङ्गन वैरन ननदी वरजे ॥
रहज न पावत विरह सतावत ज्यों ज्यों
उफ धनि गरजे ।
यह फाग बलिहार मिलौगी मनमोहन सो अरजे ॥

१२

जाग परूं तो नौद न आवै मोहन होरो गावे ।
उफ धुकार सुन कान वाणसी मन में मैन जगावे ॥
तो हि सुनाय कहत हौं ननदी विरह व्यथा
कोई नहीं पावे ।

दे अकोरी बलिहार तन मन जो तू आन मिलावे ॥

१३

होरो होय रहो ब्रज माही ।

जिन नहीं खेलो श्यामसुन्दर सङ्ग हथा जीवन
जगमाही ॥

जब तें वेणु सुन्यो वृन्दावन कल न परे मनमाही ।
वरसानेकी बनठन आई मैं न गई तहां नाहा ।
गावे गूदर सुन सखो सुन्दरि पडुंचा ही हरि पाही ॥

१४

होरी कैसे खेलूं सख्यां नहीं आवै री ।
निशदिन मद्द को विरह सतावै पिया विन भवन
न भावै री ॥

१५

साज भरी नहीं बोलूं सांवरै देख यह धूम मचावत है ।
पहले तो हम सन सूधे खेलत पाछे ते गारौ
सुनावत है ॥

१६

दर्ई दर्ई कर रही भला या रङ्ग में बोर दर्ई ।
अनवादी खादो यह नन्द को इन मोरी बाँह गही ॥
घर वर तज हठ मान अकेली नाहक पनिया गई ।
साक कहत बलिहार दोष मोड़े हो गई बात सही ॥

१७

अरे लाल नई रे लगनियांकी मोठी बतियां पिय
जाने के मोरा जिय जाने ।
निजासुहीन भीलिया है पिय मोरा पिय के विहरन
में भई हं बाबरी ॥

खन्नावती—यत्

यौवन मदमाती अक्षर संभार रे ।
फाल्गुनके दिन मस्त महीना सुरख रङ्ग पिय
पै डार रे ॥

१

सखी री पिय विन ककु न सोहाय सो आज मोरा
रह रह जिय घबराय ।
घर से निकस हच तर ठाढ़ी सखी री वचन सहे
नहीं जाय ॥

२

लाल मेरे आवै री जावो रे सख्यांको ले आवो
मेरे दिन दिन बढ़त सुहाग ।
सखी सोती थी अपने मन्दिर में सुख नौदरिया
इन विरह ने खायो है मांस ॥

३

सासु नमदिया लरेगी मोरो मो पै रङ्ग जिन डारो
सांवलिया ।
हा हा करत हं पहरां परत हं चेरी में हंगी तोरी
सांवलिया ।
कृष्णानन्द मान मनमोहन काहे करत वरजोरो
सांवलिया ॥

४

ए री हां साजकी गारौ दे गया दे गया दे गया
ए अनारी ।
जाय कहि हौं मैं तो सुहृद्द शाह सीं तुम जोते
हम हारौ ॥

५

होरी होय रही है नन्दमहरके द्वार ।
अबोर गुलाल के बादर छाए रङ्गको परत फुहार ॥

६

कौसी होरी आई ए जी सुनो व्यथा हमारो ।
उफ धुकार परो अवणन में विरह अग्नि हिय बारी ॥
नयन नीर भर भर डारन लगे मानो छोड़े पिचकारौ ।
निशदिन मद्द को कल न पड़त है तलफत बीतत
रेन भारौ ॥

देख तो दोष मिल होरी खेलत इत प्यारो
उत प्यारी ।

परम कृपाल श्रीवहभ नन्दन मागहुं अक्षर पसारौ ।
दास कृपापर कृपा कीजे बेग मिलावो गिरिधारी ॥

८
 निशा नींद न आवे होरीके खेलन की चोप ।
 श्याम सलोना रूप रिभोना उलहो यौवन कोप ॥
 अब ही ख्याल रच्यो सु परस्पर मोहन गिरिधर भूप ।
 अब वरजे मोरी सास ननदिया परो विरहके कूप ॥
 सुरली की टेर सुनाय जगावै यही वगर में अनूप ।
 यह जिय सोच रही हो अपने जाय मिलि हीं
 हरिके सो रूप ।
 आनन्द घन प्रभु गुलाल घुमड़न में एक ही रङ्ग
 रङ्गे हीं रूप ॥

९
 ठोटे जान न दूंगी तुम खेलत हो होरी ।
 अहम भर भर कसुकी मोरी दरक गई मुख
 गुलाल मीजत वरजोरी ॥

१०
 यशोदाके लाल तुम इस गैल न आव रे ।
 वरज रही वरच्यो नहीं माने तेरो ऐसा स्वभाव रे ॥

११
 यशोदाके लाल तुम मो पै न रङ्ग डार रे ।
 बहियां पकर मोरी चुरियां करकी मोह अकेली
 कर पाए रे ॥

१२
 यौवन मदमातो नारी अक्षर संभार री ।
 यह फालगुनका मस्त मझोना रङ्ग सद्यं पर डार री ।
 इस अङ्गिया पर लाल लगे हैं मोती लगे हैं
 हज़ार री ॥

१३
 वामें कहा कहु भूठ कहा मेरे पियके मिलनकी बारी ।
 गुलाल मलों तो सुकर जात है बहियां मरोरत
 भारत पिचकारी ॥
 अबोर उड़ाजं तो कागा बोलत है मैं हंस हंस
 देत हं तारी ।
 अबपल हो के मैं पिया सो मिलोगो पहन
 केसरिया सारी ॥

१४
 होरी खेलन तुम आए रसिया ।
 चोवा चन्दन अतर कुङ्कुमा अबोर गुलाल
 ड़ाए रसिया ॥

१५
 भकभोरी कर होरो खेले न्हारो रसियो राजकुमार
 बहियां मरोरी ।
 औचक आन गहो या ब्रज में अबोर लिए भर
 भोरी कर होरी ॥
 अगवारो पिछवारो ननदल मुख माड़े छे रोरी ।
 वलिहारी काई धूम मचावै नन्दमहर जूकी पोरी
 कर होरी ॥

१६
 चावो बलमजी हमारे डेरे अबोर गुलाल मलों मुख
 तेरे होरीके दिनन मोखे मत छरके रे ।
 जो पिया मोखे रुस रहै हो बल बल जाऊं सब ही
 घने रे ।
 महशद शा पिया सदाहो रङ्गीले दूर न
 बसो बसो मोरे नेरे ॥

१७
 मैं तो लाई केसर रङ्ग भरके छिरकात रङ्ग
 हुलस पिय हरखे ।
 अपने री अपने रङ्ग बनाय लाई अरे लाला डोरी
 बनो वा के कर से ।
 महशद शा पिया सदा ही रङ्गीले फगुवा लूंगी मैं
 भगरके ॥

१८
 होरी की ऋतु आई सखी री चलो पियापे
 खेलिए होरी ।
 अबोर गुलाल उड़ावत आवत शिरपर गागर
 रसकी भरो री ।
 महशद शा सब मिल मिल खेले मुखपर अबोर
 मलो री ॥

१८

चलो देखिये मेरी सखी री मोहन धूम मचायो री ।
ब्रजगोपिन सङ्ग होरी खेलत रहस रहस
गर लायो री ।
वरजोरी कृच गङ्गे कर पकरत ऐसी नाच मचायो री ॥

१०

नन्दलालके सङ्ग होरी खेलन को आई री ।
अबीर गुलाल लेहो भर भोरिन भर पिचकारी
लाई री ॥

११

एसे चतुर श्याम सो को खेलै ऐसी होरी री ।
अबीर लगावत रङ्ग में भिजावत पीर करत
वरजोरी री ॥

१२

आवो सङ्गयां मिल होरी खेलै धन्य धन्य मेरो भाग ।
चोवा रे चन्दन पीर अरगजा सङ्गयांकी रङ्गाय
खो पाग ।
सङ्गयांकी सुहागन सङ्गयां सङ्ग सूते दे बहियां
गरे लाग ॥

१३

सब रसभीनी मारती अरे हो राधा गोरी खेलै होरी ।
एक पीर तें श्याम आये एक पीर तें कुजा बोरो ।
राम परस्पर रङ्ग रण्यो है कोई सांवरी कोई गोरी ॥

१४

हम से अनोखी कौनसी नार ता सो नयन लाग
रहो री ।
जल बिच कमल कमल पर कलिया भ्रमर
लिपट रहो री ॥

१५

आज मोरे ऐसी होरो सङ्गयां तोसे ना खेलूँ
मोरे सुखपर अबीर मलो री ।
सब सखियां मिल वन वन आई हम ही सो उरभ
परो री ।

हो निर्गुणी कहु गुण नहीं जानो कुजाके
विलम्ब रहो री ॥

१६

आज पिया मिलनकी बारी श्याम मोरो अङ्गिया
रङ्ग भर डारो ।
अगर सुने मोरी बगर सुने रे सास सुने दे गारो ॥

खन्नावती—धमार

नहीं आयो सांवरो कैसे के मन समझायो री ।
मधुवन टूट्ट हुन्दावन टूट्टो गोकुल में उरभायो री ॥

छेल मनमोहन मोरी अङ्गिया रङ्ग भर डारो री ।
अबीर गुलालकी मूठ ज्यों मारी चितवन वध
कर डारो री ॥

१

किन रङ्ग डार दियो मोरो अङ्गिया भोज गई सारी री ।
नन्दमहर जकी कंवर कन्हैया अबके फाग मोरो
बारी री ।
लण्णानन्द पकर पाऊं जो मुख मीड़ो दे तारो री ॥

सखी पिय सन खेलिये होरो को ऋतु आई चलो री ।
अबीर गुलाल उड़ावत आवत गिरपर गागर
रङ्गकी भरो री ।
मनमोहन सुन्दर पिय सोहन अबीर गुलाल मलो री ॥

५

भर मारी पिचकारी रे अङ्गिया भिजोई
केसर रङ्ग सों ।
ऐसो कौन मनमोहन पिय सो गुप्त छाप
दोजे टङ्ग सों ॥

सिंदूर—तिताला

ब्रज में होरीकी धूम मची है ले चल तमाशे को
रे देया ।
अबीर गुलाल रङ्ग सो भीने मोहन नाचत ता धैया ॥

२

लखि नयन कनोड़े प्यारी सुसक्यानी ।

जावक भास लगे दृग अज्ञान आए साजन पहंचानो ।
वारी सारी रेन जगाय रही प्रगटी लेहो विहानी ॥

१

मानो चन्द्र छिपे रो घूंघटरा में तिहारे ।
जगमग ज्योति जराव को टोको जैसे शुक के तारे ।
मोतिन मांग भरे वनिताने मानो गङ्गा धसी
हरिद्वारि ॥

४

कज्जर कार दृग तेरे विराजे ।
नाशाको मोती अति राजत मानो शुकके तारे ।
कान तरौना यो बिच चमके मानो उदित भए
भिनसारे ॥

५

अब न जाऊं ब्रज में दधि बेचन गोरसके मिस
सब रस चाहे ।
औरन सो पिय हंसके बोलत है हमसे भ्रगरत है
अब काहे ॥

६

गोरो गोकुल ग्राम न बसिये जो लौं फाल्गुन मास ।
बाहर दुर्जन लोग चबाई घर में वैरनि साम ॥
जो रहिये तो पिय से होरी खेलिये हियमें
आनन्द हुआस ।
रही लाज वलिहार जावो कि न श्याम मिलनकी
आस ॥

७

रङ्ग डारत कज्जर टर गयो ।
ताती ताती छतियां घात आपनी हाथ अचानक
पर गयो ॥
हो निकसो घर बाहर अपने रसिया पाने पर गयो ।
कहा कहीं वलिहार चबाई घरको कार्य
विसर गयो ॥

८

दारो मतवारी डारै या हू डगर में पी मुख मले
गाल गुलाल मानत न नवतन काहू ग्वारि ।

उन्मद मदन लर भ्रगरत सबनको गावत गारि
दे तारि ॥

सिंदूर—परज

यौवनकी मदमातो होरी में देत सबन।सुख गारो
भिरकी ।
डारो अबीर खुलत नहीं निपट सदा । रङ्ग घूंघट
खिरकी ॥

२

बरसाने ते आए अरसाने हम जाने जू लक्षण
तिहारे पहंचाने ।
कहं कज्जर कहं पीक लीक अनगन स्वभाव न
मो पै जात बखाने ॥
नयनन नींद ध्यान मन हृदय वसत तीय नाहीके
लगत गुण गाने ।
धन्य तेरो नेह तानसेनके प्रभु ऐसे नट नागरको
छल कर नाच नचाने ॥

३

ओटे सारी प्यारी केसर की रङ्ग छिरकी छिरकी ।
चितवन में वश कीन्हो मोहन को यातें फिरत
थिरकी थिरकी ॥
अबीर गुलाल लिए भर भोरी रङ्गकी कमोरो
थिर डिरकी डिरकी ।
तानसेन सो फगुवा लोन्हो यातें डोलत
छिरकी छिरकी ॥

४

आनन्दको नन्दन खेले जो हो हो होरा ।
ग्वार बार सब सङ्ग सखा ले ब्रजकी वीथन हो डोरा ॥
ताल पखावज आवज बाजत डोलक और तंबोरा ।
वीणा रबाब मुरभ उफ मुरली मधुर मधुर
ध्वनि थोरा ॥
कुङ्कुम केसर चन्दन वन्दन अबीर गुलाल
भर भोरा ।
तानसेन प्रभु फाग रथो है खेलत किशोरी किशोरा ॥

५
छिनरिया धूम मचाई यह ब्रज में हंस हंस
खेल रचाई ।
दशन चमकी और मुखकी हसन नयन सैन कर
भीड़ मटकाई ॥
पकर लिए धूमधोहन सोहन फगुवा लीन्ह मन भाई ।
रसिकरङ्ग प्रभु रस वश कर लीन्हो होरी
अवसर पाई ॥

६
चलो तुम हं देखो कैसी मची होरो गावत
रङ्गमहल में नारी ।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत
दौ दौ तारो ॥

अबीर गुलाल केशर पिचकारो तक तक भारत
गावत है मत्र गागे ।
तानसेन प्रभु खेल रथो है फगुवा लीन्हो भारी ॥

सिसु—परम

नन्दमहर जू को पौरो मची है हो हो होरो
हो हो होरो ।

नाचत गावत करत कोलाहल इत नन्दनन्दन उत
दृषभानु किशोरी ॥

दुहं और रङ्ग छाया रझो है अबीर गुलाल
मुख मलत है रोरो ।

भरत भरावत पिचकारो चलावत रसिकराय
प्रभु फाग मचो रो ॥

२
कजरारे कारे तेरे नयन विधि संवारे ।
मृगमद खञ्जन क्षीण लगत आलो इन हुते पाए
सरस अपारे ।

रसिकरङ्ग रस वश कर लीन्हें बार बार वलिहारे ॥

३
रङ्गकी पिचकारी प्यारी किन मारी ।
वदन रङ्गीलो भयो अङ्गिया तरक गई भीज गई
तनसारी ॥

ए सजनो मैं तोसे बूझूं सांचो कहो तो है सोह
हमारी ।
रंन की जागी भोर हो आई अखियन बीच खुमारी ॥
यह अपने जिय ठान रहो हों जो कुछ बन रही
तरह तिहारो ।
लाख कही मैं एक न मानो मिल गए विष्णुविहारो ॥

४
सब मिल डारो फाग निवार ।
ऐसो ब्रज में उलझ परो केउ न सुनत पुकार ॥
करो ए कहा चैन नहीं मनको तन जर भयो अङ्गार ।
वा विना मिल है न बूझे क्योङ्ग की ते गावे मलार ॥

५
हो हो हो हो होरो खेलै चलो देखें कैसी
मच रहो है धूम ।
इत सखा सङ्ग लिए सांवरो उत सखियन सङ्ग लिए
राधा भूम ।
मृदङ्ग बजावत और डफ गाजत गुलाल लाल भई
सिगरी भूम ॥

६
चलो तुम हं देखो कंसो मची होरो गावत रङ्ग
महल में नारो ।
कोज गावत कोज मृदङ्ग बजावत कोज नृत्य
करत कोज बहक देत है तारो ।
कोज काङ्गको अक्षर गह राखत कोज तुतराई
देत सबन मुख ह ते गारो ॥

७
होरो को चतुर खेलारो चुनरिया रङ्ग डारो हमारी ।
हा हा करत हं पइयां परत हं इतनी अरज मोरी
मानो विहारो ।
अङ्गिया भिजोई मोरी बिगारी तुम जीते हम हारो
गिरिधारी ॥

८
जिन मोरी अङ्गिया भिजोई देया मैं तो उनहो को
रङ्ग में भाजोऊं गी रे ।

फगुवा लूंगो तब जाने दूंगी राधाको बहियां
गह्वीय लूंगो रे ॥

में तो उगही को गारी देजंगो जिन मोरी
चूनर रङ्ग में बोरी ।
ठन्दावनकी कुञ्ज गलिन में धर बहियां भक्तभोरी ॥
हा हा करत मोरी एक न मानी मोतियनकी
सर तोरी ।

चोलिया पकर लपट उर मोरी वर वध गागर फोरी ॥
कृष्णानन्द मदनमोहन मन मोहत नेह भरो रो ॥

सरपरदा—तिताला

वारी हां मीठी बतियां पो जाने कै भरो जो जाने
भरी नई लगन ।

इत बहै गङ्गा उत बहै यमुना छांह कदमकी
मिलो मोहं कांहा लग गई वाण मोहै श्याम तकन ॥

सरपरदा—परज

श्यामसुन्दर तो से खेलुं होरी ।
होरी खेलनको मोरे सइयां भाई लो फगुवा लूंगी
वरजोरी ॥

होरीके खेलैया तोहं लाज न आवै मो सो काहिको
प्रीति लगावत रे ।
नदिया किनारे एक बङ्गला छवै हों नयन भरोखे
लाग रहै ॥

होरी खेलैया ब्राह्मण यार ।
जो तुम ब्राह्मण जात ही रसकी नौद गंवाई ॥

कौन जाय ब्रज में दधि बेचन रङ्ग डारो चूनर
सारी रे ।

एक हाथ मोरा अक्षर रे पकरे दूजे हाथ मोरी
सारी रे ॥

माई बापकी बड़ी दुलारी कबहूँ न दीन्हें गारी रे ।

आन परे वध तेरे ई मोहन नित्य उठ देतो तारी रे ।
कृष्णानन्द श्याम मनमोहन नोखो खेल खेलारी रे ॥

तेरो अहियांमें कुङ्कुम रङ्गके काहै छिपाए
जात सखी ।
वरज रहे वरज्यो नहीं माने रङ्ग रूप भी गात सखी ।
कृष्णानन्द पकर कर निरखत श्यामसुन्दर
सुसक्यात सखी ॥

कजरारे कारे तेरे नयन राम संवारे ।
मृगमद खञ्जन क्षीण लगत अलि इनहुं ते पाए
सरस तिहारि ।
पशुपक्षी भीर जीवजन्तु मन सबके रङ्गन रङ्ग डारे ॥

अंखियां रतनारी वालम कइं जागे ।
सगरी रैन मोहै तरफत वीती किन सोतनके
गरे लागे ॥

उगमगात पग परत शिथिल अति पोकलीक
हिय लागे ।
मोहन यह ठङ्ग कौन सिखाए अनहोनी आगे आगे ॥

सरपरदा—पहाड़ी

तू बेदी भालों न दे रो तेरो ऐसे ही सब जग वैरी ।
लटक मटक कर चलत रो सजनी तेरो अंखियां
आमकी करौ ॥

गमनेका सन्देशा सुन के सुसक्यानी ।
बाट चलत मोरी बिछियां हेरानो देख खेल अठलानी ।
एक गोरी दूजे यौवन मातो बात समझ सकुचानी ॥

कोज चलन पावै बाट फालगुन में ।
जो देखूँ सोई मातो ही छोलै रङ्ग गुलालन
ठाट फालगुन में ॥

सरपरदा—खन्नावती

नयन तेरे दूखहन मतवारि रे ।
कप्पर रेख दई कोरनमें मीन खञ्जन दोज वारि रे ॥

१
होरी खेलन मेरे आए मनमोहन जानी ।
म्बाल बाल सब सङ्ग सखा ले पिचकारिन मिहमानी ॥
बाजत तालमदङ्ग भांभ डफ गावत नीकी तानो ।
कण्ठरसिद्ध सो फगुवा ले हौं तब छाड़ोंगी गुमानो ॥

२
श्याम आज रङ्ग रङ्गाए कहां रेन जगाए ।
सगरी निशा अनत ही जागे बोलत वचन अति
तोतराए आए है घबराए ।
अधरन अञ्जन भाल महावर मुख अबीर
गुलाल लगाए ॥

३
जो कोज होरो में नारी बाहर निकसे वापे मोहन
रङ्ग डारत है ।
लपट भपटके बहियां गह लेत है कुचकी
तनिया फारत है ॥

४
जागे भाग्य हमारे आज सखी मोहन आए ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर मुख मीडूँ गर लाए ॥

५
ललचावो जिन बालम दिननकी थोरी ।
जावो जा जावो रहो उनही के जा सों
खेलत हो होरी ॥

विभाग—तिताषा

होरी दे ख्याल बिच यह क्या कोता ।
में नू लगाय छरी फूलोदी शिर ते घूँघट खोल लोता ॥
परा गुलाल आखिन बिच मैड़े देखन दा सुख छीता ।
सखी देखे दी लाज मरे दी चुम्बन मालां दोता ॥
ऐसे न कोजे नागर नन्द दे काहावत है ब्रज मोता ।
रसिक प्रीतम सो हा हा खांदी हौं हारी तू जीता ॥

२
वरसानेकी म्बालनी खेलत फाग वसन्ता हो ।
शङ्का न काङ्की मानही माता पिता सुत कन्ता हो ॥
चन्द्रभागा चन्द्रावली मध्य नायक राजत राधा हो ।

सहज स्वरूप सुहावनो शोभासिन्धु अगाधा हो ॥
चली सब चतुर शिरोमणी खेलनकी रस फाग हो ।
रसिक कंवर वृषभानुको तुम सो अति अनुराग हो ॥
सकल साज सब ले चली आई वट सङ्केत हो ।
पठई सखी एक आपनी नन्द कंवरके हेत हो ॥
बल मोहन हंस यों कछो सुनो सखा श्रीदामा हो ।
हम पर आई सब जुरि उन्मद अतिशय वामा हो ॥
वेग चलो मिल ग्वाल ले देखावो अपने हाथ हो ।
जासे बहुरि न भाव ही छाड़ि आपनो साथ हो ॥
अनन्त गुलाल अबीर ले देहुं निशान घुराई हो ।
बहुत कलस सोधे भरे कुङ्कुम भरि पिचकाई हो ॥
दलबादल जो देखके सन्मुख आई धाई हो ।
भेषघटा ज्यों वर्ष ही अद्भुत फाग मचाई हो ॥
कमलन ले ले नवलासी कुसुम गेंदकौ रार हो ।
मुड़ि भाजे बल मोहन हो हो कर है ब्रजनार हो ॥
चन्द्रावली बल जू गड़े श्याम गड़े श्रीश्यामा हो ।
सखा गए सब भाजि के ले गयो छिड़ाय दमामा हो ॥
शङ्कर्षण सोधे भरे श्याम भरे सुख भारी हो ।
आनन शीर्ष संवारी के भेष बनायो नारी हो ॥
वर वश भई ब्रजसुन्दरो शोभा कही न जाई हो ।
चतुर्भुज प्रभु इन वश किये गिरिगोवर्धन राई हो ॥

परज—यत्

मचाई आज कुञ्जन में अनोखे सांवरे होरो ।
गई जो नारो देखनको भई छवि देखत बोरी ॥
सखा लिए श्याम सङ्ग डोरे सो एक ओर
राधिका गोरी ।
बजत हैं भांभ डफ वीणा मधुर स्वर सुरली घनघोरी ॥
सकल मिलके वधू आई भई एकठी एकठोरी ।
चले बहु गेंद कुङ्कुमा न सुध रहो तनको तनोको री ॥
सखिन लिए पकर मनमोहन दिए हग आंज

वरजोरी ।

कहं हंस के दियो गुलचा कहं लई वांसुगी होरी ॥
कुड़ाई बाह यदुनन्दन गहो वृषभानु किशोरी ।

लगाई अङ्गुली सो प्यारो छिरक रङ्ग मोज सुख रोरो ॥
गगन चढ़ सुर सुमन वर्ष मची जो ध्वनि चहुं सोरो ।
निरख सुखसिन्धु कविनायक दियो तनमन
ज्यों लख तारी ॥

वृन्दावन माह सखी रो फाल्गुनकी ऋतु आई ।
विलम्ब रहे मधुवन में मोहन मोड़े कहु न सुहाई ॥

कैसी होरो आई अजी सुनो व्यथा हमारो ।
उफ धुंकार परो अवनन में विरहने हृदय
भाग बारो ॥
नयन नार भर भरन लागी मानो छाड़े पिचकारी ।
निशदिन मो को कल न परत है एक दिन नौद
न आई भारी ॥

देखो दोऊ मिल होरो खेलत हैं इत प्यारो
उत प्यारो ।
परम कृपाल श्रीवल्लभनन्दन मांगहु अचर पसारी ।
दास कृपापर कृपा कोजो बेग मिलावो गिरिधारी ॥

योगिया—यत्

जाको पिया सपने हुं न आवे वाको फाग है कैसा ।
तू तो कहत है आई होरो खिले मोको तो यहै
अन्देसा ॥
नयनको पिचकारी करी है अंसुवन रङ्ग बनैसा ।
विरह ताप सो होरो में खेलौ भेरे तो हाल है ऐसा ॥

योगिया—परज

सखी आज गोकुल धूम मची है होरो खेलत
कृष्णसुरार ।
नन्द गांवती ग्वार आए सब वरसाने की नार ॥
मान कछो भेरो उठ चल हिलमिल अब जिन
कर मो सो रार ।
सब त्रियन में अधिक रूप तेरो तब ही कृष्णको
है प्यार ॥

ए रो व्रज में बन होरो खेलिए आयो है
फाल्गुन मास ।
अबोर गुलाल कुङ्कुम पिचकारी ले मिल
कान्हर पास ॥
वसन भूषण पहर शीषफूल धर अङ्ग सुगन्ध सुवास ।
उठ चल हिलमिल श्याम सो अपने पूज ले
मनकी आस ॥

नन्दलाल महाराज नगर आज धूम मचाई ।
गाय बजाय नाचे नृत्यकारी गुणोजन वोषा बजाई ॥
देखा सभा जैसे इन्द्र विराजन द्युतिनको
आख लजाई ।
तानमान को इनाम दान कर सबनकी आशा पुजाई ॥

आज होरो खेलन आए मथुरा नगरके लोग ।
चलो सखी मिल वन वन टूँटो जहां हो
श्याम से संयोग ॥
कूक मचाय नाच गति विरहन भरो है वियोग ।
आज सभा में ना आई है कान्ह रति कैसे
सुने हो भोग ॥

ए रो आज मथुरा नगर में दधि बेचनको गई ।
मोर मुकुट कुण्डल को छवि देखत सुध बुध भूल गई ॥

रङ्ग सरसाने वरसाने आयी नन्दग्राम वरसाने ।
इत राधे उत कृष्ण कंवर सङ्ग सखी सखा हर्षाने ॥

यसुना घाट कैसे जायो जित तित खेलत कृष्ण
हो हो होरो ।
जैसे हो लाज तैसी दास वरजे न कोज उनको रो ॥
ऐसी बाबरो भयो है व्रज में काहे तो लाज विसरो रो ।
भौंइ मरोरत नयन सैन दे सैन ते होउ न होरो ॥

हो हो अब तो हरि होरो खेलन लागि खेलन लागि ।
सब मिल पहरे आभूषण नौके गरे केसरिया बागे ।
अति सुनन् रङ्ग पुहुपवसी लै लै चलो उन आगे ।
चोहल भरो सबे ब्रजनारो भाग्य हमारे जागे ॥

ऐसो ब्रज में उलट परो कोज न सुनत पुकार ।
यह कान्ह होरो खेलै भोकुलमें सङ्ग लिए ब्रजनार ॥
एक नृत्य करत है ठाढ़ो एक गावत दे तार ।
एक अवीर गुलाल उड़ावत एक भरत रङ्ग पिचकार ।
एक सांवरो और गारो सुन्दर और भारो है सब नार ॥

खेलन लगे फाग मोहन ब्रजपतिकी पुरो नन्दके
राजदुलारे ।

चोवा रे चन्दन अतर अरगजा केसर परत फहरि ॥
कण्ठ खेलत सब गोपो खेलत है खेलन मुनिजन सारे ।
सन्मुख चोट परो राधा पर सुरदास वलिहारे ॥

होरो का सङ्ग खेलौ फाल्गुनको दिन आयो रो ।
प्रिय परदेश खबर नहीं लोन्हीं किरह आन
सतायो रो ॥
जब के गए भए वाहो के कौन तिया विलमायो रो ।
रसिक सनेहो काह्न रस वश कर लोन्हीं उन विन
कहु न सुहायो रो ॥

परज—कलिक

बार बार तुम रङ्ग जिन डारो ना खेलूँ ऐसो
होरो सद्दया ।

विनतो करौ तोरे लागूँ पदयां धर बहियां
भक्तभीरो गुदयां ॥

वरजारी कुच गह मुख मीड़त फिर फिर आवत
मोरे छदयां ।

काज्जम अपनी ओर निभावो वर वश भगरा ठदयां ॥

२

अब रङ्ग काहेको डारो लला मैं तो सगरी भोज गई ॥

उड़त गुलाल लाल भए बादर रङ्ग केसर
पिचकार दई ॥
हा हा करत हं पदयां परत हं दई दई कर निभई ।
रसिक खेल रसवश कर लोन्हीं भुज भर अह लई ॥

३

मेरो कण्ठकुमार होरो खेलन आयो रो ।
वर्ण वर्णके रङ्ग बनाय लायके सङ्ग म्वारन को लायो रो ॥
बाजत वीणा मृदङ्ग भांभ डफ मृदु मृदङ्ग बजायो रो ।
कण्ठरसिक रसवश कर लोन्हीं होरो राग जमायो रो ॥

४

मैं तो उलटो उरहनी लाई रो ।
सासजोका पुत्र ननदजीका वोरन जिन मोरो
मत वीराई रो ॥

अङ्गिया रङ्गी भोज गई सुधबुध सब विसराई रो ।
कण्ठ रसिक के रसवश भई धर बहियां मुरकाई रो ॥

५

पिचकारो रङ्गको भर मारो भाज गई तन सारो
मेरो नट नागर पिया गिरिधारो ।
चञ्चल चपल उधमो रसिया निपट भिला है वनवारो ॥
वरजोरी मलत गुलाल कपोलन खेल वेसिया वारो ।
उर लगावत नहीं उरत अनोखो कर खुशाल
विना निहारी ॥

६

होरो खेल ले श्याम सो गोरो अब हो दिननको घोरो ।
अवीर गुलालको भर ले भोरो
रसिक रङ्गको रसवश कर ले मान ले विनतो मोरो ॥

परज—खम्बावती

आये नहीं ए रो मेरे मनभावन ।
वरसे बून्द परत मेरो छतियां पिय परदेश नहीं आवन ।
को छावे हमरा मन्दिर गरजे शिर जपर आवन ॥

परज

दूर न दुराए न उरे नयो नेह दूरे न दोरे ।
उगमगात अरसात गात नाहीं रङ्ग निधुरत थोरै ।
नयन सारी रैन रङ्ग हो वीते आवत लजाय भोरे ॥

२

नयन कानावड़े हो पिया पीक रची है अधरन
लखि चरण धरत पांवड़े बांवड़े ।
यही भावन पर तनमन वारो नयन करै निज पांवड़े ॥

परज—बलैया

भाज ब्रजवासी की छोहरा उफ बजावत भावत है
कछु बोलन लसी ।
श्यामवर्णा अति अरुण नयन किए लेत अङ्ग
भर कसी ॥

कहा भयो घर जान दे मोरे भई सो भई घर बसी ।
जो सुन पावे दुर्जन लोगवा होई नेकमें हंसी ॥

२

हमारो कन्हैया राधा ने वश कीन्हो ।
एक वन भूली सकल बन ढूँढ़ी ढूँढ़ी गोप ग्वारोका
अति रङ्गरस दीन्हो ॥

२

चन्द्रकी भलकन तरि माथे कीन लगाय दई अहो
फाल्गुनमें ए हो प्यारि ।
घट गई रैन छिप गए तारि जागे भाग्य हमारि ।
हो ललना होरीके दिननमें निकसि भावत
उजियारि ॥

४

राधा छवि छाई होरी खेलन आई ।
ललिता सङ्ग लिए राधा इत उत बलवीर कन्हारि ॥
देख गुलालकी घूंघर में अबला चपला सी लखारि ।
दीनबन्धु ब्रजराज छको मन मूठ गुलाल चलाई ।
भाल लगे हंस गारी दई पिचकारी दई मन भाई ॥

५

वरसाने ते पुरोहित आयो होरी रङ्ग खेलायो ।
कोज सखी कीच ले डारो कोज कारख ले मुख जो
लगायो ॥

कोज गूलरकी माला गल डाली कोज भंटा
उरहार बनायो ।

कोज धोती खेंच लई हो हो हो कर होरी में
नचायो ॥
हा हा कर छूटे पांडे जू समधाने तें दक्षिणा पायो ।
हंसत ठाढ़े ब्रजके वासी सब कौतुक देखि आनन्द
उर न समायो ॥

कलिका—योगिया

री आली श्याम बजावत वीना ।
अन्न विना जैसे प्राण दुःखत है जल विना जैसे मोना ॥
बारह वर्ष की वयस जात है यौवन अधिक मलीना ।
कर खान चीर पहनायो सूर्य अर्घ ले दीना ॥
हाय दई तेरो का रे बिगारो छोटे वालम मोह दीना ।
करि हों मृङ्गार पलङ्ग चढ़ बैठी अङ्ग अङ्ग रसभोना ॥
चोलो के बन्द करकन लागे के पीतम पीछ पसीना ।
मुरलीकी ध्वनि वश भई है कामिनी मोहन मन
हर लाना ।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दर्श को चरणकमल चित्त दीना ॥

कलिका—परज

होरी खेलत मेरो मन हर लोन्हो या ब्रजबाला
कुंवर कन्हैया ।
धीर नई चृनर रङ्ग में भिजोई कैसी करो में
अब मोरो देया ॥

२

होरी हो रही हो रही हो रही री सखी री
आज अवध नगर ।
धाम धाम पुर गलिन गलिनमें भई चहं दिश
भली धूम गजर ॥
विना रङ्ग बीरे निकसन न पावत कोज भूप
कुंवर ठाढ़ो छेकै डगर ।
बाजत मृदङ्ग उफ नाचत विविध नट उड़त अबीर
रङ्ग लेत लहर ।
रामसहाय मोह छवि रसवश कीन्हो सुघर सलोने
रङ्गभौने रवर बु ॥

२

सखी तेरी बेंदलिया पर वारी ।
 क्या बेंदिया गढ़ी सोनारनको केहुं सांचे में टारौ ॥
 अवर्ण वर्ण अनूप मनोहर चित्र विचित्र संवारी ।
 ना या बेंदी गढ़ी सोनारन ना केहुं सांचे में टारौ ॥
 अगम देशते आई बेंदलिया प्राण पिया की चिन्हारी ।
 सोना स्नेह सुकीर्ति कंदन नाम नगीना भारी ॥
 सत्गुरुकी शिक्षा भाणिक्य मोती घर बाहर उजियारी ।
 यह बेंदिया पर नारद रीति शम्भु लगायन तारौ ॥
 शुक सनकादि और ब्रह्मादिक मुनि मन मोहन हारी ।
 सब सुहाग भरी या बेंदिया तीनी गुणसे न्यारी ।
 रामसहाय सुहाय तबै जब होए पियाकी पियारी ॥

४

रङ्ग मयो तेरे दङ्ग मयो तू कान्ह मयो तेरी
 आन नई है ।
 तेरी सभा सब रङ्ग रङ्गीली हरिकौ छवि और
 खान नई है ॥
 या के रूपको कौन पहचाने ध्यान सो हरिकौ
 पहचान नई है ।
 हाफिज खेल ने होरी में मोहा मुरखौ नई तेरो
 तान नई है ॥

५

यह रात कब जायगी सजनी भोर भए मिलीं
 अपने पीसीं ।
 खेसौं रङ्ग उन सङ्ग निसङ्ग काठें अरमान जीसीं ।
 हो सुनि है या ब्रज में कौज हाफिज आय निकसो
 हो यह ठानी अभीसीं ॥

६

तेरे नयन कहे देत प्यारो प्यारि सो मिली आय
 कहा भयो जो न मान ।
 लौक पीक अधरन पर राजत अङ्गिया अङ्ग दरकान ॥
 प्रीति छिपाई छिपै नहीं ए री रतिके चिह्न मनमें
 बसे है तेरे अधरन पर मुसक्यान ।

खेलत फाग अबोर उड़ावत मुखपर देखत
 मुक्ताहल मानो शोभित रङ्ग वरसान ॥

७

रसवादी रे कान्ह तोसे को भगर रे ।
 अबीर गुलाल ले गाल मलत हो गुणन भरे
 रसके पंगरे ॥

८

मो पै तो रङ्ग डारे राँ दैया और आप न भोजी ।
 अबोर मलै और कुच मुख मोड़े कहो री सखी
 क्या कीजी ॥
 बात कहे सो कहवे को नाहीं आप कहे और रोजी ।
 अचपल हो बटपार बनो बाँको गारो भो दूँतो
 ना खीजी ॥

९

फगुवा मांगन आवै री मैं तो नाहन जानूँ कौन
 गाँवको वसैया ।
 फगुवामें भला कहा होत है हम न जानै ए री
 मो को बता मोरो दैया ॥
 मोसे तो कहु और भी कहत है कासे कहुं मोरी
 बाखल सगरी चवैया ।
 मैं अचपल मेरो रङ्ग यह अचपल ए री मेरो राम
 नाम है खेवैया ॥

१०

जिन मोरी चुनरिया भिजोई रे कोई वाको जानै ।
 घूँघट में मैं तो काह न देखो लाख कहाँ तो न मानै ॥
 ले पिचकार कुच्छन में निकसके मेरो और को धानै ।
 अचपल होके भिजोई मोको सहने परे मोहि तानै ॥

११

होरी खेलन आयो मेरे कण्ठसुरारो ।
 वर्ण वर्णके रङ्ग बनाय के सङ्ग न्वारन को लायो
 आन वगरमें धूम मचाई मुख मीड़े दे गारौ ॥
 वारो कान्ह वो तो हो कर छूटे हों कहा कहीं
 लाजकी मारी ।
 बबहू आधीन निर्लज्ज भयो याते नाचत दे दे तारौ ॥

१२

आज दुलहन बन आई चल बेचन जेये ।
घर घरते सभी बन आई लै लै सब विध रङ्ग
छूटी लटे मुख ऊपर आई घूँघट के वल जेये ॥

११

आज पिया मिलनेकी बारी खाम मोरी अङ्गिया
रङ्ग भर डारी ।

अगर सुने मेरा अगर सुने रे सासु सुने दे गारी ।
कण्ठानन्द कहत तोहो सो समुझ छाड़ पिचकारी ॥

१४

हां रे नाल में तो भीज गई रङ्ग में ।
ब्रजकी मग में निकस गई सब सखियां सङ्ग में ॥
पिचकारिन सा तक तक मारी रसवश कर डारी
अपने ठङ्ग में ।

धर बहिय । भकभोरी मोरी मुखसे बोलत हो हो
होरी लिपट गयो मेरे अङ्ग अङ्ग में ।

हा हा करत हं छाड़ दे रसिया फगुवा लीन्हों
याही अमङ्गमें ॥

१५

नयन तेरे सब रसरङ्ग भरे गोरी ।
ज मल आड़ा विमल कमलदल लोचन पाय
महावर रोरी ।

रेशम जाल में लाल परो है औ मृग खञ्जन जोरी ॥

१६

रे वरजोरी करत हो को खेलै तोसो होरी ।
अबीर गुलाल केसर पिचकारी और मलो मुख रोरी ॥
सारी हमारी रङ्गसों भिजाई नाजूक बहियां मरोरी ।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग उफ भारी रङ्ग मचोरी ॥
काङ्गको लपट और भपट काङ्गको काङ्गको
गह पकरोरी ।

राजा गुर्जरमल फगुवा दोजे करुं विनतौ कर जोरी ॥

१७

होरी खेलत ब्रजराज दुबारा मधुवन धूम मचावै ।

अमीर पिया सब सखियां सङ्ग लिए विधना
पै गुण गावै ॥

१८

अरी वश तेरे आए रो फाल्गुन मास खाल वो तो
नई प्रीतिकी चाह परो ।
जाकी रङ्ग ताही पर छिरकत अङ्गसों अङ्ग
लगाय रही ॥

१९

यह होरीको ठोठ लङ्कर निकसन नहीं देत देया ।
नेह लग्न और वश भई उनके मै चोरी वो मेरे सैया ॥

२०

नारसों नार खेलन तब लागी अपने मनसों होरो ।
लाजसों नार अबीर मलत है अब भइ है
सांवरी सों गोरो ॥

२१

सखी सब ही भिजोई मनमोहन मेरी सारी रे ।
सारी तो सारी चोलिया भीज गई भर मारो
पिचकारी रे ॥

२२

खिले रो शिवशङ्कर होरो ।
सुर नर मुनि कैलास चलो रो ॥
सप्त खरन और तीन ग्राम धर गावत किन्नर रूप
धरो रो ।
सिंही नाद सुहावन बाजै डमक डिम डिम बाज
रहो रो ॥

ब्रह्मादिक सुनकादिक देव केसर रङ्ग भर
भोज रहो रो ।

अबीर गुलाल भस्म अङ्ग सोहै फेंकत चतुर
सुधर चहुं ओरी ॥

पञ्चवक्त्र त्रिनेत्र गङ्गाधर चन्द्र ललाट सोहै एक ठोरी ।
देखत ब्रह्म प्रसन्न भयो है यह प्रकार हर रूप
धरो रो ॥

२३

एरो सखी बन बन होरो खिलिए आयो फाल्गुन मास ।
अतर गुलाब कुङ्कुमा केसर ले चल कान्हर पास ॥

वसन भूषण पर शीर्ष फूल धर अङ्ग सुगन्ध सुवास ।
मेरो शिखा मान उठ चल हिल मिल पूर ले
फगुवा मनकी आस ॥

२४

खेलन लागि फाग मोहन ब्रजके पति नन्दके राज
दुलारि ॥

चोवा चन्दन अतर अगगुजा केसर परत फुहारि ॥
कण्ठ खेलत सत्र गोपो खेलत खेलत ब्रजजन सारि ॥
सन्मुख चोट परो राधा पै भर भर रङ्ग पिचकारि ॥

२५

सूधे खेलो होरी अनोखे लाल ।
उत हो रहो न गहो बहियां मोरो टूटो है
मोतिन माल ॥

छिरकनके मिस अङ्ग भरत हो और मूठ लिए
गुलाल ॥

औरसरङ्ग लाज नहीं आवत देखत सारो ब्रजबाण ॥

२६

चतुर श्यामसो को खेले ऐसो होरो ।
अबोर उड़ावत रङ्गमें भिजावत और करत वरजोरो ॥
मनमोहन तुम चिर चिरझीवो जिनते सबनको
आनन्द भयो रो ।

कहत रसिक कपाकर मोपर रख ले लाज अब मोरी ॥

२७

भोज मेरो चुनरी रही है रङ्ग होरी खेलत आप
बना मोरे सङ्ग ।

आवज डफ वाजत भजनकारन और बजत है
तास नृदङ्ग ॥

केसरकी पिचकारी रङ्ग भर भर मारत है अङ्ग ।
अबीर गुलाल घुमड रहे बादर उर्मग वर्षत है रङ्ग ॥

२८

सोना नागर नन्द दा सांवलड़ा होरियां साड़े
खेलन आंवदा है ।

गावदा बजांवदा मैड़े मन भांवदा वंशोदी तान
सुनावदानी जांवदा है ॥

केसर दी पिचकारियां चलांवदा साड़ी सारी
सुरङ्ग भिजांवदा है ।
रसिक कण्ठदीकी गल आंखां माड़े दिल न
ललाचांवदा है ॥

परज—कवित्त

अरे कैला कहा लेगा मोसे लरके ।
कुछ दूंगी न लंगी न काङ्गगी न सुनंगी मुखसे
अबीर गुलाल मलंगी पकरके ॥

जानत हं नन्दको नटपट् गिर मोर सुकुट तेरे
कर में लकुट ओट रझो पोट पट मत खोल घूँघट
तेरे मनमें कपटकी सटक परे हट सट सब जागा
काई अब लरके ।

किन शिखलायो भुलायो बहकायो मोह लगायो
विहायो ना सरके ॥

छाड़त नाहीं लङ्गर लङ्गराई करत ठिठारि औ
लराई धूम मचाई ते कुंवर कन्हाई विष्णुदास
अपनी पराई

तो राम दुहाई सोगन्ध खाई सांची सुनाई छाड़ोंगो
नाकर लरके ।

तरके भरके गुलचा जरके मैं अपनो कर के ॥

२

पनिया भरन हं न पाई होरी कान्ह मचाई ।
जे जे गई ते रङ्ग में भिजई हों दर्ई दर्ई कर चाई ॥

३

फाल्गुनको दिन आयो रो ।
कीन सङ्ग खेलों पिय परदेश खबर नहीं लीन्हों
विरह आन सतायो रो ॥

४

गारियां मैं दे दे जांदा है ।
नागर नन्दमहर दानो सद्यो होरी दा तू खेल
कहांदा है ॥

अबीर गुलाल भवन में डाले पिचकारियां
चलांवदा है ।

बोलियां ठोलियां करदा निहोरियां वलिहारियां
मुसकांवदा है ॥

५

होरी खेलन आए कहु खेल न जानो ।
उर वनमाल लगे पलको कर अतर सुगन्ध
अङ्ग लपटानो ॥
चन्दन भाल विद्याल पीताम्बर जो लग नारी
खेलारि न जानो ।

मोहन कीन्ह पयानो तो लगि जाओ चले चुपके
गृह बेगि शिखावन मानो ।
जो हठ ठानि रहौंगे यहाँ तो परम रङ्ग यह जानो ॥

६

हां रे लाल मैं तो घेर गई रङ्ग सो देखो मेरो
हाल रे चतुराई लाल मैं ।
मोह अकेली जान लाल मेरो मुख मल लीनो
सोतिया छाड़ गई घर घरको लाल मैं ॥
फगुवा मांगन आई उमंग मो मोह लगा लीहीं अङ्ग ।

कलिका—तिताला

डार दीयो मो पै रङ्ग वरजोरी लङ्गर भर पिचकारी
मुखपर मारो अब न खेलौ तोरे सङ्ग ।
फाल्गुन में इतराय चले हो कृष्णानन्द उमंग ॥

२

साहबां हो राज न्हां सो अबीर लगावो निर्लज्ज
गावो गारो ।
लेके मनद खड़ी अगवाड़े पिछवाड़े दै तारी
वलिहारी बोलत संभारो ॥

३

ना खेलौ मैं बार बार तुम रङ्ग जिन डारो
ऐसी होरी सद्दयां ।
विनय करौ तोरे लागू पद्दयां ऐसो होरी खेलो
नाहीं रे सद्दयां ॥
वरजोरी कुच गङ्गे मेरो मीजत फिर फिर आवत
मोरे ठद्दयां ।

काजम अपनी ओर निभावो देखो सखी तेरी
चेरी गुद्दयां ॥

५

होरी आई पिया परदेश ।
अपने पियाको में ठूँढ़न निकसो कर यौगिनको वेश ॥

५

रङ्गभौनी होरी खेलत है रङ्गभौनो ।
हो जो अचानक गृह तें निकसो ओचक कर
गह लीनो ॥

हीनो लाल माल मोतिनकी अबीर माड़ मुख दीनो ।
चितवन माड़ ठगोरी डारो ऐसो श्याम प्रवोनो ।
छविनायक वंशी अधरन धर सगरो व्रज वध कीनो ॥

६

एरो गोरे मुख गुलाल कैसे भलके ।
मानो शशिमैं भीम आनके कीन्हों वास अचलके ॥
रूप सिन्धु सो उमंग रहो है कल कपोल लसो
अलके ।

छविनायक मानो सुधापान हित व्यालबाल
युग ललके ॥

७

होरीके दिननमें गुमान कैसे मान रे गुमान कैसे ।
हन्दावनकी कुञ्जगलिनमें मांगत दधिको
दान मान रे गुमान कैसे ॥

८

सांवलियाने मो पै रङ्ग डाली रे केसरकी
पिचकारी रे ।
नवल लाल उड़ावै गुलाल मेरो सारी भिजाई
सारी रे ॥

कलिका—परज

माई रे ऋतु फागकी आई ।
जबसे गए मोरी सुध ह न लीन्हों किन सीतन
विलम्बाई ॥
जागत जागत नींद न आवत दागत है विरह
दुःखदाई ।

छविनायक कैसे मन समभाजं वीती अवधि पत्नी
न पठाई ॥

नयन रोज़रजोरी न माने ।
उरंगे रहत रैन दिन सजनी देखत ही घनश्याम
लुभाने ॥

धूटी लाज सकुच गुरुजनकी घर सुजन दुर्जन
सब जानि ।
छविनायक वे अपने गुरुके सुन सुन लोग देत
मोहे तानि ॥

भयो री नयो हीरोको खेलैया ।
हमरो रङ्ग हम ही पर डारत आंखिन अबीर
भरे मोरी ग्वैया ॥
तनकी पीर तनक नहीं जानत नहीं मानत काङ्ककी
दुहैया ।
छविनायक कोज कह न सके कुछ वे यशोदा जीके
कंवर कन्हैया ॥

व्रजकी गैलनमें ही हो हीरो गावत ।
मिल दश-बीश जहां तहां ठाड़े यमुना जान न पावत ।
द्वज पनघट घाट कन्हैया रोकत ग्वाल बालको गावत ॥

परम—धमार

पर वश आन परी वो इन गलियनमें तिहारे
कौन खेल वनवारी ।

भीज गई अङ्गिया रङ्गमें क्यों निधरक दै दै गारो ॥
जो तुम्हरो गुलाल सांवरो उघर परेगी प्रीति हमारी ।
अबके घरे वलिहारी जान दे हा हा कर ही हारो ॥

परम—कलिक

पिया न गहो पग पायलया घंघरू बजनू ।
जागत है देवरनिया जेठनिया सास ननद अपनू ॥
भोर भए सुनके हंसि है पिय लाज नहीं तुजनू ।
कक्षन धार कनक पुरियनकी विडुवन भनक घनू ।
जो रस चाहो रहो पिय हा हा आवन दे रजनू ॥

सुन्दर श्याम सलोना सखी वाको बात घातमें टोना ।
सुन्दर श्याम कहो नहीं माने बातनको परचो ना ॥

तुम्हरो पगरिया हमरो चुनरिया एक ही
रङ्ग पिया भीर रे ।
तब जानोगे चतुर खेलैया ऐसी रङ्गे मोय रे ।
उघरन चोप खेली फाग वजहन हिविधा भ्रम
सब खोय रे ॥

अपने ही रङ्गमें चटक चुनरिया मो हके
पिया रङ्ग दे रे ।
चतु फाल्गुन की उमंग यौवनकी विरह सतावे
मोहे रे ॥
व्याकुल होके मन्दिर सो निकसी लोकलाज
सब खोये रे ।
लाग लगी तो लगी रहे वजहन होनी होय
सो होये रे ॥

केह विधि हीरो खेली पिया सात ।
अबीर गुलाल रङ्ग पिचकारी याहो तें मेरा जिय
सकुचात ।

हो मूर्ख सद्दयां चतुर सुघर है वजहन लाज
हरिजीके हात ॥

हां जो म्हारो मनड़ी थां लियो के जो काईं ले घर
जावां जी ।

नन्दजीरा प्यारा थे कान्हू छवीला भरजू करां
हां जो फेर पावां जी ॥

थानी बात रहे सोईं कीजि थाने काईं कहि
समभावां जी ।

वेर परी के वलिहारी ननदल क्यों कर प्रीत
दुरावां जी ॥

ए छेल खेलार लङ्गर मोहो गारो न गावै ।
 केसरि रङ्ग भरी पिचकारिन दोठ बजावत तक तक
 मोहो चलावै ॥
 भुज भर लेत दौर आगे ते काङ्गकी लाज
 सकुच न आवै ।
 हां वलिहारी चलीं कैसे मग या गोकुलमें रसिया
 कान्ह कहावै ॥

खम्बावतो—परज

रङ्गभोने कुञ्चनमें खेलत हैं दोऊ ह्योरी ।
 नन्दनन्दन मनमोहन नागर श्रीवृषभानु किशोरी ॥
 अशोर गुलाल उड़ावत सखियां कोई सांवलो
 कोई गीरो ।
 रसिक खुशाल विलोकत शोभा पिय प्यारीकी जोरी ॥

२

ह्योरी खेलें कुञ्चनमें रङ्ग रङ्गीले लाल ।
 अशोर गुलाल उड़ावत गावत सङ्ग लिए ब्रजबाल ।
 स्थाल खुशाल करत कुञ्चनमें गावें ह्योरी दे ताल ॥

३

कैसे हो निपट खेलार रो बोर देत रङ्ग सारी
 हमारी ।
 नन्दरायके लाल लाडले रसिया कुञ्जविहारी ॥
 वारी वयश चञ्चल बहुत तन श्रीगोवर्द्धनधारी ।
 नेक न मानत वरजोरी ठानत स्थाल खुशाल खेलारी ॥

४

खेलंगी फाग कुञ्चनमें पिया सङ्ग यही बात
 मन भावै रो ।
 रङ्गुगी केसर रङ्ग यशोदा लालको उर ही उमंग
 उमंगवै रो ॥
 अशोर गुलाल कपोल लगाजं याही विचार
 मन आवै रो ।
 करिए स्थाल खुशाल श्यामसङ्ग रुचि हिय
 मैन बढ़ावै रो ॥

५

शोभा कुञ्च पुञ्ज अति छाई ।
 ऋतु वसन्त फूली फुलवारो मधुकर गुञ्ज मचाई ॥
 यमुना तीर सुहावन भावन विहरत तहाँ यदुराई ।
 सङ्ग ब्रजबाल रूपकी सीमा मोहनो रही प्रगटाई ॥
 बोलत पक्षी द्रुम द्रुम ऊपर सुगन्ध पवन महकाई ।
 निरखत रसिक खुशाल कृष्णमुख नखशिख
 सुन्दरताई ॥

६

नयन काहे न संभारो जगकशी अङ्गिया कुचन
 पर सोहै बन्द गले अधिकावै रो ।
 मैं बीगे मेरो पिय बहुरङ्गी काहे को रार बढ़ावै रो ॥
 ७
 मेरो कृष्ण कन्हैया दूढ़ फिरो नहीं पायो रो ।
 अशोर गुलालको वादर छाया रङ्गको मेह वर्षायो रो ।
 कृष्णानन्द विसरत निशदिन मदनमोहन
 विसरायो रो ॥

८

सांवरे सो मैं खेलंगी ह्योरी ।
 निकसी थी मैं अपने मन्दिर सो सास ननदको चोरो ॥
 ना जानो के बोच नगरमें टीठ खेलार खरो रो ।
 करेगो एती भक्तभोरो ॥
 छौन लियो मोहे रङ्ग पिचकारी अशोर
 गुलालकी भोरो ।
 बहियां पकरके ऐसो भटकी कमर लचक गई
 मोरो कहां अब नेह रही रो ॥
 सुनो रो सखो पति सब को है प्यारो कहा भयो
 ब्रजमें वसो रो ।
 कान न सुन्यो कहीं आंख न देख्यां ह्यारो मित
 वरजोरी भला तुम सांचो कहा रो ॥
 जिधर जात उधर याही गति यह ठङ्ग शिखो रो ।
 कौनि यत्न समुभावै वजहन ऐसो मयमें रुको रो
 कहा नहीं मानत गोरो ॥

सांवरे मोहरे रङ्गमें बोरी ।
जात हती मैं तो पनघटको सखी बाटमें मिल गयो
किशोरी ॥
हा हा करत रही पइयां परत रही
एक न मानी मोरो ।
देखो तो एती वरजोरी ॥
तन रङ्गो मन रङ्ग गयो है सगरो विरह
अधिक भयो री ।
कूट गयो डर सास ननदको अब काहेकी चारी
चलो वजहन अब खेलिए होरी ॥

१०
रङ्ग डारी सांवरे मोहरे आज सांवरे चितवत ही
रङ्ग डारी री ।
ना मोसे कबहूकी प्रीति रोति सखी नाम शुनो
वनवारी री ॥
व्रजकी गलो कोऊ कैसेके निकसे जहा वसे
ऐसो खेलारो री ।
भूल गयी सब सुधबुध वजहन छवि देखत
वाकी न्यारी री ॥

सोरठ—परज

निपट भयो मतवारो री ।
जबते पियानि फाग रथो है प्रेमकी मय्य नित्य
आपो पौवत ललचत जियरो हमारो री ॥
आनी री नौचढ़ि के मोहन मोहन दई को
संवारी री ।
जाको आप चाहत है वजहन तन मन सब रङ्ग
डारी री ॥

परज - तिताला

आज कान्ह सखी खेलत होरी ।
प्रेमकी हाथ लिए पिचकारी फेंटमें अबोर
गुलालकी भोरी ॥
छवि देखत मकुचत है जियरा जानि परत जैसे
मय्यमें छको री ।

ऐडो एडा आवत है वजहन पति राखे भगवान
अब मोरो ॥

२
मैं तो ललटा उरहना थ्यारि री ।
हों जो जात रही वहरा दुहावन वहरानि उभट
चलाई रो ॥
सास कहे मेरो नवल बहुरिया अफ्रिया कहां
मसकाई री ।
सासुजोके बेटवा ननदजोके भेया जिन मोरो मति
बौराई री ॥

३
वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें मोहन खेलत होरो हो ।
इत आए मोहन उत आई राधा ख्याल रथो
अति भोरी हो ॥

सब सखियां मिल रङ्ग बनायो केसर कुडकुम
घोरो हो ।
लाल गुलाल लाडली डालै मोहन मलेमुख रोरो हो ॥
भर से वदन भए मनमोहन सब हो हंसे दै तारो हो ।
बाजत ताल मृदङ्ग मुरलिया गावत दै दै गारो हो ॥
भर पिचकारी मुखपर मारो भोज गई तन सारो हो ।
उड़त अबीर अरुण भए अम्बर शोभा बड़ो है
अपारो हो ॥

महल चढ़े यशोमतीजी जोवे खेलत व्रजके
संभारी हो ।
मोहन पकरके फगुवा लेहों छोड़ावेगी महतारी हो
सूरदास मनभावतो फगुवा दोन्हों कुञ्जविहारो हो ॥

४
लागो लगनिया को कुड़ावै कोऊ लाख कडो
जिय एको न भावै ।
घूंघट खोल मिली कहां न पिय सो लाग गई जब
जिय तरसावै ॥

श्रीर वन फूले फूल फुलवारो हमरे फूल मन जिय
अकुखावे ।

प्यारे गोपालकी आंखन सो उरभौ अंखियां को
सुरभावै ॥

वैसेके देखन पाजं देरन हो मनदुल जागे ।
जान देत नहीं निपट चवायन नित उठ बोलन दागे ॥
मेरे हारे मधुर उफ बाजे सुन सुन मन अनुरागे ।
हरिदयाल पुरुषोत्तम प्यारी निरख निमिष न लागे ॥

सब रसभौनी गात राधा गोरी खेलै होरी ।
एक ओर राधेजू ठाढ़ी एक ओर नन्दकिशोरी ॥

आज लाल रङ्गभोनि सखी तेरे बांके नैना ।
खङ्कन टलक कपोलन लागी अङ्गिया मशक गई
सुख सेना ॥

सुध न रही कहु अङ्ग बचावत जागो कहां तुम
सारी रैना ।

उगमग चाल चलत मार्गमें स्थिर न रहत जीव
तेरो चैना ॥

अब यह बात काहू मत कहियो कर जोर तेरे
में लागूं पैना ।

गावै गूदर हंस बाली मखी वह घर जाय देख
रेख सुख रैना ॥

अपने जीवन मदमाती सखी तेरो जीवन फीकी ।
जिन नहीं खेण्यो अपने सद्यं सङ्ग सो जीवन
जगमें नहीं नीकी ॥

ता को कीन रुहाग बखानो कर गुमान रही जीकी ।
आपन रुचि और नहीं भावत मञ्जन संयम कियो
अधीकी ॥

चाल सोई जो चलै सब कोई जो भावै जिय पीकी ।
मान कियो कही किन सुख पाया सुरनर मुनि सब
देख महीकी ।

गावै गूदर जगमगत पियारी अरधङ्गी छोड़्यो सीकी ॥

ब्रज में खेलन मत जा रे तो को कोऊ रङ्ग डार
दे है ।

ग्वाल सखा सब मदके मारत देखत चहुं
दिश हूँ धै है ॥

एक एक अङ्ग सो पिचकारी तुम्हरे शीर्ष विसै है ।
ब्रजवासी विश्वासी है सब मार्ग में भूमि विलसै है ॥
बीचे तुम हो जावोगी बीरी गोकुल जाने न पै है ।
कहा मान तुम नवल वडुरिया नाहीं तो पाछे
पछतै है ।

गाव गूदर मेरी नेह सांवरो काहिको लाज लजे है ॥

ना खेलूं ऐसी होरो सद्यं ना खेलूं ऐसी होरो ।
अबीर गुलाल लगाय कुचनमें छतियां कुवन
चाहै मीरी ।

वरज रही वरज्यो नहीं मानै मुखमीडन को रोरी ॥

गोरी तेरो आज हाल और ही और वा ने रङ्ग
तो पर और ही छिरको ।

तू जो गई कुञ्जन में छिनरिया तो आवत ही
देखत फिर फिर को ॥

वसन भूषण तेरे कहं के कहं जैसे कोऊ
निकसत है छिरको ।

कहा कहं तोसे सुन मेरी अचपल मोहे ता सोहै
तेरे सिरको ॥

परम—कलिङ्ग

होरी अब न खेलो मीरा सद्यं वालम परदेश ।
अपने सद्यं को मैं टूटन निकसी कर
योगन को वेश ॥

जधो रे अरे मीरा बाला सङ्गाती यार ओ रे मेरा
जन्म सङ्गाती यार ।

हा हा करत हूँ पद्यं परत हूँ कर ले अब सुख प्यार ।
ऊथ रसिक मनमोहन प्यारी काहे डारी विसार ॥

काफ़ी—यत्

राघवजी खेलत होरी ।

इत रघुनृप साथ अगुजन लिए उत मिथिलेश

किशोरी ॥

केशर कीच मची क्षिति ऊपर रङ्ग वर्षत चहुं ओरी ।

चलो सखी देखन शोरी ॥

मुख माझो पिय जनकनन्दनी चन्दन वन्दन रोरी ।

वन्दन करत सकल जनवन्दन केशर भाल लगी रो

करी सब सुधबुध भोरी ॥

फगुवा दियो सबे मन भायो ठाढ़े युगल कर जोरी ।

रीभ खीभ दृग लालके आँखो लियो पीताम्बर

छोरी हंसी सब सखी मुख मोरी ॥

सीतारामको ध्यान वसत हृदि गौरश्याम रङ्ग जोरी ।

रामदास बलि बलि दम्पति छवि निरखि वदन

दृष्य तोरी द्रगन तेँ पल न टरो री ॥

२

राधा नागरी नन्दकुमार कदम तले खेलत होरी ।

विपरीति रीति सुधारि श्याम को बनाए गोरी ॥

लहंगा लाल बनाय जरी की सुभा रङ्गको सारी ।

कक्षकी कलित कनक कटि किङ्किणी अलता

पग ही सुधारी अङ्गुरो बिच बिछिया डारी ॥

चन्द्रहार उर मण्णिगण राजत मोतियन मांग संवारी ॥

कानन वाली नासिका बेसर रम्भा रूप बना री

पीठ पर बेथी सुधारी ॥

कर चूरी भुजा नीके बाजूबन्द रूप अनूठो नारी ।

बेदो ललित चलत गजगमनी मोहिनी सब पै डारी

निरख मन सारद हारौ ॥

तास तम्बूर लिए कर गोपी नाचत कुञ्जविहारौ ।

ता ता धेई धेई होत परस्पर टेरत सुरखौ

प्यारो लक्षण छवि आनन्दकारी ॥

३

गारी जिन दे रे कांहा लाजकी मारी ।

तुम तो डोटा नन्दमहरके हम ब्रजकी हँ नारी ॥

सुन्दर श्याम जान दे मोहन मत मारो पिचकारो ।

लपट भपटके चौर खँचत हो गावत दे दे तारो ।

छाणानन्द बढ्यो गोकुल में मैँ तेरे बलिहारो ॥

४

सखी ए री मैँ कौन तरहसे डोलूँ मेरे मोहनने

धूम मचाई ।

मग मग रोकत टोकत मोहन कंसे के पनिया जाई ॥

गैल चलन नहीं पावत नारो पिचकारिन रङ्ग चलाई ॥

काहँ सो लपट चौर भपट काहँ सो काइको

धर मसकाई ।

छाणानन्द आनन्द में डोलत फगुवा लेत मनभाई ॥

५

मङ्गल दाहनो होरी खेलत राम नरेश ।

उड़त गुलाल लाल भए बादर वर्षत सुमन सुरेश ॥

रामके हाथ कनक पिचकारो लक्ष्मण भर भर देत ।

राम काना वंकुण्ठ लाड़िले हो हरि हरत कलेश ॥

६

अलवेल डा बे मोहना मंड़ा होखो खेलन आयायो ।

अबोर उड़ावदा गारो गांवदा ताल मृदङ्ग बजायायो ॥

वेड़े असाड़े आवदानो नन्द दे होरो राग जमायायो ।

छाणानन्द गवरू महर दे पिचकारियां रङ्ग चलायायो ॥

७

उनसे कोई कहियो जा री ।

मनमोहन ब्रजराज कंवर सो अरज हमारो ॥

यह चर्चा हँ रहो है ब्रजमें कह गए सुघर खेलारो ।

सब सखियां मिल फागु खेलें मोरे नयन भर

पिचकारो पिया छाड़त हँ ठारो ॥

अपने अपने कन्त सङ्ग खेलत हमरो सुरति विसारी ।

गोपो म्बाल सबे होरो खेलत मैँ सांवेरे को पुकारी

भोर भई है मो पै भारी ॥

वन वन टूँठ फिरा मैँ सजनी पिय पिय कर मैँ हारौ ।

अबकी बार मोहि दर्श देखावो मैँ तेरे बलिहारौ

कहां है वह वनवारौ ॥

आप तो जाय कुजा रङ्ग राते हम भई अति
दुखियारो ।

विरहने मो को फूँक दियो है भरन लगे
चिनगारो आनके बुभावो विहारो ॥
अबार गुलाल भी गेद कुङ्कुमा रङ्गको परत फुहारो ।
बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ आशक हौ तेरे बारो
तकत नित्य आशा तिहारो ॥

मोड़े मिल गयो कंवर कन्हैया जात हतो
यमुनाके निकट ।

वे आवत हौ जात हते उत बीच हौ भेट भई
नेक चितै तिरछी चतवन सो गति मति माह लई
जबते परी चित्त में चटपट ॥

विधि वश नीर भरनको सजनी आज हो आप गई
सोहत सुहाग फाग अनुरागी ग्वारन घेर लई
आय गए कित ते भटपट ।

मोर मुकुट मकगलत कुण्डल चलक कपोलन छई
नाक बुलाक अधर धर मुरली गावत तान नई
बोरो भई सुनके लटपट ॥

चैन न परत रैन दिन जबते नयनन नींद गई
पलचवाण शर तान हिये को छेदत हाय दई
या ते वन निकरत सटपट ।

मैं पूछत तुम सो सर सपजो अब हो पोर गई
जौन सपाय मिले सोई कीजे श्यामा श्याम मई
जाते मिटे मनकी खटपट ॥

मतवारि नयन कामिनी वश करो री ।
खञ्जन नयन महाभृग लाचन कञ्चन रूप धरो री ॥
केहरि कटि कदखा सो जङ्गा नाशिका शुक हरो री ।
चन्द्रवदनी गजगमनी प्यारी ॥

सब को मन जो हरि घोवा कपोल त्रीफल
सो छाती देखत वश जो भयो री ।
कृष्णानन्द चपला सो चमकत वारो मदन करोरी ॥

१०

तोरे अङ्ग में रङ्ग भरो रो सांवेरे कैसे खेलोंगे
में होरी ।

अधरन अञ्जन भाल महावर नयन तंबीज लगे रो ॥
धरणी धरत पग डगमग आवत रैनके दिन कहो रो ।
हम सो अवधि बदी होरी खेलन को अनृत हो
रङ्ग रङ्गो री ।

कृष्णानन्द प्रभु सांची कहो तुम कौन तिया
सो पगो री ॥

११

कुजाकी छवि सुन्दर कौहीं हम सो करत वरजोरी ।
लाजको चूनर ना भिजोऊंगो सास मनदकी चोरो ॥

१२

तुम काहिको देत हो गारो तुम नोके बोलो ।
कौन तियासे रङ्गे मनमोहन मनकी घुंठी खोलो ॥
और सखिन सो रसको बतियां हम सो घतियां छोलो ।
कृष्णानन्द रङ्गे रङ्ग अनृत हो घट घट बतियां छोलो ॥

परत—धमार

मेरो घंघट छाड़ छैल अब मैं बहुत सही ।
बाट घाट मो है रोकत टोकत मानो मेरो कहो ॥
अब जिन कुवो चूनर मोरो जो कहु भई सो भई ।
कहा मानो ब्रजराज लाड़ले मैं जो आई नई ॥

१

धौवन मदमाती डोले फाल्गुनके दिन जान ।
रङ्गभीनो निशा जागो पौतम सङ्ग कपोल लगाए
लालो पान ॥

२

बली जा रो नारि गंवार भला तोसे को बोले ।
सखिन सङ्ग मिल होरो खेले ब्रजकुञ्जनमें डोलै ॥
ऐसी अनोखी कहांसि आई तनक न घंघट खोलै ।
कृष्णारसिक सो ऐड़ी फिरत है गढ़ गढ़ बतियां छोलै ॥

सुलतानी—धमार

अब रङ्ग दे मोरो चुनरिया ।
अपने री अपने वगर से निकसी कोई सांवरी
कोई गोरिया ॥

दुलहन बन आई मेरे गृह शुभ दिन बाजत
 गोबत सुवरिया ।
 सकल सभा में धूम मची है कण्ठारसिक रिभवरिया ॥
 काफ़ी—धमार
 चलो होरो खेलिए रङ्ग रचाय श्याम सो व्रजमें
 धूम मचाय ।
 काल्ह ए री कहु कहे न सकी मैं आज लेहुं यह दाय ॥
 श्याम भिजोऊं बहियां पकरके लेऊं कुचमें नचाय ।
 कण्ठारसिक सो फगुवा लूंगो मन इच्छा फल पाय ॥
 काफ़ी—यत्
 श्यामसुन्दर उरपार री तेरे नयन सलोनि ।
 सुर सुर बैठत काहे सखी री कर कर टेढ़ो भौह री ॥
 चितवत चपल चतुर गति सो चल शर्म मर्याद
 न को है ।
 मौज सरोज भरे हर हा वलि कौन हिये तरसो है ॥
 २
 तेरे नयन सलोनि मनमोहन रिभवार री ।
 बांकी भौह कटाक्षन हेरत कोरनमें सुख प्यार री ।
 कण्ठारसिक उर मै न बढ़ावत सो तू नेह संभार री ॥
 ३
 तुम भए हो अनोखे खेलारी ।
 तुम समझ चलावो पिचकारी ॥
 भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी भीज गई तनसारी ॥
 भीनो पट भीनी है अङ्गिया गिरो जात हो
 साज की मारी ।
 रसिक कण्ठ मानो मेरी बतियां हा हा कर मैं चारी ॥
 अंभीटी—यत्
 इन श्याम कहैया ने रङ्ग मो पे डार दियो री ।
 लपट भपट के मटकी पटकी उघारो घूँघट हियो री ॥
 पील—यत्
 रङ्ग होरी रे मचाई रङ्ग होरी रे ।
 वन प्रमोद में आय अचानक बाँह गहत वरजोरी रे ॥
 रामसीता रङ्ग होरी खेली सखासखी चहुँ ओरो रे ।

राम सखा फाल्गुनके मिश में करत फिरत
 रस चोरो रे ॥
 गारा—यत्
 माई रो मोसे आ लिपटो री ।
 हों दधि बेचन जात अचानक ता में आन धरो री ॥
 इत उत देखत लोग लुगाई मटकी पटक अरो री ।
 गुबजन पुरजन सब हो देखे सबे मुसक्यात खरो री ॥
 हा हा करत रही मैं वासो वो मोसे उरभ परो री ।
 अबीर गुलाल मलो कुच मुखपर और कहु घात
 चलो री ॥
 छौन लई वनमाल मुरलिया सुधबुध सब विसरो री ।
 देत दुहाई नन्द बबाको मोहन करत ठठोरो ।
 कण्ठारसिक गह लोन्हो मोहे एरो सखी दौर परो री ॥
 विम्ब—यत्
 ए रो मैं कैसे खेलूंगो फाग लाल सो अशोर
 गुलाल उड़ाय उड़ाय ।
 वे आवत सब हो हिलमिल कर तारो दे दे गाय गाय ॥
 एसो नटखट ठोठ छाहरा किन दोन्हो शिख
 लाय लाय ।
 मारत डारत ले पिचकारी केसर रङ्ग भराय भराय ॥
 २
 खेल छलबल कर धाय गही मोरी बहियां यह
 रसवादी गाँव ।
 गावत गारी नारो नर पिय सङ्ग ले ले मेरे नाँव ॥
 जाके डर घरसे मोरी सजनो बाहर परत न पाँव ।
 नर नरेन्द्र मुख सुवर सो डरिये करि है वाको दाँव ॥
 काफ़ी—यत्
 सखी रो उठ चल हिलमिल मोहन सो
 तुम काहे रिसानी जात ।
 सौत घात में बात न मानो तू इतरात उत रात जात ॥
 २
 काहे गोरिया दहलकी पुनरिया काहे गोरिया
 मइलकी पुनरिया ।

यसुनाके तीरे कदमकी छहरयां सांवरि ने भटकी
मोरी चुनरिया ॥

सङ्करवा सुकर जात मोरि सहरयां ने पठई बुलाय ।
सुनियो री मोरी रैन परोसिन मोरे वृत्त रहलो
न जाय ॥

मेरो गोहन लागो हो डोरि काली कामरवालो हो
सांवरौ ।
अब हीं के ते दिन फाल्गुन के हैं यह अब हीं ते
भयो बावरो ॥

कबहूँ लपट और भपत बहियां नन्द महर को
डावरो ।

राते राते फिरत मोहूँ सो जैसे फूलकी भांवरो ॥
लाजकी बातें कहा कहूँ तो मे यशोदा पायं कुधं
रावरो ।

हो वरजत मानत न नेक हूँ करत अटपटो दावरो ।
जबसे लगो वसन्त पङ्कमी कृष्ण रसिक भयो चावरो ॥

योग कहे कहीं और हैं सहरयां सहरयां हमारे
हमारे ठहरयां ।

बाट चलूं तो साथ मोरे सहरयां बैठ रहूँ टिग
बैठत सहरयां ॥

बात करूं हंस बोलात सहरयां ऐसे सहरयांके मैं
वल वल गहरयां ।

सहरयांको डर है सब गहरयां देखमसी उला
बावर डहरयां ।

शीर्ष निवायके देखूं तो सहरयां सहरयां डाल रहे
गल बहियां ॥

क्या सुख ले घर जाऊं पिया मोसे रुस रहा री ।

श्याम पियारे मैं चोरो तिहारी हो विरहण
बलिहार विहारी ।

कर्म करो तो पिया मिला दे विनतो सहरयांको
कर मैं हारी ॥

लिये रङ्ग रहियां भोज मेरी चुनरी हीरो खेलूं
मै पाप बना सङ्ग ।
बाजत ताल मृदङ्ग भांभ डफ अबीर गुलाल
छाए बदरा उमङ्ग ॥

मोरो अङ्गिया पर रङ्ग डारी रे होरोके खेलैया ।
केसरकी पिचकारी भर लावत अबीर लिए
भर भोरो रे होरोके खेलैया ॥

याको कौन भांत समभाजं सखी मनमोहन
मानत नाहीं ।

लाज न करत डरत न काहूँ सो गह पकरत
मोरी बांही ॥

गड़ी जात हूँ लाज कोई घरकी मोरी यह सुन पाई ।
याको कहा बिगरे जा अरो यह लाख गारो
हम पाई ॥

तेरो वारी कान्ह मो सो फगुवा मांगन आया रो ।
हन्दावनकी कुञ्जगलिनमें अबार गुलाल उड़ायो रो ॥

भंभीटी—यत्

ए रो कैसे मनमोहन पिय होरो खेलन आए
बैठो है राधा प्यारो ।

अबीर गुलाल लाल सब रङ्ग लिए केसरकी
पिचकारी ॥

रङ्गसो भिजोई श्यामसुन्दर को भोगीगो पाग
धौ तनसारो ।

उत ते आयि म्वार परस्पर इत ते व्रजको मारो ।
कृष्णानन्द आनन्द में खेलत फगुवा लेहो गिरिधारो ॥

काफो—यत्

बहियां मरोरी रङ्ग डारी सांवरि औचक भेंट भई ।
रङ्ग पिया मोपे डार दियो रो रङ्ग भर भेंट भई ॥

२

ए री मोहे मोरे बालम रङ्ग डारी ।
सरस रङ्ग पिया अबीर उड़ावत बहियां पकर
मुख मल डारी ॥

श्रीगुसाईं गोकुलनाथजीकी होरी ।

चेती-गोड़ी--धमार

होरी खेलन हों गई जहाँ यमुना पुलिन सघन
द्रुम छाया ।

लङ्कर ठोठ खेल नन्दजूको खेल करे यह विधिके भाय ॥
कुज्जनतेँ दुरकि सुरकि आवत औचक छतियां
लेत लगाय ।

जो जानत ऐसी वरजोरो बैठ रहत अपने घर माय ॥
अब तो आन परो या मगमें परवश भई करौ
मनभाय ।

सरस रङ्गरस रसिक भिजोई ले गुलाल कपोल
लगाय ॥

कलिका--यत्

रङ्ग गुलाल भरो पिचकारी फाल्गुन मास
करीगी होरी ।

इत सखियनके भुण्ड लिए उत सखासङ्ग बल
मोहन जोरी ॥

गहिरो खेल मन्थो अति व्रजमें गह्वर कुञ्ज
सिकरी खोरी ।

मोहन पकर नचावत सजनी सरस रङ्ग रस
कूटत गोरी ॥

सरपरदा--यत्

धीर सो रङ्ग करौ न करौ मैं तो सांवरै रङ्ग सो
रङ्ग करौगी ।

लोकलाल कुख छाड़के सजनी मनमोहन सो
जाय भरोगी ॥

फाल्गुनके दिन मदको माती होरी खेल मैं आय
छरोगी ।

सरस रङ्गकी मनभायो मन मतङ्ग मन पीर हरोगी ॥

दीपचन्द्र--यत्

व्रजराज वगरमें खेलें रस होरी ।
नन्द कंवर बलवीर धीर सङ्ग सखा लिए सब जोरी ॥
खेल मन्थो अति गहरो सखी रो आप करे वरजोरी ।
उत गोपिनके भुण्ड मनोहर ता में श्रीराधा गोरी ॥
इत उत धूम मन्थो अति भारो देख दृगन चित्तचोरी
रङ्ग गुलाल अबीर कुङ्कुमा बाज रही घनचोरी ।
नृत्य भेद गति सब नाचत है सरस रङ्ग रसवीरी ॥

बिलावल--चौताला

आली तू जो जात मधुवनको गलियन उत व्रजराज
कंवर खेलै होरी ।

गुलाल अबीर रङ्ग कुङ्कुमा भाजन भरे
भरी है भोरी ॥

सङ्ग व्रजबाल ग्वाल अरु बालक करत कोलाहल
अतिशय भोरी ।

यह खिले ज्यों सङ्गो सके जिय गोकुलेश प्रिय
रसिक किशोरी ॥

काकी--यत्

आली मोहन खेलत फाग सखिन सङ्ग रङ्गभोनी ।
जियरा आकुल होय देखे विना चित्त लाग रङ्गो
है नवोनी ॥

ऐसो टेर दई कहा कौनों धंशो बजाय मेरो
मन हर लीनी ।

मानत नाहीं जियरा मेरो रो तन मन प्राण
मोहन हर लीनी ॥

मिल बालन सङ्ग खेलत प्यारो पहरे पञ्चरङ्ग
धीर जो भौनी ।

गोकुलेश होरी खेलै गोकुलमें कालिन्दोके
तोर प्रवीनी ॥

सूहर--यत्

अहो यह मार्ग नित्य आवै कोज बाट चलन
नहीं पावे ।

मार्ग रोकत बात बनावत बातन सुख उपजावे ॥

बातन अक्षर खैच लेत कर कुच सो कर लपटावै ।

गोकुलेश्वरी रङ्ग विलसत सखिजन पाके धावै ॥

काफ़ी—यत्

बरजोरी खेल को वो आगरो प्यारी रसिक रसीली ।

मोसो करे है आली कठि नहि लगको लागरो

वह निपट अरीली ॥

शीर्ष सुकुट कटि काकनी पहिरे सङ्ग म्नीडत वाके

भाग रो उपरना रङ्गीली ।

गोकुलेश्वरी रङ्ग विलसत सङ्ग लिए सब नागरो

पट पहरे नीली ॥

होरो खेलत मोहे सुध न रही तनमन हर लीन्हों

मेरो कंवर कन्हारै ।

रङ्ग रङ्गी सब ब्रजको डगरमें धनिकी घोर सुन

गृहते आई ॥

आलिङ्गन दुस्वन मोहे कीन्हों भुजा भर भेंट लई

उरमाई ।

सरस रङ्ग कियो बहु विधि सो सो वरणी नहीं

जाई माई ॥

अथ श्रीगुणार्ध श्रीवल्लभगीत होरो ।

परज—यत्

मो सङ्ग खेलोगे होरो तब जानो खेलारो ।

मोहे अकेली न जानो सांवरे कोन लई पिचकारो ॥

नन्दमहरके कुंवर काण्ड तुम हों वृषभागु दुलारो ।

अरस परस दोल खेलन लागि श्रीवल्लभ वलिहारो ॥

सोरठ—यत्

तू तरणी सुन्दर मनमोहन काहे मुखहं न बोलै रो ।

काहे मान कियो तैं प्यारी क्यो अब हतियां छोलै रो ॥

विरह व्यथा काहे न बतावै सांचे क्यो नहीं खेलै रो ।

पाय परो मिला प्रिय वल्लभ सो प्रेम रङ्ग क्यो न

बोलै रो ॥

बहार—तिसाला

आई बहार हों सब गुणीजन मिल गाय सुनारै ।

अबबवा टेसू फूल रहै है गुल गुलाब चटकारै ॥

वसन्त हाथ लिए ब्रजसुन्दरो नवगत सजि

सुरि आई ।

प्यारी वदनकमल छवि निरखत श्रीवल्लभ मन भाई ॥

काफ़ी—सारा

सखी में तो प्यारे का जान न दोंगो इन मोरो

बहियां मरोरो ।

वरजोरी में फगुवा लोंगो मुख मोड़ोंगो रोरो ॥

चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा केसर भरो कमारो ।

वल्लभ पियको रङ्ग में भरोंगो सङ्ग खेलांगो होरो ॥

२

डफ बाजत है अलवेलिनके अलवेलिनके नवेलिनके ।

सुघर सुन्दर सहेलिनके गुणरूप भरो गरवेलिनके ।

वल्लभ प्यारो आयो महलमें होरी खेलन

रस केलिनके ॥

३

सखा सङ्ग लिए निकस सांवरो जाय बेरो ब्रजनारो रे ।

अरस परस सब खेलन लागे बाढ़रो रङ्ग अपारो रे ॥

सुर विमान चढ़ि शोभा निरखै डारत तनमन

वारी रे ।

अबोर गुलाल रङ्ग में छायो बहुत पिचकारिन

मारो रे ।

रङ्ग मन्थो गलियन गोकुलकी वल्लभ नित्य विहारो रे ॥

काफ़ी—गारा

सुन्दर सुघर प्यारो नारो प्यारे सङ्ग खेलत होरो ।

केसर छिरकत अङ्ग प्यारो मुख माड़न देहो रो ॥

लई पिचकारा कोन कर प्यारो प्यारे सो वरजोरो ।

प्यारो है चतुर सुजान अङ्ग भर लीन्हों गोरो ॥

होत परस्पर रङ्ग सखिन मिल गांठ है जोरो ।

गारो गावत ब्रजनारो करत है चित्तको चोरो ।

वल्लभ भए निहाल निरखि यह अदभुत जोरो ॥

अंभीटी—तिसाला

बोर दरै प्यारे मोहे रङ्गमें सुध न रहो आली

मेरे अङ्गमें ।

मैं अपने वगर्सों निकसो आन गही मोहै
सखियन सङ्गमें ॥
अबोर गुलाब सों मुख मलौंगो केसरि छिरकीं
प्यारे तनमें ।

वल्गभ प्रियसों उघरि मिलौंगी यही आशा
प्यारी मेरे मनमें ॥

नन्दमहरको सांवरो ए रो मोसो होरो खेले आज ।
चोवा चन्दन उड़त कुङ्कुमा बाजे है
बहुविधि साज ॥

मन चाहे सोई करत है कछू न राखै लाज ।
ऐसो धूम मचाई वगरमें और न सूभै काज ॥
राग रङ्ग ताननको वानन निकसि सके नहों भाज ।
श्रीवल्लभ प्रभु रसिक शिरोमणि या ब्रजके सिरताज ॥

काफ़ी—यत्

मैं अपनी उमंग सां खेलौं फग प्यारे सङ्ग
जान न दे रो ।

हा हा खाति तोरे पइयां परत हं फाल्गुनमें
यश ले रो ॥

वर्ष दिनको एक दिनतो सांची तू सुनि मेरो ।
वल्लभ प्रिया विना अब न रहौंगो मन माने
सोई कहे रो ॥

धानी—खेमटा

आवो प्यारे खेलै इते होरो रे ।
चोवा चन्दन उड़ावो मन मान्या अबोर गुलाब
लो भर भोरी रे ॥

अरस परस छूटत पिचकारो प्यारे मुख माहृत
प्यारी रोरो रे ।
कैंट पकारिके फगुवा मांगत वल्गभ प्रिय सङ्ग
नाचत गोरो रे ॥

सिंहरा—धमार

प्यारी होरी खेलन सखिये ब्रजमें आयो
फाल्गुन मास ।

अपनी उमंगसों मुख माड़ौंगो याहो मनमें हुलास ॥
सब सखियन मिलि फगुवा लेहाँ राधामोहन पास ।
वल्लभ प्रियको अब नाहीं छाड़ौं चरण कमलको
आस ॥

री मैं तो वा सङ्ग खेलौंगो होरो प्यारी मेरे प्यारे
ने वेग मिलाव ।

मस्त मडोना फाल्गुन का रे प्यारिसों कहियो सुनाय ।
अब जिन देर करो तुम वल्गभ प्यारीको कण्ठ लगाव ॥

काफ़ी—धमार

प्यारी आयो खेलन होरो मोसों करत वरजोरी ।
मैं अपने मन्दिरमें सोती आनि अचानक गहो रो ॥
फाल्गुन मांभ डरो जिन सजनो ऐसो यत्न करो रो ।
सखी सब मिल एकठोरो ॥

नयन आंजि याको मुख माड़ो रो भूषण वसन होरो रो ।
नारीको भेष बनाय नचावो चित्त चाहे सो करो रो
फिरि नहीं करि है चोरी ॥

नन्द यशोदा वेग बुझावो हंसो बोलावो गारो ।
सखा सङ्ग बलदाऊ भैया कहा करि है अब भोरो
प्यारीको देखि किशोरो ॥

नगर नगर और वगर वगरके नर नारो सब दोरो ।
अद्भुत फागु रथो वृन्दावन वल्गभ प्रियको जोरो
सखी सब गावत होरी ॥

काफ़ी—यत्

सांवरि नहीं जानो मोरी ।
पहले प्रीति करौ तुम हमसो करि दोन्हीं
अब बोरो ॥

हम तो दासो तिहारो सांवरि कौन गुण अब तोरो ।
प्यारे तुम का सङ्ग जोरी ॥
नन्द यशोदा बलदाऊ मोरे तुम सोखे चित्त चोरी ।

अब कित भाग जावोगे सांवरि बंधे प्रेमको होरी
प्यारि कहो करि हो चोरी ॥
चोवा चन्दन अगव कुङ्कुमा केसरि भरो है कमोरी ।

सारी पहिरायकी सङ्ग नचाऊं मुख माङ्गोगी
 रोरी प्यारीको बनाऊं किशारी ॥
 हुन्दावनमें फागु मचो है सब मिल गावत होरो ।
 श्रीवह्मभ हवि गिरखि मग्न भए चिरञ्जीवे
 यह जोरी सखी छष डारत तोरी ॥

२

प्यारी आवो री आज इत होरी खेलन ।
 तुम सुघ्न सुनो एक मोरो बात तुम ही मिलाऊं
 सुन्दर मोहन ॥
 नगर नगर और वगर वगर में मच रहो होरो को
 धम डगरमें नगर नारी सब नाचन लागे कित जावो
 अब भाज लाज ।
 अबीर गुलालकी उमड़ घुमड़ में नाचत है प्यारा
 सखी भुण्डन में ॥

धमाओ—तिताला

आग्यो ही आवै मेरे या गोहन ।
 हों तरुणी कोऊ और न व्रजमें कोई सखो
 समुभावो या मोहन ॥
 वे इत निकसी खोस हार हूँ हों जरतक लागो
 उठ यौवन ।
 मोहि न दोष दोष इन नयनन में कज्जर त्याग्यो
 इन छोहन ॥
 होत चबाव या वगर डगर में सास ननद मानत
 नहीं सोहन ।
 सीधन प्रभुको अटपटो बतियां अबको फागु कहु
 मोहि कोहन ॥

कं कौटी—तिताला

हो मोहन रङ्गन बोर दर्द ।
 वरज ननदिया पहरन काड़ी साड़ी सुरह नई ॥
 ना बलि बावत नार अनोखी ए सीख कौन ठई ।
 घोवा चन्दन बुझा चन्दन कुङ्कुम मार दर्द ।
 चम्पाराम या गोकुल वसकेँ ऐसो कबड़ं न भई ॥

२

जब काहू मिस चढ़ों अटारी मोहन लखि सचपाऊं ।
 मेरो नाम श्याम सो मिलवत गारी सुनत सजाऊं ॥
 लाल अली सुरली में टेरत सुनि सुनि प्रति
 सङ्गचाऊं ।
 होनो होय सो होय धैर्य प्रभु हिलमिल रङ्ग
 बड़ाऊं ॥

देवगिरि—धमार

कहु ऐसो मन्ध पढ़ रङ्ग छिरकत होरोके दिनन
 में या मोहन वनवारी ।
 सकल त्रियनमें कौन सिधायो हों न जानूं ऐसो
 कौन है नारी ॥
 दौरी मोय जान वृषभानु दुलारो मन हर लौन्हो
 नन्दके दुलारो ।
 जो मैं जानूं मन रङ्ग वाको सेस गारो दे दे हो
 मतवारो बजाय तारी ॥

विलावल—धमार

हमारी कन्हैया कृष्णसुरारो राधाने वश कीनो ।
 हो हो होरो होय रहो है ऐसो रङ्ग रसभौनो ॥
 ऐसी धूमधाम से खेल रहै होरो हुन्दावनको
 कुञ्जनमें ।
 होंगे गेर देखत वाहू कान खेल रह्यो सगरे भुञ्जनमें ॥
 राधा जू टिग गये से सोवत मानु नीलम बीच
 कुन्दनमें ।
 रङ्ग लाल भोज तरुणीके मिसे समूह सांवरको
 नोकी लागत फूल गुञ्जनमें ॥

कनड़ी—तिताला

होरी खेलैया अनोखे लालन जू ।
 कौन बान व्रजवधुवनको ये मार्ग देत नाहिं
 चालन जू ॥

भैरवी—तिताला

होरी खेलनको प्यारी आवो न हमारी गली रे ।
 केसर रङ्ग सङ्गायो मनमान्यो फूली गुलाबकी
 कली रे ॥

अबीर गुलालकी समझ बुमझ में घूँघट चोट चली रे ।
प्यारि पियकी प्यारी वल्लभ अङ्ग सो अङ्ग मली रे ॥

भैरवी—एकताला

होरीके जीवर हैं जू विहारी ।
सुख मीड़गा सब देखत मेरो लोकलाज तोर डारी ॥
नन्दग्राम वरसानके बीच धूम मचाई भारी ।
काङ्ककी डर नेक न मानत ब्रजनिधि निडर खिलारौ ॥

सोरठ-मलार—धमार

पिचकारिन भर लायो सजनी पिया रङ्ग बादर
छाये हो ।

चीवा कीच मचाये डफ घोरत घन गरजन लाग्यो
ब्रजवासिन मिल गाये हो ।

श्रीसहचरी चमक चपला ज्यों श्याम अङ्ग
लिपटायि हो ॥

सोरठ—दीपचन्द्र

हैला तू मेरो कछो मानत नाहीं परो रे
अनोखे स्थाल ।

घोरहि दशा भई तेरी सों मेरी हो नन्दलाल ॥
तुम होरीके हरवा भरवा मैं भोरी ब्रजबाल ।
मार्ग माहि लई नागरिया करिया करि
डारी बेहाल ॥

२

पेहे पड़ी छे सास ।
रसियोनै मानै निकसन न देत निगोड़ी घर ते
आयो फाल्गुन मास ॥

कैसे रङ्ग होरी खेलि विना एक वगरको वास ।
इच्छाराम गिरिधर सङ्ग मिल हों कोई करो
उपहास ॥

नन्दनन्दन गारी दर्ई ।
कछो कैसे जात सङ्गो नयन लाज नई ॥
सुन्दर रूप सलोनी सो अंखियां निरखति गारी नई ।
यों बटपार छखो मग डोलै छाई है मान मई ।
होरी में अङ्गार गई करि बात भई सो भई ॥

चढ़ाना—धमार

काल तुम हा हा कर छूटे हो मोहन आज अब ही
बहोर वही ठङ्ग लीने ।
हा हा इतने ही से भूल गये हो निपट चतुर प्रवोने ॥
हा हा ये होरी तो हों न बन्दगी गारी गरा हो
सगरे महीने ।
ऐसे लङ्कर तुम कबके भये हो अति ही सदा रङ्गभीने ॥

जलद—तिताला

इसन तमाशे का ईजाद ये होरी को खिलवार ।
पिचकारी भर दस्त अजब सो शिर फेंटा कजदार ॥
वो है प्यारा इसन उजारा कासा है दिल दे अन्दार ।
नागरिया श्यामा साहबा का है फरमां बरदार ॥

शाहाना-जलद—तिताला

नन्दरायकी कंवर कन्हाई रोकटोक के नोक करे ।
सन्मुख आव तो नारी न माने विना सन्मुख यों
आन परे ॥
विनती तिय तो हा हा खाती तिय असुवन नयन भरे ।
खिरकी न खोलूं भंभरो न भंकाऊं तो यों फेल
करे न टरे ॥

निकट गये ते लिपट जात है दूरते तानन प्राण डरे ।
कैसे बचूं छली ब्रजनिधि बली अली ये परो गरे ॥

काफ़ी-जलद—तिताला

गोरी सटके दी चली यौवन दे बहार ।
कहर कदर कमर नाजूकपर सिर सटकारे बार ॥
मतवारो अंखियां जो निमानी करे नज़र
वरछी दे चार ।
नागर नवल अजब मझिरेठी मोहन दी चङ्गीवार ॥

हिंदूरा—धमार

आयो फाल्गुन मास री सजनी खेलोंगी उघर
बनाय बनाय ।
केसरकी पिचकारी भरोंगी अबीर गुलाल
उड़ाय उड़ाय ॥

२

गोरी हो गोकुल ग्राम न बसिये जो लो होरी
फाल्गुन मास ।
बाहर जाऊं दुर्जन लोक चवैया घरमें बैरन सास ॥
खेलों तो पिया सङ्ग खेलों हिय में अधिक
हुलास ।

रहो लाज वलिहार जाओ क्यों न श्याम
मिलनकी पास ॥

बराती काफ़ी—धमार

तू जो न बोले री देन दे वाड़े गारी ।
है लवारजी भार जगत्को तुम हो सुलक्षण
नागरी नारी ॥
वाके मनभावे सो ही गावे तुम कहा करि हो
लाजकी मारी ।
या होरी में कौन विगोई कण्णजोव
लक्ष्मीराम जखारी ॥

काफ़ी—जनद—तिलावा

मनमोहन रिभवार री तेरे नयन सलाने ।
तू अलबेली ग्राम ग्रामको अन्न हो भाई गोने ॥
अबकी होरी तेरे वगरमें केतिक केतिक होने ।
सन्त सखी या गोकुल वसके नयन निभायो कोने ॥

२

भटक्यो मेरो चोर मुरारी ।
गागर रङ्ग शोर्षते भटको विसर मुर गई सारो ॥
छुटी अलक कुण्डल ते उरभा भड़ गई कार किनारी ।
मनमोहन रसिक नागर भए हो अनोखे खिलारी ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल शिरधारो ॥

२

मीरो चर भोजे मैं रे भिजोऊंगी पाग ।
नन्दमहरजी को कुंवर कन्हैया जान न देखंगी
मैं आज ॥
फेंट पकरके फगुषा प्योगी सुख मीङ्गीगी ब्रजराज ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर सदा रहो सिरताज ॥

काफ़ी—एकताला

होरी किन बहियां लाजन मारो रे ।
अक्रिया दरक गई अनवादी भर पिचकारी डारो रे ॥
देखत निकट परोसन घरकी तैसी दोहीं गारो रे ।
नन्दनन्दन वलिहार वगर में हा हा पांय परो हों
हारी रे ॥

हीरनी—धमार

भोजो मैं तो रङ्ग में सखी री आज वनवारी रङ्गिले
कान्हरके सङ्ग में ।
हों यमुना जल भरन जात थी सब सखियनके
सङ्ग में ॥
बहियां पकर मोहे रङ्ग में भिजोई अबीर
मलो अङ्ग में ।
कोज गावत कोज रोभ रिभावत कोज तान
लेत है टङ्ग में ।
कण्णानन्द आनन्द में खेलत कोज चलन न
पावत मङ्ग में ॥

२

समझ गारी दे रे कन्हैया रे मानो मेरो बलभैया ।
गारी देवे जिह्वा बिगारै ऐसी चतुर ब्रजनारी देया ॥
हों तो तिहारो लाज करत हों और करो तेरी
चाह गुसैया ।
हों यमुना जल भरन जात थी बहियां पकर
भकभोरौ ग्वैया ॥
राधामाधव होरी खेलै चिरञ्जोवो यह जोरो कन्हैया ।
हा हा करत हों पदयां परत हों मानो विनती
दधिके चखैया ।
कण्णानन्द आनन्द करो तुम ओगोकुलके वसैया ॥

२

आली मेरे भाग्य जागे री सो लालन होरी खेलन
मेरे पाए ।
चोवा चन्दन अबीर अरगजा केसर रङ्ग बरसाए ॥
अतर गुलाल और भोंडल चमके केसर रङ्ग भरलाए ।

हती आशा सो सब विधि पूजो मनइच्छा फल पाए ।
होरो में खेलीं अपने पियासङ्ग कन्त सुहाग लगाए ॥

४

आए मोसे ॥ होरो खेलनको सखी कंवर ब्रजराज ।
से गुलाल मुख मोड़ सबनको नेक न करत है लाज ॥
पिचकारी भर भारत सब पर ऐसे ठोठ महाराज ।
पिचकारो भर भारत सबन पे कठिन करत है लाज ॥
उफ मृदङ्ग औ वांसरौ घर घरते से दौरौ भाज ।
ऐसो लङ्गर समभक्त नाहीं ठोठन को सिरताज ॥

५

भला मैं कैसे दुईं यह गोरस मेरे करते छूटो
जात दोहनों ।
निरखत ना नाथहारि मेरे आगे ठाढ़ो बजावत
नौको तानसों सोहनों ॥

रूप रङ्गकी कही न परत मोसों बतियां
करत ठगोहनी ।
श्यामसुन्दर वश कियो मेरो मन बांको चितवनमें
है मोहनी ॥

६

मो भुक आवन लागि हो प्यारे तुम होरोके
दिननमें प्यार ।
जो तुम जिय धरो सो हम समझी इन भांतनकी
हम नहीं नार ।

कण्ठरसिक मन समुक्त वृष्के राखौ मनमें विचार ॥

७

लङ्गर लंगराई न कर रे हमो सन आय आय
अठिलात ।

उगर चलत नहीं देत लेत गह गागर नागर
बोले वचन इतरात ॥

जब तुम पकर पावत हो तरुणी तिय दशन उघारो
दे दे हा हा खात ।

जानकीदास छूट जात श्याम तब कहु लाज तजो
मटक मटक सुसकात ॥

८

ए रो आज ब्रजमें कान्हर श्यामने देखो फागुकी
धूम मचाई ।
भांभ मृदङ्ग कठतार उमर उफ तापर वेण बजाई ॥
नर नारिनको मोह लियो मन एसो है सुघर कन्हाई ।
गोपी ग्वार सङ्ग लिए नृत्य करत है चल तो है
राम दुहाई ॥

९

आफिया रङ्ग भर डारो होरीके खेलैया खेल मोरो ।
बातनके मिश हंस हंस भुजा भर भला वो मोरो से
चूनर रङ्ग बोरी ।
चन्दन वन्दन बुका रोरो से गुलाल मुख
अबोर मलो री ॥

१०

ए रो जोरो होरोके मिश कोन्हों देया मारो नरम
कलैया सख्यां तोर डारो ।
रङ्गकी कमोरी टोरी सरस कञ्चुको तारी अब तोहै
लाज ह न आवै मुख देत है गारो ॥
केसर पिचकारौ मारी गुलाल भर मुख पे डारो
हा हा करत डारो लङ्गर वनवारी ।
मोह लोन्हों ब्रजकी नारो देया सखो पांय परो
लोन्हों वलिहारो ॥

११

घोरे रे दिननको नवल दुल्हैया नव यौवन नव रङ्ग ।
नव मृङ्गार नव आभूषण नवल पातमके सङ्ग ।
रसिक रङ्गरस वश कर लिए जब जिय उठत उमङ्ग ॥

१२

हो मत डारो रङ्ग गिरिधारी ।
निर्दय तोहै दया ह न आवै भोजि पञ्चरङ्ग सारी ॥
हा हा करत हं पद्यां परत हं मानो अरज हमारी ।
जानकीदास प्रभु ऐसो न कोजि सास सुने मनदल
दे यारो ॥

१२

आज मैं नवल मोहन प्रिय पायो ।
नव वसन नव गुलाल केसर रङ्ग नवल ही
होरी राग जमायो ॥

१३

ब्रजमध्य होरी देखै सखी चल सुघर श्यामकी घोरो ।
केसर रङ्ग पिचकारी ले भर अबीर गुलालकी भोरो ॥
डफ मृदङ्ग लिए नाचत आवत नन्दकुंवर भो किशोरो ।
फगुवा देखत कैसे बनेगो बोरत है वरजोरो ॥

१४

यो होरीके खिलेया भिरी अङ्गिया रङ्ग भर डारी ।
चोवा रे चन्दन और अरगजा केसरकी पिचकारी
मो पर डारी ।
कल्याणन्द अनोखो छेला मोहन कुञ्जविहारी ॥

१५

भरे कियो कहा होत है वाके किये सब होत है रङ्ग ।
जो होली सो होली अब साहबसो मिसनको
कर टङ्ग ॥
गुलाल कीना फरमानी कीन्हीं यह अबीर तन सङ्ग ।
अपने साईं सो विनती कर तू छूट लाय देख
सब अङ्ग ॥

१६

कैसे तनियां कसन पाऊं सखी री रङ्ग भर लिए
पिचकारी ।
बहियां मरोरत धर भक्त भोरत और करे वरजोरी ॥

१७

रङ्गी में रङ्ग सखी रौ आज रङ्गीले कल्यासङ्ग धन धन
भरे भाग ।
लाल गुलाल ले मलो सुख भरे खिले मोहन
मोसे फाग ॥
धन्य दिवस धन्य घरी पल सजनी धन्य धन्य है जो
सुहाग ।

कल्याणसिक प्रभु मेरे गृह आए होरो खेल अनुराग ॥

१८

नन्दके नन्दन पे कोउ चलत न पावत गेल ।
ब्यालबाल सब सखासङ्ग लिए बने फिरत हैं खेल ॥
एक तो यौवन दूजे मस्त महीना कारी फिरत हैं फेल ।
कल्याणसिक ले धूम मचाई यह गोकुल की मे हैल ॥

सुलतानी—यत्

टाना टामल कहु नाहीं जानं मैं तो राजदुलारी है ।
गए यदुलात में कुल उजियारो मैं अपने सो को
प्यारी है ॥

पिया मेरा मैं पियकी सजनी पियकी रङ्ग रङ्ग डारी है ।
इशक रङ्ग में रङ्ग रही हूं तनमन धन बलिहारो है ॥

काफी—यत्

जिन निकसो कोऊ आज डगर होरी खेलत
श्याम कन्हैया ।

बीणा रबाब भांभ डफ बाजे जलतरङ्ग सुरची
सहनेया ॥

ब्यालबाल मदमाते आवत पिचकारिन भारत
भर भर गावत नाचत दे सुमरैया ।

वा दिक्ते ज्यों अचानक आई मो पर
दृष्टि परे री बलभैया ।

भ्रष्ट करी ठाढ़ी सखियन में छीन लयो मेरो
दुग्ध दहैया ॥

२

सुख मलो अबीर गुलाल अतर ।
वरजोरी तोरी तनी अङ्गिया विहस गरी लायो गहे
बहियां कोटि यतन कर ॥

सोह देवाई दोऊ करजोर परो हूं परयां बहु
विनतो डारी कर कर ।

ब्रजवासी सब लोक पूरे है देत दोष मोहें लोग
लोगैया क्वि नायक जैसे हम देखे तैसे न देखे
काङ्ग ठगैया सुध आवे कांपो घर घर ॥

कजुम—यत्

कोई ऐमकी कोई ऐमकी पेंग भलावो री ।

भुजाके सुख और प्रेमके रस से मन महबूब
 भुलावो रो ॥
 उमगे यौवनकी पेंग सोहावनो मन में अलस
 न लावो रो ।
 सूहा चोला पहन अमोला पी घट पीको रिभावो रो ।
 आवत आवत सुरतकी राह में फिकर पियाको
 सुनावो रो ।
 नयनन बादरकी भर लावो श्याम घटा उर छावो रो ।
 कहे कबीर शुनो भाई साधो हरि को ध्यान
 चित्त लावो रो ॥
 सरपरदा—तिताला
 फाल्गुन में मान क्यों करत है बीरी खेल तू
 अपने पियाके सङ्ग ।
 ज्ञानकी रङ्ग ध्यान पिचकारी मनमोहनके अङ्ग रङ्ग ॥
 बीती जात बहार चारि दिनकी बहोर न पैहे
 मनकी उमङ्ग ।
 ज्ञानानन्द आनन्द मग्न होय नाचत गावत रागरङ्ग ॥
 घट—तिताला
 रङ्गभरी रसभरी रूपभरी प्यारी होरी खेलन
 आई गोरी रो ।
 नवल किशोरी भोरी नन्दकी पोरी अबीर लिए
 भर भीरी रो ॥
 यौवन भरो गुण भरो लाज भरो पिचकारिन
 भक्तभीरो रो ।
 सरस रङ्गरस वश कर लीन्हें भौंह मरोर टुगजोरो रो ॥
 रङ्ग रङ्गी ब्रजवासिन सो मिलि होरी रङ्ग मचावे हो ।
 चलो वगर वृषभानु रायके अपनी जीत बनावे हो ॥
 बगठन साज रङ्ग पिचकाई फाल्गुन गीत सुहावे हो ।
 उफ मोहचङ्ग भांभ अरु भालर अद्भुत रङ्ग
 जमावे हो ॥
 जो भावे सो करे सबन सो समाधान को जावे हो ।
 सरसरङ्ग सुखमें हैं दोऊ दिश सबहुनके
 सुख पावे हो ॥

भरवी—यत्
 या ब्रजमें रस होरी सुहाई नरनारिन सुख हा
 रङ्गी भारी ।
 लङ्कर कान्हा वगर में चलत तेरो रङ्गन मार
 भिजोई सारी ॥
 इत खेलत कोऊ कान न मानत देखो अनोखे
 हेल खेलारो ।
 वंशोवट कुञ्जल सुख विलसत सरस रङ्ग पिय
 गिरिवरधारी ॥
 भरवी—जङ्गला
 मनमोहन ब्रजवीथन ठाड़ो होरीको धूम मचावो रो ।
 रङ्गभरे गुलाल कुम्कुमा भर सुठी अबीर उड़ावो रो ॥
 भेटो भुजन सुख रोरी मौजत अङ्ग अनङ्ग बढ़ावा रो ।
 सरसरङ्ग रस करे निसङ्गन पिया प्रीति उर लावो रो ॥
 ईमनकक्याण—धमार
 होरी खेलत कुञ्जगलिन में रसभरे क्लेशा कुंवर
 कन्हैया ।
 पनघट घाट रोक मार्ग ठाड़ो घूँघट देत उघारे सेया ॥
 फाल्गुन मास करे वरजोरी जित तित धूम मचावे
 खैया ।
 सरसरङ्ग रस सित निसङ्गन वृन्दा-विपिन
 कुङ्कुट्टम खैया ॥
 र
 सरस रस भावन वसन्त ऋतु आवन मनोज
 प्रगटावन ए जू सोहाई ।
 ऋतुराज कुसुमद्रुम सुहावन कोकिल सुर गावन
 तरसावन विरहन को धाई ॥
 विन मनमोहन ककु न सुहावे न भावे विरह सताई ।
 सरसरङ्ग होरी में मिलावे ताके वलि वलि जाई ॥
 भरवी—काफ़ी—यत्
 रसिक हेल नन्दजीको छोहरा मार गयो किं रङ्गी
 मेरी खैया ।
 यह होरी वरजोरी की अवसर माने न काङ्गको
 कङ्गी मोरी देया ॥

कहा कहां कहु वश नहीं मेरो करत है अपन
चञ्चो रो गुसैया ।
सरस रङ्गरस भोज रहो हों सब सुख तन लखो
कुञ्ज ठैया ॥

जङ्गला—यत्

सखी यह फागुन में पिया अज हूं नहीं आयो रो ।
वीतो जात बहार होरोकी विरहने मदन जगायो रो ॥
जबते गए पिया भए वांछो के किन सोतन
विलमायो रो ।
रसिक मोहन कोज आन मिलावो यहो ध्यान
उर लायो रो ॥

२

मनमाहन मेरे घर आयो रो सखी रङ्ग रङ्ग में रो ।
कुच गड़वा और यौवन मोर ले वसन्त बनाय
अङ्ग ए रो ॥
तनमन धन सब अर्पण कर के चरण-कमल रङ्ग दे रो ।
धन्य मेरे भाग्य सुहाग आज दिन कल्याणन्द
उमङ्ग हे रो ॥

पोलू—यत्

ऐसो रङ्ग डारो मोरो गुइयां सइयांके रङ्ग में
रङ्ग रह रो ।
पिया हमारा में पियाकी सजना एक हो रङ्ग बह रो ॥
उनमें हममें कहु भेद नाहो अरे अङ्ग लहरा ।
ब्रह्मानन्द आनन्द में रङ्गके एक हो रूप ठहरा ॥

भैरवी—यत्

कैसे खेलो कन्हैया कुच मुख मोड़त भिजावत तनैया ।
लपटत भपटत दपटत छतियां बहियां पकर
रङ्ग रेलो कन्हैया ॥
अपनी वारो भज जात है कुल बल कर बलभैया ।
वरज रहो वरजो नाहीं मानत कल्याणरसिक रिभैया ॥

रवी—सिन्धु

फागुन वीतो जात सखी रो क्यों नहीं खेलो फाग ।
भाग्यनसे फागुन पिय पावो जागे तेरे भाग ॥

बहुत दिनन ते दाव लग्यो है धन्य धन्य तेरो सुहाग ।
कल्याणन्द चार दिन होरो सइयांके गर लाग ॥

पूर्वो—धमार

रङ्ग न रङ्ग रङ्गे है विहारो लाल गोवर्द्धनधारो ।
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लिए और सकल ब्रजनारी ॥
बाजत घोषा मृदङ्ग चङ्ग डफ भ्रांभनको भनकारो ।
गोकुलेश प्रभु होरो खेले गावत दे दे तारो ॥

विहाग—धमार

होरो खेलत ब्रजकुञ्जन मइयां ।
नन्दकंवर सङ्ग अतिरस बाढो विहरत लाडलौ
कदमकी छइयां ॥
पौढ़नके समये के अवसर और कोउ न रङ्गो
तिहि ठइयां ।
परस्पर रङ्ग रण्यो अति भारी सरसरङ्ग वलि वलि
तहां गइयां ॥

२

ब्रजमें होरो रङ्ग सुहाव ।
कुञ्ज महल यमुनातट सजगो प्यारी पियकी मनभाव ॥
पौढ़नके समये के अवसर ललिता रङ्ग जमाव ।
चिरञ्जीव युगल यह जोरो सरस रङ्ग कवि छाव ॥

सरपरदा—धमार

होरो खेले ब्रज खेल विहारो राधा नागरी
सङ्ग लिए प्यारी ।
वोधिन धूम मचाई चहुं दिश रसिया अनोखे
खेल खेलारी ॥

रङ्ग गुलाल अशोर कुङ्कुमा डफ सुहचङ्ग
बजे ध्वनि भारी ।
सरसरङ्ग बाढ्यो सब हिन मन देख टुगन
छवि पर मनोहारो ॥

पोलू-भैरवी

या बातको सुख मान सखी रो तोह मान मनावन
मोहि पठाई ।
तू बड़ भाग्य रहो रो प्यारो तोहि विहारो जू
नाहीं विसारी ॥

तो विना हरिको रङ्ग नहीं है विधिना जो करी
तोहें मानमहा री ।

प्राणपियाकी तू जो प्यारो सरस रङ्ग रङ्गो वलिहारो ॥

षट्—यत्

गिरिधर पिय सङ्ग रङ्ग भर खेलत नवल कांवर
दृषभानु-किशोरी ।

अरगजा कुङ्कुमा रङ्ग रक्षित कर मुख मण्डित
कियो हो गोरो ॥

पगड़ी कुड़ाय लेत गुलचान गाल देत अङ्ग भुज
भेंट हेत मुख मलवो रो ।

रङ्गके खेलार रसरङ्ग रसिया फगुवा लियो
प्यारी नवल किशोरी ॥

केदारो—धमार

खेलत फाग सुहावनो माई रङ्गरस सरसावनो ।
श्रीवृन्दावन कालिन्दीतट पिय प्यारो मन-भावनी ॥
ताल तरङ्ग रङ्ग बहु उपजत सप्तस्वरन गीत गावनो ।
गोपिनके मण्डल मध्य राजत राग केदारो जमावनो ॥
गारिन गावत सब हिन भावत अपनी जोत बनावनो ।
फाग खेल व्रज रङ्गरस रेलन सरसरङ्ग छवि छावनो ॥

काफ़ी—धमार

मति डारो श्याम मुख बोरो मेरे आखन रङ्ग भरो रो ।
ऐसे रङ्ग दियो पिचकारिन भोजि गई चुनरी कोरी ॥
अतर गुलाब भरे कसुकी पट कुङ्कुम चुभि गड़ी
तन मोरी ।

चलो री सखो अब अपने घर को खेले ऐसी होरो ॥
ऐसे निठुर ककु दर्द न जानत श्याम चतुरहम बोरी ।
रूठि चली सब नागरी राधे श्याम फिरत कर जोरो ॥
नयनन सेन दियो सब सुन्दरो घेर लियो वरजोरी ।
कोज पोताम्बर छोरत मुरली कोज अबोर भरे
भर भोरी ॥

भई है लटापटो चीरा चुनरो खेल छबोले गोरो ।
लेत उचङ्ग उचङ्ग सबे मिलि अपनी अपनी जीरो ।
श्रीपति रूप कहां लगि वरनों लक्ष्मोपति मति घोरी ॥

काफ़ी—यत्

होरी खेलत नन्दकुमार यमुनाके तोरमें ।
सङ्ग गोपाल सखा व्रजनागरी नाचत नटवर
विविध भोरमें ॥

बनि बनि बनि वनचर पशु खग मृग करत कलोल
घोल तर तीरमें ।

गाय बजाय ताल टै टै कर घरि घरि धावत
धसत नोरमें ।

प्रथम वसन्त दिवस लक्ष्मोपति ऋतुपति घर घर
पूजत होरमें ॥

२

चलो देखन नन्दद्वार में हारो होय रही है ।
मोहन गोपसखा विच राजित मानो पूर्णशशि
उमंगि रही है ॥

गगन गहागहि होतु दुन्दुभो सुर नागरी स्वर
गाय रही है ।

अतर गुलाब अबोर अरगजा गागर गागर घोर
रही है ।

लक्ष्मोपति ऋतुराज गुणोजन कनक कलस भरि
पूजि रही है ॥

३

हां हां हां मोहे नित्य अपना सङ्ग दे रे जगमें
नहीं कोई सङ्गी हमारा ।

अपने चोखे रङ्ग प्यारे सो तन मन मोरा रङ्ग दे रे
एसो रङ्ग है कौन पियारा ॥

जासो प्रेम भक्ति बनि आवे सोई सकत मोरे
अङ्ग दे रे भक्ति विना कर है निस्थारा ।

मायामाह कुड़ाय दे जो सो नाके साधनके टङ्ग दे रे
अवगुणसे करूं तोको न्यारा ।

जो मांगि ते पाये साहब सो काजम हमहू को
मांग दे रे जासो न कुटे वाको दुबारा ॥

४

ए हो हम ही सो राखे बिगार अछी सब ही
सो बोलीरी ।

हमरो और कब हूँ ना निकसो सोई सबके घर
डोले री ॥
जो ले प्रीति हमारी जचतु है तो ले जीको तोले री ।
अन्त हमारे होके कन्ता जो ले न बोले तो ले री ।
हमसे घूँघट राखे मुखपर काजिमसे गित्य खोले रो ॥
धनायी—यत्
कवीले री रङ्गीले नयन रसभरे नाचत मुदित अनेरे ।
खल्लरीट मानो महामति दीज कैसे हूँ धीर न चरे ॥
श्याम खेत राते रङ्ग रञ्जित मानो चित्त चित्तरे ।
कुम्भन दास प्रभु गोवर्धनधर श्याम शुभग तन हरे ॥
मेरी मन मोह्यो सांवरो अब घर ही मो पै रङ्गो
न जाय ।
चपल तिरौछी भौहसो सधख हो मेरो लियो चुराय ॥
मार्ग ही गोरस ले निकसो हुन्दावन होरी मंभार ।
आय अचानक ओचक मटुकी वहीँ मेरी दीन्हीं डार ॥
गहि अञ्चर मो सो यो कछो कौन हो तुम का
की नार ।
कं बरी या मार्ग गई दान हो हमारी डार ॥
कछुको ओढ़नी वेग हो लीन्हीं बहुत कितियक मोल ।
तिलक खुभो के व्याज में परसे वह मेरे पान कफेल ॥
फंसि वीरो वर मुख दर्ई श्रीवा हो मेरे मेली बांह ।
यह मिस मोहि वह ले चलै गह्वर र ।
अंधियारी मांह ॥
जिय और मिस दानके बतियन में मेरे परसे पाई ।
करत वसीठी मिलनकी सन्मुख री मेरे नयन
चलाई ॥
और कहां लागि वरणिये कह तब री जोई
आवे लाज ।
जन त्रलोक प्रभु सो रङ्गो देखो मेरे तनको साज ॥
होरीके खेलार भावत तोहि जान न देखो ।
रङ्गभीने बागे बनि आए जागे भाष्य हमारे नयनमें
भरि राखूं फगुवा लेहो ॥

चोवा चन्दन और अरगजा केसर कलस नहे हों ।
अथस्वामी सो कहति स्वामीनी मिलि तन
ताप नसे हों ॥
काफ़ी—यत्
तुम चलहुं सवे मिल जाई खेलन होरिया ।
अपनी अपनी सुरङ्ग चूनरी मोतिन मांग भरोरिया ॥
थरहरात अधरन पर मोती अङ्गिया केसर बोरिया ।
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा भरि भरि देत
कमोरिया ॥
अङ्ग सो अङ्ग गुलाल विराजे भली बनी यह जोरिया ।
केहरि लङ्क नितम्ब विराजत गज गड़ चाल
चलोरिया ॥
पिचकाई मोहन पर डारत विहंसो घूँघट मोरिया ।
बाजत ताल मृदङ्ग और डफ पढ़ि पढ़ि बोलत
बोलिया ॥
नयन आंजि मुख माडि श्यामको सब मिल करत
कलोरिया ।
सूरदास प्रभु सब सुख क्रीडत ब्रजकी खोरिया ॥
धनायी
हो होरीके खेलैया अहे नेक मोहड़ो माड़न दे हो ।
जो तुम चतुर खेलार कहावत अधरनको रस ले हो ॥
गोरी गोरी बहियां हरी हरी सुरियां हियरा को
रस ले हो ।
चतुर-शरीरमणि सूरदास प्रभु फगुवा हमारो दे हो ॥
होरीके रङ्गीले लाल गिरिवरधर रङ्ग मचायो ।
केसर बहुत गुलाल अरगजा मदन वसन्त भिजायो ॥
ताल मृदङ्ग भांभ डफ वीणा होरी राग जमायो ।
शनि निकसी गृह गृह ते सुन्दरी भावभागी
फल पायो ॥
आवति भावति गुरी न गावति रस भरि लाल
खिलायो ।
श्रीविठ्ठल गिरिधर युवतिन होरी त्योहार मनायो ॥

दुमरी

रङ्ग न डारो गोरी भीजत चुनरिया ।
पैयां परत हौं सोह करत हौं रामलाल तुम
नवल खेलरिया ॥

लपटि भूपटि कर गहि रघुनन्दन मसल गुलाल
लाल कर धरिया ।

रामसखा गाय कहा के न गए हंसि हंसि कहत
सकल सहचरिया ॥

२

होरीके खेलैया मोरा नयन जनि भरो जू ।
अरजु मान अवधेश लाइले बार बार बरजोरो
जन करो जू ॥

अपनी बार ऐसे औरन भरत कैसे ठाड़े रह्यो वाली
ओर बहियां जनि धरो जू ।
जनकराजलली कहत मधुर अली वन्दौंगी खेलैया
जो पै आगे से न टरो जू ॥

३

सांवरि अब न खेलौं तो सो होरो मेरो आंखिन
मेलो अवीर ।

एतै पै दे तारिन गारिन गावत वेणु बजाई कुलको
वानि न तजत कान्ह अलि आंखिर जाति अहीर ॥
नाहिन खेलन जानत मानत आप हो कान्हा खेलारो
भीनि चले आवत हो कान्हा काहकी होर न पोर ।
जाय कही विश्वनाथ नन्द सो तेरो सुत इतरानो
अब हमरो ब्रज वासवो नाहीं न काज करे बलवीर ॥

४

लङ्कर मोहि काल हि गेल मे दोन्हीं गनि गनि गारो ।
दाव परो अब जान न पै हो लागी चहुं दिशि ग्वारो ॥
रङ्ग भरि वनिता भेष बनै है छुड़ि है दे दे तारो ।
विश्वनाथ प्रभु अब न चलेगी तेरो तो यह छलवारो ॥

५

होरी खेलत राधानवल किशोर अब तो लाल तुम
शुभग रङ्ग रङ्गे लीहु कामरो बोर ।

चहत अहीर फागु सङ्ग खेलन भांतिन विविध निहोर ॥
विश्वनाथ मुख लखहु आरसी राधाको नहिं जार ।
गोरी आवत लाला नन्दकिशोर मोर सुकुट दिए
बन छवि छावत सुरकि लखत यहि वोर ॥
अति सुन्दर मन हरे हि लेत है त्यजत लाज मन मोर ।
विश्वनाथ लखि छको ही रहत है तन यही है
चित्तचोर ॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्याःसदेव रागसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्पद्रुमे वसन्त-
समय नाना रागरागिणी रङ्गीली होली रङ्गीन
गान सम्पूर्णः ।

—*—

श्रीकृष्णाय नमः

तथा होलीगान ।

भैरवी—चाँताना

लालन भोर ही आए होरी खेलनको ग्वाल
वाल लिए मङ्ग ।

अवीर गुलाल केसर पिचकारो बाजत ताल मृदङ्ग ॥
इत सखा उत सखी परस्पर छिरकत नाना रङ्ग ।
राग विलास गावत फगुवा आनन्द बढत उमङ्ग ॥

२

लालन मदन सो मदन से मतवारि नयन सो
लागत परम रसाल ।

पञ्च रङ्ग पाग पिहोरी को रङ्ग बोरो भौंहिं
अलक में गुलाल ॥

भोरे भंवर से भांवरी टेत भवन में कठिन कलिन
त्यागे पाए निकाल ।

शङ्कित से चकई के घर आए चकवा से प्रेमरङ्ग
कोन्हीं निहाल ॥

३

रैन बिताय आए हो मोहन कहां जागे रङ्ग रागे ।
कौन त्रिया सङ्ग विलम्ब रहे हो होरी खेल
कहां पागे ॥

तीतरात बतरात वैम ह न आवत आलस्य वश
अनुरागी ।

नादसेन मनके मतवारे से आए भाग्य हमारे जागे ॥

४

रैन विहाय गई भार भयो होरी कहां खेलै प्यारि ।
कौन नवल तिय पिय विलम्बाए गिनत वीते
मोहै सब निश तारे ॥

कहं कज्जर कहं पीकलीक अधरन अञ्जन
भाल महावर धारे ।

तानसेनके प्रभु तुम बहु नायक सांभके गए हो
सिधारि ॥

५

नयन रङ्गाय आए हो लालन या हारो को रात ।
सकुच सांवरे हित अपनेकी कहन न पाए बात ॥
कहं कहं लाग्यो गुलाल कपोलन ठीले बोलत
अतली अंभात ।

वलिहारो वा मोहनी पर कैसे आवन पाए कही
ज कही तुम प्रात ॥

मन अपने को सो कह न सकत एक बात ।
यत्न यत्न वलिहार करे कैसे आवन पाए प्रात ॥

भरवी—धमार

लाल अरसाने भार हो आए ।
कौन वाम हित सो परचाए सगरो रैन जगाए ॥
टिग टिग कज्जर फेल रह्यो है जावक तिलक
लगाए ।

भूपक रह्यो वरनी अति सोहै मोहन अधिक सुहाए ॥

२

होरी खेलै प्यारी अक्के या भांत सो लालनके सङ्ग ।
आप भीजे औ उनके भिजावै लपटत पट दोजे
लोजे अङ्ग ॥

मनमोहन को पकर वश कीजे फगुवा लोजे उमङ्ग ।
कल्याणन्द सो फाग रचौगी एक हो रङ्ग हं रङ्ग ॥

जे तिय ते सब ठाड़ो भई आप आप गड़वा बनाय
आगे धर दोने ।

महम्मद शाह दक्षिणके लक्षण कणकमें टोनासो
मन वश कर लौने ॥

उफ वोणा मृदङ्ग रबाब गावत तान नवोने ।
सदारङ्ग रङ्गन में भोजे बाल लाल सम लोने ॥

४

देखियत लालन जागे भाग्य हमारे आज रसभीने ।
कर वमन्त जिन सबकी ओर देखत ही कृपा ते
कर लिए सुगन्ध नवोने ॥

जे गर्व भरो तेज आय ठाड़ी भई सब अपने गड़वा
बनाय आगे धर दोने ।

सदारङ्ग महम्मद शाह दक्षिणके लक्षण समझे कण
एकमें टोना से मन वशकर लोने ॥

५

लङ्गर बटपार खेलै होरो ।
बाट घाट कोऊ निकस न पावै पिचकारिन रङ्ग बोरो ॥
मैं सु गई यमुना जल भरने गह मुख मीजो रारो ।
तानसेन प्रभु नन्दको टाटा वरज्यो न मानत गोरो ॥

६

आज रसमातो होरो खेलै लाल ।
तारो दे दे नाचत गावत सङ्ग ग्वाल व्रजबाल ॥
केसर रङ्गको छोट परो मुख मानो छविका जाल ।
नट नागर प्रभुको छवि अद्भुत निरखत भई निहाल ॥

७

अनटन नहीं कोजे आना अपने वालम सो यह
फागुनके बीच ।
भाग्यकी रोति कहां जाने ग्वालन केतो कही है
आखर जातकी नीच ॥

८

आज सखो फाग आयो ऋतु वर्षा लिए सङ्ग ।
अबोर गुलालके बादर छाए वर्षन लागि रङ्ग ॥
भोड़ल चपला मृदङ्ग घन पिचकारो भर सङ्ग ।
कल्याण रसिक फाग खेलै बाड़ो है मन रङ्ग ॥

८

लगवार लगाए आवत हारो में ऐसो देखी
अनोखी नार ।

एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत
दे ताल धमार ॥

बांह पकड़ जब ठाढ़ी कीहीं का सो करी
यह पुकार ।

रङ्गरस रसको धूम मची है हारे खड़े नन्दवार ॥

१०

ता पर तू करन लागो रो यह बात एक तो बांको
कंथ लियो परचाय ।

मिलत न काहको अपने आगे ऐसी तेरे हो
घर न्याय ॥

निशदिन हंसत बोलत डालत रहत तेरे ही गुण गाय ।
ऐसो तू क्या कोन्हा सजनी रो डर पूजे तिहारे पाय ॥

११

बाजन लागे डफ होरो कानर नारो डारत है रङ्ग ।
वसन रतन सब पहर कर आई चतुर देखि नोको रङ्ग ॥
वीणा रबाब मृदङ्ग बजावत कर गहे कन्हैया
सबके अङ्ग ।

चतुर नहीं देखे वरजोरो लगावत उनके अङ्ग ॥

१२

हो नादान गारो दई अकेली पाय धरि वरजोरो
होरो कर ।

वश जाय परो हो हो होरो वलिहारो विहारो
तेरो सो में अत्रोर भर होरो पर ॥

१३

योगी रङ्ग है आज रङ्ग है योगी रङ्ग है तुम रङ्ग
भौजी शाद ।

बहु रूप बहु भेष तिहारे अलख जगावे अनाहत-नाद ॥

अङ्ग अङ्ग वखल तान तार को अधर मिलो भभुताद ।

अत्रोर गुलाल को बुरको डारे होरो होरी सेज
सुवास चली चलो लाद ॥

१४

अदभुत मची फाग मोहन घर देखन चलो ब्रजनार ।
अत्रोर गुलालके बादर छाए रङ्गको परत फुहार ॥

१५

मो पै वा विना रहो हो न जाय रो आलो कौन
करो मिलवे को उपाय ।

सुध न रहो कहु तन मनको सखी जब तें दोन्हीं
मोहन मुरलोको ध्वनि सुनाय ॥

उन को देखके लुभाय रहो मन अटका हरिसा जाय ।
जन्म ज़ोवन फल तब हो जानोंगी जब वो

मिल है आय ।

आदि वसन्त अन्त फाल्गुन को याहो सोचन मोहे
दिन कटत जाय ॥

१६

प्रभु कैसी होरी मची सब जग देखत गुलाल
रङ्ग से बादर ।

एके प्रगट भई छवि देखत उन का वला जानेको
कोज करन आदर ॥

उनही केसर रङ्ग डारियत जे सबहो मेनादर ।
अबके जो फाग जगत्में मच्यो सदा रङ्गोले कादर ॥

१७

लङ्करवा टोठ है मो सो करत है अनोखा बात ।
छाड़ और मग मेरे हो आवत ग्वार सखा ले सात ॥

१८

जागे सगरो रैन होरो खेलत पिय सङ्ग भार भए
उठि विधुरे बाल ।

मानो तरु बड़ डारन बोच चन्द्रको जात किरण
मानो दिनमणि लख्या है गुलाल ॥

मानो श्याम डोरिन तें ठाढ़ी कञ्चनको पाल ।
यह छवि निशि निशि काम दृष्टि रोभ रहे नन्दलाल ॥

१९

अब धूम मची फाग मोहन घर देखन चलिये ब्रजनारो ।
एक हाथ अत्रोर एक पिचकारो लिए एक नाचत

एक गावत दे दे तारो ॥

एक वीणा रबाब साज लिए एक करन कठतारी ।
कृष्णानन्द आनन्द सो खेलत फगुवा देत गिरिधारी ॥

२०

खेलन आए हारी आज रस सो लालन मेरे घर एरी ।
नव नव वस्त्र पहरे और आभूषणनगन जड़ितके धरे
तैसा मुक्तमाला गरी ता ऊपर नोकी लागी वेरी ॥

२१

आवो री मिल देखो हारी खेले प्यारो प्यारी
रासमन्दिरमें वर्षा समानो ।

उड़त अबीर घटा घिर आई पिचकारी भर भोडर
वक रंजितामैं भलकत नारी चपला ऐसी चमकत
मोहत सुरनर जानो ॥

ततथो वितत गरजन सम बाजत सुधर गायन ओ
पिक नित्यकारी चातक मयूरनके भेदन सो घुरत
निशानी ।

फागुनमें बर्षाऋतु उनई उमड़ घुमड़ वर्षत रङ्ग
कृष्णरसिक रङ्ग रस भर लाय मानो बुन्दन
वर्षत पानी ॥

२२

आज ब्रज भोर ही बैरव रागमें गावत हारी खेलत
ब्रजनाथ ।

सम खरन इकदंश मूर्च्छना लाग ठाढ़ लिए साथ ॥

२३

लालन लोच्ये ताल ललित खरनमें लाड़ली रोम
प्राण प्यारो महारानी ।

मुरली अधर धर मधुर सप्तस्वर राग ठाठ मूर्च्छानो ॥

२४

ऐसा हारी मचाई भोर ही मोहन मानो ऋतु
वर्षा भर लाई ।

उफ मृदङ्ग जानो घन गरजे है भोरल चपला
चमकाई ॥

२५

मोहन भोर ही रङ्ग रङ्गाए हारी खेल रचाए ।
म्वालबाल सब सखा सङ्ग लिए अबीर गुलाल उड़ाए ॥

नयन रङ्गाए नवल त्रिया सङ्ग अनृत ही हारी मचाए ।
भोर ही आए हम पहचानत नाहीं लाल ही
लाली लगाए ॥

२६

ता पर तुम सांच बोलत ही मोहन रात कहां
सारी रैन जग आए ।
सांभके वचन सांचे करनको भोर ही मुख देखलाए ॥

रामकली—धमार

वरसाने में खेलत हारी ओष्ठभानु किशोरो ।
कीह चन्दन वन्दन अतर अग्ररजा ले अबीर गुलाल
लिए भर भोरो ॥

कोज गावत कोज मृदङ्ग बजावत धूम मचाई
नन्दरायकी पोरो ।

उत ते सखा सङ्ग लिए कृष्णप्रभु पिचकारिन
रङ्ग छोरत भारो रङ्ग रच्यो री ॥

२

आई मिल कर अब ही सहेली खेल रच्यो नन्द द्वार ।
धाय पकर लिए नन्दलालको फगुवा लेन ब्रजनार ॥
काह न पीताम्बर पकरो है काह मुरलिया लई
दे तार ।

अब कहां भाग जावो फगुवा ले हो तब जो चीर
हर है मुरार ॥

३

लङ्गर लागो ही आदे यह फागुनमें नित नई
धूम मचाये ।

कहो सुनो कहु मानत नाहिं न मेरो नाम ले ले
गारी गादे ॥

अगर वगर के लोगवा सुनत हैं सास ननदिया रिसावै ।
कहा कहीं मैं रसिक कृष्णको मोह वर वश
गरवा लगावै ॥

४

फागुन मासमें धूम मचाई ब्रजमें नरनारी बोराने ।

कोज काङ्ग की सुध नाहीं न सजनी अबीर गुलाल
उड़ाने ॥

कोज सपूटत कोज झपटत ले अङ्ग भरत कोज
पिचकारी रङ्ग छोराने ।
कृष्ण ही रूप रङ्गे ब्रजके जन मानो मेघ चढ़ो
घोराने ॥

रामकली देखी फूली वन घनमें चले हैं खेलन
वसन्त होरी ।
लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न सङ्ग लीन्हें केशरकी
पिचकारी छारो ॥

सोता जु सङ्ग लई सब सखियां श्रुतकीर्त्ति
उर्मिला माण्डवी दुङ्ग और भारो रङ्ग रच्यो री ।
तुलसी यह रघुनन्द फाग मच्यो है श्रीदशरथराज
जूके वार उत जीती है जनककिशोरो ॥

आए हो रङ्गभरे लालन होरी खेलन मो सो
औरनके चिह्न लिए ।
अधरन अञ्जन मुख तंबोल की को लागत ऋतु किये ॥

पट दे दे ले ले सुख नयनन फगुवा मांगत
सुख गाय गाय ।

मिलन बनो नन्दलाल लाल सो होरी अवसर
पाय पाय ॥

त्यजी लाज गुरुजन दुर्जन की तिया नेक न
सकुचाय चाय ।

जी मन धरी रली रङ्ग बतियां ते सब करत मन
भाय धाय ॥

भूम सब आईं गोपी लिपट रहे नन्दलाल ।
मानो श्याम घन में चपलागत यो राजत ब्रजबाल ॥
अञ्जन आज मांड सुख रोरो दे गुलचा और
ऐचत गाल ।

चतुर खेलार नवल धैर्य प्रभु कर पाए है ख्याल ॥

८

तू तो ए री प्रीतिकी रीति न जाने गंवार ।
जा सो मन लगाइये ता सो और निभाइये नार ॥
वे मनमोहन सोहन सजनी बहुत हैं रिभवार ।
एतो मान काहे करत है आली उठ चल
हरि हि निहार ।

कृष्णानन्द आनन्द में विहरत सुन्दर रूप बहार ॥

१०

धूम मचाई मोहन ब्रज में अब कैसे मान रहेंगो ।
अबीर गुलाल केशर पिचकारी डारत अनक रङ्ग
बहेंगो ॥

११

दम्पती खेलत होरी महल में शोभा वरनी न जाय ।
सकुच छाड़ अङ्ग अङ्ग लपटाने सरस माते दोज
राजबहादुर फगुवा सुघर मचाय ॥

१२

या ब्रजमें धूम मचाई खेलत होरी ।
हो सकुचत हो जान न पाऊं पनिया भरन को री ।
कृष्णारसिक रसरङ्गन बोरत अद्भुत ख्याल रचो री ॥

१३

चतुर अधिक खेलार नार नयनन मध्य पिय सो
खेलत होरी ।

खेत अबोर गुलाल से डोरि चितवन में सब
रङ्ग भरो री ॥

डफ पुतरी पै चाटी पलक की झपक लगावत
ले समसोरी ।

नाचत कटाक्षन भाव बतावत रिभावत खलना
लालन को री ॥

रामकली—धमार

भोर ही श्याम तें कहा खेलो होरी नीथि सो होरी ।
चटपट नयन सो नयन मिलतहो झटपट पीत
पगो री ॥

वे तो चतुर खेलार कन्हैया तुम बहु गुणो हम
निर्गुणो भोरी ।

वतरस उपजात इसन वचिरस सुनात अत्रण
नासा री रङ्गरस में भोजो री ॥

टोड़ी—धमार

ए होरो खेलो सख' री रङ्गराग साजबाज सों ।
ऐसी होरो में फाग मचावो फगुवा लो रघुराज सों ॥
चन्दन वन्दन बुझा रीली अबीर गुलाल समाज सों ।
कृष्णानन्द सो रङ्ग भर लाजं खोल घुंघट जो
लाज सों ॥

सुनतानी—धमार

आली री कैसी यह होरो पिया मोहे चैन न देत ।
अध्वर मोरा मुख मोड़त है मिसहो मिस रस लेत ॥

धमात्री—धमार

माई री कैसे बसिये याहु नगरमें होरो खेलत वगरमें ।
घोर मुसे कोतवाल हंसै डर नाहीं नगरमें ॥
एक हो रङ्ग में रङ्गे हं पुरजन नेक न शङ्का सगरमें ।
रसिक सनेहो मानत नाहीं बड़ो ठिठाई लङ्गरमें ॥

पूर्वी—धमार

काहे री तोहे लाज न आवि री बार बार तू आवि ।
ऐहो डाले मदका माती नयन सैन नचावि ॥
बिना ही कहे तुम नाचत गावत नाना रङ्ग उपजावे ।
रसिक कृष्णको रस वश कर लोहो तो ही को
निन्द्य चावे ॥

चलै या—धमार

कैसे भरन जाजं पनिया मा ए निपट अचपल
खेलि सांघरो ।
काह सा लरत और भगरत काह सो ऐसे होरोमें
भयो बावरो ॥
कही सुनी काहकी न मानि ऐसे ढोठ छेल उमावरो ।
उगर वगर चलन न देत है ढोठ भयो ढोटा
गोकुल गांवरो ।
कृष्णानन्द आनन्द में डोलत नन्दमहर को है
शुड़ावरो ॥

चलै या—धम्

लाल जू पाई अकेली नवेली नारी सुघर रङ्ग गोरो ।

हमरे सङ्गकी दूर निकस गई मोसे कोन्हों वरजोरो ॥
बाट घाट मग रोकत टोकत दधि विधार मोरो
मटकी फोरी ।

कृष्णानन्द कैसे निकसन पद है जो त्रः आवत
सोई रङ्ग बोरो ॥

विभास—धमार

चोंक परो गोरो होरो में श्याम अचानक
बांह गही री ।

समर कुड़ाय रिसाय चढ़ो भुवि अनख अधर कहु
बात कही री ॥

चितै चितै रसके वसके कसके भुजमें रसरास लहो री ।
जय श्री कुञ्जलाल छबि लाल जाल छबि ख्याल
रिसाले देख रहो रो ॥

भैरव—धमार

लाल रसमातो खेलै हो हो हो कर होरो ।
इत गोकुल उत मधरा नगरो इत चन्द्र उत अजोरो ॥
ग्वालवाल सखा सब लिए उत ललितादि किशोरो ।
कृष्णरसिक अवलोकत है छबि पिया
प्रोतमको जोरो ॥

विभास—धमार

वे भासत तेरे तनमें मोहन नवल तिया जिन
रेन जगाए ।

विवश भए भोर हो आए सारी रैन जगाए ॥

छाड़ देहु सुरारो तेरी अटपटो बात पियारो ।
हम आगे तुम भूठ कहत हो नवल तिया वलिहारो ॥

चकई चुहचुहात भोर हो मेरे आत तमचर
बोलत दियो है दरस ।

रेनके उनींदे तीतरात नयन मूंदे मानो
बौत गए वरस ॥

तुम कौन हो जु होरो खेल कहांति आए वसन
रहीले रङ्गाए ।

पहचानत हम नाहीं न तुमको अबीर गुलाल
खपटाए ॥

नव कुञ्जरी प्यारी सो भोर भए हरि होरी
खेलत आए ।

धन्य धन्य प्यारो धन्य प्यारे हो तुम धन्य धन्य
धमारमें विभास गए ॥

विभास—चीताल

आज तो छवीलो लाल प्रात हो खेलन चण्यो
सखा सङ्ग लाय लिये गारो गावें गायके ।

खेलत खेलत तृषभानु जूको पौरी आए हो हो
होरी बोली प्यारे मन भायके ॥

छवीलो रच्यो उपाय श्यामको लीन्हा बुलाय मैयाको
दृष्टि बचाय लोन्हें उर लायके ।

अरस परस दोऊ महा रसभौने सहचरो सुख पावे
रसिक मुख लायके ॥

विभास—धमार

खेलावन आवेंगो ब्रजनारी ।

जागो लाल चिरेया बोली कहे यशोमति महतारो ॥

ओव्यो दुग्ध पान करि मोहन वेग करो आन
गोपाल ।

करि शृङ्गार नवल वानिक बन फेंटनि भरो गुलाल ॥

बलदाऊ ले सङ्ग सखा सब खेलो अपने द्वार ।

कुम्कुम चन्दन चोवा छिरको घसि मृगमद घनसार ॥

लेकन हर सुनो मेरे मोहन गावत आवें गारो ।

ब्रजपति तब हिं चौक उठि बैठे कित मेरो पिचकारी ॥

चिरिया चुहचुहात भोर ही तात होरो खेलन
आए मेरे प्रात ।

डग मगात पग धरणी धरत हो श्याम सलोने गात ॥

कहा इतरात उत रात वीती जात नवल तियाके
सङ्ग खेली रात ।

कण्ठानन्द तुम सांची कहो तुम कहाँ जागे
मोहे कहो बात ॥

जान दे हो वनवारो मेरो अङ्गिया रङ्ग भर डारो ।

देखत हैं गुरुजन पुरजन मानो बात हमारो ॥

काहे को पकरत हो मनमोहन काहे मारत

पिचकारी ।

एक डर है मोहे सास ननदको मानो

कण्ठारसिक विहारो ॥

ललित—धमार

हो तोको कौन सीख दे हो रो नागर ।

तू तो होरो में अत छिन छिन में रिगसावे

उनके मनहो में सब रसगुणके आगर ॥

अब तुम मान गहे राखो सखो ए रिभए प्रेमसागर ।

अबके मुहम्मद शाह कोऊ मनाय ले आवे तो

भरुंगो रो कची गागर ॥

मदमात हो लालन खेलन आए रो मेरे धाम ।

नोको वान कबहुं नाहीं पहनाऊं ता पर

मुक्तनको दाम ॥

हो तो हाथ विकानो लालके जा भावे सो कहा ।

तन मन धन सब तुम हो को दाहा जो हानो सा

होय चहो ॥

मदमात आए होरोके कहै नहीं सकुच दग

खसलनमें ।

खल विचल हो रहे मैन नयन पान ते अधर भर

रहे रेख खसलनमें ॥

दग लोचन लाल लाल हो रहे तिहारे अति

प्रेम रसलनमें ।

ऐसे हो आए कहति लालन तुम जमर में अमर

खसलनमें ॥

हो गोरस बेचन जाय ना सकीं बाँच ठाढ़ो

कण्ठ श्याम खेले हो होरो ।

मदमाते छके बक बक सब देत गार ता पर रोकत
टोकत भकभोरत बांहु वरजोरो ॥

८

नयन पिचकारी प्रेम रङ्ग भर भरके सैननङ्ग
तक मारी ।

कुच कुङ्कुमा गुलालन हाथनके हरवा डारत
गरे प्यारी ॥

गोद अबीर नयननसे कज्जर मांग टीको हितकारी ।
साल कपाल सो होरी खेल ले पाए चतुर खेलारी ॥

९

सहज नहीं कंवर श्याम जू अब क्यों पृकृत घर मेरो ।
यह तिहारे जियमें रहत है मिलवैको मन तेरो ॥
धूम धाम फागुन की या ते सब जग लोग अजान ।
समझ जावो जया अपन याते वसिये मो टिग आन ॥

१०

आज आली होरी खेलनको मान न कोजे
परम पियारी ।

मुख तानन नीके होरी गावत गुलाल उड़ावत
ब्रजयुवतिनके सङ्ग बनवारो ॥

११

साजन विरह वियोग खेलत है नयनन मध्य
विरहन होरी ।

खेत अबीर गुलाल मिलो चितवन में सब
रङ्ग भरो री ॥

सियरी सास मनो पिचकारी आह कड़ाड़ होय
मांभ चरो री ।

तनकी चिता लगाय चित गह मदन अग्नि निज
जराय दयो री ॥

१२

धूमधाम फाग में याते सब लग लो आन ।
ससुभावत सब सखियां ऐसी वसियो मोटिग
वसियो प्रान ॥

११

आज रङ्गभीनी दम्पती मिल खेलत नीके रहस
रहस हो होरी ।
ज्यों ज्यों खेलत त्यों त्यों रीभत सङ्ग जब सांवर ले
और गोरी ॥

१२

यह कीतुक देखिये कचिसी मोहन ब्रज में रची फाग ।
एक उड़ावत अबीर गुलाल एक तारी दे दे
गावत राग ॥

१३

होरी खेली सब चायन गोपी गोप गोरस रस माते ।
उफ मृदङ्ग और वंशी बजावत मनके कलोलन
सब आप आपमें रङ्गराते ॥

१४

कान्हा चञ्चल खेल चतुर चपला सो खेलत
हो हो होरी रे ।
अबीर गुलाल के बादर छाए रङ्गकी परतहु
फं होरी रे ॥

१५

आयो होरी खेलनको सखी सखा मिल सङ्ग लिए
उफ वीणाको धंकार ।
अबीर गुलाल धुंध अति बाढ़ी गावत बजावत
मृदङ्ग कठतार ॥

चहंभोर ते नरनारी मिल गावे सब सखी दै दै तार ।
राजबहादुर युग युग जीवो कायम राखे करतार ॥

१६

सारी गोरी मग मध्य माधव पाग रङ्गमें रंगारे ।
सङ्गम धनो धन्य गोरी गोरी मधुर मधुर ध्वनि
राग मध्य रङ्ग सो धमारे ।
सो रङ्ग सो रङ्ग गगरी में धे धे गोरी सुरङ्ग सो
श्याम मध्य सिर सो पग सो पग सो रङ्गे सोधारे ॥

१७

अच्छे होरी हो नन्दनन्दन राधा खेली होरी ।
इत श्यामा उत श्याम मनोहर अबीर गुलाल
रङ्ग होरी ॥

ललित—पद्यम

देखो देखो ब्रजकी वीथिन वीथिन खेलत है
हरि होरी ।

गीत विंचित्त कोलाहल कौतुक सङ्ग सखा लख कोरी ।
आई भूम भूम भुङ्कन जुरि अगणित गोकुल गोरी ।
तिन में युवती कदम्ब-शिमोमणि राधा जु
नवल किशोरी ॥

छिरकत ग्वालबाल अवलन पर बुझा वन्दन रोरी ।
अरुण आकाश देख सख्या भ्रम मुनि मनसा
भई बोरी ॥

रपटत चरण कीच अरगजा केसर कुङ्कुम घोरी ।
कही न जात गदाधर प्रभु कहु बुद्धि बल मति
भई थोरी ॥

अर्था—धमार

ऐइत कर्हा नन्दके ठोटा खोल गांठ कहु दे रे दे ।
बाट घाट में बोलो ठोलो रार न कीजे प्रात कन्हैया
गरज परे तो दे रे दे ॥

बिना बोहनी तोहे जान न देखीं मोल तोल
कहु हे रे हे ।

विन जमाल गोपाल जीके प्रभुको तिहारि दर्श
मोहे जे रे जे ॥

२

होरी खेल आई ते फाग पिया सो मोसों दुरावत
है अपने जियकी बात ।

सुरतके चिह्न टुरे न दुराए नयनन रहे कज्जर
और लसत नख शिख गात ॥

३

ए जू कालकी ग्वारन मेरो मन ले गई ।
सांभ भई अज हं नहीं आई भूठो वचन दे गई ॥
काबहं काबहं परोसनकी घर आवत आय देखो
है के गई ।

वा बिना तो सों कैसे खेलूं वे तो विरह को
बीज वे गई ॥

४

छेल मदमाती हो हो होरी बोले ।
हो निशङ्क वो अङ्क लगावे और घूंघटपट खोले ॥
बातन घातन हंस हंसके आवत अपनी ही सब गोले ।
मोहन मुख निरखत रो आली चेरी भई बिना मोले ॥

५

ए री चल खेलन जइये सांवेरी सो होरी ।
ऐसे समय बहोर नहीं पै है मेरो मान कहो रो ॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर भर पिचकारी
रङ्ग पीत पिछोरी ।
मोहनके गर लाय कर जीवनको फल लो री ॥

६

होरी खेल न जाने भयो री अनोखा छेल ।
कहा कर्हं कहु कहत न पावे रोकत है मोहे गेल ॥
रङ्ग भर भर और बातन घातन करत अटपटे फूल ।
मोहन मुख देखत सुध विसरो मिटो जगत्की मैल ॥

७

तारी डफ बाजत मोहन छबि छाजत नाचत
गति सों आनन्द दे तार ।
बाजत ताल नृदङ्ग वीणा धनि नेवरकी भंकार ॥
ग्वालबाल सब सखा सङ्ग ले भर मारो पिचकार ।
अदा रङ्ग ब्रज धूम मची है नन्दमहर दरवार ॥

८

आज तुम कैसे बन आए हो मेरे लाल ललोहे
नयन रेनके जागे ।

याही लक्षण कहे देत तुम्हारि होरोके रस पागे ॥
श्रीतल गात पेच लटकत पगिया के रङ्गभीने
तन सोहत बागे ।

जो तुम कौहीं सो सब जानत सकुच सोध रच
होत हो मेरे पागे ॥

कर्हं कज्जर कर्हं पोकलीक है सबे चिह्न अनुरागे ।
महाराज स्वरूपचन्द्र पिय सुकर ले देखो अबीर
गुलाल असक सुख लागे ॥

८

ए जू रङ्गके भोने मदमाते खेलत हो हो होरी ।
कर मध्य लिये सुरासुरया मुखते तान खरकौ बोरी ॥
अबौर गुलाल उड़ावत सब पै भर भर ले ले भोरी ।
ये कौतुक चल देखिये राजा उदित-नारायण
टिग ऐसे समोरी ॥

१०

उफको धंकार सङ्ग लिए व्रजकी विधि न डोरे ।
एकन को मुख कुचरुच सो मीड़त एकन को गह
बड़ियां रङ्गमें बोरे ॥

११

श्याम बजाई मुरलीकी ध्वनि सुनि मेरो मन बौरानो
सुध न रही मोरे तनमें ।
मटक पटक गज विसराई भटक रही बगमें ॥
लाज सकुच सब जियाते त्यागी कहा करों
फागुनमें ।

मेरे तो जियाको चैन न आवत घरना बाहरना
सीरी अङ्गनमें ॥

१२

ए हो नन्द को टोटा तेरो लङ्गराई मोसे कही
न जाय ।
राज करो यह व्रजको बसवो तापर सुख अति पाय ॥

१३

हमारो फगुवा दीजे नन्दके टोटा नहीं तो हों
लरोगी भगर भगर ।
कै मुख मोड़ोंगो फेंट गड़े श्याम निडर निडर ॥

१४

ए रो कन्हैया होरा खेलन लागि व्रजमें धूम मचाई ।
बाट घाट मग रोकत टोकत मुरली फेर बजाई ॥

१५

कज्जर देहों नयनको अब कैसे भजे नन्दलाल सु मोर ।
मोरी अति चटकीली कौनी है सोराबोर ॥

१६

अरे हां रे कन्हारि कहा मेरे पाछे परो है सैन दे
सुध न लेन दे ऐसी वेष बजाई ।

लाज तजुंगी गांव कीरे राम राम दुहाई ।
विरह वियोगकी ध्वनि मोपै सुनि न जात अनसुनी
सुनाई ।

सकल सभा सब सुनोरी कान दे कान्हकी मारो
निकसी जात हों सताई ॥

१७

अब कित जेहो भज नन्दलाल कज्जर देहों
नेनन कोर ।
चूनर मेरो अति चटकीली कौनी है सोराबोर ॥

१८

होरो कैसेके खेलिए आयो फागुन सङ्ग श्याम ।
सगरो सखी मिल बन बन टूंड़े लै लै कृष्णको नाम ॥
उफ मृदङ्ग लिए सङ्ग चलत है और करो यह काम ।
अबौर गुलाल अरगजा रङ्ग लेके घेरो नन्दको धाम ॥

१९

श्याम वलिहारो मुरली बजावत हो वारो ।
गोपो म्भार मिल होरो हैं गावत कृष्ण देत हैं तारो ॥
एक गुलाल लै लाल मुख करत हों और लिए
पिचकारी ।
सगरो सखिनको बोरे हों रङ्गमें गोकुलके गिरिधारो ॥

२०

मोहन गोपीजन सङ्ग मिल कर खेलत होरो हार ।
अधर धरे मुरली पीताम्बर कटिपट सोहै देखत
छवि सब नारो सुर नर मुनि मोहै वार ॥

२१

अब नहीं जेहों फागुनमें उत श्याम लियो मोहि
अह भरी ।
मैं न कही काहसे जियकी बालापनकी बात यह रो ॥
जब सुध आवत वा मुरलीको युग सम जात
मोहै एक घरो ।

यो यह दर्श प्रीति है सांची तो घर बैठे
मिलि है हरी ॥

२१

धूम मचाई हो मोहन कैसेके मान रहे गो ।
 अबीर गुलाल केसर पिचकारी डारत अनेक रङ्ग
 टरे गो ॥
 कुङ्कुमकी चोटें जब परि हैं गारो गाय डफ
 सुघर घुरे गो ।
 डर लागत फागुनमें रसिकवर सन्मुख आय
 झपट धरे गो ॥

२२

अलीया किरर रङ्ग में रङ्गे हो भोर हो आए भेरे ।
 सांची को रङ्ग रसिक विहारो कहां सीखे डंग
 अनेरे ॥
 तुतगत बतियां मुख उघरत नयन वेन
 मुख कहत है टेरे ।
 रसिक भ्रमर घर घर हो डोलत कहां रङ्ग
 रङ्गे रङ्गे रे ॥

विलावल—धमार

बेला वर बौत गई भोर भई अजहं न सुध लई ।
 सगरो निशा मार्ग जोवत भई फाग खेलनकी
 चर्चा गई ॥
 किन दुतियन विरमाए प्यारे होरो रङ्ग ठई ॥
 छाया रसिक अलबेलो सांवरो कौन तिया मन लई ॥

सरपरदा—यत्

रङ्गमें भिजोई चुनरिया हमारी रसिया कुञ्ज-
 विहारो ने ।
 देख फाल्गुनऋतु उमंग उमंग चित्त पूरण
 ब्रह्म सुरारी ने ॥
 कोजे कहा डीठ मनमोहन त्रिभुवननाथ
 उदारी ने ।
 करत ख्याल खुशियाल कुञ्जनमें वरजीरो
 खेल खेलारी ने ॥

अलं या—धमार

रङ्ग केसर मोपे डार दियो है रसिया कुञ्जविहारो ने ।

कहे रही बहुत नेक नहीं मानी मनमोहन
 गिरधारी ने ।
 छल बल करे गुलाल मुख मसलत अबीर
 लगावत वारो ने ।
 ख्याल खुशाल करत नन्दनन्दन ब्रजमध्य
 खेल खेलारी ने ॥

२

रङ्ग में रङ्गो अकुञ्जविहारो फागुनको ऋतु
 आई है ।
 तुम तो उमंग भरे यौवनको वारो वयस मनभाई है ॥
 कुञ्ज कुञ्जमें होरो खेलोगो याहो उमंग उमगाई है ।
 ख्याल खुशाल करो जोइ रुच चित्त वृन्दावन
 छवि छाई है ॥

३

रङ्गमें रङ्गो अङ्ग श्यामके ।
 आई बहार फागुनको सखी रो उमंग भरो चित्त
 रुकत न रोके वसो या गोकुल ग्रामके ॥
 अबार गुलाल मलांगो कपोलन नन्दनन्दन
 सुख धामके ।
 ख्याल खुशाल करोगो कुञ्जनमें उर लिपटा
 अभिरामके ॥

अथ ज्ञानतत्त्व अध्यात्म-सागर ।

श्रीपरब्रह्मणे नमः

शुनातं तेन समस्त तथै सलिलेदता च सर्वावनो ।
 अयज्ञानाच्च कृतं सहस्रमखिल देवाश्च सम्पूज्यता ॥
 संसारा च समुद्रिता स्व पितृस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौ ।
 यस्य ब्रह्म विचारणं क्षणमपि मनस्येथ्यं प्राप्नुयात् यद्दि ॥

सर्वथा

स्थावर जङ्गम जीव जिते जगभांतिन भांतिन
 भेष धरे है ।
 ता मइ सत्य चिदानन्द भास सुधातम एक
 प्रकाश करे है ॥
 ता बिन जाने ते सिन्धु सो लागत जाने ते गोपद
 तुल्य तरे है ।

वन्दत ताहि कहै सुखदेव जो ब्रह्म सदा सब हो
ते परे है ॥

दोहा

व्यास मथन करि वेद सब सूत्र निकारि सार ।
श्रीगुरु शङ्करदेव जू कीन्हों बहु विस्तार ॥

२

तिन ग्रन्थनिको समुक्ति मत हिय धरि पर उपकार ।
भाषा करि सुखदेव यह रच्यो ग्रन्थ अति चार ॥

३

जैसे रविके तेज ते अन्धकार मिटि जाइ ।
अध्यातम परकाशते त्यों अज्ञान नशाइ ॥

४

गुरु शिष्यको वाद अरु वेद वचन उपदेश ।
अध्यातम परकाश यह भाषा सरल सुवेश ॥

५

अधिकारी जिज्ञासु अरु शिष्य कहावे सोइ ।
तप साबुनु करि देहके पापनि डारै धोइ ॥

धनाश्री—तिताला

वेद स्मृति ज्यो कहै धर्म शुभ क्रियाकर्मके ।
तिन कर धोवै पाप जन्म बहु जन्म धर्मके ॥
फल अभिलाषा छाड़ि कर्म हरि प्रीति करे सब ।
हृदय विमल जब होइ होइ वैराग याग तब ॥
श्रुति युक्ति सहित उपदेश गुरु करै शिष्य हि
पमै धरे ।

विज्ञान सहित सुखदेव कहि प्रकट ज्ञान मारग ररे ॥

६

जैसे वर्षा पाइके जोतै खेत किसान ।
त्यों प्रारध्व हि पाइ के देह सुकर्मनि जान ॥
देह सुकर्मनि जान खैंचि इन्द्रिय मन सोधे ।
बवे बीज उपदेश वेदवचननि गुरु बोधे ॥
तब उपजै दृढ़ज्ञान रोमै खेतो किए ऐसे ।
अनुभव फूल हि फल हि कहै सुखमारग जैसे ॥

कविच—चीताला

इन्द्रिय को जीतो नहीं खैंचि कीन्हों हाथ मन
परउपकार ही सो तन भाइयत है ।

वेद के बखानिवे को सारासार जानिवे को वेदपन्थ
भानिवे को रूप गाइयत है ॥

एकरूप पंहुचान्यो सब ही में सोई ज्ञान्यो आयु
ते न सुदो मान्यो सो बताइयत है ।

ईश्वरलौ ध्यावै जो पै भक्ति दृढ़ावै जब एसो गवैरपा
तब ज्ञान पाइयत है ॥

दोहा—तिताला

गुरु सों पूछै शिष्य यह नमस्कार करि ध्यान ।
नीके करि समुभाइये का सो कहियत ज्ञान ॥

गुरु उवाच

दोहा

भूलि गयो अब कहै सुख मार जै ज्ञान ते अपनी
आत्म भेव ।

ताही को फिरि जानिवो ज्ञान कहत सुखदेव ॥

दोहा—तिताला

साधन चारि कहै गुरुन प्रथम एक वैराग ।
पुनि विवेक समाधि अरु सुनि सुमुख बड़ भाग ॥

अथ वैराग्य लक्षण

तिताला

ब्रह्मा इन्द्र हि आदि दै होत देह धरि भोग ।
काकवोट सम यौवनै वीतरागते लाग ॥

अथ विवेक लक्षण

दोहा—तिताला

देहप्रपञ्च अनित्य है अतम नित्य वखानि ।
सारासार हि जानिवो यह विवेक सब मानि ॥

अथ समाधि-लक्षण

सवेथा—तिताला

वासना त्याग सदा सम है दम वाञ्छ सुवृत्ति को
निग्रह ठाने ।

दोष निर्दोष विषे उपरा मतिज्ञा सहे दुख ज्यों
सुख ही माने ॥

सासना वेद सुप्रमाण हि दे शरधा सो वखाने ।

एक ह्ये चित्त समाधि वसे यहि भांति समाधि

अचारजकी कुछ साध न जाने ॥

अथ सुसुप्त-लक्षण

दोहा—तिताला

जन्ममृत्यु संसारते कैसे कृष्टिये मित्त ।
सो सुसुप्त कहिये सदा यहै विचारत चित्त ॥
चारौ साधन जे कहै तिन्हें युक्ति जब होइ ।
तब जो पूछै आत्म गुरु कहै तब सोइ ॥
नमस्कार दण्डवत् करि भेंट हस्त में लाइ ।
कहौ गुरु जू आत्मा कैसे जानौ जाइ ॥

गुरु उवाच

दोहा—तिताला

शिष्य सुमृच्छु विचारि कै बोले गुरु दयाल ।
वहै कहतु हौं जो कहौ अर्जुन सो गोपाल ॥
सामवेदके वचन हैं तत्त्वमसी पद तीनि ।
जानो इनको अर्थ जिन कह्यो सार तिन वीनि ॥

चौबोला—तिताला

तत्त्वमसि जीवत्व पद है असि पद ब्रह्म कहावै ।
माया ते ए तीनि भेद हैं एक वेद बतावै ॥

शिष्यावाच

चौबोला—तिताला

कहौ गुरु जू एक ब्रह्म ते तीनि भेद क्यों भाषे ।
कैसे भए कौनके कोन्हें कौनो मति अभिसाषे ॥

गुरु उवाच

चौबोला—तिताला

एक ब्रह्म चैतन्य अखण्डत इच्छासी भलकति है
तामें ।
ताहों सो माया कहियत है नीके करि सुनि गुनि
शिष्यामें ॥

चौबोला—तिताला

माया जड़ चैतन्य ब्रह्म है ता मो भए आभासा ।
सत रज तम त्रयगुण उपजाए तिन ते है त विलासा ॥
माया है प्रतिविम्ब ब्रह्मको गुणनि सहित है कीन्हें ।
एक मांभ तम गुण अधिकारो दूजो रज-तम सीने ॥
सत गुण अधिक ब्रह्म अरु माया सोई एरु कहायो ।
रजगुण अधिक विष्वतम माया प्रकट जीव पद पायो ॥

दोहा—तिताला

विम्बी भूष्यो आपुमें तमगुणके अधिकार ।
माया करि वैचित्रता कीन्हें जीव अपार ॥
सो पाछे करि कहै गो जीवनिको सब मर्म ।
अबै कहतु है ईशको रूप शोल गुण धर्म ॥

सवेया—यत्

शुद्ध सतो गुणके गुणते प्रतिविम्बन आपन

भूलन पायो ।

माय हि खैचि कियो अपने वश ईश वहै सर्वज्ञ

कहायो ॥

चौदह लोक रचे क्षणमें अरु भेटतु है जब चाहे

मिटायो ।

शक्ति अनन्त कहै सुखदेव वहै पुरुषोत्तम वेदन गायो ॥

२

आपुन ही चतुरानन है सुख स्थावर जङ्गम

जीव उपावै ।

रक्षा करे सबको हरि है अरु जीवका ताकी तहीं

पहुंचावै ॥

बद्र है अन्त संहार करे सब कालनि काल है

सर्व नशावै ।

यो जग खेल विश्वम्भर को जैसे बालक खेलिखेलीना

मिटावै ॥

दोहा—तिताला

तीनि देह है ईशकी कारण सूक्ष्म स्थूल ।

अब ताको वर्णन करौं पुरुष विराट् समूल ॥

चौबोला—तिताला

प्रथम देह कारण है माया ।

जाके बल सब जगत् उपाया ॥

जाको आदि न कोज लहै ।

सत्य असत्य न वेदो कहै ॥

दोहा—तिताला

पञ्च तत्त्व ताते भए पहिले सूक्ष्मरूप ।

शब्द स्पर्श अरु रूप रस गन्ध कहत कवि भूप ॥

चीनोला—तिताला

सूक्ष्म तिनकी देह भई जो हिरण्यगर्भ कहायो ।
सब जीवनको आपुन ही त्रयस्त्रिंशत् शरीर बनायो ॥

दोहा—तिताला

इन्द्रो मन बुद्धि प्राण ए सबके रचे विचार ।
सूत्र आत्मा कहत है ताही सो निर्धार ॥
स्थूल तत्त्व पांचौ प्रकट तिनते सब ब्रह्माण्ड ।
नभ अरु पवन सुतेज जल अरु पृथिवी नवखण्ड ॥

स्थूल देह वह ईशको सकल तत्त्वको जानि ।
याही सो सब जीवको देखो लीजो मानि ॥

विलावल—तिताला

शिर अवकाश श्वास नासिका पवन वास सूर शशि
मयन मुख अमल को करे है ।
हरि-हर भुजा दोऊ हियो चतुरानन है उदर सकल
लोक वाणी वेद ररे है ॥
पर्वत है अस्थि रोम सकल वनस्पति मेघमाला
वीरज पताल पांडु तरे है ।
अलख अरूप जाको महिमा अनूप देखो वही
विश्वभूप वही विश्वरूप धरे है ॥

शिथोवाच

विलावल—तिताला

समुझो पुरुष विराट् जो कीन्हों आपु बगान ।
कबते हो कब ली रहत कहिये सब परिमाण ॥

गुरु उवाच

विलावल—तिताला

ब्रह्मा हो की आपुते यासौ बध्नी पुमान ।
सुनि अब तो सो कहतु हीं ताको सबे विधान ॥

विलावल—सबैया

सत्रह लाख हजार अठास है युग सत्ति चह
पद जानो ।
बारह लाख नब्बे छ हजार को तेता तहां पद तीनि
बखानो ॥

आठह लाख हजार सु चौषष्टि हापर उहपद
धर्मके बानी ।
चारिये लाख बतीस हजार कोहै कलि एक पदौ
ठहरानी ॥

तितारा दोहा

लाख तैतालिस वरष अरु बाते बीस हजार ।
एक चौकरी जुगनको ताको कछो विचार ॥
ऐसी ऐसी चौकरी जुग जब जाइ हजार ।
ब्रह्मा जूको एकदिन तब कहिये निरधार ॥
जते जुगको दिन कछो तैतीये पुनि राति ।
सृष्टि रचे दिनके उदै राति पुलै हो जाति ॥
ब्रह्माहीके दिवस को कल्प कहत सब तात ।
जाने चौदह इन्द्र हौं रान्य करि करि मरि जात ॥

वर्ष जो एक सहस्रको इन दिवसनको होइ ।
आयु दिव्य सौ वर्षकी ब्रह्माजोकी सोई ॥

ब्रह्माहीके जन्मते प्रकट होत संसार ।
महाप्रलय है मरणते यहै जानि निरधार ॥

कही कहां लागि ईसकी माया को विस्तार ।
याही ते संक्षेप सौ कहु कहु कियो विचार ॥

तप्तद ईश्वर की कही जोहै सबु व्यवहार ।
अब सुनु त्वं पद जीवकी ज्यौ न साध संसार ॥

प्रथमहि उत्पत्ति इसकी वही जीवकी जानी ।
वाके सृष्ट सतो गुण याके तम गुण अधिक बखानी ॥

शिथोवाच

तिताला

सत्त्व रज तमगुण तीनि ए माया ते कहि आए ।
तिनके लक्षण छपा करि मोहि नहीं समुझाए ॥

गुरु उवाच

खट्वाग—तिताला दोहा

सकल वस्तुको ज्ञानकारी बुद्धि विमल जब होई ।
वहै सतो गुण जानि ये कहत सयाने लोई ॥

२

लोभ लिए व्यवहार जो सो रजगुण पहिचानि ।
आलस निद्रा विकलता मोह तमो गुण मानि ॥

३

सच्चिदानन्द स्वरूप अनन्त सु आपु तमो गुण ते
विसरायो ।

एक ते जीव अनेक बनाइ के माया कियो अपनो
मन भायो ॥

कारण न देह अविद्या वहै अरु वाहो को नाम
अज्ञान कहायो ।

सूक्ष्म स्थूल उपाधि को मूल वहै प्रतिकूल
सुखानं गायो ॥

तितारा—दोहा

मायाको है शक्ति है विक्षेप रूप आवरण ।
चेतनि रूप भूलाइ के टांको अन्तःकारण ॥

शिष्योवाच

तिताला

मूल अविद्या तुम कहौ सब उपाधि को देव ।
देह लिङ्ग अरु स्थूल को आनौ चाहत भेव ॥

गुरु उवाच

तिताला

नासिका नयन त्वचा रसना मिलि कानए
इन्द्रिय ज्ञान वषानी ।

वाक् नियानि निपाज उपास्य पदो मिलि पांच है
कर्म्म विधानी ॥

प्राण अपान समान और ध्यान उदान हि और
मनो बुद्धि मानी ।

सूक्ष्म पांचहु तत्त्वनिती ए हम चह तत्त्वको
सूक्ष्म जानी ॥

शिष्योवाच

तिताला—दोहा

पांच तत्त्व सूक्ष्म नित ते स अह क्या की करि कोन ।
कहिये मोसौ प्रकट करि को मै को प्रबोध ॥

गुरु उवाच

तिताला

वाक् श्रवण आकाश ते प्रकट होत इनि जान ।
वह बोले वहई सुने दोऊ शब्द निधान ॥

२

तुचा पानिए पवन ते प्रकट हांत रे नित ।
दोऊ परसन धर्म कौ निके जानत चित ॥

३

नयन चरण ए तेज ते इन्द्रो दोई कहां जु ।
वे चाहत है रूप कौ ये ले जात तही जु ॥

४

रसना नाभि द्रवी भई जल ते सुनि रे तात ।
जानत रसके खाद कौ समुक्ति देषु यह बात ॥

५

मूल हार ओ नासिका ए पृथिवी ते दोई ।
वहै ठिकानो गन्ध को वाहि ज्ञान सबु होई ॥

६

प्राण अपान समान अरु ध्यान उदान हि जानु ।
पांच ठिकाते सब नर्कनि धा वे ॥

पुण्य औ पाप समान दोऊ महिमा न सहे
कुल मै छवि छावे ।

जो सुखदेव ललाट लिखो सुघटे न बढे अरु
जाइ न आवे ॥

आत्म एक विचार बिना हि भांति सुजोवनि ।
कर्म्म नशावै नेते भए एकै पवन वषानु ॥

७

पांच भूतके अंश मिलि उपजो मन अरु बुद्धि ।
सब इन्द्रियके खादको है ताहो ते शुद्धि ॥

पांच प्राण है बुद्धि मन इन्द्री दसौ गनाइ ।
पांच तत्त्व ते ज्यौ भए त्यौ सवर पे जनाइ ॥

कारण जो पहिले कहि आए अरु या लिङ्ग समित ।
कर्ष भोग कौबिके काजि स्थूल देह धरि लेत ॥

शिष्यावाच

तिताला

कारण सूक्ष्म देह है कही सु समुज देव ।
अब कहि ये करि कैकशल देह को भव ॥

गुरु उवाच

चीकोला—तिताला

महाभूत पञ्चा कृत है करि सञ्चित कर्ष उपावै ।
सुख अरु दुखके भोग करन कौ स्थूल देह छवि छावै ॥

शिष्यावाच

दोह—तिताला

पञ्चीकृत समझो न मै जो तुम कछा समान ।
ताते फिरि विस्तार सौ कीजै प्रकट विधान ॥

गुरु उवाच

तिताला

महि कठोर अरु द्रवत जल तैज उच्चता जानु ।
चलति वाउ खाली जहां तहां अकाश बषानु ॥

एक तर्क के पांच करि पांच न ते पञ्चीस ।
पांच अंश न्यारं रहै निश्चित कौनै बीस ॥

अस्ति मासत्व गरो मनाटिका प्रगट पञ्चभूय ।
रैत पित्त अरु खेद लार पुनि रुधिर नीर ह्यय ॥
भूख प्यास मुखप्रभा नौंद आलस हिते जगनि ।
धावनि कूदनि चलसिक्कुर पसरनि जु पवन भनि ॥
शिर कण्ठहुं दय अरु उदर कटि यह अकाश
विधि पञ्च लहि ।

इमि पञ्चभूत पञ्चीकरण करि पञ्चीय सुखदेव कहि ॥

एक एक ते पांच करि कहिसु सब पञ्चीस ।
कौन तत्त्व मै को मिथ्या सुनौ सोचिगत्त देवीस ॥

एक एकके नौ करे पांच सो पैतालीस ।
पांच राखि चालीसके है है कौनै बीस ॥

हाड़ मध्य पृथिवी रह्यो मास नोर रसतेजु ।
त्वचा पवन मिलि कै भई रोम अकाश कहै जु ॥

बीज मुख्य जल जानिये पित्त तेज मिलि होइ ।
खेद पवन मभू रुधिर भवला रङ्गण जुत जोइ ॥

कुधा मुख्य तैज रसो प्यास पवन मन आनि ।
सुखमा जल आलस अवनि नौंद अकाश बखानि ॥

धावनि मुख्य समीर है गगन पसारनि माहि ।
कूदनि तजु सकीजु भुय चलनि नोर बिन नाहि ॥

शिर अकाश जु शब्दमय कण्ठवा पुहिय ते जु ।
उदर नोर जुत जानि ये कटि भुयगन्ध कहै जु ॥

भूमि अस्थि जल रैत अरु तैज भूख पहिचानि ।
धावनि पवन अकाश शिर पांच नि गालिस जानि ॥

पञ्च अंश ए राखि कै भए बीस यौ लीन ।
ज्यौ नर पगिया परसपर बदलत परम प्रवीण ॥

यहु सबु पञ्चीकरण कौ तो सौकखा विचार ।
देह स्थूल धरि जीव यह करत भोग संसार ॥

धै कुमोह जल अग्नि पुनि क्रोध मूल यह जानि ।
वाई काम सके वेर तु है लोभ अकाश बखानि ॥

१५

तीनि देह तो सौ कही कारण सूक्ष्म स्थूल ।
पञ्च कोसूक्तो भेद पुनि ताहीं माह समूल ॥

कवित

अन्नमय स्थूल जानि प्राण प्राण मेव जानि पांच
कर्म इन्द्रो अरु मनु मनोमय है ।
पांच ज्ञान इन्द्रो अरु बुद्धि विज्ञानमय कारण
अविद्या सो ती आनन्दमै लय है ॥
तीनि देह माह पञ्च कोष सुखदेव काहि नौके
कै विचारि देखु भुन ही को भय है ।
कोसु है न कोज कहि देहज न सोज एक आत्मा
कौ जोज जा मै आनन्द को चय है ॥

श्रियावाच

चीमोला

सञ्चित कर्मनिके पहिले ही स्थूलदेह तुम भाषी ।
कर्मनिके लक्षण सुनिवे कौ मेरो मति अभिलाषी ॥

गुरु उवाच

दोहा

सञ्चित अरु प्रारब्ध ए क्रोयमान तय कर्म ।
सुनि ही नौके कहतुहौं तिनके अद्भुत मर्म ॥
एक जन्मके कर्मफल भुगुतै जन्म अनेक ।
सञ्चित ता सौ कहत हैं सुखदुख सञ्चित विवेक ॥
एक जन्मके कर्मफल भुगुतै दूजो देह ।
सो प्रारब्ध कहावई सुनि अब सञ्चित सनेह ॥

समेया

गर्भ वसै नरके पशुदेह जरायुज योनि तहां
पद पावै ।
पञ्चिन आदि जो अण्डज योनि निरंतर जाइ
तहां छवि छावै ॥
खेदते खेदज की उत्पत्ति सु चीलर और
सुयासु कहावै ।
उल्लिख्य वृक्ष तिन कनि भो इहि भाति सुजीवनि
कर्म भ्रमावै ॥

१

पुण्य करै सुरलोक है अति पापनिते सब
नरकनि धावै ।

पुण्य भी पाप समान दोऊ महिमान सह कुलवह
विछावै ॥

जो सुख देवलिलार लिख्यो सो सुघटै न बढ़ै अरु
जाइ न आवै ।

आत्म एक विचार बिना इहि भाति सुजीवनि
कर्म बनावै ॥

३

कोट पतङ्ग करै पशुपक्ष अधोगतिमें जल जीव निभावै ।
कै सुरलोक बसै सुर है कबहूँ सुरराजकी

सम्पत्ति पावै ॥

मानुष है सुखदुख सहै घर नीचके जचके लै प्रकटावै ।
आत्म एक विचार बिना इहि भाति सुजीवनि

कर्म भ्रमावै ॥

४

जायत मै सब विश्व बनाइ विलास करै वसि
नयननि हरे ।

ताही की वासना वासित है सपने मह आनि
मनोरथ घेरे ॥

सूक्ष्म स्थूल शरीर दुयो अमते अति होत
सुपोपति नेरे ।

तीनि अवस्थान मै सुखदुःख लहै सो तो एक
अदृष्टके प्रेरे ॥

दोहा

इच्छा अनिच्छा परइच्छा त्रिविध कर्मके भोग ।

जन्म आदि आमरण लौ कहत विवेको लोग ॥

कर्म होत प्रारब्ध ते मूरख जानत नाहि ।

मानि लेत अब मै कोए क्रोयमान सो आहि ॥

अब वरावत करममा मिलेते फिरि अन्न ।

वो इह प्रारब्ध ते यौ सम उत हैं तन्न ॥

ज्ञान उदय विहोत ही सञ्चित कर्म विलात ।

क्रियमान हो ते नहीं प्रारब्ध रहि जात ॥

देह तोनिम जीवकी कही सञ्चित विद्वार ।

जाते तेरे चित्त में उपजे आत्मविचार ॥
पांच भूतते देह यह ता काउ वोजानि ।
सांचों एकै आत्मा सो विचारि मन मानि ॥

अलेया

भौतिक देह सदा जड़ है कहं आत्म चेत निजो
तिहि सानौ ।

देह अनित्य मरे जबै वह आत्मा नित्य
अखण्डित जानौ ॥

देखिये देह अमङ्गल रूप सुआत्मा शुद्ध अदृष्ट वषानौ ।
ता कह एक कहै नर मूढ़ कहा उनते पशु
और हि मानौ ॥

दोष

षट् विकार हैं देह में ते आत्मा के नाहि ।
सुनि अब तिनके नाम पुनि समुक्ति देखु मनमाहि ॥
उपजति है अरु बढ़ति है काल जुवा पुनि होइ ।
वृद्धा होति अरु मरति है षट् विकार ए जोइ ॥
दोष दसौ है देह में ता करि आत्मा हीन ।
सुन पुनि तिनके नाम अब यथा कहत प्रवोण ॥

दशदोष लक्षण

अर्नया

शुद्ध अशुद्ध भरी दुर्गन्धि लसै बहु षंड सुस्थूल
निहारौ ।

रोग असे बहुं भाति जरै शिथिलै पुनि आमिष
अन्न, पशारौ ॥

हो तिमि होति घने दिन में छिन में मिटि
जाति न लागत वारौ ।

देह सदा दश दोष भरो यह आत्म ह्रस्व अदोष
विचारौ ॥

दोष

वेद कहत सो मैं कहत तू पुनि चित्त विचार ।
आत्म चेतनि नित्य है देह अनित्य निहार ॥

शिश्योवाच

दोष

तुम जो कहो सो सबलकी खूल देह में नाहि ।
याहि छाड़ि उरही धरत लिङ्ग देहमें आहि ॥

गुरु उवाच

पञ्चभूत जड़ ते कहे सूक्ष्मकी उत्पत्ति ।
अलख अनादि अखण्ड है तु तौ आत्मभूति ॥

शिश्योवाच

देह होत चेत त्वजि हि इन्द्रो तेहि समतूल ।
प्राण होज की और नहि यही कहति हौ मूल ॥

गुरु उवाच

सोवत मैं भूखन हरत जानत नाहो कोइ ।
प्राण सोई चेतन्य तौ पकर चोरहो सोइ ॥

संख्या

कानको कासुन नाक करे अरुणके कोका सुन
कान पे होई ।

आंखि कोका सुन आंखि न जोई ॥
हाथ को कासुन पाई करै अरु पांइ को कासुन
हाथ हि सोई ।

जानत आपने स्वादहि कौ दश इन्द्रियन माह्वन
चेतनि कोई ॥

शिश्योवाच

दोष

स्वाद परस्पर औरके इन्द्रो जानत नाहि ।
ततें एज वुहै सवै हौ चेतनि मनमाहि ॥

गुरु उवाच

पञ्चभूतके अंशके मनु उपज्यो पदजानि ।
सब इन्द्रिनके स्वाद कौ ताते है पहिचानि ॥
वात सुनत हं सुनत नहि कहत नहीं मनु ठौर ।
ताते यहै विचारि पै चेतनि है कोउ और ॥
सुखपति इन्द्रो सहित मनु मिलत अविद्या माहि ।
जाग तु है तव कहतु है आशु कहु सुधित गहि ॥
सपनोज देखोन कहु सोइश पोइही रीति ।
यह जानि जेहि जानते हि यहै ज्ञानयी नीति ॥
पञ्च तत्त्व ते होत मनु ज्ञान भए मिटिजात ।
ता कौ गहर कहत है जाके उत्पत्ति पात ॥

सदा अनादि अनंश हैसो आत्मत आई ।
ताहै यहै विचारि कै छाड़ि अज्ञके भाई ॥

शिष्योवाच

सत्रह मै सौरह कहे रहो जु वाको बुद्धि ।
जानत हौ चेतन्य यह जाको सबको शुद्धि ॥

गुरु उवाच

अहङ्कार मन बुद्धि चित्त एक कहत है चारि ।
एक कहत है बुद्धि मन अन्तःकरण निहारि ॥
जैसे एक पवनके प्राण कहे है पांच ।
तैसे अन्तःकरणके चारि भेद पुनि सांच ॥
जब चाहतु है वसु कछु चित्त कहत है ताहि ।
जतन कल्पना जब करै मन कहियत है वाहि ॥
मय हलो नोले तुही अहङ्कार यह जोइ ।
सबको जब निश्चय करै बुद्धि जहावै सोइ ॥
जैसे वांभन एकके नाम क्रिया ते दोइ ।
रोटो करै रसोइ पाप टेते पाठ कहोइ ॥
आत्म है बुद्धि ते परे यह जो कहो भगवान ।
अरु पुनि आत्मबोध मै अङ्कर बोध निधान ॥

गीतायां

इन्द्रो पर है विषयते मन इन्द्रिन पर जोइ ।
बुद्धि कहो ताते परे बुद्धि आत्मा सोइ ॥
सुखदुःख इच्छा राग ए सबे बुद्धिके धरम ।
सुखपति मैए सब मिटै रहत आत्मा परम ॥

शिष्योवाच

कहो आपुत मुभो सो मै देह दोइ मै नाहि ।
अब आत्म काशो कहत या शरीरके माहि ॥

गुरु उवाच

अज्ञाना विधनोया न्यारे न्यारे तेनखे सबहोके गुण रूप ।
जानत नाहो आपकी यह अज्ञान अनप ॥
कारण मुख्य उपाधिको है तौसरी देह ।
आदिन ताको जानियै अन्त ज्ञानको गेह ॥
अहङ्कार बुद्धि को कहै तू जानि देहि जगाह ।
जगि है परमानन्द जब मै तु जगत नसाह ॥

पहै अविद्या नौद है स्वप्नतुल्य संसार ।
ब्रह्म लखै जब आपु को जागत वहै विचार ॥

शिष्योवाच

रूप कौन है ब्रह्मको का विधि वशै शरीर ।
कहियै मो पर करि कृपा जौ नसाइ भय भोर ॥

गुरु उवाच

तानसेनाक कवित

मन बुद्धि इन्द्रिनको कारण चलाइवे को सकल
उपाधिन ते न्यारो रहै गात मं
जैसे घट मोह व्यापक आकाश अरु न्यारो सुखदुःख
निति देसो अवदात मै ॥
जैसे रवि ज्योति अगि सोवत ते जीव जागे
उठि उठि काम लागै सबै प्रभात मै ।
अज अविनाशी परिपूर्ण प्रकाशो सुखदेव सुखराशि
औसो नित्य लसे आत मै ॥

२

दाइक प्रकाश कहै काट कौ अग्नि जैसे चेतनि
प्रकाश कहै मन बुद्धि गात मै ।
मन चक्षुरादि हुते न्यारो सबकाल जानि मन
चक्षुरादिहु को मन चक्षु तात मै ॥
मन चक्षुरादि निति पाई यैन रूप जाको अतिहि
अरूप एक अदभुत गात मं ।
अज अविनाशी परिपूर्ण प्रकाशो सुखदेव सुखराशि
एसो नित लखै आन म ॥

१

सुखको आभास जैसे दर्पण मै देखियत सुखते
न न्यारो ताहि सुनियत वात मै ।
ऐसे ब्रह्म चेतनि को बुद्धि मै आभास यरो ताहो
सौ कह जीव बहुविध गात मं ॥
दर्पणके टारि प्रतिबिम्ब मिटि जात जैसे ब्रह्मके
विचारि देखे जोव मिटि जात मै ।
अज अविनाशी परिपूर्ण प्रकाशो सुखदेव सुखराशि
रोसो नित लखै आत मै ॥

रविके प्रकाश पाए लोचन विलोकै रूप तैसे
रवि ब्रह्म प्रकाश अवदात मै ।
जैसे एक सुतमा उरु निगम पोहियत तैसे एक
चेत बुद्धि मननके गात मै ॥
सबही मै एक वही सबही ते न्यारो रहै गगन
समा नयन मिलत काह वात मै ।
अज अविनाशी परिपूरण प्रकाशौ सुखदेव सुखराशि
ऐसो नित लखै आत मै ॥

सच्चिद् आनन्दस्वरूप एक आत्माको विम्बपरै
बुद्धिन अनेक लेखियतु है ।
जैसे एक रविके अनेक सर्वमा उजलके प्रताप
न्यारे न्यारे पेखियतु है ॥
कर्मनिके वस जीव सुखदुःख भोग करै मोच उख
मध्य जोनि मध्य भेविषतु है ।
पवनके वस सरवरनिके जल जैसे चञ्चल है कोज
धिर देखियतु है ॥

दोठि कौ छपावै घनु अन्न जानै भानु छप्यो ऐसे
शुद्ध आत्मा कौ बुद्धि उन मान्या है ।
कहै सुखदेव जैसे श्वेतमणि मै न रङ्गपाश धरै
जाके ताके रङ्गनि मै सान्यो है ॥
जैसे जलमा उपजो चन्द्र प्रतिविम्ब आई जलके
हलावतहु हासत सो जान्यो है ।
ऐसे जड़बुद्धि माउ देखि प्रतिविम्ब चिर मूढ़ निले
ब्रह्म कौ जगत माह आन्यो है ॥
शिष्योवाच

दोहा

मम शरीर है आत्मा जड़ शरीर सो नाहि ।
विषय भोगको करतु है यह संशय मन माहि ॥
गुरु उवाच
विषय भोग विजन रचे थारी स्थूल शरीर ।
इन्द्री कर सौ करत है भोजन बुद्धि मन धीर ॥

गीतायां

इच्छा सुखदुःख है अरु धृति चेत निसम्भात ।
यह सब छेद विकार है न्यारे आत्मतपत ॥
देह कहतु है आपु सील बलनि किये अन्न ।
ब्रह्म लखै ज्ञानी वहे आत्म अज्ञानतन्न ॥
तु छुरो संसारने निश देह रहि नित ।
सखु आपनको आत्मा यहै मुक्ति हे मित ॥

कवित

सदचिद् आनन्द स्वरूप स्वप्रकाश जाकी सम
सबहीके उर अन्तर रहतु है ।
अचलअखण्ड अक्रिय अनन्त अति अहय अरूप
इन्द्र मनन गहतु है ॥
निर्विकार निराधार निर्विकल्प निराकार कूटकत
निर्गुण निरन्तर लहतु है ।
आत्माको ब्रह्म जानै देहको असत माने पण्डित शयाने
ज्ञान याही सो कहतु है ॥

दोहा

वनाश्रम अभिमान है जोखो हियमें जान ।
वेद स्मृतिको सासना तोलो सबे प्रमाण ॥

कवित

पाप अरु पुण्ये दोज मटिया प्रवल जाके लोक
अरु वेदरोति वासनकी वारीके ।
काम क्रोध लोभ मोह कोल निसो राख्यो जरिक ते
सुखदेव चक कर्मनिके चारिके ॥
आश्रम वरण अभिमानकी जप्तीर जन्थो सुखधौ
दुःखके किवार तोरि डारिके ।
भूतकी निशावारिरूप आप नो सत्यारि सिंह
निकसो प्रबोध जग पिछरा को कारिके ॥

२

देही नाही इन्द्री नाहो मन बुद्धि प्राण नाहो कारण
अविद्या नाहो धीर सुख जे कहै ।
वर्ष आश्रम करी माउ नाहो जाति कुलधर्म नाहो
करता अकर्म नाहि भोग तान ते कहै ॥

मायाको विश्वास नाही इसको प्रकाश नाही जीव
चिताभास नाही भांति भांति से कहे ।
जागरत रूपन सुषुप्तिको लखैया सदा तुरिया
प्रकट बोधरूप ब्रह्मए कहे ॥

शिष्योवाच

दोहा

यह तो जानो आत्मा तुव प्रसादते देव ।
अब कहियेत तुमस्यको कहिवेहे भैव ॥

गुरु उवाच

यह सुवृत्तं पद जीवको तुम हि सुनायो रूप ।
अब सुनि असिपद अर्थको जोहे सबको भूप ॥

अथ असिपदका अर्थ

गुरु उवाच

दस्व दुई खर सो कहे त्वं पद जीवन खानि ।
असिपदब्रह्म अलिप्त है यामे दोनो जानि ॥
वह ईश्वर सर्वज्ञ है जीव सदा अल्पज्ञ ।
सम कहिये जो दुहुन को तो न मानि हे अज्ञ ॥
तत्त्वपद मानो सिन्धु है त्वं पदहन्द समान ।
असिपद यानी दुहुनमें ताहि एक करि जान ॥
तत्त्वपद मानो भूप है त्वंपद जान किसान ।
असिपद मानसको कहे ऐसे मानत जान ॥

शिष्योवाच

देवदत्त वहमानई मिथ्यो विभो ज्ञुत मित ।
फिरि वह देश्योधिपति ज्ञुतक्यो करि आवे चित ॥

गुरु उवाच

वास गएको विभो त्यजि अबकी त्यजो विपत्ति ।
दृष्टि करे जो देह पर तो वह इहे मृत्ति ॥
ईश्वरको सर्वज्ञता सो विद्याते जानु ।
जीवनकी अल्पज्ञता ताहि अविद्या मानु ॥
जि उपाधिको मूल हे तिनको उठी जानु ।
गुह्य गर्ह जो ब्रह्म हे एक आत्मा मानु ॥
जिसी देहे जीवके ते सहे जगदीश ।
न्यार नारी कह तु हो दुवो एकरि रौस ॥

कवित

जिसी रेह वाके ब्रह्म अण्ड है प्रकट रूप सीयाके
स्थूल जामे द्वाय पादने पिये ।
वाके हे हिरण्यगर्भ दूसरो शरीर याके सखम कहा
वेतत्त सचह गुभे पिये ॥
वाके आदि विद्याजाते होत सब काज सिधि
याके है अविद्या जाते भूलो अवरि धिये ।
वा सो जगदीश यासा जीव वहि परे एक ब्रह्मके विद्या-
रे ते न जोव ईस देखिये ॥

दोहा

त्यजो ईस को ईसता और जीव अविवेकु ।
तोनो पदको अर्थ यह तत्त्वमसि है एकु ॥
तत्त्व तुहा है यह कह्यो तत्त्वमसिको अर्थ ।
यह वृत्ति जाके भई सो सब भांति समर्थ ।
जो कोई जग जानई अर्थ तीनको भेउ ॥
भेटे है एके गहै अमर होउ सुख देउ ।
सामवेदके वचनको कह्यो सबे विस्तार ॥
तेसे चारो वेदके महावचन है सार ।
अहं ब्रह्मस्मिजयवेदस्य ॥
प्राज्ञामानन्द ब्रह्मो स्मिन् वेदस्य ।
अपमात्मा ब्राह्मति अर्थे न वेदस्य इति महावाक्य ॥

२

ईश जीव अरु ब्रह्म है जैसे एकु बखान ।
यहै अर्थ सब वचनको बुधिबल जानौ जान ॥
सद चिद आनन्द अहइत अचल अखण्ड अनन्त ।
स्वप्रकाश कूटस्थ अज अक्रिप ब्रह्म अमन्त ॥

शिष्योवाच

हादथ एके ब्रह्मके कहे विशेषण ताम ।
न्यारे न्यारे है कही अब तिनके गुणगाम ॥

गुरु उवाच

दोहा

असत अगत सत सो लगत जाकी सत्ता पाइ ।
सो सद ब्रह्मस्वरूप है ज्ञान बिना नल पाइ ॥

कवित

जाग रत अप्रकाश जो होति जाकी चेतनाते सुषुप्ति
तवा मै वसै साक्षो सो विशेषिये ।
तौनि हु अवस्था निते भावा भाव भाव रूप तुरिया
स्वरूप एक रस अवरेखिये ॥
जैसे सोह सुम्बक समीप करे चेतना को तैसे
देह इन्द्रो मन आत्मा सो लेखिये ।
एक रूप जगमें जगमगाति जाको जोति जहां तहां
जानु चिद चेतनिसो देखिये ॥

आनन्दरूप कवित

देख सुने संधे खावै चन्दन तुचाकी सावै वचन
बनावै नोके जाकी जे लगतु है ।
हाथन ग्रहण करै पाइन चलन करे जोई छिप धरे
ताहे सुख में पगतु है ॥
कहै सुखदेव विखे मिलै गन भावती तौ सुख सो
लगत पाछ मानहु टगतु है ।
आनन्दस्वरूप ब्रह्म आनन्द अखण्ड जानि स्वपनेको
आनन्द सो आनन्द जगतु है ॥

अद्वतीय लक्षण

दोहा

एक आत्मा में वसत स्थावर जङ्गम देह ।
जैसे मणिका मालके सूत्र माभ गणि लेह ॥

अवत लक्षण

देह होति अरु मिटति है ताते चञ्चल भानि ।
जन्म मृत्यु जाके नहों आत्म अचल वखानि ॥

अखण्डलक्षण

कवित

माहिन जाके सुजाति कहै अरु दूसरो जाति
सुकौनु गणावे ।
आपुहु नाटन भेदु कछू नृति नासिका नयन
सुपार्शनि धावे ॥
रङ्गमन सूत्र वेद कहै मन इन्द्रिन के सुनि
कैसेहु पावै ।

चेतनि एक अखण्डलरूप कहै सुख आपु कौ
आपु लखावै ॥

अनन्तचतन कवित

प्रथमहि माया सो प्रवेश है अकाश वाई तेज मोर
पृथिवी मै व्यापक अनन्त है ।
थिर धर जोन्द जे ते जगमै जगमगत सबमै प्रकट
एक चेतनि अनन्त है ॥
जैसे घटमट मध्या पहिले अकाश धिरे तैसे
घट घटन हि आपुहो अनन्त है ।
रूप है अनन्त जाको महिमा अनन्त अरु आदि
नाहीं अन्त ताते आत्मा अनन्त है ॥

स्वरूपप्रकाश लक्षण

कवित

और वस्तु चाहिये तौ दोपक प्रकाशियत दोपक
जो चाहियेको दोपक न चाहिये ।
और सब देखियेको आखि सुखदेव जैसे आखिनके
देखिये कौ कौनु अवा गाहिये ॥
रविको प्रकाश पाए सब मै प्रकाश होत रवि मै
प्रकाश जैसे खत हस गाहिये ।
अग्नि मै दाहक शक्ति जैसे आपुहोते तैसे
स्वप्रकाश एक आत्मा सो चाहिये ॥

कूटस्थालक्षण

दोहा

जाके नहीं विकार कुछ रहत कूटकुत ।
नित सो कूटस्थ रहावइ समभि देखु चितमित ॥

अजलक्षण

घटका कारण मृत्तिका वृत्त जगतको जानि ।
आदिरहित कारण रहित अज करि ताहि वखानि ॥

अक्रियलक्षण

आत्म है अक्रिय सदा देह क्रिया बहुरूप ।
जैसे दोप प्रकाशते खेले खारो जूप ॥
विषे बुद्धि पातु रतन चे अहङ्कार टिग भूप ।
इन्द्रि ताल मृदङ्ग जुत आत्म दोपक रूप ॥

ब्रह्मलक्षण

विभाग

शेषके सहस्र मुख जोभ ह्वे सहस्रता तेन मनए नाक
नित लेत रहियतु है ।
एकु ब्रह्म अण्ड जाको पावत न पाक कोज ऐसे
ऐसे कोटि कोटि वोम लहियतु है ॥
करे सुखदेव एकु अहय पुरुष जा सो नेतिनेति
कहे न प्रमाण कहियतु है ।
सदचित्त आनन्दस्वरूप अविनाशे अङ्ग पूरण प्रकट
प्रारब्रह्म कहियतु है ॥

दोहा

ए द्वादश विस्तार सौ कटे विशेषण चार ।
ऐसे जाने आप कौ यहै वेदको सार ॥

शिष्यावाच

न्यारे न्यारे सब कहे वलविक्रम अरु नाम ।
रूपका नहै ब्रह्मको लक्षा ज्ञानके धाम ॥

गुरु उवाच

अप्रमा अद्वैत है श्री चैतन्य सुभाइ ।
मन इन्द्रो गहि सकत नहिं क्यो करि वरनो जाइ ॥

कविता

काननको नाद नाहि जोभको सवाद नाहि
वचनको वाद नाहि जुगति सौ जो कहै ।
आंखिको देखाज नाहि नाकको सुघाउ नाहि
कर का गहाउ नाहों पाइनको रो कहै ॥
मन करि जाना नाहि बुद्धि अनुमाना नाहि दूसरो
प्रमाणा नाहि प्रकटअ सो कहै ।
असति प्रपञ्च शक्ति कौसे पहिचाने नयन आपु
सुखु जाने दूजो जाने बिन को कहै ॥

दोहा

एक ब्रह्म अद्वैत है ताको उपमा कौन ।
बिन उपमा समुभै नहीं अन्न कहावै तौन ॥
जो लक्षण आकाशको वहे ब्रह्मका देखि ।
यह अदु वह चैतन्य है यहै भेव पुनि लेखि ॥

कविता

व्योम हो मैं सात उरसात लक्षी सात लोक व्योम
होतके माभ लोकालोक लेखियतु है ।
व्योम मैं जगत अरु जगत मैं व्योमसे घटथे भाँठ
अरु न्यारो देखियतु है ॥
कहे सुखदेव जैसे जोव जग भेदवा मैं तैसे घटमट
भेद यामे भेखियतु है ।
और सब लक्षण समान जानि व्योमके पै ब्रह्म
माभ चेतन ता सो विसेखियतु है ॥

शिष्योवाच

दोहा

कहो प्रपञ्च सत्य अरु सत्य ब्रह्म सो एक ।
दू जो तपा असत्य क्यो रहै एकको टेक ॥

गुरु उवाच

एक केवल ब्रह्महै भेद प्रपञ्चन जानु ।
नित्य अनित्य विवेकके दूर करत अज्ञानु ।
जो कह तो यह पहिले ही देह आत्मा एक ।
तौ आत्मा न जान तो गहि लेतो यह टेक ॥
देह आत्मा भिन्न करि मम तु छड़ाई ।
भयो आत्मा आपु जब तत्र सबु एक आई ॥

अरिह

एकमेव अद्वैत अद्वैत ब्रह्म यह भेदु है ।
और वस्तु कुहु नाहि भेद अनभेदु है ॥
पहै वार अद्वैत सिद्ध करिहो गहै ।
जानि आपु कौ आपु मुक्तिपद कौ लहै ॥

दोहा

जग को कारण ब्रह्म है यह निश्चय करि जोइ ।
भूलिन मन मैं आनिये कारण करि जोइ ॥

शिष्योवाच

दोहा

कारण तौ हँ भांति है उपदानसे निर्मित ।
कहिये ता मैं कौन है वह अविनाशो नित ॥

गुरु उवाच

कार्य कारण ब्रह्म है दुह्म भाति तेंहि जानि ।
 उपादान अब कहति ही फेरि निमित्त वखानि ॥
 परज
 माट सौ कहत घट काट सौ कहत मट सुत सौ
 कहत पट पोटि पाटि आनिते ।
 लोह सौ कहै कटारी पीतरि सो कहै भारी
 कासेसौ कहत थारी भोजनके सानिते ॥
 कह सुखदेव जैसे जल सौ तरङ्ग कहै तुग कहै
 तावे माभरा गुल पिटानिते ।
 कमक सौ कह्यन श्री किङ्कनो कहत जैसे ब्रह्म सौ
 जगत कहै श्यापुविन जानिते ॥
 २
 नगर गन्धर्व जैसे वादर में देखियत नीलता अकाश
 मांभ खाली को धरसु है ।
 जैसे सखा उड़ आगपर उसा निशि लागै जे वरी
 अंधेरे माउ सांप को भरसु है ॥
 कहै सुखदेव जैसे फटिक कौहा मानै लाल को
 अफार जानै जानत मरसु है ।
 रु पोसी समे तनि हैनीर लेखि रेरनि में ऐसे ब्रह्म
 चेतनी जाक गमरसु है ॥
 ३
 दसमा के दीने जैसे छोटा ज बड़ो सो लागै दूरित
 निहार बड़ो छोटेज लगतु है ।
 सो लग तुझे कांचकी धरनी मालनीर ओसो
 देखियत नीर माह कह कहु कांच सो बलतु है ॥
 नाउके चलत रुख तौरके चलत लागै वादरके
 टौरि मानौ चन्द्रमा भगतु है ।
 जैसे इन्द्रजाल भमया घको परे वा भासै तैस
 ब्रह्म चेतनि में भासत जगतु है ॥
 शिष्योवाच
 दोहा
 ब्रह्म नित्य चैतन्य है जगु अनित्य जड़ जानि ।
 उपादान क्यों करि भयो जड़ को चेतनि मानि ॥

गुरु उवाच

पपाङ्गल
 जो तुम देखे इ करि मानत ।
 देखी क्यों नहि ब्रह्म छि जानत ॥
 गुरु उवाच
 दोहा
 चेतनिते जड़ होति है जड़ते चेतनि होइ ।
 यह प्रत्यक्ष ही देखि कै संशे डारो खाइ ॥
 यह शरीर चैतन्य है ताते नछ जड़ होइ ।
 गोवर जड़ते प्रकट है गोवरीड़ा चिद सोई ॥
 शिष्योवाच
 यह तो जानी जो कहां उपादान को रोति ।
 अब निमित्त किहि भाति है सो कहियै करि प्रीति ॥
 गुरु उवाच
 साविवेद अरु सृष्टिकी धरे ग्रन्थ बढि जाइ ।
 ताते उपमा युगति सौ प्रकट देत समुझाइ ॥
 परज
 जैसे घट कारज को कारण कहत दोइ
 उपादान माटी श्री निमित्त सो कुह्यारु है ।
 ओसे पञ्चतत्त्व गुण तीन है
 जगत भयो आपहो तें जीय ईश आपु कर ताक है ॥
 माटी श्री कुह्यारु न्यारो एक कहे सो चुभाटी
 ताते और उपमा दें कीनी निरधारु है ।
 जगका निमित्त उपादान जैसे मकरी है
 तैसे भाति जगको विचारु ब्रह्म चारु है ॥
 दोहा
 कारण करि कछा यहु तो सो व्योहार ।
 कार्य कारण ते परे सोहै तत्त्व विचार ॥
 चिद विलास पर पञ्चयहु दुष्कर वे कृपाल ।
 मिसरि इन्द्रापनि मिले करई होइ दयाल ॥
 कुचलिया
 जैसे घटको घट कहै माटी कारण होइ ।
 घट त्वजि माटी के कहै काको कारण होइ ॥

काको कारण होइ ब्रह्म जग ऐसे जानो ।
जगुतजि ब्रह्मो कहे प्रकट निरुपाधि वखानो ॥
पिता पुत्रते होइ पुत्र बिन पिता न जैसे ।
कारणो मिटि जाइ तजि कारजके जैसे ॥

कवित

चेतनि कहो जो कहं और जड़ होई कोज सत्य
कहोतो जो असत्य और लहिये ।
आनन्दस्वरूप कहो जो तोसो कजानी कहं एक तो
कहो जो दूजो रूप और गहिये ॥
तो कहो अखण्ड खण्ड और होई ककु चल और
होई हो अचल यहि कहिये ।
जानि यह वेद सुखदेव नेति नेति कहे आप को
विचारि चुपचाप आपु रहिये ॥

२

अज तो कहो जो देखा और को जन्म कहं अक्रिया
कहो जो करतात्र और लहिये ।
कुटवत कहो जो लोहारवत होई कोज अन्त और
होई तो अनन्त याहि कहिये ॥
स्वप्रकाश कहो जो देखे या और होई कोज
ब्रह्म तो कहो जो जीव ईस और गहिये ।
गुंगो गुर पाइ ताको स्वद न वखानो जाइ आपु
ही को पाइ चुपचाप आप रहिये ॥

दीक्षा

ऐसो ब्रह्मस्वरूप है ताहि आत्मा जानि ।
अब तेरे प्रारब्ध नहिं कछु लेहु जनि मानि ॥

कवित

सोवतमें जैसे देह धरिके मनोरथके पूत भयो
काहको खिलायो तिन वारते ।
शिशुता निवारो पुनि वेद पढ़ि चारों
सबु कुटम सन्हारो काका बाबा अरु सारते ॥
कहे सुखदेव नाति पूत उपजाए भांति भांतिन
सिखाए पाप पुण्य पूरे पारते ।
जागत ही जैसे सब सपनेके जठे जाने जगतको
जाने तैसे आत्मा विचारते ॥

२

सोवत सपन मांहदेन जैसे राजा होत लागत मे
लेसु ताको रचक न लेखिये ।
जैसे का वांछ पूतकी सराइके यो राहनेको जाके
ताके जाइ करिछट अवरखिये ॥
कहे सुखदेव जैसे गंगमको गुफा माभ फूले
अरविन्द ताको सौरभ विसेखिये ।
तैसे भूठ जगतमें भूठा ई सरौर जानि ताके किए
काम कैसे साचे करि देखिये ॥

दीक्षा

ब्रह्म रूप तबही हतो जब हो अज्ञ सुभाइ ।
ज्ञान भए कछु और नहिं वहै ब्रह्म अब भाइ ॥
भूले को समुभावही वेद और गुरु लोग ।
करत औरते और नहिं क्रियाकर्मके योग ॥

कवित

कोरीदसचले गाऊं वोच नदो उतराउ पेदि
पेरिके सुनाई पारभृत आयो रहै ।
जोई गने सोई आपु को न गने लेखे एकु बड़ो
अवरखे महा सोक उपजायो है ॥
और जब पंथी आए न्यारे न्यारे समुभाए गनि के
दसोनत ए तब सुख पायो है ।
ऐसे सुखदेव गुरुदेव उपदेश करि तेरोई स्वरूप
फेरि तोहि समुभायो है ॥

शिष्योवाच

दीक्षा

जानो तुम परसादते अपनो आत्मस्वरूप ।
अनुभव कासी कहत है औ विज्ञान अनूप ॥

गुरु उवाच

चिद सद जानत ब्रह्मको तोसो कहिये ज्ञान ।
ब्रह्म आपुही को लखे सो विज्ञान निदान ॥
जैसे नर अज्ञानते कहत देह सां आपु ।
त्योही जब ब्रह्म लखे ज्ञान हृदय आलापु ॥

शिष्योवाच

युक्त भयो संसे गयो लख्यो आपनो रूप ।
रही देत व्योहार सो का विधि कटे अनप ॥

गुरु उवाच

भाति भाति भोगनि करे करे दङ्गवर होइ ।
पापपुण्य लागी नहीं वोजन आदिक जोइ ॥

अष्टावक्रवच

दोहा

जीव ईस अरु जगतको आतम जाने जोइ ।
मनमे आवे त्यो रहै ताहि न रोके कोइ ॥

गीता

लोक वेदकी रीति सब ज्ञानो कोने जाइ ।
जाके धर्म हि देखिके जगत धर्म ठहराइ ॥
जैसे तब अज्ञान में चलत हतो जेहि रीति ।
ते सो विधि अवह चलो तजो कर्म सो प्रीति ॥

कवित

नर सो जनमु न धरसु वेद शासन सो विप्र सो
न वर्षा ओसर आश्रम न गेहो सो ।
कर्मसो न प्रवल न अवल विषे लम्पट सो जग सो
भरमु न भूलेया और नेहो सो ॥
गुरसो न वेद उपचार न विचार ऐसो अज्ञ सो न
रोगो औ असज्जमो न एहो सो ।
मन सो उपासक सुवृद्धि सो न सङ्गो और देह सो
न व्योहरा न देव और देहो सो ॥

दोहा

यहु वेदान्तक को कछो सब सिद्धान्त विचार ।
सबे समुभिये आपु में सब में आपु निहार ॥
लाख लाख दृष्ट्या कके ग्रन्थनि माह विचार ।
सो मतु बहुसङ्केप सो भाषा मांइ निहार ॥
जैसे साम्हरि लोनके डेरसेल स्थम जोइ ।
सोने पैसा एक भरि काजु आपनो होइ ॥
हतो जो कहु पक जानिवे जानि चुको तु सोइ ।
और जु शास्त्रनिके मते भूलि न तिन तन जोइ ॥

श्रीगीताथां

यज्ञादिक कर्मनि करे देवलोक फलभोग ।
मोमांसा मुक्ति हि कहे दुःखको भयो त्रियोग ॥

पातञ्जल

जीव इस न्यारो कहे पा ताजल सब काल ।
दहे कालसनि जोग करि कहे मुक्ति सुख लाल ॥

सांख्य

प्रकृति पुरुष अरु तत्त्वको जाके होई विवेकु ।
यहै मुक्ति सांख्यकहे ज्ञान भए सबु एकु ॥
वैशेषिक अरु न्याय पुनि दोऊ तार्किक जान ।
भेदवाद इनके सदा मुक्ति पदार्थ ज्ञान ॥
आगम तन्त्र पुराण पुनि पञ्चरात्र मत जानि ।
खेचि आपने पंथको डारत जगमें आनि ॥
औरजु शास्त्रनिके मते परे जगतमें जाइ ।
कल्पनि लो छटे नहीं जन्ममृत्युते भाइ ॥
अपने मत यह वेद शिर सधते उत्तम जान ।
ताही को विश्वास करि भूल और मतिमान ॥
सठ धूरत अरु नास्तिकनि वेद विरोधो और ।
तिन्हि न भूलि सुनाईये पहु यतु मति सिरमोर ॥
जिनके उर हरि भक्ति है औ गुरु भक्तिनिदान ।
तिनके आगे षोलिबी यहु उपदेश निधान ॥
वेद सुमतिके वचन को कछो सुखदेव विलास ॥

इति श्रीअध्यायप्रकाश समाप्त ।

—*—

श्रीहरि गुरु सच्चिदानन्द सत्यनाम
परब्रह्मणे नमः ।

अथ आनापचारो

दोहा रागिणी सारठ तोनसी साठ ताल
एकताला—पादि

धिन् त्रक् धिकना धिं धिं धाग तुका किटि
कबौर संवत पदरहसे और चांमो मगहकी योगबन ।
अगहन सुदो एकादशो मिले पवन सो पवन ॥

सम्बत वारे सौ ओर पाचमे ग्यनी कौयो विचार ।
काशी माहि प्रकट भयो शब्द कछो टक सार ॥
कबीर सबखे हिलीये सबसे मिलिये सब
का लीजिए नाम ।

हांजो हांजी सबसे किजिये बसिये अपने गांव ॥
श्रीव वन्दगी कहत है सत्य नाम गुरु कृपाल ।
शिवकु आशेष करत है गुरु की दया ततकाल ॥
अन्य उपासन राम बिनु अगरे सुएसी रीति ।
भूसे पर को लोपने अरु वारुकीभोति ॥
कबीर हरिका नाम ले तज माया विष कोज ।
वारम्बार न पाइये मनुष जन्मको भोज ॥
कबीर ओठ कण्ठ हाले नहीं नहिं जिभ्या
नाम उचार ।

गुप्त बसु को जो लखे सोई हंस हमार ॥
कबीर शून्य मण्डलमें घर किया वाजा शब्द रसाल ।
रोम रोम दोपक भया प्रकट्या दीनदयाल ॥
कबीर उतते कोउ न आई जाको पूछ धाय ।
इत ते सब कोई जातहैं भार लदाय लदाय ॥
कबीर नाना वाणो बोलतो सो कित गयो विलाय ।
यह संशय भाजे नहो कौन कहे समुभाय ॥
कबीर चलो चलो सब कहत है मोहि अंसी ओर ।
साहवसे परचे नहो बैठोगे केह ठोर ॥
कबीर विरह जो ठूठे वीजको वीज विरहके माहि ।
जीव ज्यो टट ब्रह्मको ब्रह्मजोके आहि ॥
कबीर रामनामकी लूट है लूट सके तो लूट ।
फिर पाछे पछतायोगी जन्म प्राण जाएंगे छूट ॥

सोरठ

कबीर जैसे माया मनरमे तैसे रामरमाय ।
तारा मण्डल छेदिके तब अमरापुर जाय ॥

२

काल करे सो आज कर आज करे सो अब ।
पलमें परलय होयगो बहुर करेगो कब ॥

१
कबीर हरिसंग शोतल तू भया मिटो मोह
तन ताप ।
निशि वासर सुखनिधि लई तब अन्तर प्रकट न
आप ॥

४
कबीर पाला हरि नामका अन्तर लेहु लगाय ।
रोम रोममे रहा और अमल कहा खाय ॥

५
कबीर आगेके दिन पाछे गए हरि सो कियो न हेत ।
अब पछताए होतका चिड़िया युगगई खेत ॥

६
कबीर आगे आगे दवजरे पीछे हरोया होय ।
बलिहारो वा वृक्षकी जड़ काटे फल होय ॥

साहाना

सुनतहो गुंगा भया चाखतहो मर जाय ।
एक अचंभा देखिये मरा कालको खाय ॥

२
करि ज्ञान लागो तिसकी तिसबिन रहो न जाय ।
आन मिलावोत सकुति देखे ति सजाय ॥

३
कबीर कबीर क्या करे सोधो आप शरीर ।
पांचो इन्द्रो वस करो सोई जास कबीर ॥

सोरठ—चौताला

निरञ्जन निराकार पार ब्रह्म परमेश्वर ।
परमात्मा एकहो अनेक होय व्याप रहो सब संसार ॥
अलख ज्योति अविनाशो आदिनाथ अगोचर
अनादि तुहो एक करतार ॥
तुहो पवन तुहो पारती तुही धरनी तुही अकाश
तोही ते सकल व्यवहार ॥

तुही ब्रह्मा तुहो विष्णु तुही शिव तुही शक्ति सुरनर
मुनि ज्ञानी ध्याने तुहो सर्वसार ॥

२

अलख लखी नहीं जापरी मनमें कहां कानो
 वहांवास ।
 घट घट पूरण व्याप रहोहै जल स्थल ओ आकाश ॥
 एक अनेक अनेक एक ही न न्यानी नाभीन प्रकाशत
 ज्यो चन्द्रसूजो प्रतिविम्ब आकाश ॥
 कहां गावत ककतु तरुणई प्रखात काल कालके
 हातहै मोहि भरसानाहि ।
 यह तन काचाकंभ है विनसि जाय छिन माहि ॥
 घरो पहरकी सुध नहीं करे कालका साज ।
 काल अचानक मारि है ज्यो तीतरकी वाज ॥
 खोजत खोजत जुग गए भया जो गुण सगुण ।
 हरत हरत ना भिली न बहारी कवावे चुन ॥
 अबक विहुरे कव मिलोगे कहा धरोगी पराव ।
 शिरसो पो सन्मुख लरो अवजिन करो कुदाव ॥
 जलकी शोभा कमल है दलकी शोभा कील ।
 धनकी शोभा धर्म है कुलकी शोभा शील ॥
 हद हद करते सब गये वे हद गीय ।
 वे हदके में दान मे रहे कबोरा सोय ॥
 उठो कबोरा कहा सोवे जागनको कर चोप ।
 एकदम ह्रिदे लाल है गिन गिन हरि को सोप ॥
 राम रहस कबोराका पाया दास ज्यो सूर ।
 बाकोरहा सो तुलसी गाया अब गावे सो कूर ॥
 सुभा कबोरा काहेको भजले कृष्ण मुरार ।
 एकदिन सोना होयगा सोलेवे गोड़ पसार ॥
 चलतो चकी देखके दिया कबोरा रोय ।
 दोपर भीतर आयक साबित रहान कोय ॥
 आशपाश में ओपड़े निपट पीसान होइ ।
 तसो के लोसे लग रहे वांको पीसे न कोइ ॥
 खटो पकड़े जो रहे ताहि न छूवे कोय ।
 रामनाम के नाम सो भव सो पार जो होय ॥
 राम नामकी खेती किया काट लिया सब सूर ।
 तुलसीदास ले विनीया ज्यो प्रकाशे चन्द्र ओसर ॥

मिश्रीका एक पर्वत चूटी पहुंचो जाय ।
 चांच भरके बहलोया पर्वत लीया न जाय ॥
 कहनी बड़ी वीरको गोरख बड़ो ज्ञान ।
 रहनी बड़ि जू दतकी शङ्कर बड़ा ध्यान ॥
 चन्द्रग्रहणका शील गो सब सखो दीनो सोन ।
 एक सखो लि गदी एसो को सखो कारण कोन ॥
 त्रिषावन्तकी मीन भई गई ताल ततकाल ।
 सर सूखे आनन्द भयो कारण कोन जमाल ॥
 वायस राह भुजंग हरि लिखत त्रिया ततकाल ।
 लिखत मिटावत फिरि लिखत कारणकोन जमाल ॥
 आजु अभावस सदनिघर शशि भीतर नन्दलाल ।
 वीचे पड़िवा पर गई कारण कोन जमाल ॥
 तनकी तनक सराय मो कन इन पायो चैन ।
 खासन गारा कूचका वाजत है दिन रेन ॥
 बाबुल तब क्यों बरजीया अन लागो मेरे नेह ।
 रोम रोममें भोजया अब कैसे छुटे सनेह ॥
 बाबुल वेद बोलाइया पकर देखई वाह ।
 भूला वेद न जानता कलक कलेजि माह ॥
 वे गये बाबुल वे गए नदी किनार किनार ।
 आपतो पार उतरि गए हमहि छाड़ि मभधार ॥
 वाबुल गांठ नदी जीए समभ समभके सुधार ।
 ओर गांठ सब खुलत जहां लग गई लगन अपार ॥
 प्रेम गांठ सरके नहीं सरके शिरके साथ ।
 शिर तो विकारि नाम को धरे शिरे ले हाथ ॥
 शिरके हरिके मिल गया चरणकमलसे आन ।
 शिरके साटे हर मिले तोर वस्ता जान ॥
 गया तो घरहे प्रेम का ओर खाला धरनाह ।
 सोर उतारे भूधये जब वेठो घर माह ॥
 जाओ वेदध आपने हभरो आह न लेह ।
 भेदाढी दुःख बरहकी तु क्या दाव देह ॥
 मन सुरासूली चढो यह विधनी सीस ।
 प्रेम सुखा ली जानके कोई मत करयेरौ रीस ॥
 करम लिखो सोई लिखि चढ़ो मोन करवार ।

इस इस जितना देत है साजन ऊपर वार ॥
जात जातको पाहुनो जात जात पै जाय ।
साहव जीत अजात तरे सब घरत झा समाय ॥
काम विहा पारस पवर अषे वृक्ष किएवार ।
तुलसी हरिकी भक्ति बिन गृह तब भले उजार ॥

दोहा

आशको देशकि लालीता दे दरठो लवजाय ।
इसन कुड़ोया करण सु जागाकि दरा कलन
ले आए ॥

२

चिकड़ अग लगी भरडाठे सानु विरहे न फुकज
लाए ।

कका लीया रदौ खारसाले पुष ताया रगवाए ॥
नाम सुनीया रन चूड़ीया नानि बाहुयार ।
किन सी लावो दोस्तो सत्र जग चल नेहार ॥

तियाला

घायल घूमि दर खेड़लो हुट पङ्क दे जिन ।
बरही लागी प्रेमकी जब निकसे तब चेन ॥
प्रेम नगरमें आयके चलटी देखो जाल ।
घायल चुन चुन मारिके खूनो फिरे खुशाल ॥
क्याशा याहो क्या लेखन नहीं क्या नहीं
लिख ले हार ।

क्या हमसे अबगुन भया क्या मन दिए विसार ॥
कर कपि लेखनी डिगे अङ्क अङ्क अकुलाय ।
सुधिआवे छाती फटे पाती लिखी न जाय ॥
पन घटका गजवो खड़ी पियाकीन ।
जब पीय न छुटत छुटत दोनो छुटे उत पटका
इत प्राण ॥

लाल सुपारी प्रेमरस तन चूना मन प्राण ।
तुम बिन धीन जावने अब लागी मही जान ॥
पृथिवी एक डग करे दरीया करे छाड़े हाथ ।
पर्वत काड़े एचके सोई गए कालके साथ ॥
मेरु उड़ावनहार जी धरा करे कर बीच ।

सो भट खाए मशक सिस कान कट लता नीच ॥
मेरी मेरी कर सबही गए मिटो नहो कबु भाय ॥
काम क्रोध मद लोभ वश फिर फिर कानटि पाय ॥

कवीर शब्दसार लभ—एकताला

तुम तो भले विराजो जी ।
भोड़ीसा जगन्नाथपुरीमें भले विराजो जी ॥
आप अछे विराजो जी ।
बलभद्र जुटे मैया ठाकुर भले विराजो जी ॥
कबकी छोड़ी मथुरानगरौ कबकी छोड़ी काशी ।
भाड़खण्ड में जाय विराजे वृन्दावनके वासी ॥

(ठाकुर बलभद्र)

हापरमें छोड़ी मथुरा नगीचे ता छोड़ी काशी ।
हारकापुरीमें ओपाश धारे श्रीगोकुलके वासी ॥

(ठाकुर बलभद्र)

अठा दे नाले चौकी लाग जी त्री जानन पावे ।
गुदड़ीयाका भाट लागी नागानट वजावे ॥
वङ्गालिन बेटी परम सुन्दरी उसका नैन सलोना ।
गोविन्दकी गति गोविन्द जाने करे वङ्गालिन टोना ॥
सोलह गजकी सारी पहरि जिसकी लाल किनारी ।
ससुर जेठको लाज न करे आधोटाङ्क उघारो ॥
ओड़िया मांगि खीचड़ी बंगाली मांगि भात ।
साध मांगि दरशन महाप्रसाद ॥

तुम तो भले विराजो जी ।

गली गली में नारीयर फेलौ घर घर ठाकुरबारो ।
मारकण्डे वट कण्ठ रेहनी गांसि धुववारो ॥
नीलचक्र पर ध्वजा विराजे मस्तक सोई होरा ।
ठाकुर पागे दासो नाचे गावे दास कवीरा ॥

राग—भैरव

आपहो धरमधारी ठाकुर आपहो खेल खेलारो है ।
तबु तो असमानाए जमो दुलो चाड़ारो है ॥
चांद सूरय दोउ मसलत बनाए तैरो कुदरत
न्यारी है ॥

चागावरी

राम नामकी चोपड़ माड़ी पांला जुग संसारी है ।
आकी गोटीपकी घर आए सोई सुघर खेलारी है ॥

२

हम जोते तो पीको पावे पी जोते हम ला राहै ।
सात पांचकी कची पचि सोनेहु लोले डारी है ॥
हादश वाट आटारै राहे पड़ा ओरचा लेहे भारी है ।
छके पछे लूट जाय तबजब नही रहे संभारी है ॥
आके उपर साहव राजी जिसका जगत भिखारी है ॥

चागावरी सोरठ—पकी

हम नहे इस्क मस्ताना हमन कोहे शटारी क्या ।
रहे अजादया जग सोह ननद दुनोया से यारी क्या ॥
अहो हो हो अहा हा हा अहो हो हो अहा हा हा ।
खलक सब नाम अपने सो बहुतके शिर पटक तोहे ॥
हम न गुरु ज्ञान आमल हे हम नको नामदारी क्या ॥

(अहो...)

जा जन विकुरे पीयासे सो भटकते दर विदर फिरते ।
हामारा या रह हममें हमन को इन्तजारी क्या ॥

(अहो...)

न पल विकुरे पिया हमसे न विकुरे हम पिया रे ।
सजन से प्रीत लागी है उनो को बिकरारी क्या ॥

(अहो...)

कबीरा साह है वांका रहे सत शब्दका वाका सो
चालना राहना जु कहे हम न शिर वोभभारी क्या ॥

रेखता—गाथार

समझ मन सोच अब कीना गुरुसे पूछ नहिं लीना ।
कहां से रङ्ग यह आया न कोई मोहि बतलाया ॥
है कोई गांवका वासी देखावो ख्याल परकाशी ।
बतावे गएवका घेरा मिटावे पलकका फेरा ॥
सफत रग किन कही आवे बड़े कोई भागसे पावे ॥
सुरति यह रङ्गकी प्यारी पपोहो पो पिऊ पुकारी ।
न आवे हाथ यह करनी शिघारो जायके शरनी ॥
पिया जिन प्रेमका पानी सन्तजन लेहि पहचानी ।

कबहि यह मोहि न भूले विरह बेभोक ज्यों भूले ॥
चरण कवोर संतके धोवे सदा सुख अमृत जा पावे ।
यह धर्मदास बर मांगा सदा हरिचरणमें पागा ॥

सोरठ—यत्

सखी मोहि वाही देशको जाना जाको नाम न जान
ठिकान्म ।

जहां टूट जाय सब फंदा जादुबयां नहीं कहु धन्वा ।
जहां उगे नहिं शशिभाना ॥
जहां पीर पैगम्बर न देवा जहां रिषि मुनि
असुर न भेवा ।

जहां कुफर इसलामसमाना ॥
जहां जाना न कोई भावे जहां किरितन कोई गावे ।
जहां जाय कर फिर न आना ॥
जहां बपुराब्रन वमना जहां कुराम किताब न मुलना ।
जहां पूजा निमाज न ध्याना ॥
जहां अन्ध नहिं उजियारा जहां भूख न प्यास
जहारा हां पूजन आदि जमाना ॥

२

जहां आग न पवन नहिं पानो जहां मरत
जीव नहिं जानो ।

जहां जाय चट्ट परवाना ॥
जहां न कसर गणहो माना ।
जहां सोच पीया गलबाही तहां दूसरा नहीं
तही वाही जहां प्रेम सोहाग काना ॥

३

जहां नाद वेदध भावा जहां सफरी सगरी माया
जहां पीया रथो मोरा गोना ॥
जहां लागी प्रेमको बाड़ी जहां फूल गुलाबन बाड़ी ॥
जहां फूलो है मरुवा दीना ॥
जहां रङ्ग रूप नहिं रेखा किन नैन न साहव देखा ।
जहां पायो जीव अस्थाना ॥
जहां जात न पांत विवेका ।
सब घटमें एकही लेखा ।

जहाँ सब जग एकहि ठाना ॥
ब्रह्म सागर रङ्ग उजागर सच्चिदानन्द अमृत सागर
स्रष्टानन्द रङ्ग रङ्गाना ।

गो हंसा कीरो ने निवासा हो अमरपुर खासा ॥
भावे नही दिन तथा भावे नही राति ।
जागत पुरुष वसत बहु भाति हो ॥
सगे नही भूख तथा लगे नहि प्यासा ।
अमृत भोजन करो सुखवासा ॥
जात नहि पांत तथा वरण विवेका एकहि रूप
सकल घट देखा ।

साँख नही कान जहाँ रूप नरखा विन नेन तथा
साँख देखा ॥

नरनार नहि पशुपत्नी न सुरसुनी नाग न पेखा ।
नही श्वेत पित रङ्गराति नही काहुके वे साथे ॥
वह आपही अलख अलवेला कहि गुरु ताके
नहीं चेला ।

सागर रूप उजागर एका नाहो दूसर आप अलेखा ॥
कनाही—तिताला

साचे मनके मौता प्रसु तुम साचें ।
कब शिवरी काशो कर भाई कब पढ़ भाई गोता ।
जूठाबेर विश्वभर चाखोघरीन पलछिन बीता ॥
यज्ञ दान कब कियो नो धीया तोरथ जल कद पोता ।
बाँह पकड़ घर लीयो राम के मन हो के परतीता ॥
कव करमा वाई भोर सुमरके चोका सज्जम गोता ।
हो नन्दलाल गोपालके नित उठ खिचड़ी दीता ॥
साच समान और जग नाहो जुग जुग संत कहोता ।
कहे कबीर वसो घट जाके साच सकल जगजीता ॥

२

बोली राम पिंजरके सुभा ।
सोच विचार घटहो में देखो धंधा करत
सकल जगसुवा ।
बोली काल मन्तारी ले जायगी द्वार चले जैसे
ज्वारी का सुवा ।

अन्तसमय कोउ काम न आवे मरे कहत कुवा कुवा ॥
खारथके सब लोग बटाज धनसम्पत मे हुवा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधोसन्तनके सुख अमृत
रस चूवा ॥

खभाइच

भूठा जगत पसारो जो राम देख लोभाना ।
जो आया सो सबहो जायगो क्या राजा क्या राणा ॥
(जी राम)
दीपक देखके पतङ्ग लुभाना जल बलखाक समाभा
(जी राम दे)

काम क्रोध मद लोभ मोह वस निश दिन यहि
मनमाना (जी राम)
यह संसार मृगतिसना है नाहक भरम भुनाना ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो हरिके चरण चित
लाना (जी राम)

कान.डा—तिताला

कहा मागु कहु थिर न रहाई ।
यह जग देखत चलोके भाई ॥
एक लख पूत सवा लख नाती रावण घर दियो
न वाती ।
लह्या सा कोट समुद्रसी खाई ता रावनकी खबर
न पाई ॥
कहा मागु जो आया सो सबहो जायगे राजा
रङ्ग अमौर वादसाई ॥
कहे कबीर रहे नाम हरिका विन और न करी हे
सहाई ॥

कलिङ्ग—तिताला

कोइ सुनताहे गुरुज्ञानो गगनमें ।
अवाज होती भानो पहले आए नाद विन्दसे पाछे
जमाए पानी घट घट पूरन पूर रहाहै अलख
पुरुष निखानी ॥
वहाँसे आए पटालिखाय दृष्टा नाहि बुभानो ।
अमृत छोड़ विषे रस पोवे उलटे फास फसानो ॥
ज्यो कहु देखा नजरहो पेखा अजर अमर निशानो ।

कहे कबीर सुनो भाइ साधो यह अगम निगमकी
वानी ॥

भाटियाल—तिताला

चरखा देहो बनाय वठैया मोरो मितवारि ।
पानीसे पेदा कीयो रे नगर बसाए जाय ।
एक अचंभा अचजो म देखो सखी री डेटा
वाप ले जाय ॥

बाबारे एक व्याह कराय दे अक्का वर खोज ल्याय ।
ज्यो खोजे तब वर नाही मिले हमरा तुमरा ल्याय ॥
सासकसे ससुर कसे व्याह खसम ले जाय ।
एक तो वठैया ना रुसे जिन चरखा दए बनाय ॥
ज्यो यह चरखा लखे पड़ेगा आवा गमन मिट जाय ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो चरखा लखी न जाय ॥

आशावरी—तिताला

ज्ञानकी आंधी आई साधो ।
सबही उड़ाने भरम कीटटी रहत न माया वाधो ॥
दो चितके दोष खे भ गिराए मोह बलि ड़ाटाए गई ।
ब्रह्मा ज्ञान परी घर दुरमत हाड़ा फड़ा अमृत
वरषा मुक्ति जल बरषत पीए हरिस अधाई ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो ध्यानमान दोष आई ॥

एरी वाको भेद न जाने कोई ।
हालीके भीतर बहल चलत है हलमे खेती कोई ॥
हाथीने अङ्गुश वस कर लीनो शिर मारत है भोई ।
जिन पायो तिन नींदन आई भूखी परके सोई ॥
बहरो सुने दूरकी बातें अंधरे मासा पोई ।
दुखिया उमग उमग गुण गावे सुखियागए सबरोई ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो सबही सयानप खोई ॥

भाटियाल—रि.ताला

हमारे गुरु भूली कुराह वतावी सतगुरु तीन
छन्द ले गावे ।
छपरमेकी मरियो जङ्गलमेकी लकरो गङ्गरीयारी
वकरी वो वो वकरि लकरि मकरि ॥

वो जुलाहाकेरा ताना तंवोला केरा पान नामवाई
कारा नामवो नाम पानातामा ।
बनीयाके राहि गाभेसी केरा सिक्का मीहादेवका
लिगावो लिगां सिक्काहि गा ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो या सन्तनका मेला ।
यह वातका मरम जो जानि वहे गुरु हम चेला ॥

कलिर

कोन वध प्रीतम पाइये ।
गुरु रहि लगावो चंचलताइ छोड़ देइ धिरताई
ले पावो ॥

कलह कस्तपना मिटके चरणन चित लावो ।
अरध उरध विच वागहे जहां सुरत रमावो ॥
अष्टसिद्ध नवनिधमें तनहु न विलसावो ।
इड़ा पिङ्गला सुषुमना जहां ज्ञान दृष्टावो ।
कहे कबीर गगनमण्डलपै मोहे भुला भुलावो ॥

कलिर—तिताला

वङ्गला खूब बना इदवेश जामे नारायण बोले बोलीरे
साधो परमेश्वर बोले वङ्गला अजब वनाइदवेश
जामे ना ।
इस वङ्गलाके दश दरवाजा बीच पवनके खंभा ।
आवत जात कोई न देखा यह भा बड़ा अचंभा ॥
पांच तपकी भीत बनाई तीन गुणोके गारा ।
भरम अमरकी ज्ञान छवाई चिह्न न चेतनहारा ॥
पांच पचीस पातुरो नाचे मनुवा ताल बजावे ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो वृझे सो फल पावे ॥

२

हम न मही वमरीहै संसारा ।
हर मर हीतो हमहु मरसे हरण मरे तो हम काहे
सरे विचार ॥
हर हममे हम हरमे निशदिन अलख निरख
नहे निराकार ।
हरहि हम हम हरही दीयत सब जगव्याप रहो
करतार ॥

मरेंगे नहीं रहेंगे सदाही गुरु अमृतवचन
पीवे आधार ।

कहे कबीर मरेंगे सोई जा घटमें नाहीं हरि उचार ॥

२

गर जाने अमर मोरी काया एक कुषा
पाचों पनिहारी ।

पांचो सीचे अपनो वारी चौघट घाटकुषना
टेठ कुमलाय गई वो पांचो क्षारी ॥

सहस पाखरी एक शरीर तनमन भजली दास कबीर
अपने गुरुकी हो बलिहारी ॥

३

जमसे नाही उर आवे साहव याद रखु गावे ।
सुरत निरत काखी दुला मेरे दिल अर्धर दोड़ाउ ।
पुरुष प्रताप हाथ लेखइ सनमुख लड़के पाउ ॥
और सवक सवाके आकरमे हजुरी पार्जी ।
काम क्रोधकी गरदन मारु साहव राखु राजी ॥
कहे कबीर सुनो भाइ साधो विरला जाने कोई
जोरा परका हीरा साध सन्तनको सोस निवाउ ॥

सिन्धु—तिताला

क्यारे सोवे तू मोहनिशामें जागत नाहि कूच
नियराना ।

पहले नकारी अमरदवाजी दूजे बैन सुने नहि काना ॥
तीजिनैन दृष्ट नहीं आवे आइ पहुंचा परवाना ।
हाथी कूटे घोड़ा कूटे कुट गए यह महल खजाना ॥
भाई वन्धु पिता सब कूटे कूटे गए यह लोक जहाना ।
परी हे पुकार नगरकसबे मे रे यत लोग सबे अकुलाना ॥
पूरण अमरकी भई है तयारी छिनमें दीपक
भवन बुझाना ॥

रक्षा कीन करे नगरीके मालक सुखिया पेली पुराना ।
कहे कबीर यही गत सबकी भज मन पूरण
ब्रह्म अमाना ॥

कलिङ्ग—तिताला

राम रस ऐसा हैरे भाई ज्यो पीवे सो अमर होय जाई
आगे आगे दव जरे रे पोछि हरीया होय ।

बलिहारी व हृत्तकी जो जड़ काटे फल होय ॥

कुम्भ घटा विच जल उरघत है लल विच
कमलत होय ।

ज्ञान कथा विच मन्द रहत है विनगुरु ज्ञान न
बुझि कोय ॥

मैं घर जाहूं आपनोरे लीए सुरेड़ा हाथ ।

दूजे जाहूं तिस केरे जो पगे हमारे साथ ॥

२

घर जारे घर उवरेरे घर राखे घर जाय ।

एक अक्षभो ए सुनो रे मड़ा कालकू खाय ॥

नाम रसायन जो पीवे जाके घर खरसी सन होय ।
जखलमें जिम शिर दियोरे बहुर जनम नहिं दोय ॥

ज्यो रस पीयो नाम देवरे और पीयारे दास ।

पोवत कविरा ना छक्योरे और पीवनकी आस ॥

ध्रुव पीयो प्रह्लाद पीयो और विभीषण दास ।

हनूमान नारद पियो औ शुकमुनि वेदव्यास ॥

महादेव ब्रह्मा पियो सनकादिक आस ।

रुक्माङ्गद अम्बरीष पीयो सागर भयो वैकुण्ठे वास ॥

भट्टीयाल—तिताला

तेरी बनत बनत बन जाई हरि सीं लागा

रहु रे भाई ।

जा तन लगे सोई तन जाने दूजा क्या जानेरे भाई ॥

ऐसो ध्यान धरो घर भीतर आवा गमन मिटाई ।

वंकालागी वंकालागी लागी सदन कसाई ॥

धना भगत को ऐसी लागी तुं वामें गछनि पाई ।

सेनानी केवट लागी लागी मीरावाई ॥

वल्लभ बुधारे ऐसी लागी छाड़ि चले वादसाई ।

ध्रुव लागी प्रह्लादे लागी नारद वीण बजाई ॥

शिव सनकादिक लागि रहत है कवचं न पीवत

अवाई ।

इस नगरी में घायल घुमड़े धावन विसरे भाई ॥

सुरत निरतको कमठा कीनो अन्दर पड़ी लड़ाई ।

जलदी जलदी बजी नगारा फौज चले हरसाई ॥

सतगुरु बैठा खेत बतावे सूरकरे सराई ।
यमराज सों युद्ध मचावे वीर होय सो जाई ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हारो तो राम दुहाई ॥

अहोरी—तिताला

होय पीय पीय धुन होय अवरै नहोय रमण लागारे ।
अवरैण हर मन लागि ला पी पीया कहे भई वावरीरे ।
नैहर डारुषान अर नयन हर मन लागै पीया
सबहीके होय जो चुक चाहु सासुरे ॥
पीय कुरल सनेह सुख ठाटङ्गो हो रहरीरे जल भल
भई खाक जरत आगन असमन्तररे ।
दास कबीरके मङ्गलारे जाने विरला कोय जाने सो
पहचाने रे ।
तेरा कबीर उहा तनहो जाव कोई एसा होय
कोउ एसा होय अवरैने ॥

कलिङ्ग—तिताला

क्या नयना भूमकावे ठगनी क्या नयना भूमकावे रे ।
रुपा पहरके उपा देखावे सोना पहरके रिभावे ॥
गले बांधके तुलसीकी माला तीन लोक भरमावे ।
कटु वाठ मृदङ्ग यास्तीबुं काट मजीरा यट चुवाना
यत भेश पद्मनो मैङ्क ताल वजावे ॥
कमर बांधके गदहा नाचे ऊट विष्णुपद गावे ।
गदहाके शिर मोर बांधके नाचे बालम खोराट ॥
विरह चढ़ी मकली फल तोड़े मैङ्क चुन चुन खावे
भेश पदमनी मंगल गावे उठहो रीभ रीभावे ।
धरती वरधे अवर धावे अलख हि लख के जगावे ॥
रूप रेश रङ्ग नहि जाके सो नैनन दरसावे ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो यहो अचम्भा पावे ॥

२

राम नाम कहोरे मन होए गरभवास भक्तिके
कबुली अर क्वासो चत विकल शरीरा ।
आधो धरतेरे सुषोखेसाइ आधोमे रह गई पीरा ॥
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हरिके चरण मति धोरा ।

२

लभजो न सगर वाहसां पनीयाको गईलो त्वोरे ।
सगर दुलभ भई लोरे की हाथ कुट धोईए कुटकोई
नही वाते पुके सुन सखीयारे ॥
कजरा दई जरा बोलेरे विरहो ।
सात पांच सखी मिल चलली महातम सुन
सखीयारे ॥
उहो रे नैहरवा पोतम डोलैरेको ।
दासरे कबीर एक निरगुण गावे लगाए सुनावन
कवहं न यह जाग आय वरेको ॥

विहाग—तिताला

अस कोई नगर करे कोट बल्लोया मास विद्यायगा
धार अवरौया ।
भूस भए नाव विलारो खेवे नइया ॥
दादूर सीवे सरपर खवरिया ।
सुतल कुकरा कुनघट भूखे ॥
साहव टनघर चोरवाहो भूसे उलटि सिंह सायाल
स भजे ।
कबोराके पद कोई विरला बूझे ॥
देखहु रे गुरुग मस्ताना ।
इङ्गला पिङ्गला चमर डुलावे निशदिन सुख मन
करता निशाना ।
पछिम दिशाके खोल किवडोया गगन मन्दिर सहज
चलि जाना ॥
गुरु गोविन्दमें ध्यान लगेहै मगन होय पलटे वोराना ।
सुरत लगाय रहो घट भीतर छिनमे कबीर वेडा
पार लगाना ॥

कलिङ्ग—तिताला

ध्यान धर हरिजना रे जासोहंसा निर्मल होय ।
दिल दरियाव सुरत सेना ले मैल जो डारो धोय ।
कोई हरि जन उवरे रे सब जग लिया है माय ॥
असंख्य जनमें जोत विराजे रही नाथ घनघोर ।

चांद सुरजका मारग पाया सुख मन दोना जोर ॥
 आत्मसे परमात्म चिन्हा रही वासना मोरो ।
 डाल रात नील पैठ मूलमे जहां देखा तुहो ओरो
 स आदि अन्त जग तुहो
 रमरह्यो घट घटमे वास तुम विन ओर कह
 नहीं देखो कहै कबीर दास ।
 कहै कबीर सुनो भाइ साधो विरला जानै सोइ ।
 गुरु प्रताप साधको सङ्गत सतको खेतो वोइ ॥

धनाश्री—तिताना

वाबुल मोली हो हमारे मन कुड़ कु व्याह दई ।
 कुड़ भरासी कुड़ परसी कुड़ कुड़के भाई ॥
 कुड़े कुड़ विहावन आए कुड़ना मिले सगई ।
 भड़हा जर गए मांडी जर दुलहन भइ ॥
 अहवातो गांवके लोग देखन सभ आए ।
 नाचत चलत वराती कहै कबीर सुनो भाइ साधो
 यह पद है निरवानी ।
 जो यह पदको निन्दा करे ताको नरक निशानी ॥

कलिङ्ग

रस गया जागी जंगल कीना वासा हो ।
 काया नगरके दश दरवाजा पांच प्रधान छठो
 मन राजा ॥
 हाड़ जरे जैसे जङ्गल जड़ाके सजले जैसे धामकी
 फला जलवई ।
 भूपड़ी उड़न लागी खाक कहा गए हंस
 कहां रूप राख ॥
 कहै कबीर सुनो मेरे भाई हमको दो ताकों
 राम दुहाई ।

२

साधो रामनाम जपले चित मो धरे मन हरे हरे
 गुण भरे भई ॥
 दूढ़न निकसी कवि राइको भाई मोरे पुतवा पर
 किन जादु करे ।

होइ घर मेरा वे कबोराकि जाइ अरे
 दइ मारे वैठा घर सब खाई हरे ॥
 कोन मुदोया तोहो भरम भरमायो ठग ज्यो ठगो
 तोहो भरम भरमाई ।
 कबोरा का मरम न जाने कोई विना हरि मजन
 मुक्तई होई ॥

श्रीलक्ष्मणानन्द व्यासदेव रामसागरोद्भव सङ्गत-
 रागकल्पद्रुमे ज्ञानतत्त्वसागर ग्रन्थ आरम्भ ।
 प्रणम्य परमात्मनं सच्चिदानन्दमीश्वरम् ।
 ज्ञानतत्त्वसागरोऽयं कर्तुं रागसागरः ॥

अथ मन्दरदासकृत कवितादि कन्द ।

भैरव—चौताना इदमकन्द

मोज करो गुरुदेव दया करि शब्द सुनाय कछो
 हरि मेरो ।
 ज्यो रविके प्रकटे निशि जात सुदूरि कियो
 भ्रम भानि अंधिरो ॥
 कायक वानक मानसहु करि के गुरुदेव हि
 वन्दन मेरो ।
 सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल को हं
 नित चरो ॥

२

पूर्णब्रह्म विचार निरंतर कामन क्रोधन
 लोभन मो है ।
 श्रोत तुचा रसना अरु घ्राण सुदेखि कछू काई
 नयनन जो है ॥
 ज्ञानस्वरूप अनूप निरूपण जासु गिरा सुनि
 मो मन मो है ।
 सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल हि
 मो मन मो है ॥

१
धीरजयन्त अड़िमा जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान
गह्वो दृढ़ आदू ।
शील मन्तोष क्षमा जिनके घट लागि रघोसु
अनाहद नादू ॥
भेषन पच निरन्तर लक्ष जु और नहीं ककु
वादविवादू ।
ये सब लक्षण हैं जिन माहि सु सुन्दरके उर है
गुरु दादू ॥

४
भी जल में बहि जात उत जिन काटि लिये अपने
करि आदू ।
और सन्देह मिटाइ दियो सब काननि टेरि
सुनाइ कै नादू ॥
पूर्णब्रह्म प्रकाश कियो पुनि कुटि गयो यह
वाद विवादू ।
ऐसी कृपा जु करी हम उपर सुन्दरके उर है
गुरु दादू ॥

५
कोउक गोरस कौ गुरु थापत कोउक दत्त
दिगम्बर आदू ।
कोउक बंध कोउक भर घर कोउक धर कौ
राखत नादू ॥
कोउ कहे हरिदास हमारे जु यों करि ठानत
वाद विवादू ।
और तौ सन्त सबै सिर उपर सुन्दरके उर हैं
गुरु दादू ॥

विभास—चाताला
कोउ विभूति जटानखधारी कहे यह भेष
हमारो ही आदू ।
कोउक काम फराई फिरि पुनि कोउक सिङ्गी
बजावत नादू ॥
कोउक केश लूचाइ करै हत कोउक जङ्गम
कै शिव वादू ।

ये सब सुलि परे जितहीतित सुन्दरके उर हैं
गुरु दादू ॥

२
जोगी कहे गुरु जेनि कहे गुरु वोधि कहे गुरु
जङ्गम माने ।
भक्त कहे गुरु सञ्चासो कहे बनवासी कहे गुरु
और वखाने ॥
शेष कहे गुरु सोफि कहे गुरु याहिते सुन्दर
होत हराने ।
वाउ कहे गुरु वाहु कहे गुरु वहे गुरु सोई
सबे भ्रम माने ॥

३
सो गुरुदेवनिये न छिपे ककु सत्वर जो तम ताप
निवारो ।
इन्द्रिय देह मृषा करि जानत शीतलता समता
उर धारी ॥
व्यापक ब्रह्म विचार अखण्डित हैत उपाधि सधे
तिन टारो ।
शब्द सुनाई सन्देह मिटावत सुन्दर वा गुरुकी
बलिहारो ॥

४
है गुरु की उरध्यान हमारे ।
पूर्ण ब्रह्म बताइ दियो जिन एक अखण्डित
व्यापक सारे ।
रागर दोष करे अब कौन सौ जोई है मूल सो
ईश जुड़ारे ॥
संशय शोक मिट्यो मनकी सब तख विचार
कह्यो निरधारि ।
सुन्दर शुद्ध किये मल छोड़ लु है गुरु की उर
ध्यान हमारे ॥

५
यों कपड़ा दरजी गहि व्योतत काठही की
बढ़ई कसि आने ।

कचन कौं लु सुनार कैसे पुनि लोह कौ घाटल-
हारहि जाने ॥
पाहन कौं कसि खेत सिलावट चाक कुम्हार के
हाथ निपाने ।
तेसे ही शिष्य कैसे गुरुदेव लु सुन्दर दास
तबे मन माने ॥

ललित—तिताला

ऐसे गुरुदेवको हमारे लु प्रणाम है ।
शत्रु है न मित्र कोउ जाके सब है समान देह कौ
ममता छाड़े आत्माही राम है ॥
औरहु उपाधि जाके कबहु न देखियत सुखके
ससुद्र मै रहत आठो जाम है ॥
रिद्धि और सिद्धि जा के हाथ जोरि भागै
खड़ी सुन्दर कहत ताके सबही गुलाम है ॥
अधिक प्रशंसा हम कैसे करि कहि सकै ऐसे
गुरुदेव कौ हमारे लु प्रणाम है ॥

चीताला

ज्ञानकी प्रकाश जाके अन्धकार भयो नाश देह
अभिमान जिन त्यजो जानि सारधी ।
सोई सुखसागर वैराग जो जाके दैन सुनत
बिलात है मनको विकार धी ॥
अगम अगाध अति कोऊनहिं जानै गति आत्माकी
अनुभव अधिक अपारधी ।
ऐसी गुरुदेव वन्दनीक तिहुं लोक माहि सुन्दर
विराजमान शोभित उदारधी ॥
को

सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बात है ।
काहू सों न रोष तोष काहू सों न राग दोष काहू
सों न बैरभाव काहूकी न घात है ।
काहू सो न बकवाद काहू सों है न विषाद काहू
सों न सङ्ग न कोऊ पक्षपात है ॥
काहूसो न दृष्ट बैन काहूसो न लैन दैन ब्रह्मकी
विचार कहु और न सुहात है ।

सुन्दर कहत सोई ईसनकी महाईस सोई गुरुदेव
जाके दूसरी न बात है ॥

चीताला

सिष्य पलटे सो सत गुरु जानिये ।
लोहे कौं लु पारस पखान हू पलट खेत कचन
हुवत होत जगत मै प्रमाणिये ।
द्रुमकी जो चंदनहु पलटे लगाइ वास आपके
समान ताके शीतलता आनिये ॥
कीट कौं जौ भृंगहुं पलटि के करत भृङ्ग सोई
उड़ि जाइ ताकी अचरज मानिये ।
सुन्दर कहत यह सगरी प्रसिद्ध बाग सद्य सिष्य
पलटे सो सत गुरु जानिये ॥

२

गुरु विन ज्ञान नाहीं गुरु विन ध्यान नाहीं गुरु
विन आत्म विचार न लहत है ।
गुरु विन डेम नाहिं गुरु विन प्रीति नाहिं गुरु विन
शोलहु सन्तोष न गहत है ॥
गुरु विन प्यास नाहिं बुद्धिकी प्रकाश नाहिं
भ्रमहु को नाश नाहिं संशयई रहत है ।
गुरु विन बाढ़ नाहिं कोड़ा विन हाट नाहिं सुन्दर
प्रकट लोक वेद यों कहत है ।

असेया बलावल—चीताला

पढ़े कै न दैठे पाश अक्षर न वाचि सके विनहो
पढ़े सै कैसे आवत है फारसी ।
जौहरीके मिले विनु पारष न जाने कोउ हाथ
नग लिये फिरै संशय नहिं टारसी ॥
वैदहु मिल्थो न कोउ बूटो कौ बतारै देत भेद
विनु पाये वाके औषध है छारसी ।
सुन्दर कहत मूरख रंचक न देखो जाइ गुरु विन
ज्ञान जौ अंधेरे माहि पारसी ॥

चीताला

गुरु के प्रसाद बुद्धि उत्तम दशा कौ अहे गुरुकी
प्रसाद भवदुःख विसराइये ।

गुरुके प्रसाद प्रेमप्रीतिहु अधिक बाढ़े गुरुके प्रसाद
 रामनाम गुण गाइये ॥
 गुरुके प्रसाद सब योगकी सुगति जाने गुरुके प्रसाद
 शून्य में समाधि लाइये ।
 सुन्दर कहत गुरुदेव जो कृपाल हों हि तिनके प्रसाद
 तत्त्वज्ञान पुनि पाइये ॥

देवर्गिरि—चोताला

जग में न कोज हितकारो गुरुदेव सो ।
 बृद्धत भव सागर में आइ कै वंधावै धीर पारज
 लंघाय देत नामकौ जी खेव सो ॥
 परउपकारो सब जीवनके सारे काम कवहु न आवै
 जाके गुननिको छेव सो ।
 बेनउ सुनाइ भय भ्रम सब दूरि करे सुन्दर दिखाइ
 देत अलख अभेव सो
 औरज सनेहो हमनोके करि देखे सोधि जगमें
 न कोज हितकारो गुरुदेव सो ॥

चोताला

गुरु तात गुरु मात गुरु वन्धु निज गात गुरुदेव
 नखसिख सकल सम्बाधो है ।
 गुरु दिये दिव्य नयन गुरु दिये सुखवन गुरुदेव
 अत्रण देशवद उचाखो है ॥
 गुरु दिये हाथ पाव गुरु दिये सोसभाव गुरुदेव
 पिण्डमाहि प्राण आइ डाखो है ।
 सुन्दर कहत गुरुदेव जु कृपाल हों हि फेरि घा
 घटि करि मोहि निस्ताखो है ॥

२

कोज देत पुत्रधनै कोज देत बलघन कोज देत
 राजसाज देवरिषि सुन्यो है ।
 कोज देत यशमान कोज देत रिसभान कोज देत
 विद्यादान जगत में गुण्यो है ॥
 कोज देत रिद्धि सिद्धि कोज देत नवनिधि कोज
 देत और कछू ता ते सोस धुन्यो है ।
 सुन्दर कहत एक दियो जिन रामनाम गुरुसो
 उदार कोउ देख्यो है न सुन्यो है ॥

ककुभ—चोताला

गुरुके अनन्त गुण का पै कहे जात हैं ।
 भूमिहुंको रेणु कौतो संख्या कोज कहत है
 भारहु अठारहु द्रुम तिनके जो पात हैं ॥
 मेघनको संख्या सोज ऋषिन कही विचारि
 बुन्दनकी संख्या तेज आइके विलात हैं ।
 तारनको संख्या सोज कही है पुराण माहि
 रोमनिकी संख्या पुनि तितनेक गात हैं ।
 सुन्दर जहां लौ जत सबहो कौ आवै अनन्त गुरुके
 अनन्त गुण का पै कहे जात हैं ॥

२

गुरुको तौ महिमा अधिक है गोविन्द ते ।
 गोविन्दके किये जीव जात है रसातलकी गुरु
 उपदेशे सो तो छूटे यमफन्द ते ।
 गोविन्दके किये जीव वस परे कर्मनिके गुरुके
 निवाजे सोतो फिरत सुखन्द ते ॥
 गोविन्दके किये जीव बृद्धत भवसागर में सुन्दर
 कहत गुरु काढ़े दुःखदन्द ते ।
 औरउ कहालौं कछु सुख ते कहं बनाइ गुरुको
 तौ महिमा अधिक है गोविन्द ते ॥

३

ऐसी कौन भेट गुरुदेव आगें राखिये ।
 चिन्तामणि पारस कल्पतरु कामधेनु औरहु
 अनेक निधि बारि बारि नाखिये ।
 जोई कछू देखिये सो सकल विनाशवन्त बुद्धि में
 विचार करि वहु अभिलाखिये ॥
 तातें अब मन वच कर्म करि करजोरि सुन्दर कहत
 सोस मेलि दीन भाखिये ।
 बहुत प्रकार तीनों लोक सब सोधि हम ऐसो
 कौन भेट गुरुदेव आगें राखिये ॥

मनहरनकन्द

खट—तिनाला

कान गरातें कहा कान ऐसे होत मूढ़ मंनके गराते
 कहां नैन ऐसे पाइ है ।

नासिका गरातें कहां नासिका सुगन्ध लेत मुखके
 गरातें कहां मुख ऐसे गाढ़ है ॥
 हाथ कोमुते कहां हाथ ऐसो काम होत पांवके
 गरातें कहां पांव ऐसे धाढ़ है ।
 याहो ते विचार देखि सुन्दर कहत तोहि देहके
 गरातेंरे सो देह नही आढ़ है ॥

२

बार बार कछो तोहि साध्य धान कौन होहि
 ममतांकी पोढ़ सिर काहे कौ धरत है ।
 मेरो धन मेरो धाम मेरो सुत मेरो वाम मेरे पशु
 मेरो ग्राम भूष्यो फिरत है ॥
 तूता भयो बाबरो विकाइ गई बुद्धि तेरो ऐसो
 अन्धकूप गृह तामे क्यों परत है ।
 सुन्दर कहत तोहि नेकहु न आवे लाज काज कां
 विगारके अकाज क्या करत है ॥

३

तेरे तो कुपेच पखो गाढ़ मति घुरि गई ब्रह्मा आइ
 छोरे कौड़ कुटत न जबहं ।
 तेल सो भिजोइ करि चीथरा लपेट राखे कूकरको
 पूछ सुधी होइ नही तबहं ॥
 सास देत सीख बहुकोरो कौ गनत जात कहत
 कहत दिन बीत जात सबहं ।
 सुन्दर अज्ञान ऐसो छाड़ो नहि अभिमान निकसत
 प्राण लगि चेत्यो नहो कबहं ॥

४

वारु मांहि तेल नहि निकसत काइ विधि पाथर
 न भीजे बहु वरषत घन है ।
 पानीके मथे तें कछु घोव नहि पाइयत कूकसके
 कूटे नहि निकसत कन है ॥
 सून्य कौ सुठो भरे ते हाथन परत कछु ऊसरके
 बोये कहां उपजत धन है ।
 उपदेश ओषध कौन विधि लागे ताहि सुन्दर असाध
 रोग भयो जाके मन है ॥

५

बैरो घर माहि तेरे जानत सनेहो मेरे दारासुत
 वित तेरो खोसि खोसि खांछिगे ।
 श्रीरज कुटुम्ब लोक जूटे चहु ओरहो ते माठो मोठो
 वातें कहि तोसों लपटांछिगे ॥
 सङ्कट परेगो जब कोज नहि तेरो तब अतिही
 कठिन वाकी बेरि हट जांछिगे ।
 सुन्दर कहत तातें भूठोई प्रपञ्च यह सुपनेको नाई
 सब देखत बिनांछिखे ॥

सिन्धु—तिताला

बालूके मन्दिर माहि बैठि रञ्जो थिर होइ राखत है
 जीवनकी आशा कोज दिनकी ।
 पल पल छोडत घटत जात घरो घरो विनशत वार
 कहां खबरि न छिनकी ॥
 करत उपाय भूठे लेन देन खान पान मूसा इत उत
 फिरे ताकि रहो मिनकी ।
 सुन्दर कहत मेरो मेरो करि भूष्यो सठ चञ्चल
 चपल माया भई किन किनकी ॥

२

अवण ले जाइ करि नाद के ले डारे पास नैना
 ले जाइ करि रूप वश कखो है ।
 नासिका ले जाइ करि बहुत सुधावे फूल रसना
 ले जाइ करि स्वाद मन दुखो है ॥
 चरम ले जाइ करि नारो सौं स्पर्श करे सुन्दर
 कोउक साधु ठगन तें लखो है ।
 कामठग क्रोधठग लोभठग मोहठग ठगनिको
 नगरो मौ जीव आइ पखो है ॥

३

पायो है मनुष्य देह ओसर बन्या है आइ ऐसो देह
 बार बार कही कहां पाइ है ।
 भूष्यो के बार तू अक्के सयानो हाउ रतन अमोल
 यह काहेकी ठगाइ है ॥

ससुक्ति विचार देखि ठगनि को सङ्ग पाय
ठगवाजी देखि कहुं मन न डुलार है ।
सुन्दर कहत तोहि अब सावधान होहि हरि की
भजन करि हरि मै समाह है ॥

महादेव वामदेव ऋषभ कपिल देव व्यासदेव
शुकहुं जयदेव नाम देव जू ।

रामानन्द सुखानन्द कहिये अनन्तानन्द
सुरसुरानन्द हुं कै आनन्द अछेव जू ॥

वैदास कबीरदास सोभादास पोपादास धनादासहु
कै दास भावही की टेव जू ।

सुन्दर सकल सन्त प्रकट जगत माहि तैसे गुरु दादू
दास लागे हरिसेव जू ॥

गुरुदेव सर्बीपर अधिक विराजमान गुरुदेव सब
हीतै अधिक गरिष्ठ हैं ।

गुरुदेव दत्तात्रय नारद शुकानि मुनि गुरुदेव
ज्ञानघन प्रकट वसिष्ठ हैं ॥

गुरुदेव परम आनन्दमय देखियत गुरुदेव
बरबरियान हु बरिष्ठ हैं ।

सुन्दर कहत कहू महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे सिर इष्ट हैं ॥

जीगी जैन जङ्गम सध्यासी बनवासी वोधी और
कोज भेष पद्य सब भ्रम भान्यु है ।

तापस ऋषीश्वर मुनीश्वर कवीश्वर हु सबनि की मत
देखि तत्त्व पहिचान्यु है ॥

वेदसार तन्त्रसार स्मृतिपुराणसार ग्रन्थनिकी
सार सोई हृदय माहि आन्यु है ।

सुन्दर कहत कहू महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे मन मान्यु है ॥

जीतै है जू काम क्रोध लोभ मोह दूरि किये
और सब गुणन की मद जिन भानु है ।

उपजै न कोज ताप सोतल सुभावजाकीं सबही
मौ समता सन्तोष उर आनु है ॥
काहू सी न राग दोष देत सबही कीं पोष जीवत ही
पायो मोष एक आहू जानु है ।
सुन्दर कहत कहू महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे मन मानु है ॥

रागिणी रामकली—भूपताल

उपदेश चितावनी हंसालहन्द

राम हरि राम हरि बोल सुवा ।
तो सही चतुर तू जान प्रवीण अति परे जिन
पिच्छरे मोहकूवा ॥

पाइ उत्तम जन्म खाइ ले चपल मन गाइ
गोविन्द गुण जोत जूवा ।

आपही आप अज्ञान नलिनी बंधी विना प्रभु
विसुख कै बार मूवा ॥

दास सुन्दर कहै परमपद तौ लखै राम हरि
राम हरि बोल सूवा ।

हकतू हकतू बोख तोता ।
न फस प्रैतान की आपनि कैद करि क्यों दुनी मै
परा खाइ गोता ।

है गुनागारभी गुनहही करत है खायगा
मार तब फिरै रोता ॥

जिन तुझे खाक सौं अजब पैदा किया तू उसै
क्यों फरामोश होता ।

दास सुन्दर कहै शरम तबही रहै हकतू हकतू
बोल तोता ॥

भापताल

भी तुही भी तुही बोल तूती ।
आवकी वद ओज्द पैदा किया नयन सुख
नासिका कर संजूती ।

ख्याल ऐसा करै हवी लीए फिरै जागि करि
देख क्या करै सुती ।

सुखिष्ठ सुख समको काम ते क्या किया वैगि
दे याद करि मरि निपूती ।
दास सुन्दर कहै सब सुख तो लहै भी तुही भी
तुही बोल तूती ॥

राक तू राकतू बोल मैना ।
भवल उस्तादकी कदमकी खाक हो इहि
रसबुगजार सब छोड़ फेंगा ।
पार दिखदार है माहि तू याद करि है तुभी
पास तू देख मैना ॥
जान का जान है जिन्दका जिन्द है सुख न कहु
समुझ टैना ।
दास सुन्दर कहै सकल घटमें रहै राक तू राकतू
बोल मैना ॥

घरी घरी घटत खोजत जात छिन छिन भीगतही
गिरि जात माटोको सो ठेल है ।
सुकतिके हारे पाइ सावधान क्यों न होइ बार बार
चढ़त न त्रिया को सो तेल है ॥
कार से सुकत हरि भजन अखण्ड नर याही में
अन्तर परैया में ब्रह्म मेल है ।
मनुष्य जन्म यह जीत भावै हार अब सुन्दर कहत
यामे सुभा को सो खेल है ॥

देखतही देखत बुढ़ापो दौर आयी है ।
यीवन की गयो राज और सब भयो साज आपनी
दुहाई फेरि दमामो बजायो है ॥
ककुटि हथियार लिये नयननि की ढाल दिये
खेत बार भये ता को तम्बुसो तनायो है ।
दग्ध गये सुमानो दरवान दूर किये जीगरी परी
सु और विछोना विछायो है ॥
सौस कार कम्पत सु सुन्दर निकाखी रिपु देख तहां
देखत बुढ़ापो दौर आयी है ॥

घोष तुषा कटि है लटकी कबहूँ पलटे
अजहुं रत वामी ।
दन्त सबे मुखके उखरी नखरी नगरा सुखरो
खर कामी ॥
कम्पत देह सनेह सुदम्पति जम्पति है धन कौं
निसि जामी ।
सुन्दर अजहूँ भीन तण्घी न भण्घी भगवन्त
सुलोमहरामी ॥

देह घटी पग भूमि मंडै नहि औ लठिया
पुनि हाथ लई जू ।
भांखि हुं नाक परे मुख तैं जल शीश हलै कटि
घींच नई जू ॥
ईश्वर कौं कबहूँ न सन्हारत दुःख परे तब पाइ
दई जू ।
सुन्दर तो हु विषय सुख वाञ्छत घोरे गये पै वागे
न गई जू ॥

पाइ अमीलक देह इहै नर क्यों न विचार करै
दिल अन्दर ।
काम हु क्रोध हु लोभहु मोहहु लूटत है दग्ध;
दिशि अन्दर ॥
तु अब वाञ्छत है सुरलोक हि कालहु पाइ परे
सुपुरन्दर ।
छाड़ि कुबुधि सुबुधि हृदय धरि पातम राम भजे
किन सुन्दर ॥

इन्द्रिजके सुख मानत है शठ याही ते बहुते
दुःख पावे ।
ज्यों जल में भूष मांस हि लोलत खाद वंधी
जल बाहिर आवे ॥
ज्यों कपि मूठि न छाड़त है रसनावय वन्द पखी
विलखावे ।

सुन्दर क्यों पहिले न सन्हारत जो गुड़ खाइ
सुकान विधावे ॥

८

कौन कुबुधि भई घट अन्तर तु अपनौ प्रभु सौं
मन चोरै ।

भूलि गयो विषया सुख मै शठ लालच लागि रह्यौ
अति थोरै ॥

जा कोउ कचन छार मिलावत लैकर पाथर
सौं नग फोरै ।

सुन्दर या नरदेह अमोलिक तीर लगी नवका
कित बोरै ॥

१०

देखत के नर शोभित है जैसे चाहि अनूपम
केरि कौ खंभा ।

भीतर तौ कहु सार नहीं पुनि जपर छालक
अन्बर दन्भा ॥

बोखत है पर नाहिं कहु सुधि ज्यो वयार ते
बाजत कुम्भा ।

रसि रहै कपि ज्यो छिन माहि सो याही तें
सुन्दर होत अचम्भा ॥

११

देखतके नर दीसत हैं पर लक्षण तो पशुके सबही हैं ।
बोखत चाखत पोवत खात सोवै घर मै बन जात
सही है ॥

प्रात गये रजनी फिर आवत सुन्दर यों नित
भार बह्यो है ।

और तौ लक्षण आई मिले सब एक कमी
सिर सींग नहीं है ॥

१२

प्रेत भयो कि पिशाच भयो कि निशाचर सौ
जित ही तित डोले ।

तू अपनी सुधि भूलि गयो सुख ते कहु औरकी
और ई बोले ॥

सोई उपाई करे तु मरे पचि बन्धन तौ कबई
नहि खोले ।

सुन्दर जानत मै हरि पावत सो तन नृश कियो
मति भोले ॥

१९

पेट तें बाहिर होत ही बालक भाइ के
मात पयोधर पीनो ।

मोह बन्धो दिनही दिन और तरुणभयो त्रिय
कौ रसभीनो ॥

पुत्र कलत्र बन्धो परिवार सु ऐसोही भांति गए
पन तोनो ।

सुन्दर राम कौ नाम विसारि सु आपही आप कौ
बन्धन कीनो ॥

१४

मात पिता सुत भाई बन्धो युवतीके कहे कहा
कान करे है ।

चोरो करे वटपारी करे किरषो बनिजो करि
पेट भरि है ॥

सौत सहे गिर घाम सहे कहे सुन्दर सो अम
माहि मरे है ।

वांछि रह्यो ममता सबसों नर ताहो ते पास
बन्धोई फिरि है ॥

सिन्धुभेरवी—तिताला

तेरे हो चातुरी तोहि ले बोरै ।
तू ठगके धन और कौ लावत तेरे हतों घर

औरई फोरि ।
आलि लगे सगरी जरि खाइ सु तू दमरो दमरो

करि जोरि ॥
हाकिमकौ डर नाहिं न सुभत सुन्दर एकहि

बार निचोरि ।
तू खरचे नहि आप हि खाइ सुतेरी ही चातुरी

तोहि ले बोरि ॥

मनहरनन्द—तिताला

करत प्रपञ्च इन पञ्चनके वस पखी परदारारत
भय आनत बुराई की ।
परधन हरे परजीवनकी करत घात मद्य मांस
खात खवलेस न भलाई की ॥
होईगो हिसाब तब मुखते न आवे ज्वाब सुन्दर
कहत लेखा लेत राई राई की ।
रक्षां तौ करे विलास यमको न माने दास यों मति
जानै उहां राज पोपाबाई की ॥

१

दुनिया कौं दोरता है भीरत कौ खोरता है
ओ लुद कौ मोरता है वटोई सराईका ।
सुरगी कौ मोसता है वकरो कौ रोसता है
गरौबों कौ खोसता है वे महर गार्ईका ॥
जुलम कौ करता है धनो सौ न डरता है
जो जगकौ भरता है खजाना बलाईका ।
होइगा हिसाब जब आवेगा न ज्वाब कछु सुन्दर
कहत गुनहगार है खुदाईका ॥

२

कर कर आयो जत्र खर खर काव्यों नाल भर भर
बाजो टोल घर घर जान्यो है ।
दर दर दोरी जाइ नर नर भागे दोन वरवक्त न
नैक भलसान्यो है ॥
सर सर सोधे धन तर तर तोरे पात जर जर काटत
अधिक मोह मान्यो है ।
फर फर फूखी फिरे डर डर पै न मूढ़ हर हर
इंसत न सुन्दर सकान्यो है ॥

३

जनम सिरानो जाइ भजन विमुख शठ काहे को
भवन कूप बिन मीच मरि है ।
गहत अविद्या जानि सुकनलनो ज्यों मूढ़ करम
विकार मत नहीं नेकु डरि है ॥
आपु हि तें जात अन्ध नरकन बार बार अजड़ न
सह मन माहि अब करि है ।

दुःखका समूह भवलीकि को न दास होइ सुन्दर
कहत नागनाथ नर परि है ॥

५

जग मग पग तजिसजि भजि राम नाम कामक्रोध
तनमन धेरि धेरि मारिये ।
भूठ मूठ हठ त्यागि जागि भागि सुनु पुनि गुनो
ज्ञान आन बार बार वारि डारिये ॥
गहि ताहि जाहि शेष ईस सीस सुरनर भीर बात,
हेत तात फेरि फेरि जारिये ।
सुन्दर दरद खोइ धोइ धोइ बार बार सार सङ्ग रङ्ग
अङ्ग हेरि हेरि धारिये ॥

दुमिलाकन्द

जोगीया—तिताला

हठयोग धरो तन जात भयो हरिनाम बिना
मुख धूरि परे ।
सठ सो गहरो छिन गात किया चरि चाम
दिना मुख पूरि जरि ॥
भट भोग परो गन खात धिया चरि काम कि ना
सुख भूरि मरे ।
मठरोग करो घन घात दिया परि राम बिना
दुःख दूरि करे ॥

जोगिया—यत्

गुरुज्ञान गहे अति होइ सुखी मन मोहत
जं तब काज सरे ।
धुरि ध्यान रहो पति खाइ सुखी रन लोह बजे तब
साज परे ॥
सुरतान बहे हति दोइ रखी तन छोइ सजे
अब आज मरी
पुर धान लहे मति होइ दुःखो जन बोहर
जं अब राज करे ॥

अंकाब चिनो प्रदण्ड

मन्दिर भाब बिलाहृत है गत्र अट दमामे दिना
इक दो है ।

तात ह मात त्रिया सुत बान्धव देखधौं पामर
होत विछोहै ॥
भूठ प्रपञ्च सौं राचि रञ्जो सठ काठकी पूतरो
ज्यो कपि मोहै ॥
मेरी ही मेरी करे नित सुन्दर पाखि सगै कहि
कीनको कोहै ॥

२

ये मेरे देख बिचारत है गज ये मेरे मन्दिर
ये मेरो याती ।
ये मेरे मात पिता पुनि बान्धव ये मेरे पूत सु
ये मेरे नाती ॥
ये मेरी कामिनी केलि करे नित ये मेरे सेवक है
दिन राती ।
सुन्दर वैसे हि छाड़ि गयो सब तेल जखौं बुझि
जात ज्यो बाती ॥

पाशावरी—तिताला

भूलि कहै नर मेरो ही मेरो ।
ते दिन चार विन्नाम लियो सठ तेरे कहै
कहु हूँ गई तेरी ॥
जैसेही बाप ददा गये छाड़ि सु तैसे ही तू त्यजि है
पल फेरी ।
मारि है काल चपेट अचानक होइ घरौ महि
राखकी टेरी ॥
सुन्दर ले न चले कहु सङ्ग सु भलि कहै नर
मेरी ही मेरो ॥

२

के यह देह जराइके छारि किया कि किया
कि किया कि किया है ।
के यह देह जिमी महि राखि दिया कि दिया
कि दिया कि दिया है ॥
के यह देह रहे दिन चारि जिया कि जिया
कि जिया कि जिया है ।
सुन्दर काल अचानक पाइ लिया कि लिया
कि लिया कि लिया है ॥

२

सम्त सदा उपदेश बतावत केय सबै सिर सेत भरा है ।
तु ममता अजह नहिं छाड़त मीतह, पाइ
सुन्दर धरा है ॥
आज कि काल चले उठि मूरख तेरेही देखत
के ते गए मर है ।
सुन्दर को नहि राम सन्हालत या जग मे कही
कीन रहै ॥

४

देह सनेह न छाड़त है नर जानत है नर है
धिर रेहा ।
छीजत जात चटै दिनही दिन दीसत है घटका
नित छेहा ॥
काल अचानक पाइ गहे कर ठाहि गिराइ
करे तन खेहा ।
सुन्दर जानि यहै निहचै धरि एक निरखन
सौं कर नेहा ॥

५

तू कहु धीर विचारत है नर तेरो विचार
धरोई रहै गो ।
कोटि उपाइ करे धनके हित भाग लिखो
तितभेई लहै गो ॥
भार के सांभ घरो पल सांभ सुकाल अचानक
पारि गहै गो ।
राम भजो न कियो कहु सुकत सुंदर यौं पछिताइ
कहै गो ॥

पाशावरी

भूलि गयो हरिनाम को तू शठ देखि धौं कीन
संयोग बन्यो है ।
काल अचानक पाइ गहे कर पेखि धौं भूठो
सो तानो तन्यो है ॥
छार करे सब चामको रूटे सुपादि को ऐसेही
जीव हन्यो है ।

कोऊ न होत सहार कौ छूटे अनादि कौ सुन्दर
यातें समग्री है ॥

वांति गढ़ पिछले सबहो दिन आवत हैं अगला
दिन नेरे ।

काल मझा बलवन्त बड़ो रिपु साधि रझा
सर ऊपर तेरे ॥

एक रोमहि मार गिरावत है लागत ताहि नही
कछु बेरे ॥

सुन्दर संत पुकारि कहै पुनिह तोहि कहौ
अब टेरे ॥

सोइ रझो कछा गाफिल होइ कौ तो शिर ऊपर
काल दहारे ॥

घामस घूमस लागि रझो शठ आइ अचानक
तोहि पछारे ।

ज्यों वन में मृग कूदत फांदत चित्रक ले नख सों
उर फारे ॥

सुन्दर काल डरे जिहि को डर ता प्रभुको कहि
कौन संभारे ।

चेतत क्यों न अचेतन अंधत काल सदा शिर
ऊपर गाजे ।

रोकि रहे गढ़के सब हारन तू तब कौन
गली ह्वै भाजे ॥

आइ अचानक केस गहे जब पाकरि के पुनि
तोहि भुला जे ।

सुन्दर कौन सहाय करे जब सुणही सुणह
भरा भर बाजे ॥

तू अति गाफिल होइ रझो शठ कुपुनर ज्यों
कछु सङ्ग न माने ।

नेकु नहीं तनमें अपने बल मत्त भयी विषया
सुख ठाने ॥

खेलत खात सबे दिन बीतत नीति अनोति
कछु नहीं जाने ।

सुन्दर केहरि काल महारिपु दस्त उपादि
कुम्भखल भाने ॥

मात पिता युवतो सुत वान्धव आइ मिच्छो
इनसे सम्बन्धा ।

स्वारथके अपने अपने सब हैं सो इहि जानत
नाहि न अन्धा ॥

कर्म विकर्म करै तिनके हित भार धरे नित
आपने कन्धा ।

अन्त विछोइ भयी सब सों पुनि याही तें सुन्दर है
जग धन्धा ॥

मनहरनकंद

चौताला

करत करत धन्ध कलुषो न जाने अन्ध आवत
निकट दिन आगि लो चपाक दे ।

जैसे बाज तीतरको दावत अचानक जैसे वक
मछरो कौ लौलत लपाक दे ॥

जैसे मधिकाको घात मरो करत आइ जैसे साप
मूषाको असत गपाक दे ।

चेतरे अचेत नर सुन्दर सम्हारि राम ऐसे तोहि
काल आइ लीहगो टपाक दे ॥

मेरो देइ मेरो गेइ मेरो परिवार सब मेरो धन
माल में तो बहु विधि भारा हों ।

मेरे सब सेवक हुकम के दपेटे माहि मेरो जुवती
कौ मैतो अधिक पियारो हों ॥

मेरो दंश ऊचो मेरे वाप ददा ऐसे भयो करत
बड़ाई में ता जग उजियारो हों ।

सुन्दर कहत मेरो मेरो करि जाये शठ ऐसे नही
जाने मैतो कालही को चरो हों ॥

दीरो

जबते जनम धरो तबहो ते भूलि पश्चा बालापन
माहि भूख्यो समुझो न तखमें ।
यीवन भयो है जब कामवस भयो तब युवतो सो
एकमेक भूलि रछो सुखमें ॥
पुत्रउ पौत्र भए भूख्यो तब मोह पाधि चिन्ता करि
करि भूख्यो जानि नही दुःख में ।
सुन्दर कहत शठ तीनो पन माहि भूख्यो भूख्यो जाइ
परो काल व्यालहाके मुखमें ॥

चौताना

उठत बैठत काल जागत सोवत काल चलत फिरत
काल काल उर धख्यो है ।
कहत सुनत काल खातरु पियत काल काल श्री
के गाल मांहि हर हर हख्यो है ॥
तात मात वन्धु काल सुत दारागृह काल सकल
कुटुम्ब काल काल जाल फख्यो है ।
सुन्दर कहत एक राम विनु सबै काल कालहीको
कत कियो अन्त काल गख्यो है ॥

२

जबते जनम लेत तबहो तें आयु घटे मायतो कहत
पूत मेरो बड़ो होत जात है ।
आज श्रीर काल श्रीर दिन दिन हात आर दीरो
दीरो फिरत खेलत अरु खात है ॥
बालापन वोख्यो जब यीवन लग्यो है आइ यीवनह
वोत बूढ़ो डोकरा दिखात है ।
सुन्दर कहत ऐसे देखतहो बुझि गयो तेल घट
गयो जैसे दीपक बुझात है ॥

गुजरी—चौताना

सब कोज ऐसे कहैं काल हम काटत हैं काल तो
अखण्ड नाश सबको करत है ।
जाके भय ब्रह्मा पुनि होत हैं कम्पमान जाके
भय खसुर सुर इन्द्र उ डरत है ॥
जाके भय शिव अरु शेष नाग तोनो लोक कोज
कल्प बोते लोगस उ परत है ।

सुन्दर कहत नर गर्व क्या गुमान करे तू तो शठ
एकई पलक में मरत है ॥
काल सो न बलवन्त कोज नहि देखियत सबको
करत अन्तकाल महा जोर है ।
कालहो को डर सुनि भाख्यो मूसा पैगम्बर जहां
जहां जाइ तहां तहां वाकी गार है ॥
काल है भयानक भयभीत सब कोए लोक खग
मर्त पाताल में कालहो को सोर है ।
सुन्दर काल को काल एक ब्रह्म है अखण्ड वासो
काल डरे जोई चख्यो उह वोर है ॥

२

वरषा भए तै जैसे बोलत भंभोरी सुर खण्डन
परत कहैं नेकह न जानिए ।
जैसे पूंगो बाजत अखण्ड सुर होत पुनि ताडु मं न
अन्तर अनेक राग जानिए ॥
जैसे कोई गुड़ो को चढ़ावत गगन माहि ताडु
कीतो ध्वनि सुनि तैसेहो वखानिए ।
सुन्दर कहत ऐसे काल को प्रचण्ड वेग राति दिन
चख्यो जाहि अचरज मानिए ॥

२

माया जोरि जोरि नर राखत जतन कर कहत है
एकदिन मेरे काम आइ है ।
तोहि तो मरत कछु वार न लागै शठ देखत हो
देखत बबूला सो विलाइ है ॥
धन तो धरोई रहै चलत न कौड़ो गड़े रोतोई
हाथन जैसे आया तैसे जाइ है ।
करिले सुकत यह विरिया न आवै फेरि सुन्दर कहत
पुनि पोके पछिताइ है ॥

४

बाबरोसो भयो फिरे बाबरोहा बात करे बाबरे
जो देत वाया लागत वीरानो है ।
माया को उपाय जाने मायाको चातुर ठाने
माया में मगन अति माया लपटानो है ॥

यौवनको मदमातो गिनत न कोऊ नातो काम वस
कामिनीके हाथ न विकानो है ।

अतिहो भयो विहाल स्रभत न माथे काल सुन्दर
कहत ऐसी और का दिवानो है ॥

भूठो धन भूठो धाम भूठो कुल भूठो काम भूठो
देह भूठो नाम धरि के बुलायो है ।

भूठो तात भूठो मात भूठो सुत टारा भ्रात
भूठो हित मान भूठो भूठे मन लायो है ॥

भूठो लेन भूठो देन भूठे मुख बोलैवेन भूठे भूठे
करे फेल भूठेहोको धायो है ।

भूठेहा मै राते भयो भूठेहो मै पचि गयो सुन्दर
कहत सांच कबड़ न आयो है ॥

चीतारा

भूठे हाथी भूठे घोड़ा भूठे आगे भूठा दौरा भूठा
बन्धा भूठा छारा भूठा राजारानी है ।

भूठो काया भूठो माया भूठे भूठे धन्दा लाया
भूठा सुवा भूठा जाया भूठो याको वानो है ॥

भूठा सावे भूठा जागे भूठाभूठे भूठा भागे
भूठा पीछे भूठा आगे भूठे भूठो मानो है ।

भूठो लोया भूठा दोया भूठा खाया भूठा पीया
भूठा सौदा भूठे कोया ऐसा भूठा प्रानो है ॥

२

भूठ सौ बह्यो है लाल ताहो ते असन काल काल
विकराल व्याल सवही को खान है ।

नदीको प्रवाह चब्यो जात है समुद्र माहि तेसे
जग कालहीके मुखमें समात है ॥

देह सौ समत्व ताते कानका भय नानन है ज्ञान
उपजी ते वह कालज बिलात है ।

सुन्दर कहत परब्रह्म है सदा अखण्ड आदि अन्त
मध्य एकसो ठहरात है ॥

३दवहंद

चीतारा

काल उपावत काल खुवावत काल मिलावत है
गहि माटी ।

काल हलावत काल चलावत काल सिखावत है
सब पाटो ॥

काल बुलावत काल भुलावत काल सुलावत है
वन घाटी ।

सुन्दर काल मिटे तवहो पुनि ब्रह्म विचार पड़े
जब पाटो ॥

देह आत्मा विकीर

३दवहंद

बोलत हो सु कहां गयो पङ्गी ।
बे अचना रसना सुख वैसेहो वैसेहो नासिका

वैसेहो संखी ।

बे कर बे पग बे सब हार सु बे नख सोख हैं
रोम असंखी ॥

बंसेहो देह परो पुनि दौमत एक विना सब
लागत खंखी ।

सुन्दर कोऊ न जान सको यह बोलत हो सु कहां
गयो पङ्गी ॥

चीतारा

खेल गयो एक खेल सो ख्यालो ।
बोलत चालत पोवत खात सौचतहै हुमको

जैसे माली ।

लेतहु देतहु देखत रोभत तोरत तान बजावन तालो ॥
जामहि क्रम्य विक्रम्य किये सब है यह देह परो

सब ठाली ॥

सुन्दर सो कतह नहि दोखत खेल गयो एक खेल
सा ख्यालो ॥

२

मात पिता युवतो सुत वाग्धव लागत है सबको
अति प्यारो ।

लोक कुटुम्ब रोख हित राखत जोर नहीं हमते
कहुं न्यारो ॥

देह सनेह तहां नगि जानहु बालत है मुख
शब्द उचारो ।

सुन्दर चेतन शक्ति गई जब वेग कहैं घर मांहि
निकारो ॥

२

रूप भली जबही लागि दीसत जी लागि बोलत
चाहत भागै ॥

पीवत खात सुने अरु देखत सोइ रहै उठिकै
पुनि जागै ॥

मान पिता भैया मिलि बैठत प्यार करै युवती
गल लागै ॥

सुन्दर चेतन शक्ति गई जब देखत ताहि सबै
डर भागै ॥

चोतारा

मनहरन कंद

कौन भांति करतार कियो है शरीर यह पावककं
मध्य देखो पानी की जमावनी ।

नासिका अवन नैन वदन रसन बैन हाथ पांव
अङ्ग नख सिख की बनावनी ।

अजब अनूप रूप अमक दमकज सुन्दर है शोभित
अति अधिक सुहावनी ॥

जाह्ये छिन चेतन शक्ति जब लीन होइ ताही
छिन लगत सबनकी भयावनी ॥

२

सुतका की पिण्ड होत ताहि मै युगति भई
नासिका नयन मुख अवन बनाये हैं ।

सौम हाथ पांव अरु अङ्गली विराजमान अङ्गलीके
आगै पुनि नखज लगाये हैं ॥

पेट पीठ छार्ता कण्ठ चिबुक अधर गाल दसन
रसन बहु वचन सुहाये हैं ।

सुन्दर कहत जब चेतनाशक्ति गई वही देह
जाति बारि छार करि आयें हैं ॥

२

देह तो प्रकट है ज्यो की त्योही देखियत नैनके
भरोखे माहि भांकत न देखिये ।

नाकके भरोखे माहि नेक न सुवास लेत कानके
भरोखे माहि सुनत न लेखिये ॥

मुखके भरोखे मैन वचन उचार होत जीभहु कौ
पट्रस खाद न विशिषिये ।

सुन्दर कहत कोज कौन विधि जाने ताहि कारो
पीरो काह्न द्वार जातो ह न पेखिये ॥

४

माय ती पुकारि छाती कूट कूट रोवत है बापहु
कहत मेरो नन्दन कहां गयो ।

भैयाह कहत मेरी वांह आज टूटि गई बहन
कहत मेरो बोर दुःख है दयो ॥

कामिनी कहत मेरो सोस शिरताज कहां उन
ततकाल हाथ मै साधोरा है लयो ।

सुन्दर कहत ताहि कोज नहि जानि सके
बोलत हुतो सुयह छिन मै कहां गयो ॥

५

रज अरु बीरजकी प्रथम संयोग भयो चेतनाशक्ति
तब कौन विधि आई है ।

कोज एक कहै वीज मधहो कियो प्रवेश किनह
तो पञ्चमास पीछे कै सुनाई है ॥

देह की वियोग जब देखतही होइ गयो तब
कोज कही कहां जाइ कै समाई है ।

पण्डित ऋषोश्वर तपीश्वर मुनीश्वरहु सुन्दर कहत
इह किनह न पाई है ॥

६

तवही लौं जत सब होत हैं विविधि भांति जब
लगि घटमाहि चेतन प्रकाश है ।

देहके असक्त भये क्रिया सब थकि जाति जब लगि
स्वास चलै तब लगि आस है ॥

स्वासहु थकी है जब रोवन लगे है तब सब
कोज कहैं यह भयो घट नास है ।

काह्न नहीं देखो किहिं ओर कौन कहां गयो
सुन्दर कहत यह बहोई तमास है ॥

देह तो स्वरूप जीलो तीलो है अरूप माहि सब
कोउ आदर करत सनमान है ।
टेढ़ी पांग वांधि बार बारही मरोरे मोछ बांहज
सकोरे अति धरत गुमान है ॥
देस देसही के लोग आइ कै हजूर होहि बैठ
कै तखत पे कहावै सुलतान है ।
सुन्दर कहत जब चेतनाशक्ति गई वही देह
ताकि कोउ मानत न आन है ॥

दृष्टाको अङ्ग—अनुभवदृष्ट

दंभी टोपी—चीताला

नयननि कि पलही पल में छिन आध घरी
घटका लु गई है ।
याम गयो युग याम गयो पुनि सांभ गई
तब राति भई है ॥
आज गई अरु काल्हि गई परसों तरसों कहु
धीर ठई है ।
सुन्दर ऐसही आजु गई दृष्ट्या दिनही दिन
होत नई है ॥

२

कमही कमकी विललात फिरि शठ याचत है
जनही जनकी ।
तनही तनकी अति सोच करे नर खात रहे
अनही अनकी ॥
मनही मनकी दृष्ट्या न सिटी पुनि धावत है
धनही धनकी ।
छिनही छिन सुन्दर आयु घटी कबहू न गया
बनही बनकी ॥

३

जो दस बीस पचास भए शत हो हि हजारन
लाख मगैगी ।
कोटि अरब खरब असंख्य पृथिविपति होनकी
चाह जगैगी ॥

स्वर्ग पाताल कौ राज करौ दृष्ट्या अधिको अति
भागि लगैगी ।
सुन्दर एक सन्तोष विना शठ तेरी तो भूख न
क्योंहू भगैगी ॥

४

लाख करोर अरब्वनि नील पद्मनि है
तहां लख खाटी ।
जो रही जोर भण्डार भरे सब धीरही सु जमी
तर डाटी ॥
तौहु न तोहि सन्तोष भयो शठ सुन्दर तै दृष्ट्या
नहि काटी ।
सुभत नाहि न काल सदा शिर मारि है धाप
मिलाइ है माटी ॥

५

भूख लिए दशहं दिश दीरत ताहि तै तू कबहू
न अघै है ।
भूख भण्डार भरे नही कैसेज जो धन मेरु
कुवेर ली पैहै ॥
तू अब आगे हि हाथ पसारत ताहो तै हाथ
कछ नहि ऐहै ।
सुन्दर क्यों न सन्तोष करे नर खातही खात
कितोइक खैहै ॥

सारङ्ग—चीताला

भूख नचावत रहू हि राजहि भूख नचाइ के
विश्व विगोई ।
भूख नचावै इन्द्र सुरासुर धीर अनेक जहां
लगि जोई ॥
भूख नचावै है अध जरध तीनहुं लोक गये
कहा कोई ।
सुन्दर जाई तहां दुःखही दुःख आन विना न काहं
सुख होई ॥

६

पेट पसारि दियो जितही तित तै यह भूख
कितौ एक धापो ।

और न छार कछु नही आवत मैं बहु भांति भली
विधि मापी ॥
देखत देह भयो सब जोरन तू नित नृतन
आहि अद्यापी ।
सुन्दर तोहि सदा समुभावत है तूया अजहं
नहि धापी ॥

१

तीनहुं लोक अहार कियो फिर सात समुद्र
पियो सब पानो ॥
और जहां तहां ताकत डोलत काढ़त आंखि
डरावत प्रानो ।
दांत दिखावत जोभ हलावत याहो ते मैं यह
डाइन जानो ।
सुन्दर खात भए कितने दिन है तूया अजहं न
अधानी ॥

४

पांच पाताल परै गयो निकसो सीस गयो
असमान अघोरो ।
हाथ दशों दिशकों पसरे पुनि पेट भरे न
समुद्र सुमेरो ॥
तिनहु लोक लिये मुख भीतर आंखहु कान बंधे
चहुं फेरो ।
सुन्दर देह धख्यो अति दोरध है तूया कहु
छेहन तेरो ॥

५

वाद वृथा भटके निशि वासर दूरि कियो
कबहू नहि धोषा ।
तू हतियारिनि पापनि कोढ़िनि सांच कहीं मति
मानहि रोषा ॥
तोहि मिले तब ते भयो वन्धन तू मरि है
तबही है मोषा ।
सुन्दर और कहा कहीं तोहि है तूया
अब तो करि तोषा ॥

६

क्यों जगमाहि फिरि भूख मारत स्वारथ कौन
परै जूजिहं जोले ।
ज्यों हरिहाय गज नहिं मानत दूध दुहो कहु
सोपु ठटोले ॥
तू अति चञ्चल हाथ न आवत निकसो जाइ
नही सुख बोले ।
सुन्दर तोहि कछो वेर केतीक है तूया अब तू
मति डोले ॥

७

तू कोउ कान धरो नहि नैकहू बोलत बोलत
पेटहि पाक्यो ।
हैं कोउ बात बनाइ कहीं जब ते तब पौसतहो
सब फांक्यो ॥
केतिक थोस भए परमोदत तैं अब आगेहो
कों रथ हांक्यो ।
सुन्दर सीख गई सबही चलि है तूया कहि
कैं तोहि थाक्यो ॥

८

तू भरमाइ प्रदेश पठावत वादि वृथा मरि
जाइ अकाजा ।
ते सब लोक नचाए भली विधि भाखु किए
सब रंकव राजा ॥
फेरि न मोहिं देखावना तू सुख दूर हो दूर हो
भागरी जा जा ।
सुन्दर ताहि दुखाइ कहो अब है तूया तोहि
नैक न लाजा ॥

पेटकी अङ्ग—रन्ध्रवलयन्द

सारङ्ग—चीताला

पांव दिये चलने फिरने कहुं हाथ दिये हरि
छत्त करायो ।
कान दिये सुनिये हरिको यथ नयन दिये तिन
मार्ग दिखायो ॥

नाक दिया सुशोभित ता करि जोभ दई हरि का
गुण गायो ।
सुन्दर साज्ज दियो परमेश्वर पेट दियो परि
पाप लगायो ॥

कूप भरे अरु वापि भरे पुनि ताल भरे वरषा
ऋतु तीनो ।
काठो भरे घट माठ भरे घर हाट भरे सबहो
भरि लोनो ॥

खन्दक खार बुखार भरे परि पेट भरे न बड़ो
दर हीनो ।
सुन्दर रीतो ही रीतो रहै यह कोत खड़ा
परमेश्वर कीनो ॥

मनोहरकन्द—चोताला

काधी पेट चल्हा कीधी भाठो कीधी भार याहि
जोई कहु भोकिए सोई जर जात है ।
कीधी पेट थल कीधी बांझो कीधी सागर है जितो
जल परे तेनो सकल समात है ॥

कीधी पेट दैत्य कीधी भूत प्रेत राक्षस है
खांउ खांउ करे कहुं नैक न अघात है ।
सुन्दर कहत प्रभु कौन पाप लायी पेट जब ते
जनम लियो तब ही ते खात है ॥

विघ्न हु तो विघ्नहि करत अति बार बार तनमन
पुनि तनक न कबहुं अघायो है ।
घटत भरत क्योही घटोई सो रहत नित सिर
विराट में तो कहुव न खायो है ॥

देह दे कहत हि कहत जन्म बोख्यो पिण्ड
पिण्ड काजि निशिदिन ललचायो है ।
सुगदल गिलत गिलत तनहि टस होइ
सुन्दर कहत वपु कौन पाप लायो है ॥

काजो पेट काज कोतवालके अधीन होत कोतवाल
सो तो सरदार भागी लोन है ।

सरदार दोवानके पोछे लगा डोलै पुनि दोवानहु
जाइ पादशाह भागी दान है ॥
पादशाह कहे या खड़ा मुझे और दोजे पटही
पसारे नहि पेट वश कौन है ।
सुन्दर कहत प्रभु क्योहुं नहि पेट भरे एक पेट
काज एक एक को अधीन है ॥

मधमास—चोताला

तैं तो प्रभु दियो पेट जगत ननायो जिन
पेट काज घर घर हार हार फिखो है ।
पेट हीके लिए हाथ जोरि भागी ठाढ़ो होइ
जोई जोई कछो सोई सोई उन कख्या है ॥
पेट हीके लिए पुनि भेष शीत घाम सहै पेट होके
लिये जाइ रण माहि गब्यो है ।
सुन्दर कहत यह पेट सब किए भाण्ड
और गैल छूटि परी पेट गैल पखो है ॥

पेट सो न बली जाके भागी सब हार चले
राव अरु रहु एक पेट जीत लिये है ।
कोज बाघ मारत विदारत है कुस्त्र को
ऐसे शूरवीर पेटकाज प्राण दिये है ॥
यन्त्रमन्त्र साधत आराधत प्रमथान जाइ
पेट भागी डरत निडर ऐसे हिये है ।
देवता असुर भूत प्रेत तीनो लोक पुनि
सुन्दर कहत प्रभु पेट जंर किये है ॥

प्रात ही उठत जब पेट हो को चिन्ता तब
सब कोज जात हैं आपनि अहार को ।
कोज अन्न खात पुनि आमिष भखत कोज
कोज घास चरत चरत कोउ दार को ।
कोज मोती फल कोज वास रस पयपान कोज
पवन पीवत भरत पेट भार को ।

सुन्दर कहत प्रभु पेट ही भ्रमाए सब
 पेट तुम दियो है जगत होनवार कों ॥
 वरसंस—चौताला
 पेटके कारण जीव हते बहु पेट ही मांस भखे
 औ सुरापो ।
 पेट हि ले करि चोरी करावत पेट ही की
 गठरी ले कापो ॥
 पेट ही पाश गरे मह डारत पेट ही डारत
 कूपहु वापो ।
 सुन्दर काह को पेट दियो प्रभु पेट सो और
 नहीं कोउ पापी ॥
 २
 औरन कों प्रभु पेट दियो तुम तरे तो पेट कहं
 नहि दीसे ।
 ये भटकाय दिये दशहं दिश कोउक रांधत
 कोउक पोसे ॥
 पेटहीके हित दीरे फिरें सब खाये विना
 अंग ही अंग टीसे ।
 सुन्दर आप न खाहु न पीवहु कौन करे इन
 ऊपर रीसे ॥
 मनोहरकन्द—चौताला
 काह को काहके आगे जाइ के अधीन होइ
 दीन दीन वचन उचार मुख कहते ।
 जिनके तो मद अरु गर्व गुमान अति
 तिनके कठोर दैन कबहं न सहते ॥
 तुम्हारे ही भजन सो अधिक लय लीन अति
 सकल को त्यागि के एकान्त जाय गहते ।
 सुन्दर कहत यह तुमही लगायो पाप
 पेट न होतो तो प्रभु बैठ हम रहते ॥
 २
 पेटहीके वश रहू पेटहीके वश राजा पेटहीके
 वश और खान सुलतान है ।
 पेटहीके वश योगी जङ्गम सभ्यासी शेष
 पेटहीके वश वनवासी खात लन है ॥

पेटहीके वश ऋषि मुनि तपधारी सब
 पेटहीके वश सिद्ध साधक सुजान है ।
 सुन्दर कहत नहीं काहको गुमान रहू
 पेटहीके वश प्रभु सकल जहान है ॥
 चिन्ताको अह
 सारङ्ग—चौताला
 दोहु निचिन्त करे मति चिन्तहि चक्षु दई
 सोई चिन्त करेगो ।
 पांव पसारि पखी किन सो बहु पेट दियो सोई
 पेट भरेगो ॥
 जीव जिते जलके थलके पुनि पाहन में
 पहुंचाइ धरेगो ।
 भूखही भूख पुकारत है नर सुन्दर तू कहा
 भूख मरेगो ॥
 २
 धीरज धारि विचार निरन्तर तोहि रघो सो तो
 पापुहि ऐहै ।
 जितक भूख लगी घट प्राण हि तैतक तू अन
 पासहि पैहै ॥
 जो मनमें लुब्धा करि धावत तो तिहुं लोक न
 खात अघैहै ।
 सुन्दर तू मत शोच करे कहु चक्षु दई सोई
 चूनहु देहै ॥
 ३
 नेक न धीरज धारत है नर आतुर होइ दशों
 दिश धावै ।
 ज्यो पशु खेंच सुरावत वन्धन जो लगि नीर न
 आवहि आवै ॥
 जानत नाहि महामति मूरख जा घर द्वार
 धनी पहुचावै ।
 सुन्दर आपु कियो गढ़ भाजन सो भरि है
 मति शोच उपावै ॥
 ४
 भाजन आपु गढ़ी जिन ते भरि हैं भरि हैं
 भरि हैं भरि हैं ज ।

गावत है जिनके गुणको ठरि हैं ठरि हैं ठरि हैं
ठरि हैं जू ॥
सुन्दरदास सहाय सोई करि हैं करि हैं करि हैं
करि हैं जू ॥
आदिहु अन्तहु मध्य सदा हरि हैं हरि हैं
हरि हैं हरि हैं जू ॥

काहे को दौरत है दशहं दिश तू नर देख कियो
हरि जूको ।
बैठि रहे दुरिके मुख मूँटत घालिके दांत
खवाइ हैं टूको ॥
गर्भ धवै प्रतिपाल करी जिन होई रह्यो तब तू
जड़ मूको ।
सुन्दर क्यों विललात फिरे अब राख हृदय
विश्वास प्रभूको ॥

आ दिनते गर्भवास तज्यो नर आइ अहार लियो
तब ही को ।
खात ही खात भए इतने दिन जानत नाहिं
न भुञ्ज कहौको ॥
दौरत धावत पेट दिखावत तू शठ कीट सदा
अनहौ को ।
सुन्दर क्यों विश्वास न राखत सो प्रभु विश्वम्बर
सब हीको ॥

भीमपलाश—चाँताला

खेचर भूचर जे जलके चर
देत अहार चराच, पोषे ।
वे हरि जू सबको प्रतिपालत जो जिहि भांति
तिसी विधि तोषे ॥
तू अब क्यों विश्वास न राखत भूलत है कत
धोखे ही धोषे ।
तोहि तहां पहुँचाइ रहे प्रभु सुन्दर बैठि
रहै किन बोसे ॥

मनोहरकन्द—चाँताला

काहे को वपुरा भयो फिरत अज्ञानी नर तेरो
तो रिजक तेरे घर बैठे भाइ है ।
भावे तू सुमेर जाहि भावे जाहि मारु देश
जितनोक भाग लिखी तितनोक पाइ है ॥
कूप मांभ भरि भावे सागरके तीर भरि जितनोक
भाड़ी नीर तितनोही समाइ है ।
ताही तें मस्तोष करि सुन्दर विश्वास धरि जितनो
रथो है घट सोइ अमराइ है ॥

काहेकी फिरत नर दीन भयो घर घर देखियत
तेरो तो अहार एक सेर है ।
जाको देइ सागर में सुन्यो शत योजनको ताहु को
तो देत प्रभु यामों नहीं फेर है ॥
भूख्यो कोउ रहत न जानिये जगत माहि कीरी
अरु कुप्पर सपनही कीं देर है ।
सुन्दर कहत तू विश्वास क्यों न राखे शठ बार बार
समुभाइ कछो केती वेर है ॥

तेरे तो अधीरज तू आगिली ही चिन्ता करे
आज तो भखो है पेट काल्ह कैसी होइ है ।
भूखोई पुकारे अरु दिन उठि खातो जाइ अति ही
अज्ञानी जाकी मति गई खोइ है ॥
ताको नहिं जानि शठ जाको नाम विश्वम्बर
जहां तहां प्रकट सबन देत सोइ है ।
सुन्दर कहत तोहि वाको तो भरोसो नाहिं
एक विश्वास विना याहो भांति रोइ है ॥

देखि धों सकल विश्व भरत भरनहार चंचक
समान पुनि सबहो को देत है ।
कीट पशु पक्षी अजगर मत्स्य कच्छ पुनि उनके
न सोदा कोऊ न तो कहु खेत है ॥

पेट होके काज राति दिवस भ्रमत शठ में तो जान्यो
नीके करि तू तो कोउ प्रेत है ।
मनुष्य शरीर पाइ करत है हाय हाय सुन्दर कहत
नर तेरे सिर रेत है ॥

तू तो भयो बाबरो उतावरो फिरत अति प्रभुकी
विश्वास गहि काहे न रहत है ।
तोरो तोरि जो कहे सु भाइ है सहज माहि योंही
चिन्ता करि करि देह को दहत है ॥
जिन यह नख सिख साजिके सवारो तोहि अपने
किये को वह लाजको बहत है ।
काहेको अज्ञानी कहु सोच मन माहिं करे भूखो
तू कभो न रहे सुन्दर कहत है ॥

जगत में भाइ ते विसारो है जगतपति जगत कियो
है सोई जगत भरत है ।
तेरे चिन्ता निशिदिन और ही परो है भाइ
उद्यम अनेक भांति भांति के करत है ॥
इत उत जाइके कमाइ करि लाउ कहु नेक ह
अज्ञानी न धीरज धरत है ।
सुन्दर कहत एक प्रभुके विश्वास विनु वाद क्यों
हथा ही शठ पचिके मरत है ॥

देह तो मलिन अति बहुत विकार भरो ताहु
माहि जरा व्याधि सब दुःखरासी है ।
निद्राहुं पेट पीर कबहुं क सीस वांइ कबहुं क
आखि कान मुख में व्यथासी है ॥
औरहु अनेक रोग नख सिख पूरि रहे कबहुं क
श्वासा चले कबहुं क खांसी है ।
ऐसो या शरीर ताहि आपनो कै मानत है सुन्दर
कहत या में कौन सुखवासी है ॥

जा शरीर माहि तू अनेक सुख मानि रह्यो ताहि
तू विचार या में कौन बात भलि है ।

भेद मज्जा मांस रग रग माहिं रक्त पूरि पेटहु
पिटारोसी तामें ठौर ठौर मलि है ॥
हाड़निसो मुख बनो हाड़ हि के नेना नाक हाथ
पांव सोज सब हाड़ हीं की नलि है ।
सुन्दर कहत याही देखि जिन भूली कोउ भोतर
भङ्गार भरो ऊपर ते कलि है ॥

इन्दवधकन्द—चीताला

हाड़को पिप्पर चाम मढ़्यो सब माहिं भख्यो
मल मूल विकारा ।
थूक रु सार परे मुखते पुनि व्याधि बहे सब
धौरउहारा ॥
मांसको जीभ सो खाइ सबै कहु माहिंने ताको है
कौन विचारा ।
ऐसे शरीर में पैठिके सुन्दर कैसेके कौजिये
सोच अचारा ॥

मनोहरकन्द

मालकोश—चीताला

थूक रु सार भख्यो मुख दीसत आखि में गोड़रु
नाकमें सेढ़े ।
और हु हार मलीन रहे नित हाड़के मांसके
भोतर वेढ़े ॥
ऐसे शरीर में वास कियो तब राकसे दीशत
ब्राह्मण टेढ़े ।
सुन्दर गर्व कहा इतने पर काहे को तू नर
चालत टेढ़े ॥

जा दिन गर्भ संयोग भयो जब ता दिन बूंद
छिपाहुती ताहीं ।
हादश मास अधोमुख भूलत बूड़ि रह्यो पुनि
वो रस माहीं ॥
ता रज वीरजका यह देह सु तू अब चालत
देखत छाहीं ।
सुन्दर गर्व गुमान कहा सुनु आपनी आदि
विचारत नाहीं ॥

नारीनिन्द्याको अङ्ग

मनोहरकन्द—चोताला

कामिनी को देह मानो कहिये सघन वन वहां
कोउ जाइ सो तो भूलि कै परत है ।
कुञ्जर है गति कटि केहरि को भये जामें बेणी
कालोनागिनि भखन कौ धरत है ॥
कुच है पहार जहां कामचोर रहैं तहां साधिके
कटाक्षवाण प्राणको हरत है ।
सुन्दर कहत एक और डर अति तामे राक्षस वदन
खाउ खाउ हो करत है ॥

विष हीको भूमि माहिं विष हीके अङ्गुर भये नारि
विषवेलि बढी नखन में देखिये ।
विष हीके जर मूल विष हीके डार पात विष हीके
फल फूल लागी जु विसेखिये ॥
विष हीके तंतु पासा उरभ्रि गए आटो मारी सब
नर वृक्ष पर लपटी हो लेखिये ।
सुन्दर कहत कोऊ एक तरु वचि गए तिन कतो
कई लता लागी नहो पेखिये ॥

उदर में नरक नरक अधहारनिमें कुचनिमें
नरक नरक भरी छाती है ।
काष्ठमें नरक गाल चिबुक नरक शीव मुखमें नरक
जीभ सार हु चुचाती है ॥
शीर्ष में नरक कान नयन में नरक बहै हाथ पाउ
नख सिख नरक दिखाती है ।
सुन्दर कहत नारो नरकको कुण्ड यह नरक में
जाइ परै सो इनको पक्षपाती है ॥

कामिनीको अङ्ग अति मलिन महा अशुद्ध
रोम रोम मलिन मलिन सब हार है ।
हाड़ मांस मज्जा मीद चाम सों लपेट राखे
ठीर ठीर रक्तको भरी हो भण्डार है ॥

मूत्र पुरोष आंत एक मेंक मिलि रहो औरउ
उदर माहिं विविधि विकार है ।
सुन्दर कहत नारो नख शिख निन्दारूप ताहि जो
सराहे सो तो बड़ो ई गंवार है ॥

कण्डलिया

रसिक प्रिया रसमञ्जरो अरु मृङ्गारहि जानि ।
चतुर्धाई करि बहुन विधि विषय बनाई आनि ॥
विषय बनाई आनि लगत विषयनिका प्यारो ।
जाके मदन प्रसङ्ग सर है नख सिख नारो ॥
ज्यो रोगो भिष्टाव खाय रोग हि विस्तारो ।
सुन्दर यह गति होइ सुनो रसिक प्रियारो ॥

रसिक प्रियाको सुनत हो उपजं विविधि विकार ।
जो यामें चित देत है बहै होत नर खार ॥
वहै होत नर खार बार तो कहुवो न लागे ।
सुनत विषयको बात लहरि विष हीको जागे ॥
जो कोउ अंचत हुता लहो पुनि सेज विशाई ।
सुन्दर ऐसी जान सुनत है रसिक प्रिय भाई ॥

परनिन्द्याको अङ्ग

आपने न दोष देखे परके अवगुण पेखे दुष्टको
स्वभाव उठि निन्दार्ह करत है ।
जैसे काह मङ्गल सवारि राख्यो नीकै करि
कीरो तहां जाइ छिद्र दूढ़त फिरत है ॥
भोर हीते सांभ लागि सांभ हीते भोर लागि
सुन्दर कहत दिन ऐसे ही भरत है ।
पाउके तरेको तौ न सूझे लागि मूरखको और सों
कहत शिर ऊपर वरत है ॥

रदनकन्द—चोताला

घात अनेक रहै उर अन्तर दुष्ट कहे मुखते
अति मोठी ।
कोटत पीटत व्याघ्र हो ज्यो नित ताकत है
पुनि ताहीको पोठी ॥

ऊपर तै छिरकै जल आनि सुहेठ लगावत
 जारि अंगीठो ।
 यामहि कूर कछु मति जानहुं सुन्दर आपनी
 आंखिन दीठो ॥
 आपने काज संवारनके हित औरको काज
 बिगारत जाई ।
 आपनो कारज होइ न होउ बुरो करि और को
 डारत भाई ॥
 आप हु खोवत और हु खोवत खोइ दुखं घर
 देत बहाई ।
 सुन्दर देखत ही बनि आवत दुष्ट करै नहीं
 कौन बुराई ॥
 ज्यों नर पोषत है निज देह हि अन्न विनास
 करै तिहि बारा ।
 ज्यों अहि और मनुष्य न काटत वाही नहीं कछु
 होइ अहारा ॥
 ज्यों पुनि पावक जारि सबै कछु आपहु नाश भयो
 निरधारा ।
 ज्यों यह सुन्दर दुष्ट स्वभाव ही जानि तजो किन
 तीन प्रकारा ॥
 सो पड़से सुनही कछु ताल कवीछु लगे सुभलो
 करि मानो ।
 सिंह हु खाहि ती नाहिं कछु डर जो गज मारे तो
 नाहिं न हानो ॥
 आगि जरो जल बूझि मरो गिरि जाइ गिरो
 कछु भय मति आनो ।
 सुन्दर और भले सब ही दुःख दुर्जन सङ्ग भलो
 जिन जानो ॥

मन चचलको अङ्ग

मनोहरकन्द—चोताला

छटक छटक मन राखत जू अण्य अण्य सटक
 सटक चहुं और अब जात है ।

छटक छटक ललचाइ लोल बार बार गटक
 गटक करि विषय फल खात है ॥
 भटक भटक तार तोरत करमहीन भटक
 भटक कहुं नेक न अघात है ।
 पटक पटक सिर सुन्दर जु मानो हार फटक
 फटक जाइ सो धौ कौन बात है ॥
 पलही में मरि जात पलही में जीवत है
 पलही में परहाथ देखत विकानो है ।
 पलही में फिरि नरखण्ड ब्रह्माण्ड सब देखो
 अनदेखी सो तो यातै नहि छानो है ॥
 जातो नहि जानियत आवत न देखे कछु ऐसी
 सो बलाय अब ता सो पार पानी है ।
 सुन्दर कहत याकी गति हु न लखि परे मनकी
 प्रतीति कोज करै सो दिवानो है ॥
 धरिये तो धेरो नही आवत है मेरो पूत
 जोइ परबोधिए सु कान न धरत है ।
 नीति न अनोति देखे शुभ न अशुभ पेखे पलही में
 होती अनहोती हु करत है ॥
 गुरुकी न साधुकी न लोक वेद हकी शङ्क काहुको
 न माने न तो काहुतें डरत है ।
 सुन्दर कहत ताहि धोयिये सु कौन भांति मनको
 स्वभाव कछु कछी न परत है ॥
 काम जब जागे तब गनत कोउ शांक जाने
 सब जोय करि देखत माधी है ॥
 क्रोध जब जागे तब नेक न संभारि सके ऐसी
 विधि मूलकी अविद्या जिन साधी है ।
 लोभ जब जागे तब तपत न क्यौं हीं होइ
 सुन्दर कहत इन ऐसी विधि स्वाधी है ॥
 महा मतवारो निशि दिनही फिरत रहै
 मन सो न हम कोज देख्यो अपराधी है ॥

देखिवे कौं दैरे तो अटक जाइ वाही भीर
 सुनिवे कौं दैरे तो रसिक सिरताज है ॥
 सुंघवे कौं दैरे तो अघाय न सुगन्धकरि खाइवे कौं
 दैरे तो न अघाये महाराज है ।
 भोग हु कौं दैरे तो छपत नहीं क्यौंइ होइ सुन्दर
 कहत याही नेक हु न साज है ॥
 काइकी कछो न करे आपुनो ही टेक परे
 मन सो न कोउ हम जानो दगाबाज है ॥

देखे न कुठौर ठौर कहत कहत भीर लीन पाइ
 होत हाड़ मांस चरगत में ।
 करत बुराई सर भीसर न जाने कछु धखा पाइ
 देत राम नाम सो लगत में ॥
 वाही सुर असुर बहाए सब वेध जिनि सुन्दर कहत
 दिन घालत भगत में ।
 भीरउ अनेक अन्तराय ही करत रहै मन सो न
 कोउ है अधम या जगत में ॥

जिन ठगै शङ्कर विधाता इन्द्रदेव सुनि आपनोउ
 अधिपति ठग्यो जिन चन्द्र है ॥
 भीर योगी जङ्गम सञ्चासो शेष कौन गर्ने सब ही को
 ठगत ठगावे न सुछन्द है ।
 तापस ऋषि सुर सकल पचि पचि हारे काइके
 न आवै हाथ ऐसो यामें बन्द है ।
 सुन्दर कहत वश कौन विधि कोजे ताहि मन सो न
 कोउ या जगत मांहि रिन्द है ॥

रङ्गको नचावे अभिलाष धन पाइवेकों निशिदिन
 सोच करि ऐसे ही पचत है ॥
 देवता असुर सिद्ध पन्नग सकल लोक कौट पशु
 पक्षी कहु कैसे के बचत है ।
 राजा ही नचावे सब भूमि ही को राज्य खेव
 भीरउ नचावे जोई देह सरचत है ।

सुन्दर कहत काहु सन्तकी कहु न जाइ मनके
 नचाए सब जगत नचत है ॥

इन्द्रदेव—बीताला

केतिक थोस भए समुभावत मानन नाहीं बड़ो
 मन भौंड़ू ।
 भूलि रह्यो विषया सुखमें कहु भीर ना जानत है
 शठ दौड़ू ॥
 पांखि न कान न नाक विना शिर हाथ न पांव
 नहीं सुख पोड़ू ।
 सुन्दर ताही गहै कोउ क्यौं करि निकसि ही
 जाइ बड़ो मन लौड़ू ॥

दौरत है दशहं दिशकी शठ वाय लगी तबते
 भयो देड़ा ।
 लाज न कान कछू नहिं राखत शील स्वभावको
 फोरत मेंड़ा ॥
 लालच लागि गयो मन विखरोट डोलन है ज
 अठारह पेंड़ा ।
 सुन्दर सीख कहा कहि देइ भिदे नहिं वाण छिदे
 नहिं गेंड़ा ॥

खान कहं कि शृगाल कहं कि विडाल कहं
 मनकी मति तैसी ।
 ठेठ कहं किधों डोम कहं किधों भांडू कहं कि
 भण्डाइ दे जैसी ॥
 चोर कहं बटपार कहं ठगतार कहं उपमा
 कहं कैसी ।

सुन्दर भीर कहा कहिये अब या मनकी गति
 दीसत ऐसी ॥
 के वेर तू मन रङ्ग भयो शठ मांगत भीख दयो
 दिश डूयो ।
 के वेर तू मन छत्र धरो सिर कामिनि सङ्ग
 हिंडोलनि भूयो ॥

कै वेर तू मन चीण भयो अति कै वेर तू सुख
पाइर फूख्यो ।

सुन्दर कै वेर तोहि कछो मन कौन गलौ किहि
मारग भूख्यो ॥

इन्द्रिनिके सुख चाहत है मन लालच लागि
भरम शठ यीं ही ।

देखि मरोच भयो जल पूरण धावत है मृग
मूरख ज्यो ही ॥

प्रेत पिशाच निशाचर डोलत भूख मरे नहि
धावत क्यों ही ।

वायु वधूरनि कौन गहै कर सुन्दर दौरत है
मन त्यो हीं ॥

कौन स्वभाव परो इठि दौरत अमृत छाड़ि
चचोरत हाड़े ।

ज्यो भ्रमको हथनो दृग देखत आसुर होइ
परे गज खाड़े ॥

सुन्दर तोहि सदा समुभाषत एकहु सोख लगे
नहिं राड़े ।

वाद वृथा भटकै निशि वासर रे मन तू भ्रमको
किन छाड़े ॥

हो सब को सिरमौर ततक्षण जो अभिप्रन्तर
ज्ञान विचारे ।

जो कछु और विषय सुख वाञ्छत तौ यह देह
अमौलिक हारे ॥

छाड़ि कुबुद्धि भजै भगवन्तहि आपु तरे पुनि
और हि तारे ।

सुन्दर तोहि कछो कितनो वेर तू मन क्यों नहि
आपु संभारे ॥

जो मन नारीको और निहारत तौ मन होत है
ताही को रूपा ।

जो मन काइ सों क्रोध करे जब क्रोध भये हो
जाइ तद्रूपा ॥

जो मन माया ही माया रटे नित तो मन बूड़न
मायाके कृपा ।

सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होत है
ब्रह्मस्वरूपा ॥

मनहरनन्द—चीताला

कबहुंक हंसि उठे कबहुंक रोइ देत कबहुं वक्रत
कहं अन्तहु न लहिये ।

कबहुंक खाय तो अघाय नहीं काइ करि कबहुं
कहे मेरे कछु नहिं चहिये ॥

कबहुं आकाश जाइ कबहुं पाताल जाइ सुन्दर
कहत ताहि कैसे कर गहिये ।

कबहुंक आइ लागि कबहुं उतरि भागे भूत
कैसे चिह्न करे ऐसो मन कहिये ॥

२

कबहुं तो पांखको परेवा कै देखावे मन कबहुंक
धूरिके चामर कर लेत है ।

कबहुं तो गोटिको उकारत आकाश और कबहुंक
राते पीरे रङ्ग श्याम सेत है ॥

कबहुं तौ आंब को उगाइ करि ठाढ़ो करे कबहुं तौ
सीस धड़ लुटे कर देत है ।

बाजोगरको सो खेल सुन्दर करत मन सदाई
भ्रमत रहै ऐसो कोई प्रेत है ॥

हनीर—चीताला

कबहुंक शाह होत कबहुंक चोर होत कबहुंक
राजा होत कबहुंक रङ्ग है ।

कबहुंक दीन होत कबहुं गुमानो होत कबहुंक
सूधो होत कबहुंक वक्र है ॥

कबहुंक कामी होत कबहुंक यतौ होत कबहुंक
निर्मल होत कबहुंक पङ्क है ।

मनको स्वरूप ऐसो सुन्दर स्फटिक जैसो कबहुंक
सुर होत कबहुं मयङ्क है ॥

१
 हाथों को सो कान कौंधो पीपरको सो पात
 कौंधों ध्वजा को उड़ान कङ्कं स्थिर न रहत है ।
 पाना को सौं घेर कौंधों पीन उरमेर कौंधों चक्रको
 सो फेर कौंड कैसेकै गहत है ॥
 घरघट माल किंधों चरखा कौं ख्याल किंधों फेरी
 खात बाल कछु सुध न लहत है ।
 धूम कौं सो धाव ता कौं राखिवे कौं चाव ऐसो
 मन को स्वभाव सो तो सुन्दर कहत है ॥

२
 सुख माने दुःख माने सम्पत्ति विपत्ति माने
 दुर्घ्न माने शोक माने माने रङ्ग धन है ।
 घटो माने बढी माने शुभ हूँ अशुभ माने लाभ माने
 हानि माने याहो तें कूपन है ॥
 पाप माने पुण्य माने उत्तम मध्यम माने नीच माने
 उच्च माने मेरो यह तन है ।
 स्वर्ग नरक माने वन्ध माने मोक्ष माने सुन्दर
 सकल माने ताते नाम मन है ॥

३
 जोई जोई देखे कछु सोई सोई मन चाहि
 जोई जोई सुने सोई मन हो को भर्म है ।
 जोई जोई सूंचे जोई खाय जो स्पर्श होइ जोई जोई
 करे सोऊ कन हो को कर्म है ॥
 जोई जोई यह जोई त्यागे जोई अनुरागे जहां जहां
 जाइ सोई मन हो को अम है ।
 जाई जोई कहे सोई सुन्दर सकल मन जोई जोई
 कल्प सु मन हो को धर्म है ॥

४
 एक हो विटप विष्णु ज्यों को त्यों हो देखियत
 अति ही सघन ताके पत्र फल फल है ।
 पागिले भुकोरत पात नए नए होत जात ऐसे
 याहो तब को अनादि काल मूल है ॥
 दय चारि लोक लौं जहां तहां पसरि रह्यो अघ
 पुनि जरध सूक्ष्म अघ स्थूल है ।

कोउ तो कहत सत्य कोउ तो कहे असत्य सुन्दर
 सकल मन ही को भ्रम भूल है ॥

५
 तो सो न कपूत कोउ कतहुं न देखियत तो सो न
 सपूत कोउ देखिये न और है ।
 तू हो आप भूलि महा नीच हुते नीच होत तू हो
 आप जाने तें सकल सिरमौर है ॥
 तू हो आप भ्रमे तब भ्रमत जगत देखे तेरे स्थिर
 भए सब ठौर हो को ठौर है ।
 तू हो लीव रूप तू हो ब्रह्म है प्रकाशवन्त
 सुन्दर कहत मन तेरो सब दोर है ॥

६
 मन होके भ्रमते जगत यह देखियत मनही को
 भ्रम गये जगत विलात है ।
 मन होके भ्रम जिवरो में उपजत सांप मनके विचारि
 सांप जिवरो समात है ॥
 मन होके भ्रमते मरोचिका को जल कहे
 मन होके भ्रम सोप रूपो सो दिखात है ।
 सुन्दर सकल यह दीसे मन हीको भ्रम मन हीको
 भ्रम गए ब्रह्म होइ जात है ॥

७
 मन ही जगत रूप होइ करि विस्तारि मन ही
 अलख रूप जगत सौं न्यारो है ।
 मन ही सकल घट व्यापक अखण्ड एक मन हो
 सकल यह जगत पियारो है ॥
 मन ही प्रकाशवन्त हाथ न परत कछु मनके
 न रूपरेख हृद हो न वारो है ।
 सुन्दर कहत परमार्थ विचारि जब मन मिटि जाइ
 एक ब्रह्म निज सारो है ॥

चातकको अक्ष

चातक—चौताला

जोई जोई छूटवे कौं करत उपाय अत्र सोई सोई
 दृढ़ करि वन्धन परत है ।

योग यज्ञ जप तप तीर्थ व्रतादि और भ्रंषा पातलेत
जाइ हिवारे गरत है ॥

कामउ फराइ पुनि केसउ लुचाइ अङ्ग विभूति
ज लगाइ शिर जटा ज धरत है ।
विन ज्ञान पाए नहीं छूटे हृदयकी अन्वि सुन्दर
कहत यों ही भ्रमके मरत है ॥

२

जप तप करत धरत व्रत जत सत वन वचक्रम
भ्रम कष्ट सहत तन ।
वसकल वसन असन फलपत्र जल कसत रसन
रस तजत वसत वन ॥
जरत मरत नर गरत परत सर कहत लहत
हयगण दल वन घन ।
पचत पचत भवभय न टरत शठ घट घट
प्रकट रहत न लखत जन ॥

२

योग करे यज्ञ करे वेदविधि त्याग करे जप करे
तप करे यों ही आयु खूटि है ।
यम करे नेम करे तीर्थ और व्रत करे पुष्टमी अटन
करे त्रया श्वास टूटि है ॥
जीवेको यतन करे मनमें व्यसन धरे पचि पचि
यों ही मरे काल सिर कूटि है ।
और उ अनेक विधि कोटिक उपाय करे सुन्दर
कहत विन ज्ञान नहिं कूटि है ॥

४

बुद्धि कर हीन रज तम गुण छाइ रह्यो वन वन
फिरत उदास होइ घरते ।
कठिन तपस्या धरि मेघ शीत घाम सहे कन्दमूल
खाइ कोउ कामनाके डरते ॥
अति ही अज्ञानी और विविध उपाय करे निज रूप
भूलि करि बंधे जाइ परते ।
सुन्दर कहत शठ जघों और देखे सुख हाथ माहिं
पारसो न फेरे मूढ़ करते ॥

५

मेघ सहे शीत सहे शीर्षपर घाम सहे कठिन
तपस्या करि कन्द मूल खात है ।
योग करे यज्ञ करे तीर्थ और व्रत करे पुनि नानाविध
करे मनमें सिहात है ॥
और देवी देवता उपासना अनेक करे भांवनिकी
होस कसैं भाक डोड़े जात है ।
सुन्दर कहत एक रविके प्रकाश विना जुगनाकी
ज्योति कहा रजनी विलात है ॥

नट—चौताला

कोज फिरे नांगी पाय कोज गुदरी बनाइ देहकी
दशा दिखाइ भाई लोक धूयो है ।
कोज दूधाधारी होइ कोज फलाहारी तोय कोज
अधोमुख भूलि भूलि धूम घूयो है ॥
कोज नहीं खाइ नोन कोज मुख गहै मौन
सुन्दर कहत यों ही त्रया भुस कूयो है ।
प्रभु सों न प्रीति माहि ज्ञानहुं सों परचय नाहिं
देखो भाई आंधरेने ज्यों बजार लूयो है ॥

अज्ञाना—चौताला

आसन मारि संवारि जटा नख उज्वल अङ्ग
विभूति चढ़ाई ।
यह हमको कहु देइ दया करि घेरि रहै
सब लोग लुगाई ॥
कोउक उत्तम भोजन लावत कोउक लावत
पान मिठाई ।
सुन्दर लेकरि जात भयो सब मूरख लोगनि यह
सिधि पाई ॥

२

जहें पाय अधोमुख हँ करि घूंटत धूमहि
देह भुलावै ।
मेघ हु शीत हु घाम सहे सिर तीन हु काल
महादुःख पावै ॥
हाथ कछू न परे कबहुं कान मूर्खकी कस
कूटि उड़ावै ।

सुन्दर दंष्ट्रि विषय सुखको घर उडवत है अरु
भांभन गावे ॥

गैह तण्यो अरु नैह तण्यो पुनि खेह लगाइके
देह संवारी ।

भेष सञ्चो अरु शीत सञ्चो पुनि धूप समे
पञ्चागिन धारी ॥

भूख सहे रहे कूख तरे परि सुन्दरदास सहे
दुःख भारी ।

छासन छाड़ि के कांसन ऊपर आसन मारि पे
आश न मारी ॥

जो कोउ कष्ट करे बहु भांतिन जात अज्ञान
नहीं मन् कौंगी ।

ज्यों तम पूरि रह्यो घर भीतर कैसे हूँ धूरि न
होइ अंधेरी ॥

खाठिनि मारिये ठेलि निकारिये और उपाय
करे बहुतेरी ।

सुन्दर शूरप्रकाश भयो तब तो कतहँ नहि
देखिये नेरो ॥

धार बह्यो खर्ग धार ह्यो जल धार सञ्चो
गिरिधार गिरी है ।

भार संच्यो धन भारथ हूँ करि भार सञ्चो
शिरभार परी है ॥

मार तप्या वहि मार गयो यम मार दर्द
मन तो न मरी है ।

सार तण्यो षट् सार पटो कहि सुन्दर कारज
कौन सरी है ॥

क्यामट—चौताला

ज्यों कोउ कोस कट्यो नहिं मारग तेलकले
घरमें पशु जोये ।

ज्यों बनिया गयो बीस के तीसको बीसहु में
दशहूँ नहिं होये ॥

ज्यों चोबे हबेको चण्यो पुनि होइ दुवे दो
गांठके खोये ।

तैसे हो सुन्दर और क्रिया सब राम विना
निश्चय नर रोये ॥

जो कोऊ राम विना नर मूरख औरमके गुण
जोभ भनेगी ।

आन क्रिया गढ़ते गढ़वा पुनि होत है भेरि
कहूँ न बनेगी ॥

ज्यों हथ फेर दिखावत चावर अन्त ता धूरि को
धूरि बनेगी ।

सुन्दर भूल भई अतिशय करि सूतकी भंस
पड़ाइ जनेगी ॥

होइ उदास विचार विना नर गैह तजो वन
जाइ रह्यो है ।

अम्बर छाड़ि बघम्बर ले करि के तप कानन
कष्ट सञ्चो है ॥

आसन मारि सवासन हूँ सुख मौन गह्यो
मन तो न गह्यो है ।

सुन्दर कौन कुबुद्धि लगी कहि या भवसागर
माहिं वह्यो है ॥

भेष धरो पर भेद न जानत भेद लहे विनु
खेदहि चे है ।

भूख हि मारत नींद निवारत अन्न त्यजे फल
पत्रनि खे है ॥

और उपाय अनेक करे पुनि ताहि तें हाथ
कहूँ नहिं ऐ है ।

या नरदेह त्रथा शठ खोवत सुन्दर राम विना
पछिते है ॥

आपने आपने थान सुकाम सराहनको सब
बात भली है ।

यज्ञ व्रतादिक तोरघ दान पुराण कथा सु
 अनेक चलो है ॥
 कोटिक और उपाय जहां लागि तं सुनिके
 नर बुद्धि छलो है ।
 सुन्दर ज्ञान विना न कहं सुख भूलनिको बहु
 भांति गली है ॥

कोउक चाहत पुत्र धनादिक कोउक चाहत
 बांभ जनायो ।
 कोउक चाहत धातु रसायन कोउक चाहत
 पारद खायो ॥
 कोउक चाहत यन्त्रनि मन्त्रनि कोउक चाहत
 रोग गमायो ।
 सुन्दर राम विना सबहो भ्रम देखहु या जगको
 उहकायो ॥

कोउ भया पय पान करे नित कोउक खात है
 अश्व अलीना ।
 कोउक कष्ट करे निशि वासर कोउक बैठि
 कै साधत पौना ॥
 कोउक कद विवाद करे नित कोउक धारि
 रहै सुख मौना ।
 सुन्दर एक अज्ञान गए विनु सिद्ध भयो नहिं
 दीसत कौना ॥

कोउक अङ्ग विभूति लगावत कोउक होत
 निराट दिगम्बर ।
 कोउक खेत कषारक बोवत कोउक काथ रङ्गे
 बहु अम्बर ॥
 कोउक बलकल सोस जटा मुख कोउक ओढ़न है
 सु अघम्बर ।
 सुन्दर एक अज्ञान गए विनु ए सब दीसत
 आहि अघम्बर ॥

आप हीके घट में प्रकट परमेश्वर है ताहि छाड़ि
 भूले नर दूर दूर जात है ।
 कोई दौरि हारकाको कोई काशी जगन्नाथ
 कोई दौरि मथुरा को हरिहार न्यात है ॥
 कोई दौरि बदरी को विषम पहाड़ चढ़े कोई
 तो केदार जाइ मन में सिहात है ।
 सुन्दर कहत गुरुदेव देहि दिव्य नयन दूरो होके
 दूरि में ज निकट दिखात है ॥

गणेशरी—चौताला

कोउक जात प्रयाग बनारस कोउक गया
 जगन्नाथ हि धावे ।
 कोउक मथुरा बदरो हरिहार सु कोउक भया
 कुरुक्षेत्र हि न्यावे ॥
 कोउक पुष्कर ह्वै पंच तोर्य दौरि ई दौरि के
 हारका आवे ।
 सुन्दर विस्त गद्यो घर माहि सु बाहिर दूढ़त क्यों
 करि पावे ॥

आगे कछू नहिं हाथ परो पुनि पोछे बिगारि
 गए निज भोना ।
 ज्यों कोउ कामिनि कान्त हि मारि चली सङ्ग
 पीर हिं देखि सलोना ॥
 कोउक गयो तजि के ततकाल कहे न बने सु रह्यो
 सुख मौना ।
 तैसे हो सुन्दर ज्ञान विना सब छाड़ि भए नर
 भाड़के दोना ॥

काहे को तू नर भेष बनावत काहे को तू दश ह
 दिशि छूले ।
 काहे को तू नर कष्ट करे अति काहे को तू
 सुखतें कछि फूले ॥

काहे को और उपाय करे अब ध्यान क्रिया कर
के मति भूले ।
सुन्दर एक भजे भगवन्त हि तौ सुखसागर में
नित भूले ॥

विपरीतज्ञानको अङ्ग—मनोहरकन्द

वाग्वरौ—चीताला

एक ब्रह्म सुख सौ बनाइ करि कहत है अन्त
करत तौ विकारनसो भरो है ।
जैसे ठग गोबर सौ कृपा भरि राखत है खेर पांच
घृत लेके उपर ज्यों करो है ॥
जैसे काँठ भाँडे माहिं व्याज को छिपाइ राखे
चीथरा कपूरको ले सुख बांधि धरो है ।
सुन्दर कहत ऐसे ज्ञानी है जगत माहिं तिन को
तो देखि करि भरो मल छरो है ॥

देह सो ममत्व पुनि गेह सो ममत्व सुत दार सो
ममत्व मन माया में रहत है ।
स्थिरता न लहे जैसे कन्दुक चौगान माहिं कर्मनिके
वश परो धक्का को बहत है ॥
अन्तःकरण सु तो जगत सो रचित तेरो सुख सो
बनाय बात ब्रह्मको कहत है ।
सुन्दर अधिक मोहि याहो तै अचम्भा चाहि भूमि
पर परो कोज चन्द को गहत है ॥

सुख सो कहत ज्ञान अन्त मन इन्द्रिय प्राण मारगके
जल में न प्रतिबिम्ब लहिये ।
गाँठ में न पैसा कोउ भयो रहै साङ्गकार बातनि
हो सुहर रुपैया गनि गहिये ॥
सुपने में पञ्चानृत जोमि कै तू पूत भयो जागी ते
परम भूख खाइवे को चहिये ।
सुन्दर सुभट जैसे कायर मारत गाल राजा भोज
सम कहा गांगू तेली कहिये ॥

संसारके सुख निसो आसक्त अनेक विधि इन्द्रिय
उ लोलुप मनका बहुत गसे है ।
कहत है ऐसे में तो एक ब्रह्म जानत हों ताहो तें
छोड़ि शुभकर्मनि का ररो है ॥
ब्रह्मको न प्राप्ति पुनि कर्म सब छूटि गए दुहुन
तें भूछ होइ अब सोच बरो है ।
सुन्दर कहत ताहि त्यागिये स्वपच जैसे याहो
भांति ग्रन्थन वसिष्ठ हु करो है ॥

ज्ञान कोसो बात कहे मन तो मलिन रहे वासना
अनेक भरो नेक न निवार है ।
जैसे काँज आभूषण अधिक बनाय राखे जलाई
ऊपर करि भीतर भङ्गार है ॥
ज्योंही मन आवे त्योंही खेलत निशङ्क होइ ज्ञान
शुनि शोध लयो ग्रन्थन विचार है ।
सुन्दर कहत वाके अटक न कोज चाहि जाई
वाको मिलो आय ताहोको बिगार है ॥

हंस खेत वक खेत देखिये समान दोज हंस मोतौ
सुगे वक मझरो को खात है ।
पिक अरु काक दोज कैसे करि जाने जाय
पिक अम्ब डार काक करं कहि जात है ॥
सिन्धो अरु स्फटिक पाषाण सम देखिये वह तो
कठोर वह तो जलमें समात है ।
सुन्दर कहत ज्ञानो बाहर भीतर शुद्ध ताको पटतर
और बातनको बात है ॥

वचनविवेकको अङ्ग—मनोहरकन्द

केदारौ—चीताला

जाके घर ताजो तुरकोनि को तबेको बंधो ताके
आगे फेरि टट्या नखाइवे ।
जाके आसा मलमल सिरौ साफ़ डेर परे ताके
आगे आनि करि चोसई रखाइवे ॥

जाको पखासृत खात खात सब दिन वीते
सुन्दर कहत ताहि राबरी चखाइये ।
चतुर प्रवीण भागि मूर्ख उच्चार करि सुरजके भागे
जैसे जैगना दिखाइये ॥

२
एक वाणी रूपवन्त भूषण वसन अङ्ग अधिक
विराजमान कहियत ऐसी है ।

एक वाणी फाटे टूटे अम्बर उड़ाए आनि ताहु
माहि विपरीत शूनियत तैसी है ॥

एक वाणी अत कहि बहुत शृङ्गार कियो लोगन
को नीकी लगे सन्तनकी वैसी है ।

सुन्दर कहत वाणी दू विधि जगत माहि जाने
कोज चतुर प्रवीण जाको जैसी है ॥

३
राजाको कुंवर जो सुरूप को कुरूप होइ ताको
तसलीम करि गोद ले खिलाइये ।

और काहु रैयत के सुरूप होइ शोभनीक ताहु
को तो देखि करि निकट बुलाइये ॥

काहुको कुरूप कारो कूबरो है अङ्गहीन वाकी
और देखि देखि मायइ हलाइये ।

सुन्दर कहत वाके बाप ही को प्यारी होइ योही
जानि वाणी को विवेक ऐसे पाइये ॥

४
बोलिये तो तब जब बोलिवेकी सुधि होइ न तो
सुख मौन करि चुप होइ रहिये ।

जोरिये उ तब जब जोरिवोज जानि परे तुकछन्द
अरनूपताका में लहिये ॥

गाइये उ तब जब गाइये को कण्ठ होइ अरण्यके
सुनतही मन जाइ गहिये ।

तुक भङ्ग छन्द भङ्ग अर्थहु मिले न कोज सुन्दर
कहत ऐसी वाणी नहीं कहिये ॥

५
एकनकी वचन सुनत अति सुख होइ फूलसे
भरत हैं अधिक मन भावने ।

एकनकी वचन असम मानो वरषत अरण्यके सुनत
लगत अमखावने ॥

एकनकी वचन कण्ठक कटुक विषरूप करत
मरम छेद दुःख उपजावने ।

सुन्दर कहत घट घट में वचन भेद उत्तम मध्यम
अरु अधम सुनावने ॥

६
काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं
तिनके तो वचन सुहात कहि कोन को ।

कोकिला उ सारी पुनि सुआ जब बोलत है
सब कोज कान दे सुनत रव रीन को ॥

ताही तें सुवचन विवेक करि बोलियत योही
आकवाक कहि तोरिये न पीन को ।

सुन्दर समुक्ति कौ वचन को उचार करे नाहि
तो चुप हूँ पकरि बैठ मौन को ॥

७
प्रथम सो हिये विचार ढील सो न दीजे डार
ताही तें सुवचन सन्हारि करि बोलिये ।

जाने न कुहेत हेत भावै तैसी कहि देत कहिये
ता तब जब मन मानि तोलिये ॥

सबही को लागे दुःख कोज नहि पावै सुख बोलि
के प्रथाही तातें छाती नहीं छोलिये ।

सुन्दर समुक्ति करि कहिये सरस बात तबही तो
बदन कपाट गहि खोलिये ॥

८
और ता वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे
तिनके तो बोलिवे में टङ्गहु न एक है ।

कोज गत दिवस वकतही रहत ऐसे जैसी
विधि कूप में वकत मानो भेक है ॥

विविधि प्रकार करि बोलत जगत सब घट घट
सुख सुख वचन अनेक है ।

सुन्दर कहत ताते वचन विचारि लीहु वचन तो
वही जामें पाइये विवेक है ॥

विद्या—बीताला

जैसे इस नीर की लज्जत है असार जानि
 सार जानि छीरकी निरासो करि पीजिये ।
 जैसे दधि मधत मधत घृत काढ़ि लेत और रही
 मही सब छाड़ि छाड़ दीजिये ॥
 जैसे मधु मधिका सुवास को भ्रमर लेत तैसे ही
 विचार करि भिन्न भिन्न कीजिये ।
 सुन्दर कहत ताते वचन अनेक भांति वचन
 में वचन विवेक करि लीजिये ॥
 १
 प्रथम ही गुणदेव मुखते उचार काबो वेद तो
 वचन आय लगे निज हिये हैं ।
 तिनको विवेक करि अन्तःकरण माहि अत्रि ही
 अमोल नग भिन्न भिन्न किये हैं ॥
 आप को दरिद्र गयो पर उपकार हेतु नरुधि
 नीगल करि उगलि नग दिये हैं ।
 सुन्दर कहत यह वाणी यों प्रकट भई और कोऊ
 सुनि कर रक्ष जीव जिये हैं ॥
 १
 वचन ते दुरि मिले वचन विरुद्ध होय वचन तें
 राग बढ़े वचन ते दोख जू ।
 वचन ते ज्वाला उठे वचन ते शीतल होइ वचन तें
 मुदित मुख वचनही तें सोख जू ॥
 वचन तें प्यारो लगे वचन ते दूर भगे वचन तें
 सुरिभाइ वचन तें पोख जू ।
 सुन्दर कहत यह वचन ही को भेद ऐसो वचन तें
 बन्ध होत वचन तें मोख जू ॥
 ४
 वचन तें गुरुशिष्य बापपूत प्यारे होत वचन तें
 बहुविध होत उत्पात हैं ।
 वचन ते नारी अरु पुरुष सनेह अति वचन तें
 दोऊ आप आप में रिसात हैं ॥
 वचन ते सब आइ राजाके हजूर होइ वचन तें
 चाकारउ छोड़ि कै परात हैं ।

सुन्दर सुवचन सुनत अति सुख होइ कुवचन
 सुनत ही प्रीति घट जात हैं ॥
 ५
 एक तो वचन सुनि कर्मही में बधि जाहि करत
 बहुत विधि स्वर्गकी उमेद है ।
 एक है वचन हृद ईश्वर उपासना में तिन में तां
 सकल ही वासनाको छेद है ॥
 एक है वचन ता में एक ही अखण्ड ब्रह्म सुन्दर
 कहत यो बतायो अन्त वेद है ।
 वचन अनेक ही प्रकार सब देखियत वचन विवेक
 किये वचन में भेद है ॥

सोरठ—बीताला

वचन ते योग करे वचन ते यज्ञ करे वचन ते तप
 करि देह को दहत है ।
 वचन तें वन्दन करत है अनेक विधि वचन तें
 त्याग करि वनमें रहत है ॥
 वचन ते उरमें अरु सुरमें वचन ही तें वचन ते
 भांति भांति सङ्घट सङ्घट है ।
 वचन ते जीव भयो वचन ते ब्रह्म होत सुन्दर वचन
 भेद वेद यों कहत है ॥

निर्गुण उपासना अङ्ग—इन्द्रवज्रहृद

सोरठ—बीताला

ब्रह्मा कुलाल रचे बहु भाजन कर्मनिके वश
 मोहन भावै ।
 विष्णुहु सङ्घट आइ सहे गर्भ काहु को रक्षक
 काहु सतावै ॥
 शङ्कर भूत पिशाचनिके बहु पानि कपाल
 लिए बिलसावै ।
 याही तें सुन्दर तिरगुण त्यागि सुनिर्मल एक
 निरखन ध्यावै ॥
 १
 कोटिक बात बनाइ कहे कहा होत भया सबही
 मन रक्षन ।

शास्त्रसमूह अब वेद पुराण वखानत है अतिशय
 सुक अङ्गन ॥
 पानी में बूढ़त पानी गहे कत पार पङ्चत है
 मति भङ्गन ॥
 सुन्दर ती लागि आधि की जेबरी जी लो न
 धावत एक निरङ्गन ॥

१

मज्जन सो लु मनोमल मज्जन सज्जन सो लु
 कहे गति गूभै ॥
 गज्जन सो इन्द्रियगण गज्जन रज्जन सो
 लु बुभावै अबूभै ॥
 भङ्गन सो लु भङ्गो रसमाहि लु विहजन सो
 कतङ्ग न अरुभै ॥
 व्यङ्गन सो लु बढे कचि सुन्दर अङ्गन सो लु
 निरङ्गन सूभै ॥

४

जो प्रभु सौं उत्पत्ति भई यह सो प्रभु है उर
 इष्ट हमारे ॥
 जो प्रभु है सबके सिर ऊपर ता प्रभुको हम ह
 सिर धारे ॥
 रूप न रेख अलेख अखण्डित भिन्न रहे सब
 कारज सारि ॥
 नाम निरङ्गन है तिन की पुनि सुन्दर ता प्रभुको
 बलिहारे ॥

५

जो उपजे विनसै गुण धारत सो सब जानहु
 अङ्गन माया ॥
 आवै न जाइ मरे नहि जीवत अच्युत एक
 निरङ्गन राया ॥
 ज्यों तबतत्त्व रहे रस एक हो आवत जात फिरे
 सब छाया ॥
 सो परब्रह्म सदा शिर ऊपर सुन्दर ता प्रभु सौं
 मन साया ॥

खण्ड—पीताला

जो उपजो कह्यु आहि जहां लागि सो सब नाश
 निरन्तर होई ॥
 रूप धर्यो सुर हेतु हि निहचल तोनहु लोका गणे
 कहा कोई ॥
 राजस तामस सात्त्विक जे गुण देखत कालधरे
 पुनि वोई ॥
 भापु हिं एक रहे लु निरङ्गन सुन्दरके मन
 मानत सोई ॥

२

देवनके शिर देव विराजत ईश्वरके शिर ईश्वर
 कहिये ॥
 लालनके शिर लाल निरन्तर खूबनिके शिर खूब
 सुलहिये ॥
 पाकनिके शिर पाक शिरोमणि देखि विचारि
 वही दृढ़ गहिये ॥
 सुन्दर एक सदा शिर ऊपर और कहु हम
 की नहि चहिये ॥

३

शेष महेश गणेश जहां लागि विष्णु विरिञ्चि हुके
 शिर स्वामी ॥
 व्यापक ब्रह्म अखण्ड अनाहत बाहिर भीतर
 अन्तःशामी ॥
 वीर न छोरे अनन्त कहे गुण याही तें सुन्दर है
 घन नामी ॥
 ऐसो प्रभु जिनके शिर ऊपर क्यों परि है तिनकी
 कहि स्वामी ॥

पतिव्रताको अङ्ग—रन्द्रवसहन्द

खण्ड—पीताला

पानकी ओर निहारत ही जैसे जात पतिव्रत
 एक व्रतीको ॥
 होत अनादर ऐसो हो भांति लु पीछे फिरे पुनि
 सूर सतीको ॥

नेक ही में हरबो ह्वे जात खिसे अर्धविन्दु सु
योगी यतोको ।

राम हृदे तें गए जन सुन्दर एक रती विनु
एक रतीको ॥

२

जो हरिकों त्वजि आन उपासत सो मतिमन्द
फज्जीहत होई ।

जो अपने भरतारहिं छोड़ि भई व्य भिवारनि
कामिनी कोई ॥

सुन्दर ताहि न आदर मान फिरि विमुखो आपनि
पति खोई ।

डूबि मरे किन कूप मंभार कहा जग जीवत है
शठ सोई ॥

३

एक सहो सबके उर अन्तर ता प्रभुकों कहि
काहि न गावें ।

शङ्कट माहि सहाय करे पुनि सो अपनो पति क्यों
विसरावें ॥

चारि पदारथ और जहां लागि आठहुं सिद्धि
नवीं निधि पावें ।

सुन्दर छार पखो तिनके सुख जो हरि कों त्वजि
आनहि धावें ॥

४

पूरणकाम सदा सुखधाम निरञ्जन राम है
सर्जन हारो ।

सेवक होइ रह्यो सबको नित कुञ्जर कौटहिं
देत अहारो ॥

भङ्गन दुःख दरिद्र निवारण चिन्त करे नित
सांभ सवारो ।

ऐसे प्रभू त्वजि आन उपासत सुन्दर ह्वे
तिनको सुख कारो ॥

५

होइ अनन्य भजे भगवन्त हि और कछू उर में
नहि राखे ।

देवो औ देव जहां लागि हैं उर कें तिन सों कहुं
दोन न भाषे ॥

योगहु यज्ञ व्रतादि क्रिया तिन कों नहि तो
खपने अभिलाषे ।

सुन्दर अमृत पान कियो तब कहिये कौन
हलाहल चाखे ॥

मनोहरकन्द—चोताला

काहेकों फिरत नर भटकत ठौर ठौर डागरका
दोर देवो देव सब जानिये ।

योग यज्ञ जप तप तोर्य व्रतादि दान तिनहु को
फज्ज सोउ मिथ्याई वखानिये ॥

सकल उपाय तजि एक राम नाम भजि याहि
उपदेश सुनि हृदे माहि आनिये ।

ताहिते समुक्ति करि सुन्दर विश्वास धरि
और कोउ कहे कहु ताको नहि मानिये ॥

२

पति हो सो प्रेम होइ पति हो सो नेम होइ
पति हो सो जेम होइ पति हो सो रति है ।

पति हो है यज्ञ योग पति हो है रसभोग
पति हो है जपतप पतिहो को यति है ॥

पति हो है ज्ञान ध्यान पति हो है पुण्यदान
पति हो है तोर्य स्थान पति हो के मति है ।

पति विन पति नाहि पति विन गति नाहि
सुन्दर सकल निधि एक पतिव्रति है ॥

३

जलको सनेहो मोन विकुरत तजे प्राण मखि विना
अहि जैसे जीव नहीं रहिये ।

स्वाति बुन्दके सनेहो प्रकट जगत माहि
एक सोप दुसरो सु चातक उ कहिये ॥

रवि को सनेहो पुनि कमल सरोवर में शशि को
सनेही उ चकार जैसे रहिये ।

तेसे हो सुन्दर एक प्रभु सों सनेह करि और कछ
देखि काहू और नहि बहिये ॥

चक्रविरह उराहनेको चक्र
मनीहरचन्द—चीताला

पीवको चन्देसो भारो तो सों कहीं सुनि प्यारी
तोरि गए सो तो अलहुं न पाये हैं ।
मेरे तो जीवन प्राण निशि दिन वड़े ध्यान सुख सों
न कल्लं ध्यान नयन भरलाये हैं ॥
जबते गये विछोड़ कल न परत मोहि ताते हूं
पूछत तोहि किन विरमाये हैं ।
सुन्दर विरहनीके सोच सखी बार बार हमको
विसरि अब कौनके कहाये हैं ॥

२

हम कौं तो रन दिन शब्दा मन माहि रहे उन
की तो बात निमें ठोक हू न पाइये ।
कवहूं सन्देशो सुनि अधिक उछाड़ होइ कवहुं क
रोइ रोइ आंसुन बहाइये ॥
बीरनके रस वश होइ रहे प्यारे लाल आवनकी
कहि कहि हम को सुनाइये ।
सुन्दर कहत ताहि काटिये सु कौन भांति जौन
रुख आपनेइ हाथ सो लगाइये ॥

३

मो सों कहे बीर सो ही वासों कहे बीर सो ही
जासो कहे ताही के प्रतीति कैसे होत है ।
काहकी समास करे काहकी उदास फिर काहकी
तों रस वश एकमें कपोत है ॥
दगाबाजी द्विविधा तो मनकी न दूरि होइ
काहकी अंधेरो घर काहकी उदोत है ।
सुन्दर कहत जाके पीर सो करे पुकार जाको
दुःख दूरि गयो ताके भई वीत है ॥

४

दिये बीर जिये बीर लिये बीर दिये बीर किये
बीर कौनउ अनूप पाटी पढ़े है ।
मुख बीर वैम बीर नयन बीर सैन बीर तन बीर
मन बीर यन्त्र माहि कढ़े है ॥

हाथ बीर पांव बीर सीसहु अवन्य बीर नख
शिख रोम रोम कलस सों मढ़े है ।
ऐसो तो कठोरता सुनो न देखी जगत में सुन्दर
कहत काह वचनहीके चढ़े है ॥

५

भई हों अति बावरो विरह घेरो चावरी चलत हूं
हां बावरी परोगी जाइ बावरी ।
फिरति हों उतावरी जगत नहीं ताव री सुवाहीको
बतावरी चलो है जात तावरी ॥
थके हैं दोष पावरी चढ़त नहीं पावरी
पियारो नहीं पावरी जहर बांठि प्यावरी ।
दीरत नहीं नावरी पुकारिके सुनावरी सुन्दर
कोष नावरी बूड़त राखे नावरी ॥

चन्दसारको चक्र

जयजयवली—चीताला

भूखो फिरि भ्रम ते करत कहु बीर बीर करत
न ताप दूरि करत सन्ताप कों ।
दक्ष भयो रहे पुनि दक्ष प्रजापति जैसे देत
परदक्षिणा न दक्षणा दे आप कों ॥
सुन्दर कहत ऐसे जाने न युक्ति कहु बीर आप
जपे न जपत निज आप कों ।
बालक यों युवा भयो वय वीते वृद्ध भयो वपुरुष
होइ के विसरि गयो बाप कों ॥

रन्दवचन—चीताला

पान उहै सु पियुष पिये नित दान उहै सु
दरिद्र हि भाने ।
कर्ण उहै सुनिये यश केशव मान उहै करिये
मन माने ॥
तान उहै सुरताल रिभावात ज्ञान उहै
जगदीश हि जाने ।
वाण उहै मन वेधत सुन्दर ज्ञान उहै उपजे न
अज्ञाने ॥

२
 गूर उहै मनको वश राखत क्रूर उहै रन
 माभ लजे हे ।
 त्याग उहै अनुराग नहीं कइं मार्ग उहै
 मन मोह तजे हे ॥
 प्रभ उहै निज तख ह्रि जानत यज्ञ उहै
 जगदीश यजे हे ।
 रत्न उहै हरि सौं रति सुन्दर भक्त उहै
 भगवन्त भजे हे ॥
 ३
 चाप उहै कसिये रिपु ऊपर दाप उहै
 लखकार ह्रि मारि ।
 छाप उहै हरि छाप दर्श शिर थाप उहै थप
 धीर न धारे ॥
 जाप उहै जपिये अजपा नित खाप उहै
 निज खाप विचारि ।
 बाप उहै सब को प्रभु सुन्दर पाप हरे
 अरु ताप निवारि ॥
 ४
 भौन उहै भय नाहि न जा महि गौन उहै
 फिर होइ न गौना ।
 बीन उहै वमिये विषया रस रौन उहै प्रभु सो
 नहि रौना ॥
 मीन उहै लु लिए हरि बोखत लीन उहै
 सब धोर अलीना ।
 सीन उहै गुरु सन्त मिले जब सुन्दर शङ्क रहै
 नहिं कौना ॥
 ५
 कार उहै अपिकार रहे नित सार उहै जो असार
 ह्रि नाखे ।
 नाद उहै सुनिके मगरजन ज्ञान उहै जो सत्य
 ह्रि राखे ॥
 प्रीति उहै लु प्रतीति धरे सर नीति उहै लु
 अनौति न भाखे ।

तनु उहै लागि अन्त न टूटत खाद उहै रस
 सुन्दर चाखे ॥
 ६
 श्वास उहै लु उसास न छोड़त नाश उहै फिर
 होइ न नासा ।
 पाश उहै शत पाश लगे यम पाश कटे
 प्रभुके नित वासा ॥
 वास उहै गृहवास तजे वनवास नहीं जिहि
 ठाहर वासा ।
 दास उहै जू उदास रहे हरिदास सदा कहि
 सुन्दर दासा ॥
 ७
 श्लोक उहै श्रुतिसार सुने नित नैन उहै निज
 रूप निहारि ।
 नाक उहै हरि नाक ह्रि राखत जीभ उहै
 जगदीश उचारि ॥
 हाथ उहै करिये हरिको छत पांव उहै
 हरिको पथ धारि ।
 शीर्ष उहै करि श्याम समरपण सुन्दर यौं सब
 कारज सारि ॥
 ८
 सोवत सावत सोइ गयो सब रोवत रोवत
 कै बेर रोयो ।
 गोवत गोवत गोइ धखा धन खोवत खोवत
 तैं सब खोयो ॥
 जोवत जोवत वीत गये दिन बोवत बोवत ले
 विष बोयो ।
 सुन्दर सुन्दर राम भजो नहिं डोवत डोवत
 बोभ हिं डोयो ॥
 ९
 देखत देखत देखत मारग बूझत बूझत
 बूझत आयो ।
 सूझत सूझत सूझ परो सब गावत गावत
 गोविन्द गायो ॥

सोधत सोधत शुद्ध भयो पुनि तावत तावत
कञ्चन तायो ।
जागत जागत जाग पखो जब सुन्दर सुन्दर
सुन्दर पायो ॥

शूरतनको अङ्ग

अङ्गरो—चीताला

सुनत नकारे चोट विकसे कमल सुख अधिक ।
फूष्यो माइ हन तन में ।
फेरे जब सांगी तब कोउ नहि धोर धरे कायर
कम्पायमान होत देखि मन में ॥
टूटि के पतंग जैसे परत पावक माहि ऐसे
टूटि परे बहु सांवतके गन में ।
मारि घमसान करि सुन्दर जुहारे खामो सोई ।
शूर वीर रोपि रहै जोइ रन में ॥

२

हाथ में गङ्गी है खङ्ग मारिबे कौ एक पग तनमन
आप नो समरपण कौनो है ।
आगे करि मोचकौ परो है जाके रण बोच
ठुकि टुकि होइ के भगाय रन दीनो है ॥
खाइ लौन खामो कौ हरामखोर कैसे होइ
नामजाद जगत में जीत्यो पन तीनो है ।
सुन्दर कहत ऐसो कोउ एक शूरवीर शशिको
उतारि कै सुयश जाइ लीनो है ॥

३

पांव रोपि रहै रण माहि रजपूत कोउ हय गज
गाजत शूरत जहां दल है ।
बाजत जुभाज सहनाई सौध राग पुनि सुनत हो
कायरको छुटि जात कल है ॥
भलकत वरछो तरछा तरवार वहे मार मार
करत परत खलभल है ।
ऐसे युद्ध में अड़िग सुन्दर सुभट सोई घर माहि
सूरमा कहावत सकल है ॥

४

अशन वसन बहु भूषण सकल अङ्ग सम्पत्ति
विविध भांति भये सब घर है ।
अवण नकारो सुनि छिनक में छोड़ि जात ऐसे
नहिं जाने कहु आगे मोहि मर है ॥
मन में उछाह रण माहि टुक टुक होइ निरभय
निशङ्क बाके नेकहु न डर है ।
सुन्दर कहत कङ्क देह कौ ममत्व नाहि सुरवाके
देखियत शीर्ष विनु धर है ॥

५

जुभवे कौ चाव जाकौ ताकि ताकि करे चाव
आगे धरि पांव फिरि पोछे न संभारि है ।
हाथ लिये हथियार तोखण लागायो धार वार
नहिं लागे सब पिशुन प्रहारि है ॥
बोट नहिं राखे कहु लोट पोट होइ जात चोट
नहिं चूके सीस रिपु कौ उतारि है ।
सुन्दर कहत ताहि नेकहु न सोच पोच ऐसो
शूरवीर धोर मोर जाइ मारि है ॥

६

अधिक आजानुवाहु मन में उछाह किये दियो
गजराज मुख वर्षत नूर है ।
काढ़े जब करवाल बाल ठाढ़े होइ तब अति
विकराल पुनि देखत करूर है ॥
नैक न उसास लेत फौज को फटाय देत खेत नहिं
छाड़े मारि करे चकचूर है ।
सुन्दर कहत ताकी कोरति प्रसिद्ध होइ सोई
शूरवीर धोर स्वामिके हजूर है ॥

सिन्धु—चीताला

ज्ञानकौ कवच अङ्ग काङ्ग सो न होइ भङ्ग टोप
शीर्ष भलकत परम विवेक है ।
होके ताजी असवार लियो शमशेर सार
आगे हो कौ पांव धरे भागने कौ टेक है ॥

छूटत वन्धक बाण बोते जहां घमसान देखि कै
 पिशुन दल मारत अनेक है ।
 सुन्दर सकल लोक माहि ता का जेकार ऐसो
 शूरवीर कोउ कोटिन में एक है ॥

शूरवीर रिपु को नमूनी देखि चोट करै मारि
 तब ताकि ताकि तरवार तीर सौ ।
 साधु आठो याम बैठो मनहो सो युद्ध करै जाके
 सु'ह माथो नाही देखिये शरीर सौ ॥
 शूरवीर भूमि पर दौरि करै दूरि लगे साधुनि को
 पकरि राखे धरि धीर सौ ।
 सुन्दर कहत तहां काहू को न पाव टिके साधुका
 संग्राम है अधिक शूरवीर सौ ॥

खंच कर लोकमान ज्ञान कै लगायो बाण मारि
 महाबलो मन जगत जिन रानो है ।
 ताके अगवानो पञ्च योद्धा उ कतल किये
 और रथो सङ्घी सब अरिदल भानो है ॥
 ऐसो कोउ सुभट जगत में न देखियत जाके आगे
 काल हू कंपाय के परानो है ।
 नोति ब्रह्मवादको चलावत है आठो याम
 सुन्दर कहत भक्त शूर जग जानो है ॥

काम सो प्रबल महा जोते जिन तीनो लोक
 सो तो एक साधुके विचार आगे हारो है ।
 क्रोध सो कराल जाके देखत न धरि धीर सो
 उ साधु अमा के हथियारसों विदारो है ॥
 लोभ सो सुभट साधु तोष सो गिराय दिशो मोह
 सेनापति साधु ज्ञान सों प्रहारो है ।
 सुन्दर कहत ऐसो साधु कोउ शूरवीर ताकि
 ताकि सबहो रिपुन दल मारो है ॥

मारै काम क्रोध जिन लोभ मोह पौस डारि
 इन्द्रिय कतल करि कियो रजपूतो है ।

मारो मदमत्त मन मारो अहङ्कार मौर मारि
 मद मत्सरउ ऐसो रण रूतो है ॥
 मारो आशा लक्ष्णा जिन यापनी सापनी दोउ
 सबकों प्रहार निजपदूरि पङ्गतो है ।
 सुन्दर कहत ऐसो साधु कोउ शूरवीर वेरो सब
 मारिके निश्चित होइ सूतो है ॥

वसन—चौताला

किये जिन मन हाथ इन्द्रिन को सब साथ घेरि घेरि
 आपने इ नाथ सों लगाये हैं ।
 औरउ अनेक वेरो मारै सब युद्ध करि काम क्रोध
 लोभ मोह खोदके बहाये हैं ॥
 किये हैं संग्राम जिन दिये हैं भगाय दल ऐसे
 महा सुभट जे ग्रथनि में गाये हैं ।
 सुन्दर कहत और शूर योद्धा खपि गये साधु
 शूरवीर वेइ जगत में आये हैं ॥

२

महामत्त हाथो मन राखा है पकरि जिन
 अति हो प्रचण्ड जामें वहत गुमान है ।
 काम क्रोध लोभ मोह बांधे चारो पांव पुनि
 छूटने न पावै नैक प्राण फीलधान है ॥
 कबहुं तो करे और सावधान सांभ भोर
 सदा एक हाथ में अङ्गुस गुरुज्ञान है ।
 सुन्दर कहत और काहूके न वश होइ ऐसो कौन
 शूरवीर साधुके समान है ॥

साधुको अह

वहार—तिताला

प्रोति प्रचण्ड लगे परब्रह्महि और सबे कछु
 लागत फीको ।
 शुद्ध हृदय मति होइ सुनिर्मल हंतप्रभाव
 मिटे सब जीको ॥
 गोष्ठीज्ञान अमल बल जहां सुन्दर जैसे
 प्रवाह नदी को ।

ताहि तो जानि करौ निशिवासर साधुको सङ्ग
सदा अति नौको ॥

२

जो कोउ जाइ मिले उनसो नर होत
पवित्र लगे हरिरङ्गा ।

हैत कलङ्क सबे मिट जात जु नौचङ्ग जाय
कै होत उतङ्गा ॥

ज्यों जल भीर मलीन मही अति गङ्ग मिले होइ
जात है गङ्गा ।

सुन्दर शुद्ध करै ततकाल सो है जग माहि
बड़ी सतसङ्गा ॥

नहार—यत्

ज्यौ लट भङ्ग करि अपने सम ता सम भिन्न कहै
नहि कोई ।

ज्यौ हुम भीर अनेक हि भातिन चन्दनके
टिग चन्दन होई ॥

ज्यौ जल सुद्र मिले जब गङ्गहि होत पवित्र
वहै जल सोई ।

सुन्दर जाति स्वभाव मिटे सब साधुके सङ्ग ते
साधु हि होई ॥

नहार—चीताला

जो कोउ आवत है उनके टिग ताहि सुनावत
शब्द सन्देसा ।

ताहि कै तैसी ही ओषधि खावत जाहि कै
रोग हिं जानत जेसो ॥

कर्म कलङ्क ही काटत है सब शुद्ध करै पुनि
कश्चन तेसो ।

सुन्दर वस्तु विचारत है नित सन्तन को जु
प्रभाव है एसो ॥

२

जो परब्रह्म मिथ्यो कोउ चाहत तो नित सन्त
समागम कीजे ।

अन्तर भेदि निरन्तर हूँ करि लै उनकी
अपनो मन दीजे ॥

वे सुख द्वार उचार करे कहु सो अनयास
सुधारस पीजे ।

सुन्दर सूर्य प्रकाशत है उर भीर अङ्गण
सबे तम छोजे ॥

नहार—यत्

जा दिन तैं सतसङ्ग मिथ्यो तब ता दिन तैं
भ्रम भाग गयो है ।

भीर उपाय थके सबही जब सन्तन सोहम ज्ञान
दयो है ॥

पोत पवारहि क्यो करि छूवत एक अमोलिक
लाल लयो है ।

कौन प्रकार रहै रजनी तम सुन्दर सूर्य
प्रकाश भयो है ॥

नहार—चीताला

सन्त सदा सबको हित वाञ्छत जानत है
नर वृद्धत काढ़े ।

दे उपदेश मिटाइ सबे भ्रम ले करि ज्ञान
जहाजहि चाढ़े ॥

ये विषया सुख नाहि न छाड़ित ज्यों कपि
मूढ़ गहे शठ गाढ़े ।

सुन्दर यों दुःखकों सुख मानत हाट हि हाट
विकावत चाढ़े ॥

२

सो अनयास तरे भवसागर जो सतसङ्गति में
चलि आवे ।

ज्यो कणिकारण भेद करे कहु आइ चढ़े
तिहिं ताव चढ़ावे ॥

ब्राह्मण अत्रिय वैश्य शूद्र खेच्छु चांडाल हि
पार लंघावे ।

सुन्दर बार कछु नहीं लागत या नरदेह
अभयपद पावे ॥

२

ज्यों हम खाहि पिये अरु ओठहिं तैसेहि
ए सब लोक वखाने ।

ज्यो जल में शशिके प्रतिविम्ब हि आप
समा जलजन्तु प्रमाने ॥
ज्यो खगु छांह धरापर दीसत सुन्दर पक्षी
उड़े असमाने ।
ज्यो शठ देहनके छत देखत सन्तानकी गति
क्या कोउ जाने ॥

जंगला—चोताला

जो खपरा कर लै घर डोलत भांगत भीखहिं
तो नहिं लाजे ।
जो सुख सेज पटम्बर चम्बर सावत चन्दन
तो भति साजे ॥
जो कोउ आइ कहे सुख ते कहु जानत ताहि
वयारसी बाजे ।
सुन्दर संशय दूरि भयो सब जो कहु साधु
करे सोइ छाजे ॥

कोउक निन्दत कोउक वन्दत कोउक आइके
देत है भक्षण ।
कोउक आइ लगावत चन्दन कोउक डारत
धुरि ततक्षण ॥
कोउ कहे यह मूरख दीसत कोउ कहे यह
आहि विचक्षण ।
सुन्दर काह सों राग न हेष न ए सब जानहु
साधुके लक्षण ॥

तात मिले पुनि मात मिले सुत आत मिले
युवती सुखदायी ।
राज मिले गज वाजि मिले सब साज मिले
मनवाञ्छित खायी ॥
लोक मिले सुरलोक मिले विधिलोक मिले
वैकुण्ठहिं आयी ।
सुन्दर चीर मिले सब ही सुख दुर्लभ साधु
समागम भायी ॥

मनोहरचन्द—चोताला

देवहु भएते कहा इन्द्रहु भएते कहा विधिहु
के लोक तें कहा जो आइयतु है ।
मानुष भए तें कहा भूपति भए तें कहा द्विजहु
भए तें कहा पार जाइयतु है ॥
पशुहु भए तें कहा पक्षिहु भए तें कहा पन्नग
भएते कहो क्यों अघाइयतु है ।
छूटिबेकी सुन्दर उपाय एक साधुसङ्ग जिनकी
छपाते भति सुख पाइयतु है ॥

२

इन्द्राणी शृङ्गार करि चन्दन लगायो भङ्ग वाहि
देखि इन्द्र भति कामवश भयो है ।
शूकरी हु कर्दमके चहल में लोट करि भागे जाइ
शूकरको मन हर लयो है ॥
जैसो सुख शूकर की तैसो सुख मधवाकी तैसो
सुख नर पशु पक्षिन की दयो है ।
सुन्दर कहत जाकी भयो ब्रह्मानन्द सुख सोइ साधु
जगत जनम जीत गयो है ॥

३

धूलि जैसो धन जाके शूलसे संसार सुख भूल जैसो
भाज देखे भन्त कसी यारी है ।
पाप जैसो प्रभुताई सांप जैसो सन्मान बड़ाइ हु
वीकूनो सी नागनि सी नारी है ॥
अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधि लोक
कीरति कसइ जैसो सिद्धि सोट डारी है ।
वासना न कोउ वाकी ऐसी मति सदा जाकी
सुन्दर कहत ताहि वन्दना हमारी है ॥

४

काम ही न क्रोध जाके लोभ ही न मोह ताके
मद ही न मत्सर कोउ न विकारो है ।
दुःख ही न सुख माने पाप ही न पुण्य जाने हरष न
शोक आनि देहहो तें न्यारो है ॥

निन्दा न प्रशंसा कर राग ही न दोष धरे लीन ही न
देन ताके कहु न पसारो है ।

सुन्दर कहत ताकी अगम अगाध गति ऐसो
कोउ साधु सो तो रामजीको प्यारो है ॥

पीलू—चोताला

आठों याम यम नेम आठों जाम रहे प्रेम आठों
याम योग यज्ञ कियो बहु दान जू ।

आठों याम जपतप आठों याम लियो व्रत आठों
याम तोरथ करत है न्हान जू ॥

आठों याम पूजाविधि आठों याम आरति हु
आठों याम दण्डवत् सुमिरण ध्यान जू ।

सुन्दर कहत तिन किया आठों याम सब सोइ
साधु जाके उर एक भगवान जू ॥

पीलू—यत्

जैसे आरसोको मैल काटत सैकलगर मुख में
न फेर कोउ रहे वाको पोत है ।

जैसे वैद्य नेन में सलाक मेलि शुद्ध करे पटल गिराते
तहां ज्यो को त्योहो जोत है ॥

जैसे वायु बादर बखेरके उड़ाइ देत रवि तो
अकाश माहि सदा उदोत है ।

सुन्दर कहत भ्रम सङ्ग में विलाइ जात साधुहीके
सङ्गते स्वरूप ज्ञान होत है ॥

१

मनका दादुर जीव सब जिवाए जिन वरषत
वाणी मुख मेघ कोसी धार कौ ।

देत उपदेश कोउ स्वारथ न सबलेश निशिदिन
करत हैं ब्रह्महो विचार कौ ॥

धीरउ सन्देहन मिटावत निमिष माहि सूरज
मिटावत है जैसे अन्धकार कौ ।

सुन्दर कहत हंस वासो सुखसागरके सन्तजन
आए हैं सु पर उपकार कौ ॥

१

होरा ही न लाल हो न पारस न चिन्तामणि धीरउ
अनेकन कहो कहा कीजिये ।

कामधेनु सुरतरु चन्दन नदो समुद्र नोजा जहाज
बैठि कबहूँ क ह्रीजिये ॥

पृथ्वी अप तेज वायु व्योम लों सकल जड चन्द्र सूर्य
शीतल तप्त गुण लीजिये ।

सुन्दर विचार हम सोधि सब देखे लोक सन्तनके
सम कहौ और कहा दीजिये ॥

पीलू—तिताला

जिन तन मन प्राण दोहो सब मेरे हेतु और
उ ममत्व बुद्धि आपनि उठाई है ।

जागत हुं सोवत हुं गावत है मेरे गुण मेरोइ
भजन ध्यान दूसरी न कारि है ॥

तिनके तो मैं पीछो फिरत हौं निशिदिन
सुन्दर कहत मेरो उनते बढ़ाई है ।

वे हैं मेरे प्रिय मैं हूँ उनके अधोन सदा सन्तनको
महिमा तो श्रीमुख गाई है ॥

२

प्रथम सुयश लेत शीलहु सन्तोष लेत क्षमा
दयाधर्म लेत पाप ते डरत है ।

इन्द्रिनको घेरि लेत मनहुं कां फेरि लेत योगको
युक्ति लेत ध्यान ले धरत है ॥

गुरु को वचन लेत हरि जको नाम लेत आत्माको
सोधि लेत भोजल तरत है ।

सुन्दर कहत जग सन्त कहु लेत नहिं सन्तजन
निशिदिन लेवोइ करत है ॥

भंकीटो—तिताला

सांचो उपदेश देत भलो भली शोख देत समता
सुबुधि देत कुमति हरतु है ।

मारग दिखाय देत भावहु भक्ति देत प्रेमको
प्रतीति देत अभय भरतु है ॥

ज्ञान देत ध्यान देत आत्मा विचार देत ब्रह्मको
बताइ देत ब्रह्म में चतुर है ।

सुन्दर कहत जग सन्त कहु देत नहिं सन्तजन
निशिदिन देवोइ करतु है ॥

२
जगत व्यवहार सब देखत है जपर को
अन्तःकरण कौन नेक पहिंचानि है ।
छादनके भोजनके हलन चलन कछू और कोउ
क्रिया कै तो सोइ वो वखानि है ॥
आपनेइ गुणनि आरोप अज्ञानो नर सुन्दर कहत
ताते निन्दाइ कौ ठानि है ।
भाव में तो अन्तर है राति और दिन जैसे
साधुकी परोक्षा कोउ कैसे करि जानि है ॥

३
कूप में कौ मेड़का तो कूपका सराहत है
राजहंस सौं कहे कितोक तेरो सर है ।
मसका कहत मेरो सरभर कौन उड़े मेरे आगे
गरुड़को केतिएक जर है ॥
गुबरेड़ा गोली कौं ढराइ करि माने मोद
मधुप कौं निन्दत सुगन्ध जाको घर है ।
आपनि न जानै गति सन्तन कौं नाम धरे सुन्दर
कहत देखो ऐसो मूठ नर है ॥

४
कोउ साधु भजनी कोउ लवलीन अति कवचं
प्रारब्ध कर्म धका आइ दयो है ।
जैसे कोउ मारग में चलते अखट परे फेरि करि
उठे तब उभे पथ लयो है ॥
जैसे कोउ चन्द्रमाको पूर्णकला घोष होइ सुन्दर
सकल लोक द्वितीया कौ नयो है ।
देवकौ देवात न गयो तो कहा भया वोर पातरि
को मोल सु तो नाहीं कछू गयो है ॥

५
वहो दागाबाणु वहो कुठो कलह भञ्जो वही
महापापो वाके नख शिख कीच है ।
वहो गुरुद्रोहो गज ब्राह्मणकी हननहार वही
आम्नाको घाती हिंसा वाके बीच है ॥
अघको समुद्र वहो अघको पहार वहो सुन्दर
कहत वाको बुरो भांति मीच है ।

वहो है मलेछ वहो चण्डाल बुरे ते बुरो सन्तनको
निन्दा करे सो तो महा मोच है ॥

६
परि है वज्राङ्ग ताके उपरि अचान चक्र धरि
उड़ि जात कइं ठाहर न पाइ है ।
पोछे कै उकुग महा नरक में परे जाइ जपर ते
यमहु को भार वह खाइ है ॥
ताके पोछे भूत प्रेत स्थावर जङ्गम योनि सहेगो
सङ्कट तब पोछे पछिताइ है ।
सुन्दर कहत और भुगते अनन्त दुःख सन्तन कौं
निन्दे ताको सत्यानास जाइ है ॥

७
ताहो कौं भक्ति भाव उपजि है अनायास जाकी
मति सन्तन सौं सदा अनुरागो है ।
अति सुख पावे ताके दुःख सब दूरि करे और उ
काइ को जिनि निन्दा मुख त्यागो है ॥
संसारको पाथ काटि पाइ है परम पद सन्त
सङ्ग हो ते जाको ऐसो मति जागो है ।
सुन्दर कहत ताको तुरत कल्याण होइ सन्तन को
गुण गहे सोई बड़ि भागो है ॥

८
योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रतादि दान साधन सबस
नहिं याको सर भरि है ।
और कोउ देवो देव उपासना अनेक भांति शङ्का
सब दूरि करि मन ते निडरि है ॥
सबहो के शोर्षपर पाउ दे मुक्ति होइ सुन्दर कहत
सा तो जनमे न मरि है ।
मनवचक्रम करि अन्तर न राख कछू सन्तनको
सेवा करे सोइ निस्सरि है ॥

भक्तिज्ञाननिमित्त अक्ष

सिन्धु—तिताला

बैठत राम हो उठत राम हो बोखत राम हो
राम रहो है ।

जीमत राम ही जीवत राम ही जीमति राम ही
राम गहो है ॥
जागत राम ही सोवत राम ही जीवत राम ही
राम कहो है ॥
देत हू राम ही लेत हू राम ही सुन्दर राम ही
राम कहो है ॥

२

जीव हू राम ही नीव हू राम ही वक्र हू राम ही
राम ही गाजे ॥
शीर्ष हू राम ही हाथ हू राम ही पांव हू राम ही
राम ही साजे ॥
पेट हू राम ही पीठ हू राम ही रोम हू राम ही
राम ही बाजे ॥
अन्तर राम निरन्तर राम ही सुन्दर राम ही
राम विराजे ॥

३

भूमि हू राम ही आप हू राम ही तेज हू राम ही
वायु हू रामि ॥
ब्योम हू राम ही चन्द्र हू राम ही सूरज राम ही
सोतन घामि ॥
आदि हू राम ही अन्त हू राम ही रोम रोम
राम ही राम ही थामि ॥
सुन्दर रामसो पूरि रहो जग राम बनावत है
सब कामि ॥

४

देख हू राम अदेख हू राम ही लेख हू राम
अलेख हू रामि ॥
एक हू राम अनेक हू राम ही शेष हू राम
अशेष हू रामि ॥
मीन हू राम अमीन हू राम ही गीण हू राम ही
भीन हू रामि ॥
बाहिर राम ही भीतर राम ही सुन्दर राम ही है
जगजामि ॥

५

दूर हू राम नगीच हू राम ही देश हू राम
प्रदेश हू रामि ॥
पूरब राम ही पश्चिम राम ही दक्षिण राम ही
उत्तर धामि ॥
भागें हू राम ही पीछें हू राम ही व्यापक
राम ही है वनघामि ॥
सुन्दर राम दशोदिश पूरण स्वर्ग हू राम
पताल हू रामि ॥

६

आप हू राम ओ पावक राम ही भस्मन राम
संवारण रामि ॥
दृष्ट हू राम अदृष्ट हू राम ही इष्ट हू राम
करे सब कामि ॥
वर्ण हू राम अवर्ण हू राम ही रक्त न पीत न
श्वेत न श्यामि ॥
शून्य हू राम अशून्य हू राम ही सुन्दर राम ही
नाम अनामि ॥

अत्र विपर्ययः अत्र

चिन्म—तिताला

अवण हू देख सुने पुनि नयन हू जिह्वा
सूँघ नासिका बोल ॥
गुदा खाय इन्द्रिय जल पीवे विन ही हाथ सुमेर
हि तोल ॥
ऊँचे पाइ मूँड़ नीचे कहूँ विचरत तीन
लोक में डोल ॥
सुन्दर दास कहे शूनि ज्ञानी भली भाँति या
अर्थ हि खोल ॥

७

अन्धा तीन लोक को देखे बहरा सुने बहुत
विधि नाद ॥
नकटा वास सकल को लेवे गूँगा करे बहुत
सम्बाद ॥

टूटा पकरि उठावै पर्वत पङ्कल करै नृत्य आकाद ।
जो कोउ याको अर्थ विचारै सुन्दर सोई पावै खाद ॥

१

कुम्हार को कीरी गिलि बैठी सिंह हिं खाइ
अधानी खाल ।

महरी अग्नि माहि सुख पायो जल में
रहती बहुत बेहाल ॥

पङ्क चढ़ी पर्वत के ऊपर मृतकहिं देखि
डरानो काल ।

जाको अनुभव होइ सु जाने सुन्दर ऐसा
उलटा ख्याल ॥

४

बुन्द ही माझ समुद्र समानो राई माहि
समानो मेह ।

पानी माहि तुम्बिका बूड़ी पाहन तिरत
में लागी बेह ॥

तीन लोक में भया तमाशा सूरज कियो
सकल अंधेर ।

मूरख होइ सु अर्थ हिं पावै सुन्दर कहै
शब्द में फेर ॥

५

महरी बगुला को गहिं खायो मूसे खायो
कारो सांप ।

सुग्गी पकरि बिलैया खाई ताके सुये गयो सन्ताप ॥
बैठी अपनी मां गहिं खाई बैटे अपनी खायो बाप ।

सुन्दर जो या अर्थ हिं बूझे सो पण्डित सो
जाने आप ॥

६

देव माहिते देवल प्रगथी देवल माहिते
प्रगथी देव ।

शिष्य गुरु हिं उपदेशन लाग्यो राजा करै
रङ्गको सेव ॥

बन्ध्या पुत्र पङ्क एक जायो ताको घर खोवनकी टेव ।

सुन्दर कहै सो पण्डित ज्ञाता जो कोउ याको
जाने भेव ॥

काफ़ी—तिताला

कमल माहिं तै पानी उपज्यौ पानी माहि तें
उपज्यौ सूर ।

सूरमाहि शीतलता उपजी शीतलता में
सुख भरपूर ॥

ता सुख की अय होइ न कबहूँ सदा एक रस
निकट न दूर ।

सुन्दर कहै सख वह यों हीं या माहिं रती
न जानहु कूर ॥

१

हंस चढ़ी ब्रह्माके ऊपर गरुड़ चढ़ी पुनि
हरिकी पीठ ।

बैल चढ़ी है शिवके ऊपर सो हम देख्यो
अपनी दीठ ॥

देव चढ़ी पातीके ऊपर जरख चढ़ी
हायन पै नीठ ।

सुन्दर एक अचम्भा ज्ञवा पानी माहि जले अङ्गीठ ॥

१

कपड़ा धोबी को गहिं धोवै माटी वपुरी
गढ़े कुम्हार ।

सुई विचारी दरजी हिं सीधे सोना तावे
पकरि सुनार ॥

लकरी बढई को गहिं छीले खाल सु बैठी
धवै लोहार ।

सुन्दर दास कहै सो ज्ञानी जो कोउ या को
करै विचार ॥

४

जा घर माहि बहुत सुख पायो ता घर माहि
वसे सब कौन ।

लागी सबे मिठाई खारी मीठो लागो एक
बहूँ कौन ॥

पर्वत उड़े रुई स्थिर बैठो ऐसो कोच एक
बाजो पौन ।

सुन्दर कहे न माने कोज ता ते पकरि
बैठ सुख मौन ॥

५

रजना माहि दिवस हम देख्यो दिवस माहि
हम देख्यो रात ।

तेल भरो सम्पूरण ता में दीपक जरे जरे
नहि बात ॥

पुरुष एक पानो में प्रगटौ ता निगुराको कौसो जात ।
सुन्दर सोई लई अर्थ को जो नित करे पराई तात ॥

६

उनयो मीघ घटा चहुं दिसि तें वर्षण लग्यो
अखण्डित धार ।

बूझो मीरु नदी सब सूखी भर लाग्यो
निशिदिन एक सार ॥

कांसा परो वीजुली जपर कियो सर्व कुटुम्ब संहार ।
सुन्दर अर्थ अनूपम या को पण्डित होइ सो
करे विचार ॥

७

बाड़ी माहो हालो निपण्यो हालो माहो
निपजो खेत ।

इंस हि उलटि श्याम रङ्ग लाग्यो भ्रमर उलटि
कर हवा सेत ॥

अग्नि ह उलटि राह को आसो सूर्य उलटि करि
आस्यो केत ।

सुन्दर सो गुरु को त्यजि भाग्यो निगुरा सेती
बांध्यो हित ॥

८

अग्नि मंथन करि लकड़ी काटो सो वह लकड़ी
प्राण अधार ।

पानि मंथ करि घोव निकास्यो सो घृत खेवे
वारंवार ॥

दूध दहो को इच्छा भागो जाको मयत
सकस संसार ।

सुन्दर अब तौ भये सुखारे चिन्ता रहो न
एक लगार ॥

९

पत्र माहि भोली गहि राखो योगी भिद्या
मांगन जाय ।

जागे जगत सोवई गोरख ऐसा शब्द सुनावे आय ।
भिद्या परे बहुत विधि ताकी सो वह भिद्या
बेल हिं खाय ।

सुन्दर योगी युग युग जीवै ता अवधूतकी
दूरि बलाय ॥

१०

निर्दय होइ तरे पशुघातक दयावन्त बूड़े भवमाहि ।
लोभी लगे सबन को प्यारो निर्लोभी को

ठौर हि नाहि ॥
मिथ्यावादो मिले ब्रह्म को सत्य कहे ते

यमपुर जाहि ।
सुन्दर धूप माहि शीतलता जलत रहै ते बैठे छाहि ॥

११

माय बाप तजि धो उमदानी इर्षत चलो
खसमके पास ।

बहू बेचारी बड़ी बख्तावर जाके कहे
चलत है सास ॥

भाई भलो खरो हितकारी सर्व कुटुम्बको
कियो नास ।

ऐसी विधि घर वख्यो हमारो सुख सौ सोवे
सुन्दर दास ॥

१२

परधन हरे करे परनिन्दा पर धीको राखै
घर माहि ।

मांस खाइ मदिरा पुनि पीवै ताहि मुक्ति को
संशय नाहि ॥

अकारम गड़े कर्म सब त्यागी ताको सङ्गति
पाप नसाहि ।

ऐसी करै सो सन्त कहावे सुन्दर अवर उपजि
मरि जाहि ।

११

बड़ही चरखा भसो संवारो फिरने लाग्यो
नीकी भांत ।

बड़ सास को कहि समुभावे तू मेरे ठिग
बैठो कात ।

नेहो तार न टूटे कबड़ पूनी घटे दिवस नहिं रात ।
सुन्दर विधि सो बुने जुलाहा खासा निपजै
उंची जात ।

१४

घर घर फिरि कुमारी कन्या जने जने सो
करता सङ्ग ।

वेष्टा सो तो भई पतिवरता एक पुरुषके लागी अङ्ग ।
कलियुग माही सतयुग थापो पापो उदय
धर्म को भङ्ग ।

सुन्दर कहे सु अर्थ हिं पावे जो नीके करि
त्यजि अनङ्ग ।

१५

विप्र रसोई करने लाग्यो चौका भीतर बैठो आइ ।
लकरो माही चूल्हो दीयो रोटो जपर तवा चढ़ाइ ।
खिचरो माही हंडिया रांधी सालन भाक
धतूरा खाइ ।

सुन्दर जीमत अति सुख पायो अब के भोजन
कियो अघाइ ।

१६

टंल छलटि नायक को लाग्यो वस्तु माहि
भरि गोन अपार ।

भसो भांति को सौदा कोया आप हि
सन्तरया संसार ।

नायकनी पुनि हर्षत डोले मोहि मिथ्यो
नीको भर्तार ।

पूंजी जाइ ग्राह को सोपी सुन्दर सिर ते
उतरी भार ।

१०

बणिक एक बनिजो को आयो परे ता बरा
भारो भेट ।

भसो वस्तु कहु लीन्हीं दोन्हीं खैंच गठरिया
बांधो एठ ।

सौदा कियो चख्यो पुनि घर को लेखा कियो
बर तसे बैठ ।

सुन्दर ग्राह खुशो अति ह्वो बैल गयो पूंजो में पेठ ।

१८

पहरायत घर मुखो ग्राह को रक्षा कर ने
त्यागो चोर ।

कोतवाल काठो करि बांध्यो छूटे नहीं सांभ
अब भोर ।

राजा गांव छोड़ि कर भाग्यो हुवो सकल
जगत में शोर ।

प्रजा सुखो भई नगर में सुन्दर कोई जुलम न जोर ।

१८

राजा फिरि विपत्ति को मारो घर घर टकरा
मांगी भौख ।

पाय पयादो निशिदिन डोलै घोरा चालि
सकै नहीं वीख ।

भाक अरंदुको लकरो चौखे छाड़े बहुत
रसभरो ईख ।

सुन्दर कोउ जगत् में विरलो या मूर्ख कोल विसोख ।

२०

पानी जरे पुकारि निशिदिन ताको अग्नि
बुभावे आइ ।

हं शीतल तू तप्त भयो क्यो वारंवार कहे समुभाइ ।

मेरो लपट तोहि जो लागे तो तू भौ शीतल
हो जाइ ।

कबड़ जरनि फेरि नहि उपजे सुन्दर सुख में
रहे समाइ ।

२१

रुसम परो जोरुके पौछे कहो न माने भौंड़ी रांड ।
जित तित फिर भटकती योही तेतो किये
जगत में भांड ॥
तो ज भूख न भागी तेरो तू गिल बैठो सारी मांड ।
सुन्दर कहे सीख सुनि मेरी अब तू घर घर
फिरवो छांड ॥

२२

पंथी मांछि पंथ चलि आयो सो वह पंथ लख्यो
नहि जाइ ।
वाही पंथ चल्थो उठि पंथी निर्भय देशमें
पहुंच्यो आइ ॥
तहां दुकाल परे नहीं कबहूँ सदा सुभिच
रहे ठहराइ ।
सुन्दर दुखी न कोऊ दीखे अच्य सुख में रहे समाइ ॥

२३

एक पाखेटी वन में आयो खेलन लाय्यो
भली शिकार ।
करमें घनुष कमर में तरकश सावज घेरे वारंवार ॥
मारं! सिंह व्याघ्र पुनि मारी मारी बहुत
मृगनिकी डार ।
ऐसे सकल मारि घर लायो सुन्दर राज हि
कियो सुहार ॥

२४

शुकके वचन अनृत मय ऐसे कोकिल धार रहे
मन माहि ।
सारी सुनै भागवत कबहूँ सारस तीह्र पावै नाहि ॥
रंस सुगै सुकृता फल अर्थ हि सुन्दर
मानसरोवर नाहि ।
काग कवीश्वर विषयी जेत ते सब दौरि
करं कहि जाहि ॥

२५

नष्ट होहि द्विज धृष्ट क्रिया करि कष्ट किये
नहि पावै ठौर ।

महिमा सकल गई तिन केरी रहत परग
नित रस सरमौर ॥
जित तित फिरत नहीं कछु पादर तिनू कौ
कोउ न घालै कौर ।
सुन्दर दास कहे समुभावै ऐसी कोउ करो
मति और ॥

२६

शास्त्र वेद पुराण पढ़े किन पुनि व्याकरण
पढ़ै ते कोइ ।
सन्ध्या करे गहे षट्कर्म हि गुण अरु काल
विचारे सोइ ॥
ऐसी काम तबही बनि आवै मनमें सब तजि
राखे दोइ ।
सुन्दर दास कहे सुनि पण्डित राम नाम विन
सुक्ति न होइ ॥

अपने भावको अह

धनायो—तिताला

एक ही आपुनो भाव जहां तहां बुद्धिके जोरतें
विक्रम भासे ।
जो यह क्रूर तो क्रूर उहां पुनि याके खिजते
उहां पुनि खासे ॥
जो यह साधु तो साधु उहां पुनि याके हसते
उहां पुनि हासे ॥
कैसोइ आपु करे मुख सुन्दर तैसोइ दर्पण
माहि प्रकासे ॥

मनीहरचन्द्र—चौताला

उैसे श्वान काचके सदन मध्य देखि और भूकि
भूकि मरत करत अभिमान जू ।
जैसे गज स्फटिक शिला सी अरि तोरे दम्त
उैसे सिंह कूप मांछि उभकि भुलान ज ॥
जैसे कोउ फेरी खात फिरत सुखेवे जग तैसे
ही सुन्दर सब तेरोई अज्ञान जू ।
आपही को भ्रम सो तो दूसरो दिखारि देत आपु
को विचारे कोउ दूसरो न जान ज ॥

वायानट—चीताला

नीच उच्च बुरी भली सुजन दुजन पुनि पण्डित
मूरख शत्रु मित्र रङ्ग राव है ॥

मान अपमान पुनि पाप सुख दुःख दोष स्वरग
नरक बन्ध मोक्ष हुको चाव है ॥

देवता असुर भूत प्रेत कीट कुम्भर भी पशु अरु
पक्षी ज्ञान शूकर विलाव है ॥

सुन्दर कहत यह एकद्व अनेक रूप जोइ कह
देखिये सु आपनोइ भाव है ॥

याही के जागत काम याही के जागत क्रोध
याही के जागत लोभ याही मोह माता है ॥

याकी याही रौ होत या की याही मित्र होत
या की याही सुख देत याकी याही दुःखदाता है ॥

याही ब्रह्मा याही रुद्र याही विष्णु देखियत
याहो देव दैत्य तक्ष सकल सन्दाता है ॥

याही की प्रभाव सो तो याही को दिखाइ देत
सुन्दर कहत यह आत्मा विख्याता है ॥

याही कोतो भाव याहि शङ्का उपजावत है
याही को तो भाव याही निशङ्क करत है ॥
याही को तो भाव याकी भूत प्रेत होइ लागि
याही को तो भाव याहो कुमति हरत है ॥

याही कोतो भाव याकी वायु को वधूरा करे
याही को तो भाव याही धिरके धरत है ॥
याही को तो भाव याकी धारमें बहाय देत
सुन्दर याही को भाव याही सेत रत है ॥

महार-सहाना—यत्

आप ही को भाव सु तो आपकी प्रगट होत
आप ही आरोप करि आप मन लायो है ॥

देवो अन्य देव कोउ भावको उपासे ताहि
कहे में स्त्रीपुत्रधन इनहोते पायो है ॥

जैसे ज्ञान हाइको चखोर करि माने मोद
आपही को सुख फेरि लोइ चाट लायो है ॥

तैसे ही सुन्दर यह आपु हो चैतन्य आहि
आपुने अज्ञान करि जोर सो बंधायो है ॥

इन्द्रवज्र—यत्

नीचते नीचर उच्चते ऊपर आगते आगे है
पीछते पीछो ॥

दूरिते दूरि नगीचते नीरे हि आड़ेते आड़ो है
तीछते तीछो ॥

बाहिर भीतर भीतर बाहिर ज्यों कोइ जाने
त्यों ही करि ईछो ॥

जैसेइ आपुनो भाव है सुन्दर तैसेइ है दृग
खोलिके वीछो ॥

आपुने भावते सूर्यसो दीसत आपुने भावते
चन्द्र सो भावे ॥

आपुने भावते तार अनन्त जू आपने भावते
विद्युलतासे ॥

आपुने भावते नूर है तेज है आपुने भावते
ज्योति प्रकासे ॥

तैसेहो ताहि दिखावत सुन्दर जैसे ही होत है
ताहीको भावे ॥

आपुने भावते सेवक साहिब आपुने भाव
सबे कोउ धावे ॥

आपुने भावते अन्य उपासत आपने भावते
भक्ति हु पावे ॥

आपुने भावते दुष्ट संहारत आपुने भावते
बाहिर भावे ॥

जैसेइ आपुनो भाव है सुन्दर ताही को
तैसेइ होइ दिखावे ॥

आपुने भावते दूर बतावत आपुने भाव
नजीक वखानो ॥

आपुने भावते दूध पिवायो सु आपुने भावते
वीठल जानो ॥

आपुने भावते चारि भुजा पुनि आपुने भावते
सींग सो मानो ।
सुन्दर आपुन भावको कारण आपु ही
पूरणब्रह्म पिछानो ॥

५

आपुने भावते होइ उदास ज् आपुने भावसो
प्रेम सो रोवे ।
आपुने भाव मिथ्यो पुनि जानत आपुने भावते
अन्तर जीवे ॥

आपुने भाव रहे नित जागत आपुने भाव
समाधिमें सोवे ।
सुन्दर जैसोइ भाव है आपुनो तैसोइ आपु
तहां तहां होवे ॥

६

आपुने भावते भूलि परो भ्रम देह स्वरूप भयो
अभिमानो ।

आपुने भावते चञ्चलता अति आपुने भावते
बुद्धि थिरानी ॥

आपुने भावते आपु विसारत आपुने भावते
आत्म जानी ।

सुन्दर जैसोइ भाव है आपुनो तैसोइ होइ
गयो यह प्रानी ॥

स्वरूप विचारण अत्र

मलार—चौताला

जा घटकी उनहार है जैसि हि ता घट चेतन
तैसोइ दीसे ।

हाथी की देह में हाथी सो मानत चीटो की
देहमें चीटो कौरीसे ॥

सिंहकी देह में सिंह सो मानत कौसकी देह
में मानत कौसे ।

जैसे उपाधि भई जहां सुन्दर तैसोइ होइ
रह्यो नख सीसे ॥

२

जैसेही पावक काठके योगते काठ सो होइ
रह्यो इकाठोरा ।

दौरघ काठमें दौरघ लागत चोरे से काठमें
लागत चोरा ॥

आपुनो रूप प्रकाश करे जइ जारि करे
तब चोरको चोरा ।

तैसोइ सुन्दर चेतन आपु सु आपु को नाहि न
जानत चोरा ॥

मनोहरकन्द—चौताला

अजर अमर अविनाशो अज स्वप्रकाश कहत
सकल जनश्रुति अवगाहे ते ।

निर्गुण निर्मल अति शुद्ध निरवन्ध नित्य ऐसोउ
कहत और ग्रन्थनिके थाहेते ॥

व्यापक अखण्ड एकरस परिपूरण है सुन्दर
सकल रमि रह्यो ब्रह्म ताहेते ।

सहज सदा उदोत या होते अज्ञानो होत
आपुहोको आपु भूलि गयो सोतो काहेते ॥

३

जैसे मीन मांसको निगलि जात लोभ लगि
लोहको कण्टक नहि जानत उमाहेते ।

जैसे कपि गागरि में मूठ बांधि राखे सट
छांड नही देत सु तौ स्वादहिके वाहेते ॥

जैसे वक नारियल चञ्चुमारि लटकत सुन्दर
सहत दुःख देखि याहि लाहेते ।

देहको संयोगइ इन्द्रनिके वश परो आपहीको
आपु भूलि गयो सुख चाहेते ॥

इन्द्रवचकन्द—तिताला

ज्यो कोउ मद्य पिये अति छाकत नाहि
कहु सुध है भ्रम ऐसी ।

ज्यो काउ खाय रहे ठग मूरिहि जाने नहीं
कहु कारण तैसा ॥

ज्यों कोउ बाखक शरु उ पावत कम्प उठे
अरु जानत भैसो ।

तैसो ही सुन्दर आपुकों भूलि सुदेखहु चेत न
मानत कैसो ॥

१

ज्यों कोउ कूप में भांकि अलापत वैसी ही
भांति सो कूप अलापै ।

जो जल हालत है लगि पौन कहे भ्रमते
प्रतिविम्ब ही कापै ॥

देहके प्राणके जो मनके कृत मानत है सब
मोहीको व्यापै ।

सुन्दर पेंच परौ अतिशय करि भूलि गयो
भ्रमते भ्रम आपै ॥

२

ज्यों हिज कोउक छाड़ि महामति शूद्र भयो करि
आपुको मान्यो ।

ज्यों कोउ भूपति सोवतं सेज सुररु भयो
सुपने महि जान्यो ॥

ज्यों कोउ रूपको राशि अत्यन्त कुरूप कहे
भ्रम भेदक आन्यो ।

तैसे हो सुन्दर देह सो हँ करि या भ्रम आप हो
आपु भुलान्यो ॥

४

एकद व्यापक वस्तु निरन्तर विश्व नहीं
यह ब्रह्म विलासे ।

ज्यों नर मन्त्रि सौं दृग बांधत है कहु और हो
और ही भासे ॥

ज्यों रजनी महि वृक्षि परे नहीं जो लगि
सूरज नाहि प्रकासे ।

ज्यों यह आपुन आपु न जानत सुन्दर हो रह्यो
सुन्दर दासे ॥

मनोहर हृन्द—सितावा

इन्द्रिनिको प्रेरि पुनि इन्द्रिनके पीछे परौ आपुनी
अविद्या करि आपतन गह्यो है ।

जोर जोर देहकों सहट कहु परे आर सोर सोर
माने आपु याते दुख सज्यो है ॥

भ्रमत भ्रमत कहुं भ्रम को न आवे उर चिरकाल
बौख्यो पै स्वरूप को न लख्यो हे ।

सुन्दर कहत देखो भ्रमकी प्रबलतार्ह भूत
निमें भूत मिलि भूत हँ रह्यो हे ॥

२

जैसे शुक मलिनोन छाड़ि देत चङ्गलते जाने
काहु और मोही बांधि लटकायो है ।

जैसे कपि गुह्ननिकौ ढेरि करि माने आगि
आगे धरि तापै कहु शीत न गंमायो है ॥

जैसे कोउ दिशा भूलि जान हुतो पूरवको उलटि
अपूटो फेरि पश्चिमको धायो है ।

तैसे ही सुन्दर सब आपु हो को भ्रम भयो
आपु हो को भूलि करि आप हो बंधायो है ॥

३

जैसे कोउ कामिनोकें हिये परि च्से बाल
सुपनेमें कहे तेरे पुत्र काहु हयो है ।

जैसे कोउ पुरुषके कण्ठ त्रिसे हुतो मणि टूंदत
फिरत कहु ऐसो भ्रम भयो है ॥

जैसे कोउ याव करि बावरो वकत डोले और हो
को और कहे सुधि भूलि गयो है ।

तैसे ही सुन्दर निज रूपकों विसारि देत
ऐसो भ्रम आपु हो को आपु करि लयो है ॥

४

दीन हीन जोष हँ जात अण अण माहि
देहके सुयोग पराधीन सो रहत है ।

शीत लगे घाम लगे भूख लगे प्यास लगे
शोकमोह मानि अति खेद को लहत है ॥

अन्ध भयो पङ्गु भयो मूक हु वधिर भयो ऐसो
मानि मानि भ्रम नदीमें बहतु है ।

सुन्दर अधिक मोहि याही ते' अचम्भो आहि
भूलि के स्वरूप को अनाथ सो कहतु है ॥

५

जैसे कोउ सुपनेमें कहे मैं तो उंट भयी जागि
करि देखे उहे मानव स्वरूप है ।
जैसे कोउ राजा पुनि सोइ के भिखारी होइ
पांखि उघरी तै महा भुपनिकी भूप है ॥
जैसे कोउ मेचक सों कहे मेरो सिर कहां
मेचक गए तै जाने सिर तो तद्रूप है ।
तैसे ही सुन्दर यह भ्रम करि भूल गए आपु
भ्रमके गर्ते आप अति अनूप है ॥

६

जैसे कोउ पोसतीकी पाग परी भूमि पर
हाथ लेके कहे एक पाग मैं तो पाई है ।
जैसे शैख चिल्लीहु मनोरथके कियो घर कहे
मेरो घर गयो गागरौ गिराई है ॥
जैसे काहु भूत लग्यो वकत है आववांव
सुध सब दूरि भई पीरे मति आई है ।
तैसे ही सुन्दर यह भ्रम करि भूल्यो आपु भ्रमके
गर्ते यह आत्मा सदाई है ॥

७

आपु ही चैतन्य यह इन्द्रियनि चैतन्य करि
आपु ही मगन होइ आनन्द बढ़ाया है ।
जैसे मर शीतकाल सोवत निहाली वोट आपु ही
तपत करि आपु सुख पायो है ॥
जैसे बाल लकड़ी को घोरा करि डाक चढ़
आपु असवार होइ आपु ही कुदायो है ।
तैसे ही सुन्दर यह जड़की संयोग पाइ आपु
सुख मानि मानि आपु ही भुलायो है ॥

जयजयबनौ—यत्

कहं भूल्यो कामरत कहं भूल्यो साधुयत कहं
भूल्यो गृह मध्य कहं वनवासी है ।
कहं भूल्यो नीच जागि कहं भूल्यो ऊंच मानि कहं
भूल्यो मोह व्याधि कहं तो उदासी है ॥

कहं भूल्यो मीन धरि कहं वकवाद करि कहं
भूल्यो मके जाइ कहं भूल्यो कासी है ।
सुन्दर कहत अहङ्कार हीते भूल्यो आप एक आवै
रोज अर दूजी बड़ी हांसी है ॥

२

मैं बहुत सुख पायो मैं बहुत दुःख पायो मैं अनन्त
पुण्य कियो मेरे पोते पाप है ।
मैं कुलीन विद्यावन्त पण्डित प्रवीण महा मैं तो
मूढ़ अकुलीन हीन मेरो बाप है ॥
मैं ही राजा मीरा आन फिरि चहुं चक्र मांझि मैं
तो रङ्ग द्रव्यहीन मोहि तोसे ताप है ॥
सुन्दर कहत अहङ्कार हीते जीव भयी अहङ्कार
गये यह एक ब्रह्म आप है ॥

३

देहइ पुष्ट लगे देहइ दूवरा लगे देहही की
श्रोत लगे देहही की तावरी ।
देह ही सुरूप लगे देह ही कुरूप लगे देह ही
यीवन लगे देह वृद्ध व्यावरी ॥
देह ही की तीर लगे देह ही की तुपक लगे
देह की कृपाण लगे देह ही की घावरी ।
देह ही सी बांधी हेत आपु विषे मान लेत
सुन्दर कहत ऐसी बुद्धिहीन वावरी ॥

इन्द्रवसुधकन्द

सुधमलार—चौताला

आपुही चैतन्य ब्रह्म अखण्डित सो भ्रमते
कहु आन परेखे ।
दंडत ताहि फिरि जितही तित साधत
योग बनावत भेखे ॥
धीरउ कष्ट करे अतिशय करि परितच
आतमतख न पेखे ।
सुन्दर भूलि गयो निज रूप ही है करकल्प
दरपण देखे ॥

२
 सूत्र गरी महि मिलि भयो द्विज ब्राह्मण हो
 करि ब्रह्म न जान्यो ।
 अस्त्रिय हो करि छत्र धर्यो शिर हय गज पैदल
 सो मन मान्यो ॥
 वैश्व भयो वपुकी वय देखत भूठ प्रपञ्च
 वाणिक्य हो ठान्यो ।
 शूद्र भयो मिलि शूद्र शरीरही सुन्दर आप नहीं
 पहिचान्यो ॥

३
 ज्यो रविको रवि टूटत है कहुं ताप मिले
 तन शीत गवाजं ।
 ज्यो शशिको शशि चाहत है पुनि शीतलता करि
 ताप बुझाजं ॥
 ज्यो कोठ सांभ भये नर टेरत है घर में
 अपने घर जाजं ।
 त्यों यह सुन्दर भूलि स्वरूप हि ब्रह्म कहे
 कब ब्रह्महि पाजं ॥

४
 आपन देखत है अपनी मुख दरपण काठ लग्या
 अति थूला ।
 श्री दृग देखत ही रहि जात भयो तबही
 पुतरौ पर फूला ॥
 छाया अज्ञान रक्षी अभि अन्तर जानि सकै
 नहीं आतम मूला ।
 सुन्दर यों उपज्यो मन के मल ज्ञान विना
 निज रूप हि भूला ॥

५
 दीन भयो विलसात फिरि नित इन्द्रिनिके
 वय झीलक छोले ।
 सिंह नहीं अपनी बल जानत जम्बुक ज्यो
 बितही तित छोले ॥
 चेतनता बिसराइ निरन्तर ले जड़ता भ्रम
 गांठन खोले ।

सुन्दर भूलि गयो निज रूपहि देह स्वरूप
 भयो मुख बोले ॥
 ६
 मैं सुखिया सुख सेज सुखासन हय गज भूमि
 महारजधानी ।
 हं दुखिया दिन रैन भरौ दुःख मोहि विपत्ति
 परौ नहीं छानी ॥
 हं अति उत्तम जात बड़ो कुल हं अति मोच
 क्रिया कुलदानो ।
 सुन्दर चेतनता न सञ्चारत देख स्वरूप
 भयो अभिमानो ॥

७
 गभ विषे उत्पत्ति भई पुनि जस लियो
 शिशु शुद्ध न जानी ।
 बाल कुमार किशोर युवादिक् वृद्ध भये
 अति बुद्धि नसानो ॥
 जैसे ही भांति भई वपुकी गति तैसे ही होइ
 रक्षी यह प्राणी ।
 सुन्दर चेतनता न सञ्चारत देह स्वरूप भयो
 अभिमानो ॥

८
 ज्यो कोठ त्याग करि अपनी घर बाहर
 जाइके वेश बनावे ।
 सुख सुखाइके कान फराइ विभूति लगाइ
 जटाउ रखावे ॥
 जैसेइ खांग करि वपुको पुनि तैसेही मानत
 सो है जावे ।
 त्यों यह सुन्दर आपुन जानत भूलि स्वरूप हि
 और कहावे ॥

साची ज्ञानकी पद
 मनोहर हृद—बीजाबा

चिति जस पावक पवन नभ मिलि करि शब्द
 और रस अर्ग रूप रस मन्त्र जू ।

श्रोत्र त्वक् चक्षु प्राण रसना रसको जान
 वाक् पाणि पाद पायु उपस्थान्ध जू ॥
 मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ए चौबीश तत्त्व
 पञ्चवीश जावतत्त्व करत है धन्ध जू ।
 षड्वीश वोहे ब्रह्म सुन्दर सुनिह करम व्यापक
 अखण्ड एक रस निरसन्ध जू ॥

१

श्रोत्र दिक् त्वक् वायु लोचन प्रकाश रव नासिका
 अस्त्रनी जिह्वा वरुण वखानिये ।
 वाक् अग्नि हस्त इन्द्र चरण उपेन्द्र वल्लभेन्द्र
 प्रजापति गुदा मित्र हं को ठानिये ॥
 मन चन्द्र बुद्धि विधि चित्त वासुदेव आदि
 अहङ्कार रुद्रको प्रभाव करि मानिये ।
 याको सत्त पाद सब देवता प्रकाशत हैं सुन्दर सु
 आत्मा ही न्यारो करि जानिये ॥

२

श्रोत्र श्ने हृग देखत है रसना रस घ्राण
 सुगन्ध पियारो ।
 कोमलता त्वक् जानत है पुनि बोझत है
 सुख शब्द उचारो ॥
 पाणि गृहे पद गौन करे मल मूत्र तजे
 उभज अध हारो ॥
 जाके प्रकाश प्रकाशत है सब सुन्दर सोइ
 रहे घट न्यारो ॥

३

बुद्धि भ्रमे मन चित्त भ्रमे अहङ्कार भ्रमे कहा
 जानत नाही ।
 श्रोत्र भ्रमे त्वक् प्राण भ्रमे रसना हृग देखि
 दसों दिश जांही ॥
 वाक् भ्रमे कर पाद भ्रमे गुद हार उपस्थ
 भ्रमे कहु कांही ।
 तेरे भ्रमाये रुमे सबहो गुण सुन्दर तू क्यों
 भ्रमे इन मांही ॥

४

बुद्धि को बुद्धि अरु चित्त को चित्त अहं को अहं
 मनको मन सोई ।
 नैन को नैन है वैन को वैन है कान त्वचा
 त्वचा त्वक् कर जोई ॥
 घ्राणको घ्राण है जोभको जोभ है हाथका हाथ
 पगो पग दोई ॥
 सोसको सोस है प्राणको प्राण है जोवको
 जोव है सुन्दर सोई ॥

सुघराई प्रश्न—चीताला

केसेके जगत यह रच्या है जगतगुरु मोसों कहो
 प्रथम हो कौन तत्त्व कोन्हो है ।
 प्रकृति कि पुरुष कि महततत्त्व अहङ्कार कोधों
 उपजाये सत्व रज तम तानो है ॥
 कोधों व्योम वायु तेज अप कि अवनि कान कोधों
 पञ्च विषय पसारि करि लोन्हो है ।
 कोधों दश इन्द्रोको अन्तस्करण कान सुन्दर
 कहत कोधों सकल विहोनो है ॥

उत्तर—चीताला

ब्रह्मते पुरुष अरु प्रकृति प्रगट भई प्रकृति तें
 महतत्व पुनि अहङ्कार है ।
 अहङ्कार हते तीनगुण सत्व रज तम तमह तें
 महाभूत विषय पसार है ॥
 रजहते इन्द्रो दश पृथक पृथक भई मर्त्तगहुते
 मनघादि देवता विचार है ।
 ऐसे अनुक्तम करि शिथ्यों कहत गुरु सुन्दर
 सकल यह मिथ्या भ्रम जार है ॥

प्रश्न—चीताला

मेरो रूप भूभि है कि मेरो रूप आप है कि
 मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है ।
 मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप इन्द्रो है कि
 अन्तरकरण है बैठो है कि गौन है ॥

मेरो रूप त्रिगुण कि अहङ्कार महत्त्व प्रभृति
पुरुष क्रिधों बोले है कि मौन है ।
मेरो रूप स्थूल है कि सूक्ष्म आदि मेरो रूप
सुन्दर पूछत गुरु मेरो रूप कौन है ॥

उत्तर—चीताला

तू तो कछ भूमि नाहि अप तेज वायु नाहि
व्योम पञ्च विषय नाहि सो तो भ्रम कूप है ।
तू तो कछ इन्द्रो अरु अन्तःकरण नाहि
तोन गुणउ तू नाहि कौउ छांह धूप है ॥
तू तो अहङ्कार नाहि पुनि महत्त्व नाहि
प्रकृति पुरुष नाहि तू तो सो अन्प है ।
सुन्दर विचार ऐसे शिष्यों कहत गुरु नाहि
नाहि करते रहे सोई तेरो रूप है ॥

२

तेरो तो स्वरूप है अनूप चिदानन्द घन देह तो
मनिन जड़ यों विवेक कोजिये ।
तू तो निःसङ्ग निराकार अविनाशी अज देह तो
विनाशवन्त ताहि नहि धोजिये ॥
तू तो षडुत्तर हित मदा एक रस देहके
विकार सब देह सिर दीजिये ।
सुन्दर कहत यों विचार आपु भिन्न जानि
परकी उपाधि कहा आप वैर कोजिये ॥

३

देहइ नरक रूप दुःख कौ न वार पार देहइ
स्वरगरूप भंठो सुख मान्यो है ।
देहइ की बन्ध मोक्ष देहइ अप्रोक्ष प्रोक्ष
देहइ क्रियाकर्त्त शुभाशुभ ठान्यो है ॥
देहइ में पीर देह स्वसो ह्वै विलास करे
ताहीकौं समुक्ति वित्त आतमा बलान्यो है ।
दोज देहते अतोत दोजको प्रकाश करे
सुन्दर चैतन्य रूप न्यारी करि जान्यो है ॥

४

देह हले देह चले देह हो सो देह मिले
देह खाइ देह पोवे देहहो भरतु है ।

देहहो हिवार गरी देहहो पावक जारे
देह रणमाभ जूमे देहई परतु है ॥
देहइ अनेकभांति विविधि करम करे सुखक को
सप्ता पाइ लौह ज्यों फिरतु है ।
आत्मा चैतन्य रूप व्यापक साधो अनूप
सुन्दर कहत सो तो जन्म न मरतु है ॥

५

देहकां न देह कछू देहका ममत्व छाड़ देह तो
दमामा दिये देह देहजात है ।
घट तो घटत घरो घट नाश होत घट घटके गयेते
घटको न फेरि बात है ॥
पिण्ड पिण्ड माहि पिण्ड पिण्ड कौउ पावत है
पिण्ड पिण्ड खात पुनि पिण्डहोको पात है ।
सुन्दर न होइ जा सो सुन्दर कहत जग सुन्दर
चैतन्य रूप सुन्दर विख्यात है ॥

प्रश्नोत्तर—चीताला

देह यह किनको है देह पञ्चभूत निको
पञ्चभूत कौन तै है तामस अहङ्कार ते ।
अहङ्कार कौन तै है जासौं कहे महत्त्व
कौन महत्त्व तै है प्रकृति मभारते ॥
प्रकृति ह कौन तै है पुरुष है जाको नाम पुरुष सो
कौन तै है ब्रह्म निराधारते ॥
ब्रह्म अब जान्यो हम जान्यो है तो निश्चय करि
निश्चय हम कियो है तो सुप सुख हारते ॥

६

एक घट माहि सुगन्ध जल भरि राख्यो एक घट
माहि तो दुर्गन्ध जल भरो है ।
एक घट माही पुनि गन्धादक राख्यो आनि
एक घट माही आनि मदिराउ करो है ॥
एक घट एक तैल एक माहि लघु नौत सब ही
में सविता को प्रतिविम्ब परो है ।
तैसेहो सुन्दर जंघ नीच मध्य एक ब्रह्म देह
भेद देखि भिन्न भिन्न नाम धरो है ॥

१

भूमि परे आप आपङ्कके परे पावक है
 पावकके परे पुनि वायु हु वहत है ।
 वायु परे व्योम व्योमङ्कके परे इन्द्रोदय
 इन्द्रोदयके परे अन्तःकरण रहतु है ॥
 अन्तःकरण परे तीन गुण अहङ्कार
 अहङ्कार परे महत्तत्त्व कौ लहतु है ।
 महत्तत्त्व परे मूल माया माया परे ब्रह्म
 ताही ते परात्पर सुन्दर कहतु है ॥

४

भूमि तो विलीन गन्ध गन्धहु विलीन आप आपहु
 विलीन रस रस तेज खात है ।
 तेज रूप रूप वायु वायुहु स्पर्शलीन सो स्पर्श
 व्योम सह तमही विलात है ॥
 इन्द्रिय दश जमन देवता विलीन सत्व तीन गुण
 अहं महत्तत्त्व गिल जात है ।
 महत्तत्त्व प्रकृति प्रकृति ह् पुरुष लौन
 सुन्दर पुरुष जाइ ब्रह्ममें समात है ॥

५

आत्मा अचल शुद्ध एक रस रहै सदा देह
 व्यवहार नमें देहही सो जानिये ।
 जैसे शशिमण्डल अभङ्ग न हो भङ्ग होहि
 कला आवै जाइ घट बढि सो वखानिये ॥
 जैसे द्रुम निहचल नदीके तट देखियत
 नदीके प्रवाह माहि चलतो सो मानिये ।
 तेसे आत्मा अतीत देहकौ प्रकाशत है
 सुन्दर कहत यों विचार अम भानिये ॥

६

आत्मा शरीर दोष एक भेक देखियत जब खगि
 अन्तःकरण में अज्ञान है ।
 जैसे अंधियारी रैन घर में अंधिरो होइ आँखनको
 तेज क्यौं को त्यों ही विद्यमान है ॥
 यद्यपि अंधिरे माहि नैन कौ न सृष्टि कछू नदपि
 अंधिरे सौं अज्ञितही वखान है ।

सुन्दर कहत तो सो एकमेक जानत है जो सौं
 नहि प्रगट प्रकाश ज्ञान भान है ॥

•

•

देह जड़ देवल में आत्मा चैतन्य देव याही कौ
 समुक्ति कर या सौ मग लाइये ।
 देवल को विनसत वार नहि लागि कछु देव तो
 संख्या अभङ्ग देवल में पाइये ॥
 देवको सकतिकर देवलको पूजा होइ भोजन
 विविधि भांति भोगहु लगाइये ।
 देवल ते न्यारा देव देवल में देखियत सुन्दर
 विराजमान और कहां जाइये ॥

८

प्रीति सौ न पाती कोष प्रेम सो न फल और
 चित्त सो न चन्दन सनेह सो न सेहरा ।
 हृदय सो न आसन सहज सो न सिंहासन
 भावसो न सेज और शून्य सो न गीहरा ॥
 शीश और प्राण नाहि ध्यान सो न धूप आन
 ज्ञान सो न दोषक अज्ञानतम केहरा ।
 मनसौ न माला कोष सोहं सो न जाप और
 आत्मा सो देव नाहो देह सो न देहरा ॥

९

आसो आसो राति दिन सोहं सोहं होइ
 जाप याही माला वार वार टटके धरतु है ।
 देह परे इन्द्रो परे अन्तःकरण परे एकही
 अखण्ड जाग तापुको हरतु है ॥
 काठकी बद्दासकी और सूत्रहीकी माला पुनि
 इनके फिराये कौन कारज सरतु है ।
 सुन्दर कहत ताते आत्मा चैतन्य रूप आपुको
 भजन सो तो आपुही करतु है ॥

१०

और नीर मिलि दोष एकठेर होइ रहै नीर
 हाडि हंस जैसे औरको गहतु है ।

कक्षन में चीर धातु मिलि करि आन परो यह
 करि कक्षन सुनार ज्यों लहतु है ॥
 पावकहु दार मध्य दारही सो होइ रझी
 * मथि करि काढ़े दाहो दार कौ दहतु है ।
 तेसेही सुन्दर मिथौ आत्मा अनात्मा सो भिन्न
 भिन्न करिए सुतो सांख्य यों कहतु है ॥

११

अन्नमय कोष सुतो पिण्ड है प्रगट यह प्राणमय
 कोष पञ्चवायु हु वखानिये ।
 मनोमय कोष पञ्च इन्द्रिय प्रसिद्ध मान पञ्च ज्ञान
 इन्द्रो विज्ञान कोष जानिये ॥
 जाग्रत स्वपन विषे कहिये चत्वार कोष
 सुषुपतिहु माहि कोष आनन्दमय मानिये ।
 पञ्चकोष आत्माको जीवनाम कहिये है
 सुन्दर शङ्कर मास सांख्य यह आनिये ॥

१२

जाग्रत अवस्था जैसे सदन में बैठियत तहां कहु
 होइ ताहि भली भांति देखिये ।
 स्वप्न अवस्था ज्यों वोवरे में बैठे जाइ रहि रहे
 उहां उको वस्तु सब लेखिये ॥
 सुषुप्ति भोहरे में बैठे ते न सूक्त परे महा अन्ध
 घोरतम कहु वन पेखिये ।
 व्योम अनुसूत घर वोवरे भोहरे माहि सुन्दर
 साक्षी स्वरूप तुरिया विशेखिये ॥

१३

जाग्रतके विषे जीव नैननिमें देखियत विविधि
 व्योहार सब इन्द्रिय गहतु है ।
 स्वप्नहु माहि पुनि देसो ही व्योहार होत नैन
 नितें आइ करि कण्ठमें रहतु है ॥
 सुषुप्ति हृदयमें विलीन होइ जात जब जाग्रत
 स्वप्नकी तो सुध न लहतु है ।
 तीनहु अवस्था कौ साक्षी अब जाने आप
 तुरिया स्वरूप यह सुन्दर कहतु है ॥

विहारी—यत्

जाग्रत रूप लिये सब तत्त्वनि इन्द्रिय द्वार
 करे व्यवहारो ।
 स्वप्न शरीर भ्रमे नव तत्त्व कौ मानत है
 सुख दुःख अपारो ॥
 लीन सबै गुण होइ सुषोपति जानै नहीं कहु
 घोर अंधारो ।
 तीन कौ साक्षी रहे तुरीया तत्त्व सुन्दर सोइ
 स्वरूप हमारो ॥

२

भूमिसे सूक्ष्म आपकी जानहु आपते
 सूक्ष्म तेजको अङ्ग ।
 तेजसे सूक्ष्म वायु वहे नित वायुसे सूक्ष्म
 व्योम उतङ्ग ॥
 व्योमसे सूक्ष्म हैं गुण तीनहु ताते अहं
 महत्त्व प्रसङ्ग ।
 ताहुते सूक्ष्म मूल प्रकृति जो मूलसे सूक्ष्म
 ब्रह्म अभङ्ग ॥

३

ब्रह्म निरन्तर व्यापक अग्नि स्वरूप
 अखण्डित है सब माहो ।
 ईश्वर पावक राशि प्रचण्ड जु सङ्ग उपाधि
 लये वर ताहो ॥
 जीव अनन्त मसाल चिरागु सो दीप पतङ्ग
 अनेक दिखाहो ।
 सुन्दर हैत उपाधि मिटे जब ईश्वर जोव
 जुदे कहु नाहो ॥

४

ज्यों नर पावक लौह तपावत पावक लौह
 मिले सु दिखाहो ।
 चोट अनेक परे घनकी सिर लौह बढे
 कहु पावक नाहो ॥
 पावक लीन भयो अपन घर शीतल लौह
 भयो तब ताहो ।

त्यौ यह आतम देह निरन्तर सुन्दर भिन्न रहे
मिलि मांझो ॥

बहार—यत्

आतम चेतन शुद्ध निरन्तर भिन्न रहे
कहुं निम न होई ।

हे जड़ चेतन अन्तःकरण जु शुद्ध अशुद्ध
लिये गुण दोई ॥

देह अशुद्ध मलोन महा अति हाल न
चाल सबे पुनि वोई ।

सुन्दर तीन विभाग किये विनु भूलि परे
भ्रमते सब कोई ॥

विहारी-विभाग—यत्

ब्रह्म अरूप अरूपो पावक व्यापक युगल
न दोसत रङ्ग ।

देह दारुतै प्रगट देखियत अन्तःकरण
अग्नि है अङ्ग ॥

तेज प्रकाश कल्पना तौ लागि जौ लागि रहे
उपाधि प्रसङ्ग ।

जहाँके तहाँ लोन पुनि होई सुन्दर दोज
सदा अभङ्ग ॥

२

देह शराब तेल पुनि मारुत वातो अन्तःकरण
विचार ।

प्रगट ज्योति यह चेतन दोसे जाते भयो
सकल उजियार ॥

व्यापक अग्नि मथन करि जोये दोपक
बहुत भांति विस्तार ।

सुन्दर अद्भुत रचना तेरो तूहो एक अनेक प्रकार ॥

२

तिल में तैल दुग्ध में घृत है दारुमाहि पावक
पहिचान ।

पुहप मांहि ज्यो प्रगट वासना ईशमाहि
रस कहत वखान ॥

पोस्ता माहि अफोम निरन्तर वनस्यति
में शहद प्रमान ।

सुन्दर भिन्न मिल्यो पुनि दोसत देह
माहि यौ पातम जान ॥

४

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तानो अन्तःकरण अवस्था पावे ।
प्राण चले जाग्रत अरु सुपने सुषुप्ति में पुनि

अहर्निश धावे ॥
प्राण गए ते रहे न कोऊ सकत देखते घाट विलावे ।

सुन्दर आत्म तत्त् निरन्तर सो कतहं कहुं
जाइ न आवे ॥

५

पंद्रह तत्त् स्थल कुम्भ में सूक्ष्म लिङ्ग भरो ज्यों तोय ।
इहां जोव उहां आभा दोसे ब्रह्म इन्दु

प्रतिविम्बे दोइ ॥
घट फूटे नल गयो विनय ह्वै अन्तःकरण

कहे नहि कोइ ।
तब प्रतिविम्ब मिले शशि विम्बहि सुन्दर जोव

ब्रह्ममय होइ ॥

मनोहरकन्द—यत्

जैसे व्योम कुम्भके बाहिर अरु भोतर ऊ कोउ नर
कुम्भकी हज़ार कोस लै गयो ।

ज्योहो व्योम इहां सौहो उहां पुनि अखण्ड
इहां न विशोह न तो उहां मेल है भया ॥

कुम्भ तो नयो पुरानो हाइ कौ विनस जाइ व्याम तो
न ह्वै पुरानो नतौ कछु है नयो ।

तेसेहो सुन्दर देह आवे रहै नाश होइ आत्मा
अचल अविनाशो है अनामयो ॥

२

देहके संयोग होतै शोत लगे घाम लगे देहके
संयोग होतै चूधा टथ्या पौनकों ।

देहके संयोग कहे सुखते अनेक बात देहके
संयोग ही पकरि रहे मौनकों ॥

देहके संयोग होते कटक मधुर स्वाद देहके
संयोग कहे खाद्यो खारो लौनकों ।
देहके संयोग होते सुखमाने दुखमाने देहके
संयोग गए सुखदुःख कौन कों ॥

आपुको प्रशंसा सुनि आपुही खुशाल होइ
आपुही की निन्दा सुनि आपु मुरभाय है ।
आपुही कों सुख मानि आपु सुख पावत है
आपुही कों दुःखमानि आपु दुःख पाय है ॥
आपुही की रक्षा करि आपुही को घात करे आपुही
हत्यागे होइ गङ्गा जाइ न्हाय है ।
सुन्दर कहत ऐसे देह जाको आपु मानि निज रूप
भूलि के करत हाय हाय है ॥

विचारकी अङ्ग

सुन्दरकन्द—चौताला

प्रथम श्रवण करि चित्त एकाग्र धरि गुरु मन्त्र
आगम कहे सोई धारिये ।
दुतीय मनन वाखाएही विचार देखे जाई ककु सुने
ताहि केरि के सम्भारिये ॥
तृतीय ताही प्रकार निदिध्यास गोकं करि निहमङ्ग
विचरि के अपनपो तारिये ।
साक्षात्कार याही साधन करत होइ सुन्दर कहत
हंत बुद्धि यों निवारिये ॥

देखे तो विचार करि सुने तो विचार करि बाले तो
विचार करि करे तो विचार है ॥
खाइ तो विचार करि पीवे तो विचार करि सोवे तो
विचार करि तोहि तो विचार है ।
बैठे तो विचार करि उठे तो विचार करि चले तो
विचार करि साहि मतिसार है ।
देह तो विचार करि लेइ ते विचार करि सुन्दर
विचार करि याही निरधार है ॥

एकही विचार करि सुखदुःख सम जाने एकही
विचार करि मन सब धोई है ।

एकही विचार करि संसार समुद्र तरे एकही
विचार करि पार गति होई है ॥
एकही विचार करि बुद्धि नाना भाव तजे एकही
विचार करि दूसरो न कोई है ॥
एकही विचार करि सुन्दर सुन्देह मिटे एकही
विचार करि एक ब्रह्म जोई है ।

सुन्दरकन्द—चौताला

रूपकी नाश भयो ककु देखिये रूप तो रूपहि माहि
समावे ।
रूपको मध्य अरूप अखण्डित सो तो ककु कहुं
जाइ न आवे ॥
वीच अज्ञान भयो नव तत्त्वको वेद पराण सबे
कोउ गावे ।
सोउ विचार करे जत्र सुन्दर सोधत ताहि कहुं
नहि पावे ॥

भूमि सु तो नहि गन्धको छांडत नोर सु तो रसते
नहि न्यारो ।
तेज सुतो मित्रि रूप रक्षौ पुनि वायु स्पर्श सदा
सु पियारो ॥
व्योम क शब्द जुदे नहो होत सु ऐसे हो अन्तःकरण
विचारो ।
ये नव तत्त्व मिले पुनि तत्त्वनि सुन्दर भिन्न
स्वरूप हमारो ॥

क्षीण सुषुप्त शरीर कौ धर्म जु शोतर उष्ण जरा
मृत्यु ठाने ।
भूख लषा गुण प्राणको व्यापत शोकक मोह उभय
मन आने ॥
बुद्धि विचार करे निसिवासर चित्त चित्तिसु अहं
अभिमामे ।
सर्व कौ प्रेरक सर्व कौ साक्षी सुन्दर आपुकी
व्यारो ही जाने ॥

रूप पराकी न जानि परे कह जठत है जिहि
मूलतै छानी ।
भाभि विषय मिलि ससखर निसौं पुरुष संयोग
पश्यंति बखानी ॥
नाद संयोग हृदय पुनि कण्ठजु मथ्य माया हो
विचारते जानी ।
अक्षरमेद लिये सुखद्वार सु बोलत सुन्दर वै
खरी वानी ॥

ज्यों कोउ रोग भयो नरके घट वैद्य कहे यह
वायु विकारा ।
कोउ कहे यह आइ सगि सब पुण्य किये कहु
होइ उबारा ॥
कोई कहे यह एक पड़ी कहु देवनि दोष कियो
निरधारा ।
तैसेही सुन्दर तन्त्रनिके मत भिन्न हि भिन्न कहे
सु विचारा ।

ये विषयी तम पूरि रहै तिनकी रजनी मर्हिं
बादर छायाँ ।
कोउ सुसुख किये गुहदेव तिन्है भय युक्त लुगुब्द
सुनायौ ॥
बादर दूरि भये उनके पुनि तारनि सौ रजु
सर्प दिखायौ ।
सुन्दर सूर्य प्रकाशत ही अम दूरि भयो रजु
कौ रजु पायौ ॥

कर्म सुभाषुभकी रजनी पुनि अर्ध तमोमय अर्ध
उजारी ।
भक्ति सुता यह है अक्षोदय अन्त निशादिन
सन्ध्य विचारी ॥

ज्ञान सुभाष सदोदित वासर वेद पुराण कहै
सु पुकारौ ।
सुन्दर तीन प्रभाव वखानत यों निखय समुभो
विधि सारौ ॥

मनोहर छन्द

काफ़ी—तिताला

देहइ कौं आपु मान देहइ सो होइ रज्जी जड़ता
अज्ञानतम शूद्र सोई जानिये ।
इन्द्रनिके व्यापारनि अत्यन्त निपुण बुद्धि तमोरज
दुहुंकरि वैश्वकु प्रमानिये ॥
अन्तःकरण माहि अहङ्कार बुद्धि जाके रजगुणबुद्धि
जानि अन्तिय पहिंचानिये ।
सत्वगुण बुद्धि एक आत्मा विचार जाके सुन्दर कहत
वह ब्राह्मण वखानिये ॥

आत्माके विषे देह आइ करि नाश हाइ आत्मा
अखण्ड सदा एकइ रहतु है ।
जैसे सांप कसुकी कौ लिये रहै कोउ दिन जीरण
उतारि करि नूतन गहतु है ॥
जैसे द्रुमहुंके पत्र फूल फल आइ होत ताहीके गए
ते पुनि धीरहु लहतु है ।
जैसे व्याममाहि अन्न होइ कै विलाइ जात ऐसो
सो विचार कहु सुन्दर कहतु है ॥

खरी की डरी सौं अंक लिखके विचारियत
लिखत लिखत वह डरी घिसि जात है ।
लेखो समुभो है यद्य समुभि परी है तब जोई कहु
सही भयो सोइ ठहरात है ॥
दारु ही सो दारु मथ पावक प्रगट भयो वहे
दारु जारि करि पावक समात है ।
तैसे हो सुन्दर बुद्धि ब्रह्मकी विचार करि करत
करत वह बुद्धि हु विलात है ॥

वसन्त—बीताबा

आयुकी समुक्ति देखि आयुहो सकल माहि
 आयुहोमें सकल जगत देखियतु है ।
 जैसे व्योम आपक अखण्ड परिपूरण है बादर
 अनेक नानारूप लेखियतु है ॥
 जैसे भूमि घट जल तरङ्ग पावक दीप वायुमें
 बघरो योही विश्व देखियतु है ।
 ऐसेही विचारते विचारहु विलीन होइ सुन्दर
 सुन्दर रहतु पेखियतु है ॥

२

देहकी संयोग पाइ जौव ऐसो नाम धरो
 घटके संयोग घटाकाश ज्यों कहायो है ।
 ईश्वर हु सकल विश्व में विराजमान मठके
 संयोग मठाकाश नाम पायो है ॥
 मण्डाकाश माहि घट मठ देखियत बाहिर
 भीतर एक गगन समायो है ।
 तैसेही सुन्दर ब्रह्म ईश्वर अनेक जीव त्रिविध
 उपाधि भेद अन्वनि में गायो है ॥

प्रश्न—बीताबा

देह दुःख पावे किधौ इन्द्री दुःख पावे किधौ
 प्राण दुःख पावे जब लहै न अहार की ।
 मन दुःख पावे किधौ बुद्धि दुःख पावे किधौ
 चित्त दुःख पावे किधौ दुःख अहङ्कार की ॥
 गुण दुःख पावे किधौ सूत्र दुःख पावे किधौ
 प्रकृति दुःख पावे किधौ पुरुष अधार की ।
 सुन्दर पूछत कछु जानि न परत ताते कौन
 दुःख पावे गुरु कही या विचार की ॥

उत्तर—बीताबा

देहकी तो दुःख नाहि देह पञ्चभूत निकी
 इन्द्रियकी दुःख नाहि दुःख नाहि प्राणकी ।
 मनकी दुःख नाहि बुद्धिकी दुःख नाहि
 चित्तकी दुःख नाहि दुःख अभिमानकी ॥

गुणनिकी दुःख नाहि सूत्रकी दुःख नाहि
 प्रकृतिकी दुःख नाहि दुःख न पुमानकी ।
 सुन्दर विचारि ऐसे शिष्य सों कहत गुरु दुःख
 एक देखियत बोचके अज्ञानकी ॥
 प्रथवी भाजन अङ्ग कनक कटक पुनि जलहु
 तरङ्ग दोउ देखि कै वखानिए ।
 कारण कारज ये तौ प्रगट हि स्थलरूप ताहि तें
 नजर माहि देखि करि आनिए ॥
 पावक पवन व्योम ये तो नहि देखियत दोषक
 वधुरा अन्न प्रत्यक्ष प्रमानिये ।
 आत्मा अरूप अति सूक्ष्मते सूक्ष्म है सुन्दर
 कारण ताते देह में न जानिये ॥
 जेनमत उह जिन राजकों न भूलि जाइ दान
 तपशाल सांचो भावना तें तरिये ।
 मगवचकाय शुद्ध सब सौ दयाल रहो दोष बुद्धि
 दूरि करि दया उर धरिये ॥
 बोधि नाम तब जब मनकी निरोध होइ बोधिकी
 विचार सोधि आत्माकी करिये ।
 सुन्दर कहत ऐसे जीवत हो मुक्ति होइ सुयते
 सुकति कहे तिनके परहरिये ॥

देह वोर देखिये तो देह पञ्चभूत निकी
 ब्रह्मा और कोट लगि देह प्रमान है ।
 प्राण वोर देखिये तो प्राण सबही की एक लुधा
 अरु लषा दोउ व्यापत समान है ॥
 मन वोर देखिये तो मनकी स्वभाव एक
 सङ्कल्प विकल्प करि सदा अज्ञान है ।
 आत्मा विचार किये आत्माहि दोसे एक सुन्दर
 कहत कोउ दूसरो न जान है ॥

ब्रह्म निष्कलक अङ्ग

मनोहरकन्द—यत्

एक कोउ दाता गाय ब्राह्मणकी देत दान
 एक कोउ दयाहीन मारत निःशङ्क है ।

एक कोउ तपसी तापस्या माहि सावधान एक
 काउ कामी क्रीड़े कामिनोके अहू है ॥
 एक कोउ रूपवन्त अधिक विराजमान एक कोउ
 कोढ़ो कोढ़ चुवत करहू है ॥
 पारसी मै प्रतिविम्ब सबही कौ देखियत
 सुन्दर कहत एक ब्रह्म निषकलहू है ॥

रविके प्रकाश तें प्रकाश होत नेच निकी
 सब कोउ शुभाशुभ कर्मकौ करतु है ॥
 कोउ यज्ञ दान जप तप यम नेम व्रत कोऊ इन्द्री
 वस करि ध्यानकौ धरतु है ॥
 कोउ परदारा परधनको तकत जाइ कोउ हिंसा
 करिके उदरकौ भरतु है ॥
 सुन्दर कहत ब्रह्म साक्षीरूप एक रस वाही
 में उपजि करि वाही में मरतु है ॥

से जन्तु जलमें नहीं उत्पन्न होहि सब जलहो में
 विचरत जलके अधार है ॥
 जलही में क्रीड़त विविध व्यवहार होत काम
 क्रोध लोभ मोह जलमें संसार है ॥
 जलको न लागे कछू जीवनके राग द्वेष उनहो
 को क्रिया कर्म उनहोकी लार है ॥
 तेसेहो सुन्दर यह ब्रह्म में जगत् सब ब्रह्म
 कौ न लागे कछु जगत विकार है ॥

खेदज जरायुज अण्डज उद्भिज पुनि चारि खानि
 तिनकौ चौराशो लाख जन्तु है ॥
 जलचर स्थलचर व्योमचर भिन्न देह पञ्चभूत
 भूत निको उपजि खवंत है ॥
 शीत घाम पवन गगन में चलत आइ गगन
 अलिप्त जामें मेघच अनन्त है ॥
 तेसेही सुन्दर यह सृष्टि एक ब्रह्म माहि
 ब्रह्म निषकलहू सदा जानत महंत है ॥

आत्मा अनुभव चह—आवनी

है दिल में दिलदार सही अंखिया उलटी करि
 ताहि चितैये ॥
 आब में खाक में बाद में आत्मा जान में
 सुन्दर हाथ जनैये ॥
 नूर में नूर है तेज में तेज है ज्योति में
 ज्योति है मिल मिल जैये ॥
 क्या कहिये कहते न बने कछू जो कहिये
 कहते ही लजैये ॥
 जासौं कइं सब में वह एक है ता सो कैसो है
 आंखि दिखैये ॥
 जो कइं रूप न रेख तिसे कछु तौ सब भूँठके
 माने कहैये ॥
 जो कइं सुन्दर नैन नि मांभि तौ नैन हु
 देन गये पुनि हैये ॥
 क्या कहिये कहते न बने कछु जो कहिये
 कहते ही लजैये ॥
 होत विनोद जितो अभि अन्तर सो सुख
 आपनो आप हो पैये ॥
 बाहिर कौ उमग्यो पुनि आवत कएहते
 सुन्दर फेर पठैये ॥
 खादन रेवन वेरो न जाहि मनो गुड़ गूंगहि
 ज्यो नित खैये ॥
 क्या कहिये कहते न बने कछु जो कहिये
 कहते ही लजैये ॥
 व्योम सो सौम्य अनन्त अखण्डित आदि न अन्त
 सुमध्य कहां है ॥
 को परिमाण करे परिपूरण हैत अहेत
 कछू न जहां है ॥
 कारण कारण भेद नहीं कछू आपु में आपुहो
 आपु तहां है ॥

सुन्दर दीसत सुन्दर माहि सु सुन्दरता कहै
कौन उहाँ है ॥

प्रतीकार—सावनी

एक कि दोह न एक न दोय उहीं कि इहीं
न उहीं न इहीं है ।

शून्य कि स्थूल न शून्य न स्थूल जहीं कि तहीं
न जहीं न तहीं है ॥

मूल कि डाल न मूल न डाल वहीं कि महीं
न वहीं न महीं है ।

जीव कि ब्रह्म न जीव न ब्रह्म तो है कि नहीं
कहु है कि नहीं है ॥

एक कहं तो अनेक सो दोसत एक अनेक नहीं
कहु ऐसो ।

आदि कहं तोही अन्तहु आवत आदि न अन्त
न मध्य सु कंसो ॥

गोप कहं ता अगोप कहा यह गोप अगोप न
जभो न वैसो ।

जोई कहं सोइ है नही सुन्दर है तो सहो
परि जैसे को तैसो ॥

मनोहरकन्द—सावनी

एक सु कहे कोउ एक हो प्रकाशत है दोइ
जो कहे कोउ दूसरो न देखिये ।

अनेक जो कहे कोउ अनेक भासै ताहि कौ
जाको जैसे भाव ता कौ तैसैहि विशेखिये ॥

वचन विलास कोउ कैसे हो वखान कहाँ व्योम
माहि चित्र कहं कैसे करि लेखिये ।

अनुभव किये तें एक दोइ न अनेक कहु सुन्दर
कहत ज्यों को त्यों हो ताहि पेखिये ॥

२

वचनर वेद विधि वचनर शास्त्र पुनि वचनर
स्मृति अरु वचन पुरान जू ।

वचनर और अन्य वचनर व्याकरण वचनर
काव्य कन्द नाटक वखान जू ॥

वचनर संस्कृत वचनर प्राकृत वचनर भाषा
सब जगत में जान ज ।

वचनके परे है सुवचन में आवै माहि
सुन्दर कहत वह अनुभव प्रमान ज ॥

१

इन्द्रो नहो जानि सके अल्प ज्ञान इन्द्रिनिको
प्राणहु न जान सके श्वास आवै जाइ है ।

मनहु न जान सके सङ्कल्प विकल्प कर बुद्धिहु
न जानि सके सुन्यौ सो बताइ है ॥

चित्त अहङ्कार पुनि एउ नहि जानि सके शब्दहु
न जानि सके अनुमान पाइ है ।

सुन्दर कहत ताहि कोउ नहि जानि सके दोवा
करि देखिये सु ऐसो नहो लाइ है ॥

इन्द्रवचनर—सावनी

श्रोत्र न जानत चक्षु न जानत जानत नाहो
सु सूँघत ज्ञाने ।

ताहि अर्थ त्वचा न सके पुनि जानत नाहि
जू जीभ बखाने ॥

मन नाहि जानत बुद्धि न जानत चित्त अहं
कहि क्यौ पहिचाने ।

शब्दहु सुन्दर जानि सके नहीं आत्मा
आपुको आपुहि जाने ॥

२

सूर्यके तेजते सूरज दोसत चन्द्रके तेजते
चन्द्र उजावे ।

तारके तेजते तारे उ दीसत वोशुल तेजते
वायु प्रकावे ॥

दीपक तेजते दीपक दोसत हीरेके तेजते
हीरो उ भावे ।

तसेही सुन्दर आत्मा जानहु आपके तेजते
आप प्रकावे ॥

१

कोउ कहे यह सृष्टि स्वभावत कोउ कहे
यह कर्मते सृष्टी ।

कोउ कहै यह कालउ पावत कोउ कहै
 यह ईश्वर तिष्टी ॥
 कोउ कहै यह ऐसैही होत है क्यों करि
 मानिये बात अनिष्टी ।
 सुन्दर एक किये अनुभव विनु जानि
 सके नहो बाहिर दृष्टी ॥

कोउ तो मोक्ष आकाश बतावत कोउ तो मोक्ष
 पतालके माहीं ।
 कोउ तो मोक्ष कहे पृथ्वीपर कोउ कहे कहीं
 और कहाँही ॥
 कोउ बतावत मोक्ष शिलापर कोउ कहे
 मोक्ष मिटे परछाँही ।
 सुन्दर आत्माके अनुभव विनु और कहूं
 कोउ मोक्ष ही नाही ॥

सुये तैं मोक्ष कहे सब पण्डित सुयेतैं मोक्ष
 कहें पुनि जेना ।
 मूयेतैं मोक्ष कहे ऋषि तापस मूयेतैं मोक्ष
 कहें शिव सेना ॥
 मूयेते मोक्ष मलेच्छ कहे तेंउ धोखेही धोखे
 बखानत वेना ।
 सुन्दर आत्माको अनुभव सोई जीवत मोक्ष
 सदा सु ववेना ॥

आप्त तो नहि मेरे विषे कहु स्वप्न सुतो
 नहि मेरे विषे हे ।
 नाहि सुप्रोपति मेरे विषे पुनि विश्वह
 तेजस प्राज्ञ पथे हे ॥
 मेरे विषे तुरिया नाहि दीसत याही ते
 मेरो स्वरूप अथे हे ।
 दूरिती दूरि परीते परी अति सुन्दर कोउ न
 मोहि लथे हे ॥

कोउ तो कहत ब्रह्म नाभिके कमल मध्य
 कोउ तो कहत ब्रह्म हृदय में प्रकास है ।
 कोउ तो कहत कण्ठ नासिकाके अग्रभाग
 कोउ तो कहत ब्रह्म भ्रुकुटी में वास है ॥
 कोउ तो कहे ब्रह्म दसए द्वारेके बीच कोउ तो
 कहे मौर गुफा में निवास है ।
 पिण्डते ब्रह्मण्डते निरन्तर विराजे ब्रह्म सुन्दर
 अखण्ड जैसे व्यापक आकास है ॥

पानि जिन गह्वी सो तो कहत जखर सो पूंछ
 जिन गहो तिन लानसो सुनायो है ।
 सूँड़ जिन गहो तिन दगलीकी बांह कह्यौ
 दांत जिन गह्यौ तिन सूंसर दिखायो है ॥
 कान जिन गह्यौ तिन सूपसो बनाय कह्यौ
 पीठि जिन गह्यौ तिन विटेरा बतायो है ।
 जैसे है सु तै सो ताहि सुन्दर सयांखो देखे
 आंधरे ने हाथो देख भगरो मचायो है ॥

न्याय शास्त्र कहे प्रगट ईश्वर वाद मीमांसक
 शास्त्र माहि कर्मवाद कह्यौ है ।
 देशिक शास्त्र पुनि कालवाद है प्रसिद्ध पातञ्जल
 शास्त्र माहि योगवाद सख्यौ है ॥
 सांख्यशास्त्र माहि पुनि प्रकृति पुरुषवाद
 वेदान्त शास्त्रमाहि ब्रह्मवाद गह्यौ है ।
 सुन्दर कहत षट्शास्त्र माहि भयो वाद जाके
 अनुभव ज्ञान सु तो वाद में न वह्यौ है ॥

प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म ऐसे ऋग्वेद कहे अहं
 ब्रह्मास्मीति यजुर्वेद यौं कहे ।
 तत्त्वमसीति सामवेद यौं बखानत है अयं
 आत्मा ब्रह्मवेद अथर्वन कहे ॥

एक एक वचन में तीन पद हैं प्रसिद्ध तिनको
विचार करि अर्थ तत्त्व को गहै ।
चारि वेद भिन्न भिन्न सबकी सिद्धान्त एक सुन्दर
ससुम्भि कर सुपचाप ह्वै रहै ॥

सिन्धु—लावनी

इन्द्रियकी भोग जब चाहे तब आइ रहै
नाशवन्त तो तैं तुच्छानन्द यों सुनायो है ।
देवलोक इन्द्रलोक विधिलोक शिवलोक वैकुण्ठके
सुखली गननूतानन्द गायो है ॥

अक्षय अखण्ड एक रस परिपूरण है ताही तै
पूर्णानन्द अनुभव तैं पायो है ।
याहीके अन्तरभूत आनन्द जहालों और सुन्दर
समुद्र माहि सर्वजल आयो है ॥

सिन्धु—दुमरी

एक तौ मायाविलास जगत प्रपञ्च यह चारि खानि
भेट पाइ हैत भास रह्यो है ।

दूसरो विषय विलास इन्द्रियके विषय पञ्च
शब्दहु स्पर्श रूप रस गन्ध गह्यो है ॥

तीजो वाचक विलास सो तो सब वेद माहि वरनि
के जहां लागि वचन तैं कछ्यो है ।

चौथो ब्रह्म की विलास तिहंको अभाव जहां
सुन्दर कहत वह अनुभव तैं लख्यो है ॥

२

जीवतही देवलोक जीवतही इन्द्रलोक
जीवतही जन तप सत्यलोक आयो है ।

जीवतही विधिलोक जीवतही शिवलोक
जीवतही वैकुण्ठलोक जो अकुण्ठ गायो है ॥

जीवतही मोक्षशिला जीवतही भिस्त माहि
जीवतही निकट परम पद पायो है ।

आत्माकी अनुभव जिनको जीवतही है भयो
सुन्दर कहत तिन संशय मिटायो है ॥

३

दृक्काही न प्रकृति न महत तत्त्व अहङ्कार त्रिगुण
न व्योम आदि शब्दादि न कोय है ।

अवनादि वचनादि देवता न मन आदि सूक्ष्म
न स्थूल पुनि एकही न दोय है ॥
खेदज न अण्डज जरायुज न उद्भिज पशुहीन
पक्षीहीन पुरुष न जोय है ।
सुन्दर कहत ब्रह्म व्योको त्योंहे देखियत न तो
कहु भयो अब ह्वै न कहु होय है ॥

४

चिति भ्रम जल भ्रम पावक पवन भ्रम व्योम
भ्रम तिन के शरीर भ्रम मानिये ।
इन्द्री दश तेउ भ्रम अन्तरकरण भ्रम तिनहुके
देवता सुभ्रमते वखानिये ॥

सत्व रज तम भ्रम पुनि अहङ्कार भ्रम महतत्त्व
प्रकृति पुरुष भ्रम मानिये ।
जोइ कहु कहियेसु सुन्दर सकल भ्रम अनुभव
किये तै एक आत्मा हो जानिये ॥

५

भूमि हु विलीन होइ आपहु विलीन होइ तेजह
विलीन होइ वायु जो वहतु है ।

व्योमहु विलीन होइ त्रिगुण विलीन होइ
शब्दहु विलीन होइ अहं जो लहतु है ॥
महतत्त्व विलीन होइ प्रकृति विलीन होइ पुरुष
विलीन होइ देह जो गहतु है ।

सुन्दर सकल जो जो कहिये सो सो लीन होइ
आत्माको अनुभव आत्मा रहतु है ॥

६

मायाकी अपेक्षा ब्रह्म रात्रिकी अपेक्षा दिन जड़की
अपेक्षा करि चेतन वखानिये ।
अज्ञानकी अपेक्षा ज्ञान बन्धकी अपेक्षा मोक्ष
हेतको अपेक्षा सुतौ अद्वैत प्रमानिये ॥

दुःखकी अपेक्षा सुख पापकी अपेक्षा पुण्य
भूठकी अपेक्षा ताहि सत्य करि मानिये ।
सुन्दर सकल यह वचन विलास भ्रम वचन
अवचन रहित सोई ब्रह्म जानिये ॥

०
 आत्मा कहत गुरु शुद्ध निरवन्ध नित्य सत्य करि
 माने सुनो शब्द प्रमाण है ।
 जैसे व्योम व्यापक अखण्ड परिपूरण है व्योम
 उपमान उपमान सौ प्रमाण है ॥
 आकी सत्ता पाइ सब इन्द्रिय चेतन्य हों हि
 यहां अनुमान अनुमानहु प्रमाण है ।
 अनुभव जानै तब सकल सन्देह मिटे
 सुन्दर कहत यह प्रत्यक्ष प्रमाण है ॥

८
 एक घर दोइ घर तीन घर चार घर पञ्च घर
 तजी जब छठो घर पाइ है ।
 एक एक घरके आधार एक एक घर एक घर
 निराधार आपुहो दिखाइ है ॥
 सुतो घर साक्षीरूप घर घरमें अनूप ताहु घर
 मध्य कोउ दिन ठहराइ है ।
 ताके परे साक्षी न असाक्षी न सुन्दर कछु
 वचनातीत कहुं पाइ है न जाइ है ॥

९
 एकतो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत माया
 जाल परसत वेगि बुझजात है ।
 एक है मनन ज्ञान विज्जल ज्यों घनमध्य माया
 जल वरषत तामें न भ्रमात है ॥
 एक निदध्यास ज्ञान वड़वा अनल सम प्रगट
 समुद्र माहि मायाजल खात है ।
 आत्मानुभव ज्ञान प्रलय अगिनि जैसे सुन्दर
 कहत हैत प्रपञ्च विसात है ॥

कान्हरा—चौताला

चकमक टोकेते चमत्कार कछु ऐसो है
 जबलौं श्रवण ज्ञान तब ही लीं जानिये ।
 कब मन लागी जब प्रगटे पावक ज्ञान सुखगत
 जात वह मनन वखानिये ॥

वर्धमान भये काठ कर्म नि जरावत है वड़े
 निदध्यास ज्ञान यन्त्रन भें गानिये ।
 सकल प्रपञ्च यह जारिके समाइ जात सुन्दर
 कहत वह अनुभव प्रमानिये ॥
 १
 भोजनको बात सुनि मनमें मुदित होत मुखमें
 न परे जौलौं भेलिये न शास है ।
 सकल सामग्र्यो आनि पाक कौं करन लाग्यो
 मनन करत कब जेजं यह पास है ॥
 पाक जब भयो तब भोजन करन लाग्यो मुख मं
 मेलत जात उहे निदध्यास है ।
 भोजन पूरण करि हृपत भयो है तब सुन्दर
 साकार अनभो प्रकाश है ॥
 २
 श्रवण करत जब सबसो उदास होइ चित्त एकाग्र
 आनि गुरुसुख सुनिये ।
 बैठके एकन्त ठौर अन्तःकरण माहि मनन करत
 फेरि वह ज्ञान गुनिये ॥
 ब्रह्मको परोक्ष जानि कहत है ब्रह्म साहं सोहं
 होइ सो निदध्यास धुनिये ।
 इह अनुभव इह कहिये साक्षात्कार सुन्दर
 ए लालेते गलि पानो होइ सुनिये ॥
 ४
 जब ही जिज्ञास होइ चित्त एकठोरे आनि मृग
 ज्यों सुनत नाद श्रवण सो कहिये ।
 जैसे स्वाति बूंदनु कौं चातक रटत पुनि
 ऐसेही मनन करे कब बुन्द लहिये ॥
 जैसे रात्रिहु चकोर चन्द्रमाकौं ध्यान करे ऐसे
 जानि निदध्यास दृढ़ करि गहिये ।
 सुन्दर साक्षात्कार कौट जैसे होत भङ्ग उहे
 अनुभव उहे स्वस्वरूप रहिये ॥
 ५
 काहुको पूरत रह धन कैसे पाइयत कान
 देके सुनत श्रवण सोइ जानिये ।

उम कहो धन हम देखो है फलानी ठोर
मनन करत भयो कब घर आनिये ॥
फेरि अब कछो धन गाड़ो तेरे घर माहि खोदन
सम्यो हे तब निदध्यास ठानिये ।
धन निकरो हे जब दरिद्र गयौ हे तब सुन्दर
साक्षात्कार नृपति वखानिये ॥
ज्ञानीको षड
नेष—चौताला

जाके हृदयमें ज्ञान प्रकाशत ताको स्वभाव रहे
नहि छानो ।
नेनमें दैनमें सैनमें जानिये जठत
बैठत हे फलसानो ॥
सो कहु भव किये उदगारत केवेहुं राखि
सके न अधानो ।
सुन्दर दास प्रसिद्ध दिखावत धानकौ खेत
पयारतै जानो ॥
बोलत चालत जठत बंठत पौवत खातहु
सूँघत खासे ।
ऊपर तौ व्यवहार करे सब भोतर स्वप्न
समान सो भासे ॥
लेकरि तोर पताल कौ साधत मारत हे
पुनि फेरि अनासे ।
सुन्दर देह क्रिया सब देखत कोउ न पावत
ज्ञानी कौ आसे ॥
बैठे तो बैठे चले तो चले पुनि पोछे तो पीछे ही
आगे तो आगे ।
बोले तो बोले न बोले तो मौन हो सोवे तो सोवे
अरु जागे तो जागे ॥
खाइ तो खाइ नहो तो नहो न्रू गृहे तो गृहे
अरु त्यागे तो त्यागे ।
सुन्दर ज्ञानी कौ ऐसी दया यह जानि नहो
कहु राग विरागे ॥

कान्हरा—चौताला

देखत हे पे कछु नहि देखत बोलत हे नही
बोल वखाने ।
सूँघत हे नहि सूँघत प्राण सुने सब हे न सुने
यह माने ॥
भय करे अरु नाहि भखे कहु भेटत है नही
भेटत प्राणे ।
लेत है देत है देत न लेत है सुन्दर ज्ञानीको
ज्ञानी हो जाने ॥
काज अकाज भलो न बुरो कहु उत्तम मध्यम
दृष्टि न पावे ।
कायिक वाचिक मानस कर्म सु आप विषे न
तिन्हें ठहरावे ॥
हो करि हो न कियो न करौ अरु वो मन
इन्द्रियको बरतावे ।
दोसत है व्यवहार विषे नित सुन्दर ज्ञानीको
कोउ न पावे ॥
देखत ब्रह्म सुने पुनि ब्रह्महि बोलत हे
सोउ ब्रह्महि जानो ।
भूमिहु नीरहु तेजहु वायुहु व्योमहु ब्रह्म
जहां लागि प्राणो ॥
आदिहु अन्तहु मध्यहु ब्रह्महि है सब ब्रह्म
यहो मति ठानी ।
सुन्दर ज्ञेय अरु ज्ञानहु ब्रह्मसु आत्महु
ब्रह्मही जानत ज्ञानी ॥
जठत केवल बैठत केवल बोलत केवल
वात कही है ।
जागत केवल सोवत केवल जोवत केवल
दृष्टि नही है ॥
भूतहु केवल भाव्यहु केवल वर्तत केवल
ब्रह्म सही है ।

हे सब ही अध ऊरध केवल सुन्दर केवल
ज्ञान वही है ॥

भंकीटी—चीताला

केवल ज्ञान भयो जिनके उर ते अधः ऊरध
लोक न जाहीं ।

व्यापक ब्रह्म अखण्ड निरन्तर वा विन और
कहं कहु नाहीं ॥

ज्यों घट नाश भये घट व्योम सुखीन भयो पुनि
हे नभ माहीं ।

त्यों सुनि सुक्त जहां वपु छाड़त सुन्दर मोक्ष
शिला कहं नाहीं ॥

२

आदि दुतो नहीं अन्त रहे गही मध्य शरीर
भयो भ्रमकूपं ।

भासत है कहु औरको औरर ज्यौरर रज्जुमें
अहि सीपस्वरूपं ॥

देखि मरीच उखो बिच विभ्रम जानत नाहि
वहै रविभूपं ।

सुन्दर ज्ञान प्रकाश भयो जब एक अखण्डित
ब्रह्म अनूपं ॥

मनोहर छन्द

नट मन्त्र—चीताला

अन्तःकरण जाके तमगुण छाड़ रह्यो जड़ता
अज्ञान वाकें आलस भय नास है ।

रजःगुण को प्रभाव अन्तःकरण जाके विविधि
करम ताके काम की वास है ॥

सत्वगुण अन्तःकरण जाके देखियत क्रिया करि
शुद्ध वाके भक्ति की निवास है ।

त्रिगुणातीत साक्षी सुरया स्वरूप जानि सुन्दर
कहत वाके ज्ञान की प्रकाश है ॥

२

तमगुणि बुद्धि सो तौ तवाके समान जैसे ताके
मध्य सुरज की रक्षक न ज्योत है ।

रजोगुणी बुद्धि जैसे आरसीको आभो वीर ताके
मध्य सुर की कहुक उदोत है ॥

सतोगुणि बुद्धि जैसे आरसीकी शुद्ध और ताके मध्य
प्रतिबिम्ब सुरज की ज्योत है ।

त्रिगुणातीत जैसे प्रतिबिम्ब मिटि जाइ सुन्दर
कहत एक सुरज होत है ॥

२

सब सौ उदास होइ काढ़ि मन भिन्न करि
ताका नाम कहियत परम विराग है ।

अन्तःकरण हुकी वासना निवृत्त होइ ताको
मुनि कहत है उहे बड़ो त्याग है ॥

चित्त एक ईश्वर सो नेकहु न न्यारो होइ उहे
भक्ति कहियत उहे प्रेम मार्ग है ।

आप ब्रह्म जगतके एक करि माने जब सुन्दर
कहत वह ज्ञान भ्रम भाग है ॥

४

कोउ नृप फूलनिकी सेज पर सूतो आइ जब
लगि जाग्यो तोखो अति सुख मान्यो है ।

नींद जब आई तब वाही की सुपन भयो जाइ
परो नरककुण्डमें यों जान्यो है ॥

अति दुःख पायो परि निकरो न जाइ क्यों ही
जागि जब परी तब सुपन बखान्यो है ।

इह भूठ वह भूठ जाग्रत सुपन दोउ सुन्दर कहत
ज्ञानी सब भ्रम भान्यो है ॥

५

स्वप्ने में राजा होइ स्वप्ने में रहइ होइ स्वप्ने में
सुख दुःख सत्य करि जान्यो है ।

स्वप्ने में बुद्धिहीन मूढ़ समुझे न कहु सुपनेमें
पण्डित बहु ग्रन्थनि बखान्यो है ॥

स्वप्ने में बुद्धि में कामी होइ इन्द्रियके वश परो
सुपनेमें अहङ्कार भान्यो है ।

सुपन तै जान्यो जब समुझ परीरे तब सुन्दर कहत
सब मिथ्या करि मान्यो है ॥

६
विधि न निन्देद कछु भेद न अभेद कछु क्रिया
सो करत दीखे योही नित प्रति है ।
काहु सौ न निकट राखे काहु सौ न दूरि भागे
काहु सों न नेरे दूरि ऐसी जाकी मति है ॥
रागहीन होष कोउ सोद्व न उच्छाह दोउ ऐसी
विधि रहै कहं रति न विरति है ।
वाहिर व्योहार ठाने मनमें सुपन माने सुन्दर
ज्ञानी की कछु अद्भुत गति है ॥

७
कामी है न यती है न सूम है न सती है न
राजा है न रङ्ग है न तन है न मन है ।
सोवे है न जागे है न पीछे है न आगे है न ग्रहे है
न त्यागे है न घर है न वन है ॥
स्थिर है न डोले है न भौन है न बोले है न बाधि है
न खोलै है न स्वामी है न जन है ।
बेसी कोउ होइ तब वाकी गति जानै जब सुन्दर
कहत ज्ञानी शुद्ध ज्ञानधन है ॥

८
सुनत श्रवण मुख बोलत वचन घ्राण फूलनि
सूँघत रूप देखत दृगन है ।
त्वक सपरस रस रसना ग्रहत जीभ असन करत
अरु चलत पगन है ॥
करत गमन पुनि बैठत भवन सेज सोवत रवन
अरु वोदत नगन है ।
जो जो कछु व्यवहार जानत सकल भ्रम सुन्दर
कहत ज्ञान गगन भगन है ॥

९
कर्म न विकर्म करे भाव न अभाव धरे शुभ हु
अशुभ परे याते निधरक है ।
बसती न शून्य जाके पापहो न पुण्य ताके
अधिक न न्यून वाके स्वरग नरक है ॥
सुख दुःख सम दोउ मीचहो न उच्च कोउ ऐसी
विधि रहै कोउ मिलो न परक है ।

एकहो न दोय जानै वन्ध मोच भ्रम माने सुन्दर
कहत ज्ञानी ज्ञान में गुरक है ॥

१०
अज्ञानी को दुःख को समूह जग जानियत
ज्ञानी को जगत सब आनन्द स्वरूप है ।
नैनहोन को तो घर वाहिर न सूभ परे जहां
जाइ तहां देखे एक अन्धकूप है ॥
जाके चहु है प्रकाश अन्धकार भयो नाश
वाको जहां रहे तहां सूरजको धूप है ।
सुन्दर अज्ञानी ज्ञानी अन्तर बहुत आहि वाको
सदा राति वाको दिवस अनूप है ॥

११
ज्ञान अरु अज्ञानकी क्रिया सब एक सीही अज्ञ
आशा और ज्ञानो आश न निरास है ।
अज्ञ जोइ जोइ अरे अहङ्कार बुद्धि धरे ज्ञानो
अहङ्कार विनु करत उदास है ॥
अज्ञ सुख दुःख दोउ आप विषे मान लेत ज्ञानो
सुख दुःख को न जाने मेरे पास है ।
अज्ञको जगत यह सकल सन्ताप कर सुन्दर
ज्ञानी को सार ब्रह्म को विलास है ॥

१२
ज्ञानी लोक संग्रह को करत व्योहार विधि
अन्तःकरण में सुपन कीसी दौर है ।
देत उपदेश नाना भांतिके वचन कहि सब कोउ
जानत सकल सिरमौर है ॥
हस्त न चलन पुनि देह सों करावत है शानमें
गुरक नित लिए निज ठौर है ।
सुन्दर कहत जैसे दम्त गजराज सके खाइवेके
धीर हो दिखाइवेके धीर है ॥

१३
इन्द्रियकी ज्ञान जाके सो तो पशुके समान देह
अभिमान खान पानहि सो लीन है ।
अन्तःकरण ज्ञान कहुक विचार जाके मानुष
व्योहार शुभ कर्मनि अधीन है ॥

आत्मा विचार ज्ञान जाके निसि वासर है
सोइ साधु सकल ज्ञातनि में प्रवीन है ।
एक पर आत्माके ज्ञान अनुभव जाके सुन्दर
कहत वह ज्ञानो भ्रम ज्ञोन है ॥

१४

जाहो ठौर रवि कौ उदय भयो ताहो ठौर
अन्धकार भागि गयो गृह वनवास ते ।
न तो कछु वनते उलटि आवे घर माहि न तो
वन चली जाइ कनक अवास ते ॥
जैसे पक्षी पांख टूटि जाहो ठौर परो आइ
ताहो ठौर गिर रघो उड़वेको आसते ।
सुन्दर कहत सब मिटि जाइ दौर धप धोखो
न रहत कोउ ज्ञानके प्रकाशते ॥

१५

जैसे काहु देश जाइ भाषा कहै और सोहो समुझे
न कोउ वासी कहे का कहतु है ।
कोउ दिन रह करि बोली सोखे उनहोको फेरि
समुझावे तब सब को लहतु है ॥
तेसे ज्ञान कहे ते सुनत विपरीत लगे आपो
आपनोइ मत सब कोउ गहतु है ।
उनहीके मत करि सुन्दर कहत ज्ञान तब ही तो
ज्ञान ठहराइके रहतु है ॥

१६

एक ज्ञानो कर्मनि में ततपर देखियत भक्तिको
प्रभाव नाहि ज्ञान में गुरक है ।
एक ज्ञानो भक्तिको अत्यन्तहो प्रभाव लिये
ज्ञान माहि निश्चय करि कर्म सो तरक है ॥
एक ज्ञानी ज्ञानहो अज्ञान कौ उच्चार करे
भक्ति अरु कर्म इन दुहंते फरक है ।
कर्म भक्ति ज्ञान तौनो वेदमें वखानि कहे
सुन्दर बतायो गुरु ताहि में मरक है ॥

१७

जैसे पक्षी पगन सो चलत अवनि आइ तेसे
ज्ञानो देह करि कर्म नि करतु है ।

जैसे पक्षी चोंच करि चुगत अहार पुनि तेसे ज्ञानी
उरमें उपासना धरतु है ॥
जैसे पक्षी पङ्क निसो उड़त गगन माटि तेसे
ज्ञानो ज्ञान करि ब्रह्ममें चरतु है ।
सुन्दर कहत ज्ञानी तौनो भांति देखियत ऐसी
विधि जाने सब संशय हरतु है ॥

सवेया—चीताला

एक क्रिया करि कर्मनि पावत आदि और
अन्त ममत्व बंध्यो है ।
एक क्रिया करि पाक करे जब भोजन लो कछु
अन्न रंध्यो है ॥
एक क्रिया मल त्यागत हे लघु नोत करे कर्ह
नाहि फंध्यो है ।

त्यों यह जानि क्रिया अरु संग्रह सुन्दर
तीन प्रकार संध्यो है ॥
जीव नरेश अविद्या निद्रा सुख सज्जा सोयो
करि छेत ।
कर्म खवास पुटपुरी लाई ताते बहुविधि
भयो अचेत ॥
भक्ति प्रधान जगायो कर गहि आलस भरो
अन्धारी लेत ।
सुन्दर अब निद्रा वश नाहो ज्ञान जागरण
सदा सचेत ॥

२

ज्ञान प्रकाश भयो जिनके उर वे घट क्योई पे
न रहेंगे ।
भोड़ल माहि दूरे नहि दीपक यद्यपि वे सुख
मौन गहेंगे ॥
ज्यां धनसारहि गोपि छिपावत तोहु सुगन्ध हि
तन्न लहेंगे ।
सुन्दर और कहा कोउ जानत बैठेकी बात
बताउ कहेंगे ॥

१

ज्ञानी कर्म करे नानाविध अहङ्कार या तन का खोवे ।
 कर्मनिके फूल कछू न वाञ्छे अन्तःकरण
 वासना खोवे ॥
 ज्यों कोउ खेतो कों जोत तले करि बोज भून
 करि बोवे ।
 सुन्दर कहे सुनो दृष्टान्तहि नागो ग्हाय सो
 कहा निषोवे ॥

अह विदेहकी

प्रदीप—यत्

भावे देह छूटि जाहु काशो माहि गङ्गा तट
 भावे देह छूटि जाहु क्षेत्र मगहरमें ।
 भावे देह छूटि जाहु विप्रके सदन मध्य भावे
 देह छूटि जाहु स्वपचके घरमें ॥
 भावे देह छुटो देश पारज अनारजमें
 भावे देह छूटि जाहु वनमें नगरमें ।
 सुन्दर ज्ञानीके कछु मंसो नाहि रह्यो कोइ
 स्वर्ग नरक सब भाजि गयो भरमें ॥

१

भावे देह छूटि जाहु आजही पलक माहि भावे
 देह रहो चिरकाल जग अन्त जू ।
 भावे देह छूटि जाहु भीम पावस ऋतु शरद
 शिशिर ग्रीत छूटत वसन्त जू ॥
 भावे दक्षिणायनहु भावे उत्तरायणहु भावे देह सर्प
 सिंह बोजुलो हनन्त जू ।
 सुन्दर कहत एक आत्मा अखण्ड जानि याही
 भांति निरग्रंसय भये सब सन्त जू ॥

सवेधा—यत्

के यह देह धरौ वन परवत के यह देह
 नदोमें बहो जू ।
 के यह देह धरो धरती महि के यह देह
 जगानु दहो जू ॥
 के यह देह निरादर निन्दहु के यह देह सराह
 कहो जू ।

सुन्दर संग्रय दूरि भयो जब के यह देह चलो
 कि रहो जू ॥

१

के यह देह सदासुख सम्पत्ति के यह देह
 विपत्ति परो जू ।
 के यह देह निरोग रहो नित के यह देहहा
 रोग चरो जू ॥
 के यह देह हुताशन पैठहु के यह देह
 द्विबारे गरो जू ।
 सुन्दर संग्रय दूरि भयो सब के यह देह जिवो
 कि मरो जू ॥

जीवनम्, लको अह

प्रदीप—यत्

प्रीति कि रोति कछू नहि राखत जाति न
 पांति नहो कुल गारो ।
 प्रेमके नेम कइ नहि दीसत लाज न काम
 लग्यो सब सारो ॥
 लीन भयो हरिसो अभि अन्तर पाठहु याम रहे
 मतवारो ।
 सुन्दर कोउ न जान सके यह गोकुल गांव को
 पैडोइ न्यारो ॥

१

ज्ञान दियो गुरुदेव लपा करि दूरि कियो भ्रम
 खोलि किवारो ।
 और क्रिया कहि कोन करे अत्र चित्त लगौ
 परब्रह्म पिथारो ॥
 पांव विना चलिके तिहि ठाहर पंगु भयो मन
 मित्र हमारो ।
 सुन्दर कोउ न जानि सके यह गोकुल गांव को
 पैडोइ न्यारो ॥

१

एक अखण्डित ज्यों नभ व्यापक बाहिर भोतर है
 एक सारो ।

दृष्ट न युष्ट न रूप न रेख न खेत न पीत न
रङ्ग है कारो ॥

चक्रित होइ रहे अनुभव विन जो लागि नाहि
न न्यान उजारो ।

सुन्दर कोउ न जान सकै यह गोकुल गांव कौ
पैड़ोइ न्यारो ॥

इन्ह विना विचरे वसुधा पर जा घट आवत ज्ञान
अपारो ।

काम न क्रोध न लोभ न मोह न राग न द्वेष
न न्हारो न थारो ॥

योग न भोग न त्याग न संग्रह देह दशा न
टकी न उधारो ।

सुन्दर कोउ न जान सकै यह गोकुल गांवको
पैड़ोइ न्यारो ॥

सुख असुख अदस न दस न पस अपस न
तूल न भारो ।

भठ न सांच अवाच न धाच न कश्चन कांच न
दीन उदारो ॥

जान अजान न मान अमान न मान गुमान
न जीत न हारो ।

सुन्दर कोउ न जान सकै यह गोकुल गांव कौ
पैड़ोइ न्यारो ॥

अबैत ज्ञानको अह

अशोचर कान्हरा—चीताला

हो तुम कौन हौं ब्रह्म अखण्डित देह मैं क्यों
नही देहके मेरे ।

बोसत कैसे कहो नहीं बोसत जानिये कैसे
अज्ञान ऐ तेरे ॥

दूर करो भ्रम निश्चय धार कछी गुरुदेव
कहों नित टेरे ।

हो तुम ऐसे ई हं पुनि ऐ सोइ दोइ भये
नाहि हैत है मेरे ॥

हो वहु पीर कि तू कहु पीर कि है कहु
पीर कि सो कहु पीर ।

हं अरु तू यह है कहु सो पुनि बुद्धि विलास
भये भक्त भोरे ॥

हं नही तू नही है कहु सो नही बुद्धि
विना जित ही तित दोरे ।

हं पुनि तू पुनि है कहु सो पुनि सुन्दर व्यापि
रह्यौ सब ठोरे ॥

उत्तम मध्यम पीर शुभाशुभ भेद अभेद
जहां लागि जो है ।

दीसत भिन्न तथो अरु दर्पण वस्तु विचारत
एकहो सोहै ॥

जो सुनिये अरु दृष्टि परे पुनि वा विनु
पीर कछो अरु को है ।

सुन्दर सुन्दर व्यापि रह्यौ सब सुन्दर ही मधि
सुन्दर सोहै ॥

यौवन एक अनेक भए द्रुम नाम अनन्त जू
जानिहु न्यारो ।

वापी तड़ाग रू कूप नदो सब है जस एक सो
देखो निहारो ॥

पावक एक प्रकासत वहुविधि दीपक एक
मसाल हु वारो ।

सुन्दर ब्रह्म विलास अखण्डित खण्डित
भेद कि बुद्धि सुटारो ॥

एक शरीर में अरु भए वहु एक धरा पर
धाम अनेका ।

एक शिखा महि कार किये सब चित्र बनाय
धरे टिक टेका ॥

एक समुद्र तरङ्ग अनेकनि कैसेके कीजिये
भिन्न विवेका ।

हैत कछु नही देखिये सुन्दर ब्रह्म अखण्डित
एक को एका ॥

ज्यों सृष्टिका घट नीर तरङ्ग ही तेज
मसाल किये जू बङ्गता ॥

वायु वधूरनि गांठ परी बहु बादल व्योम
सु व्योम जिमूता ॥

हृद्य सुवीज है वीज सुहृद्य है पूत सु बाप है
बाप सुपूता ॥

वस्तु विचारत एक ही सुन्दर ताने क बाने
तो देखिये सूता ॥

भूमिहु चेतन आपहु चेतन तेजहु चेतन
हैं सु प्रचण्डा ॥

वायुहु चेतन व्योमहु चेतन शब्दहु चेतन
पिण्ड ब्रह्मण्डा ॥

है मन चेतन बहिहु चेतन चित्तहु चेतन
आहि उदण्डा ॥

जो कछु नाम धरे सोइ चेतन सुन्दर चेतन
ब्रह्म अखण्डा ॥

एक अखण्डित ब्रह्म विराजत नाम जुदो करि
विश्व कहावे ॥

एक ही ग्रन्थ पुराण वखानत एकइ दत्त
वसिष्ठ सुनावे ॥

एकइ अर्जुन उद्भव सौं कहि कृष्ण कृपा करि
कै समभावे ॥

सुन्दर हैत कछु मति जानहु एकइ व्यापक
वेद बतावे ॥

मनोहरचन्द—बीताला

शिथ पुछे गुरुदेव गुरु कहे पूछ शिष्य मेरे
एक संशय है तो क्यों न पूछे अबही ॥

तुम कही एक ब्रह्म अबहु मै कहूं एक एक तौ
अनेक ताकी इह तौ भ्रम सबही ॥

रुम यह कोन कौ है भ्रमही कौं भ्रम भयो
भ्रमही कौं भ्रम कैसे तू न जाने कबही ॥

कैसे करि जानों प्रभु गुरु कहे निश्चय धारि
निश्चय मैं धाखो अब एक ब्रह्म तबही ॥

ब्रह्मराम—बीताला

ब्रह्म है ठोरक ठोर दूखरो न कोउ और वस्तुकी
विचार किए वस्तु पहिचानिये ॥

पञ्चतत्त्व तोन गुण विस्तारि विविध भांति नाम
रूप जहां लागि मिथ्या माय मानिये ॥

शेष नाग आदि देके वेंकुण्ठ कौ लोक पुनि
वचन विलास सब भेद भ्रम भानिये ॥

न तौ कोउ उरभो न सुरभो कही सु कोन
सुन्दर सकल यह जवावाइ जानिये ॥

प्रथमही देह भेते बाहिर कौं चौक परो
इन्द्रिय व्योहार सुखसख्य करि जान्यो है ॥

कीनउ संयोग पाइ सत्गुरु भेटे भई उन उपदेश
देके भीतर कौ आन्यो है ॥

भीतर कौ आवतही बुद्धि कौ प्रकाश भयो हौं
कीन देह कीन जगत किन मान्यो है ॥

सुन्दर विचारतही उपज्यो अद्वैत ज्ञान आपको
अखण्ड एक ब्रह्म पहिचान्यो है ॥

सकल संसार विस्तार करि वरनियो स्वर्ग
पाताल मर्त पूरि भ्रम रह्यो है ॥

एक तें गिनत गिनि जाइए सो लागि फेरि
करि एक को एक हो गह्यो है ॥

यह नही यह नही यह नही यह नही रहे
अवशेष सो वेद यों कह्यो है ॥

सुन्दर सही सो विचारि कौ अपुनपो आपु
मैं आपकूं आपु ही कह्यो है ॥

एक तू दोय तु तौन तू चारि तू पञ्च तू तत्त्व
तें जगत कोयो ॥

नाम अरु रूप हूँ बहुत विधि विस्तारो तुम
 विना और कोउ नाहि बोयो ॥
 राव तू रङ्ग तू दानी तू दोन तू दोइ कर मेल तें
 दियो लीयो ।
 सकल यह सृष्टि तुम माहि उपजै खिपै कहत
 सुन्दर बड़ो विपुल होयो ।

केशवरा—चौताला

तोही में जगत यह तूही है जगत माहि में अरु
 जग माहि भिन्न कहा जो रह्यो ।
 भूमिही ते भाजन अनेक भांति नानारूप
 भाजन विचारि देखे एकही है मही ॥
 जलते तरङ्ग भई फेन बुद्धिदा अनेक सो
 उ तो विचारे वहे एक जल है सही ।
 महापुरुष जते हैं सब कौ सिद्धान्त एक सुन्दर
 खल्विदं ब्रह्म अन्त वेद है कही ॥

२

जैसे इच्छु रसकी मिठाई नाना भांति भई फेरि
 करि गारि इच्छु रस कौ लहतु है ।
 जैसे घृत खीजिके डरा सौ वन्धन जात पुनि
 पिघरेते बहु घृतइ रहतु है ॥
 जैसे पान जमके पाखानहु सो देखियत सो
 पाखान फेरि करि पानो हूँ बहतु है ।
 तैसेही सुन्दर यह जगत हे ब्रह्ममय ब्रह्म सो
 जगत मय वेद यों कहतु है ॥

३

जैसे काठ कोर तामें पुतरो बनाइ राखी
 जो विचार देखिये तो वहे एक दार है ।
 जैसे माला सूतही कि मनिकाहु सूतहीके
 भीतर हुयो पुनि सूतहीको तार है ॥
 जैसे एक समुद्रके जलही को लोन भयो सो
 उ तो विचारे सु वहे जल स्वार है ।
 तैसेही सुन्दर यह जगत सु ब्रह्ममय ब्रह्म सो
 जगतमय यही निरधार है ॥

४

जैसे एक लोह के हथियार नानाविध किये
 आदि अन्त मध्य एक लोहही प्रमानिये ।
 जैसे एक कश्चन से भूषण अनेक भये
 आदि अन्त मध्य एक कश्चनइ जानिये ॥
 जैसे मेननके संवारे नर हाथो हय आदि अन्त
 मध्य एक मेनइ वखानिये ।
 तैसेही सुन्दर यह जगतमय ब्रह्म सो ब्रह्ममय
 जगत यह निश्चय करि मानिये ॥

५

ब्रह्ममें जगत यह ऐसी विधि देखियत जैसे
 विधि देखियत फलरो महीर में ।
 जैसे विधि गिलम टुलीचामें अनेक भांति
 जैसे विधि देखियत चूनरो उ चोर मं ॥
 जैसे विधि कांगरेउ कोट पर देखियत
 जैसे विधि देखियत बुद्धदो नोरमें ।
 सुन्दर कहत लीक हाथ पर देखियत
 जैसे विधि देखियत शीतला शरीर में ॥

६

ब्रह्म अरु माया जैसे शिव अरु शक्ति पुनि
 पुरुष अरु प्रकृति दोउ कहि कै सुनाये हैं ।
 पति अरु पतनी ईश्वर अरु ईश्वरो उ नारायण
 लक्ष्मो हे वचन कहाये हैं ॥
 जैसे कोउ अर्ध नारा नटेश्वर रूप धरे एक
 वीजही तें दोइ दाल नाम पाये हैं ।
 तैसेही सुन्दर वस्तु ज्यों हो त्योंही एक रस उभय
 प्रकार हीइ आपुही दिखाये हैं ॥

रन्दबलबन्द—चौताला

ब्रह्म निरोह निरामय निर्गुण नित्य निरञ्जन
 और न भावे ।
 ब्रह्म अखण्डित है अथ ऊरध बाहिर भीतर
 ब्रह्म प्रकासे ॥

ब्रह्म हो स्वप्न स्वप्न जहां लगि ब्रह्म हो
साहब ब्रह्म ही दासे ।
सुन्दर और कछ् मति जानहु ब्रह्मही देखत
ब्रह्म तमासे ॥

२

ब्रह्म हो माहि विराजत ब्रह्म ही ब्रह्म विना जिम
धीरही जानी ।
ब्रह्म ही कुञ्जर कीटहु ब्रह्म हो रह हु ब्रह्मही
ब्रह्म ही रानी ॥
कालहु ब्रह्म स्वभावहु ब्रह्म ही कर्म हु जीवहु
ब्रह्म वखानी ।

सुन्दर ब्रह्म विना कछु नाहि न ब्रह्म हो जानि
सबे भ्रम भानौ ॥

३

आदि हुतो सोइ अन्त रहे पुनि मध्य कहा
कछु और कहावे ।
कारण कारज नाम धरे जग कारज कारण
माहि समावे ॥

कारज देखि भयो बिच विभ्रम कारण देखि
विभ्रम विलावे ।
सुन्दर या निश्चय अभि अन्तर हैत गये फिर
हंत न आवे ।

मनोहरकन्द—चीताला

हंत करि देखे जब हैत हो दिखाई देत एक
करि देखे जब उहे एक अङ्ग है ।
सूरज कर देखे जब सूरज प्रकाश रङ्गो किरण
निकी देखे तौ किरण नाना रङ्ग है ॥

भ्रम जब भयो तब माया ऐसो नाम धरो
भ्रमके गए ते एक ब्रह्म सर्वङ्ग है ।
सुन्दर कहत याकी दृष्टिही कौ फेर भयो ब्रह्म
और मायाके तौ माथे में न शृङ्ग है ॥

२

श्रोत्र कछु और नाहि नेत्र कछु और नाहि
नासा कछु और नाहि रसना न और है ।

स्वक कछु और नाहि वाक् कछु और नाहि हाथ,
कछु और नाहि पावनको दौर है ॥
मन कछु और नाहि बुद्धि कछु और नाहि चित्त
कछु और नाहि अहङ्कार तौर है ।

सुन्दर कहत एक ब्रह्म विना और नाहि
आपुहो में आपु व्यापि रङ्गी सब ठौर है ॥

भानिका अङ्क

मनोहरकन्द—चीताला

कियौ न विचार कछु भनक परो है कान धारि
आइ सुनि के डरपि विष खाया है ।
जैसे कोउ अनछते ऐसेहो बुलाइयत वार वाति
गई परि कोउ नहो आयो है ॥

वेदहु वरणि के जगत् तरु ठाढ़ो कियो अस्त
पुनि दियो जर मूलते उठायो है ।
तैसेहो सुन्दर याको कोउ एक जाने भेद जगतको
नाम सुनि जगत भुलायो है ॥

२

ऐसोइ अज्ञान कोउ आइके प्रगट भयो दिव्य
दृष्टि दूरि गई देखे चर्मदृष्टि को ।
जैसे एक आरसो सदाइ हाथ माहि रहे सान्ह
नहो देखे फेरि फेरि देखे पृष्टि को ॥

जैसे एक व्योम पुनि बादर सो छाया रङ्गो व्याम
नहो देखत देखत बहु दृष्टि को ।
तैसे एक ब्रह्म ही विराजमान सुन्दर है ब्रह्म को
न देखे कोउ देखे सब सृष्टि को ॥

३

अनछतो जगत अज्ञान ते प्रगट भयो जैसे कोउ
बालक वंताल देखि डरो है ।
जैसे कोउ स्वप्नमें देखो हे व्यथाव आइ सुख तं
न आवे बोल ऐसो दुःख पम्या है ॥

जैसे अन्धयारो रैन जीवरो न जाने ताहि आपु
हित सांप मान भय अति कखो है ।
मसे हो सुन्दर एक ज्ञानके प्रकाश विनु आपु
दुःख पाइ पाइ आपु पचि मखो है ॥

४
 मृत्तिका समाय रहो भाजनके रूप माहि मृत्तिका
 कौ भ्रम मिटि भाजन ही गरी है ।
 कनक समाई लीं ही होइ रहो आभूषण कनक
 न कहे कोउ आभूषण करी है ॥
 वीजहु समाय करि वृक्ष होइ रहो पुनि वृक्षहि
 कौ देखियत वीज नही लरी है ।
 सुन्दर कहत यह योंही करि जानो सब ब्रह्मही
 जगत होइ ब्रह्म दूरि रहो है ॥

५
 कहत हे देह माहि जीव आइ मोहि रहो कहां
 देह कहां जीव वृथा चोक परी है ।
 बुद्धिबेके डर ते तिरन कौ उपाय करे ऐसे
 माहि जानै यह मृग जल भरी है ॥
 जीवरो कौ सांप जैसे सीप विषे रूपो जानै और
 ईको और देखि योही भ्रम करी है ।
 सुन्दर कहत यह एकही अखण्ड ब्रह्म ताही
 कौ पलटिके जगत नाम धरी है ॥

विषय को अह

मनोहर कन्द—चौताला

वेद कौ विचार सोई सुनि कै सन्तन मुख आपुहु
 विचार करि जाइ धारियतु है ।
 योगको युक्ति जानि जगत उदास होइ शून्य
 में समाधि लाइ मन मारियतु है ॥
 ऐसे ऐसे करत करत केते दिन वीते सुन्दर
 कहत अजहं विचारियतु है ।
 कारो है न पीरो न तो तातो है न सीरो कहु
 हाथ न परत ताते हाथ भागियतु है ॥

६
 मन कौ अगम अति वचन धकित होत बुद्धिहु
 विचार करि वहु खोंड़ियतु है ।
 अवण सुने न जाहि नयनहु न देखे ताहि रसना
 को रस सरवसु छोड़ियतु है ॥

त्वक कौ परस माहि प्राण कौ न विषय होइ
 पगनहु करि जित तित छोड़ियतु है ।
 सुन्दर कहत अति सूक्ष्म स्वरूप कहु दूध न
 परत तो हाथ मीड़ियतु है ॥

७
 गुफा कौ संवारि तहां आसन उ मारि प्राणहु
 कौ घेरि घेरि नाक सीटियतु है ।
 इन्द्रिय कौ घेरि करि मनहु कौ फेरि करि
 त्रिकुट में हेरि हेरि हिये छोड़ियतु है ॥
 सब छिटकाय पुनि शून्य में समाय तहां समाधि
 सगाय पुनि आखि मीड़ियतु है ।
 सुन्दर कहत हम ओरउ किये उपाय हाथ न
 परत ताते हाथ पीटियतु है ॥

८
 बोले है न मौन धरे बैठे है न गौन करे जाने है
 न सोवे सुतो दूरि है न तीरो है ।
 आवे है न जाइ न तो स्थिर अकुलाइ पुनि
 भूखो है न खात कहु तातो है न सीरो है ॥
 लेत है न देत कहु फेत न कुहेत कहु श्याम है
 न खेत सु तो रातोइ न पीरो है ।
 दूबर न मोटो कहु खांबो नहि छोटी ता तें
 सुन्दर कहत कहा कांच है न हीरो है ॥

९
 भूमि है न आप न तो तेज है न ताप न तो
 वायुहु न व्योम न तो पञ्च को पसारो हे ।
 हाथ है न पांव न तो नेन टैन भाव ना तो रह
 है न राव न तो वृक्ष ही न वारो हे ॥
 पिण्ड है न प्राण न तो जान न अजान तो वन्ध
 निर्वाण न तो हरवो न भारो हे ।
 दैत न अदैत न तो भीत न अभीत न तो सुन्दर
 कछा न जाइ मिथ्यो है न ग्यारो हे ॥

धनाश्री-सुलतानो—यत्

पाप न पुण्य न स्थूल न शून्य न बोले न मौन
 न सोवे न जागे ।

एक न दोय न पुरुष न जोय कहै कहा कोई
 न पोछै न भागि ॥
 वृद्ध न बाल न कमं न काल न विश्व विशाल
 न जूझै न भागि ।
 वन्द्य न मोक्ष अप्रोक्ष न प्रोक्ष न सुन्दर है
 न असुन्दर लागि ॥

२

तत्त्व अतत्त्व कछो नहि जात जू शून्य अशून्य
 वरे न परे हे ।
 ज्योति अज्योति न जान सकै कोउ आदि न
 अन्त जिये न मरं हे ॥
 रूप अरूप कछु नही दोसत भेद अभेद करे
 न हरे हे ।
 शुद्ध अशुद्ध कहै पुनि कोन जू सुन्दर बोले न
 मोन धरे हे ॥

३

खोजत खोजत खोज रहे अरु खोजत है
 पुनि खोजहि पानि ।
 गावत गावत गाइ गये बहु गावत हे
 अरु गाइ है गानि ॥
 देखत देखत देखि थके सब दीसे नही कछु
 ठौर ठिकाने ।
 बूझत बूझत बूझिके सुन्दर
 हेरत हेरत हेर फिराने ॥

४

पिण्डमें है परि पिण्डलि पै नही पिण्ड परे पुनि
 त्योंही रहावे ।
 ओदर में है परि ओदर सुने नही दृष्टि में है
 परि दृष्टि न आवे ॥
 बुद्धि में है परि बुद्धि न जानत चित्त में है
 परि चित्त न पावे ।
 शब्द में है परि शब्द थकौ कहि शब्दहु सुन्दर
 दूरि बतावे ॥

५

भूमिहु तैसे ही आपुहु तैसे ही तेजहु तैसे ही
 तैसेही पौना ।
 व्योमहु तैसेही आदि अखण्डित तैसेही ब्रह्म
 रहो भरि भौना ॥
 देह संयोग वियोग भयो जब आयो सु कोन
 गयो कहि कौना ।
 ज! कहिये कहने न बने कछु सुन्दर जानि गही
 मुख मौना ॥

६

एकही ब्रह्म रही भरपूरि तो दूसरो कौन
 बतावन हारौ ।
 जो कोउ जीव करे परमाण तो जीव कहा कछु
 ब्रह्म ते न्यारौ ॥
 जो कहो जीव भयो जग दीसत तो रवि माहि
 कहाँ कौ अंधारौ ।
 सुन्दर मोन गही यह जानि कै कौनहु भांति
 नही निरधारौ ॥

७

जो हम खोज करै अभि अन्तर तो वह खोज
 करेही विखावे ।
 जो हम बाहिर कौ उठि दौरत तो कछु
 बाहिर हाथ न आवे ॥
 जो हम काहु कौ पूछत हैं पुनि सोउ अगाध
 गागना आवे ।
 ताहो ते कोउ न जान सकै तिहि सुन्दर कौन
 सी ठौर बतावे ॥

८

नेन न वैन न सेन न आस न वास न आस
 न प्यास न याते ।
 शीत न घाम न ठौर न ठाम न पुर्ष न वाम
 न बाप न माते ॥
 रूप न रेख न शेष अशेष न श्रेत न पोत न
 घाम न राते ।

सुन्दर मौन गहो सिध साधक कौन कहे
उसकी मुख बाते ॥

८

वेद थके कहि तन्त्र थके कहि ग्रन्थ थके निधि
वासर गाते ॥

शेष थके शिव इन्द्र थके पुनि खोज कियौ बहू
भाति विधाते ॥

पीर थके अरु मोर थके पुनि धीर थके बहू
बोली गिराते ॥

सुन्दर मौन गहो सिध साधक कौन कहे उसकी
मुख बाते ॥

१०

योगी थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकि
रहे फल खाते ॥

सध्यासो थके वनवासो थके शु उदासो थके
फिर फेरि फिराते ॥

शेख मसायख और उ लायक थाकि रहे मन
में मुसकाते ॥

सुन्दर मौन गहो सिध साधक कौन कहे उसकी
मुख बाते ॥

इति श्रीसुन्दरदास कृत सुन्दरविश्वस सवेया सन्पूर्णः ।

श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सङ्गीत रागकल्पद्रुमे
ज्ञानतत्त्वसारसंबन्ध समाप्तः ।

अथ श्रीकबीर-बीजक प्रारम्भः

आशावरी—तिताला

अन्तर ज्योति शब्द एक नारी ।
हरि ब्रह्मा जाके त्रिपुरारी ॥
तो त्रिय भग अरु लिङ्ग अमला ।
तेउ न जानत आदि ओ अमला ॥

वैखरी एक विधाता कौन्हा ।
चाद हेठ वर पाट सीं लौन्हा ॥
हरि हर ब्रह्मा महतो नाजं ।
तिन पुनि तीनो वश विलगार्जं ॥
तीन नार चल खण्ड ब्रह्मण्डा ।
षट दर्शन छानवे पखण्डा ॥
पेट हि काहु न वेद पढाया ।
सुन तिकराय तुर्क महीं आया ॥
नारो मोचित गर्भ प्रसूती ।
स्वांग धरे बहुते कारतूती ॥
तहिया इम तुम एकहो लोडु ।
एक प्राण पियापे मोडु ॥
एकही जनो जना संसारा ।
कवन ज्ञान तें भएडु न्यारा ॥
भौ बालक भग द्वारहि आया ।
भग भौ गौते पुरुष कहाया ॥
अवगतिकी गति काहु न जानी ।
एक जोभ कत कहो वखानी ॥
जौ मुख होहि जौभि दय लाखा ।
तौ कोइ आइ महातम भाखा ॥

शाची

कहहि कबीर पुकार कइ मोहल व्यवहार ।
एक राम नाम जाने विना भव बूडि सुयो संसार ॥

धनाश्री—तिताला

जीव रूप एक अन्तर वासा ।
अन्तर ज्योति कौन्ह परकासा ॥
इच्छा रूप नारो अवतरो ।
तासु नरम गाई है तरी ॥
धरि तेहि नारीके पुत्रके उषेउ ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर सेउ ॥
फेरि ब्रह्मै पुष्टल करतारो ।
कौ तोर पुरुष करी तुम्ह नारी ॥

हम तुम तुम हम अवर न कोर ।
तुमही पुरुष हमहि तोरि जोर ॥

साची

बाप पूत किए कवारो ए कै माजो आए ।
ऐसा पूत सुपूत न देखो जो बापहि चिन्हवाए ॥

२

वरणहु कवन रूपमय रेखा ।
दूसरा कौन सो काहि जेहि देखा ॥
हे ओंकार आदि जा वेदा ।
बेकर कहहु कौन खलु भेदा ॥
नहि कलु होत पिताके बन्द ।
नहि तारागण नहि रवि चन्द ॥
नहि जल नहि स्थल नहि स्थिर पौन ।
को धर नाम हुकुम को रौन ॥
नहि कलु हुतो दिवस नहि राति ।
ते करा कहहु कवन कुल जाति ॥

साची

शून्य सहज मन सुमति प्रगट भई एक जोति ।
तेहि पुरुषकी में वलिहारो निरालम्ब जो होति ॥

१

प्रथम अरन्ध्र कवन कर भयाउ ।
दूसरा प्रकट कौन्ह ते ठाउ ॥
प्रकटे ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति ।
प्रथमही भक्ति कौन्ह जोव उक्ति ॥
प्रगट पवन पानो अरु छाया ।
वहु विस्तार के प्रगटो माया ॥
प्रगटे अण्ड पिण्ड ब्रह्मण्डा ।
पृथ्वीमें प्रगट कौन्ह नव खण्डा ॥
प्रगट सिद्ध साधक सञ्चासो ।
ए सब लागि रहै अविनाशो ॥
प्रगटे सुर नर मुनि सब भाारि ।
तेही खोजि परे सब हारि ॥

साची

जोव शीव सब प्रगटेव ठाकुर सब दास ।
कबीर भीर न जाने एक राम नामकौ पास ॥

जङ्गला—विताला

प्रथम चरण गुरु कौन्ह विचारा ।
कर तागा यहि सिरजन हारा ॥
करम कह के जग बीरावा ।
शक्ति भक्ति ले बांधि न्हावा ॥
अदभुद रूप ज्योतिके वानो ।
उपजो प्रीति रमैनी ठानो ॥
गुणियन गुण अर्थ नहिं आया ।
बहुतक जन चौन्हि नहि पाया ॥
जो चोन्है ताको निर्मल अङ्गा ।
अनचोन्है नर भये पतङ्गा ॥

साची

चौन्हि चोन्हि कर गावा बीरे वानो परौ न चोन्ह ।
आदि अन्त उत्पति प्रलय आयुहो के दोन्ह ॥

२

हरि हर ब्रह्माके मन भाई ।
तौनि अक्षर ले युक्ति बनाई ॥
बोधि अक्षर का कौन्ह वखाना ।
अनहद शब्द ज्योति परवाना ॥
अक्षर पढ़ि गुणि राह चलाई ।
सनक सनन्दन के मन भाई ॥
वेद कितेव कौन्ह विस्तारा ।
फैलि गइलि मन अगम अपारा ॥
चहु युग भक्तन बाखल बाटो ।
ससुक्ति न परौ मोटरो फाटी ॥
भै भै पृथ्वीमें दश दिशि धावै ।
अस्थिर होइ औषधी पावै ॥
होध भिस्त जा चित न डोखावै ।
खसमहि छोड़ दोऊख को धाव ॥

पूरव दिशि हंसगति होई ।
है समीप साईं बुझि कोई ॥
भक्त भक्तिका कौन्ह शृङ्गारा ।
बूढ़ि गर्द सब मांझी धारा ॥

साची

बिनु गुरु ज्ञान दुई भई प्रथम वही मिलि बात ।
युग युग सोई कहि गया काहु न मानी बात ॥

१

तहिया होतें पवन नहि पानी ।
तहिया सृष्टि कौन उत्पानी ॥
तहिया होतें कलो बहु फूला ।
तहिया होतें गमन ही शूला ॥
तहि विद्या तहि वेद अबादा ।
तहिया हुतें सयद नहि सादा ॥
तहिया हुतें अण्ड नहि वासू ।
नहि सुर धरणि गगन आकासू ॥
तहिया हुतें गुरु नहि चेला ।
गम आगम नहि पन्थहु हिला ॥

साची

अबगतिकी गति का कही जाके गांव न ठांव ।
गुण बोधुना पेखना क्या कहि लोके नांव ॥

पूर्वी—तिताला

तत्त्वमसो इहके उपदेशा ।
ए उपनिषत् कहे संदेसा ॥
ई निश्चय उन कै बैठी भारी ।
बोहिके वरणन करे अधिकारी ॥
परम तत्त्वके निज परवाना ।
समकादिक नारद सुख माना ॥
जग बलि किया जनक संवादा ।
दत्तात्रय वाही रसस्वादा ॥
वहै बात शिष्टराम मिलि गाई ।
कृष्णराम अथव समुदाई ॥
वहै बात ले जनक दृढ़ाई ।
देह धरि विदेह कहाई ॥

साची

कुल अभिमातो खोइ कै जीवत मुया न होइ ।
देखत जो नहि देखिए अष्ट कहावे सोइ ॥

२

वाधे अष्ट कष्ट नौ सूता ।
जग वाधौ अज्ञानीके सूता ॥
भखके वाहन वाधो जानी ।
वाधे सृष्टि कहा ले गानो ॥
वाधे देव तेंतिसो कोरी ।
सी बैर तलो हवदो गो तोरी ॥
राजा सीरे तुरिया चढ़ी ।
पथिके सुमर नाव ले बढी ॥
अर्थ बोधुनी सबरें नारी ।
परजा सबरें पडुमी भारी ॥

साची

बन्द मनावे तै फल पावै बन्दिया सो देए ।
कहे कबीर ते जबरे निशवासर नाम जो लीए ॥

पीलू—यत्

ए ही ले पिपराही वही ।
जग रह आवत काहु न कही ॥
आइ कर गो भया अजगूता ।
जन्म जन्म जन पहरें बूता ॥
बूता पहरि माकरे माना ।
तीनि लोक में करे पीवाना ॥
वाधिन्ह ब्रह्मा विष्णु मधेशू ।
सुर नर मुनि सब देव गणेशू ॥
वधी न पवन वाक्क नभ वीरू ।
अन्द सु वाध न दोऊ वीरू ॥
साध मन्त्र वाधिन सब भारी ।
अमृत वस्तु न जानै नारी ॥

साची

अमृत वस्तु न जानै मगन भया सब लोय ।
कहहि कबीर का मौनहि मारण जीव न होय ॥

२

आधरि गुष्टि छष्टि भई बोरी ।
 तिनि को कामे लागि ठगोरो ॥
 ब्रह्महि ठगा नाग पा जारो ।
 देवता सहित ठग्यो त्रिपुरारी ॥
 राज ठगोरो विरमहि परी ।
 चौदह भुवनको रचो भोगरी ॥
 चादि अन्त जाके जरि को न जानी ।
 ताके डर तुम काहे को मानो ॥
 के अंतंग तुम जात पतङ्गा ।
 यम घर कियो जोवके रक्षा ॥
 नीम कीट जैसे नीम पियारा ।
 विषको अमृत कहे गंवारा ॥
 विषके सङ्ग कौन गुण होई ।
 किञ्चित् लाभ मूल गौ खाई ॥
 विष अमृत को एकै सानी ।
 जो न जाना तिन विष करि मानो ॥
 कहा भयो नल सुख भी सुभा ।
 विनु परचे जग बूझ न बूझा ॥
 मति कर हीन कवन गुण कहई ।
 सास चला जी आशा रहई ॥

साची

मृवा है मरि जाहुगे सुएको बाजी टोल ।
 सपन सनेही जग भया सयो दानी रहि गो बोल ॥

गौरी—निताला

माठो कौं कोर पथानक ताला ।
 सोई ब्रह्म सोइ रखवाला ॥
 सबके देखत जीव डराना ।
 ब्रह्मा विष्णु एकही जाना ॥
 जी किसान किसानी करइ ।
 सपजे खेत बीज नहि परइ ॥
 छाड़ि देहु नस भिलिक भेला ।
 बूड़े दोऊ गुर और चेला ॥

तीसर बूड़े पारथ भाइ ।
 जिन्ह वन गड़ा होदवा लगाइ ॥
 भूकि भूकि कूकुर मरि गयउ ।
 काज न एक सियारसे भयउ ॥

साची

मूसी विलाई एक सङ्ग कहु कैसे रहि जाए ।
 अचरज एक देखहु हो सन्तो हस्तो सिंहहि खाए ॥

२

नहि प्रतीति जेइ है संसारा ।
 दुर्बल चोट कठिन कर मारा ॥
 सो तो शेखे जास लुटाई ।
 काहके परतोत न पाई ॥
 चले लगे सब मूल गंवाई ।
 यम केवारि काटि नहि जाई ॥
 आज काज है कालि अकाजा ।
 चले सादि डिङ्ग तर राजा ॥
 सङ्गज बेचारै मूल गवाई ।
 लाभ ते हानि होइ रे भाई ॥
 बोली मति चन्द्रमा गौ अथर ।
 त्रिकुटी सङ्ग न वामी वसर ॥
 देहुन अष्ट तुम जीतहु जाइ ।
 तब ही विष्णु कहा समुभाइ ॥
 तब सनकादिक तत्त्व विचारा ।
 जैसे रङ्ग परा धन पारा ॥
 भव मर्याद बहत सुख लागे ।
 ए लेखे सब संशय भागे ॥
 देखेहि अतपति लागु न वारा ।
 एक मरे एक करै विचारा ॥
 सुए गएकी कोइ न कहई ।
 भूठो आशा लगी जग रहई ॥

साची

जरत जरत ते वाचहु काहे न करहु गुहारि वर ।
 विष खेइयके खायहु राति दिवस मिलि भारि वर ॥

भूपाली—तिताला

बड़ सो पापौ आहि गुमानो ।
 पाषण्ड रूप छज नल जानो ॥
 वामनरूप लौन्ह वलि राजा ।
 ब्राह्मण कोन्ह कौनको काजा ॥
 ब्राह्मण हो सब कोन्हो चोरी ।
 ब्राह्मण हो कौ लागो घोरी ॥
 ब्राह्मण कोन्हो ग्रन्थ पुराना ।
 कैसेहु के मोहि मानस जाना ॥
 एक से ब्रह्मा पन्थ चलाया ।
 पशुहि गोप गोपालहि गाया ॥
 पशुगो शम्भू जगत् चलाया ।
 एक से भूत प्रेत मन लाया ॥
 एक से पूजा जैन विचारा ।
 एक से निहुरि नमाज गुजारा ॥
 कोइ काहु का कहा न माना ।
 भूठा खसल कबोर न जाना ॥
 तनमनमें रहो मेरे मुक्ता ।
 सत्य कबोर सत्य है वक्ता ॥
 आपुही हेच आपुही पाता ।
 आपुही कुल आपुही जाती ॥
 सर्वभूत संसार निवासी ।
 आपुहि खाम आपु सुख वासी ॥
 कहत मोहि भएल युग चारो ।
 काके आगे कहो पुकारो ॥

साची

सांचहि कोई न मानै भूठहि के सङ्ग जाए ।
 भूठहि भूठा मिस रहि अहमक खेहा खाए ॥

२

उनइ वहिरिया परि गौ संभ्रा ।
 अगवा भूले वन शब्दा मंभ्रा ॥
 पिया न तै धनि अगतै रहइ ।
 चौपरि कामरि माथे मइइ ॥

साची

फुलवा भार न ले सके कहै सखो सन रोइ ।
 ज्यों ज्यों भोजे कामरौ त्यों त्यों भारो होइ ॥

कलिङ्ग-गौरी—तिताला

चलत चलत अति चरण पिराने ।
 हारि परे तहां अति रिसियाने ॥
 गुणी गन्धर्व मुनि अन्त न पाया ।
 हरि अलोप जग धनुषे लाया ॥
 गहन वन्ध वानो ना सूभा ।
 याकि परे तब कछु न बूभा ॥
 भूलि परे जो अधिक डेराई ।
 रजनो अन्धकूप होइ भाई ॥
 माया माइ उहा भरिपरौ ।
 दादुर दामिनी पायन आ परौ ॥
 बरसे तपै अखण्डित धारा ।
 रजनी जाव न कछु अहारा ॥

साची

सभे लोग जहं डारया व्याभे सके मुलान ।
 कहा कोइ माने नहीं सब एकै माइ समान ॥

भूपाली—तिताला

जस जीव आप मिलै अस कोइ ।
 बहुर धरम सुख हृदया होइ ॥
 जासो बात राम कौ कहौ ।
 प्रीति न काहसो निबहौ ॥
 एकै मान सकल जग देखी ।
 बाहर परै सो होइ विगेषी ॥
 वीखै मोहके फन्द छोड़ा ।
 जहां जाए तहां काट कसाइ ॥
 आहि कसाई छरो हाथा ।
 कैसेहु आवे काट न माथा ॥
 मानुष बड़ा बड़ाके आया ।
 एकहि पण्डित सबै पढ़ाया ॥

पढ़ना पढ़ो वरो जनि गोइ ।
नहि तौ निश्चय जाहु विगोइ ॥

साची

सुमिरण करहु रामको छाड़हु इहांकी आस ।
नाहित तरउपर धरि चापि है

यशको रहू कोट पचास ॥

१

अदभुद पन्थ वरनि नहि जाई ।
भूमे राम भुंलो चुवि पाई ॥
जो चैतहु तौ चैतहु भाई ।
नाहित जोव जनम ले जाई ॥
शब्द न मानै कथे ज्ञाना ।
ताते यम दौन्हों है थाना ॥
संशय सावज वसे शरीरा ।
तिन खाइल अब नवेयल होरा ॥

साची

संशय सावज शरीर में संडुगहि खले लुभारि ।
ऐसा धाइ वापुरा जोवहो मारै मारि ॥

एमन—तिताला

अनइद अनुभवको करि आसा ।
ए विपरीत देखहु होत तमासा ॥
ए तमाशा देखहु रे भाई ।
जहां सुनी तहां चलि जाई ॥
सुनहो वच्छे सुनहो गयउ ।
हाथा छाड़ि बेहाथा भयउ ॥
संशय सावज सकल संसारा ।
काल अहेरो सांभ सकारा ॥

साची

सुमिरण किये हु का रामको काल गहै केश ।
नहि जानहु कब मारि हो का घरका परदेश ॥

२

अब कहो राम नाम अविनाशा ।
हरि छोड़ि जियरा कतहु न आशा ॥

जहां जाहु तहां होहु पतङ्गा ।
अब जनि जरहु समुक्ति विष सङ्गा ॥
राम नाम लय लावे लीन्हा ।
शुङ्गो कीट समुक्ति मन दीन्हा ॥
भो अस गहृतु अति दुःखके भारो ।
कर जोव यत्न जो देखु विचारी ॥
मन के बात हल हरो बेकारा ।
ते नहि सूझै वार न पारा ॥

साची

इच्छा कर भवसागर तामें योहित राम अवार ।
कहे कबीर हरि शरम गो सुख विस्तार ॥

१

बहुत दुःख दुःखको खानो ।
तब तचि हो जब राम हो जानो ॥
रामहि जानि युक्ति ज्यों चलाइ ।
युक्तो सो फन्दा नहो पराइ ॥
युक्तिहि युक्ति चला संसारा ।
निखे कहा तो मालु हमारा ॥
कनक कामिनो घोर पटोरा ।
सेवति बहुत रहसि दिन थोरा ॥
थोरे संपति गो बौराइ ।
धर्मराज के खबरि न पाइ ॥
देखि दास मुख गो कुम्हिलाई ।
अमृतके धोके गो विष खाई ॥

साची

मैं सिरजो मैं जारो मैं मारो मैं खाउ ।
जल खल महि आद मिरौ मोर निरखन नाउ ॥

१

अलख निरखन लखे न कोइ ।
जो बन्धे बन्धार न कोइ ॥
जो भूठा वाधा ए आना ।
भूठे बात सांच कर माना ॥

धन्वा धन्वा किम व्यवहारा ।
 कर्म विवर्गित वसै निनारा ॥
 घट आश्रय और रस न दीन्हा ।
 घट रस वास घटै वस्तु कौन्हा ॥
 चारि हृत्त छः शाख वषानै ।
 बौत्था अप्रित जन ना जानै ॥
 चारै आगम करै विचारा ।
 ते नहि सुम्नि वार न पारा ॥
 जप तीर्थ धर्म करै बहु पूजा ।
 काल पुण्य जग कोजै वङ्गजा ॥

साची

साची मन्दिर नेह का मति कोइ पैटे धाए ।
 जो कोइ पैटे धाए को विन शिर सेती जाए ॥

५

असख सुख दुःख आदि ओ अन्ता ।
 मन भुलान मग रमै सन्ता ॥
 सुख विसराए सुक्ति कहा पावै ।
 परिहरि सांच भूठ कह धावै ॥
 अबल ज्योति डाहै एक सङ्गा ।
 नयन नेह जस तरै पतङ्गा ॥
 करहु विचार जो सब दुःख जाइ ।
 एह प्रहर भूठा केर समाइ ॥
 सासख लागी जन्म सराइ ।
 जरा मरण नियरायल आइ ॥

साची

कर्मकी वाधतइ जग इहि विधि आवै जाइ ।
 मानुष जन्म पाइ के बल का है कौ जहङ्गार ॥

कैदरा—तिताला

चन्द्र चकोरकी ऐसी बात जनाइ ।
 मानुष बुद्धि दीन पसटाइ ॥
 चारि अवस्था सपने कहइ ।
 कूठौ फूरा मानत अइइ ॥
 मिथ्या बात न जानै कोइ ।
 एहि विधि सब गयल विगोइ ॥

आगे दै दे सबनि गंवाइ ।
 मानुष बुद्ध्याकी सपने पाइ ॥
 चौतिस अक्षर सी निकलै जोइ ॥
 पाप पुण्य जानै गो सोइ ।

साची

सोइ कह तै सोइ हो ठुगै तेनो कलि न बाहर आव ।
 हो इकर ठाठ कहत ही क्यो धे धे जन्म गंवाय ॥

२

चौतिस अक्षर का एहि विशेषा ।
 सच श्रीनाम एहि में देखा ॥
 भूलि भटकि नर फिर घर आवा ।
 होत जन्म सो सर्वांग गंवावा ॥
 खोजहि ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति ।
 अन्त लोक खोजहि बहु भक्ति ॥
 खोजहि गुणि गन्धर्व सुनि देवा ।
 अन्त लोक खोजै बहु सेवा ॥

साची

यती सती सब खोजै मानै मन में हारि ।
 बड़ बड़ जीवन वाचही कहहि कबीर पुकारि ॥

कैदरा—तिताला

आपुहि करता भये कुलाला ।
 बहु विधि वासन गने कुन्हारा ॥
 विधि ने सबे कौन्ह एकठाउ ।
 अनेक यत्न के यानक पाउ ॥
 जे तुर अग्नि ने दीन्ह प्रजारी ।
 तंहि में आप भये प्रतिपाली ॥
 बहुत यत्न ते बाहर आया ।
 तब शिव शक्ति नाम धराया ॥
 घर के सुत जो होइ अयागा ।
 ताके सङ्ग न जाइ सयागा ॥
 साची बात कही नै अपनो ।
 भया दिवाना और के पुनो ॥

गुप्त प्रकट है एके दुधा ।
का को कहिए ब्राह्मण मुदा ॥
समुझ् गर्द भूले मति कोइ ।
हिन्दू तुलक भूठ कुल दोइ ॥

साधो

जिन्ह एह चित्र बनाइयां साँचा सो ए वार ।
कहहि कबीर ते जन भले जो चितवत ही
सेत विचार ॥

केदार—तिताला

ब्रह्मा को दीन्हा ब्रह्मण्डा ।
सात द्वीप पुहुमी नवखण्डा ॥
सत्य सत्य के विष्णु दृढ़ाइ ।
तीनो लोक में राखि न जाइ ॥
लिङ्ग रूप शङ्कर तब कीन्हा ।
धरती खाल रसातल दीन्हा ॥
तब अष्ट की रची कुमारी ।
तीन लोक मार्हन सब भारी ॥
दुतिया नाम पार्वती भई ।
तब कर तै शङ्कर को दई ॥
एके पुरुष एक कहि नारी ।
तेहि ते रची खानि जग चारी ॥
शर्मन वर्मन देव श्री दासा ।
रजगुण तम मानुष रति अकासा ॥

साधो

एके अण्ड उकार ते सब जग भयो पसार ।
कहहि कबीर सब नारि रामकी अविचल
पुरुष भतार ॥

२

अस जोलहा कामर मन जाना ।
जिन जग भाइ पसारिहु ताना ॥
धरति अकाश दोइ गांव ठगाया ।
चन्द्र सूर्य दोइ नारि बनाया ॥
सहस्र तारा से पूरण पूरी ।
अजहं भी न कठिन है दूरी ॥

कहहि कबीर कसो मासुरी ।
सुत कुसुत वोन भल कुरी ॥
वज्र हु ने टण खिरन मै होइ ।
टण से वज्र करै पुनि सोइ ॥
निभरु नरु जानि परिहरै ।
कर्म कवाचल खालच करै ॥
कर्म धर्म मति बुद्धि प्रहरिया ।
भूठा नाम सांच ले खरिया ॥
राजगति त्रिविध कौन परगासा ॥
कर्म धर्म बुद्धिकेर विनासा ॥
रविके जगे ते भो खोना ।
घर बाहर दोनोमें लोना ॥
विष खाइ विष नहिं भावे ।
गरुड़ा सो जो मृतक जिभावे ॥

साधो

असख ज्योति लगी पलक में पलकहि में उचि जाय ।
विषहर मृत न मानै तो गरुड़ा काह कराय ॥

सोरठ—तिताला

भौ भूले षट दर्शन भाइ ।
पाषण्ड भेख रक्षा लपटाइ ॥
जीव शीवका अहै मसेना ।
चार बन्ध त्रिगुण रेना ॥
जैनी धर्म कर्म ना जाना ।
पाती तोरि देवघरा आना ॥
देव नाम अरु वाक् फूला ।
मानो जीव कोटि सम तूला ॥
जो पृथिवी के राम उचारे ।
देखत जन्म आपनो हारे ॥
मन मतिमन्द करे असरारा ॥
कल पैखी दश सेनहि द्वारा ॥
ताकर हाल होइ अद्भुदा ।
हो दर्शन में जैन विगुरदा ॥

साची

ज्ञान अमर पद बाहर नियरे ते हे दूरि ।
जो जानि ताके निकट हे नहि ती रहा
सकल घट पूरि ॥

२

सुमृत आहि गुणनके चौन्हा ।
पाप पुण्यके मारग लोन्हा ॥
सुमृत वेद पढे असरारा ।
पाषण्ड रूप करे हंकारा ॥
पढे वेद अरु करे बड़ाई ।
संशय गांठि अजहु नहि जाई ॥
पढे सत्य सो जीव बध करई ।
भूछि काटि अगु मन कै धरई ॥

साची

कहहि कबीर ए पाषण्ड बहुतक जीव सताव ।
अनुभव भाव न दरसे जीवत आपन लखाव ॥

विद्याग—तिताला

अन्ध ले दर्पण वेद पुराना ।
देखी कहा महा रस जाना ॥
जस खर चन्दन लादे भारा ।
परम लगासन जानु गंवारा ॥
कहहि कबीर खाजे असमाना ।
सो न मिले याही अभिमाना ॥

२

वेदकी पूतो सुमृत भाई ।
सो जो बैरो करलते भाई ॥
आपही वरो आपु गरवन्धा ।
भूठा मोह काल के फन्दा ॥
बांधत बांध छोरि नहि जाई ।
विशेष रूप भुलो दुनो भाई ।
हमरे देखत सकल जग लूटा ।
दास कबीर राम कहि भूटा ॥

साची

रामहि राम पुकारत जिह्वा पड़िगौ रौस ।
सूखी जल पीवे नहि खाद पवनको हौस ॥

विद्याग—तिताला

पढ़ि पढ़ि पण्डित करे चतुराई ।
निज सुक्ति मोहि कहे समुदाई ॥
कहां वसे पूर्व कौन गांठ ।
सो मोहि पण्डित सुनावहु नांठ ॥
चारि वेद ब्रह्म निज ठाना ।
सुक्ति को मर्म न उनह जाना ॥
दान पुण्य उन्ह हत बयाना ।
अपना मरणको खबरि न जाना ॥
एक नाम है अगम गंभौरा ।
तहवा अखल दास कबीरा ॥

साची

चिंछटी जहां न नहि सकं राई नहि ठहराई ।
आवागमन को गम नही तहां सकल जग जाई ॥

२

पण्डित भूले पढ़ि गुणि वेदा ।
आपु अपनपौ जानु न भेदा ॥
सन्ध्या तर्पण को घट् कर्मा ।
ई बहु रूस करे असु धर्मा ॥
गायत्री युग चारि पढ़ाई ।
पूछहु जाइ सुक्ति किन पाई ॥
भौर के छुए लेत ही सोचा ।
तुमते कहहु कौन हे मोचा ॥
अगुणी गर्व करो अधिकाई ।
अधिकी गर्व न होत भलाई ॥
जासु नाम है गर्व प्रहारो ।
सो कस गर्व हि सके संहारो ॥

साची

कुल मर्यादा खोइ के खाके जिन पद निर्वाच ।
ब्यास वीज नसाइके नास भए विदेही धान ॥

१

ज्ञानी चतुर विलक्षण सोइ ।
 एक सयान सयान न होइ ॥
 दूसर सयान काम मन जाना ।
 उतपति परसे सांभ विहाना ॥
 वषिज एक सच नालो टाना ।
 नियम धर्म सजि मन भगवाना ॥
 हरि अस ठाकुर तेज न जाइ ।
 वास न भिस्ति गाव दुल हाइ ॥

साची

ते नर कहां गए जिन्ह गुरु दोन्हो मूढ़ ।
 राम नाम निज जानि के छाड़ि देहो भ्रम खूढ़ ॥

मोरउ—तिताला

एक सयान सयान न होइ ।
 दूसर सयान न जाने कोइ ॥
 तीसर सयान सयान हि खाइ ।
 चउथ सयान तहां लजाइ ॥
 पचै सयान जौ जाने कोइ ।
 छवै माह सब गइल विगोइ ॥
 सतवै सयान जे जाने भाइ ।
 लोक वेद में दोन्ह देखाइ ॥

साची

बोजक बतावे वीत जा जी वित गुप्ता होइ ।
 ऐसे शब्द बतावे जीव को बूभे विरसा कोइ ॥

ठु मरी—तिताला

एहि विधि कही कहा नहि माना ।
 मारग माभ पसारो ताना ॥
 राति दिवस मिलि जोरि न तागा ।
 वीढ़त कातत भमं न भागा ॥
 भर्मा सब घट रहल समार्ई ।
 भर्म छोड़ि कतइ नहि जाई ॥
 परे न पूरि दिनहु दिन छोना ।
 तइइ जाइ अहं अगा विहोना ॥

जो मत आदि अन्त चलि आया ।
 सो मत सभनुन प्रगट सुनाया ॥

साची

उहे संदेस कूरि कमाने लोन्हो सिरहि चढ़ाइ ।
 सन्तो सन्तोष सुख में रही ती हृदय जुड़ाइ ॥

२

जिन कलिमा कलि माहि पठाया ।
 कदरनि खोजि तिनहु नहि पाया ॥
 क्रमते करम करे करतूता ।
 वेद कतेव भए सबो रूता ॥
 क्रमते सो जो गर्व अवतरिया ।
 क्रमते सो नमाज केवरिया ॥
 क्रमते सुनत और जो नेउ ।
 होन्दू तुरुक न जाने भेउ ॥

साची

पानी पवन से जोइ के रचि आई उतपात ।
 सूनी सुरति समाइके कासा कहियै जात ॥

३

आटम आदि सुधो नहि पाई ।
 मामा हौ तथा काइ आई ॥
 तब नहि होते तुरुक औ हिन्दू ।
 माइ कर बधिर पिता कर विन्दू ॥
 तब नहि होते गाइ कसार्ई ।
 तब कहु विसमी किन फुरमाई ॥
 तब नही होते कुल अरु जानी ।
 दोऊख कवना नहि उतपानी ॥
 मनमस सेका सुधो नहि जानी ।
 मति मुलान से दोन भुखाने ॥

साची

संयोग कारण नख भी जागे का गुत जाई ।
 जिह्वा खाद ककांसैनु कोन्हो बहुत उपाई ॥

४

अम्बुक रास समुद्रको खाई ।
 रवि शशि कोटि तैतिसो भाई ॥

अमर जाल में आसन माड़ा ।
 चाहत चख बख संग न छाड़ा ॥
 दुःख के भर्म काह नहि पावा ।
 बहुत भातिके जग बीरावा ॥
 आपुहि बावर आपु रिसियाना ।
 हृदया वसत राम नहि जाना ॥

साची

रिह हरि तेई ठाकुर तेई हरिके दास ।
 नहि यम भवा न यामिनो भामिनि चली गिरास ॥

देव—ठुमरी

जब हम रहलि रहलि नहि कोइ ।
 हमरे माह रहल सब कोइ ॥
 कहु हो राम कवन तोर सेवा ।
 सो समुझाइ कहहु मोहि देवा ॥
 फुर फुर कहौ मरै सब कोइ ।
 भूठे भूठा सांधत होइ ॥
 आंधर कहि सबे हम देखा ।
 तहां दिटार बैठि सुख पेखा ॥
 एहि विधि कहौ माने जौ कोइ ।
 जस मुख तस जो हृदए होइ ॥
 कहै कबीर हंस भुस खाइ ।
 हमरे कहै छटि हो भाइ ॥

खन्नापत्ती—तिताला

जिन जिन कौन आप विश्वासा ।
 नरक गए ते नरके वासा ॥
 आवत जात न लागे वारा ।
 काल अहेरो सांभ सकारा ॥
 चौदह विद्या पढ़ि समुभावे ।
 अपने मरण कि खबर न पावे ॥
 जाने जीव के परा अन्देसा ।
 भूठे आनि के कहा अन्देसा ॥
 सङ्गति छोड़ करि असरारा ।
 जभे मोट नरक के भारा ॥

साची

गुरु द्रोही मन सुखी नारो पुरुष विचार ।
 ते नर चौराशौ भर्मि है जो लागि चूम्र दिवाकर ॥

२

कबहु न भए सङ्ग औ साथा ।
 ऐसे जन्म गवाओ आथा ॥
 बहुरि न पैहो ऐसी ठाना ।
 साधु सङ्गति तुम नहि पहिचाना ॥
 अब तोर होइ नरक में वासा ।
 निशिदिन रहे लवारिके साथा ॥

साची

जाति सबनकर देखिए कहहि कबीर पुकार ।
 चेतना होइ तो चेतहु नाहि त धोस परतु है खार ॥

२

हिरनाकुस रावण गौ कंसा ।
 कृष्ण गए सुर नर मुनि वंशा ॥
 ब्रह्मा गये मर्म नहि जानी ।
 बड़ सब गए जे रहल सयानी ॥
 समुझि न परल राम के कहानी ।
 निखवक दुःख को सर्वक पानी ॥
 रहि गौ पन्थ थकित भये मोना ।
 दशहु दिसा पजारि भौ योना ॥
 मीन जाल भ्यो ई संसारा ।
 लोहे की नाव पखानका भारा ॥
 खेवै सबे भरम हम जानी ।
 तबो कहे रहे उत्तरानी ॥

साची

मछरी मुख जस केसुया मुसवन गिरदानि ।
 सरपनमें गहकवा ऐसे जाति देखि सब न के जानि ॥

२

विनसै नाग गरुड़ गलि जाई ।
 विनसै कपटी औ सत भाई ॥
 विनसै पाप पुण्य जिन कोन्हा ।
 विनसै गुण निरगुणिन कोन्हा ॥

विनसै अग्नि पवन औ पानी ।
विनसै सृष्टि कहा ले गानी ॥
विश्वलोक विनसै क्षण माही ।
हौं देखा परव ले कौ छाहो ॥

साखी

मत्स्वरूप माया भई सवरे खेलै अहेरि ।
हरि हर ब्रह्मा न उवरे सुर नर मुनि कहू केरि ॥

जरासिन्धु शिशुपाल सहारा ।
सहस्र अर्जुन छल मो मारा ॥
बह छल रावण से हो गल वितो ।
लह्या रहल कश्चन की भितो ॥
दुर्योधन अभिमानी गयउ ।
पाण्डव केर भेद नहि पयउ ॥
भया केहि भगेन सब राजा ।
उत्तम मध्यम बाजन बाजा ॥
छः चकवै वीति धरनि समाना ।
एको जीव प्रोति तन जाना ॥
कह ले कहो अचेते गये ।
चेत अचेत भगरा एक भये ॥

साखी

यह माया जग मोहनी मोहैनि सब जग भार ।
हरिखन्द सत् के कारणे धरि धरि शोक विकार ॥

खन्नावतो—तिताला

माणिकपूर कबीर वसेरी ।
मदित सुनो सेखत को केरौ ॥
दूजो सुनौ जवनपुर थाना ।
रूसी सुनो पीरन की खाना ॥
एक दश पीर लिखै तेहो चामा ।
खसमा पड़े ऐगम्बर नामा ॥
मुनि बोल मो पै रहा न जाई ।
देखि मूकका रहा भुलाई ।
हबौ नवो नवीके कामा ।
जहां ले अमल सौ सबै हरामा ॥

साखी

शेख अकर दी शेख मकर दो मानो वचन हमार ।
आदि अन्त औ युग युग देखो दृष्टि पसार ॥

२

दर की बात कहो दरवेस ।
पातशाह के वन भेस ॥
कहा कूच कहा करो मुकामा ।
कवनि सुरतिके करो सलामा ॥
मैं तोहि पूछो मूमलमाना ।
लाल जरद को ताना बाना ॥
काजी काज करो तुम कंसा ।
घर घर जबह कारावहु भैसा ॥
कवरो मूरगो किन फुरमाया ।
का के कहे तुम कुरो चलाया ॥
दरद न जाने पोर कहावे ।
वेदा पढ़ि पढ़ि जग भरमावे ।
कहै कबीर इकसदह बहावे ॥
आप शरीखे जग कमुलावे ॥

साखी

दिन रहतु हो रोजा राति को हतो हो गार्ह ।
एह सुन वे बन्दगी कबीर ख़ुशी खोदाई ॥

२

कहत मो भइल युग युग चारी ।
समुभत नहीं मोर सुत नारी ॥
वेसहि आगि लागि वेसहो जरिया ।
भर्म भुलान नर धन्धे परिया ॥
हस्तीके फन्दे हस्ती रहई ।
मृगके फन्दे मृगा गहई ॥
लौह लोह काट अस आना ।
द्विया के ताव द्विया पे जाना ॥

साखी

नारो रचतें पुरुष पुरुष रचते नार ।
पुरुष पुरुष जो रचते विरलै संसार ॥

परज—तिताला

जाका नाम अकहु यारे भाई ।
ताकर कहा रमणो भाई ॥
कहिये तात प्रजे है ऐसा ।
जेसा पथिक बोहित चढ़ि वैसा ॥
है कहु रहनेकी बाता ॥
बैठ रहै चले पुनि जाता ॥
रहै वदन नहि अङ्ग स्वभाउ ।
मन अस्थिर न बोले काउ ॥

साखी

तन रहि तो मन जात है मन रहि तो तन जाई ।
तन मन एकै है रहै सो हंस कबोर कहाई ॥

२

जेहि कारण शिव आहु वियोगी ।
अङ्ग विभूति लाइ ले योगी ॥
शेष सहस्र मुख पार न पावै ।
सो अब खसम सहित समुभावै ॥
वैसी विधि जो मो को ध्यावै ।
छठए मास जो दर्शन पावै ॥
कौनै भाव देखार्ह देउ ।
गुप्त रहहु स्वभाव सब लेउ ॥

साखी

कहहि कबोर पुकारि के सब काउ है विचार ।
कहा हमार न मानै तो कस छूटे भ्रमजार ॥

परज—तिताला

महादेव मुनि अन्त न पाया ।
मास सहित उन जन्म गंवाया ॥
उमते सिद्ध न साधक कोई ।
मन अस्थिर कहु कंसे के होई ॥
जो लागि तनमें आहै मोई ।
तो लागि चेत न देखै कोई ॥
तब तो चिति हो जब तजि हो प्राणा ।
भये ज्ञान तब मन पछताना ॥

इतना सुगत निकट चलि जाई ।

मन के विकार न छूटे भाई ॥

साखी

तीनो लोक सुए कुवायके छुटो न काहु को पास ।
एकहि अन्वरे जग खायो सबका भवा निपास ॥

परज—तिताला

मरिगे प्रज्ञा काशी के वासी ।
शिव समेत तरे अविनाशी ॥
मथुरा तारि गे कृष्ण गुवारा ।
तारि तारि गये दसौ अवतारा ॥
तारि तारि गये भक्ति जिन ठानी ।
सरगुण मह जिन निर्गुण आनी ॥

साखी

नाथ मछ द्रा बचे नाही गौरख दत श्री व्यास ।
कहै कबोर पुकारि के ए सब ध्यान के पास ॥

२

तारि राम तार लछिमना ।
सङ्ग न गइ सोता अस धना ॥
तारत नाहि धन लागो वारा ।
गए भोज जिन साज लवारा ॥
गय पाण्डव कुन्ती अस रानी ।
गए सहदेव जिन बुधि मति ठानी ॥
सर्व सोनेको लहू उठाई ।
चलत बार कहु सङ्ग न लाई ॥
जा करि पुरिया अन्तरिच छाई ।
सो हरिचन्द्र देखल नहि जाई ॥
मूरख मनुथ अधिक सजोई ।
अपने मरे और लग रोई ॥
इन जानै अपने मरि जेवै ।
टका इसवो देष रखो ईवै ॥

साखी

अपनी अपनी करिए काहु के न लागी साब ।
अपनी करि गे रावण अपनी दशरथ नाब ॥

परज—विताला

दिन दिन जरै जननों के पाठ ।
गाड़े जाहि न समगे काठ ॥
काम्य न देइ मसकरी करइ ।
कहु दुहु भांति कौसै निस्तरइ ॥
अक्रम करै कर्म के धावे ।
पढ़ि गुण वेद जगत समुभावै ॥
छूछा परै अकारथ जाई ।
कहै कबीर चित चेतहु भाई ॥

२

कति पा सुरत रसिक एक अहइ ।
नाथ पचास वीं आये कहइ ॥
विद्या वेद पढ़ै पुनि सोइ ।
वचन कहै प्रतखइ होइ ॥
पहुंचौ बात विद्या के पेटा ।
वनहा के भर्म भया सहेता ॥

साखी

खर खोज न तु परे पाछे अगम अपार ।
विनु खरचै कस वाचि हो कबीर भूठा है हंकार ॥

२

तै सुत मानु हमारी सेवा ।
तोको राज देव हू देवा ॥
अगम दुर्गम गढ़ देव छड़ाइ ।
औरो बात सुनो कहु आइ ॥
उतपति परलै देहु देखाइ ।
करहु राज सुधि बे सरु आइ ॥
एको बार न होइ है बांकी ।
बहुनि जनम होइ है ताकी ॥
जाइ पाप सुख देख घना ।
निश्चय वचन कबीर के मना ॥

साखी

साधु अन्त तीर जन मानो वचन हमार ।
आदि अन्त उत्पत्ति प्रलय देखो दृष्टि पसार ॥

२

चढ़त चढ़ावत भयलहरि फोरो ।
मन वहि जानै के करि चोरो ॥
चौर एक मूसे संसारा ।
विरला जन कोइ बूझन हारा ॥
स्वर्ग पाताल भूमि ली भारो ।
एकै राम सकल रखवारो ॥

साखी

पाहुन ह्वै ह्वै सब गए विनु भितियनको चीत ।
जा सो किया मिताइया साजन भया न होत ॥

२

छाड़ो पति छाड़ो लंगरारई ।
मन अभिमान टूटि सब जाई ॥
जिन सो चोरो मिथ्या खाई ।
फिर वीरवा पलुहा बन जाई ॥
पुनि सम्पति औ पति कौ राबे ।
सो बी वास सार लो पावै ॥

साखी

भूठ भूठ-के डारो मिथ्या इह संसार ।
तेहि कारण मैं कहत हौं जेहिते होइ उधार ॥

२

धर्म कथा जो कहते रहइ ।
लावरो उठी प्रातै कहइ ॥
लावरि रिहने लावरि संभा ।
एक लावरि वसे हृदया मंभा ॥
राम हु केर मर्म नहि जाना ।
लै मत ठाने वेद पुराना ॥
वेदहु केर कहल नहि करइ ।
जरते रहै स्वस्ति नहि परइ ॥

साखी

गुन्थातीत के गाय तै आपहि गये गमाय ।
माटो का तन माटो मिलि गो पवनहि पवन समाय ॥

परज—यत्

जौ तू करता वरण विचारा ।
जन्मत तीन दण्ड अनुसारा ॥
जन्मे शूद्र मुए पुनि शूद्रा ।
कृतम जनेउ घालि जग दूद्रा ॥
जौ तुम ब्राह्मण ब्राह्मणोके जाया ।
अवराह दे काहे न आया ॥
जौ तू तुरुक तुरुकनो के जाया ।
पेटहि काहे न सुनति कराया ॥
कारी धवरी दूहो गाई ।
ता को दूध देह विलगाई ॥
छाड़ि कपट नर अधिक सयानी ।
कहै कबीर भुज सारङ्ग पानी ॥

२

नाना रूप वरण इक कीन्हे ।
चारि वरण वह काहु न चीन्हे ॥
नष्ट गए कर ती नहि चीन्हा ।
नष्ट गए औरहि मन दीन्हा ॥
नष्ट गये जिन वेद बखाना ।
नष्ट गये जिन वेद बखाना ॥
वेद पढ़े पै भेद न जाना ॥
विमुलख करै नयन नहि सुभा ।
भया अयान तब कहू न बुभा ॥

साखी

नाना नाच नचाइ कै नाचै नष्ट कै भेख ।
घट घट है अविनाशो सुनहु तकी तुम बेख ॥

२

काया कष्टन यत्न कराया ।
बहुत भांति के मन पलटाया ॥
जो सो वार कहौ समुभाई ।
तौ यह धरा लुवाय न जाई ॥
जन के कहै आन रहि जाई ।
जवौ निधि सिधि तिन पाई ॥

सदा धर्म जाके हृदं वसई ।
राम कसोटी कसते रहई ॥
जोरे कसा वै अन तै जाई । ८
सो बावर अपन हु बीराई ॥

साखी

ता ते परी काल की फांसो करहु आपनो खीच ।
जहां सन्त तहां सन्त सिधारो मिलि रहो
धुनते धीच ॥

४

अपने गुण कौ अवगुण कहहु ।
एह अभिमान तुम न विचारहु ॥
तुम जिवरे बहुत दुःख वाया ।
जल विनु मोन कवन सच पाया ॥
चातक जल हल भरे जो पासा ।
मेघ न वरसै चलै उदासा ॥
खाग धरै भवसागरको आसा ।
चातक जल हल आसै पासा ॥
राम नाम एही निज सारु ।
ऐसा बहुत सकल संसारु ॥
हरि उतहः तुम भांति पतङ्गा ।
यम धरि कियहु जीव के सङ्गा ॥
कौ चित है सपने निधि पाई ।
हिय न समाइ कहां धरहु छपाई ॥
हिय न समाइ छोड़ नहि पारा ।
भूठ लोभ तै कहू न विचारा ॥
सुमृत कौन आपु नहि माना ।
तब जरतइ छल छागर ह्वे जाना ॥
जिन दुर्मति डोले संसारा ।
तै नहि सुभै वार न पारा ॥

साखी

अधम एसो बड़ो ले कोइ न करै विचार ।
कहा इमार माने नहि तब कस छूटे भ्रमजार ॥

माह—तिताला

सोई हित् बुद्धि मोहि भावै ।
जात कुर्मोग मारग लावै ॥
सो सयान मारग रह जाई ।
कर खोज कबहं न भुलाई ॥
सो भूठा जो सुत कौ तजहो ।
गुरुकी दया राम ते भजहो ॥
किञ्चित् है एक ते भुलाना ।
धन सुत देखि भए अभिमाना ॥

साखी

दिये न खजाना किये न पियाना न दिन भया उजार ।
मरि गये ते मरि गये बाचे वाचनहार ॥

२

देह हिलाए भक्ति न होई ।
स्वर्ग धरेन बल बहुत विगोई ॥
धींगा धागो भलो न माना ।
जा काह्म मोहि हृदे न जाना ॥
सुख कहु आन हृदय कहु आना ।
सुपने कही मोहि ना जाना ॥
सो दुःख पद है एह संसारा ।
जो चेतो तो होइ उवारा ॥
जो गुरुजनकी निन्दा करई ।
शूकर श्वानका जन्म सो धरई ॥

साखी

लख घोरासी जौव जो तुम भटकी दुःख पाव ।
कहे कबीर जो रामहि जानै सो मोहि नीके भाव ॥

३

ताहि वियोग ते भये अनाथा ।
परे निकुञ्ज न पावे पाथा ॥
वेद नकल कहे सो जानै ।
जे समुझ ते भलो न मानै ॥
नट वट वह खेलै जो जानै ।
ता कर गुण भल ठाकुर मानै ॥

वोई खेल सब घट माहि ।
दूसर के लै कहुवो नाहि ॥
भलो पोच जो भवसर आवै ।
कैसे के जन पूरो पावै ॥

साखी

जाकर सर लागे सो जाने है पीर ।
लागे तो भागें नहो सुख सिद्ध निहार कबीर ॥

४

ऐसा योग न देखा भाई ।
भूला फिरता लिये गलाई ॥
महादेव को पत्य चलावै ।
ऐसो बड़ो महतो कहावै ॥
हाट बजार लगावै तारौ ।
कच्चा सोधा माया प्यारौ ॥
कब कहु दत्त मवासा तोरो ।
कब सुखदेव तोपची जीरो ॥
कब नारद बन्धकै चलाया ।
व्यासदेव कब बन्धन जाया ॥
करे लराई मति कै मन्दा ।
एह अतीत तक तरकश बन्दा ॥
भए विरक्त लोभ मति ठाना ।
सोना पहिरि लजावै बाना ॥
घोरा घोराकी नही बटोरा ।
गाव पाइ जस चले करोरा ॥

साखी

सुन्दरि नहीं है सोहती सनकादिक के साथ ।
कबहु क दगा लगावै कारो हाडो लोहें हाथ ॥

परज—तिताला

बोल ना क्हा सो बोलिण भाई ।
बोलनही सब तन्नु नसाई ॥
बोलत बोलत वाट विकारा ।
सो बोलिण जो पोष विचारा ॥

मिले सन्त वचन दुइ कहिए ।
मिले असन्त मौन हूँ रहिए ॥
पण्डित सो वो ना हितकारी ।
गुरु खसार हिए भक्तमारो ।
कहै कबौर अन्ध घट डोलै ।
पूरो होइ विचार हि बोलै ॥

सो गदधा जो मनकै माना ।
ताका बात इन्द्रहूँ नहि जाना ॥
जटा तोरि पहिरावे सेलो ।
योग युक्तिका गर्वहूँ हेलो ॥
आसन उड़ाए कौन बड़ाई ।
कैसे कौवा चील्हूँ भेडराई ॥
कैसे भोति तैसी है नारी ।
राजपाट सब गने उजारो ॥
जस नरक तस चन्दन जाना ।
जस बाघर तस रहै सयाना ॥
सपसी लीग गनै इकसारा ।
खांड प्रहरि मुख फांकै छारा ॥

साखी

एहो विचार विचार ते गए बुद्धि बल चैति ।
दोष मिलि एक होइ रहा मैं काहि लगाऊँ हैत ॥

कलिङ्ग—तिताला

नारि एक संसार हि आई ।
माइ न वाके बापहि जाई ॥
गोड़न गुड़न प्राण अन्धारा ।
तामें भवरि रहल संसारा ॥
दिना सात ले उनको सहो ।
बुद्धि अद्भुत् अचरज क्या कहो ॥
वाके वदन परं सब कोई ।
बुद्धि अरबुद अचरज बड़कोई ॥

साखी

मूस बिलाई एक सङ्ग कह कैसे रहि जाए ।
अचरज एक देखहु हो सन्तो हस्तो सिंहहि खाए ॥

परम—तिताला

चली जात देखो एक नारो ।
तर गागरि जपस पनिहारो ॥
चली जात बे वासधो बाटा ।
सोवनिहार के जपर खाटा ॥
जो इन परै सुपेदी सोरो ।
खसम न चीन्हे धरनि भै वीरो ॥
सांभ सकार दिया लै वारे ।
खसमहि छोड़ि सोवै लगवारे ॥
वाहो के रस निस दिन राचो ।
पोव से बात कहे नहि साचो ॥
सोवत छाड़ि चली पिय अपना ।
ए दुःख बाधो कहबै कसना ॥

साखी

अपनो जांच उघार के अपनो कह्यो न जाए ।
के चित जाने आपना को भेरा जाने गाए ॥

कलिङ्ग—तिताला

तहि या होत अस्थूल न काया ।
न तोके सौग ताको पै माया ॥
कमल पत्र तरङ्ग जल माहो ।
सङ्गही रहलि पत्र पै नाहो ॥
आस पास अण्डे में रहई ।
अगणित अन्त न कोई कहई ॥
निराधार अन्धा नै जानो ।
राम नाम ले उचरो वानो ॥
धर्म कहै सब पानी अहई ।
ता के मनहो पानी रहई ॥
टोर पतङ्ग सरै धरियारा ।
तेहि पाना सब कर आचारा ॥
फन्द छोड़ि जे बाहर होई ।
बहुरि फन्द न जाहे सोई ॥

साखी

अन्त के बांधल एइ जग कोइ न करे विचार ।
हरि को भक्ति जाने विना भव बुद्धि सुया संसार ॥

तेहि साहेब के लागे साथा ।
दौ दुःख मेटि के होइ समाथा ॥
दशरथ कुल अवतरि नहि आया ।
नहि लह्या के राव सताया ।
नहि देवकी के गर्भ हि आया ।
नहीं यशोदा गोद खेलाया ॥
पृथिवी रमण दमन नहो करिया ।
पेठि पाताल नहो बलि करिया ॥
न बालि राजा सो माडो रारो ।
नहि हिरनाकुस वधो पकारो ॥
वाराहरूप धरनो नहि धरिया ।
अत्रो मारि निघ्नत न करिया ॥
नहि गोवर्धन कर में धरिया ।
नहि गुवाल सङ्ग वन वन फिरिया ॥
गण्डकी शालग्राम नहि फूला ।
मत्स्य कच्छ हो नहो जल दूला ॥
हारावतौ शरीर नहि छाड़ा ।
लेइ जगन्नाथ पिण्ड नहि गाड़ा ॥

साखी

कहे कबीर पुकारि के बहु पंथे मति भूल ।
जेहि राखो अनुमान के सो स्थूल नाहि अस्थूल ॥

२

माया मोह कठिन संसारा ।
यह विचार ना कइ विचारा ॥
माया मोह कठिन इ फंदा ।
होइ विवेको साइ जन बन्दा ॥
राम नाम ले वेरा धारा ।
सो वेरा संसार पारा ॥

साखी

राम नाम अति दुर्लभ औरनते नहि काम ।
आदि अन्त ओ युग युग मोहि रामहि ते संधाम ॥

१

एक काल सकल संसारा ।
एक नाम है जगत पियारा ॥
द्विया पुरुष ककु कहो न जाई ।
सर्वरूप जग रहा समाई ॥
रूप निरूप जाइ नहि बोली ।
इन काग आजा इन तोली ॥
भूख न लषा धूप नहो छाहो ।
दुख सुख रहिल रहा तेहि माहो ॥
मानुष जन्म चुके अपराधो ।
या तन केर बहून हे साधो ॥
तात जननि कहे पुत्र हमारा ।
स्वारथ लागि कान्ह प्रतिपारा ॥
कामिनो कहे मोर पिय आहो ।
वाघिनो रूप गराखे ताहो ॥
सुत कलत्र रहे लव साई ।
जम्बुक नाई रह मुंह बाई ॥
काग गृध्र दोउ मरण विचारे ।
शूकर श्वान दोउ पन्थ निहारे ॥
अग्नि कहे मैं या तन जाऊं ।
सो न करौं जो जरत उगारूं ॥
धरणि कहे माहि में मिलि जाई ।
पवन कहे सङ्ग लेउं उड़ाई ॥
जे घरके घर कहे गंवारा ।
सो वैरी है लगे तुम्हारा ॥
सो मन तुम अपनैके जानो ।
विषय स्वरूप भूले विज्ञानो ॥

साखी

एतना तनके साभिया जगमा भरि दुःख पाव ।
चेतत नाहो नु गुन्धन लवारे मोर मोर गोहराव ॥

कबि—तिताला

वाटत बटा घटायत छाटी ।
परखत पर परखावत खोटी ॥

केतिक कहो कहा लै कहौ ।
भीरक कहौ परै जो सही ॥
कहे विना मोहि रहल न जाई ।
ब्रह्म इ लै लै कूकुर खाई ॥

साखी

खाते खाते युग गया बहुरि न चेतहु आइ ।
कहे कबीर पुकारि के ए जीव जीवत जाइ ॥

२

बहुतक सहस करो जिन अपना ।
तेहि साहेब सो भेंट न सपना ॥
खर खोटा जे नहि परखाया ।
चाहत लाभ सो मूल गंवाया ॥
समुझि न परति पातरो मोटो ।
वोछी गांठि सबे यह खोटी ॥
कहे कबीर काहि देउ खोरो ।
जब चलि ही भिभि आशा तोरो ॥

३

देव चित सुन हरे जाई ।
सो ब्रह्मा सङ्ग धोर नसाई ॥
ऊजै मन मन्दोदर तारा ।
तिन घर जेठ सदा रखवारा ॥
सुरपति जाइ अहस्या हरी ।
सुरगुरु रमणि चन्द्रमा हरी ॥
कहे कबीर हरिके गुण गाया ।
कुन्तो करण कुमारे जाया ॥

४

सुख के वृक्षक जगत उपाया ।
समुझि न परा सो वेधे किछु माया ॥
छो अत्रिन्ह पत्नी युग चारी ।
फल ही पाप पुण्य अधिकारी ॥
खाद अनन्त कछु वरधि न जाई ।
के अरिद्र सो तेहो माही ॥

मटवट साज साजिया ।
जो दैवे सो बाजिया ॥
मोहहि वपुरा युकति न देखा ।
शिव शक्ति विरहि नहि पेखा ॥

साखी

परतै परतै चलि गये समुझि परो नहि वानि ।
जो जान सो बाचि ही नहि तो होत सकल कौ वानि ॥

५

अत्रिय अत्रिय कर किय धर्मा ।
सबहो वाके बाटे कुकर्मा ॥
जिन अबन्धु गुरु ज्ञान लखाया ।
ताको मन तहां ले खाया ॥
अत्रिय सो जो कुटुम्ब सो जूभै ।
पाचो मेटि एक करि बूभै ॥
जीव मारि जीव प्रतिपालै ।
देखत जन्म आपनै हारै ॥
हाले करै निसाने घाउ ।
जुभै परै तहां मन्मथ राउ ॥

साखी

जनमत मरण जीवै जीवहि मरण न होइ ।
सुन सनेही राम विना चले अपनपौ खोइ ॥

६

ये जियरा तू दुःखहि सन्धार ।
जो दुख व्यापि रहल संसार ॥
माया मोह बंधा सब लोइ ।
अल्प लाभ मूल गा खोइ ॥
जननी उदर गर्भ में सूता ।
जन्म भये अस गए बहता ॥
उपजै विनसे योनि फिरि आवै ।
सुखके लेस सपनै नहि पावै ॥
दुःख सन्ताप कष्ट बहु पावै ।
जो न मिलै सो जरत बुभावै ॥
मोर तोर में जरै जग सारा ।
धिक् स्वारथी हुवा संसारा ॥

भूटे मोह रहो जग लागी ।
इन्हते माषि बहुरि पुनि भागी ॥
जेहि हित के राखे सब सोई ।
सो सयान वधै नहि कोई ॥

साखी

आपु आपु चेत नहि कौ हु तौर सुना होइ ।
कहहि कबीर सुपने जग निरायो थिया
थिया नहि सोइ ॥

सोरठ—तिताबा

सन्तो भक्ति सत् गुरु पानो ।
नारो एक पुरुष है जाया बूझा पण्डित ज्ञानो ॥
पाहन फोरि गङ्ग एक निकरी चहुं दिसी पानी पानी ।
ते पानी है पधत बूड़े दरिया लहरि समानो ॥
उड़ि मञ्जो तरिवर को लागी बोलै एकै वानो ।
वैमाणो के माषा नाही गर्ध रक्षा बिलु पानी ॥
नारो सकल पुरुष ना छाया ता ते रहै अकेला ।
कहहि कबीर जो अब कौ ससुभै सोई गुरु हम चेला ॥

२

सन्ती जागत नींद न कोअै ।
काल न जाय काल नहि व्यापे देह जरा नहि छीजै ॥
उलटो गङ्गा समुद्रहि शोषै शशि आ राहु गरासै ।
नवग्रह मारि रोगिया बैठे जलमें बिलु परकासै ॥
बिलु चरण न को दुहु दिशि धावै

बिन सोचन जग स्रभै ।

सरिता उलटि सिन्धु कौ प्राखे यह अचरज को बूझै ॥
जौधे घड़ा नाहि जल बूड़े स्रधे सो घट भरिया ।
जाहि कारण नर भिनि भिनि करै गुरु
परसादे तिरिया ॥

पैठि सुकामें राज जग देखा बाहर कछू न स्रभै ।
उलटा वाष सारथी लागे सुरा होइ सो बूझै ॥
गायन कहै कबहु नहि गावै अनबोखे नित गावै ।
नट बट वाजी पेखनी देखै अनहद हित बढ़ावै ॥

कथनी वदनी निज करि जोवै ए सब अकथ कहानी ।
धरती उलटि अकाय हि वेवे ए पुरुषनको खानी ॥
विना पियाली अमृत न चंचवै नदौ नीर भरि राखे ।
कहै कबीर सो युग युग जीवै जो राम सुधारन चाखे ॥

कनिह—तिताबा

सन्तो घर में भगुरा भारी ।
रात दिवस भिक्षि उठि उठि लागे पाच टोटा
एक नारी ॥
न्यारो न्यारो भोजन चाहै पाचो अधिक् सवादौ ।
कोड काहु कौ हटक न मानै आपुहि आपु सुरादौ ॥
दुरमति के दुहा गनि में टेटे चाप चपेरी ।
कहहि कबीर सोइ जन मेरा जा घरको रारि निवेरी ॥

विद्याम—तिताबा

सन्तो देखत जग बौरागा ।
साच कहो तो मारण धावै भूटे जग पतियाना ॥
नियमी देखा धर्मी देखा प्रात करै असनाना ।
आळै मारि पखानहि पूजै इन के कछू न ज्ञाना ॥
बहुतक देखा पीर औलिया पढ़े कतेब पुराना ।
करो मूरि तदबीर बतावै उन में वह जो ज्ञाना ॥
आसन मारि डिम्भ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना ।
पीतर पाथरनि पूजन लागी तीरथ गर्व भुलाना ॥
मासा पढ़ने टोपी पढ़ने छाप तिलक अनुमाना ।
साखी सदहा गावत भूलै आळ खबरि ना जाना ॥
हिन्दू कहै मोहि राम पियारा तुरुक कहै

रहिमाना ।

आपुसमें दोड करि करि सुए मर्म कोई
नहि जाना ॥

घर घर मन्त्र देते फिरही महिमाको अभिमाना ।
गुरु समेत शिष्य सो बूड़े अन्तकाल पखताना ॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो ए सब भर्म सुलाना ।
केतिक कइ कइ नहि माने सहजहि

सहज समाना ॥

विहग—यत्

सन्तो अचरज एक भौ भारी ।
 बहु तो कह्यो ताको पति भारी ॥
 एक पुरुष एक है नारी ताकर करहु विचारा ।
 एकै अण्ड सकल चौरासो भ्रम भूला संसारा ॥
 एकै नारो जाल पसारा जग में भया अन्देसा ।
 खोजत काहु न पाया ब्रह्मा विष्णु महेसा ॥
 नाग फास लिये घट भोतर मूसेनि सब जग जाई ।
 लान खण्ड गवी ना सब जूझे पकरि काहु
 नहि पाई ॥
 आपहि मूल फूल फल बारी आपुहि सुनि
 सुनि खाई ।
 कह्ये कबीर सोई जन सबरे जीहि गुरु लियो
 जगाई ॥

२

सन्तो अचरज एक भौ भारी ।
 पुत्र खइल महतारी ॥
 पिता के सङ्ग भई है बावरी कन्या रहलि कुमारी ।
 खसमहि छोड़ि ससुर सङ्ग गवनो सो किन
 खेहु विचारी ॥
 भाई के सङ्ग सासुर गोनी सासु सावती दीन्हा ।
 मनद भवज परपञ्च रचो है मोर नाम नहि लीन्हा ॥
 समधो के सङ्ग नाहा भाई सहज भई घरवारो ।
 कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो पुरुष
 जन्म भवो नारी ॥

३

सन्तो कह्यो को पति भाई ।
 भूठो कहत सांच बनि भाई ॥
 लव करत रत्न अवध अमोलिक नहि
 गाइक नहि साई ।
 चिमकि चिमकि चिमक टग दहु दिश
 भाख रहा छिरकाई ॥
 आपुहि गुरु छपा कह्यो कीन्हे निर्गुण अलख लखाई ।

सहज समाधि उनु मुनो जागो सहज मिले रघुपारै ॥
 जहा जहा देखो तहा तहा सोई सब
 माणिक बेधो होरा ।
 परम तत्त्व गुरु ते पाया कह उपदेश कबीरो ॥

४

सन्तो आवे जाए सो माया ।
 है प्रतिपाल काल नहि पा के नहिं कहुं
 गया न आया ॥
 काम समुद्र मछ कछ हो ना संखासुर न संहारा ।
 हृदयानल ट्रोह नहि वाके कह्यो कवन के मारा ॥
 खन्ध फोरि जो बाहर होई ताहि पतोत्रे सब कोई ।
 हरिनाकुस नख उदर विदारा सो नहि करता जाई ॥
 वावन रूप न वलि काज वा जो जांचे सो माया ।
 विना विवेक सकल जग भर्मा माया जग भर्माया ॥
 परशुराम छत्रिय नहि मारा ए छलया कोन्हा ।
 सत गुरु भक्ति भेद नहि पाया जोव अमिथ्या दोन्हा ॥
 सिर जनहार ना व्याहो सोता जल पयान नहि बांधा ।
 लै रघुनाथ एक को सुमिरे जो सुमिरे सो आंधा ॥
 गोपी ग्वाल न गोकुल आया कर ते कंस न मारा ।
 है महर्बान सबन को साहेब नहि जोता नहि हारा ॥
 बे करता नहि बोध कहाया नहो असुरके माया ।
 ज्ञानहोन करता सब भूमं माया जग भरमाया ॥
 बे करता नहि भये कलङ्को नाहि कंस गह मारा ।
 ए छल बल सब माया कोन्हा यतो सतो सब टारा ॥
 दश अवतार ईश्वरो माया करताके गिन पूजा ।
 कहहि कबीर सुनो हा सन्तो उपजे खपै सा दूजा ॥

५

सन्तो बोले ते जग मारै ।
 अनबोलेते कसे कं बनि है शब्द कोइ न विचारै ॥
 पहिले जन्म पुत्र के भयज बाप जनमिया पाछे ।
 बाप पूत को एकै माया ए अचरज को काछे ॥
 दोहुर राजा टीका बेटे विषहर करे खवासो ।
 ज्ञान बापुरा घर नहि ठाना विज्ञो घर में दासो ॥

काग दो कार कार कुण्ड आगे बेल करे मठवारो ।
कहै कबोर सुनो हो सन्तो मनो सेन्य बनो वारी ॥

६

सन्तो राम है दूनो हम दीठा ।
हिन्दू तुलक कहा नहि माने खाद दूनो जो मीठा ॥
हिन्दू वरत एकादशो सावे दुखसा धारा खेतौ ।
अनके त्यागे मनके न हटके पार न करे संगवेती ॥
तुलक रोजा नमाज गुजारे बिस्मिल्ला बाङ्ग पुकारे ।
उनको बिहिश्त कहति हाइ है साभे सुरगो मारे ॥
हिन्दूको दया मेहर तुलकनको दूनो घटमें त्यागो ।
वे हलाल है भटका मागे आगि दूनो घर लागो ॥
हिन्दू तुलक को एक राइ है सत गुरु राइ बताई ।
कहहि कबोर सुनो हो सन्तो राम न कहो खुदाई ॥

७

सन्तो पाड़े निपुण कसाई ।
बकरा मारि भँसाको धावे दिन्नमें दरद न भाई ॥
करि असनान तिलक दै बेठे विधि सो देवो पुजाई ।
आतम राम छनक मा विनसे रहिर को
नदी बहाई ॥
अति पुनीत उच्च कुल कहिए सभा माहि
अधिकारै ।
इनते दीया सब कोइ मागे हसि आवै मोहि भाई ॥
पाप कटन को कथा सुनावे कर्म करावे नोखा ।
हम तौ दोष प्रखपर देखौ यम खाए घोषा ॥
गाई वधते तुलक कहिए उनते वै का छोटे ।
कहै कबोर सुनो हो सन्तो कलिमें ब्राह्मण छोटे ॥

८

सन्तो मते मात जन रङ्गा ।
पीवत पियाला टेम सुधारस मतवाले सत सङ्गी ॥
अरवे उरुवे माटो रोपि ले कैसे वरसे गारी ।
मूदे मदन काटि क्रम कस भर सन्तत चुवत अगारी ॥
गोरखदत्त वसिष्ठ व्यास कवि ते नारद

शुकमणि जोरी ।

सभा बरठि शम्भु सनकादिक तइ किये चंधर
कटोरी ॥

अम्बरोक भी जाग जनक भट शेष सहस्र
सुख फाना ।
कहां लो गनों आदि अस्त से महले महल दिवाण ॥
ध्व प्रज्ञाद विभोषण माती शिवको नारो ।
निर्गुण ब्रह्म मातो इन्द्रावन अजइ न कूटो
खुमारी ॥

सुर नर सुनि यतो पोर ओलिया जिन रे पिया
तिन जाना ।

कहै कबोर गूंगे का शकर क्यों करि करे वखाना ॥

९

राम तेरो माया हन्ध मचावै ।
गति मति वाको समुक्ति परै नहि सुर नर
सुनिन नचावै ॥

क्या सैमरको शाख बढ़ाए फूल अनुपमै वानो ।
केतिक चातक लागि रहो है देवनर वा उगानो ॥
क्या खजुरो बड़ाई तेरो फल कोई नहि पाव ।
श्रीषम शोत आइ तुलानी तेरो छाया काम न आवै ॥
अपने चतुर अवरके सिखने कनक कामिनो सजानो ।
कहहि कबोर सुनो हो सन्तो रामचरण रति मानो ॥

१०

राम राय संशय घटे न छूटे ।
तावे पकरि पकरि जमजम लूटे ॥
दोइ मुसको न कुलोन कहवे तुम योगो सत्रासी ।
ज्ञानो गुणो शूर कवि दाता या मति कबहु विनासी ॥
सुमत वेद पुराण छोटे सब अनुभव भाय में दरखो ।
बोह हिरन्या होत दुहु कैसे औ नहि पारस परखो ॥
जीवत न तरहु सुए का तरि हो जोवतें जो न तरि ।
गहै प्रीति तो कियो जिन जासो सोइ तहा अमरे ॥
जो कहु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुक्ति सयाना ।
कहै कबोर तासो का कहिए जो देखत

दृष्टि मुक्काना ॥

काफो—तिताला

राम राय चखी हुन्दावन मा हो घर छाड़े जात जुलाई ।
गजमो गज दश गज नुन इसकी पुरिया एक तनार्ई ॥
सात सूत नौ गेड़ बहुत्तरि पाटु लागु अधिकाई ।
ता पट तुल न तुले गज न अमार्ई पेसनी सेर आढाई ॥
ता में घटवट रति ज नाही करकच कर धर हार्ई ।
निति उठिये षट् सप्त सो वर वश ता पर लागि तिहार्ई ॥
भोगी पुरिया काम न आवे जुलहा चला रिसार्ई ।
कहे कबीर सुनो हो सन्तो जिन यह सृष्टि उपाई ॥
छाड़ि पसार राम भणु बीर भव सागर तरि लाई ॥

२

राम राय भिभि यन्त्र बाजे चरण विहीना नाचे ।
कर विनु बाजे सुने अघण विनु सरवन ओता सोई ॥
पट न सुवेश सभा विनु अवसर बूभो मुनि जन सोई ।
इन्द्री विनु भोग खाद जिह्वा विनु आ छयाड़ विह्वना ।
जागे चौ मन्दिर तहां मूसे खसम अक्षत घर सूना ॥
बीज विन अङ्गुर पेड़ विन तरवर विन फूले

फल सागा ।

बांभकी कीखि पुत्र अवतरिया विन पग सिरी
पर चढ़िया ॥
मसि विन हात कसम विन कागज विनु
अक्षर सुध होई ।
सुध विनु सहज ज्ञान विनु ज्ञाता कहे कबीर
जन सोई ॥

कलिङ्ग—तिताला

रामहि गावे ओरहि समुभावे हरि जाने विना
विकल फिरे ।
जा मुख वेद गायत्री उचरे ता सु वचन
संसारहि तरे ॥
ताके पाव जगत उठि लागे सो ब्राह्मण जीव
घात करे ।
अपने उच्च नौच कर भोजन विन तम हठि
उदर भरे ॥

अहन अमावा सेठ काटक मारे कर दीपक
सिये कूप परे ।
व्रत एकादशी के मर्म न जाने भूत व्रत
हठि हृदय धरे ॥
तजि कपूर गांठी विष बांधि ज्ञान गमाइ
सुगन्ध फिरे ।
छीजे साव चोर प्रतिपाले सन्तजनाकी कूटि करे ॥
कहे कबीर जिह्वा के सम्पट इह विधि
प्राणी नरक परे ॥

२

राम गुण न्यारो न्यारो ।
अबुभा लोग कहां लग बूभे कोई बूभन
हार विचारो ॥
केते रामचन्द्र तपसी से जिन हो जग भरमाया
केते कान्ह भए सुरसीधर तिन भो अन्त न पाया ॥
मत्स्य कच्छ वराहसरूपी जवन नाम धराया ।
केतक बुद्ध भए अकालहो तिन भो अन्त न पाया ॥
केते सिद्ध साधक सञ्चासी जिन वनवास वसाया ।
केतकि मुनि जन गौरख कहिए तिन भो
अन्त न पाया ॥
जाकी गति ब्रह्मा नहि जानी शिव सनकादिक
हारि ।
ताके गुण बख कैसे के पै हो कहहि कबीर पुकारे ॥

२

ए तख राज प्यो होइ प्राणी तुम बूभो अकथ
कहानी ।
जाकी भाव होत हरि जपर जाग्रत रेन विहानी ॥
गाइलहो हे सूनहु घेरे सिंह रहा वन घेरे ।
पांच कुटुंब मिलि जूभन लागे बाजन बाजि घनेरे ॥
रोहु सृगा ससे वन हाके पारथ वाणहि भेले ।
साहर जरे सकल वन डारै मच्छ अहेरा खेले ।
कहे कबीर सुनो हो सन्तो जो एह पद परघारे ।
जो इह पद को गाइ विचारै आपु तरे मोहि तारे ॥

कोई राम रसिक रस पीयोगे ।
 पीयोगे सुख जीवोगे ।
 फल फलहीत बीज नहि बकला शुक्र पक्षी
 तहां रस चाखेल ।
 बुवे न बुन्द अङ्ग नहीं भीजे दशरथ वर सब
 सङ्ग ला पैल ॥
 निगम रिसाल चारिक फल लागे तिनमें
 तीनों समावे ।
 एक दुरि चाहे सगा न कोई यत्न यत्न
 काहु विरलै पावे ॥
 गए वसन्त श्रीअ ऋतु आई बहुरि न तरुवर
 तर पावे ।
 कहै कबीर स्वामी सुख सागर राम मग्न होइ
 सो पावे ॥

राम मरमसि कौन दण्ड लागे ।
 मरिबे का करवे अभागा ॥
 कोई तीर्थ कोइ मुण्डित केशा ।
 पाषण्ड कर्म मन्त्र उपदेशा ॥
 विद्या वेद पढ़ि करे अहंकारा ।
 अन्तकाल मुख फाँके छारा ॥
 दुःखी सुखी होइ कुटम्ब जिवावे ।
 मरण दाव इसकर दुःख पावे ॥
 कहहि कबीर यह कलि है कसोटो ।
 मोर है करवासी निकली खोटो ॥

आशावरी—यत्

अबन्धु छाड़ी मन विस्तारा ।
 सो पद गहो जाहि सो सद्गति परब्रह्म सो न्यारा ॥
 नाहि महादेव नाहि महम्मद हरि हजरत तब नाही ।
 आराम ब्रह्म नाहि तब होते नहीं धूप नहि छाही ॥
 अशिया से पैगम्बर नाही सहस्र अष्टासी सुनो ।
 चन्द्र सूर्य तारागण नाही मत्स्य कच्छ नाहि दुनो ॥

वेद कतेव सुमत नहि संयम नहि यम ना परिसाई ।
 बांग नमाज कलमा नहि होते रामो नाहि खोदाई ॥
 आदि अन्त मन मध्य न होते घातश पवन न पानो ।
 लख चौरासी जीव न होते साखी शब्द न वानी ॥
 कहहि कबीर सुनो हो अबन्धु आगै करहु विचारा ।
 पूरण ब्रह्म कहति प्रगटे कृत्तिम किन उपचारा ॥

आशावरी—विताला

अबन्धु कुदरत कौ गति न्यारी ।
 रह निवाजि करै वै राजा भूपति करे भिखारी ॥
 याते लवङ्ग सर्प नहि लागे चन्दन फल न फला ।
 तच्छक शिकारी रमे जंगल में सिंह समुद्रहि भला ॥
 रेडू रुख भये मलया गिरि चहुं दिश फूटी वासा ।
 तीनों लोक ब्रह्माण्ड खण्डमें देखे अन्ध तमासा ॥
 पङ्गा मेरु सुमेरु उलङ्गे त्रिभुवन सुन्ना डोले ।
 गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रकासे अनहद वाणी बोलै ॥
 आकाश हि दाधि पाताल पठायां सो स्वर्ग पर राजी ॥
 कहै कबीर राम है राजा जो कहु करै सौ छाजे ॥

अबन्धु सां योगी गुरु मेरा ।
 जो इह पद का करे निवेरा ॥
 तरुवर एक मूल विनु ठाढो विन फूले फल लागे ।
 शाखा पत्र कछू नहि वाके अष्ट गगन मुख जागे ॥
 पै विनु पत्र करह विनु तुम्बा विनु जिह्वा गुण गावे ।
 गायन हार के रूप रेख नहि सत् गुरु होइ लखावे ॥
 पक्षी को खोज मन को मारग कहहि
 कबीर दोष भारो ।

अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरतिकी बलिहारी ॥

अबन्धु वै तुतरा बतराता ।
 नाचे बाजन बज बराता ॥
 मार के माथे फूलह दीन्हां अकथ जोरि के हाता ।
 मडये एक चाड़न समधो दीन्हो पुत्र पिया हख माता ॥

दुलहिगौ लीपि चउक बइठायो निर्भय पद

परकाता ॥

भाते उलटि वरातहि खायो भली बनो कुशलाता ।
पाणिग्रहण भयो भव मण्डन सुखमनि सुरति समानो ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो बूझहु पछित ज्ञानो ॥

॥

कोई विरला दोस्त हमारो भाई रे बहुत बहुत

का कहिए ।

साधन भजन संवारे आपे ज्यो राम राखे त्यो रहिए ॥
आसन पवन योग शुचि स्मृति जो पिय पढ़ि बैलाना ।
छः दर्शन पाषण्ड छानवे इकले कहं न जाना ॥
आलम दुनो सकल फिरि आयो एकल वै निपाना ।
ताजौ करि गहि जगत उठायो मनमें मन न समाना ॥
कहै कबीर योगी अरु जङ्गम फोकी उनको आसा ।
राम नाम रटै ज्यो चातक निश्चय भक्ति निवासा ॥

॥

भाई रे अद्भुत रूप कथा है कहौ ताको पतियारै ।
जहा जहा देखो तहा तहा सोई सब घट

रहल समाई ॥

लक्ष्मी विन सुख दरिद्र दुःख विनहु भौद विना
सुख सोवै ।

यश विनु योगी रूप विनु आशिश ऐसो रत्न
विज्ञाना रोवै ॥

अम विनु गणन मान विनु निरखे रूप विना
बहुरूपा ।

गिधि विन सुरति रहस विनु आनन्द ऐसो
चरित अनूपा ॥

कहै कबीर जगत हरि मानिक देखो चित अनुमानो ।
परिहरि लाख लोक कुटुम्ब सब भजहु न
सारङ्गपानी ॥

॥

भाई रे गइया एकरी रांचि दियो है ।
गइया भार अबरमौ भयो है ॥

नौ नारो को पानो पिवत हो लषा तज न बुझारै ।

कौठा बहसर अवल बलावे बख केवार खगारै ।
खूटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो तइयो जौरि परारै ।
चारि वृक्ष छव शाखा वाके पत्र अठारह भारै ।
एतिक ले गइया गुम को है गइया अति लहरारै ।
ई सातौ औरै सातो नव छत्र चौदह भारै ।
वेतीक ले गइया खाय बढ़ायो गैया तउ न अघारै ।
सुरता में रातो है गैया सेत सोधो है भारै ।
अवरन धरन कछु नहि वाके सांभ असांभइ खारै ।
ब्रह्मा विष्णु खोजि के भाये शिव सनकादिक भारै ।
सिद्ध अनन्त वाके खोजि परे है गइया किनहु न पारै ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो जो यह पद अरथावे ।
जो यह पद को गाइ विचारै आगे होइ निबहावे ॥

योगिया—तिताला

भाई रे नेन रसिक जो जागे ।

परब्रह्म अवगति अविनाशी कैसेहुके मन लागे ॥
अमली लोग सुमारी लषा सो कतह सन्तोष न पावे ।
काम क्रोध होउ मतवाला माया भरि भरि आवे ॥
ब्रह्म कलाल बैठावन भाटो ले इन्द्रिय रस चावे ।
सङ्गहि पोच है ज्ञान पुकारे चतुरा होइ सो पावे ॥
सङ्गट सोच पोच या कलिमें बहुतक व्याधि शरारा ।
जहां धीर गभीर अति निश्चल तहां उठि मिलहु
कबीरा ॥

२

भाइ रे हे जगदीश कहां ते आये कहु कौने भरमाए ।
अल्लह राम करीमा कौसो हरि हजरत नाम धराए ॥
गइया एक कनकते गइया इन में भाव न दूजा ।
कहन सुननके है करि थापे एक नमाज एक पूजा ॥
वहो महादेव वहो महाशद वहो ब्रह्मा वहो
आदम कहिये ।

को हिन्दू को तरक कहवावे एक जूमों पर रहिए ॥
वेद जतेव पढ़हि वै कुतबा वै मुलना वै पांड़े ॥
वेगर वेगर नाम धराया एक माटोके भाड़े ।

कहै कबीर वै दूनो बूड़े रामहि किनहु न पाया ।
वं खस्यो वै गाय कटावै वाद हि जन्म गंवाया ।

१
हंसा संशय छरी कुहिया ।
गइया पीयाव वछरया दुहिया ॥
घर घर सावज खेलें अहेरा पाथर वोटा लैई ।
पानो मइहा तजफि गया भू भरि धूरिहि लोरा देई ॥
धरतो वरीसै बादर भोजे भोर भयो पै राज ।
हंस उड़ाने ताल सुखाने चहल वेधा पाज ॥
जौ लग कर डोलै पग चलै तो लग आश न कोजे ।
कहहि कबीर जो चलत न दोसे तासु

वचन का लोजे ॥

सिस्य—मिताभा

हंसा हो नित चेत सवेरा ।
इह परपञ्च कान बहुतेरा ॥
पाषण्डरूप रचो त्रिगुण तेहि पाषण्ड भूले संमारा ।
घर के खसम वषिक वे राजा ब्रजका धौ करे विचारा ॥
भक्ति न जाने भक्त कहावे तजि अमृत विष

कहल न सारा ।

आगे बड़े ऐसहो भूजे तिनहु न मानल कहल

हमारा ॥

कहल हमारा गांठी बांधो वो निसुवासर
रहि हो इशियारा ।
एकलि गुरु बड़े खपच डारि ठगौरो सब जग मारा ॥
बैद कतेव दोइ फन्द पसरते फन्द परु आपु बेचारा ।
कहहि कबीर ते हंस न विसरे जो मैं मिलो

छोड़ावन हारा ॥

हंसा प्यारे सरवर ते जे जाई ।

जे सरवर बिच मोतिया चुगत हुते बहुविधि

केलि करारै ॥

सुखे ताल पुरइ बीजल छाड़े कमल गए कुन्हिनाई ।

कहहि कबीर जे अब के विहुरे बहुरि मिली

कब आई ॥

आथावरी—मिताभा

हरि जन हंस दशा लिये डोले ।

निर्मल नाम चुनी चुनी बोले ॥

सुक्ताहल लिए चौच सुभावे ।

मौन रहै को हरि यम गावे ॥

मान सरोवर तट को वासो ।

रामचरण चित अन्त उदासी ॥

काक कुबुद्धि निकट ना आवे ।

प्रतिदिन हंसा दूषण पावे ॥

नीर खोरका करे निविरा ।

कहहि कबीर सोइ जन मेरा ॥

१
हरि मोर पिय मैं राम को बहुरिया ।

राम बड़ा मैं तनक लहरिया ॥

हरि मेरे रहटा मोर तनरे पिठरिया ।

हरि के नाम ले कतलि बहुरिया ॥

छव मास ताग वर्ष दिन कुजुरिया ।

लोग बोले भल काते ले वपुरिया ॥

कहहि कबीर सूत मल काता ।

रहंटा नाहि सुत्तिको दाता ॥

१
हरि ठग जगत् ठगौरो लाई ।

हरि के वियोग कैसे जोवहु रे भाई ॥

को काको पुरुष कवन काको नारी ।

अकथा कथा यम दृष्टि पसारो ॥

का का को पुत्र कवन काको बापा ।

को मारे का सहे सस्तापा ॥

ठगि ठगि मूल सब निको लोन्हा ।

राम ठगौरो काहु न चोन्हा ॥

कहहि कबीर ठग मो मन माना ।

गई ठगौरी तव ठग पहिचाना ॥

१
हरि छिग ठगन सकल जग डोखा ।

गमन करत में समुक्त न बोखा ॥

बाबापनके मित्र हम तुम्हारे ।
हमहि छोड़ि काहे चलेहु सकारि ॥
तुमहि पुरुष वे नारि तुम्हारी ।
तुम्हरी चाल पाहन ते भारी ॥
माटी को देह पवन को शरीरा ।
हरि ठग ठग सी डरे कबीरा ॥

हरि विनु भुवि विगुरचै संगवा जहां जाय गये
अपन जो छोरे ।
तेहि फन्दे बहु फन्दे योगी कहे योग है
नीको दुतिया और न कोरे ॥
जानी गुणी सुर कवि ताए जो कहे बड़ हमही ।
जहांते उपजे वहां समाने कुटी गइल सब तमही ॥
बायें दाहिने ते जै विका रानी सु कहे हरिपद
गइया ।
कहहि कबीर गूंगे गुड़ खाया पूछे सो का कहिया ॥

ऐसे हरि सो जगतल सरत है ।
पण्डु कतह गबड़ धरत है ॥
मूस बिलाई इक सन हैत ।
जम्बुक करे केहरि सो खेत ॥
अक्षरज एक देखि संसारा ।
सुनहि खेद कुचल असवारा ॥
कहे कबीर सुन सन्तो भाई ।
यह सन्धि काहु विरले पाई ॥

पण्डित वाद बदै सो भूठा ।
राम के कहे जगत गति पादै तीषाहु कहे सुख मीठा ॥
पावक कहे पाव जो दाहे जल कहे दूषा बुभाई ।
भोजन कहे भूख जो भाजै तो दुनिया तरि जाई ॥
मल की साथ सुवा हरि बोलें हरि परताप न जाने ।
जो कबही उड़ि जाइ जङ्गल में फिरि हरि
सुरति न जाने ॥

विनु देखे विनु परस परस विनु नाम लिए का छोरे ।
धनके कहे धनिक जो होवे निरधन रहे न कोरे ॥
साचि प्रीति विधम माया सो हरि भगतन की हांसी ।
कहहि कबीर एक राम भजे विन वाधि
यमपुर जाती ॥

पण्डित देखो मन में जानी ।
कहु दहु छाति कहा ते उपजे तबहो कृति
तुमे जानी ॥
कृतिहि जे जे कृति विवरजत जाके सङ्ग न माया ।
कृतिहि जेवन कृतिहि अचवन कृतिहि जङ्ग उपाया ॥
पण्डित सोधि कहे समुभाई जाते आवागवन नसाई ।
अर्थ धर्म काम मोक्ष कह कौन दिसा वसे भाई ॥
उत्तर कि दक्षिण पूर्व की पश्चिम सरग
पातासके माही ।

विना गोपाल ठौर नहि कतह नरक जात दहु काही ॥
अनजानेका नरक सरग है हेरि जानेके नाही ।
जिहि डरके सब लोग डरत है सो डर हमरे नाही ॥
पाप पुण्डकी शङ्का नाही सरग नरक न जाही ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो जहां पद तहां समाही ॥

पण्डित मिथ्या करहु विचारा ।
ना वहां सृष्टि न सिरजनहारा ॥
खल आकाश पवन नहि पावक रवि शशि
धरणी न नीरा ।
ज्योतिःस्वरूप काल नहो वहां वचन न आहि शरीरा ॥
कर्म धर्म कहु नाहो वहुवां न वहां मन्त्र न पूजा ।
साधन सहित भाव नहि वहुवां सो दहु
एक न दूजा ॥
गोरख राम एक नहि वहुवां न वहां वेद विचारा ।
हरि हर ब्रह्मा नहि शिव शक्ति न वहां तीर्थ अचारा ॥
माय बाप गुरु जाके नाही सो दहु दुइकी अकेला ।

कहहि कबीर जो सबको समुझे सोई गुन
इम चेला ॥

कलिङ्ग—तिताला।

बूझो पण्डित करहु विचारी ।
पुरुष है कि नारी ॥
ब्राह्मण के घर ब्राह्मणी होतो योगी के घर चेली ।
कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुलकुनो कलि में
रहति अकेली ॥
वर नहि वरो ब्याह नहि करो पुत्र जन्म होनहारौ ।
कारो मूढ काह नहि ढाड़ो अजह्ण भादि कुमारी ॥
माईके हो जाउ नहि ससुरा साई सङ्ग न सोज ।
कहे कबीर मैं युग युग जीजं जाति पाति कुल खोजं ॥

१

कौन मुया कह पण्डित जाना ।
सो समुझाह कहो सयाना ॥
मूए ब्रह्मा विष्णु मरेशू ।
पारवती सुत मुए गणेशू ॥
मुए चन्द्र मुए रवि सेसा ।
मुए हनुमत जिन्ह बांधिन सेता ॥
मुए कृष्ण मुए करतारा ।
एक न मुए जो सिरजनहारा ॥
कहहि कबीर मुया नहि सोई ।
जाको आवागमन न होई ॥

१

पण्डित आचार्य एक बड़ होई ।
एक मल मूत्र अन्त नहि खाही एक मह
सिम्हे रसोई ॥
करि असमान देवनके पूजा नव गुण कांधि जनेज ।
हाही हाड़ हाड़ थारी मुख अस षट् कर्म बनेज ॥
धर्म कथे जह जोव वधे जह अकारम करम करि
भैरे भाई ।
जो तुम को ब्राह्मण कहिये तो का को
कहिये कसाई ॥

कहहि कबीर सुनो हो सन्तो भर्म भूलि दुनो आई ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम या गति विरले पाई ॥

विन्दु—तिताला

पांड़े बूझि पौवो मे तुम पावो ।
मटियाके घरमें बैठे ता में छष्टि समानी ॥
छप्पन कोटि यादव तहां भोगे मुनिजन
सहस्र अठासी ।
पयग पयग पैगम्बर गाड़े सो सब सरि भौ माटी ॥
मत्स्य कच्छ घरियार बियाने रुधिर नीर जल भरिया ।
नदिया नीर नरक भरि आये पशु नानुग सब सरिया ॥
हाड़ भरि भरि गूद गलि गलि दूध कहां ते आया ।
सोले खाड़े यवन बोहगे मड़ए छूति लगाया ॥
वेद कवेद छांड़ि दे पांड़े यह सब मनका भर्मा ।
कहै कबीर सुनो हो पांड़े ए सब तोरे कर्मा ॥

१

पण्डित देखो हृदय विचारी ।
को पुरुष को नारी ॥
सहज समाना घट घट बोलै वाकै चरित अनूपा ।
वाको नाम क्या कहि लीजै नावै वरमन रूपा ॥
तैं मैं क्या करता नर बीरा क्या तेरा क्या मेरा ।
राम खुदा शक्ति शिव एकै कहौ धौ काहि निहोरा ॥
वेद कुरान पुरान केतावा नाना भांति बखाना ।
हिन्दू तुलक जइनि अरु योगी एकसी काहु न जाना ॥
हौ दर्शन में जो परमाना तासे ना मन माना ।
कहै कबीर हमै ही बीरे ये सब खलक सयाना ॥

१

बूझहु बूझहु पण्डित पद निरवाना ।
सांभ परे कहा वावसे भाना ॥
ऊंचे नीचे पदंत टेला नीत ।
विनु गाइन तहां उठे गीत ॥
के सम प्यास मन्दिर नहि जहवा ।
सहस्र बेनु दुहावे तहवा ॥

नित्य अमावस नित संक्रान्ति ।
नित्य नवग्रह बैठे पाति ॥
मैं तोहि पूछी पण्डित जना ।
हृदये ग्रहण लागु केहि जना ॥
कहै कबीर इतनो नहि जाना ।
कोन शब्द गुरु लागे काना ॥

बूझ बूझ पण्डित निर्वाण होई ।
आधा वसें पुरुष आधा वसें जोई ॥
बिरवा एक सकल संसाला ।
खगं सीस जर गील पताला ॥
बारह पखुरी चौबोस पाता ।
घन वरोह लागु चहु पासा ॥
फूले फले न वाको वानो ।
मिसि दिवस विकार चुवै पानो ॥
कहै कबीर कहु अकुलो न तहिया ।
हरि बिरवा तौपाल न जहिया ॥

बूझ बूझ पण्डित मन चित लार्ई ।
कबहि भई लौ कबहि सुखार्ई ॥
खन मन डूबे खन अवगाह ।
रतन न मिले पावे नहि थाह ॥
नदिया नहि सिलसिल बहै नौर ।
मत्स्य न मरै के बटेर है तौर ॥
पोखरा नाहि बंधल तहं घाट ।
नुरइनि नाहि कमल में वाट ॥
कहै कबीर एक मन का धोखा ।
बगठा रहै चलन चाहे चोखा ॥

बूझि लीजे घुरि घुरि ब्रह्मज्ञानी ।
वर्षायो परिया बुन्द न पानो ॥
घूंटोके पग हस्ती बांधो छेरी बाघहिं खाए ।
उदधि माह सो निकली माहरो चौड़े गृह कराय ॥

मेड़क सर्प रहै एक सङ्ग बिलरिया खान विहार ।
मिति उठि सिंह खानते डर पै अमृत कथा न गार ।
कौरव संगर गावन घेरे पार्थ वाण मेलै ।
उदधि भूपते तरे बड़ा हो मत्स्य अहेय खेले ॥
कहै कबीर ए अमृत ज्ञाना को इह ज्ञाने माने ।
विना परो उड़ि जाइ आकाशहि जीव मरण
नहि जाने ॥

वा बिरवै चीन्हे जो कोई ।
जरा मरण रहित तन होई ॥
बिरवा एक सकल संसारा ।
पेड़ एक फूटल तिन डारा ॥
मध्यकी डार चारि फल लागु ।
शाखा पत्र गने को बागु ॥
बेलि एक त्रिभुवन लपटानो ।
बांधे ते नहि छूटे ज्ञानो ॥
कहै कबीर हम जात पुकारा ।
पण्डित होइ सो करे विचारा ॥

जोरठ—तिताला

सार्ई के सङ्ग सासुर पार ।
सङ्ग नाहि सुतो स्वाद नहि पार ।
गो जीवन सपनको वार ।
जना चारि मिलि लगन सुखार ।
जना पांच मिलि मांडो छायो ।
सखी सहेलौ मिलि मङ्गल गायो ॥
दुःख सुख माथे हरदा चढार ।
गांठी जोरि भाइपति पार ।
अर्घ दई ले चली सुवासिनो चोके
राउ भई संग गार ।
भया विवाह चली बिनु दुखड़े वाट
जात समधी सभुभार ।
कहै कबीर हम गोनि जीवे ।
तब कान्त ले तूर बजइवे ॥

नर को ठाढस देखो आई ।
 कहु अकथ कथा है भाई ॥
 सिंह सहदुम्र एक हरढो तिन सीकस वो इन धाने ।
 वनको भलुइया चाखुर फेरे छागर भये है किसाने ॥
 छेरो बाघ व्याह होइ है मङ्गल गावहि गाई ।
 वनके रोज धरि दाहेज दोन्हा गोलुक दे जाई ॥
 कागा कापड़ धोवन लागे वकुला किरपे दाते ।
 माछी मूड़ मुड़ावन लागे हमहु जाइब बरियाते ॥
 कहै कबीर सुनो हां सन्ता जो यह पद भरथावे ।
 सोई पण्डित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावे ॥

नर को नहि परतोत हमारो ।
 भूठे वणिज कियो भूठा सा पूजो सबन मिलि हारो ॥
 षट् दर्शन मिलि साथ बुलायो त्रिदेवा अधिकारो ।
 राजादे सबड़ो परपञ्चा रैयत रहत उजारो ॥
 उत ते इत इत ते उत ररङ्ग जलको साटि सवारो ।
 उथो कपि डोरि बांधि बाजोगर अपनो खुशो पसारो ॥
 यह पेड़ उत्पत्ति प्रलयको विषिया सबे बेकारो ।
 जैसे ज्ञान अपावन रचि त्यों लागो संसारो ॥
 कहहि कबीर ए अइत ज्ञाना को माने

बात हमारी ।

अजहं लेउ छोड़ाय जगत् सो जो कर सुरति संभारो ॥

कलिङ्ग—तिताला

ना हरि भजे न आदत छूटी ।

सब दे समुभि सुधारत नाहो अंधरे भए हु

हिएकौ फूटी ॥

पानी मा गह पाषाणको देखो ठोकत ठोकत

उठे भयूका ।

सहस्र घड़ा नितही जल डारे फिरि सूके का सूका ॥

सेतहि सेत सेत भो अज्ञा सेने बाढ़ि अधिकारि ।

जो सनिपात रोगि यह मारो सो साधन सिद्धि पाई ॥

अनइद कहत कहत जग विनसे अनइद

छटि समानो ।

निकाटि पयाना यमपुर धावे बोलै एकै वानो ॥

सत् गुरु मिले बहुत सुख लहिए सत् गुरु

शब्द सुधार ।

कहै कबीर सो सदा सुखारो जो यह पदहि विचारै ॥

सिन्धु—तिताला

नर हरि लागी धो विकारा विनु ईंधन मिलै

न बुभावनिहारा ।

मैं जानो तोहि सो व्यापै जरत सकल संसारा ॥

पानी माह अग्निको अङ्कुर लै मन बुभावन पानो ।

एक न जरं जरं नर नारो युक्ति न काह जाओ ॥

शहर जरं पहरु सुख साथे कहै कुशल घर मेरा ।

कुन्हिया जरी वस्तु निज उचरी विकल राम रङ्ग तेरा ॥

कुबुजा पुरुष गले इक लागी पूजी न मनको साधा ।

करत विचार जन्म गयो खासो या तन रहल असाधा ॥

जानि बूझि जो कपट करत है ऐसा मन्द न कोई ।

कहै कबीर सब नारो रामको मो ते ओर न होई ॥

परज—तिताला

माया महा ठगिन हम जानो ।

त्रिगुण फांस लिए कर डोलै बोलै मधुरी वानी ॥

केशव के कमला होइ बैठो शिव के भवन भवानो ।

पण्डाके मूरति होइ बैठो तीरथह के पानो ॥

योगी के योगिन होइ बैठो ब्रह्माके ब्रह्मानो ।

काह के होरा होइ बैठो काह कौड़ी वानो ॥

भक्ताके भक्तिन होइ बैठो राजाके गृह रानो ।

कहै कबीर सुनो हो सन्तो यह सब अकथ कहानो ॥

२

माया मोह मोहित कौन्हा ।

ताते ज्ञान रत्न हरि लौन्हा ॥

यौवन ऐसो सुपने जैसे जीवन स्वप्न समान ।

शब्द उपदेश दिये ते काहो परम निधान ॥

ज्योतिः तरङ्ग देखि उर हुलसे पय न पेखे आगो ।

काल फांस नर सुन्ध न चेतै कनक कामिनी लागी ॥

शेष सोई पद कतेव निरखे सुर मुनि शास्त्र विचारै ।

सत् गुरुके उपदेश विना ते जानि कै जीव मारै ॥
कह विचार विकार परिहरि तरण तारण सोई ॥
कहहि कबीर भगवन्त भजे नर दुतिया और न कोई ॥

१

मरि हो रे तन कहले करि हो ।
ना छूटे बाहर से धरि हो ॥
काया विगुर्चन अनवनि भातो ।
कोई जारै कोई गाड़े मातो ॥
हिन्दू ले जरै तुहक ले गाड़े ।
यह परपक्ष दुह्र घर छाड़े ॥
कर्मपास यम जाल पसारा ।
जो धीर मर्म करी गहि मारा ॥
राम विना नर होहहु कैसा ।
बाट माभ गोबर परा जैसा ॥
कहै कबीर पाछे पछेतइ हो ।
या घरतें जब वा घर जइहो ॥

कलित—तिताला

माई मेरे कुल उजियारी ।
सासु ननद पटिया लै बांधलि ससुरहि
परलि उगारी ॥
जारी माग मता सुनारिकी ।
जेन सरवर रचि न धमारिकी ॥
जना पांच कुसुया मिलि रख लौ
धवर दुह्र औ चारी ।
पोरो प्रोसनी करौ कलेवा सङ्ग है बुद्धि महतारी ॥
सहज बापुरै सेज विहावल सुत लेजं मैं पांव पसारी ॥
आव न जाव मरौ नहि जीवो साहेब भेटलि गारी ॥
एक नाम मैं निजुकै गहलो तो छूटल संसारी ।
एक नाम मैं वधि कै लेखूं कहै कबीर पुकारी ॥

विद्यान—तिताला

मैं का सो कहो को सुनै को पतियारि ।
फुसवाके हुवसे भंवर मरि जारि ॥
जीतियन बोइयन सिचियन सोई ।

विनु डार विनु पाते फूल एक होई ॥
गगन मण्डल विच फूल एक फूला ।
तर भई डार ऊपर भयो मूला ॥
फूल भल फूलल मलिनि भल गूये ॥
फुसवा विनसि गहल भवरा निरुये ॥
कहहि कबीर सुनो सन्त भाई ।
पण्डित जम फूल रहल लुभाई ॥
परज—तिताला
जोलाहा बीनी हु हरिनामा ।
जाको सुरवर सुनि धर ध्याना ॥
ताना तनैक शीठा लीन्हो चरघो चारो वेद कलामा ॥
सरकुण्डी एक रामनारायण पूरण प्रकटे कामा ॥
भवसागर एक कठवत कीन्हा ते हमे माड़ी साना ॥
माड़ी के तन माड़ी रहो है माड़ो विरले जाना ॥
चांद सुरज दोष गोडा कोन्हो माभ दोष
कियो कीन्हा ॥

त्रिभुवन नाथ जब मांजन लागे श्याम
सुरलिया दीन्हा ॥
पारिके जब भरना लीन्हा वै वाधै के राना ।
वै बाधी मैं तीनो लोके बाधो कोज न रहा उवाना ॥
तीनो लोक एक करगह कीन्हा टग मग कोन्हो ताना ॥
आदि पुरुष बैठवन बैठे कबीरा ज्योति समाना ॥

कलित—तिताला

योगिया फिरि गयो नगर मभारो ।
जाइ समान पाच तहां जारो ॥
गये दिगन्तर कोइ न बतावे ।
योगिया गुफा बहुरि नहि आवे ॥
जरि गयो कथा ध्वजा गई छूटी ।
भाजि गये डह खपर गये फूटी ॥
कहै कबीर कली है खोटी ।
जो रहै करवासो निकसे टोटी ॥
२
योगिया के नगर वसे मति कोई ।
जो रे वसे सो योगिया होई ॥

वह योगिया के उलटा ज्ञाना ।
 कारो चोली माही ताना ॥
 परगट सुकंधा गुपुता धारी ।
 तौमिं मूल साजीवनि भारी ॥
 वह योगियाकी युक्ति जो बूझि ।
 राम रमि ताहि त्रिभुवन सूझि ॥
 अमृत बेलि क्षण क्षण पोवे ।
 कहै कबीर योगी युग युग जीवे ॥

सोरठ—तिताला

जो पै बीज रूप भगवाना ।
 तो पण्डित कहा पूछो आना ॥
 कहा मन कहा बधी हंकार ।
 सख रज तमः गुण तीन प्रकार ॥
 विष अमृत फल करे अनेका ।
 बहु धावै दूक है तरवेका ॥
 कहै कबीर ते में का जानी ।
 कोदहु छटल कौन अरुभानी ॥

चहोरी—तिताला

जो चरखा जरि जाय बढइया न मरे ।
 में कातो सत हजार चरखुला जिन जरे ॥
 बाबा भरो व्याह करो अच्छा वर दित काह ।
 जो लग अच्छा वर मिले तो लग तुमहि विवाह ॥
 प्रथम नगर पहुंच ते पगि गये शोक सन्ताप ।
 एक अचरज मौह देखा जो बिटिया व्याहो बाप ॥
 समधीके घर लमघो आए आए बह के भारे ।
 गौड़ चूहा दे दे चरखा दियो हटारै ॥
 कहहि कबीर सुनो हो सन्तो चरखा लवे जो कोरै ।
 यह चरखा लखि परे तो आवागमन न होरै ॥

२

यन्त्री यन्त्र अनुपम बाजे ।
 वाके अष्ट गगन सुख गाजे ॥
 तूही बाजे तूही गाजे तूही लिए कर डोले ।
 एक शब्द में राग छतीसो अनहद वाणी बोले ॥

सुखको नाख अक्षय को तूवा सत् गुरु साजि बनाया
 गृध्र को तार नासिका चिरई माया को
 मोम लगाया ॥
 गगनमण्डल में भी उजियाग उलटा फेर लगाया ।
 कहै कबीर जन भए हैं विवेकी जिन यन्त्री
 सो मन लाया ॥

२

जिसा मासु नर को तेसा मासु पशुको रहिर
 एक समाराजी ।
 पशु को मासु भखे सब कोरै नरहि न
 भखे सियाराजी ॥
 ब्रह्मकुलाल भेदिनी भैया उपजि विनसि कित
 गइयाजी ।
 मासु मछरिया तरे पेखइ हो जो खेतन में
 बोइयाजी ॥
 कहहि कबीर सुनो हो सन्तो राम नाम
 नित लेइयाजी ।
 जे कहु कियो जिह्वा बेखारथ बदल पराए देइयाजी ॥

चातक कहा पुकारे दूरि ।
 जल सो जगत् रक्षा भरपूरि ॥
 जेहि जल नाद विन्दुका भेद ।
 घटक्रम सहित उपासना वेद ॥
 जेहि जल जीव शोवका वास ।
 सो जल धरणी अन्न प्रकाश ॥
 जेहि जल उपजै सकल शरीरा ।
 सो जल भेद न जानु कबीरा ॥

सिसु—तिताला

चलहु कहा टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो ।
 दसो द्वार नरक भरि बूड़े तू गन्धीको वेवेदो ॥ .
 फटे नयन हृदय नहि सूझि मति एको नहि जानो ।
 काम क्रोध लक्ष्णा के मारे बूड़ि मुए विनु पानो ॥
 ज्यो जारे त्यो होइ भरम धुरि गाड़े छमि कोट खारै

शुकर खान काम के भोजन तिन के एहे बड़ाई ॥
चेति न देखि न बुद्धि बल बोरे तुहु ते काल न दूरि ।
कोटि यत्न करहो बहुतेरा तन को अवस्था धरि ॥
बालू के घरवामें बैठे चेतत नाहि अयाना ।
कहहि कबीर एक राम भजे विनु बूड़े बहुत सयाना ॥

परज—तिताला

फिरो कहा फूले फूले फूले ।
जब दस मास जर्ध मुख होते सो दिन काहे को भूले ॥
जो माखो साठो नहि विहुरे सोचि सोचि धन कीन्हा ।
मुए पीछे लेहू लेहू करे भूत रहनि कछु दीन्हा ॥
देहरि लेवर नारि सङ्ग हे आगे सङ्ग न सहेला ।
मृत्यु कथा न लिया सङ्ग खटोला फिरि पुनि
हंस अकेला ॥

जारे देह भस्म हो जाई गाड़े माटी खाई ।
काचे कुम्भ उदक ज्यो भरिया तनकी यहे बड़ाई ॥
राम न रमसि मोहके माते परे काल वसि कूवा ।
कहे कबीर नर आपु बंधायि ज्यो नखिनी भ्रम सूवा ॥

२

ऐसे योगिया बढ करनी ।
जाके गगन आकाश न धरनी ॥
हाथ न वाके पाव न वाके रूप न वाके रेखा ।
विना हाट हटवाई लावे करे वयाई लेखा ॥
कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाके युक्ति ।
सिद्धी पत्र कछु नाहो वाके काहे को मागे मुक्ति ॥
मैं तोहि जाना तैं मोहि जाना मैं तोहि माहि
समाना ।

उत्तपति प्रलय एको नहि होता तब कहो
कौन ब्रह्म को ध्याना ॥

• योगो एक आनि ठाट कियो हे राम रहा भरि पूरि ।
धीवस्त मूल कछु नहि वाके राम सजीवन मूरि ॥
नटवट बाजौ पेखनि पेखे बाजीगरकी बाजौ ।
कहे कबीर सुनो हो सन्तो भाई सूर्य विराजौ ॥

१

ऐसो भरम विगुरचर भारो ।
वेद कतेव दीन ओ दोजख को पुरुषा को नारो ॥
माटी का घट साज बनायो वाहो बौच समाना ।
घट विनसे का नाम धरोगे अहमक, खोजि भुलाना ॥
रज गुण ब्रह्मा तम गुण शङ्कर सत् गुण हरि हैं सोई ।
कहहि कबीर राम रमि रहिए हिन्दू तुक्क न कोई ॥

४

अपनपो आपुही विसरौ ।
जैसे कनक काच मन्दिर में भूमि के मूस मरौ ॥
ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखि परौ ।
वैसे हा गज स्फटिक शिला में दशनन आनि अरौ ॥
मरकट मुठी स्वाद नहि भूहर घर घर रटत फिरौ ।
कहहि कबीर ललना का सुगना तोहि कौन पकरौ ॥

पीलू—तिताला

आपु अपन अस कीजे बह तेरा ।
काह न मर्म पावा हरि केरा ॥
इन्दु कहा करे विश्रामा ।
सो कह गए जो कहत हुते रामा ॥
वे कहा गये जे हते सयाना ।
होय मृतक वह पदहि समाना ॥
रामानन्द राम रस माते ।
कहे कबीर हम कहि कहि थाके ॥

धनाथी—तिताला

अब हम जानिया हो हरि बाजौ का खेल ।
उहा बजाइ दिखाइ तमाशा बहुरि लेत सकेल ॥
हरि बाजौ सुर नर मुनि जहड़े माया चाटि कलाया ।
घर में डारि सबे भरमाये हृदय ज्ञान नहि आया ॥
बाजौ होइ बाजीगर साचा साधनकी मति ऐसो ।
कहहि कबीर जिन जैसी समुझौ ताकी
गति भै तैसी ॥

२

कह हो अम्बर का सो लाग ।
चेतनहार नहि चेत सुभागा ॥

अम्बर मध्ये दीसै तारा ।
एक चेतै दूजे चैतावनिहारा ॥
जो खोजो सो उहाँ नाहो ।
सो ती आहि अमर पद माहो ।
कहहि कबीर पद बूझै सोई ।
सुख हृदया जाके एकै होई ॥

विहान—तिताला

बन्दे करि ले आपन बेरा ।
आपु जियत लख आपु ठोर करि मुए कर्हा घर तेरा ॥
इह अवसर नहि चेतौ प्राणी अन्त कोई नहि तेरा ।
कहहि कबीर सुनौ हो सन्तौ कठिन जाल का घेरा ॥

धनाश्री—तिताला

राम को भांति हुररो ।
सब सन्त उघारत चुनरो ॥
वाल्मीक वन वोइया चुनौ लियो सुखदेव ।
क्रम वपुरा हो रहा सूत कातै जयदेव ॥
तोन लोक ताना तन्वो ब्रह्मा विष्णु महेश ।
नाम लेत मुनि हारिया सुरपति सकल नरेश ॥
विष्णु जिह्वा गुण गाइयां विन बस्तौका देह ।
सूने घरका पाहुना तासौ लायौ नेह ॥
चारि वेद के डाकियो निरङ्कार कियो रारि ।
बिनै कबीरा चून्दरी मौना बाधौ वारि ॥

२

तुमह हरिहि समुझौ लोई गौरो सुख मन्दर बाजे ।
एक अगुणी षट् चक्रहि वेधो विन विषम कुल माजे ॥
ब्रह्म पकरि अग्नि में होमै मत्स्य गगन चढ़ि गाजा ।
नीति अभावसि निति अह भे तू राहु आह सम दाजा ॥
सुरभी भक्षण करत वेद सुख घन वरसे तन छीजे ।
त्रिकुटी कुच्छल मध्य मन्दर बाजे औघट

अम्बर भोजे ॥

कहहि कबीर सुनो हो सन्तो योगिन सिधि पियारो ।
सदा रहै सुख संयम अपने वसुधा आदि कुमारो ॥

२

भूला है अहमक नादाना ।
तुम हरदम दाम नहि जाना ॥
वरवश आय के गाय पयारै गला काटि जिन
आप लिया ।
जीवता जोव मुरुदा करि डारे तिस को कहत
हलाल हुया ॥
जासु मासु कौ पाक कहत हौ ताकी उत्पति
सुनु भाई ।
रजो वोज से मासु उपानी मासु न पाकां तू खाई ॥
अपनी देखि करत नहि अहमक कहत हमारे
बड़न किया ।
उसका खून तुम्हारी गरदन जिन तुम को
उपदेश दिया ॥
गई सियाही आई सफेदो दिल सफेद अजड़ न हुवा ।
रोजा नमाज बांग का कोजे हुजरे मोतर
पढ़ति सुवा ॥
पण्डित वेद पुराण पढ़त है मोलना पढ़े कराना ।
कहहि कबीर दोउ गए नरकहि जिन
रामहि नहि जाना ॥

३

काजी तुम कौन कतेव वखानी ।
भीकत बकत रहो निष्ठ वासर मति एको नहि जानो ॥
शक्ति उनमाने सुनति करत हो भेनव दाग भाई ।
जो खोदाइ तेरि सुनति करत आपुहि कटी
क्यों न आई ॥
सुनति कराय तुरुक जो हाते औरतको क्या कहिए ।
अफ़ शरीरी नारो वखाने ताते दूरहि रहिए ॥
घालि अनेक ब्राह्मण हो नाम हरि के क्या पहिराबा ।
बेजनि को शूद्रो परोसे तुम पाड़े क्यों खाया ॥
हिन्द तुरक कहंते आया किन यह राह चलाया ।
दिल में खोजि देखि खोजादे भिक्षि
कहो किन पाया ॥

कहहि कबीर सुनो हो सन्तो जोर करत है भाई ।
कबीर न बाट रामकी पकरी अन्तकाल पहिचतारै ॥

५

भूला लोग कहै घर भेरा ।
जा घरवामें भूला डोले सो घरवा नहि तेरा ॥
हाथी घोड़ा बैल वाहनो संघड़ कियो घनेरा ।
बसती में सो दियो बन्देरा जङ्गल कियो वसेरा ॥
गंठी बांधि खरच नहि पठए बहुरि ना कियो फेरा ।
बौबो बाहर हरफ् महल में बीच मियां को डेरा ॥
नो मन सुत उरभि न सुरभि जन्म जन्म उरभेरा ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो यह पदका
करो निवेरा ॥

६

कबीरा तेरो घर कन्दरामें या जग रहत भुलाना ।
गुरु की कही करत नहि कोई महले महल देवाना ॥
सकल ब्रह्म में ईस कबीरा कागा न चोच पसारा ।
मन मत कर्म धरे सब देखो नाद विन्दु विस्तारा ॥
सकल कबीरा बोले वाणी नौनो में घर छाया ।
अन्त लुटि होत घट भीतर घट का मर्म न पाया ॥
कामिनी रूपी सकल कबीरा नृगा चीरदे होई ।
बड़ बड़ ज्ञानी सुनिवर याके पकारि सके नहि कोई ॥
ब्रह्मा वरुण कुवेर पुरन्दर पीपा अरु ब्रह्मादा ।
हरिनाकुस को उदर विदारो तिनहु के

काल न राखा ॥

गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर नामदेव जयदेव दासा ।
तिनकी खबर कहै नहि कोई उम कद कियो है वासा ॥
चोपरि खेस होत घट भीतर जन्मके पासा डारा ।
दम दमकी खबर न जानि कोई कारि न सकै निखवारा ॥
चारि दिरग महि मण्ड रचो है रुम साम
बिच डोली ।

ता ऊपर कहु अजब तमाशा मारा है धमकीखी ॥
सकल अवतार जा कै महिमण्डल अन्त
खटारक जेरो ।

पदभुत अगम अवगाह रचो है ए सब शोभा तेरो ॥
सकल कबीरा बोले वीरा अजङ्ग हो होशियारा ।
कहै कबीर गुरु सकलो दर्पण हरिदम
करो पुकारा

कबीरा तेरो बकदस में माने अहेरा खेले ।
बपुवारो आनन्दम् गा रुचि रुचि सर मिले ॥
चेतत रावल पवन खेड़ा सहेज मूल वाधे ।
ध्यान धनुष ज्ञानवान योग सर साधे ॥
षट् चक्र वेधि कमल वेधि जाइ उजियारा कीन्हा ।
काम क्रोध लोभ वर्हाकी सावज दीन्हा ॥
गगन मध्ये रो कीन्हा हारा जहां दिवस नहि राती ॥
कबीर दासा जाइ पहुंचे विहुरे सङ्गी साती ॥

८

सावज न होई ।

भाई सावज न होई ॥

वाकी मासु भये सब सावज एक सकल संसारा
अवगति वाकी बाता ।

टैट फारि जो देखिये रे भाई करे जे आता ॥
जैसी वाकी मासु रे भाई पुन पुन मासु विकारै ।
हाड़ गोड़ धुरा पर वारे आगी धुवां नहि खारै ॥
सीर सींगि कछू नहि वाके पूछ कहां वै पावै ।
सब पण्डित मिलि धन्धे परिया कबीरा गौरी गावै ॥

विद्याम—तिताला

सुभागे काही कारण लोभ लागि रत्न जन्म खोयो ।
पूर्व जन्म भूमि के कारण वोज काहे को बोयो ॥
वृन्द सज्जन मण्ड साजो अग्निकुण्ड रहाया ।
दश मास माताके गर्भे बहुरि लागी माया ॥
बाल हुते वृष हुवा होनी हुवा सो होवा ।
जब उख्र जेहै बांध चलै है नयन भरी भरि रोवा ॥
यौवन की जिन आशा राखौ काल गराखे वासा ।
बाकी है संसार कबीरा चित्त चेति डारो पासा ॥

९

सन्त महन्त हो सुमिरा सोई ।
जो कोउ फांसो से बचा होई ॥

दत्तात्रय मर्म नहि जाना मिथ्या खाद सुखाना ।
सरिता मधि छत को काठिन ताहि समाधि समाना ॥
गोरखपवन राखे नहि जाना योग युक्ति उम माना ।
रिद्धिसिद्धि संयम बहु तेरे परब्रह्म नहि जाना ॥
व्याष्टि सृष्टि विद्या सम्पत्त राम ऐसो शिख साखा ।
जो राम को मरता कहिये तिनहु को काख न राखा ॥
हिन्दू कहे हम राम हि जाने तुम्हक कहै हमारा पीर ।
दोनो पाइ दीनमें भगरे ठाठे देखे हंस कबीर ॥

२

तन धरि सुखिया कोइ न देखा जो देखा सो दुखिया ।
उदय अस्तकी बात कहत ही ताकर करउ विवेकिया ॥
बाटे बाटे सब कोई दुखिया क्या योगी क्या वैरागी ।
शुक्राचारज दुखके कारण सब हो माया त्यागी ॥
योगी जहम ते अति दुखिया तपसी ही दुख दूना ।
पाया लक्ष्णा सब को व्यापी कोइ महल नहि सुना ॥
साच कहं तो सब जग खीभे भूठ कहा नहि जाई ।
कहहि कबीर तेइ भव दुखिया जिन यह राइ चलाई ॥

३

ता में न के टटो मेरे भाई ।
तन छूटे मन कहाँ समाई ॥
सनक सनन्दन जयदेव नामा ।
भक्ति सही मन उनहु न जाना ॥
अम्बरीष प्रह्लाद सुदामा ।
भक्ति सही मन उनहु न कामा ॥
भरथरि गोरख गोपीचन्दा ।
ता मन मिलि मिलि कियो आनन्दा ॥
जा मन के कोइ जाने न भेव ।
ता मन मज्ज भयो सुखदेव ॥
शिव सनकादिक नारद शेषा ।
तनके भीतर मन उनहु न पेसा ॥
अखिल निरञ्जन सकल शरीरा ।
ता मन अमि अमि रहल कबीरा ॥

बाबू ऐसो है संसार तुम्हारी एह कनि हे विष
हरे बहरा ।
को अब अमल सहे प्रतिदिन कोन है रहनि हमारा ॥
शास्त्र सङ्ग्रह सब कोइ जाने हृदय तत्त्व नहि बूझै ।
निरजीव आगे सरजीव थापे लोचन कछू न सूझै ॥
तजि अमृत विष काहे अचबो गांठी बांधो खोटा ।
चौरन दीन्हो पाट सिंहासन साहन सो कियो बोटा ॥
कहहि कबीर भूठे मिलि भूठा गहि ठग व्यवहारा ।
तीनि लोक भरि पूरि रहो है नाहीं है पतियारा ॥

४

कह हो निरञ्जन कोने वानो ।
हाथ पांव मुख अरण जिह्वा का कहि जपि हो प्रानी ॥
ज्योति हो ज्योति ज्योति जो कहिए ज्योति कवन
सहि दानी ।
ज्योति हि ज्योति ज्योति दे मारे तब ज्योति
कहाँ समानी ॥
चारि वेद ब्रह्मा जो कहिया तिनहु न या गति जानी ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो बूझो पण्डित आनी ॥

५

को अस करै नगर कोतवलिया ।
मासु फेसाइ गृध्र रखवरिया ॥
मूसा भयोगाव मञ्जार कहरिया ।
सोवत दादुर सर्प पहरिया ॥
बैल बिषाद गाइ भे बनूभा ।
बहवै दुहै तीनि तिनि सञ्जा ॥
अंगने चोर साहु घर मूसै ।
सोना लोइ बड़ले धूसै ॥
निति उठि सिंह खारते जूभे ।
कविराके पद विरला जन बूभे ॥

कविता—तितासा

का कहि उमर गये बहु तेरा ।
बहुतक सुए फिरै नहि फेरा ॥

जब हम रोवत तब न संभारा ।
गर्भ वासकी बात विचारा ॥
अब ते रोवा क्या ते पाया ।
केहि कारण ते मोहि बवाया ॥
कहहि कबीर सुनो नर लोरे ।
कास वखेर परो मति कोरे ॥

सोरठ—तिताला

अलख राम जीवो तेरो नारे ।
जग के भेहर होहु तू सारे ॥
क्या मुण्डो भ्रमि गिर नाये ।
क्या जल देह नहाये ॥
खून करे मसकीन कहावे ।
गूँहें रहे छिपावे ॥
क्या उज्जख मखन कराये ।
क्या मसजिद सिर नाए ॥
हृदये कपट नमाज गुजारी ।
का हज मक्का जारो ॥

हिन्दू वर्त एकदशो साधे करै चौबीसो रोक
सुखसमाना ।

एगारह मास कहो किन टारा एकहि माह भियाना ॥
जो खोदा रह जीत वसत है और सुखक केहि केरा ।
तौरथ मूर्ति राम निवासी दुनो में किनहु न हेरा ॥
पूरव दिसा हरि को वास पश्चिम अलख सुकामा ।
दिस में खोज खोज दिस हो में यह करीमा रामा ॥
वेद कतेव कहा किन भूठा भूठा जे न विचारै ।
सब वट एक एक ले खेवे भो दूजा कहि मारे ॥
जिने भीरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा ।
कबीर निगुरा अलख राम पुकारै सो गुह पीर हमारा ॥

सिन्धु—तिताला

भाव मे भाव मुझे हरि को नाम ।
अवर सकस तजि कौने काम ॥
कहाँ तब आदम कहाँ तब होवा ।
कहाँ तब पीर पैगम्बर हुआ ॥

कहाँ तब जमीं कहाँ आसमान ।
कहाँ तब वेद कतेव करान ॥
सिन दुनिया मिरवी मसौदि । ०
भूठा रोवा भूठा ईदि ॥
साधा एक अलखको नाम ।
आके नैने करो सखाम ॥
कहु हो छतम कहाँते पारि ।
किसके कहे तुम कुरी अचारि ॥
कत छत में बाजो लाया ।
हिन्दू तुलक की राह बसाया ॥
कहाँ तब दिवस कहाँ तब राती ।
कहाँ तब छत्तिमको उतपाती ॥
नहि वाके जाति नहि वाके पाति ।
कहहि कबीर वाके दिवस न राति ॥

सोरठ—तिताला

अब कहाँ चलेहु अकेला मिन्ता ।
उठि मन करी घरे की चिन्ता ॥
खीर खाइ छत पिण्ड सवारा ।
सो तन लै जाहर करि डारा ॥
जा सिर रधि रधि बांधै पागा ।
सो सिर रज बिडारे कागा ॥
हाइ जरे अस लकरो भूरी ।
केय जरे अस तनको कूरी ॥
भावत सङ्ग न जात संहाती ।
कहा भयो दस वाके हाती ॥
माया के रस खेन हु न पावे ।
बीचै जम बोखारनै खावे ॥
कहहि कबीर नर अजहु न जागा ।
यम के सुहर मांभ सिर बाजा ॥

१

देवसोक हरिके सगारि ।
माइ घरे पुत्र धिया सङ्ग जारि ॥
सासु नगद मिलि अदस अचारि ।

महयाके गृह बेटी आई ॥
 हम बहनों राम भरो सारा ।
 हम आप हरि पुत्र हमारा ॥
 कहहि कबीर हरोके पूता ।
 राम रमै सो कुकरी के पूता ॥

विना पवन पर्वत उड़े ।
 जीव जन्तु सब वत्सहि कुड़े ॥
 सुखे सरवर उठहि हिबोर ।
 विनु जल चकवा करै कसोर ॥
 बैठा पण्डित पढ़े पुराना ।
 विन देखे का करै बखाना ॥
 कहहि कबीर जो पद को जाना ।
 सोई सन्त सदा परमाना ॥

दारी केहि ले तोहि दो गारी ।
 तू समुझिके पन्थ विचारी ॥
 घरङ्गके नाहन अपना ।
 तिन साहेब भरे सपना ॥
 ब्राह्मण छत्रिय वानी ।
 तिनहु कहल नहि मानो ॥
 योगी जङ्गम अते ।
 आपु गये हैं ते ते ॥
 कहै कबीर एक योगी ।
 तू भ्रमि भ्रमि भौ भोगी ॥
 लोगो ताही मतिके मीरा ।
 ज्यों पानी पानीमें मिछि मो खो
 जरि मिले कबीरा ॥

जो मये को सांघा व्यास ।
 तुम्हरा मर्म है मगहर पास ॥
 मगहर मरो मरे नहि पावै ।
 सन्त तैं मरो तौ राम सजावै ॥

मगहर मरे ते गदा होई ।
 भसो प्रतोति राम ते खोई ॥
 क्या कायो क्या मगह जो पै हृदय राम रमै मोरा ।
 जो कायो तन तजै कबोरा रामहि कौन निहोरा ॥

कैसे के तरों अब नाथ कैसे के तरो ।
 अब बहु कुटिल भरो ।
 कैसे तैरो सेवा पूजा कैसे तैरो ध्यान ।
 छपर तो अजर दोखा भीतर वग उनमान ॥
 भाव तो भुजङ्ग दोखा अति रे व्यभिचारी ।
 सुरति तौ सचान देखा तोर मति तौ मजारी ॥
 अति रे विरोध देखा अति रे दिवाना ।
 घट दर्शन सब देखो मेव लपटाना ॥
 कहहि कबीर सुनो नरहन्दा ।
 छारनि डिन्ध सकल जग धन्दा ॥

ए भ्रम भूत सकल जग खाय ।
 जिन जिन पूजा तिन तिन जह्वाया ॥
 अण्ड न पिण्ड प्राण नहि देहा ।
 काटि काटि जीव सौतिक एहा ॥
 बकारी सुरगी दूनो छेदा ।
 अगिल जन्म उन अवसर लेदा ॥
 कहहि कबीर सुनो नर सोई ।
 मृतवाके पूजल भूतवा होई ॥

धनायी—तिताला

अमर उड़े बग बरठे आई ।
 रैन गई बोसो चलि आई ॥
 हसहस कापै बासा जोय ।
 नहि जानै का करि है पीय ॥
 काचे बासन टिकें न पानी ।
 उड़ि गये हंस काया कुन्डिखानी ॥
 काग उड़ावत भुजा पिरानी ।
 कहहि कबीर ए कथा सिरानी ॥

र
 लसमे विनु तेहीके बेसा भयो ।
 बैठत नाही साहु की सङ्गति नाधे जन्म गया ॥
 कहि कहि मरौ पण्थी जिज खारथ यम के डाड़ सङ्गी ।
 धन दारा सुत राज काजमें माथे भार गङ्गी ॥
 लसमहि छोड़ि विषय रङ्ग राती तैं

पापके बीज बोयो ।

भूठी सुक्ति नर आशा जीवन की प्रेतका जूठ खयो ॥
 लख चीरासी जीवनम्तु में साधर जात बढ्यो ।
 कहहि कबीर सुनी हे सन्तो उन ग्मान को
 पूछ गङ्गी ॥

र
 अब हम भइलि बहर जल मीना ।
 परवलै जन्म तप कामद कीना ॥
 तहिया में अछलु मन वैरागी ।
 तेज सोभै शोक कुटुम्ब राम लागी ॥
 तजले में काशी मति भइलि भोरी ।
 प्राणनाथ कहु का गति भोरी ॥
 हमहि क्रूर सेवक तुमही अपाना ।
 देउ में दोष काहि भगवाना ॥
 हम चल अइसो तुम्हरे शरणा ।
 कतहु न देखो हरि जोको चरणा ॥
 हम चलि अइलि तुम्हारे पास ।
 दास कबीर भल कहल निरासा ॥

र
 लोग बोले दूरि गये कबीर ।
 या मत जानै कोइ कोइ धीर ॥
 दशरथ सुत तिम लोक जानी ।
 राम नाम के मर्म न मानो ॥
 जस जीव जानि परा जस लेखा ।
 राज की करे उरग ज्यों पेखा ॥
 यद्यपि फल उत्तम गुण जानी ।
 हरि छोड़ि मन सुक्तियो नहीं मानो ॥

हरि आधार जस मीन हो नीरा ।
 और यज्ञ कहु कहै कबीरा ॥

र
 अपना कर्म न मीटो जाई ।
 कर्मका लिखा मिटे कहु कैसे जी युग कोटि सिराई ॥
 गुरु वशिष्ठ मुनि लख सुधारे सूर्य मन्त्र एक दीना ।
 जो सीता रघुनाथ विवाह पल एक सङ्गन कीना ॥
 तीन लोकके कर्ता कहिए बालि बधो वरिषाई ।
 एक समय ऐसी बलि पाई उनहु अवसर पाई ॥
 नारद मुनि के वदन छिपायो कीना कपि
 को स्वरूपा ।

र
 शिशुपालके भुजा उपारे आयु भये हरि भूपा ॥
 पार्वती को बाँध न कहिए ईश्वर न कहिये भिखारी ॥
 कहे कबीर कर्ताको बातें कामकी बातें न्यारी ॥

र
 है कोइ गुरु ज्ञानी जगत् में उलटि वेद बूझै ।
 पानी में पावक वरे पाँधे पाँखो सूझै ॥
 गाई तो नाहर खायो हरिणी खायो चीता ।
 काग लहर काटि कै बटेरो बाज जीता ॥
 मूसे तो मजार खायो ज्ञानहि खायो सियारा ।
 पादि कै उपदेश जानै ता सुधी सुवारा ॥
 एक हो दार खायो पाचही भुजङ्गा ।
 कहहि कबीर पुकारि के है दोउ एक सङ्गा ॥

र
 भगुरा एक बड़ी राजाराम ।
 जो निरवारै सो निरवाम ॥
 ब्रह्म बड़ा के जहां ते आया ।
 देव बड़ा के जिन्ह उपजाया ॥
 यह मन बड़ा कि जेहि मन मान ।
 राम बड़ा की रामहि जान ॥
 भ्रमि भ्रमि कबिरा फिर उदास ।
 निर्यक डाकि तीर्थको दास ॥

भूठे जिनि पतिआहु सुन सक्त सयाना ।
 तेरे घटही में ठग पुर है मति खोवहु अपाना ॥
 भूठेकी सन्तान है धरती असमाना ।
 दूथी दिशा वाके फन्द है जिव घेरि है अयाना ॥
 योग जप तप संयम तीर्थ व्रत दाना ।
 नवधा वेद कतेव है भूठेकी बाना ॥
 काङ्ग को सब दै फुरे काङ्ग करामाती ।
 मान बड़ाई लै रहै हिन्दू तुलक जाती ॥
 बात ब्योते आसमानकी मुदती नित रानी ।
 बहुत खुदो दिख राख भरे तनु पानो ॥
 कहहि कबीर कासो कही सकलो जग अन्धा ।
 सांचा सौ भागा फिरै भूठे का बन्दा ॥

कबीर—चीतीसा

भोंकार आदि जो जानै ।
 लिखि कै भेटे ताहि सो मानै ॥
 ओझार कहै सब कोई ।
 जो नहि लखा सो विरलै होई ॥
 काका कवल कीनि कह पावै ।
 शशि असित सम्पूर्ण हि आवै ॥
 तहां कुसुम रङ्ग जो पावै ।
 अवगह गहि कै गगन रह्यावै ॥
 खखा चाहै खोरि मनावै ।
 खसमहि छोड़ि चङ्ग दिस धावै ॥
 खसमहि छोड़ि जमा होइ रह्यै ।
 होइ अधीन अक्षय पद लह्यै ॥
 गगा गुरु के वचनै मान ।
 दूसरि शब्द करै नहि कान ॥
 तहां विहङ्ग कवहु नहि जाई ।
 अवगह गहिके गगन रह्यै ॥
 घघा घट विनसे घट होई ।
 घटहीमें घट राखु समाई ॥
 जो घट घटे घटहि फिरि लावै ।

घटही में फिरि घटहि समावै ॥
 मना निरखत मिसु दिन जाई ।
 निरखत नयन रहै अरगाई ॥
 निमिष एक जी निरखै पावै ।
 ताहि निमिष मह नयन छिपावै ॥
 चचा चित्र रघो बहु भारी ।
 चित्र छोड़ि ते चेतु चित्तकारी ॥
 जे नहि चित्र विचित्र उ लेखा ।
 चित्र छोड़ि ते चेतु चितेखा ॥
 छछा आहि छत्रपति पासा ।
 छकि कौन रहसि भेट सब आसा ॥
 मैं तो कह क्षण क्षण समुभाया ।
 खसम छोड़ि कस प्रापु वधाया ॥
 जजा इ तन जीवत हि जारि ।
 यौवन जारि युक्ति तो पारि ॥
 जे किहु जानि जानि पर जरै ।
 घटही ज्योति उजियारी करै ॥
 भक्ता अरुक्ति संग भोक्त जान ।
 होटत हुटत जाहि परान ॥
 कोटि सुमेरु टूटि फिरि आवै ।
 जे षड़ गढ़ हि सो पावै ॥
 या निस्त्रह कर आरुस देहु ।
 नाही देखि न भजिये अजेहु ॥
 नाही देखि न प्रापु भजाउ ।
 जहां न होत तहां तन मन लाउ ॥
 जहां नही तहां जब कहु जानी ।
 जहां नही तहां लै पहिचानी ॥
 टटा वाट विकट मन माहो ।
 खोलि कपाट मङ्गल ते जाहो ॥
 रही सटपटी जुटि तेहि माहो ।
 होहि अटल ते कवहु न जाहो ॥
 ठठा ठौर दूरि ठग नारे ।
 नीति कै निटुर कोन्ह मन धारे ॥

जे ठग ठगो सब लोग अयाना ।
 सौ ठग अचिह्न ठौर पहिचाना ॥
 डडा डर उपजे डर होई ।
 डर ही मह डर राखु समोई ॥
 जो डर डरै डरहि फिरि आवै ।
 डर ही मह फिरि डर हि समावे ॥
 टटा टोट गहो कत धाना ।
 टुंढत टुंढत जाइहि प्राना ॥
 कोटि सुमेरु टूटि करि आवै ।
 जे गढ़ गढ़ा गढ़हि सो पावे ॥
 नाना दूइ वसे है गाउ ।
 नाना टूटे नाना तोरि नाउ ॥
 सुवा एक लाहि तजि घना ।
 मरहि अत्या ककेता गना ॥
 तता अति तिरिया नहि जाई ।
 तन त्रिभुवन मह राखु छपाई ॥
 जो तन त्रिभुवन माह छपावे ।
 तन्तुहि मिलै तन्तु सो बावे ॥
 थया अति अथाह थाह नहि जोई ।
 इथिर उथिर मर हरदम होई ॥
 थारे थारे स्थिर होहु रे भाई ।
 विनुष भे जस मन्दिर थन्हाई ॥
 ददा देखहु विना मन हारु ।
 जस देखहु तस करहु विचारु ॥
 दशह हारे तारौ लावै ।
 तब दयाल को दर्शन पावै ॥
 धधा अर्ध छोड़ जाहु मन लावै ।
 आपा मेटि के प्रेम बढ़ावै ॥
 चौथे बोए नाना मह जाई ।
 राम गदह होय खर खाई ॥
 पपा पाप करै सब कोई ।
 पापीके घर धर्म न होई ॥
 पाप कहै सुन हु रे भाई ।

हमरे लिए को कुवा न पाई ॥
 फफा फल लागा बड़ दूरि ।
 चाखे शिष्य गुरु देह न तोरि ॥
 बवा बर बर करै सब कोई ।
 बर बर किए काम नहि होई ॥
 बाबा बात कहै अरथाई ।
 फलका मर्म न जानेहु भाई ॥
 भभा भर्मि रहा भरि पूरि ।
 भभरे ते है नियरे दूरि ॥
 भभा कहै सुनहु रे भाई ।
 भभरे आय भभरे जाई ॥
 ममा सेवे मन पाई ।
 हमरे सेवे मूल गंवाई ॥
 जजा जगत् रहा भरि पूरि ।
 जगत् हुते है जाजा दूरि ॥
 जा जा कहै सुनहु रे भाई ।
 हमरे सेवे जय जय पाई ॥
 ररा रारि रहै अरुभाई ।
 राम के कहै दुख दारिद जाई ॥
 ररा कहै सुनहु रे भाई ।
 सत् गुरु पूछि कैसे वहु भाई ॥
 लला तुतरे बात जनाई ।
 तुतरा तुतरे परिचय पाई ॥
 अपने तुतरा और के कहई ।
 एकहि खेत दूना निरवहई ॥
 षषा परपर करै सब कोई ।
 परपर किए काज नहि होई ॥
 षषा कहै सुनहु रे भाई ।
 राम नाम लै जाहु पराई ॥
 ससा सरा रचो वरिपाई ।
 सर वेधे सब लोग तबाई ॥
 ससाके घर सुनु गुणी होई ।
 एतनी बात न जानै कोई ॥

हाय हाय करत जोव सब जाई ।
छेव परे तब कहि समुभाई ॥
छेव परे तब कहि समुभाया ।
कहै कबीर अगु मन गा हराया ॥

अथ विप्रबतीसी लिख्यते

सुनहु सभन मिलि विप्र बतौसो ।
हरि विनु बूढ़ो नाव भरोसो ॥
ब्राह्मण होइ कै ब्रह्म न जानै ।
घर मह यज्ञ प्रतिग्रह आनै ॥
जेइ सिरजा तेहि नहि पहिचानो ।
कर्म धर्म ले बंठि वखानो ॥
ग्रहण अमावस सायर दूजा ।
खाति कपाति परो जनि पूजा ॥
प्रेत कनक मुख अन्तर बासा ।
आहति सत्य होम कै आसा ॥
कुल उत्तम कलि माह कहावै ॥
फेरि फेरि धर्म कर्म करावै ॥
सुत दारा मिलि जूटो खाहो ।
हरि भक्ति कै छूति कराहो ॥
कर्म अशौच उच्छिष्ट खाहो ।
मतिभ्रष्ट यम लोके जाहो ॥
म्हाइ खोरि उत्तम होइ आवै ।
विष्णुभक्त देखे दुख पावै ॥
स्वारथ लागि रहै बे काजा ।
नाम लेत पावक ज्यों डाजा ॥
रामकृष्ण के छाड़ेन्हि आसा ।
पढ़ि गुनि भे छतम के दासा ॥
कर्म पढ़हि कर्महि को धावै ।
जे पूछे तेहि कर्म दृढ़ावै ॥
नहि कर्मिको निन्दा कीजे ।
कर्म करे ताहि चित दीजे ॥
ऐसी भक्ति हृदय मह लावै ।

द्विरणाकुसको पन्व चलावे ॥
देखहु असमति केर प्रकासा ।
अभ्यन्तर कृत्तिमके दासा ॥
जाके पूजे पवन ऊड़े ।
नास सुमिरि नौभो मह बूड़े ॥
पाप पुण्य के हाथहि पासा ।
मारि जगत् को कांन्ह विनासा ॥
वहिनो वो कुल वहिनि कहावे ।
अग्निहि जारे अग्निहि मावे ॥
बैठाते घर साहू कहावे ।
भीतर भेद मुस वहिनो लखावे ॥
ऐसी विधि सुर विप्र भनोजे ।
नाम लेत पचासन दोजे ॥
बूढ़ि गये नाहि आप संभारा ।
ऊंच नौच कहु काहि जोहारा ॥
उच्च नोच है मध्यम वानी ।
एके पवन एक है पानो ॥
एके मटिया एक कुम्हारा ।
एक सभन का सिरजनहारा ॥
एक चाक सब चित्र बनाया ।
नादविन्दुके मध्य समाया ॥
व्यापी एक सकल को गूली ।
नाम धरे का कहिये भूतो ॥
राक्षस करणी देव कहावे ।
वाद करे गोपाल न भावे ॥
हंस देह तजि न्यारा होई ।
तब को जाति कहे वहु कोई ॥
खेत सुफेद कि राता पियरा ।
अवरण वरण कि ताता सियरा ॥
हिन्दू तुलक कि बूढ़ा वारा ।
मारि पुसल मिलि करहु विचारा ॥
कहिये काह कहा नहि माना ।
दास कबीर सोइ पे जाना ॥

लखी वहा है वहि जात है करत है चहु वोर ।
जो कहा नहि माने तो देहु धका दुहि भोर ॥

वाचरी

शोरङ्कते घूमरो कोइ सुन्दरि कोइ पहिरो आप ।
शोभा अद्भुत रूप वाकी महिमा बरणि न जाए ॥
चन्द्रवदनि मृगलोचना मायाबुन्दका दियो उघाल ।
यती सता सब मोहिया हो गज गति वाकी चाल ॥
नारद की सुख माडि के लीन्हो वसन छड़ाय ।
गर्व गहेली गर्व सो उलटि चली सुसुकाय ॥
शिव सन ब्रह्मा दोरि के दूनो पकरा जाय ।
फगुवा लियो छिनायके बहुरि दियो छिटकाय ॥
अनहद धनि बाजा बजे सत मन सुनत भा चाव ।
खेलन हारा खेलि है बहुरि न ऐसो दाव ॥
सुर नर मुनि ओ देवता गोरख दत ओ व्यास ।
सनक सनन्दन लेन कछो है ओसे केतिक भास ॥
छिरकत धेधे ऐमसे खरि पिचकारी गात ।
कर लिये वसिया पुनि फेरि फेरि चितवत जात ॥
ज्ञान गाड़ ले रो पिपा त्रिगुण दियो है सात ।
शिव सन ब्रह्म लेन कछो है अवरक केतिक बात ॥
एक वोर सुर नर मुनि ठाढ़े एक वोर अकेलौ आप ।
दृष्टि परे वे काहु न छाड़्यो करि लियो एके बाप ॥
जेते धे ते ते लियो धंष्टुट माह समोय ।
ककल वाकी रेख है अदगा गया न कोय ॥
इन्द्र कण्ठ हारि खण्डे लोचन ललचि नचाए ।
कहहि कबीर ते उबरे जाहि न मोह समाए ॥

२

जारे जग कानि हराम मन बोरा हो ।
जाल शोक सन्ताप समभु मन बोरा हो ॥
विना नेमका घोघरा मनु बोरा हो ।
विनु कह गिलका ईश समुभ मन बोरा हो ॥
काल भूतकी हसहि मन बोरा हो ।
चित्र रषो जगदीश समुभ मन बोरा हो ॥
तन तन सो क्या गर्व सो मन बोरा हो ।

भस्म कीनि जाके सांभ समुभ मन बोरा हो ॥
काम अन्ध जग वश परहु अद्भुत सही हो
मन बोरा हो ।
सौस मर्कट सुठी खादकी लीन्हो हो
मन बोरा हो ॥
भूजा पासरि समुभु मन बोरा हो ।
धूटनको संशय परी मन बोरा हो ॥
घर घर नाचेहु द्वार समभु मन बोरा हो ।
उंच नीच जानि नहीं मन बोरा हो ॥
घर घर खायहु डाग समुभ मन बोरा हो ।
जो सुगना ललनो गछो समुभु मन बोरा हो ॥
ऐसी भर्म विचारि समुभु मन बोरा हो ।
पढ़ि गुनिके क्या किएहु समुभु मन बोरा हो ॥
अन्ध बिलइया खाय समुभु मन बोरा हो ।
हाने को तीरथ घना मन बोरा हो ॥
पूजन को बहुदेव समुभु मन बोरा हो ।
विनु पानी लट्टू बही मन बोरा हो ॥
तुम टेकहु राम जहाज समुभु मन बोरा हो ।
कहहि कबीर जग भमिया मन बोरा हो ॥

पनाथी—तिताला

हंसा सरवर शरीरमें रंयेया राम ।
जागत चोर घर मूसं रंयेया राम ॥
जो जागल सो जागल रंयेया राम ।
सोवत गयल विगोए रंयेया राम ॥
आजु पसेरा नियरेया राम ।
कालि वसेरा दुरियेया राम ॥
वीरने देसवा रंयेया राम ।
मैं न मरहु गेया राम ॥
दास सघन दधि मधन की एह रंयेया राम ।
भवन मधे हटल भारि पूरि रंयेया राम ॥
फेरि के हंसा पाहुना भय सुर मैया राम ।
वेधे टिपद निर्वाण रंयेया राम ॥
तो है हंसा मणि मानिक रंयेया राम ।

जस रे कियेह तस पायहु रामैया राम ॥
 हमार दोष जनि देहु रमैया राम ।
 आगम काटि गमको लीहु रमैया राम ॥
 सहज कियेहु व्यापार रमैया राम ।
 रामनाम धन वाणिज्य किएहु रमैया राम ॥
 सादेहु वस्त्र अमोल रमैया राम ।
 साचल दुनिया सादि चल रमैया राम ॥
 नौ वाहिया दम गोन रमैया राम ।
 पाछल दुनिया जागि परे रमैया राम ॥
 साखरु डारेनि फेरि रमैया राम ।
 सिर धुनि हंसा उड़ि चले रमैया राम ॥
 सरवर मीत जोहारि रमैया राम ।
 आगि जो लागी सरवर में रमैया राम ॥
 सरवर जरि भये धूरि रमैया राम ।
 आगि जो लागी सरवर में रमैया राम ॥
 कहहि कबीर सुनु सन्तो हो रमैया राम ।
 परखि न लेहु खरा खोटा रमैया राम ॥

२

बेलि भल सुमृत जहड़ायेहु रमैया राम ।
 धोके कियेहु विश्वास रमैया राम ॥
 सो तोहै वन शूकर रमैया राम ।
 सोर कियेहु विश्वास रमैया राम ॥
 इती है वेद भागवत रमैया राम ।
 गुरु दिहल मोहि घापि रमैया राम ॥
 गोबरकोट उपायेहु रमैया राम ।
 परिहरि जहहहु खेत रमैया राम ॥
 बलि बल तहां न पहुंचेहु रमैया राम ।
 सोज कहंके होइ रमैया राम ॥
 से सुनि मन में धीरज भयल रमैया राम ।
 मन बढि रहल लजाइ रमैया राम ॥
 फेरि पाछे जो हेरहु रमैया राम ।
 काल भूत सब अहे रमैया राम ॥

कहहि कबीर सुन सन्तो हो रमैया राम ।
 जानि ठिगहु फैलाव रमैया राम ॥

अथ बिरहुली लिखते

आदि अन्त नहि होते बिरहुली ।
 नहि जरो पालव पेड़ बिरहुली ॥
 निसि वासर नहि होते बिरहुली ।
 पौन पानि नहि मूल बिरहुली ॥
 ब्रह्मादिक सनकादि बिरहुली ।
 कधि गे योग अपार बिरहुली ॥
 मास असारे शीतल बिरहुली ।
 बौवनि सातो बोज बिरहुली ॥
 नित गोड़े नित सीचे बिरहुली ।
 नित नव पल्लव पेड़ बिरहुली ॥
 छिछिन बिरहुली छिछोन बिरहुली ।
 छिछिन रहल तीन लोक बिरहुली ॥
 न रहल तीन लोक बिरहुली ।
 फूल एक भल फूलल बिरहुली ॥
 फूलि रहल संसार बिरहुली ।
 से फूल बन्दहि सन्तजना बिरहुली ॥
 बन्दि करा वर जाहि बिरहुली ।
 से फूल लूटहि सन्तजना बिरहुली ॥
 डारिगे वैतर सांप बिरहुली ।
 विषहर मन्त्र न माने बिरहुली ॥
 गारुड़ बोल अपार बिरहुली ।
 विषकी कियरिया बोयहु बिरहुली ॥
 लोढ़त क्या पछताहु बिरहुली ।
 जन्म जन्म जसु अन्तरे बिरहुली ॥
 फूल एक कनहर डार बिरहुली ।
 कहहि कबीर सचपाइ हो बिरहुली ॥

अथ हिंडोला

धनाश्री—मिताला

भर्म हिंडोलन भूले सब जग आए ।
 पाप पुण्य के अन्ध दो जामे राम रमाए ॥

लोभ मरुवा विषय भरा काम कीन्वो ठानि ।
 शुभ अशुभ बनाय डाड़ो गङ्गो दूनो पानि ॥
 भूलते गुणो गन्धर्व मुनि भूलते सुरपति इन्द्र ।
 भूलते नारद सारदा भूले व्यास फणीन्द्र ॥
 भूलते विरिञ्चि महेश मुनि भूलते सूर्य चन्द्र ।
 चापु निर्गुण सगुण होइ भूलिया गोविन्द्र ॥
 छ चारि चउदह सात एकईस तीनि लोक बनाए ।
 खानि वखानि खोजि देखहु अखिर कोइ न रहाए ॥
 खण्ड ब्रह्माण्ड खोजि घट दर्शन छुटत कतइ नाहि ।
 साधु सन्त विचारि देखहु जोव निस्तारे कहा जाहि ॥
 शशि सूर्य रेनि शरद तहां तन्तु पल्लव नाहि ।
 काल अकाल परलै नहों तहां सन्त विरले जाहि ॥
 तहां के छुटे बहु काल वोते भूमि परी सुहाए ।
 साधु सङ्गति खोजि देखहु बहुरि उठि समाए ॥
 परी भूलवे कौ भय नहों जो सन्त होहि सुजान ।
 कहे कबोर सन्त सुकृत मिलै तौ बहुरि न भूले पान ॥

१

बहुविधि चित्र बनाय कै हरि रथो कोड़ी रास ।
 जाहि न इच्छा भूलवेको ऐसी बहु केहि पास ॥
 भूलत भूलत बहु कल्प वोते मन नहि छाड़े पास ।
 रथो हिंडोला अहो निसु चारिहु युग चतुर मास ॥
 कबहु के गीच जंच कबहु स्वर्ग भूमि ले जाए ।
 अति अमृत भर्म हिंडोलना नेक नाहि ठहराए ॥
 उरपत ही याहि भूलवे को रास यादव राए ।
 कहहि कबोर गोपाल विनती शरण हरिहु अपाए ॥

१

लोभ मोहके खम्भ दोउ मन सै रथो हिंडोरा ।
 भूलत जीव जहान जहां लगि कतहु न
 देखे यिति ठोरा ॥
 चतुर भूले चतुराइया ही भूल ही राजा सेव ।
 चांद सूर्य दोउ भूल ही उनहु न आशाभेव ॥
 लख चौरासी जीव भूलहो रवि सुत धरिया ध्यान ।
 कोटि कल्प युग वितल अजहु न मानै हारि अयान ॥

धरणी आकाश दोउ भूलहो भूलहो हो पवन नीर ।
 देह धरे हरि भूलहो देखहि हंस कबोर ॥

नव अक्षर लिख्यते

सहज ध्यान देहु सहज ध्यान रहो गुरुके वचन
 समाए हो ।

भेलि सिखी चारा चित राखहु रहहु
 दृष्टि ले लाए हो ॥

जस दुख दोष सहहु एहि अवसर अस सुख
 होइ हि पाए हो ।

जौ खुटुकार बेगि नहि लागे हृदय नेवारहु काए हो ॥
 मनु अहि काह रह हु मन मारे खिभ आखी

भिक बोले हो ।

मानु मोत मीतै बनि छोड़ै कपट गांठि न
 खोले हो ॥

भोग उपभोग भुगुति जिनि भूलहु ज्ञान युक्ति
 तब साधहु हो ।

जौ एहि भांति करहु मतवालो तामत
 किञ्चित् वाधहु हो ॥

नाहित ठाकुर है अति दारुण करि है चाल
 कुचलिया हो ।

वाधि मारि डांढि सब लेइ है छूटिहि सब
 मतवसिया हो ॥

जब हो ग्रामत आनि पहुंचि है पोठि साठ भल
 टूटी हो ।

ठाटे लोग कुटुम्ब सब देखहि कहे काहु के
 न छूटी हो ॥

एकते निखि पाय परि विनवे विनती किये
 न माने हो ।

अनचिह्न रहेहु कियेहु नहि चिह्नरे सो कैसे
 पहिचाने हो ॥

ले रथ बोलाइ बात न पूछे कैवट गर्व तन बोले हो ।
 से करे हाथ संभल कहु नाहीं सो निदाघ

में डोले हो ॥

जेह सब युक्ति भगू मन के राखल धरेन्हि
 कहु भरि उहरो हो ।
 जे करे हाथ पांव कहु नाही धरे लाग ते सहरी हो ॥
 येसना आछित पेलि चलु बीरे तीर तीर
 करोवहु हो ।
 उथले रहहु परहु जिनि हाथ हु के खोवहु हो ॥
 तर के बाम उपर के भूमरि छांह कतहु नहि
 पायहु हो ।
 ऐसी जानि पसोजहु सीभहु कस न छपरिया
 छाथहु हो ॥
 जे कहु खेल कियेहु सो कयेहु बहुरि खेल
 कस होई हो ।
 सासु मनद दुइ दिई उलाटन रहहु लोज सुंह
 गोई हो ॥
 गुर भौ टोल गोद भौ लचपच कहा न मानेहु
 मोरा हो ।
 ताली तुहकी कबहु न साधेहु चढ़े हकाके घोरा हो ॥
 ताल भांभ भल बाजत आवे कहरा सब कोइ
 नाचे हो ।
 जे रङ्ग दूलाह व्याहन आवे ते रङ्ग दुलहिनि राचे हो ॥
 मौका आखत खेवद न जानेहु कैसे के लगवे
 तीरा हो ।
 कहहि कबीर रामरस माते जोलहा दास
 कबीरा हो ॥
 मत सुनु मानिक मत सुनु मानिक हृदया बने
 बारह हो ।
 अटपट कोहरा करे कोहरेया हमरा गावन
 चारह हो ॥
 निति उठि कोरिया बेठि भरथरो गोपी आगे नाचे हो ।
 निति उठि मौवा नाव अढ़त है वेरहु बेरा वाचे हो ॥
 राउर के कहु खबरि न जानेहु कैसे के भगरा
 निवेरहु हो ।

एक गांव में पांच तरहि वसैं ता में डोठ निहेरहु हो ॥
 आपन आपन सन भगरा वरगासिन्हि पियसे
 प्रीति नसावनि हो ।
 भइसिन्ह माहु रहत निति वकुला तकुला
 ताकि लगावनि हो ॥
 गारन माह वसेहु नहि कबहुं कैसे के पद
 चिन्हवेवहु हो ।
 पंथी पंथ पूछि नहि लोन्हेहु मूढ़हि मूढ़ गंवेवहु हो ॥
 जन्तु इतिके घर हेरिन्ह ललचि कोद इनके मन
 दोरा हो ।
 इन कर जिनि दरर पसारहु तब पैवहु थित
 ठोरा हो ॥
 प्रेम पान एक सत गुरु दोन्हा गाढ़ी तीर कमान हो ।
 दास कबीर कहे एह कहरा रामहि माह समान हो ॥
 १
 मूढ़ सुझाय फल के बैठेहु मुद्रा पहिरि मजूसा हो ।
 ताहि उपर कहु छार लपेटे भितर भितर
 घर सूसा हो ॥
 बरषत है गर्व मे मथीसा मुक्ता मुहकारो हो ।
 मोहन जहां तहां ले जे है नहि पति रही
 तुमारी हो ॥
 मांभ मभरिया वसे जो जाने जन होइ सो
 धीरा हो ।
 निर्भय भै तहां गुरुको नगरिया सुख सोवै दास
 कबीरा हो ॥
 ४
 छेम कुशल श्री सद्गो सलामति कहहु कवन को
 दोना हो ।
 आवत जात हुतो विधि लौटो सबे तंग हरि
 लीना हो ॥
 सुर नर मुनि यतो पीर श्रीलिया मीरा पैदा
 कीन्हा हो ।

कहं लग गण्डु अमल कोटि लहि सकल
 पयाना दीन्हा हो ॥
 पानी पै न अकाश जाहिगे चन्द्र जाहिगे सुरा हो ।
 ए भी जाहिगे वो भी जाहिगे परत न काहु के
 पूरा हो ॥
 कुशल कहत कहत जग विनसे सकल कालकी
 फासी हो ।
 कहै कबीर सारो दुनिया विनसी रहल राम
 अविनासी हो ॥

ऐसनि देहनि राखन बोरी सुए छुवै नहि कोई हो ।
 हंडवा करोरवा तोरि लड़ाइनि जौ कोटिन्ह
 धन होइहि हो ॥
 उर्ह निश्वासा उपयुत रासा हकरायनि परिवारा हो ।
 चन्दन पीर चतुर सब लेपे गले गजमुक्ता हारा हो ॥
 कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ज्ञानहीन
 मतिहीना हो ।
 एक एक दिन इहै गति सब के का राव का दीना हो ॥

हो सबहि नमें हो सबहि नमें विलग विलग
 बिलगारि हो ।
 चोढ़न मोरे एक पिछोरा लोग बोलै एकताई हो ॥
 एक निरन्तर अन्तर नाही ज्यों जल घट
 शशि भाई हो ।
 एक समान कोइ समुझत नाहीं जाते जरा
 मरण भ्रम जाई हो ॥
 तामें बालक बूढ़ो नाहि न मोरे चेलकाई हो ।
 नि दिवस तहवां मैं नाही नारि पुरुष
 समतारि हो ॥
 तिरविध रहो सबन में वरतो नाम मोर रमराई हो ।
 पठये न जाव खाने नहि आवो सहज रहौ
 दुनियाई हो ॥

जोलहा तान बान नहि जाने फाटि
 बिनै दय ठारि हो ।
 गुरु परताप जिनहि अस भाषो जन विरले
 सिधि पाई हो ॥
 अमल कोटि मन होरा देखो कोटकी मोल नहि
 खारि हो ।
 सुर मुनि जाके खोज परे हे कछु कछु कबिरहि
 पाई हो ॥

ननदी गे ते विषम सोहागिनी ते निदरे संसारानि ।
 आवत देखिय सङ्ग सु तोते औ खसमह मारानि ॥
 मोरे बापके दुह भेइरुवा मैं औ मोरि जैठानीगे ।
 जब हम अइलि रसिक जगमें तबहि बात
 जग जानीगे ॥
 माय मोरि मरलि पिताके सङ्गे सर रचि
 मरल संघातागे ।
 अपने सुई अवर ले सुई लोग कुटुम्ब सङ्ग सातागे ॥
 जो लगि श्वास रहै घट भीतर तो लगि कुशल
 परिहैगे ।
 कहहि कबीर जब श्वास निसरिगे मन्दिर
 अमल जरिहैगे ॥

ई माया रघुनाथ को बोरी खेलन चली अहेरा हो ।
 चतुर चिकनिया बुनि मारो काहु न राख्यो नैरा हो ॥
 मौनी वो दिगम्बर मारो ध्यान धरन्ते योगी हो ।
 जङ्गल महके जङ्गम मारे माया किनहु न भोगी हो ॥
 वेद पढ़ते पाड़े मारे पूजा करन्ते स्वामी हो ।
 अर्थ विचारत पण्डित मारो सकल शास्त्र परगामौ हो ॥
 सोगी विनि वन धीमर मारो ब्रह्मा कबिरा फोरा हो ।
 नाथ मछीद्रा बले खीटि देसि गलहु मयोरा हो ॥
 जा घटके घर करता धरे ता हरिभक्तके चेरी हो ।
 कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ज्यों आवे
 त्यों फेरी हो ॥

८

रामनाम भजु रामनाम भजु चेति देखु मनमाही हो ।
कह्य कहीरि जोरि धन गाड़ेहु चलत हुलावत
बाही हो ॥

दादा बाबा थो परपाजा जेह कर ई भुइ भाड़े हो ।
अन्धरी भयेहु हियह को फूटी तेह काड़े
सब छाड़े हो ॥

ई संसार असारक धन्या अस्तकाल कोइ नाही हो ।
उपजत विनसत वार न लागे जस बादर परछाही हो ॥
मातो जोत अर कुल कुटुम्ब सब इन्ह कर कवन
बड़ाई हो ।

कहहि कबीर एक राम भजे विनु बूड़ी सब
चतुराई हो ॥

१०

राम नाम विनु राम नाम विनु मिथ्या
जन्म गंवायह हो ।
बेमर बेइ सुगा ज्यो पिंजड़े सुन परे पछतायह हो ॥
जेसे मखप गांठ अर्थ देइ घर हुके अकल गंवाई हो ।
खादहि उदर भरे कहु केसे वोसहि प्यास न जाई हो ॥
गांठी रत्न मर्म जनि जाने पारख लौजो छोरी हो ।
कहहि कबीर यह असवर बोते रत्न न मिले
बहोरी हो ॥

११

राम नाम की सेवा बौरा दूरि नाहि दुरि आशा हो ।
चोर देव कहा पूजहु बोरे ई सब भीठी आशा हो ॥
उपरके उजल कहा भे बोरे भीतर अजह कारा हो ।
तनके हृद कह्य भयो बोरे जो मन अजह वारा हो ॥
सुखके दांत कहा भयो भिरे अन्तर दांत
लोहे का हो ।

फेरि फेरि चना चबाय विषय को का खाद
मद लोभ का हो ॥

तनके सकल संज्ञा घटि गयज मन ही दिखासा
दूनी हो ।

कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो सकल सयानप
ऊनी हो ॥

१२

बोदन मोरे राम नामके मैं रामहिके बनिजाई हो ।
राम नामके करह बनिजिया हरि मोरे हृदवाई हो ॥
सहस्र नामके करो पसारा दिन बहोत गंवाई हो ।
जाके देख मैं नव पांच सेरवा ताके होत पढ़ाई हो ॥
सेर पसेरी पूरा करि ले पसंगा कतहु न जाई हो ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो जोर चला जहड़ाई हो ॥

वसन—धमार

ऐसो जात है दुर्लभ शरीर ।

राम नाम भजु लागु तोर ॥

गये वैशु बलि गये कंश ।

दुर्योधन गये बूड़े वंश ॥

पृथु गये पृथिवीके राउ ।

तिल विक्रम गये रहै न काउ ॥

सब चकवे गये मण्डलोक भारो ।

अजह हो नर देखु विचारी ॥

हरि वत कश्यप जनक बालि सारा ।

उन्ह सब छेकल यमकी धारा ॥

गोपीचन्द्र भल कोन्ह योग ।

जेसे रावण मारो करत भोग ॥

ऐसे जात देखिए सबको याम ।

कहहि कबीर भजु राम नाम ॥

१

सब मदमाते कोउ न जागु ।

संगहि चोर घर मूसन लागु ॥

योगो माते धरि योग ध्यान ।

पण्डित माते पढ़े पुरान ॥

तपसी माते तपके भेव ।

सञ्चासो माते करि हरि सेव ॥

मोक्षना माते पढ़ि मुसाफ ।

काजी माते हैं इनिसाफ ॥

संसार माते मायाके धार ।

राजा-माते करि अहङ्कार ॥
 माते सुखदेव अथव अक्रूर ।
 इन्द्रान्त माते लेख लक्रूर ॥
 शिव माते हरि चरण सेव ।
 कवि माते नामा जयदेव ॥
 सत्य सत्य कहि अमृत वेद ।
 जैसे रावण मारि बबरके भेद ॥
 चञ्चल मनके अथम काम ।
 कहहि कबीर भजु राम नाम ॥

हमार कहल केउ नहि पतियार ।
 आपु बूढ़े नर सखिल धार ॥
 अन्य कहै अन्ये पतिपाय ।
 अस विश्वाके लग ना जाय ॥
 सो तो कहिये ऐसे अबूझ ।
 असम ठाढ़ ठिगा नहि सूझ ॥
 आपन आप नचे चाहे मान ।
 भूठ प्रपञ्च सांचके जान ॥
 भूठा कबहि न करे कालु ।
 में वरजी तोहि सुन जिसालु ॥
 छाड़ पाषण्ड मानु बात ।
 नाहित परछहु यमके हात ॥
 कहै कबीर नल कियेहु खोज ।
 भटकि सुयल सब वनके रोज ॥

में आयो हरि मिलन तोहि ।
 अतु वसन्त पहिराव मोहि ॥
 लड़ी परी या पाई छीन ।
 सुरा न खोटा है दो तीन ॥
 सर लागी तेहि तोनि सै साटि ।
 कसनि बहतरि लागु ताटि ॥
 खुद खुद खुद चले नारी ।
 बेठि मोहिनी पस्यो मारी ॥

अपर नाचे निकरत कौड़ ।
 करि गह मह दुइ चाले गौड़ ॥
 पांच पचीशो दशए द्वार ।
 सखी पांच तहं रचे धमार ॥
 रङ्ग विरङ्गी पहिरे चीर ।
 हरिके चरण धे गावे कबीर ॥

तुम बूझो पण्डित कौन नारी ।
 कौहं न विवाह लहै कुमारी ॥
 सब देवन्ह मिलि हरिहि दीन्ह ।
 चारिउ युग हरि सङ्ग लीन्ह ॥
 प्रथम हो पदमिनी रूप आय ।
 है सापिनो जब ये दिखाय ॥
 ई भरि युवती बावरि नाहि ।
 अति रे तेज त्रिय रेनि ताहि ॥
 कहहि कबीर औज पियारी ।
 अपने बल कब रहलि कुमारी ॥

बुढ़िया हसि बोले मैं नितहं वारि ।
 मोहि सौ तरुषी कहु कवनि नारि ॥
 दांत गयल मोर पान खात ।
 केश गयल मोर गङ्ग नहात ॥
 नयन गये मोर काजर देत ।
 वयस गयल पर पुरुष सेत ॥
 जातल पुरुषवा मोर आहार ।
 अनजाने के करों संहार ॥
 कहै कबीर बुढ़िया आनन्द गाय ।
 पुत्र भर्तारहि बेठी खाय ॥

करपल्लव कवल बेलै नारि ।
 पण्डित होइ सो लेइ विचारि ॥
 कपड़ा न पहिरे है उधारि ।
 गिर जौव से धन अति पियारि ॥

उलटि पलटिके बाजू तार ।
काहुहि मारे काहुहि उधार ॥
कहहि कबीर दासमके दास ।
काह सुख दे काहु उदास ॥

८

जाके बारह मास वसन्त होय ।
ताके परमारघ बूझो विरला कोय ॥
वरिसै अग्नि अखण्डधार ।
हरिधर यौवन अठारह भार ॥
पानिय आदर धरे न सोय ।
मौन गहै काम मन घोय ॥
विनु तहवर फलै आकास ।
शिव विरधि तहं लेहिं वास ॥
सगकादिक भूल अमर होय ।
लख चीरासो जीव जग जोय ॥
जो तोहि सत गुर सख लखाव ।
ताते नहि छूटे चरखन भाव ॥
अमरलोक फल लावे चाय ।
कहहि कबीर बूझे सो खाय ॥

९

घरही में वाजं बड़ी रारि ।
उठि बैठि लागे अपल मारि ॥
एक वाटी जाके पांच हाथ ।
पांच हुके पचीस साथ ॥
पचीस बतावे ओर ओर ।
ओर बतावे कौक ठोर ॥
अन्तर मध्य अन्त लोह ।
भिक भाारि दे लाजि नहिं देह ॥
आपन आपन चाहे भोग ।
केसे केसे के कुशल परि हे योग ॥
विवेक विचार न करे कोय ।
सब खिलकत मा सदके, सोय ॥
सुख फारि हंसे राव रह ॥

ताते धरे न पाइ एको अह ॥
नियरे नयो जे बतावे हूलि ।
चहु दिसि चाखलि रहलि फूलि ॥
लख अरेरो एक जीव ।
ताते पुकारे पोव पोव ॥
अवरिक वार जो होइ पुकाव ।
कहहि कबीर ताको पूरो दाव ॥

१०

शिव काशी कैसे भई तोहारि ।
अजह हो शिव देखु विचारि ॥
चोवा चन्दन अंगर पान ।
घर घर अमृत होइ पुरान ॥
बहुविधि भवनन्ह लागु भोग ।
एसे नग्न कोलाहल करे लोग ॥
बहुविधि परजा लोग तोर ।
तेहि कारण जीव डीठ मोर ॥
हमरे वासक के रहइ ज्ञान ।
तोहके हरि समभावे आन ॥
जे जाहि मनसे रहल आय ।
जीवन मरण कहु कहां समाय ॥
ताकर जो कहु होइ अकाज ।
तोहि दोष नहि संगय लाज ॥
हरि इर्षित से कहल भेव ।
जहां हम तहां अवर न केव ॥
दिन चारि मन धरहु धीर ।
अस देखहि तस कहहि कबीर ॥

११

रसना पढ़ि बोले आवसन्त ।
पुनि जे परवे यमके फन्द ॥
भेद दख पर दख कौन्ह ।
अष्ट कमल पजार दोन्ह ॥
ब्रह्म अग्नि कियो प्रकास ।
अधः ऊर्ध्व तहां बहै बतास ॥

गौ मारी तहां परिमल गाव ।
 सखी पांच तहां देखन धाव ॥
 अमरद बाज रहल पूरि ।
 मुख बहत्तरि खेले धरि ॥
 माया देखि कस रहैहु भूलि ।
 अस वनछति रहलि फूलि ॥
 कहै कबार हरिदास के दास ।
 फगुवा मांगि देखुण्ड वास ॥

१२

माहर मोर मनसा अति सुजान ।
 घान कूटि कूटि करो विधान ॥
 बड़रे भोर उठि आगन वाट ।
 बड़रे खाचि लई गोबर काट ॥
 वासी भात मनु सेलिह सखाय ।
 बड़े घरल लेह पनियाके जाय ॥
 सर अही बाधि पाट पाट ।
 लेह रे बेचो में हाट हाट ॥
 कहहि कबोर इ हरिके काज ।
 जोइया के डिग रहि कहु कवन लाज ॥

अब साखी लिखते

पांच तन्तुका पूतरा मानुष धरिया नाव ।
 एक कलाके वौकुरे विकल भया सब गाव ॥
 पांच तन्तुका पूतरा जो विरचे में कोव ।
 में तोहि पूछो पण्डिता शब्द बड़ा की जीव ॥
 पांच तन्तु ले थातन सो तन कहि लहर दीन्ह ॥
 कर्महि के वस जीव है कर्महि जीवके कीन्ह ॥
 पांच तन्तुके भीतरे जो प्रवसु अस्थान ।
 विरले मरु की पाइयां गुरुके शब्द प्रमाण ॥
 पांच तन्तुका खेस है ताकर करहु विचार ।
 कहै कबीर ई तन्तुके वूमि जीवका होइ उबार ॥

२

रङ्ग हिते रङ्ग अपजे सब रङ्ग देखो एक ।
 कीन रङ्ग है जीव का ता कर करहु विवेक ॥

सुगत खात अड़ि आसन पीड़े भरु खजूर ।
 जाके दिसमें हो वसो सेना लिए हजूर ॥
 शब्द हमरा आदिका पल पल राखो याद ।
 अन्त फलेगी माहली अपरको बरबाद ॥
 जागत तरखी जीव है शब्द सोहगा सेत ।
 जगत मुन्द जल को कुम्ही कहि कबीर कोइ देख ॥

३

शब्द हमारा आदिका शब्द हमारा जीव ।
 फल रहा न किता करो घोरिया बाधोव ॥
 शब्द हमारा तुम शब्दका सुनिए मति जाहु सरखि ।
 जो चाहुहु निज तन्तु को ती शब्द लेहु परखि ॥
 शब्द विना सुति आधरी कहो कहां को जाय ।
 हारन पे वै शब्दका फिरि फिरि भटका खाय ॥
 शब्द शब्द बहु अन्तरे सार शब्द मत खोज ।
 कहहि कबीर जीहि सार शब्द महि ॥
 हुक् जीवन सो जीव ॥

४

शब्द हि मारा गिरि परा शब्दहि छाड़ा राज ।
 जिन्ह यह शब्द विवेकिया ताकर सुधरा काज ॥
 पदंत अपर हरि वसे घोरि चढ़ वसे गाव ।
 विना फल भंवरा रस चाहे कहु बरवा को नाव ॥
 गांव जंचे पहारपर भीषटकी है बाह ।
 कबीर ऐसा ठाकर साइयां अपरि गापकी छाह ॥

५

जेही गये हैं पण्डिता तेही गये अहीर ।
 जंची घाटी रामको तेहि चढ़ि रहा कबीर ॥
 एक बार ते उतरि रहु संमल परो न साथ ।
 संमल घाटे खग थके जीव विराने हाथ ॥
 कबिरा का घर शिखर पर जहां सलह ली गयल ।
 पांव न टिके पलका तहां पण्डित न सादो बयल ॥

६

जइया जन्म सुक्ति है होता तइया होत न कोय ।
 हूटित हारो हो जगतै कहां चला विगोय ॥
 विनु डाड़े जग डाड़िया सोरठ परिया डाड़ ।

बाट निहारि मीनिया गुरुते माटो खाइ ॥
 ईं जग तो जहड़े गया भया योग नहि भोग ।
 तिस भवि कबिरा से गया तिहो भारि लोग ॥
 कबिरा जात पुकारिया चढ़ि चन्दनके डार ।
 बाल सगये ना लगे पुनि का सेत हमार ॥
 चन्दन सर्प लपेटिया चन्दन काह कराय ।
 रोम रोम विष भोनिया अंशुत कहा पियाय ॥
 चन्दन वास निवारहं तुम कारण वन काति ।
 जीवत जीव न मार हं मूये सबे निपाति ॥
 जिन्ह जिन्ह सुमिरन है किया ऐसो पूर पढ़ाय ।
 भूलि परे दिन प्राथये सुमिरन कियो न जाय ॥
 इहई सुमिरन धारि ले प्रागे विषमी बाट ।
 स्वर्ण विसाहन सब चले जहं बनिया नहि हाट ॥
 बहुत दिवस तेहि बीतिया शुभग समाधि लगाय ।
 करहा डारा गाड़में दूरि परे पछताय ॥
 वनते भागी वेहड़ो पर करहा अन्नदान ।
 करहा देख न सो कहै को करहा को जान ॥
 कबिरा भवन न भाजिया बहु विधि धरिया भेख ।
 साईंके परिचय विना अन्तर रहिगौ देख ॥
 तनमन परिचय सब नसे शून्य न मानौ भाय ।
 भिलमिल ज्योति अनाहदी विनसे कहाँ समाय ॥
 भिल मिल भगरा भेलते बाकी हुटी न काहु ।
 गोरख अटके कामपुर कौन कहावे साहु ॥
 गोरख रसिया रामके सुण न जारै देह ।
 मास गले माटो भई कौरि मांझि लेह ॥
 काटे आम न मौलसो काटे सुटे न कान ।
 गोरख पारस परस विन काहिका नुकसान ॥
 जो जानहु जग जीवना ज्यो जीवहु खीं जीव ।
 पानी चाहहु आपना पनिया मांगिल घीव ॥
 जो जानहु जो आपना तो कर जीव के सार ।
 जियरा ऐसा पाहुना मिले न बारम्बार ॥
 पनिया पियावत का फिरि घर घर हारहि द्वार ।
 ज्वावन्त जन होइ तो पीवेगा भूक मार ॥

कर बहियां बल आपहो छाड़ विरानी पास ।
 जेहि अंगना नदिया बहै सो कस मरे पियास ॥
 हृदया भीतर आरसो मुख देखो नहि जाय ।
 मुख भी तब ही देखिये दिलका घोका जाय ॥
 जो सुददा सम शीलमें सबहो रूप समान ।
 कह कबीर उस सावकी गति सब देखि मुलान ॥
 देखि के भूके लागन कुप्ता सुनिके सुके अवाणी ।
 विन देखे विन सुने भूके सो कुप्ता है पाजो ॥
 गहके टेक न छाड़िया चोच जोभ जरि जाय ।
 काहा तप्त अङ्गार है गये चकोर चबाय ॥
 चकोर चन्द्रके भारोसे निगलं तप्त अङ्गार ।
 कहै कबीर डाढ़े नहीं ऐसो वस्तु खगार ॥

०

मलयागिरिके वास में वेधो ठाक परास ।
 वेना कबहि न वाधिया युग युग रहते पास ॥
 मलयागिरिके वासमें वृक्ष रहे सब गोय ।
 कहनेको चन्दन भया मलयागिरि नहि होय ॥
 चलते चलते पगु थका नगर रहा नौ कोस ।
 बीच हि मह डेरा परा कहहु कौनको दोस ॥
 चलते चलते पगु थका अन्तर परिगौ सांभ ।
 बहुत रसिक खेला किया विख्या रहि गौ बांभ ॥
 मन बोले कब जाह्ये चित्त कहै कब जाव ।
 हयो मासके हीठते ज्य.दा को सरगाव ॥
 गृहते भयो उदास जब भार खण्ड को जाय ।
 चीरी ताको मारिया चिरई चुनि चुनि खाय ॥
 राम नाम जिन्ह चीन्हिया भीनो पञ्जर तासु ।
 नयनन आवे नौदरी अङ्गन जामै मासु ॥
 जो जन भीजे रामरस मन्त्र होत मनमाह ।
 ज्यो दर्पणकी सुन्दरी गहे न आवे बांह ॥
 जो जन भीजे रामरस विकसित कबहि न सूख ।
 अनुभव भाव दरास तो नरको सूख न दूख ॥
 पारसरूपो जीव है लोहरूप संसार ।
 पारसते पारस भया परसि भया एक सार ॥

प्रेम पाटको चोलना पहिरि कबोरा नासु ।
 पानिप दीन्हे तासु को तन मन बोले सासु ॥
 दर्पणकेरी गुफहमें सो नहिं टैठा धाय ।
 देखि जो प्रतिमा आपना भूकि भूकि मरि आय ॥
 ज्यों दर्पण प्रतिविम्ब देखिये आप दुनह मह सोय ।
 ज्यों या तन्हु व तन्हु से आइ जाइ पुनि दोय ॥
 यौवन शायर बूझते रसिया ललच कराहि ।
 अब कबीर पायं परे पत्नी आवे जाहि ॥
 एक समाने एक सम सकल समाने ताहि ।
 कबिरा सबे समान बूझते तहां दूसरो नाहि ॥

देर रतीनो ताह सब पदहि न चोन्हें कोय ।
 जिन्ह ई शब्द विवेकिया कवचनो है सोय ॥
 सबही ते सांचा भला सन चासे भल होय ।
 सांच विना है सुख नहीं कोटि करे जो कोय ॥
 सांचा भया तो क्या भया जो नहि सांचा जान ।
 सांच होइ सांचहि मिले सांचहि माह समान ॥
 सच्चा सौदा कौजिये अपने दिलमें जान ।
 सांचहि हीरा पाइए भूठहि मूरो हान ॥
 सांच बराबर तप नहीं भूठ बराबर पाप ।
 जाके दिलमें सांच है तहां विराजत आप ॥
 सांचहि शाय न लागहो सांचहि काल न खाय ।
 सांचहि सांचहि जो चले ताको काह नसाय ॥
 जाने सांचा बनिया सांचो हाट लगाव ।
 अन्दर भाङ् देहके बाहर कहा बहाव ॥
 सुकृत वचन माने नहीं आपु न करे विचार ।
 कहहि कबोर पुकारि के सपने गया संसार ॥
 प्राणि जो लागि समुद्रमें जरिगे दानव भारि ।
 पूर्ध पछिम के पण्डिता सुये विचारि विचारि ॥
 प्राणि जो लागि समुद्रमें धावत परगट सोय ।
 सो जानै जो जरि मुवा को जाकी सब होय ॥
 प्राणि जो लागि समुद्र में टटि टूटि खसे भोल ।
 रोवे कबोरा डाफई मोरा हीरा जरै अमोल ॥

साईं लावन हारको जाको लाय पर खार ।
 वलिहारी लावनहारकी छप्पर बचें घर जार ॥
 बुन्द जो परा समुद्र में ताहि जाने सबूखोय ।
 समुद्र समाना बुन्द में बूझे विरला कोय ॥
 अहर लोभो मेरो पिया अफोमची सौ बार ।
 कबोर पलक न ते तजे जामें जौन विचार ॥
 विरह वाण जेहि लागिया औषध लगे न ताहि ।
 सुसुकि सुसुकि मरि मरि जिसे उठे कराहि कराहि ॥
 विरह कियो दिस करि सपच सपच धुवां धुंधंभाव ।
 दूध से तब हो वाचि ही जब सकल लोक जरि आय ॥
 कहत कहहि कर प्रतिदिवस समय जो देखो देरि ।
 गये होत नहीं बाहुरे बहुरि न अइ हो फेरि ॥
 सांचा शब्द कबीरका हृदये देखु विचारि ।
 चित्त देह समझै नहीं मोहि कहत भयल युग चारि ॥
 दबको डाढ़ी लाकरी वो भो करे पुकार ।
 अब तो परेहु लोहार घर डाहै दूजी बार ॥
 जो तू चाहे मूझके छाड़ि देह सब पास ।
 मूझै ऐसो होइ रहु सब कहु तोरे पास ॥
 कोटि तो काटे कोटि गढ़ि कोटिऊ दोन्हों प्राणि ।
 पण्डित पढ़ि गुनि भलि भए सो कत उबरे भाणि ॥
 सावन के रा सेहरा बुन्द परा असमान ।
 सारी दुनी वैष्यव भई गुरु न लागे कान ॥
 दिन बुड़ाउ धूला नहीं रहै अदेशा मोहि ।
 सखिल मेहके धारमें कस नौद परी है तोहि ॥
 बहता बहते ही मिले गहता मिला न कोय ।
 बहि जाने दे ऐसो कहता जो नहि गहता होय ॥
 साखी कहे गहे नहीं चालो चलो न जाय ।
 सखिल मोह नदिया बहे पांव कहां ठहराय ॥
 जहां गहको तहां हो नहो ही नह गहकी नाहि ।
 विना बेध भटकत फिरे देखि शब्दकी छाहि ॥
 जहं बोला तहं अचर आया ।
 जहां अचर तहं मन हि इढ़ाया ॥
 बोल अबोल एक नहि होई ।

जेहूँ इ लया सो विरला होई ॥
 एक एक कै निरवा रतनो बरुषारो जाय ।
 दुइ सुखका बोलना घना तमाचा खाय ॥
 जिन्ह बन्दन देवहु बोलना नेवार ।
 साखी से सङ्ग करु गुरु सुख शब्द विचार ॥
 प्राणो तो जीमे डगा अण अण बोसै कुबोल ।
 मनके घाले भरमत फिरे काल ही देत हिंडोल ॥
 जाके जिवहा वदन नहि हृदया नाहीं सांच ।
 ताके सङ्ग न लागे घाले खटिया मांच ॥
 जो लागि भार शरीरमें तीर रघो है टूटि ।
 चुवक वीनु निकसै नहीं कोटि पाइन गे छूटि ॥
 आगे सीटी साकरो पाछे चखनाचर ।
 परदा तरकी सुन्दरो रहो धकासे दूर ॥
 जे मारग सनकादि गे ब्रह्मा विष्णु मइश ।
 सो मारग अब याकिया मै काहि करौ उपदेश ॥
 संसारो सब अविचारो कोइ विरहो कोइ योग ।
 अबसर मारे जात है ते चेतु-विराने लोग ॥
 संशय सब जग धांधिया संशय धंधे न कोय ।
 संशय धंधे सो जना जा शब्द विवेकी होय ॥
 बोलना है बहु भांतिका नौ मन कहु उ न सूक्त ।
 कहे कबीर पुकारि के ते घटघट वाणी बूक्त ॥
 नकटा का यह राज है नफर कवरते तेक ।
 सार शब्द टकसार कोइ हृदया करे विवेक ॥
 मूल गहे ते काम है ते मति भर्म भुलाय ।
 मन शायर सासुद्र है बही कतहु मति जाय ॥
 भौरा मूले वागमें बहु फूलनकी वास ।
 ऐसे जीव बोलने विधिमें अन्तहु चले निरास ॥
 भौर जाल बगजाल है बहुत विचार अचेत ।
 कहहि कबीर ते बांचि है जाके हृदय विवेक ॥
 तानि चोक टोड़ी भये जड़े मनके साथ ।
 हरि जन हरि जाने विना परे कालके हाथ ॥
 नाना रङ्ग तरङ्ग है मन मकरन्द असूक्त ।
 कहहि कबीर पुकारिके ते अकौम कलासे बूक्त ॥

११

बाजीगरका बांदरा सो जियरा मनके साथ ।
 नामा नाच नचाइ के राखे अपने हाथ ॥
 ई मन चखल ई मन चौर ई मन सुख ठगहार ।
 मन मन करते सुर नर मुनि जहड़े मनके
 लख दुखार ॥
 राम वियोगी विकल तन इन दुखवे मति कोय ।
 छूत हो मरि जाहि गे ताला बेला होय ॥
 काल सरा शरीरमें सब जग पाय सिभारि ।
 विरले जन कोइ बाचि है जो रामहि भजहि विचारि ॥
 काल खण्डा गिर ऊपर तेरे जागु विराने मीत ।
 जाको घर है गरेलमें सो कस सोवे निचात ॥
 कसौ काट काले धुना यल यल धुन खाय ।
 काया मध्ये काल वसत है मोमन कोई पाय ॥
 मनमायाको कोठरो तामें संशयका कोट ।
 विषहर मन्त्र माने नहीं काल सर्पका चोट ॥
 मन शायर मन साल हरि बूड़े बहुत अचेत ।
 कहे कबीर ते बाचि है जाके हृदय माह विवेक ॥
 शायर बुद्धीमान को वाय बिंछ ना चोर ।
 सारी दुनिया जहड़े गये कोइ न लागे ठोर ॥
 मानुष होयके कोइ न सुवा सुवा सौदागर चोर ।
 एका जीव ठोर नहि लागे भया सो हाथी घोर ॥
 मानुष जन्म दुर्लभ हे होहि न बारम्बार ।
 पाका फल ज्यों गिरि परे बहुरि न लागे डार ॥
 मानुष जन्म पाइ नर अकहु अबके घात ।
 जाय परेहु भव चक्रमें सहत घनेरो जात ॥
 मानुष बेचारा क्या करे जाको शून्य शरीर ।
 जो जीव भाकि न जवरे तो कहा पुकारे कबीर ॥
 मानुष बेचारा क्या करे जाके हृदया माही शून्य ।
 सोहा चटक बंठाइ कै फिरि फिरि चासे चून्य ॥
 मानुष बेचारा क्या करे जाके कहे न खुले कपाट ।
 सोनहो चोक बंठाइके फिरि फिरि ऐपन चाट ॥
 मानुष ते बड़ पापिया अगुर हरार न मान ॥

बार बार बगकू कुन्ही गभो परै औधान ॥
 मासुष का गुणै बड़ा मासु न आवे काज ।
 डाकन अभरण होय तो चान बाजनि बाज ॥
 रतन काजर न कह माटीका शृङ्गार ।
 आय कबीरा फिरि गया फोका है संसार ॥
 हंसा मोल बिकानिया कक्षन थार उराय ।
 जो जस मर्म न जानै सो तस काह कराय ॥
 हंसा ते सो वरण वरण का वरणो मैं तोहि ।
 तब करवा लोहे लघु तब सराहो तोहि ॥
 हंसा तुम सबलता हटुकी अपनी चार ।
 रङ्ग विरङ्गे रङ्गिया तुम कौन्हेहु अवर लगवार ॥
 हंसाके घट भीतरै वसै सरोवर ताल ।
 हंस शरीरी ते जानिये वक उधरहिं गी काल ॥
 हंसा सरवर तजि चले देही परिगो सुन ।
 कहहि कबीर पुकारि के तेइ दर तेई धून ॥

१२

काहे हरिणी दूबरी एही हरिअरि ताल ।
 साख अहेरी एक मृग केतिक टारै भाल ॥
 कुल करणीके कारखे हंसा गये बिगोय ।
 तब कवन कुल जोहे जब चारि चरखका होय ॥
 जा सो दिस मिलिया नहीं शब्द न वेधो अङ्ग ।
 कहहि कबीर पुकारि के हंस बकुलका सङ्ग ॥
 तीन लोक भै पौंजरा पाप पुष्प भी जाल ।
 सकल जीव सावज भये एक अहेरी काल ॥
 वेन्हा दीन्हा खेतको वेन्हा खेतहि खाय ।
 तोनि लोक संशय परी मैं काहि कहौं समुभाय ॥
 वसिहारी वहि दूध की जामें निकला जीव ।
 आधो साखि कबीरकी चारि वेदका जीव ॥
 सोभे ज्ञान गवाइया पापि खाया पून ।
 आधा सो आधो कहे तापर मेरा खून ॥
 आधी साखी सिर कटै औ निरुवारी जाय ।
 का पण्डित तेरी पोथिया जीरा दिन मिलि गाय ॥

बांह मरोरि जात है मैं सोवत लिया जगाय ।
 कहहि कबीर पुकारि के येहि पौड़े होहु का जाय ॥

१३

बेरा बांधिन्हि सर्वका भवसागर अतिमाह ।
 छाडी तो बूढ़े नहीं नाहित डासे बाह ॥
 हाथ कटोरा खोवा भरा मग जोहत दिन जाय ।
 कबीर उतरा चित्त ते छाह दियो नहि खाय ॥
 एक कहौ तो एक नहि दुई कहौ तो गारि ।
 हो जैसा का तेसा कहहि कबीर पुकारि ॥
 अमृत केरी मोटरी सिर सो धरी उतारि ।
 जाहि कहौं मैं एक सो कहे मोहि दुइ चारि ॥
 अमृत केरी मोटरी बहु विधि दीन्हा खोरि ।
 आयु सरोखे जो मिले ताहि पियावो घोरि ॥
 चारि चोर चोरो चले पगपनी उतारि ।
 चारो दर दून्ही हरो पण्डित कहहु विचारि ॥
 जाके सुनिवर तप करहि वेद थके गुण गाय ।
 सोइ देउ पिया पनो काई नहि पतिपाय ॥
 एक ते अमृत अमृत एक ते होइ हाय ।
 परिचय भया एक ते तब अनेकहि माह समाय ॥
 एक शब्द गुरुदेवका तामें अमृत विचार ।
 थाके सुनिवर ज्ञानी वेद न पावे पार ॥
 चोगोड़ाके देखते व्याधा भागा जाय ।
 एक अचभो हो देखा मरा काल का खाय ॥
 रावरके पिछवारे गावे चारो सेन ।
 जीव परा बहु लूटिमें ना कहु लेन न देन ॥
 विषके बिरवे घर कियो रहा सर्प लपटाय ।
 ताते जियरहि डर भया जागत रैन विहाय ॥
 जो घर है सांपका तेहि घर साधु न होइ ।
 विमुख सकल समपदा विषहर सागा सोइ ॥
 सुषुची भरिके बोये उपजु पखेरी पात ।
 डेरा परा कालका सांभ सकारे जात ॥
 मन भरि की बोये सुषुची सुषुची भरि नहि होय ।
 कहा इमार माना नहो अमृत चला बिगोय ॥

चापा लजिके हरि भजे मखसिख तजे विकार ।
 सब जीवन ते दुर रहे साधु मता है सार ॥
 मायाकी भक्त जग जरे कनक कामिनी लागि ।
 कह कबोर केस बाधि हो धुवां लपेटी लागि ॥
 पचापची कारखे सकको जगत भुलान ।
 निरपची होइ हरि भजे सोई सन्त सुजान ॥
 बड़े मये बड़ आपने रोम रोम हहार ।
 सत्गुरुके परिचय विना चारो वरख चमार ॥
 माया जग सापिन भई बिखिलेइ बइठी चाखि ।
 सब जग फन्दे फन्दियां चले कबोरु काखि ॥
 साप बिछीका मन्त्र है मङ्गुरो भारा जाय ।
 बिकट नारि पाले परे काटि करेजा खाय ॥
 बोखर वेरो एक हे व्याह करे मति कोय ।
 बाधि ही मरि जाहुगे सुखि कहति होय ॥
 मन माया दोष एक हे माया मनहि समाय ।
 तीनि लोक रंगय परे मँ केहि कहो विलगाय ॥
 मन मायाकी चोटमें मारा सकल जहान ।
 छर नर मुनि सब ही खसे उबरे सन्त सुजान ॥
 फटो कानकी कामिनी मोतीको पतिप्राय ।
 सुभकि सुभकि लोइ पिसे काटि कलेजा खाय ॥
 अति तिरिया किरपा करे देन कहै कहु और ।
 मूल पात्र आगे धरे यही नरकका ठौर ॥
 पीपर एक महारङ्ग भान ।
 ताकर मर्म कोइ नहि जान ॥
 डार नवाय कोइ नहि खाय ।
 असम अछत वह पिपरे जाय ॥
 साइसे भौ चोरवा चोरहुसे भौ असूभ ।
 तब जानहुगे जीयरा जब तुमइ परेगी बूभ ॥
 ताकी पूरी क्या परे गुरु न लिखाई पाट ।
 ताको बेड़ा बूढ़ि है फिरि फिरि अवघट घाट ॥
 चारि मास घन बरिसता अति अपूर्व जलनीर ।
 पहिरे जब तन बखतरौ सुभे न एको तीर ॥
 मुकको भेको जीव डर काया छीजनिहार ।

कुमति कमारई जी वसे लागि लुपाकी सार ॥
 तामसके हैं तीनि गुच भ्रमर लेहिं तहं वास ।
 एक डार तीनी फले भांटा खख कपास ॥
 लोगन केरो अथइया मति कोइ बैठे जाय ।
 एक खेत में चरत है बाघ गदहरा गाय ॥
 मन गयन्द माने नहीं चला सुरतिके साथ ।
 महाउत बेचारा क्या करे जो अहुश नहीं हाथ ॥
 मन मसनद गई अरइने मनसा भई सचान ।
 मन्मयन्त्र माने नहीं उड़ि उड़ि लागी खान ॥
 ई माया है चूहड़ी जो चुहड़ाकी जोय ।
 बाप पूत अरुभावतौ सङ्ग न कहुके होय ॥
 कनक कामिनी देखि कै तू मति भुलहु सुरङ्ग ।
 मिलन कुटन दोख लगे ष्यों केचुली भुजङ्ग ॥
 मायाके हैं वश परे ब्रह्मा विष्णु मङ्गेश ।
 नारद सारद सनक सनन्दन गौरी अवर गणेश ॥
 तन संशय विनसो नहीं काल अहेरो मोतु ।
 एकहि उह वसेरवा कुशल पुहुहु का मोतु ॥
 साहु चोर चौनें नहीं अन्धा मतिका होन ।
 पारख विना विनास हे करि विचार हो भोन ॥
 साहु भरोसे चोरके चोर साहु है केइ ।
 जो लागि चोर बंधे नहीं तो लगि वसु न देइ ॥
 साइ साज बतावई चोर बुसुबजा देइ ।
 वसु बचावै आपना चोर कहति लेइ ॥
 मूरख से का का करे अठसे काइ वसाइ ।
 पाहन भार फुटे नहीं सोखा तीर नसाइ ॥
 गुरु सैकलि गढ़ करिल मन हाथ सुसुकुमा देइ ।
 अम्ह साख्खना छोलिके चित दर्पण करि लेइ ॥
 मूरखके समुभावते ज्ञान गांठिका जाय ।
 कोइला होइ न अजरो केतको सावन लाय ॥
 मूरख मूढ़ कमान खसि खपा तोर खरभाहि ।
 वाषनिहारा क्या करे जो वाष न लागे ताहि ॥
 सीसे गामी गुमजको नौच ररे इहराय ।
 ऐसा हृदया मूर्खका अम्ह नहीं ठहराय ॥

सुगना सेमर सेहया दुइ डेठोको चास ।
 डेठो काटि चनाकदा सुगना चला निरास ॥
 सुगना सेमर बेखिले तेरो वनो विगुरची पांखि ।
 ऐसा सेमर सेहये जाके हृदया माहीं भांखि ॥
 चको चलते हो देखा मेरे नयनन्ह धारि रोय ।
 दुइ पट्टनके बीचमें सालिम गया न कोय ॥
 लोग भरोसे कोनके बरठि रहा भरगाय ।
 जियरहि ऐसे यम लुटे भेड़ा लुटे कसाय ॥
 जानि वृष्णि जड़ होइ रह बल तजि निर्वल होय ।
 कह कबीर तेहि सन्तका पला न पकरे कोय ॥
 हीरा सोइ सराहिए जो सहे चनकी चोट ।
 कुचट कुरङ्गी मानवा परिछत निकला खोट ॥
 हाइ जरे जस साकरो केय जरे जस चास ।
 कबिरा जरे राम रस कोठी जरे कपास ॥
 पावन्ह पुहुमी नापते दरिया करते फाल ।
 हाय न परवत ताखते तेहि धरि खायो काल ॥
 पूर्व उगे पश्चिम वसे भखै पवनका मूल ।
 ताइ राहु गरासतो मानुष काहे भूल ॥
 सन कागज छूवो नहीं कलम धरो नहि हात ।
 चारि युगका महातम कबीर सुखहि जनावे बात ॥
 अपने अपने पीरको सबहि न लौन्को मानि ।
 हरिकी बात दुरन्त है परो न काइ जानि ॥
 अपरकी दाई गई हृदयको गई हेराइ ।
 जाके चार लोचन गये तासो काहा वसाइ ॥
 उपरेकी दोज गई हृदयको फूटि भांखि ।
 कबीर बेचारा क्या करे जीवहि माहीं भांखि ॥
 मैं रोवो एहि जगत्को मो को रोवे न कोय ।
 मो को रोवे सो जना जो शब्द बिबेकी होय ॥
 साहेब साहेब सब कहै मोहि भंदेशा पीर ।
 साहेब से परिचय नहीं बैठहुगे केहि ठौर ॥
 गुह पूरा शिष्य सूरु बागु मरोरि न पैठि ।
 साहेब से परिचय कह तव एक दुलैचा बैठि ॥
 केतिक दिन एइ गये चनकचेकी मेह ।

बोए असर अपजे नहि जल वरिसे मेह ॥
 हरि हीरा जन जोइरो सवन पसारो हाट ।
 जब जन आयो पारखी तव हीरो देखो साट ॥
 हीरा तहां न खोलिए जहां कपटकी धाट ।
 बांधहु चुपको मोटरो लागहु अपने वाट ॥
 हीराकी बोरिया नहीं चन्दनकी नहि पाति ।
 सिधों का लेहड़ा नहीं साधु न चले जमाति ॥
 नो मन क्रुध बटोरि के टपके किया विनाश ।
 क्रुध फाटि कांजी भया भया जीवका नास ॥
 जिव विनु जिव जीवै नहो जीवका जीव अहार ।
 जीव दया के पालइ पण्डित करो विचार ॥
 हो तो सब होकी कहो मेरो कहै न कोय ।
 मेरो तो सोई कहै जो सुभई ऐसा होय ॥
 हो तो सबहोकी कहो मांको कोइ न जान ।
 तब भी अच्छा अब भी अच्छा युग युग होउ न पान ॥
 मे चितवो तेरे चित्तके तै चितवै कहु पीर ।
 जानत है तेहि चित्त को एक चित्त दुइ ठौर ॥
 जस दिख मेरा तुझे पर तस तेरा दिख होय ।
 कखा लोहा ताय के सन्धि ना सखै कोय ॥
 परगट कही तो मारिया परदे सखै न कोय ।
 सजना छपा पुभालतर को कहि वेरो होय ॥
 कलि छोटा जग भांधरा शब्द न माने कोय ।
 जाहि कहीं मैं आपनो सो उठि वेरो होय ॥
 कहहि कबीर हमार मन बहुत यत्न समुभाय ।
 बांड़ी पूंछि उठायके चलो बेन्ह को जाय ॥
 देश विदेशो हों फिरो मन हो भरा सुवाल ।
 जाके टूठत हों फिरो ताके परा दुवाल ॥
 देश देश हम वागिया गांव गांव को खोर ।
 एक जिधरा ना मिला देखा फटकि पखोर ॥
 राइ बेचारी क्या करे पन्थि न चले संभारि ।
 अपने मारग छोड़ि के चलो उजारि उजारि ॥
 समुझेकी मति एक है जिन देखा सब ठौर ।
 कहै कबीर ई बोचका बल कहि पीर का पीर ॥

बोल हमारी पुरुषको हमहि लखे नहि कोय ।
 हमहि लखे कोई जना धूर पुरुषिया होय ॥
 जाके चलते खुद परा धरती होय बेहाल ।
 सो सावती धामे परा पण्डित करहु विचार ॥
 मूया है मरि जाहुगे बिनु सर थोथे भास ।
 परेहु काहां रे वृक्षतर फालु मरहु के कास ॥
 सबको उत्तपति धरति है सब जोवनह प्रतिपास ।
 तिल तिल होती गारुई रहो ठिकाके भास ॥
 सब ही से लज्जता भलो लज्जता से सब होय ।
 जस दुतियाके चन्द्रमा गिर नावे सब कोय ॥
 तो लागि तारा जगमगे जो लागि उदय न सूर ।
 तो लागि जीवहु काम बसि जब लागि ज्ञान न पूर ॥
 जहिया कृतम न होत है धरती होत न नौर ।
 उत्तपति प्रसय न होत है तबको कही कबीर ॥
 नाम न जाने गांवका भूला मारग जाय ।
 कासि गड़े ना काठ अगु मनही कस न खोराय ॥
 तीनि लोक चोरो भई सरवस सबका खीन ।
 विना मुष्का चोरवा परा न काहुहि चीन ॥
 सङ्गति से सुख अपजे सङ्गति से दुख होय ।
 कह कबीर तहं आइए अपनी सङ्गति सोय ॥
 जैसो लागी पेड़को तैसो निवहै बोरि ।
 कउड़ो कउड़ि बटोरिके लुटे न लख करोरि ॥
 फालु कासि दिनके लिये अस्त्रि नहीं शरीर ।
 केतिक दिन नर राखि हो काचे वासन नौर ॥
 पलमें परलय बीति है लोगन्ह लागु तमारि ।
 आगिल सोच नेवारइ करि पाखिलो गोहारि ॥
 बन्धा को बन्धा मिले छूटे कवन उपाय ।
 कह सेवा निरबन्धको पलमें लेत छोड़ाय ॥
 बहु बन्धनसे बांधिया एक बेचारा जाव ।
 कौ छूटे बस आपने या कि छोड़ावहि पौव ॥
 जिव जिन मारहु बापुरा सबका एक प्राण ।
 तीरथ गए न बाधि हो कोटि हिरा दे दान ॥
 जिव जनि मारहु बापुरा सब घट एक प्राण ।

इत्या कबहु न छूटि है कोटिह सुनो पुराण ॥
 तीरथ गये थे तीन जन चित चञ्चल मन चोर ।
 एकौ पाप कटा नहीं लादे उनरस चोर ॥
 तोर्य भई विष बैलरी रह्यो युगहु युग छाया ।
 कबिर निमूल निकंदिया कवन हलाहल छाया ॥
 ए गुणवन्ती बैलरी तव गुण वरनि न जाय ।
 जहं काटे तहं हरिधरी सींचते कुन्डिलाय ॥
 प्रागे प्रागे दी बरे पीछे हरिधरि होय ।
 बलिहारी वहि वृक्षकी जर काटे फल चोय ॥
 बली कुटम्बी निहफलो फुलवा कुनुध वसाय ।
 बोर विनष्टी तोमरो सरो पात करुभाय ॥
 परदे पानो डाढ़िया सन्तो करो विचार ।
 शरमा शरमी पचि मुवा काल घसेटे छार ॥
 अस्ति कही तो कोई न पताजे विना अस्तिका सेवा ।
 कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो हीरे हीरा बेधा ॥

१०

काजर केरो कोठरी बूड़त ई संसार ।
 बलिहारी वहि पुरुषको पण्डि के निकरनिहार ॥
 काजर केरी कोठरी काजर होको कोट ।
 कारी तो दुनया भई रह्यो वोटको वोट ॥
 काजर केरो बोवरी पानो केरा गङ्ग ।
 कह कबीर केस बाधि हो पांच कुरह्यो सङ्ग ॥
 अर्ध खर्व से द्रव्य है उदय अस्त से राज ।
 भक्ति महातम ना तुले ई सब कवने काज ॥
 मत्स्य विसाने सब गए धोमरके दरवार ।
 अखियां रतनारी तेरो ते कस पहिरो जार ॥
 पानी भीतर घर किया सेवा किया पतास ।
 पासा परा करीमका ल्यो में पहिरो जाल ॥
 मत्स्य भये ना बाधि हो धीमर तेरो काल ।
 जेहि जेहि डाबर तर तुम फिरो तेहि तेहि डारो जाल ॥
 विनु रसरी गर जग बंधा ताकर बन्ध अलख ।
 दीनों दर्पण हाथ में चञ्ज विना क्या देख ॥
 समुभाए समुझे नहीं पर हब हाथ बिकाय ।

मैं खींचत हों आप को वह चलि यमपुर जाय ॥
 साच कहे ते मारिया भूठहि करे पियार ।
 हम सिर धारे टेकुरी सींचे अवरकि पार ॥
 सज्जन ती दुर्जन भया सुनि काङ्गकी बोल ।
 कासा तांवा हो रहा होत हिरा की मोल ॥
 खोहा केरी नावरी पाइन केरा भार ।
 सिर पर विषकी मोटरी उतरा चाहे पार ॥
 कृष्ण समीपे पाखवा गले हैवारे जाय ।
 बोहेको धारस मिले काहे काई साय ॥
 गयनन आगे मन वसे पलक पलक कर दोर ।
 तीनि लोक मन रूप है मन पूजा सब ठोर ॥
 मन सारधि है आपु रस विषम लहरि फहराय ।
 मनहि चलाए तन चले ताते सरवस जाय ॥
 मनके धारि परहु अनि छाड़ि देहु बुधिवानि ।
 बहुत परोसिया बुड़ि सुए हम अपने दिल जानि ॥
 बेसी गति संसार को ज्यों गाड़र को ठात ।
 एक परा जेहि गाड़ में सभे गाड़ में जात ॥
 मारग तो अति कठिन है तहं मति कोई जाय ।
 बए तहां नहि बाहुरे कुशल कहे को जाय ॥
 केरा तब हि न चेपिया जब ठिग लागी वेर ।
 आवके चेपे क्या हुवा काटन्ह खीन्हा वेरि ॥
 मारी मरे कुसङ्गके केरा साथ बयेर ।
 बेहलै बेचौर इ विधिने सङ्ग निवेर ॥
 सङ्गति कीजे साधुकी हरहि अवरको व्याधि ।
 बोली सङ्गति नौचकी आठो पहर उपाधि ॥
 वसु अगत खोजत अगत क्यों करि आवे हाथ ।
 जानी सोई सराहिए पारख राखे साथ ॥
 इः दर्शन मह एक बेचारा तासु नाम वनवारी ।
 कहहि कबीर इ खसक सयागे तामें हमहि बनवारी ॥
 सिखे सुने विचरे नहीं अग जानिका दोहा ।
 कह कबीर पारस परसे विन पाइन पौतर लोहा ॥
 १५
 जाके सत्गुरु ना मिले व्याकुल दग्ग दिग्गि धाव ।

आंखि न सूके बारघर जारे पूर बताव ॥
 प्रथमहि एक जोही किया भया सो बारह बाग ।
 कसतक सबटिन टिका यो तर भया निदान ॥
 जीवनि मरनि न जाने अन्ध भया सब जाय ।
 वादी हारे धावन पाये जन्म जन्म पछताय ॥
 भक्ति बिगारि कबीर इन्ह कंकर पत्थर धोय ।
 इदयामें विष राखिके अंचत हारेनि खोय ॥
 ज्ञान रत्नकी कोठरी चुम्बक दीन्हे ताल ।
 पारख आगे खोलिए कुक्की वचन रसाल ॥
 सर्ग पातासके बीचमें हो तुमरी आवधि ।
 बटु दर्शन मह संशय परी लख चोरासी सिधि ॥
 दुर्मति को तू दूरि कर अच्छा जन्म बनाव ।
 काक गमन बुधि दूरि करि हंस गमन चलि आव ॥
 हारे तेरा रामजी मिलो कबीरा मोहि ।
 ते तो सबन मह मिलि रहा मैं न मिखावों तोहि ॥
 जे ते पावन वनखति भो मङ्गाका रेनु ।
 पण्डित बेचारा क्या करे कबीर कहा सुख वेनु ॥
 हो विसगाए ओरके बिमरो नहि कहु तोर ।
 आव क्या करो जहां देखो तहां प्राच मोर ॥
 भ्रम मच्छा तिहु लोक में भ्रम मच्छा सब ठाव ।
 कहहि कबीर पुकारि के तुम वसे भ्रमके गांव ॥
 रत्न अढ़ायन्हि रेतमें कहरु सुनि सुनि खाय ।
 कहहि कबीर पुकारिके अन्त चला पछताय ॥
 हम जाना कुल हंस हो ताते कीजा सङ्ग ।
 जो जगते बग बावरा कुवन न देते अङ्ग ॥
 सत्गुरु वचन सुनहु हो सन्तो मति लेहो सिरभार ।
 हों हुजूर ठाढ़े कहत बहुत संभार संभार ॥
 १६

सिंह अकेला वन रमि पल पल करता दोर ।
 जैसा वन हे आपना तेसा वन हे ओर ॥
 विरह भुजङ्गम तन वसे मन्त्र न माने कोय ।
 राम वियोगी ना जिये जिये तो बोरा होय ॥
 विरह भुजङ्गम पेठिके करे करेजे आव ।

साधु अङ्ग न मोरही ज्यों भावे त्यों खाव ॥
 कर बन्दगी विवेकको भेष धरे सब कोय ।
 वह जाने दे बन्दगी शब्द विवेक न होय ॥
 एक वाण हैगा मेरा मनका वाण छतोस ।
 एक वाण मेरा लगे सबे वाण हो फीस ॥
 जो मीला सो गुरु मिला शिष्य मिला नहि कोय ।
 घट लख छनवे सहस में एक जीव पर होय ॥
 पैठा हे सबके घट भीतर बैठा हैगा सचेत ।
 जब जैसी गति चाहिये तब तैसी मति देत ॥
 जासो गोइ भीतर रहे सोइ जाने सब बात ।
 जानत ही अवगुण करे तो काहे कुग्रहात ॥
 वाणीते पहिचानिए घोर साङ्गुकी घाट ।
 अन्तर्गतकी करणि जो निकरे मुँहके बाट ॥
 बूझे तो रीझे सदा समुझे तो हो सार ।
 देखु तमाशा ताहि को जो बन्धन ते पार ॥
 अपनी कह मेरो सुनि सुनि मिलि एकहि होय ।
 मेरे देखत जग गया ऐसा मिला न कोय ॥
 जा वन सिंघ न सखरे पर्ची नहि उड़ि जाय ।
 सो वन कबिरा छण्डिया शून्य समाधि लगाय ॥
 जो खोजत कल्पे विता घटही में सो मूल ।
 बाढ़े गर्ह गुमानको ताते परि गइ भूल ॥
 जाके खोजन जाइए सो तो हाल हजर ।
 तालिब को है नोयरे बेतालिब के दूर ॥
 एक बातकी बात है कोई कहै बनाय ।
 भारी परदा बीचका ताते लखी न जाय ॥
 मुखसे मीठी जो कहै हृदये है मति आन ।
 कह कबीर तिन लोग सी तैसेह राम सयान ॥
 जी लागि तोला तीलसी ती लागि बुधि व्यवहार ।
 तोला फूटा धन गया कोइ न टोटे भार ॥
 विरहिन साजां पारती दर्शन दीजे राम ।
 मूयें दर्शन देखुगे आवैं कवने काम ॥
 अहिर हुते जब सब हुते जिह्वा दांतकी ठोर ।
 सुनि परी विललात है वृन्दावनकी खोर ॥

बाजन दे बाजन्दरो कलि कुकुरी मति छेम ।
 तुम्है विरानी क्या परे ते आपनी निवेर ॥
 मर जीवा अमृत पिवा का धसि मरसि पताल ।
 गुरुकी सेवा साधुको सङ्गति को एहि हाल ॥
 देखहु जिवके टाढ़से धसि जरि पढठ पताल ।
 जीव अटक माने नहीं गह्वरे निकरा लाल ॥
 एक साध सब साधिये सब साधे एक जाय ।
 छलटो सीधे मूल को फूले फले अघाय ॥
 यन्त्र बजावत होय ना टूटि पड़ा सब तार ।
 यन्त्र विचारा क्या करे गया बजावनहार ॥
 ओरन्हेके समुभाव को जिह्वा परिगो रेत ।
 राशि विरानो राखते खायो घरको खेत ॥
 अण मनुया खिल खिल हंसे अण मनुया उठ रोय ।
 अण मनुया परि जर मरे अणइ चला विगोय ॥
 बोला एक अमोल है जो कोइ बोले जान ।
 हृदय तराजू तोलि के तस मुख बाहर आन ॥
 कर्क करेजे गड़ि रहा वचन वृत्तके फांस ।
 निकलाए निकले नहाँ रहा सो काह गांस ॥
 गुरु माथे पर राखिए चलिऐ अज्ञा माहि ।
 कह कबीर तेहि सन्तके तीन लोक छर नाहि ॥
 गुरु माथे से उत्तरा शब्द बेसुखा होय ।
 ताके काल घसोटि है राखि सके ना कोय ॥
 विनु देखे वहि देशको बात कहे सो कूर ।
 आपुहि खारी खात है बेचत फिरि कपूर ॥
 वलिहारी वहि चित्तकी परचित पररखनहार ।
 साईं दीन्हैं खाड़कौ खारी बोल गंवार ॥
 सोना सज्जन साधु जन टूट जुटहि सौ बार ।
 दुर्जन सभा कोहार की एकहि धका दरार ॥
 घाट भुलाना बाट विनु भेष भुलानो कानि ।
 जाकी माड़ी जगत्में सो न परा पहिचानि ॥
 मरते मरते जग सुवा मरण न जाने कोय ।
 ऐसा हो कर नहिं सुवा बहुरि मरण नहिं होय ॥
 मरते मरते जग सुवा मरण न कियो विचार ।

एक सयानो आपनो परवश सुवा संसार ॥
 माया तजके क्या भया जो मन तजो न जाय ।
 जो मन मुनिवर हैं उड़े सो मन सब ही खाय ॥
 कितन मनावो पाव परि कितन मनावो रोय ।
 हिंदुवा देवता पूजता तुरुक न काङ्ग होय ॥
 दादा भाई बाप के लेखो चरणह होइ हो बन्दा ।
 एहि पुरिया जो मोहि चीन्हें सो जन सदा अनन्दा ॥
 धोखे धोखे बीतिया जम्भो गये सिराय ।
 स्थिति अगनो पकरो नहीं दुःख कहां प समाय ॥
 जाके भरि घर आबरो कूप दुभारे आय ।
 जो कोइ निकलो चाहई परे कूपमह जाय ॥
 हण्डी मासु न मेल ही कोटि कल्प का हीर ।
 जीहि मारग नग मिलत है कैसे तजे कबीर ॥
 यह ही राजनि जानइ जो लादत वनिजार ।
 ई हीरा है मुक्तिका खोये जात गंवार ॥
 करना होइ सो करि न ले अंबरा पहुंचो आय ।
 भागी लागी हारते तब कहु काटि न जाय ॥
 बोई तो बोई सही तै क्या भया अयान ।
 वै निगुंण गुणवन्त तू दोऊ एकै शान ॥
 शब्द संभारे बोलिए शब्दके हाथ न पांव ।
 एक शब्द कर शोषधो एक शब्द कर घाव ॥
 जैसे कथन तैसा करण जस चुम्बक तस ज्ञान ।
 कह कबीर चुम्बक विना क्या जोतै मैदान ॥

१०

सब वासो इक देशका वन चक्र लागो आय ।
 देखि शरतकी चांदनी परे भुलाय भुलाय ॥
 भाल चाहइ तो चेतइ आय लगे है नाव ।
 बार बार पछताहुगे बहुरि न एसो दाव ॥
 अत्र विकुरे कहं जाहुगे कहं रोपहुगे पांव ।
 शिर दे सन्मुख लड़ि मरहु अब जनि परहु कुदांव ॥
 गुरु मूरति गति चन्द्रमा सेवक नयन चकोर ।
 पलक पलक निरखत रहे गुर मूरतिकी वोर ॥
 गुरु समाने शिष्यमें निज कर लागे नेह ।

विलगाये विलगे नहीं एक प्राण दुर देह ॥
 गुरु गुरुमें भेद है गुरु गुरुमें भाव ।
 सो गुरु हरदम बन्दिए शब्द बतावहि दाव ॥
 सात पांच गुरु करि हो लोइ ।
 शब्द बतावे गुरु है सोइ ॥
 हरि विकुरे गुरु शरण है गुरु विकुरे नहि ठोर ।
 रे अपराधी मानवा गुरुसे कहो न भोर ॥
 गुरु कुम्हार शिष कुम्भसे गढ़ि गढ़ि काटहि खोट ।
 भीतर रक्षा प्रेम सो बाहर बाहर चोट ॥
 गुणका गोफा हों किया सादिक मिला न कोय ।
 योगी जङ्गम बहि सुवा भाव भक्ति नहिं होय ॥
 गुरु तो ऐसा चाहिए शिषसे कहु न लीइ ।
 शिष तो ऐसा चाहिए गुरुको सर्वस देइ ॥
 जाके दिलमें कपट नहि कपट न लागे ताहि ।
 जाके दिलमें कपट है कपटे कपटे खाहि ॥
 साहब तो है सबहि का साहब का कोइ एक ।
 लाखन मध का देखिये कोटिन मध्ये देक ॥
 पूरा साहब देखिए पूरा होवे आय ।
 पूराको पूरा मिलै पूरा परहि लखाय ॥
 पूरा साहब सेइये सर्वस पूरा होय ।
 वरुसे प्रीति लगाय कै मूरहु आवै खोय ॥
 अमा शील जब उपजे अलख दृष्टि तब होय ।
 विना शील पहुंचे नहीं कोटि करै जी कोय ॥
 शीलरत्न सबसे बड़ा सब रत्नको खानि ।
 तीन लोककी सम्पदा वसे शीलमह आनि ॥
 गोधन अनधन गोपधन सबे रत्न धन खान ।
 जब आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान ॥
 जहां पाप तहां आपदा जहां सोग तहं पाप ।
 जहां दया तहं दीनता जहां अमा तहं आप ॥
 जहं अथाह तहं थाह न पावे ।
 जहां थाह तहं खिर न रहावे ॥
 इहइ अथाह थाह सबहि नमें दरिया लहरि समानौ ।
 धीमर जाल नाह कह करि है मोन रहा होइ पानौ ॥

साखी बल दर ठहि परी बेबन चर युग चार ।
कबिरा रस नहि होत है करि न सकै निरवार ॥
सुख देना दुख भेटना दूरि करण सब बाध ।
कह कबीर हम कब मिले प्रेमसनेहो साध ॥

१८

सुखदायी सबमें रमै दुःख ना काहुहि देह ।
अपने मतमें दृढ़ रहै साधु लक्षण तेह ॥
सन्त न छोड़हि सन्तई कोटिक मिलहि असन्त ।
चन्दन सर्प लपेटिया श्रोतलता न तजन्त ॥
आजाके घर अजर है बेटाके शिर भार ।
तीन लोक नाती ठगो पण्डित करहु विचार ॥
साधु जगमें दुलभ है और मिले बहु भेख ।
गौर खीरते जानिए वकला हंस परेख ॥
साधु ती सब हौ भले अपनी अपनो ठौर ।
शब्द विवेकी पारखी ते माथिके मौर ॥
मन रङ्गी बड़ रङ्गिया रंगता रङ्ग कुरङ्ग ।
कह कबीर तब बाचि हौ बसहु शब्दके सङ्ग ॥

१९

मन तो अंमर होत है मारे नाहि मराय ।
ज्ञान रत्न कह शिला तब घसत घसत घसि जाय ॥
मन सब पर असवार है पैड़े करै अनेक ।
जो मन पर असवार है सो कोइ विरला एक ॥
मन पक्षी होइ उड़ि चले भर्मंत फिरै अकास ।
वैकुण्ठो खाली परा साहब सेवक पास ॥
ई मन तो श्रोतल भया उपजा ब्रह्मज्ञान ।
जेहि भ्रम सुन्दर जग जरै सो अत्र उदक समान ॥
गोरी चढ़ी पहार पर रचिरचि करै सिंगार ।
पिय सुख बात न ऊचरे सभे सिंगार असार ॥
गोरी सब गुन आगरी कानन भल्लके वीर ।
कांटा लागे मैन का साले सकल शरीर ॥
लख अहरी एक नृग बड़ डग पत्नी एक ।
अकसर बपुरा का करै दुर्जन वसे अनेक ॥
सङ्ग दोष लागि नहीं ज्ञान रत्नके माथ ।

बाक्रीगरकी छोकरा खेले सर्पके साथ ॥
बसा बसा या ऊजरा अवर वसाता गाव ।
नहीं बसा नहि ऊजरा भया वसेका नाव ॥
याचत तू है साथ हमारा ।
नाहीं बूझे बूझनहारा ॥
वाही में जो रहै रहावे ।
कह कबीर सो बहुरि न आवे ॥

२०

पछा पछीमें जग पचा ते नर मतिक्का होन ।
ज्ञान पक्ष निर्पक्ष है सब पक्षनते भौन ॥
माया जाते मन धरा मन घर भया पतङ्ग ।
आपा खोया तुभ मिला तुभ मिल तेरो रङ्ग ॥
जबहि छरीला तन मलो तब नहि व्यापा पौर ।
जानि जौहरी पगु दियो तब फाटो नग हौर ॥
सदा सर्वदा सोवता चारि अवस्था माहि ।
सत्गुरु अज्ञान अज्ञिया लोचन ठपि ठपि जाहि ॥

वसन्त—धमार

नहीं छाड़ों बाबा राम नाम ।
मेरे और पढ़न से कोन काम ॥
प्रज्ञाद पठाए पढ़न शाल ।
जाके सङ्ग सखा लिए बहुत बाल ॥
अहो कहा रे पढ़ावे पाखे आलजाल ।
मेरो पाटोमें लिख दे श्रीगोपाल ॥
पाखेने मुरके कहो जाय ।
प्रज्ञाद बुलायो वेग आय ॥
राम नामकी छाड़ बान ।
तोही अब ही छुड़ावों मेरो कछो मान ॥
कहा डरावे मोहि बार बार ।
जिन जल खल गिरिको कियो प्रहार ॥
मार डार भावे देह डार ।
राजा रामजी छाड़ों तो मेरे गुरुके गार ॥
राजा खङ्ग काढ़ कोप्यो रिसाय ।
तेरो राखन हारो मोहि बताय ॥

सुख फारि प्रगटे सुरारि ।
 छिरनाकुश मारो नख विदारि ॥
 पादि पुरुष देवादिदेव ।
 जिन भक्त हेतु धारो नृसिंह भेव ॥
 कहे कबीर कोउ लहे न पार ।
 प्रह्लाद उबारो अनैक बार ॥

चरी—तिताला

बढ़ैया मोरा मीत पाय ।
 चरखा दे ही बनाय ॥
 बाबा रे मोरा ब्याह कराय दे सुन्दर वर खोज लाव ।
 ज्यो खोजे ते वर नहीं मिले रे हमरा तुमरा न्याव ॥
 खास मेरे ससुरार मरे रे ब्याहा खसम मर जाय ।
 एक बढ़ैया ना मरे रे जिन चरखा दए हे बनाय ॥
 पानी से पैदा किए रे नगर बसायो गाव ।
 एक अचरज हम देखा साधो बिटिया बाप लजाव ॥
 दास कबीर यह चरखा देखा चरखा लखा न जाय ।
 जो यह चरखा लखि परे रे आवागमन नशाय ॥

ईमन-भंकोटी—तिताला

भक्त राम राम राम ।
 चरखा चलेगा सुदाम ॥
 मैं घर पाई पोनी साई अन्तर बात विचारो ।
 चरखा लेके चौकमें बैठो कातत हरिकी प्यारो ॥
 भाव भक्ति कर पुनी मरोरत सुचीकने रन
 पीषन हारो ।
 ज्ञान धान वाके मस कर राखा विरह ताते
 भक्तकारो ॥
 मन कर टिकी बात न करता चमरख ऐसी युक्ति लगारि ।
 उस चरखेमें पांच पांचुरी भ्रमर माल लिपटारि ॥
 उंची सीरी लाल अटारी ता बिच बैठो कातनहारो ।
 सदगुणने मोहे कुन्नी दीनी खुल गई ज्ञान किवारो ॥
 ग्राह कबीरका चरखा चासे पाठ पहर एक तारो ।
 निराकार धनि सूत कातत हे लाग रहा धुनकारो ॥

भंकोटी—पल्तो

गुंमि दुरी से जो जसता अग्रक पांखों से जारो है ।

सजन सकारि जायंगे नयन मरेंगे रोय ।
 विधिना ऐसी रैन कर भोर कभू नहि होय ॥
 कहां सों सोयें ए प्यारो सुबह बखसत हमारी है ॥
 साजन तुम मत जानियो तुम विकुरि भोहि चंन ।
 डादौ पवनकी लाकड़ी सुलगत है दिन रैन ॥
 तपे गुम सें जिगर तो जल चुका अब तन की बारी है ।
 एक तो नयना मद भरे दूजे अचन सार ।
 ए बीरी कोइ देत हे मतवारे इधियार ॥
 निगाहे यार जादू है या बूंदीकी कटारो है ॥
 अरे पपोहा बाबरे आधो रात न कूक ।
 हीले हीले सुलगती तैं क्यों दीनी फूक ॥
 अरे ज़ालिम तेरी आवाजने आफत गुज़ारो है ।
 जा वेदा घर आपने तू क्या जाने सार ।
 आशक किन चङ्गे किए विन देखे दीदार ॥
 मेरे इस दर्दकी दारुसे अफ़सातूं भी पारो है ॥
 कागा आंख निकास हूं पिया पास से जाय ।
 पहले दर्श देखायके पाछे लीजी खाय ॥
 जमाले यारसे कब आशकी को आंख प्यारो है ।
 देख सुख पिप्पार भयो रक्त रहो नहि मास ।
 बाला जियरा रह गयो याकी कब लग आस ॥
 अजल ला रो खबर जलदेसे हम पर मीत भारो है ॥
 हम तो योगी प्रेमके प्रेम हमारो वेश ।
 अङ्ग विभूति लगायके फिरते देश विदेश ॥
 न था मालूम किस्मत में हमारे खाकसारो है ।
 साजन बे दिन कौन थे जो सुख लाए प्रीति ।
 अब दुख दे ग्यार भए कौन ग्रामकी रीति ॥
 अरे बीरे सुरव्यत कुछ करो पर किरदगारो है ॥
 मार दुरी मर जायिये छूट परे सब जार ।
 ऐसा मरना क्या भला दिनमें सौ सौ बार ॥
 कभी मरते कभी जीते यही हालत हमारी है ।
 पाठ पहर चौसठ घटो खड़ी पुकारूं पीव ।
 जैसे खाल सोहार की सांस लेत विन जीव ॥
 न मरते हैं न जीते हैं यही हालत हमारी है ॥

काटों चींच पपौहरा ऊपर छिरकों लोन ।
 पो मेरा मैं पोवको तू पो कह सो कोन ॥
 धरोहर कुम धरो जिससे कि उनको यादगारी है ॥

सोरठ—तिताषा

पोथी तो खोल पांडे मेरा साजन कब घर आवे ।
 कोई सर्फ भंसेसा आवे कोइ मिठड़ी बात सुनावे ॥
 मेरा साजन कब घर आवे उनही सो मेरा चित है ।
 सुन सुन सज्जनको बतियां मेरे पड़ी कलेजे कतियां
 मोहे नींद न आवे सारी रतियां येही निगोड़ो रत है ॥
 दादुर मोर कोकिला बोले ।

चपला चहु दिग छोले ॥

दादूको दर्शन दीजे ।

मेरा यही सन्देसा लीजे ॥

२

कायामें कीरत कर ले तू मोटो दातार ।
 बसते सिरजिड़ा साहबाजौ तू मोटो करतार ॥

चौदह भवन पलमें गढ़े ते गढ़त न लागे बार ।
 थापेउ तापर तू धनो रे धन धन सिरजनहार ॥
 धरतो अम्बर तें धरतोते पानो पवन अपार ।
 चन्द्र सूर्य दीपक रथा रे रेन दिवस विस्तार ॥
 ब्रह्मा शङ्करते किया रे विष्णु सिया अवतार ।
 सुर नर साधु सिरजिया रे कर ले जोव विचार ॥
 पाप निरखन हूँ रक्षा रे काय मो कौतुकहार ।
 दादू निगुण गुण गहे ह्यो जीवनकी वलिहार ॥

जहन्ना—तिताषा

हरि तुम अपनि शरण माहि राखो ।

गृध्र व्याध गज गणिका तारो वेद विमल

यश भाखो ॥

तुम तजि और ठौर नहीं मेरे नित तेरे ही

दर्श अभिखाखो ।

सागर आगर गुणके उजागर राग रङ्ग रस चाखो ॥

—o—

इति श्रीब्रह्मानन्द व्यासदेव ज्ञत रागसागरीरुप सङ्गीत

रागकल्पद्रुमे कबीरबीजकादि समाप्तः ।

परिशिष्ट

राम—विवाह

नागर मन्दकुमार मुरलीधर तनतानी ।
 गिरिवरके अङ्कते अचानक लइ राधिका सयानी ॥
 ब्रजसुन्दरि जतननि मुदित करि नपुर
 कङ्कण वाणो ।
 कुम्भनदास मुसकानी मन्दगति अछनहि
 अछन पयानी ॥

१

तेरे तनकी उपमाको देख्यो में विचारि
 के कोउ नाहि न भामिनी ।
 कहा बपुरो कछन कदली कहा केहरि
 गज कपोत कुम्भ पिक कहा चन्द्रमा ओर
 कहा बपुरो दामिनी ॥
 कहा कुरङ्ग शुक वन्धुक केकी कमल या आगे
 श्री देखिय सवनि कामिनो ।
 मोहन रसिक गिरिधरन कहत राधा परम
 भावती तुं है कुम्भनदास स्वामिनी ॥

२

तोसो भोर सरे कहूँ रसिके कछो सखीरो
 तुं करति मान ।
 इतनेही को काहेका रूसति गोवर्द्धनधारी
 सुख निधान ॥
 मेरो कछो करि छाडि अटपटो सुनि रीत
 आह अपनी सयान ।
 कुम्भनदास स्वामी सो प्यारी न करि निदान ॥

३

ओ तो सो बात कही पीय तरे तन काहे
 को रिसानो ।
 प्राणनाथ सो कोप पारे सोइ अयानी ॥

जा विनु रछो न परे छिनु ता सो क्यो
 रुसिये सयानी ।
 कुम्भनदास प्रभु गिरिधरन कहै सोइ कीजिये
 ज्यो रहिये छदे लपटानी ॥

४

सुनि गोपाल एक ब्रजसुन्दरि तुमहि मिलन को
 जोहति करति ।
 वार वार मोसो कहति रहति है है वाके
 जीय बहुत भरति ॥
 तुमहि जपति रहति निशिवासर ओर वात
 कछु जीय न धरति ।
 श्याम स्वरूप चहुँटि चित लाग्यो लोक लाज
 तं नाहि डरति ॥
 हो तन मोन वाहि एको छिनु अति आतुर
 चित विरह भरति ।
 कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धर तुम कारण
 नव जीवन गरति ॥

५

तेरे नैन चञ्चल वदनकमल पर जसे
 युगखञ्जन करत कलोल ।
 कुञ्चित अलक मनो रस लम्पट अलि
 आये मधुरनिकी टोल ॥
 कहा कहीं अङ्ग अङ्गकी शोभा खुडीन
 परसत चारु कपोल ।
 कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धर देखत
 बाढ़े मनोज अमोल ॥

६

अस्थनको खोले कसुकी के कसना ।
 मनमु चहेव पिय भरि भरोखनि तब
 अङ्गुठी दीनी विच दमना ॥

ललित तन कम्पित भे वीहीनामें
 और वसना ।
 कुन्ददास प्रभु गोवर्धनधर वहीं
 लाल लये है इसना ॥
 ८
 अञ्जन पीक कहुं कहुं लागो नैननि सगी
 करति सब झूटि ।
 मोहन लाल गोवर्धनधारी सबे सुभाभिनी
 लियो है लूटि ॥
 नेना रसमसे अधर और छवि चन्दन
 गयो गातते सूक ।
 कुन्ददास प्रभु सो मिली भामिनी
 कहत न बनि सुख भइ मति सूक ॥

९
 पिउ सङ्ग जागी वषभानुदुलारी ।
 अङ्ग अङ्ग आलस से जंभाति अति कुञ्ज
 मदन ले भवन लिघारी ॥
 मारग हात लिही सखी औरिन
 कहिं सदाथि तन दसा विसारी ।
 शीतस्वामिनी सो कहिं भामिनी तोहि
 मिले निसि गिरिवरधारी ॥

१०
 राधा निसि हरिके संग जागी ।
 जसुना पुलिन सजल कुञ्जनमें पिया
 अङ्ग मिलि मिलिके अनुरागी ॥
 कुटिल अलक वगरी जु वदन पर दोउ
 कपोल पीकनिसे पागो ।
 शीतस्वामिनी उमगि उमगिके गिरिधर
 लाल उरनि सो लागी ॥

११
 बालकृष्ण जागहु मेरे प्यारे ।
 बेठी सेज कहति है जननी वार वार
 सुख कमल निहारे ॥

सुन्यो वचन माताको जब हो तनिक तनिक
 दोउ नैन उघारें ।
 लिये उठाहि अङ्ग भरि तबही उद मोदक
 सो वदन पखारे ॥
 माखन मिश्री और मलाइ शीव्यो दूध
 तुम लेहु दुलारे ।
 विविध भांति पकवान मिठाइ आनन
 मेलि अपुनपो वारे ॥
 सुख पसारि भंगुलि पहराइ गिर ऊपर
 चौतनि जब धारें ।
 डोलत अजिर मुदित मनमोहन ब्रज जन
 श्रोत भई जु निहारे ॥

१२
 गोद लिये जननी मुदित मन बालकृष्णको
 करति सिद्धार ।
 भंगुली लाल जरी पहराइ सिर कुल ही
 धारति एक मार ॥
 इन्दुना कण्ठ जड़ित नगमानिक अरु सोहत
 मोतिनके हार ।
 बाजबन्द लाल भुज राजत जगमगात है
 परम सुठार ॥
 पहुंचो हातनि गरम विराजत ताकी
 शोभा को नहो पार ।
 मानो अहि सुतके फणि ऊपर मणि
 अङ्गनमें ब्रजपति देखि लजानो मार ॥

१३
 बालकृष्णको जगमोहनको लाये गांठ खिलावे ।
 सुन्दर सुखछवि निरखिके मनमें सब गावे ॥
 सु सु करे सुम्बन करे वहुलाभ भावे ।
 कबहुं क अङ्गुरी लाइ के फन्द चलन सिखावे ॥
 घुटहन चलत उताल सो मैया टिग आवे ।
 ले उछङ्ग जननी तबे स्नान पान करावे ॥
 पीत भंगुली पहराइके तिर कुल बनावे ।

कण्ठ कटुला इसुलो चुनो करधनो सुहावे ॥
 ग्रह ग्रहते नव गोपिका देखनको आवे ।
 अजिर दोरि रिङ्गन करि ब्रजजन मन भावे ॥

१७

बात कहुं ओ कहित कोलो सौं ।
 चारि कवे जिनि सुनि मन मोहन देवहुं
 कारो कहि कहि मो सौं ॥
 सूरजवंश भयो नृप दशरथ तिनके
 पुत्र भये है चारि ।
 राम भरत लक्ष्मन शत्रुहन खेलत गृह
 आंगनके द्वारि ॥
 विद्यामित्र मखरचण्य करिके घर तारा
 गउतमकौ नारि ।

मिथिला जाइ शिवधनुष तांरे तब
 जनक सुता माला उर डारि ॥
 वारि विवाह घरकों जब आए भरत
 गए मातुलके धाम ।
 नृप मन सोधि कछो गुरु आग्ये है गहि
 राज देहुं श्रीराम ॥

केकह वचन पिताकि आस्र चले
 देखक तापस अनुहारि ।
 लक्ष्मन सहित सतीवरनारी भोग
 चलनि चाप कर धारि ॥
 पञ्चवटी बिष रत त्रियके सङ्ग रावण
 हरण कीहो तिहि काल ।
 इतनो सुनत सूरके स्वामी चौकि
 कछो दे धनुष उताल ॥

१८

सुनि सुत एक कथा कडों प्यारो ।
 कमल नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक
 शिरोमणि देह हुंकारो ॥
 नगर एह रमणीक आयोज्या बड़े बने
 जहां आगम अटारी ।

बहुत गली पुर बीच विराजत भांति भांति
 सब हाट बजारो ॥
 तहां नृपति दशरथ रघुवंसी जाके
 नारि नवलि सुखकारो ।
 कौशिल्या केकह सुमित्रा तिनके जनम
 भये सुत चारो ॥
 चारि पुत्र राजाके प्रकटे तिनमें
 एक राम व्रतधारी ।
 जनक धनुष पण कियो जानकी त्रिभुवन
 के सब नृपति हुंकारो ॥
 राजा पुत्र देउ रिषि लाये सुनत
 जनक जन तहं पगुधारो ।
 धनुष तोरि सुख मोरि नृपतिको
 जनक सुता तिन तब वरो नारो ॥
 पट अङ्गुठा जब पोर नृपतिके तब
 केकह मुख मेलि निवारो ।
 वचन मागि नृपति सौं यह लोनो रघुपतिके
 अभिषेक सञ्चारो ॥
 तात वचन सुनि तमोराव जिनि आता धरणि
 सहित वनचारो ।
 उनके जात पिता तनु त्यागो आत व्याकुल
 करि जोव विसारो ॥
 चित्रकूट गए भरत मिलन वन पग पांव रादि
 करो छपारो ।
 सुवति हेत कपट मृग मारो राजोवलाचन
 गर्ब प्रहारो ॥
 रावण हरण कियो सोताको सुनि करुणामय
 नौद निवारो ।
 सूर श्याम तब रट्यो कोपको लक्ष्मन देह
 जननी भ्रम डारो ॥

१९

आजि निकुञ्ज मङ्गुमें खेलत नवल किशोर
 नवलि किशोरी ।

अति अनुपम अनुराग परस्पर अति
 अभूत भूतल पर जोरी ॥
 विद्रुम फाटिक विधि नियमित
 धर नव पूर पराग लखोरी ।
 कोमल किसलय मैनसुपेसल पर
 श्यामल निवासित गोरी ॥
 मिथुन हास परिहास परायण पौक कपोल
 कमल परजोरी ।
 गौर श्याम भुज कलह मनोहर नारी
 वन्दन भोहन तोरी
 हरि सर सुकर विलोकि अपनपो
 विभ्रम विकल मानजुत भोरी ।
 चिबुक सुचारु प्रलोड प्रवोधित
 परि प्रतिविम्ब जगाइ निहोरी ॥
 नेति नेति वचनामृत सुनि सुनि ललितादि
 देखति दुरि वोरी ।
 हित हरिवंस करत कर धूननि प्रणय
 कोप-मानावनि तोरी ॥

१७

अतिही अरुण तेरे नेन नलिनरी ।
 आलसजुत इतरात रगमगी भय निशि
 जागर अनिल मलिनरी ॥
 शिथिल पलक में उठत गोलक गति विधि यों
 मोहन मृग सकत चलनरी ।
 हित हरिवंस हंसकल गामिनी सन्धम देत
 भारिन अलिनरी ॥

१८

बनी राधा मोहनकी जोरी ।
 इन्द्रनील मनि श्याममनोहर खेत कुम्भ तन गोरी ॥
 भासविशाल तिन कुहरि कामिनी
 चिकुर चक्कबिच रोरी ।
 गज नायक प्रभुपाल संघहनि गति
 हृषभाशु किशोरी ॥

नीलनिचोल जुवति मोहन पट पीत
 अरुण सिरसोरी ।
 हित हरिवंस रसिक राधापति सुरति
 रङ्ग में बोरी ॥

विलास—चर्चरी

आजु नागर किसोर भारती विचित्र
 जोर कहा कहुं अङ्ग अङ्ग परम माधुरी ।
 करत केलि कण्ठ मेलि वाहु दण्ड गण्डमण्ड परखि
 सरस वाद्य हास्य मण्डलो जुरी ॥
 श्यामसुन्दरी विहार वांसुरो मृदङ्गतार
 मधुर घोष नूपुर किङ्किणी जुरी ।
 देखत हरिवंस आलि निर्गुणी सुधाङ्गलि
 वारि फेरि देत प्राण देह सीं दुरी ॥

२

मञ्जल कलकुञ्ज देख राधाहरि विसद बेस
 राका लसत कुमुद बन्धु सरस सद सामिनी ।
 सांवल दुति कनक अङ्ग धरे तनिनि एक सङ्ग
 नारद मणि नीलमध्य लसति दामिनी ॥
 अरुण पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल
 सौरभ जुत सोस अनिल मन्दगामिनी ।
 किसलय दल रचित सेन बोलत पिया चाटु बेन
 मान सहित गति पद अनुकूल कामिनी ॥
 माहनमन मथन मार वरसतु चली निहार
 बेकुञ्जत नेति नेति वदत भामिनी ।
 नर वाहन प्रभु सुकेलि विधिभर भरति बेलि
 सुरति रसरूप नदी गजगत गामिनी ॥

३

सुनहि राधिके सुजान तेरे हित सुखनिधान
 रास रचो श्यामतट कलिन्दनन्दिनी ।
 नृत्यति जुवतो समूह रागरङ्ग अति कतूह
 वागुरम मूल मूलिका अनन्दिनी ॥
 वंसोवट निकट जहां परम रमण भूमि तहां
 सकल सुखद वहे मलय वायु मन्दिनी ।

जातोद्भूत विकास कानन अतिसे सुवास
 राका शसि सरद मास विमल चाँदिनी ॥
 नरवाहन प्रभु निहारि लोचन भरिमें नारि
 नख सिख सौन्दर्यकाम दुख निकान्दिनी ।
 विमलय भुज शीव भेलि भामिनी सुखसिन्धु भेलि
 नव निकुञ्ज श्याम केलि जगत वन्दिनी ॥

निरखि आंखि विमुख नैन सिरा वसति
 विपरोत भात ।

श्यामल पर शोभित गोरिजात ॥
 कटमें लठपट में पट अरुके सर मह नव उरजात ।
 मुखमें अधर वाहुनिमें सुदृढ़ वन्दे वलिजात ॥
 चन्द्रवदन सानन्दकिशोर चकार पियतन अधात ।
 व्यास स्वामिनी पियसङ्ग विरहति
 मानसी सदै लाल ॥

श्यामगुप्फरी कहां अति कोमल परम किशोर ।
 सुनि सुकुमारी महा अति कठिन कुटिल
 नखसिख अङ्ग तोर ॥
 कहां कपोल मृदुल मञ्जुल अति
 कहां तव नख रसकोर ।

कहां कोवोर जलधर सम कहा दसन
 अन्धारे ओर ॥
 कहां कुंवर कौ सदय हृदय कहां तव कुच पीन
 कठोर ।
 कहां निराग सनाहु कहां दृढ़ वाहनि वन्धन जोर ॥
 कहां दीन आधोन कहां तव वङ्ग चितवनि
 चितचार ।

व्यास स्वामिनी रसिक प्रीत के नाते
 कछो सुखोग ॥

ठाटे दोष कुञ्जमहलके द्वार ।
 राधा मोहन मोहि लागत है तुं देखियो उन
 कु नैन भरि मोहित आसु सुतार ॥

अति आतुर तोहि तन चितवत इकटक पलक
 लगत नहि लोचन मौन सगी ज्यों गार ।
 व्यास स्वामिनी चितवत ही सुखन ललित
 विहसि उरसि पीर लख विहरत राधा रङ्गधार ॥

मोहनकी देही उलटी रचीरी ।
 नैन नोरसर बूड़त हुतें विरह दहनतें जरत बचीरी ॥
 भद्र श्याम तें पीन धरनि दहि तरुणी
 प्रताप तटीरी ।

हे राधे रव अक्षण सुनत तुं अजहुं न
 निठुर लटीरी ॥
 चन्दनचन्द पर पवन पानु करि दुख की
 राशि रटीरी ।

तो विन अनत न शरण मीत कह भीत
 समा विरटीरी ॥
 इतनेह सुनि उरि चलि अमी सङ्ग अङ्ग
 सुगन्ध गण्ठीरी ।
 व्यास स्वामिनी रतिरस वरषत सुख मैं
 की चमटीरी ॥

ऐमी कुंवरि कहां पिय पाई ।
 राधा हुते नख सिख सुन्दरि अबलौ कहां दुराई ॥
 काकी नारी कोनकी बेटी कोन गांउते आई ।
 सुनी न देखि ब्रज वृन्दावन सुधि बुधि
 हरति पराई ॥
 याकी सुभग सुहाग भाग अभिलाष जु
 अभिसन भाई ।
 याहीके रस वस है तुम वृषभानसुता विसराई ॥
 यह विनोद सुनि देखन आइ अत्र कि कण्ठ
 लपटाई ।
 व्यास स्वामिनी विहसि मिलित हांस रस
 सुधङ्ग नचाई ॥

८

कहन न पे है कोउ बात ।
 श्याम कामवश गोजर ह्वै गये राधाके से गात ।
 जे सोइ ध्यानु धरो ते सोइ भए अधर गण्ड
 उरजात ।
 नख सिख अङ्ग अनङ्ग मोहियत देखत
 नेन सिरात ॥
 बहु गुण रूप न तोहु मे सखि फूल भरत
 मुसकात ।
 गज मराल गत निरखत मोहै रति
 मनसिज रुंधात ॥
 अपनी जोरि ह्वि भेंव्यो याहते ललितादि
 को वलिजात ।
 तेही रसमें विरसु कियो अब
 कौन काज पछितात ॥
 कगह वाहु धरि चलो अनीके सुनि
 अभूत अनकाम ।
 व्यसस्वामिनी परसत मोदन
 धरणि गिरे लपटात ॥

१०

सेनन विसरे चेलगि भोर ।
 वेन याते कासों पिया हियते विहसत
 कत हि किसोर ॥
 दुख मंटत भेटत तुकौ नहिं सुखन देखो न भोर ।
 काहि देखो जिवन धन कर गहि ले कुचकोर ॥
 माकं पाइ गयो मरे प्यारे कासों करत निहोर ।
 को नहि विकल किये नवनागर तुम
 पनिहां तुम चोर ॥
 निजु विहार आरोपि आनपर कोपि मान गढ़ तोर ।
 व्यासस्वामिनी विहसि मचाइ सुरति समुद्र हिलोर ॥

११

सन्देशो कछो दूतिका आनि ।
 अबबोले सब अङ्ग दिखाइ नागरि ले है जानि ।

वदन प्रसारि तामें नोबू निचोयो सिर लपर
 धरि पानि ।
 कानकु काइ नाइ हंसि ना ज्यो धरनि
 गिरि मुरभानि ॥
 पुनकित कपित खेद भेदतन अंसुवनि
 आप सुचानि ।
 शोमल जल भरि कमल उरहि धरि
 फारति पटु दुख दांनि ।
 वनमाला तोरत कर मोरत पाइ परत मुसक्यानि ।
 शोतलजल भरि कमल उरहि धरि कदलि
 खंभ लपटानि ॥
 व्योरो विपदा सुनि सुनि व्रतेजि छाडि
 जौयकि वानि ।
 रामदासिके समुक्ति विनोदनि कुंवरि
 जिवायों आनि ॥

१२

ए हरि मोसों न विगारनकी तोसो न संवारनको
 मोहि तोहि परो होइ ।
 कौन धो जीते कान धो हारे परी बदि न छोइ ॥
 तुम माया बाजो पसारो विविध मोहो
 मन मोको भूलगो कोड ।
 कहि हरिदास हम जोते हारे तुम तउ न तोड ॥

१३

प्रिया पियके उठवे को छवि वरणी न जाइ
 सबत न्यारे ।
 मानो घोसरे निइ कटोरे होवन भये न्यारं ॥
 वार लटपटे मानो भौर यूथ लरत परस्पर
 कमलदलनि पर खस्यारोट शाभा न्यारे ।
 हरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारो पर
 कोटि कोटि अनङ्ग कोटि ब्रह्माण्ड वारि डारे ॥

१४

जगाइरो भइ वेर बडो ।
 अबबोली खिली प्रियके सङ्ग अलक है कल लाडलडो ॥

तरनि किरनि वन्धनि छे आइल गीनिवा जानि
सुकर परत वहीही छे रही अही ।
विहारीदास रति कौ वरने कवि जो छवि
मो मन भांभ गड़ी ॥

१५

जिनि जगवै जुगल नवल निजु नेह सुख ।
जागे यामिनि मैन नैननि नीर वन प्राण जीवनी
मेरे मनभावन दमन दुख ॥
अमित अमित विहार मूरत सुखद कुमार
ये सकुमार तन मनहि दिये लिये रहे रख ।
ओवर विहारनिदासि लोख लोचन निरखि
सुखराशि हंसि मिलत सुन्दर सुसुख ॥

१६

जागो सनेह अस्योमत माने ।
भगरत लुरत किशोर किशोरी वरजोर
मिलत तउ न माने ॥
ओटि समेटि वसन सन्धम निधि पलटि
नेत्रि पाइयाने ।
विहारी सामी दम्पति कौ सुखनिरखत
सखी वारति अपने प्राने ॥

१७

कुञ्ज में रस ऐन प्रिया प्रिया वनें है विचित्र
वरवागे ।
चन्दनवन्दन विविधि मन रञ्जन अञ्जन वेश
छवि मानों चित्र सों किये सुतन अङ्ग
अनङ्ग नि दागे ॥
अपने अपने रस आनन्द विरस भये आलस
विनु अनुरागे ।
विहारनिदासि गखी भागी ओरनिके कव
पुनि हंसि हंसि हंसि उर जागे ॥

१८

या हंसि हंसि कहत है बात सुनति न बात
निपुन पढात ।

सोमन कूरनिसी सुखमूँदि राखत अवचनि
तन जात ॥
वचन रचन वलवलानि पुलकित सम्प्रत ।
विहारनिदासिके मैननिमें सुखमें ललि लटपटात ॥

१९

आशु कौ छवि अङ्ग अङ्ग रही फवि ऐसी
मति कोनकी के वरने कवि ।
उपल अहि न काहि बताउं गाउं इन्हें
सुनि जाहि सबे दवि ॥
हंसत खेलत मिलत सकल निमागत भूपटि
चलत पगु धरत भुवि ।
विहारनिदासी सङ्गम सुख सुरति देखियो देखि
आनन्द उदै रवि ॥

२०

सांवलौ मनहरण मनोहर ।
वचन रचन कचिर हे लुरि कुञ्ज कुटीतन
मगन प्रेमभर ॥
अङ्ग अङ्ग आलिङ्गन सुम्बन हंसत रसात
सहज सुन्दर वर ।
विहारीदासी दुलारावति गावति लु नव किसोरी
सुजन सर्वोपरि ॥

२१

तूं मनमोहनीरो मोहन मोहेरो अङ्ग अङ्ग ।
अगमनो अलके भलके वर उरपर छूटी लट सुख
हंसत लसत दसनावलि सहज भृकुटी भङ्ग ॥
मृग मधुपलीं श्याम काम सब सजे अलवेली
धाम सौरभ सुर सवद सुनत फिरत सङ्ग सङ्ग ।
रहसि फिर चितथी हितसो मनि आनि उर
अङ्ग रङ्ग अनङ्ग ॥

२२

सुदित मोहन अङ्ग मोहनकी मनमोहनो तू
मोह्योरी मोहन ।
जदपि रहत हंसत खेलत अङ्ग सङ्ग निशिदिन
छिनु न तजि सकत मोहन ॥

अभूत रीति जीति पिया उपम नव चक्र किये
कहति तुमसों सखी कर पदपर आबोजन ।
विहारोदासीकी खामिनी सुनि ह्वे मौन
°चिते सुसिकाति पत्याति न मोहन ॥

२२

मोहन नील रसाल सों मोहिल अल कौन
हु बोख्यो भावे ।
जब कबहुं हीं रह्यो मौन वे हांस
मन मोद बढ़ावें ॥
तान अतीत अनागत अङ्ग सङ्ग मिलि मधुर
सुर गावे ।
विहारोदासी खामिनीके रस रसिक रसही में
रस उपजावे ॥

२४

विहारि निहारि लोही लागत सकल सुखं-
हिनिकी दानि ।
चितवन चित पोषति तोपति तन मन
मनसा रस सानि ॥
दरस रूप रस हास परसपर विचित्र तिहारो वानि ।
धन्य जनम मानत अनुरागी जरभर लागत आनि ॥
विहरत वन रति मानिनि सङ्गर विदारि
कामकी सानि ।
विहारो दासी लता बनि छिन छिन
नही ये को जानि ॥

२५

मेरी खामिनी प्रसन्नवदन सांवरो सुखराशि ।
इनहि लड़ाचं अनुदिन छिनछिन लहीं साधासि ॥
फूली फूली टहल करों मनके मनानि हुलासि ।
अनन्य श्रीहरिदासि विपुल वनविहारनि दासि ॥

२६

सांवरो नवरङ्ग ।
ते सीयेतन घन दामिनी दुति कुंवरी किशोरौ
गोरौकी सङ्ग ॥

इनहिं रसरसिक उपासित खातहिया विकसों
अल जावत लगत नङ्ग ।
विहारनि दासी अनन्य भजन विनु साधन
आन करत न ककु टङ्ग ॥

२७

प्रिया श्याम सङ्ग जागी है ।
शोभित कनक कर्पाल उने पर दसन छाप छवि
लागो है ॥
अधरनि रङ्ग कुटी अलकावलि सुरतरङ्ग अनुरागी है ।
विठल विपुल कुञ्जकी क्रीड़ा कामकेलिरस पागी है ॥

२८

रमिक रसोली भांति छविली नैन रङ्गीली तूं
पियपैतें आई ।
अलक कञ्जुको कुटी चारु आरि चूरी फूटी
पालस मदन लूटी हैति जन्माई ।
डगमगचरण धरति मालो पिया आंकों भरति
चित चित नहि टरति वहि छरिमें लुभाई ॥
श्रीविठल वेष सरवनी नखदेख रजनीके जीवशोच
जानिमें पाई ॥

२९

श्यामा चलहु लड़ेती प्रिया कुञ्जनिकरहु केलि ।
श्याम तमाल लाल नव किशोरौ वाल तुम सज
नवल नव कनकको बेलि ॥
विविध कुसुम घन रचित श्रीवन्द्यावन बोलत
सुहाये पिकमधुप रहेहैं भेलि ।
विठल विपुल रस विहारो तिहारि वच जमुनाके
तीर सुखविलास खेलि ॥

३०

आवत नारि लो लालफूले ।
कुञ्जकेलि नवरङ्ग विहारो सुरतहि डोरे भूले ॥
निशि जागे अलसात रसमगे पट पलटे गति भूले ।
विठल विपुल पुलक ललितादिक दिन देखत
हुमन्सू है ॥

११

सुनहु रसिक वृन्दावनको यश ।
कुञ्जकेलि मानिनी मनोहर परवस भए
नाहि न अपने वश ॥
इहि वन नित्य नवीन युगलवर द्रुमदल नित्य
श्रवत सलितालस ।
विठल विपुल विनोद विहारीको गुणकियो
चाहति रसना रस ॥

१२

सुन्दर श्यामसुन्दर बहु खीला
सुन्दर बोलत वचन रसाल ।
सुन्दर चारु कपोल अति सुन्दर उरज वनी
सुन्दर वनमाल ॥
सुन्दर चरण सुन्दर है नखमणि सुन्दर कुण्डल
हैमजराल ।
सुन्दर मोहन नेन अपल किये सुन्दर प्रीवा
बाहु विशाल ॥
सुन्दर सुरली मधुर बजावत सुन्दर राधे है गोपाल ।
सूरदास दम्पती अतिराजत ब्रजकी
प्रावत सुन्दरबाल ॥

१३

तुम जागो मेरे लाड़िले गोकुल सुखदाई ।
कहति जननि आनन्दसों उठो कुंवर कन्हारै ॥
तुमको माखन दुध दधि मिश्री हों थारै ।
उठिकें भोजन कौजिये पकवान मिठारै ॥
सखा द्वार परभातसों सब टेर लगारै ।
वनकीं चलिये सांवरे दह तरनि दिखारै ॥
सुनत वचन अति मोदसों जागो जदुरारै ।
भोजन करि वनकीं चले सूरज बलि जाई ॥

१४

आशु प्रात हि तुम रात बात कहत वन कन्हैया ।
जैसे शुकपिक कपि बोलत है अरस परस सुनि
सुनि सुख पावत भावत नन्द यमोदा भैया ॥

वचन रचन कहत समुक्ति समुक्ति परत नाहि
कहु बीच बीच दाउ जब कहत मेरी गैया ।
रोभि रोभि हरसि हरसि पुलकि पुलकि उर लावत
सुंमति सुख वार वार लेति फुल्लिबलैया ॥
बहुविधि पकवान पानि खीरनीर भोजन घृत
माखन मिश्री खवाई ओर चावत खैया ।
बलि बलि ब्रजवनिता जहाँ दामोदर हित धितवत
हरत लरतभूषण पढ़ नटवर दोउ भैया ॥

१५

माई कोम गोपके ए दोउ नागर धोटा ।
इनकी वात कहीं सखी तो सी गुणनि बड़े
देखतके छोटा ॥
अग्रज अनुज सहोदर जोरी गौर श्याम
अथित सिर चोटा ।
सन्तदास बलि बलि मूरति पर
ललित सबहि विधि मोटा ॥

१६

नेननिकी चञ्चलता कहा कोनें भोनें रङ्ग
कोनकेहो श्याम हमसों दुवारत ।
ओरके वदन देखनको नेमलियो कियो पवनिमधि
राखी प्यारी ताके मार मउर नए आवत ॥
मधुप गधलुवध सेजे पोङ्गनिशि वसे सलाग आवत
रति कोरति गावत ।
सूरदास मदनमोहन तनको प्रीति प्रकट भई
सुख नही वनत बनावत ॥

१७

भोर भए सुख देखि लजाने ।
रसकी केलि वाल सुख मोहत अरुण नेनि
अरमाने ॥
काजर रेख बनी अधरमिन पर ललित कपोल
पोक लपटाने ।
मधुप मनो कुञ्जनिपर बैठे उडि न सकत मकरन्द
सुभाने ॥

देखति हार अलङ्कृत विन गुण आए जीती रण
धीर सयानि ।
सूरदास पीय पाव धारिये जानतिहों परहाथ
विकाने ॥

१८

भीले अटको घुंघट तामधितरारे भारे
नो इनमोके लारे रीजीय अज्ञान ।
ककुक सकुच गुरजनकी ताते ओठ दीये अवलोकति
पोय तन चञ्चल मानहु जालपरे अकुजात खञ्जन ॥
छवोलोको छवोला अंखियारी जिनके कटाक्ष
तरङ्गनिमें हरिको मन लाग्यो करन मञ्जन ।
अति चतुराह सां चतुर विहारीके चितकों लागेरी
निरखि निरखि अनुरञ्जन ॥

१९

तुम मुख ओर अन्द्रमा विरखि तुलाकारी तोख्यो
ओछो अकाश गयो धुकि धरणी रही निकाइको
भारो भरोरी पला ।
याहोतें शशी घटत बढ़तहै देखि देखि तेरो
वदन निर्मला ॥
तो सम नाहि न पूजीये सव मिलि कलङ्की नाम
धख्यो निशि अमृत फिरत न रहे अचला ।
तानसेन प्रभु सरस वस करलायो रूपआगरी
रूपकला ॥

२०

अहो टेटो पागरि नागरि नारि सोस धरे जैसे
टेटो पागकों राखे रहतु कि चिकनीया ।
दुरि दुरि सुरि सुरि वतीया करति अगिनी पकळीन
सों दोउ करतारो मारति एकनिसों नेनसें
नव वनीया ॥
साहीकी सङ्गा पचरङ्ग अनुरि कण्ठकरा
ओर तावीच मनिया ।
तानसेन प्रभु रीझि अकित भए तुहीं सबनि में
अनि धनिया ॥

२१

जुनरी प्यारी पचरङ्ग प्याहिरि सुपनीयां गगरीया
भरे आवति है सुदोउ हाथ चेंथी धरे ।
गोरे भुजनमें गाढ़े वरा फुनिड़ड़निमें श्याम सुरोह
धेरो नहनमें हंदीसों गहिरोर रङ्ग करे ॥
खासन वेसरि मोतो हालत मुख प्रखेद
नेनाभोहं चढ़ाय ।
कानन वोरें गरें मोतोतन लर कुच उतङ्ग नितम्ब
भारो कटि छानी चलत लफि लफि परत उरवेनी
पाट भीजेरी सुवो होत फुलेल परे ॥
जे हरि जोति सूरज सोंहो उपरो पाइ महावर
नखनि जोति अरु गुदनगुदाए तानतरङ्गको
प्रभु विनति करत है सों हंसि बोलति हरे हरे ॥

२२

नील पट पहिरे कञ्चन गात प्रात अलसात नवल
राधावर बाललाल सङ्गलागी पागोरस पागी रसकेलि
निकसि ठाढ़ी भई सचन कुञ्चनके हार ।
भुज न जोरि एखाति जन्माति मन्द सुसिकाति
सुमिरति वातल जाति सखीलखी मुखशशि
विद्युरे वार ॥
अरुण नयन आलसजुत बैन अधर अञ्जन लगी
पीक छाप जुग मृदुल कपोलनि नखहत उरज
उतङ्ग सुभट कञ्चुकी कवच कस छूटे टूटे मणिगण
सुक्ताहार ।

सिथल वसन कटि सिथल रसन उगमगो चाल
उरमाल मरगजी चरण महावर कहुं कहुं कुट्यो
यह छवि निरखि निरखि ब्रजजन वलिहार ॥

२३

त्रिभङ्ग अङ्ग रङ्गभरे विराजित हरि छवि सों
ब्रजवनिता निके कारजोरि ।
तेही सांचति गतें लेत रेखा प्रमाण मोहति प्राच
चरण धरत थोरि थोरि ॥
कवहुं री रिभावत श्यामहि देखत नयनउ
मोह मोरि ।

मटवर भेष धरे रामदासको प्रभु मोहन नाइकु जाके
नित्य नृत्यत शिव विरह सुर नर सुनि भइ भोरे ॥

४५

ब्रजते निकसि हरि वनकीं चलत केती शोभा
राजत गायनु लीत सभारि ।
अपनी अपनी धेनु पाछे मिलवन मिस देखन चली जे
चातुरही ब्रजनारी ॥

सवनिपेंते छेत वरण वरण निटेना करत सौगत
सब ग्यालघुन्दहि आपु नहीं सुरारि ।
रामदास प्रभु वे चली बालकसङ्ग भेष धरे जैसे फांदत
दादुर बोलत चातक नृत्यत वही अनुहारि ॥

४६

हमपर यह ही गइवी वाजन ।
ले डारे यशोदाके आगे जिनम फोरे भाजन ॥
दुरी बात सब प्रकट करि देत नैकहु आइ लाजन ।
रामदास प्रभु दूरे भजन मध्य आङ्गन लागी गाजन ॥

४७

मो मनसे छोरी लालन कहि कहि थोरी
बोरि वतियां ।

मांगत दांनु दिया सरवसु विरसो सुगयो जियते
मेन जाग्यो छिटगो कोन भतियां ॥

अट पटाइ सुरभाइ रही देखत किशोर मोकीं
भूलोरी सवै गतियां ।

रामदास प्रभुकी अङ्ग अङ्ग नारताते भुजनि चापिलै
लगाइ छतियां ॥

४८

चितवत क्यो नरी तेरो चितवत लागतु कहा ।
एकनिपे भगरि दानु मागतु हरि तूं इतनेहु कों
अति कठिन महा ॥

उरध घौव करि डग सूधे करि मुख पदउत करि
गिरखि नयन भरि करति हहा ।

इनहु कों कितनीये कीजे प्यारी धौधीको प्रभु
इरी चतुर चहा ॥

४९

नयन तेरे अति रस माते अरुण अरुण डारे
लगत सुहाते ।
कबहुं लजात कबहुं अनखात कबहुं कुलि पियसन
मुख चितवत इतराते ॥
कबहुं क इकटक देखि रहत कबहुं आगु नही
सुरि सुसिकाते ।
रसिक प्रीतम सङ्ग निशदिन विलासत नेकु नही
सकाते ॥

५०

खेलतमें को काको गुसेयां ।
हरि हारे जीते श्रीदामा वरवसही कत करत रसेयां ॥
जाति पाति हमते वढ़े माही ना हम वसत तु
छारी छेयां ।

अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे गया ॥
रुचि करै तासों को खेले रहै बैठि जहां तहां
सब गोइयां ।

सूरश्याम प्रभु खेबोइ चाहत दावदियों करि
नन्द दुहैयां ॥

५१

खेलत श्याम प्यारिके वाहेर ब्रज लरिका सङ्ग
सोहत जोरी ।

ते सेइ आपुते सेइ सब बालक अति अज्ञान
सबकी मति भोरी ॥

गावत हांक देत किल कारत दूर देखति नन्दरानी ।
अति पुजकित गद गद सृदुवाणी मन मनहर

पिसिहानी ॥

माटी लै हरि मेलि दई मुख तबही यशोदा जानी ।
साटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लङ्गस्यो ठानौ ॥

सरकनि कों तुम सब दिन भूठ बात मोसों कहा
कहीग्यो ।

मैं माटी नहि खाइ मैया मुख देखो निवही गो ॥
वदन उघारि दिखायो त्रिभुवन घन घननदीसुमेर ।
नभ शशी रवि मुख भीतर है सब सागर धरणी फेर ॥

यह देखत जनना मन ब्याकुल बालक
 सुखका आदि ।
 नयन उच्चरि वदन हरि मूँघोमाता मन भवगादि ॥
 भूटे लोभ लगावत माकों माटो मोहि न सोहावे ।
 सूरदास सब कहति यशोदा ब्रजलोग निद्र है भाई ॥

५२

कहत नन्द जसुमति सुनि बात ।
 अब अपने मन सोचकरत कित जाके त्रिसुवन
 पति सो तात ॥
 गर्ग सुनाई कधी जो बानी सोई सोई प्रकट
 ह्रात ही जात ।
 इनतें भीर नहीं कोउ समरवये दूहे सबही के नाथ ॥
 मायारूप माहनी लाई डारि भुले सबे ए गाथ ।
 सूरश्याम खेलते आयें माखन मांगत दे माहाथ ॥

५३

तबहि यशोदा मांखन ल्याई ।
 में मथिके अबही धरि राख्यों तुमहि काज मेरे
 कुंवर कन्हाई ॥
 मागि लेहु येही विधि मासों मा आन तुम खाहु ।
 बाहर कबहुं कछु जिनि खेहाड़ी टिलागे मा काहु ॥
 तनक तनक कछु खाहु लाला मेरे ज्यों वदि
 आवे देह ।
 सूरश्याम अबहीहु सयाने वारनके सुख खेह ॥

५४

प्रथम करी हरि माखन चोरो ।
 ग्वालनि मनइच्छा पूरण करि आपु भजे हरि
 ब्रज कि खोरो ॥
 मन मन इहो विचार करत प्रभु ब्रज घर घर
 सब गाँउ ।
 गोकुल जनम लयो सुखकारण सबके माखन खाँउ ॥
 बालरूप जसुमति माहि जानं गोपिन मिलि
 सुखभोग ।
 सूरदास प्रभु कहत प्रेम सो ये मेरे ब्रजलोग ॥

५५

सखा सहित गये मांखन चोरो ।
 देख्यो श्याम गावाक पन्वह्ने गोपी एक मथति
 रधिभोरो ॥
 हेरि माथनी धरि माटते माखन हो उतरात ।
 आपु गयौकमोरो मांगन हरि पाइछो घात ॥
 दंठे सहनिसहित घरसूने माखन दधि सब खाये ।
 छूछो छाड़ि मटुकिया दधिकी हंसि सब
 वाहरि आयी ॥
 आयगयो करलिये कमोरो घरते निकसो हाल ।
 माखन कर दधिमुख लपटाने देखि रही नन्दलाल ॥
 कहं आये ब्रजबाबकन सङ्ग माखन मुख लपटानो ।
 खेलतते उठि भज्यो सखा यह येहि धर
 पार छपानो ॥
 भुज गहिलियो काहा एक बालकनिकरी
 ब्रजकी खोरौ ।
 सूरदास ठगि रही ग्वालनी मन हरि लियो अजोरि ॥

५६

चकत भई ग्वालनि तनु हेस्यो ।
 मानन छाड़ि गई मथि वेंसेहि तवते कियो भवेस्यो ॥
 देखै जाइ मटुकियो रीतिमें राख्या कहुं हेरि ।
 चकत भई ग्वालनि मन अपने दूरत घर फिरिफेरि ॥
 देखति पुनि पुनि घरके वासन मन हरि लियो
 गोपाल ।
 सूरदास प्रभु रसभरी ग्वालनी जान्यो हरिके ख्याल ॥

५७

ब्रज घर घर प्रकटी यह वात ।
 दांभ माखन चोरौ कति लं हरि ग्वालसखा सङ्गात ॥
 ब्रजवनिता यह सुनि मनहरवित सदन हमारे आवे ।
 माखन खात अचानक पाए भुज भरि उरहि कुशवे ॥
 मनही मन अभिलाष करत सब हृदय करति
 यह ध्यान ।
 सूरदास प्रभुको घरते लदेहै माखन खान ॥

५८

ग्वालिनि घर गये जानो मांभको पंधेरी ।
मन्दिरमें गये समादृष्टासन तव लखिन जाइ
देहमेह रूप कही को अहे निवेरो ॥
दीपक अहदान कखा भुजा अर प्रकट धखो देखत
भई चकत ग्वालि इतउतको हेरो ।
श्यामहृदय अति विशाल माखन दधि विंदजाल
मनमोह्यो नन्दलाल वाल कहीवेरो ॥
युवती अति भई विद्वान भुजभरि दै अहमाल
सूरदास प्रभु कृपालड़ाखो तनवोरी ।
कम परसो करनं लगाइ महरिपे गइ लियाइ
आनन्द उरमे नजाइ बातहे अनेरी ॥

५९

जसुमति धो देखिआनि आगेहले पिछानि वहि
आनहि ल्याइ कुंवर आनकीका तेरो ।
अवलोभि करो कानिसहो दूधरही हानि अजहुं
जियजानि मानि कान्ह है अनेरो ॥
दीपकहो धखो; वारि देखत भुज भइ अरि चारिहो
धरति करति दिन दिन कोभीरो ।
देखियत नहि भवन मांभ तं सोइतन तैसी मांभ
कलसो ककु करन फिरत महरि को जटेरो ॥
गोरस तन छोट रहि शोभा नही जात कहीत
मानो जल जमुन विख उड़गन पथ फेरो ।
उरहन नहि देहु काहि कहे तूं इतनो रिसाइ
नाही ब्रजवासु सासु ऐसी विधि मेरो ॥
यशोदा निरखे कुमार मोपो वरने निहाइ भूली
अमररूप मानो आनकीउ हेरो ।
मनमें विहसत गोपाल भक्तपाल दुष्टसाल जानेको
सूरदास अरित काहा केरो ॥

६०

महरि तुम मानहुं मेरी बात ।
ठंढ़ि ठंढोरि गारस सब घरको हखो तुम्हारि तात ॥
कैसे कहति लयामी कते ग्वाल कांध देलात ।
घर नहि पिवत दुध धोरीको कैसे तेरे खात ॥

असभाव बोलन है आई टिट ग्वालिनो प्रात ।
एसो नही अब गरो मेरो कहावनावति बात ॥
कहा मै कही कहति सहुचतिहो कहा
देखाउ गात ।
जै गुणवदे सूरके प्रभुके आलरि काही जात ॥

६१

गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घर ।
देखी जाय मथति दधि ठाढ़ी आपु लगे खेलन
हारे पर ॥
फिरि चितइ हरिदृष्टि परिगये बालि लये
हरवे सुनेवर ।
लिये लगाय कठिन कुचके विच गाढ़े चाप रही
अपने कर ॥
उमगि अह अहिया उरदरकी सुधि विसरो
तनको तेहि आंसर ।
तव भये श्याम वरष हादशके रांभि लई
युवता वा हविपर ॥
सन हरि लियो तनकसेहो गये देखि रहो
शिशुरूप मनोहर ।
लै माखन मुख धरति श्यामके सूरज प्रभु रतिपति
नागरवर ॥

६२

ग्वालिनि उरहनके मिस आई ।
नन्दनन्दन तनमन हरिलीहो विन देखे छिन
रह्या न आई ॥
सुनहु महरि अपने सुतके मुख कहा कहाकेहि
भांति वनाई ।
जौनि फारि हार गहितो स्यो इन वातनि कहा
होत वड़ाई ॥
माखन खाइ खवावत ग्वालनि जो उवखा सो
दियो दुटाई ।
सुनहु सूर चोरी सहिलीहो अब कैसे सहिजाति
छिटाई ॥

६१

कबह्नि करण गये। माखन चोरो ।
 जानतिहों जु कटा छति हारौ कमलनयन निरो
 इतनक दोरी ॥
 दे दे दगाबुलाइ भुवनमें भुजभरि भेटति
 उरज कठोरी ।
 उर नखचिन्ह देखाअति डोलति श्याम चतुर
 भयो तुम अति भोरी ।
 ओरइके मिस आवति है नित चितै रई जनु
 चन्द चकोरी ।
 सूर सनेह ग्वालिन मन अटक्यो अन्तर प्रोति जाति
 नहि तोरी ॥

६२

हा कहीं हरिके मुख तोसों ।
 सुनहु महरि अत्रही मेरे घरजे रङ्ग कीन्हे मोसों ।
 मै दधि मथति अपने मन्दिर गये तहां येहि भांति ।
 मै सौ कछा वात सुनि मेरो मै सुनिकें सुसिकाति ।
 बांह पकरि चाली गही फारी भरि लोन्हा अङ्गवारि ।
 कहत न बनें सकुचकीं बातें देखो हृदा उघारि ॥
 माखन खाइ निदरिनीको विधि यह तेरे
 सुखको घात ।

सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुचति कछा न जात ॥

६३

ऐसे हाल मेरे घरमें कोन्हे डालै आइही तुम हिये
 पकरके ।
 फोरे सब वासन घरके दधिमाखन खायो
 जोउ बखोदाखा रिसकरिके ॥
 लरिका छिरकि मही सों देखो उपख्यो पूत
 सपूत महरिके ।
 बड़ोगाढ़ घर घर हो जुगनिको ठूक ठूक कियो
 सखानिय करिके ॥
 पारिस पाट चलत तर पाएहों ब्याइ तुमहीपें पकरिके ।
 सूरदास प्रभुकों ऐसे राखी यमोदा जंसे रखिये
 गजमद कौउ करिके ॥

६४

श्याम सब भाजन फोरि पराने ।
 हांक देत दंठतहै पैला नेकन मनहि डराने ॥
 सीके छोरि मारि लरिकनिको माखन दधि
 सब खाइ ।
 भवन मन्थो दधि कादोलरि करि वेरित पाये जाइ ॥
 सुन जसुमति सबहोके लरिका तेरो सौ कहुं नाहि ।
 हाटनि वाटनि गलिन कहु कोउ चलि नहि
 सकत डराहि ॥
 रितु आको खेल कह्यै या सब दिन खेलत फागु ।
 रोकि रहत यहि गलि सांकरौ टेढ़ी बांधत पान ।
 वारतें सुतये टगलाये मनही मनहि मिहानि ।
 सुनहुं सूर ग्वारनिको बातें सकुचि सहारि
 पछितानि ॥

६५

दे मेंया भवरा चकडोरी ।
 जारलेहु आरैप राख्यो काल मोलिल राखी कोरो ॥
 लपाये हसि श्याम तुरतहोके देखि रई
 रङ्ग रङ्ग बहु टोरो ।
 मैया विना और को ब्यावै बार बार हरि करत
 निहोरी ॥
 बोलि लये सख सखासङ्गके खेलत कान्ह
 मन्दकी पोरी ।
 ते सेइ हरि ते सेइ ब्रजवालक कर भवरा
 चकरिनकी जोरी ॥
 देखति जननी यमोदा यह सुखि विहसति
 बार बार मुखमोरी ।
 सूरदास प्रभु हसि हसि खेलत ब्रजवनिता डारति
 लण तोरि ॥

६६

कान्ह उठे अति प्रातही तन खेली सामि लागी ।
 प्रिया प्रेमके रसभरी रति अन्तर खागी ॥
 श्याम उठत विलोकिके जननी तब जानी ।
 सुन्दर वदन विलकिके अङ्ग अङ्ग अनुरागी ॥

माता वृक्षति सुवल्की वलि गइ भरे धारि ।
कहा आलु अचरलु कियो तुम उठे सवारि ॥
भारि जल दतवम दियो छवि पर तनुवाखो ।
उत्तम जल ले प्रेमसौं सुतदेन पखाखो ॥
करि मुखारो अतुरइ नागरि रसकाके ।
सूरश्याम ऐसी दशा त्रिभुवन बस जाके ॥

६८

उत हृषभान सुता उठी यह भाव विचारि ।
रेनिविहानो कठिन सौं मनमथ बलडारि ॥
श्रीवमोति लारि तोरिकें अचररा सौं बाध्यो ।
इहैं इानो करि लियो हरि मनु अनुराध्यो ॥
जननी उठि अकुलाहके क्यों राधा जागी ।
कहाँ चली उठि भोरही सौ वैन सभागो ॥
अब जननी सो उमही रवि करनि प्रकाशौ ।
तुहु उठति काहें नही जानि ब्रजवानी ॥
आप उठी आंगन गइ फिरि घरही आए ।
कवधो मिलहे श्यामको पल रह्यो ना जाइ ॥
फिरि फिरि अजरहि भवनही तनवली लागी ।
सूरश्यामके रस भरी राधा अनुरागी ॥

७०

सुनिरी माता कालिंदी मोति लरी गंवाइ ।
सखिनि मिले यमुना गइ धौं उनाहि सुगाइ ॥
कीधीं जलही में गइ यह सुधि नाहि भरे ।
तवतेमें पाँहताति तथा कहति नहीं डर तेरे ॥
पलक नही निशि कहुंलगी मोहि सपतरो तेरी ।
याहि डरतें मैं आलुहौं अति उठी सखिरी ॥
महरि सुनत चकत भइ मुख ज्वाब न आए ।
सूर राधिका सुख भरी कोउ पारन पावे ॥

७१

धन्य काह धन्य राधा गोरौ ।
धनि यह भाग सुहाग धन्य यह धन्य नवल
नवला नवजोरौ ॥
धनि यह मिलनि धन्य यह वैठनि धन्य अनुराग
नहीं रुचि योरौ ॥

धनि यह अरस परस्पर छवि लुटनि महाचतुर
सुख भोरै भोरौ ॥
प्यारी अङ्ग अङ्ग अवलोकति पिय अवलोकत
सगत टगोरौ ।
सूरदास प्रभु रीभि थकित भये नागरी
घर डारत लख तोरी ॥

राग सूही

श्याम निरखि प्यारी अङ्ग अङ्ग ।
सकुचि रहति सुख तन नही चितवति जेह वसत
रहत अनन्त अनङ्ग ॥
चपल नयन दीरघ अनिआरि हावभाव नाना
गति भङ्ग ।
धरो मीन कोटि अम्बुजगन खञ्जन वारत कोटि
कुरङ्ग ॥

लोचन नहि ठहरात श्यामके कबहु अङ्ग
हेना मुख रङ्ग ।
सूरदास प्रभु यो प्यारी वस ज्यो वस डोर
फिरत सङ्ग सङ्ग ॥

विलासक

सुनहि महरि तेरो लाहिलो अति करन अचगरी ।
यसुन भरण जहं हम गई तहं गोकत डगरी ॥
शिरते नीर टराइ दे फीरो सब गगरी ।
सुड़गी दइ फटकाहिकें हरि करतहें लङ्गरी ॥
नितप्रति ऐसीह टङ्ग करे हमसौं कहै धगरी ।
अब वसवास नही बने यह तुव ब्रजनगरी ॥
आपु गयो चढ़ि कदमको चितवत रहै सगरी ।
सूरश्याम ऐसे सदा हमसौं करे भगरी ॥

१

जो सुख श्याम प्रिया सङ्ग कीन्हो ।
सो युवती अपनोइ करि लीन्हो ॥
दुविधा हृदे कहु नहि राख्यो ।
अति आनन्द वचन सुख भाख्यो ॥
दुहे कहति तवकी अवनीके ।
सुकुचि हंसो नागरी सङ्ग पीके ॥

नयन कोर पिय हृदंनि हाखी ।
 उनि पहिलेहि पीताम्बर धाखी ॥
 सूरदास यह लीला गावे ।
 हृदिपद शरण अच्छे पद पावे ॥

१

नाना रङ्ग उपजावत श्याम ।
 कोउ रीभक्ति कोउ खोजति वाम ॥
 काहुके निशि वसत बनाइ ।
 काहु मुख छियो आवत जाइ ॥
 बहु नायक हेव विलसत आप ।
 जाकी शिव पावे नहि जाप ॥
 ताकी ब्रजनारी पति जाने ।
 कोउ आदर कोउ अपमानं ॥
 काहुसो कहि आवत सांध ।
 रहत और नागरौ घर माभ ॥
 कबहु' रेनि सब सङ्ग विहात ।
 सुनहु सूरि ऐसे नन्दतात ॥

२

अब युवतिन सों प्रगट श्याम ।
 अरस परस सबहिन यह जानो हरि लुवधि
 सबहिनके धाम ॥
 जादिन जाके भवन न आवत सो सो मनम
 यह करति विचार ।
 आसु गये औरहि काहुके रिस पावति कहि
 बड़ लवार ॥
 यह लीला हरिके मन भावति खण्डित वचन
 कहत सुख होत ।
 सांभ बोल दै जात सूरप्रभु ताके आवत
 होत उदोत ॥

३

ललिताकी सुख दै गयो श्याम ।
 आसु बसेगिबेनि त ह्यारे प्राण पियारी हो तुम वाम ।

यह कहिके अनतहि पगुधारे बहु नायकके
 भेद अपार ।
 सांभ सास आवन कहि आये सोइ बहुत करि
 नन्दकुमार ॥
 बहु बैठी मार गहरि जोवति एक एक पल
 वातत एक जाम ।
 सूरश्याम आवनकी आसा सेज सम्बारति
 आकुल काम ॥

४

ज्वाव नही पिय आवही क्यों कहा ठगाने ।
 मंतबहोको वकतिहो कलु आजु भुलाने ॥
 हा नाहि नही कहतहो मेरो सो काहे ।
 आये क्यों चकत भये मोको रिस दाहे ॥
 कहां रहे का सो वन्यातहइ पगुधारे ।
 सूरश्याम गुण रावरे हिरदे विसारे ॥
 काहेको कहि गये आइ है काहे भूटी सोइ खाये ।
 ऐसे ने जाने नहि तुमको जे गुण करि तुम
 प्रगट दिखाये ॥
 भली करि दरसन यह दीन्हो जनम जनमके
 ताप नशाये ।
 तव चित ये हरि ने कचि रातन तुमको
 हिरदे माभ बसाये ॥
 सत्य कहत तोसहो भूल्यो इतनेहि सब
 अपराध समाये ।
 सूरदास सुन्दरी सयानी हंसि हंसि लीन्हा
 हरि अहु मिलाये ॥

५

नयन कोर धरि हरिके प्यारी बसकौन्ही ।
 भावकखो अखि आलको ललिता लखि लीन्ही ॥
 तुरत गयोरि सुन्दरी केहे हंसि कण्ठ लगायो ।
 भली करी मन भावते एसेहु में पायो ॥
 भवन गई गहिवाङ्ग लै निशि जागे जाने ।
 अङ्ग शिथिल निशिअम भयो मही मनमान ॥

अंग सुगन्ध मरदन कियो तुरतहि नहवाये ।
अपने कर अङ्ग पौछिके मनसाध पुराये ॥
घोर आभूषण अङ्ग दे बंठे गिरिधारी ।
रुचि भोजन प्रियकां दियो सूरज बलिहारी ॥

८

रह छवि अङ्ग निहारत ख्याम ।
कबहुं क सुखन देत उरज धरि अति सकुच
तितनु वाम ॥
सनमुख नयन न जोरत प्यारी निरखत भए पिय ऐसे ।
हाहा करति चरण कर टेकति कहा करत ठङ्गनेसे ॥
बहुरि धाम रसभरे परस्पर रति विपरीति बड़ाई ।
सूरश्याम रतिपति विह्वल करि नारि रही सुरभाई ॥

१०

पिय प्यारी तनु अमित भये ।
सकुचि उठि नागरी पटलोहो श्याम लज्जाइ गये ॥
सावधान रति आन्तर भर पिय प्यारी तननहि हेरत ।
नागरी कुटिल कटाक्षनि हेरति भुङ्कुटि वङ्गत फेरत ॥
एसे गुणविनि तुमहि शिखाये तीर निकट
कसि दही ।
सूर कहति पिय सो चिरवाणी आलु तुमहि
मै चीन्हो ॥

११

सारङ्ग सुत प्रति तनयाके तटठारे नन्दकुमार ।
बहुत तपत जारासमे सविता ताकी सुतासङ्ग
करत विहार ॥
गुडाकेश जननी पति बाहन ता सुतके
अङ्गसमे सिङ्गार ।
चन्द योहधोर आठ हंसदे ब्याल कमलवती सविचार ॥
एक अक्ष भोषोरवता उपाख चन्दोदधि कमल मभार ॥
सूरदास यह युगल रूपकीं रे मन राखि
सदा उरधार ॥

१२

देखि सखि पांच कमल हे शम्भु ।
एक कमल वक्ष उरराजत निरखत नयन अचम्भु ॥
एक कमल प्यारी कर लौहे कमल सुक्रीमल अङ्ग ।
युगल कमल सुतकमल विचारत व्रीतित कबहुं भङ्ग ॥
षड्जम कमल मुख सनमुख चितवत बहुविधि
रङ्ग तरङ्ग ।

तिनमें तीनि सोमवसी वसतीनि सुकश्रप अङ्ग ।
जेइ कपिल सनकादिक दुर्लभ जिनहो निकसी गङ्ग ।
तेइ कमल सूर नित्य चिन्तत निपट निरन्तर सङ्ग ॥

१३

देखि सखि चार चन्द एक ठोर ।
निरखति बैठि नित वनि प्रियसङ्ग सूरसुताको चोर ॥
हे शशि श्याम नवल घन सुन्दर हे कीन्हे विधि गोर ।
तिनके मध्य चार सुकराजतहे फल आठ चकोर ।
शशि शशिसङ्ग प्रवाल कन्द पलि अरुभि रङ्गो
मन मोर ।
सूरदास प्रभु अतिरति नागर बलि बलि युगल
किशोर ॥

१४

देखि री प्रकट द्वादश मोन ।
षड् इन्दु द्वादश तरनि शोभित विसल उडुगन तोन ॥
षट् अष्ट अम्बुल कीर षड्मुख कीकिलासुर एक ।
दश दोइ विद्रुम दामिनो षटति नवध्यान विशेष ॥
त्रिवली षट् ओफल विराजत परस्पर बरनारी ।
ब्रजकुंवरि गिरिधर कुंवर पर सूरजन बलिहारि ॥

१५

देखि सखि तीस भान ईकठौर ।
ता उपर चालोस विराजत रुचि न रहि कहु चौर ॥
धरते गगन गगनते धरतो ताबिचरहे विस्तार ।
गुण निर्गुण सागरकी शोभा विनु रवि भयो भुनसार ॥
कोटिक कोटि तरङ्गे उपजत जो गजगति चितलाउ ।
सूरदास प्रभु अकथ कथाकी पण्डित भेद बताउ ॥

१६

रवि हरि रिपुकीं न हृपावति ।
 मेरु सुतापति ताके पति सुता ताकीं क्योन मनावति ॥
 हरि वाह्न तवोहन उपमा सोतै धरे दृढावति ।
 नव अरुसात बीस तोहि सोहत काहे गह्वर लगावति ॥
 सारङ्ग वचन कछो करि हरि सौं सारङ्ग वचन
 न भावति ।
 सूरदास प्रभु दरस विना तुव लोचन नोर बहावति ॥

१७

महोदधितनया सुत रिपुगति ममनो सुनि
 वृषभान दुलारो ।
 दादुर रिपु रिपुपति हे पढाई सो चितवेष विहारो ॥
 अलिवाहन रिपुवाहन रिपुकी तपति भई अतिभारो ।
 सोति सभारि प्रभु खिदितहै ही बलिजाड तिहारो ॥
 मारुत सुतपति रिपुपति पत्नीता सुत नारो विसरो ।
 सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकीं को इटन्हा
 तिह प्यारो ॥

१८

एहि तेरे इन्द्रावन बाग ।
 सुनि राधिका कदम्ब विटपको साख एक अमी
 फल लाग ॥
 श्याम अरुष कहु अधिक प्रीत छविवर निजहि
 नहि अङ्ग विभाग ।
 अति सुपन्न सुरलीके बरसत सुद सुद परत
 उमगि अनुराग ॥
 ब्रजवनिता बरवारि कनकमय रोके रहत सुधा
 सुरनाग ।
 तुव प्रताप छुइलक तन सुन्दरि सुकमनि
 मकट कोकिल काग ॥
 सं मालिनि जतन निज तज गयो सोचत सुहय
 परे कर दाग ।
 सूर सुन्नम छठि भेटि परस्पर पिठ पोयुष
 पाये बरभाग ॥

१९

जलसुत प्रीतमसुत रिपुवन्धव आयुध आनन
 विलसु भयोरी ।
 मेरु सुतापति वसत जहांपे कोटि प्रकाश
 रिसाह गबोरी ॥
 मारुत सुतपति अरिपुरवासी पति वाहन
 भोजन न सुहाई ।
 हरसुतवाहन अंसन सनेही मानहु अनल
 देह दीलार्ह ॥
 उदधिसुतापति ताक लाहनता वाहन कैसे समुभावे ।
 सूरश्याम मिलि धर्म सुवन रिपुता अब तारहि
 सलिल बहावे ॥

२०

हरिसुत पावक प्रकट भयो ।
 मारुतसुत वन्धव पितु प्रोहित ता प्रतिपालहि
 छाड़ि लयो ॥
 प्रीति पतिताको फनिताहनता वाहन घनसुतलनयो ।
 मीनसुतासुत तात कहतहैं तापरकासत सकल लयो ॥
 शशि सङ्ग सरोज कलाकी तार्ने मेरे मनमाभ टयो ।
 शलसुताको रूप न आवत तादिन को त्रिय
 नयन लयो ॥
 सारङ्गसुता वाके सुत को हेतु ता सुत सौं
 सुखनाथ हयो ।
 सूरदास निरन्तररिवके अस अजहुं न मोहन
 दरसु हयो ॥

२१

मिलवहु पथिक मिचहि आनि ।
 जलजसुतके सुतकी रुचिने भई रसकी हानि ॥
 उदधिसुतासुत अवलि उरपर इन्द्र आयुध जानि ।
 गिरिसुतापति तिलक शर करु हतन साथक तानि ॥
 पिनाकीसुत तासु वाहनभक्तको भक्त वखानि ।
 शाखान्मगरिपु मलयजहु कतहुं तासन जानि ॥
 धर्मसुत अरिके सुभ इच्छ तजौ गिर अरि पानि ।
 सूरदास विचित्र विरहिनि चूक मन मन मानि ॥

कहियो अति अचला दुख पाटे ।
हरिन पठनपति प्रचेत ज्यो है बार बार समुभाटे ॥
सारङ्गारि सुतापति रिपुवारिपु तारिपु तजनहि ज्योवे ।
हरिवाहन वाहन पतिघातकता सुत आनि वचावे ॥
सुररिपु गुरुवाहन तारिपुता चढ़ि भेषु दिखावे ।
सूरदास प्रभु तुम्हारि मिलनको विरहि नितपति
सुभावे ॥

२१

कहानो मन राखिये विरमाई ।
इकटक शिवधर नेत्र न लागत श्यामसुता
सुत धरणि आई ॥
हरिवाहन इव तासु सहोदर रतिपति उदित
मुराहि महि जाई ।
गिरिजापति रिपुनखसिख आवत ताम
सुधापिय कथा सुनाई ॥
विरहिनि विरह आपु वसन्तीनों लंव
कमल जिनु पाइ बुलाई ।
बेगी मिली सूरके स्वामी उदधितनयापति
मिलिहें आई ।

२२

गोरिपु तारिपु तासुत आयुध प्रीत मतहानि नारे ।
सो विरहि सभव जात न तेंतहां रहै प्राण हमारे ॥
सो बरजाही गवनकियो हठि खादल वधर सयल ।
सुनि नन्दतात मुख जोवति कम मलाइ अति प्याल ॥
भोरभये पशुवन् न हटे ज्यो विरहिनि रति भाने ।
इहि विधि मिलहि सूरको स्वामी चतुर होइ
सो जाने ॥

२४

सोवति राधा लिखति नखनि मही वचन कहत
कण्ठ जलतास ।
चिति पर कमल कमल पर कदली कदली
पहुज कियो प्रकाश ॥
तापर अलि सारङ्ग सारङ्गपति सारङ्गरिपु
कियो से कुणवास ।

तहं अरि पन्व पिता जुग उदित खारिज विन्व
रङ्ग भव पास ॥
सारङ्ग सुखके परत अम्ब ठरि मानहु मिव
पूजति लपत विनाश ।
सूरदास प्रभु विनु हरिहर रिपु दाहत अङ्ग
दिखावत वास ॥

२५

हरिमें हरि नख कहि जुगये ।
हरि दरसत सुदित उदित हरि हरि
ब्रज हरि सु लये ॥
हरि रिपु तारिपु तारिपुके सुत हरि हरि
विनु अधिक वए ।
हरि तनया सोधित जलदह महुं हरि अभिमान
गंवाए ।
अब हरि वदनको पा कुविजा हरि सूरदास
मन भाए ॥

२६

सखोरी हरि विनु दुख है भारी ।
सिन्धक सुतह भूषण निकट जैसे तैसी
गति भइ हमारी ॥
शिखरवध अरि काहे निवारति पुहप धनुसके विशेष ।
चहु अवा उरहार चासतें अकि नन्दतिया वपुरेख ॥
घट असु असनसमें सुख आनन अभी गलित जैसे शेष ।
जलधर ब्योम आवकत सुंदत नैन छोड़ बदलेख ॥
हिजपति प्रभु मोहि आनि मिलावहु हरत
आरति जानि ॥
जैसे हारिकवन्ध प्रकट भयो हरि आनन्द रतिमानि ॥
पर आनन वाहन काननमें घनरजनी तहवादी ।
सूरदास मिलि रसिकाशरोमणि सुनिवा
त्रिक पिकादी ॥

२७

ओनव नागरी प्यारी, तुं श्रीवृन्दावनकी राणी ।
विहारिणी साङ्गिणी प्यारी, तेरी को रति
जगत बखानि ॥

३८

जगतने जगिमगि रक्षा जसविनु कृपा केसे बुभिये ।
अभिमान अन्ध अनेक कर्मी ताहितें नहि सुभिये ॥
करो कृपा परम उदार माहि बारम्बार सुनाइये ।
बलिजांड श्रीवृषभानुनन्दिनी सुजस तुम्हारो गाइये ॥

३९

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरो मोतिन माग सम्बारी ।
श्रीविहारिन लाडिली, तेसीये पहिरन भूमकसारी ॥

४०

सारी श्रीभीष्ट फूलेल सोवे प्रकटवेनी देखिये ।
धसी सीस सुभिरतें मानों भंवर पाति विसेखिये ॥
ललित कटिपर लाल लेहंगा नीलकण्ठुकि कसतनी ।
प्रथम जीवन जाति तनकी जात नही कविपे भनी ॥

४१

श्रीनवनागरी प्यारी, हे चन्दवदनी हे मृगनयनी ।
विहारिन लाडिली प्यारी, ते सीये चक्र कतन
शुकपिकवेनी ॥

४२

वाणा सो पिक शुक नासिका प्यारी अधरविम्ब-
विलासिनी ।
कनककुण्डल अलक भलके कपोलमें मृदुहासिनी ॥
ललित मुखभर पानवारी नासिका मुक्ता चरे ।
चिवुक सांवल विंदुकौ छवि कौन त्रिय सरभर करे ॥

४३

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरो विन्दी जगमग ताई ।
विहारिन लाडि प्यारी, यह छवि मांये वरनी
न जाई

४४

वरनी न जाय यह छवि मांये निरखि
श्याम सरावही ।
दशन दामिनी अवरराते लाल अति सुख पावही ॥
गौर भाल विशाल लोचन वरणी अतिछवि राजही ।
मोह काम कमान मानो वान मनमथ साजही ॥

४५

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरे छोटी छोटी लरगज मोती ।
विहारिन लाडिली प्यारी, तेसीये वांछ जङ्गलो पोती ॥

४६

पोतपुष्प जराववोको रही उरपर जगमगी ।
हे असपर मख तूलकोदा दृष्टि जिनि ओर की लगी ॥
हेकर वांकन जड़ित दोउ चारुचुरा विराजही ।
रतनजड़ित अमोल सुन्दरी अङ्गुरीयन छवी छाजही ॥

४७

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरे पाय नुपुर भनकार ।
विहारिन लाडिली प्यारी, तेसीये मधुरो चरण
विहार ॥

४८

मधुरो चरण विहार यह गति राजहंसहि अरपिये ।
जघन सघन सरोज भारा देखि भिंह कटि उरपिये ॥
निताम्बनी किङ्किनी प्यारी निकटहो नोवोवनो ।
भवाभलके देखि काउ रोकि वहे श्यामल धनी ॥

४९

श्रीनवनागरी प्यारी, तुं गियतन देखि मुनि
सुसिकानी ।
विहारिन लाडिली प्यारी, उनवंसीहु निरत न जानौ ॥

५०

न जानि वंशी गिरत करतें पोतपट सखि भौ पखो ।
रहे जैसे चित्र केसे पगन पुहमोतें टखो ॥
भुकि जात कछु अनगातको सुधि अङ्ग अङ्ग
शोतल भए ।
नृपति राजकुमारहो सखि भुजाभरि भासिनो गहे ॥

५१

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरे सुवस वसे लु कन्हाई ।
विहारिन लाडिली लालन, अङ्ग अङ्ग रहे अरुभाई ॥

५२

अङ्गो अङ्ग लाल लुभाई राखे रसिक शिरमुकुटमणि ।
गुण रूप शोल सुहाग सुन्दरि ओर सखि
नृपवत गणि ॥

ब्रजराज नवलकिशोरके कोउ आर चित
नही आवही ।

बलि जाउ श्रीवृषभानुनन्दिनी तोहि वेणु वजावहो ॥

१५

श्रीनवनागरी प्यारी, तोकुं श्याम मनोहर बोलौ ।
विहारिन लाडिली प्यारी, तुं उठि चलि नवल
किशोरी ॥

१६

उठि चलि नवल किशोरी राधे नवललले बुलावहो ।
सुन्दर श्याम सुजानहों सखि बार बार कहावही ॥
छाड़ि मान सन्धारि प्यारी बार बार मनावही ।
बलि जाउ श्रीवृषभानुनन्दिनी तो हित मोहि
पठावही ॥

१६

श्री नवनागरी प्यारी, जस तेरो हि पिय मगभावे ।
विहारिन लाडिली प्यारी, से जस आपुहि
श्रीमुख गावे ॥

१७

गाय तो जस आपे श्रीमुख तुही तनमन रमिरही ।
धन्य तुं धनप्राणजीवन सपत करि मोषों कही ॥
अब करो विविध विहार भामिनी एतो
रगर न कीजिये ।
बलि विष्णुदास विचित्र जोरी लोचननि सुख दोजिये ॥

१७

ब्रजको रीति अनोखी रा माई ।
जो कोउ नन्दभवनमें आवे ताको मनहरि
लेत कन्हाई ॥
कण्ठ वधना मुख माखन सोई तनकी कहा
कहों सु निकारै ।
घुटसन चलत छाँहको पकरत किलकृत हंसत
खेसत अङ्गनाई ॥

मात यशोदा लेति बलंथा मनमें मोदवढ़यो
न समाई ।

प्रभु कल्याण गिरिधरकी यह छवि पलककी
घोट सझी नही जाई ॥

१८

हरि मूरत विनु देखे कल न परे ।
जा दिनते मीरो दृष्टि परे मीरे नेनते उरते नटरे ॥
श्यामसुन्दर मनमोहन लक्षणा प्राणजीवनधन
क्यों विसरे ।

रसिक गोपाल सनेह न छूटे देह सुरति
सखी कौन करे ॥

१९

भोजन भयो भावते मोहन ।
तातोइ जेइ जाहुगे गोहन ॥
घोर खण्ड खाचरो सम्बारी ।
मधुर महेरी गोपनि प्यारौ ॥
राइ भोग लियो भात पसाई ।
मूंग रहरो हाँगुलगाई ॥
सद माखन तुलसी दे छायो ।
घृत सुवास आचारनि लायो ॥
पापर बरी आचार परम सुचि ।
अद्रक अरुनीबुं अनिहो हे रचि ॥
सूरन करि तरि सरसतोरई ।
सेमसांगरो भूमकि भोरई ॥
भरता भटा खटाइ दानी ।
भाजी भली भांति दस कौनी ॥
सागुच नाम रुसा चोराई ।
सोरा अरि सरि सोसर साई ॥
बंधुवा भली भांति रचि राध्यो ।
हो गु लगारै लाई दधा साध्यो ॥
मोइ पर पर सांगफरो पुनि ।
ठेढ़ो डेड़ सझाँ किलिये पुनि ॥
कन्दूरी और ककौवा फौरि ।
कचरी आर चकड़ा सौरि ॥

बने बनाय करैला कीन्हे ।
 लोन लगा तरत तरि लोन्हे ॥
 फूल फूल सहिजना छाँकि ।
 ममैरुचि होइ लाजकं शौकि ॥
 फूल करोल कलौ पाक करिब्रम ।
 फरो अगस्ति करी अमृत सम ॥
 अरुइहि अंधिला दइ खटाई ।
 जीवत कदुर सजात लटाई ॥
 पैठा बहुत प्रकारनि काण्हे ।
 तिलतौ सबे खाद हरि लोन्हे ॥
 खीरा राम तुरैया तामे ।
 अरु विन रुचि अङ्गुर जिय जामे ॥
 सुन्दररूप रतालू रातो ।
 तरि है लोन्हे अवही तातो ॥
 ककरी कचरा अरु कचनाखो ।
 सरसनि मोन निखाद सम्बाखो ॥
 कचुक भाति करा करि लोन्हे ।
 दै करो बहरदा रङ्ग भीन्हे ॥
 वरी वरिल अरुवरा बहुत विधि ।
 खारे खाटे मोठ पयोनिधि ॥
 पानो ना राइ तौ पकौरी ।
 उभकौरी मुगछो सुठि सौरौ ॥
 अमृतइ डर हरछे रससागर ।
 बेसन सालन अधिकौ नागर ॥
 खाटो कटो विचित्र बनाई ।
 बहुत बार जेवत रुचि भाई ॥
 रोटी रुचिर कनिक बेसन करि ।
 अजवाइनभेधो मिलयो धरि ॥
 अवहि अङ्गु करि तुरत बनाई ।
 जी भाज भजि ग्वालनि सङ्ग खाई ॥
 मांडो मांडि दुहरे सुपरी ।
 बहु घृत पाइ आपुही उपरी ॥
 पूरीसपूरक वीरो कौरौ ।
 सदल सउज्जल सुन्दर सौरौ ॥

सुचइ ललित लापसो सोहे ।
 खाद सुवास सहज मन मोहे ॥
 मालपुवा मांखन दधि कोन्हे ।
 याइ अमित रविसामर लोन्हे ॥
 लावन लाइ लागत नोके ।
 सेव सुहारी घेवर धौके ॥
 गुंभागुन्दे गाल मसूरो ।
 मेश मिले कपूरन पूरो ॥
 शशी सम सुन्दर सजल अन्दरसो ।
 उपर कनो अजनु जनु बरसो ॥
 बहुत जलेब जलेबी रोरो ।
 गहिन घटत सुघाते थोरो ॥
 देखत हरषत होत है समो ।
 मनहु वुदबुदा उपजि अमो ॥
 फेनो घुरि मिला पयसङ्गा ।
 मिथी मिथीत भई एकरङ्गा ॥
 साज्यो दह्या अधिक सुखदाई ।
 ता उपर फूलि मधुर मलाई ॥
 खोवा खोइ अवटिन्हे राख्यो ।
 सुई मधुर मोठो रस चाख्यो ॥
 वासोधी सिखरिन अति सांधी ।
 मिले मिरचि मेटति चकचांधी ॥
 छाछि छवोनो धवी धुंगारो ।
 भरु है उठत भाइको न्यारो ॥
 इतने जतन यशोदा कीन्हे ।
 तव मोहन बालक सङ्ग लोन्हे ॥
 बंटे भाइ हंसत दोउ भंया ।
 प्रेम सुदित परसति है मैया ॥
 थार कटोरा जरित रतनकं ।
 भरि सब सालन विविध जतनके ॥
 पाहिले पनवारा परसायो ।
 तव आपुन कर कौर उठायो ॥
 जीवत रुचि अधिकौ अधिकैया ।
 भोजन बहु विसरत नहि गंया ॥

शीतल जल कपूर रस रचयो ।
 सो मोहन निज कर रुचि अश्रयो ॥
 महरि मुदिन मन लाड लडावे ।
 ते सुख कक्षां टेवको पावे ॥
 धरित शीगडबा जल ख्याइ ।
 भस्यो सुनु खरिकाले आइ ॥
 पोरे पान पुराने वीरा ।
 खात खात टुति दांतनि होरा ॥
 खगमद कमक कपूर कर लोन्हा ।
 बाटि बांटी ग्वानानिकीं टोन्हा ॥
 चन्दन घोर अरगजा आन्हा ।
 अपने कर बलकं अङ्ग वान्यो ॥
 ता पाछे आपनहु लाया ।
 उवखो बहुत मखनि पुनि पायो ॥
 सूरदास देखो गिरिधारो ।
 बोलि दइ हंसि उठ निधारो ॥
 यह जी वनार सुने जो गावं ।
 सो निशु भक्त अभय पद पावै ॥

४०

देखि सखी ब्रजते वन जात ।
 राहि निज सुमति सुतकी कवि गौर श्याम
 हार हलधर गात ॥
 नीलाम्बर पीताम्बर ओढे शोभा कहु कहा
 नहि जात ।
 युगल जलद युग तडित मनहु मिलि अरस
 परस जोड़तहै नात ॥
 सोस सुकुट मकराकतकुण्डल भलकत विवि
 कपाल इहि भांति ।
 मनहु जलद युगल रवि ता पर चन्द्रधनुषकी कान्ति ॥
 कटि कछनी कर लकुट मनाहर गाचारण
 चले मन अनुमानि ।
 ग्वालसखा विधे श्रीनन्दनन्दन बोलत वचन
 मधुर मुसकानि ॥

चिते रही ब्रजकी युवती सब आपुसहो में
 करत विचार ।
 गोधनद्वन्द लये सरज प्रभु हन्दावन गये करत बिहार ॥

४१

अथापुरका नथ ।

नन्दसुत लाडि खहो सब ब्रज जीवन प्राण ।
 बार बार माता कहे हो जागहु श्याम सुजान ॥
 प्र. व
 जसुमति खेति बलाइ भोर भयो उठो कन्हाई ।
 सङ्ग लिये सब सखा हार ठाढे बल भाई ॥
 सुन्दर वदन देखाइये हरो नैनके ताप ।
 नयनकमल सुख धाँइये कहु करो कलेउ आप ॥
 माखन रोटी लैहो सरस दधि रनि जमायो ।
 घट्टरसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो ॥
 मोसो लीजे मागिके जोइ जोइ भावे तोहि ।
 सङ्ग जेवहु बलराम तुमही रुचि उपजावहु मोहि ॥
 तब हंसि चितये श्याम सेजते वदन उघाखो ।
 मानहु पयनिधि मथत फेन कटि चन्द्र उजाखो ॥
 सखा सुनत देखन चले मानहु नैन चकोर ।
 युगल कमल जनु इन्दु पर हा बैठि रहै अति भोर ॥
 तब उठि आये कहा मात जल वदन पखाखो ।
 बोलि उठे बलराम श्याम कत उछा सराखो ॥
 दाउ जू काहि हंसि मिले बाँह गहो बंठाई ।
 माखन रोटी सद दछो हो जेवत रुचि उपजाई ॥
 जल अश्रया मुख धाइ उठे बल मोहन भाई ।
 गाइ लइ सब घेरि चले वन कुंवर कन्हाई ॥
 टेर सुनत बलरामजी आये बालक धाइ ।
 लै आयो सब जोरिकेहा घरते वहरा गाइ ॥
 उखनि कान्ह सो कही आजु हन्दावन जंये ।
 यमुनातट टण बहुत सुरभगण तंहा चरैये ॥
 ग्वाल गाइ सब लै गये हन्दावन समुहाई ।
 अतिहि सघन वन देखिकेहो हराय उठे सब गाई ॥
 कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभगण जोरि चलावत ।
 कोउ कोउ हरा देत परस्पर श्याम शिखावत ॥

अन्तरयामो कहत जिय यह मोहि शिखावत टेरि ।
 कान्ह कहत सबको गइ हो पुनि धोली जो फेरि ॥
 कोउ सुरली कोउ बेणु शब्द शृङ्गी कोउ पूरे ।
 कृष्ण कियो मन ध्यान असुर एक, बरो बख्यो अधूरे ॥
 बालबद्ध बनि राखि हों एक बेर ले जाउ ।
 कछुक जनाउ आपुन पोहो अवनी रछो सुहाउ ॥
 असुर कुलहि सहारि धरनीके भार उतारौ ।
 कपट रूप रचि रछो दगुज येहि तुरत पछारौ ॥
 गिरि समान धरि अगमतन बैख्यो वदन पसारि ।
 मुख भितर बन घन नदी हो मायाछन्द करि भारि ॥
 बाँठ गये मुख ग्वाल धेनु बहुरा सब लीये ।
 देखि माया वन भूमि रहे तृणद्रुम कृषि कौये ॥
 कहन लगे सब आपुमे सुरभि चरै अथाय ।
 मानहु पर्वत कन्दराहो मुख सब गये समाय ॥
 सब मुख गये समये असुर तब चोच सङ्कोखो ।
 अन्धकार इमि भयो मानो निशि वादर जोख्यो ॥
 अतिहि उठे अकुलाइके ग्वाल बह सब गाई ।
 बाहि बाहि कहि कहि उठे हो परे कहा हम आई ॥
 धीर धीर कहि कान्ह असुर यह कन्दल नाहो ।
 अनजानत सब परे अघा सुखभितर माहो ॥
 जिय त्याग्यो यह सुनतही सबको सके उबारि ।
 यातें दूनी देह धरी तब असुर न सक्यो सम्भारि ॥
 शब्द कस्यो आघात अघासुर टेरि पुकाख्यो ।
 रछो अधर दोउ चापि बुद्धि बन सुरति पसाख्यो ॥
 ब्रह्मदार शिर फोरिकें निकसे गोकुल राई ।
 बाहिर आवहु निकसि केहो मै करि लियो सहाई ॥
 बालक बहुरा धेनु सबे अति मनहि सकाने ।
 अन्धकार मिटि गयो देखि जहं तहं अतुराने ॥
 आये बाहिर निकसिके मन सब किये हुलास ।
 हम अज्ञान कत उरतहै हो कान्ह सदा महे पास ॥
 धन्य कान्ह धनि नन्द धन्य जसुमति महतारो ।
 धन्य लयो अवतार कूखि धनि जिहि दैतारो ॥
 गिरि समान तनु अति अगम पन्नगकी अनुहारि ।
 तुम देखत पल एकमेहो माख्यो दनुज प्रचारि ॥

हरि हंसि बोले बैन सङ्ग जो तुम नहि होते ।
 तुम सब कियो सहाय भयो तब कारण मोते ॥
 हमहु तुमहु मिलि बैठिके वन भोगी करे जाई ।
 बंशीवट भोजन बहुत हो जसुमति दयो पठाई ॥
 ग्वाल परम सुख पाई कोटि सुख करत प्रयासा ।
 कहा बहुत जो भयो सपूतये कुहवसा ॥
 चढ़ि विमान सुर देखही गगन रहे भरि छाई ।
 जे जे धुनि नभ करनहै हो हरषि पुहुप वरसाई ॥
 ब्रह्म सुनी यह वात अमर घर घरनि कहानी ।
 गोकुल लीन्हो जनन कौन यह मै नहि जानी ॥
 देखो इनकी खोज लै सोच पख्यो मनमाहि ।
 सुरश्याम ग्वालनि लिये चले बंशीवटकी छाहि ॥

वस्त्रहरण

ब्रह्म-मोहनलीला

विलासन

हरष भये नन्दलाल बैठ तब छाइकी । भव
 बंशीवट अति सुखद और द्रुमपाश चहुं है ।
 सखा लये तह गये धेनु वन चरत कहुं है ॥
 बैठि गये सुख पाइके ग्वालबाल लये साथ ।
 कांवरि भोरौ लये सखाहो आनि नवायो माथ ॥
 आनन्द दये मधु छाक तुरत तृन्दावन आये ।
 विजन सहस्र प्रकार यशोदा बने पठाये ॥
 श्याम कछो वन चलतही माता सों समुभाई ।
 उततेवे आये सबे हो देखतही सुख पाई ॥
 कान्ह देखि मधु खाक फुलक अङ्ग अङ्ग बढ़ायो ।
 हरि हंसि बोलत ऐन प्रेम जननी पहुंचायो ॥
 नीके पहुंचे आय तुम भलो वन्यो संयोग ।
 बार बार कहि सखनि सौही आजु करे सुखभोग ॥
 वनभोजी विधि करत कमलके पातम गाये ।
 तोरि पान पलास सरस दो नावहु लाये ॥
 भाति भाति भोजन धरे दधि लवनी मिष्टान ।
 वन फल लये मंगायके हो लागे रुचि करि खान ॥

वन भोजन हरि करत सङ्ग मिलि सुवल सुदामा ।
 श्याम कुंवर प्रसेन महर सुत भर श्रीदामा ॥
 कान्हु सबनि मिलि खातहै लै लै कौर छिड़ाय ।
 औरनि देत बुलाइकेँ हो उहकु आपु मुख नाय ॥
 ब्रह्मा देखि विचारि सृष्टि कोउ नई चलाई ।
 मोहि पठयो जेहि सौं पिताहि कहु केहों जाई ।
 देखों धौं यह कौनहैं बाल वछ हरि लीउं ।
 ब्रह्मलोक लै जाउगो हो येहि बुह करि दुख देउं ॥
 अन्तर्यामी नाथ तुरत विधि मनकी जानी ।
 बाल हे दिये पठे धेनु वन कहां हिरानी ॥
 जहां तहां वन ढंढिकेँ फिरि आये हरि पास ।
 सखा सबनि बैठारि केहो आपुन गये उदास ॥
 हरि लै बालक वछ ब्रह्मलोकहि पहुँचायो ।
 फिरि आवें जो कान्हु कहु कोउ नही बतायो ॥
 जान्योई सबमे तवे ब्रह्मा लै गयो हराय ।
 प्रभु तवहो रङ्गन तेहि रूपको हो बालक वछ बनाय ॥
 तात कीन्है और ब्रह्म हृदिनाल उपायो ।
 अपनों करि तेहि जानि कियो ताको मन भायो ॥
 उचाटन मारण समर्थ मह हरि कौनो ज्ञान ।
 अनजाने विधि वह करी हो लये रचे भगवान ॥
 उहे बुद्धि उहे प्रकृति उहे पौरुष तन सबके ।
 वहे नाम वहे भेष धेनु वहरा मिलि रवके ॥
 श्याम कछो सब सखनि कौं ब्यावहु गोधन फेरि ।
 सन्ध्याको आगम भयो हो ब्रज तन हाँकी घेरि ॥
 सुगत ग्वाल लै धेनु चले ब्रज हृन्दावनतें ।
 कान्हुहि बालक जानि उरे सब ग्वालहि मनतें ॥
 मध्य किये लै श्यामको सखा भये चहुं पास ।
 ब्रज धेनु आगे दिये हो आवत करत विलास ॥
 बाजत वेणु विषाण सब अपने रङ्ग गावत ।
 सुरली धुनि गोरभि चलत पग धुरि उड़ावत ॥
 मोर सुकुट शिर सोहई मनहु चन्द कम सीत ।
 आसपास नाचत सखा हो विच हरि गावत गीत ॥
 देखि हरषि ब्रजनारो श्याम पर तन मन धारति ।
 एकटक रूप निहारि रहो भेटति चित धारति ॥

कहां कहे छवि आजुको मुख मखित सुरधरि ।
 मानहु पूरण चन्दमा हो कुहु रङ्गो आपुरि ॥
 गोकुल पहुँचे जाय गये बालक अपनो घर ।
 गोसुत भर गरनारि मिलि अति है करि आदर ॥
 प्रेमसहित वे मिलत हो जे उपजाये आसु ।
 जसुमति मिलि सुतसों कहति है रैनि करत
 कि हि कासु ॥

मै घर आवन कछो सखा सङ्ग कोउ न आवे ।
 देखत वन अति अगम उरोंवि मोहि उर पावे ॥
 बार बार उर लाई के लै बलाई पछि ताय ।
 कालिहुते बेइ सवे हो ब्यावहि गाई चराय ॥
 यह सुनिकेँ हरि हंसै कालि भेरो जाय बलैया ।
 मुख लगी मोहि बहुत तुरत ही दे कहु मैया ॥
 माखन दौनो हाथकेँ यह तब लो तुम खाहु ।
 तातो जल है धामकी हो तनक तेल सो न्हाहु ॥
 तब जसुमति गहि बांह धंहे हरि लै नहवाये ।
 रोहिणी करि जेवनारि श्याम बलराम बुलाये ॥
 जेवत अति सुख पावहो परसति माता हेत ।
 जेइ उठे अचवन लिया हो दुहुं करबीरा देत ॥
 श्याम हो गौंदे देखि माता रचि सेज विछायो ।
 ता पर पोटे लाल अतिहि मन हरष बढ़ायो ॥
 अब मईन विधि गव्वं हरत करत न लागी बार ।
 सुरदास प्रभुकेँ चरितको पावत कोउ न पार ॥

२

ब्रजकी लोला देखि गर्व विधि को गयो । भुव
 त्रिभुवन नायक आनि भये गोकुल श्रीतारो ।
 खेलत ग्वालनि सङ्ग रङ्ग आनन्द सुरारि ॥
 घर घरतें छाकेँ चलो मानससरोवर तार ।
 नन्दनन्दनकेँ सङ्ग चलेहां बालक सखा अहौर ॥
 भोजन सकल मंगई सखनिकेँ आगे राख्यो ।
 खाटे मिठे खाद सब रस लै लै चाख्यो ॥
 रचि सौं जेवत ग्वाल सब लै लै आपुन खात ।
 भोजनको सब खाद लेहो कहत परस्पर बात ॥

देखत गण गन्धर्व सञ्जल सुरपुरके वासी ।
 आपुसमी वे कहत हंसत येई अविनाशी ॥
 देखि सकु अचिरज भये कछो ब्रह्म सो जाई ।
 जाकों अविनासी कहें हो सो म्वालनि सङ्ग खाई ॥
 येहि सुनि ब्रह्म चख्यो तुरत वृन्दावन आयो ।
 देखि सरोवर सलिल कमल तोहि मध्य सोहायो ॥
 परम सुभग तमुना बहै तहां रहै त्रिविध समीर ।
 पुष्य लताहुम देखि केंहो थकित भयो मति धीर ॥
 अति रमणोय कदम छांह रुचि परम सोहाई ।
 राजत मोहन मध्य अवलि बालक छवि पाई ॥
 प्रेममगनछे परस्पर भोजन करत गोपाल ।
 लावहु गोसुत हेरि केंहो प्रभु पठये हे म्वाल ॥
 वन उपवन सब ढंढि सखा हेरि फिरि आये ।
 बहुरा भये अष्टष्ट केहु खोज तुमहि पाये ॥
 सब सखा धैठे रहो मै देखा धौं जाई ।
 वरुहरण हरि जानि जिय हो आप गये बहराई ॥
 जब गोविन्द गये दूरि बालनि हख्यो विधाता ।
 लेहे तुरत मंगार्इ आयके जेहो ताता ॥
 ब्रह्मलोक ब्रह्मा गयो ले बालक बहुरा सङ्ग ।
 प्रभुकी लोला गमो नही विधि क्रियो सर्व अति अङ्ग ॥
 तब चिन्तामणि चिते चिन्त येक बुद्धि विचारो ।
 बालक वरु बनाई रचे ओहो अनुहारो ॥
 करत कुलाहन सब गये ब्रजघर अपने धाई ।
 अति आदर करि करि लियेहो अपनो अपनो माई ॥
 ब्रह्मा क्रियो विचार माई निज गोकुल देखी ।
 करि हे शोक सन्ताप जाइ पितामाताहि पेखी ॥
 आये तहं विधि नाचते घर घर देख्यो आई ।
 सन्ध्या समी होत कीतुहल जहां तहां दुहि गाई ॥
 की यह गोकुल अर किधो मैहो भ्रम भूख्यो ।
 येहि अविनाशी हाहि ज्ञान मेरो भ्रम भूख्यो ॥
 अन्तरयामो जानि धौं हरे बरु ले आई ।
 जगत पितामह संभ्रमो हो गये लोक फिरि धाई ॥
 देख्यो जाइ जगहि बाल गोसुत जहं राख्यो ।
 विधि मन चक्षत भयो बहुरि ब्रजकी अभिलाख्यो ॥

छिनु भूतल छिनु लोकमें छिनु आवे छिनु जाई ।
 एसेहि करत बरष दिन वीते थकित भये विधि पाई ॥
 तब जान्यो हरि प्रकट ज्ञान चितमें जब आयो ।
 धिग् धिग् मेरो बुद्धि कृष्ण सौं वर बढ़ायो ॥
 लै गोसुत गोपाल शिशु शरण गयोहो साध ।
 आरिहु सुख अस्तुति करे प्रभु अमो मोहि अपराध ॥
 अम जानतहो करो तुमहि सौं मै बरिआई ।
 ये मेरे अपराध अमहु त्रिभुवनके राई ॥
 अ्यों बालक अपराध शत जननो लेति सन्धारि ।
 शरण गये राखत सदा हो आगुण सकल विसारि ॥
 अ्यों खद्योत विजहि ताहि अ्यों तिमिर न सावे ।
 दीपक बहुत प्रकाश तरणो सम क्यो कहि आवे ॥
 मै ब्रह्मा एक लोकको अ्यों मूलरि फल जोव ।
 प्रभु तुम्हारे ये करील प्रतिहो कोटि ब्रह्मा अव शिव ॥
 मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया ।
 मिथ्या है यह देह कहेअ्यों हरि विसराया ॥
 तुमि विनु जान जीव सब उतपति प्रलय समाहि ।
 एरण मोहि प्रभु राखिये हो चरणकी छाहि ॥
 कोजे सलि ब्रजरेणु देहु वृन्दावन वासा ।
 मांगा इहे प्रसाद और नाहो मेरे आशा ॥
 जोइ भावे सोइ करौनता सलिल हुम गेह ।
 म्वालवालको भृत्यकरा हो मनहि सत्यव्रत देह ॥
 जो दरशन नर नाग अमर सुरपति हु न पायो ।
 खोजत युगपरे वीति अन्त मोहन देखायो ॥
 यह ब्रजपारम नित्य है मै अब समुझौं आइ ।
 वृन्दावन रजरङ्गे रहौं मोहि ब्रह्मलोक न सोहाई ॥
 भवगत वार वार शेष म्वालनिक गांड ।
 आजुनियो कहु जानिभछ करि मेदर पुरांड ॥
 अब मेरे निजु ध्यान वहे रहो मृदुनित खाई ।
 और विधाताकी दिये होमै नहि छाड़ां पाई ॥
 तब प्रभु बोले आप वचन मेरो अवमानो ।
 और कहि विधि करौं तुम हितौं कोन सयानो ॥
 तुम ज्ञाता कर्म धर्मके तुमते सब संसार ।
 मेरो माया अति अगम कोहो कोउ न पावै पार ॥

श्रीसुखवाणी कहत विलम्ब अब ने कु न लावहु ;
 ब्रजपरिक्रमा करहु देहके पाप नशावहु ॥
 तुरत जाहु कहि लोककों विधिकीनी मनुहार ।
 ब्रह्मा करि अस्तुत चले हो हरि दीनो उरहार ॥
 धनि बहुरविकि वान जिन्हहि तें दरसन पाये ।
 सरमेरो भयो धन्य कृष्ण माला पहिराये ॥
 धनि जसुमतिज निवसकिये अविनाशी अतोरि ।
 धनि गोपी जिनके सदन हो माखन खात सुरारि ॥
 मथुरा आदि अमादि देहधरि आपुन आये ।
 धनि देवे वसुदेव पुत्र मागे तुम पाये ॥
 आरि वदनमे कथा कहौ तुझारि मंहिमा गाई ।
 सहमा जन निसदिन रटे होत उनगाइ माई ॥
 गाइ चराते ग्वालन प्रेम करत देहि ध्यान लगायो ।
 ते ब्रजवासिन सङ्ग रहत अति प्रेम बढ़ायो ॥
 वृन्दावन ब्रजको महत्त्वका पेंवर ग्यों जाई ।
 अतुरानन पद परसिके हो गयो लोक सुख पाई ॥
 हरि लीहो अवतार पार सारद नहि पावे ।
 सतगुरु कृपा प्रताप कछकता तेकहि आवै ॥
 सूरदासके से कहे महपति न अवतार ।
 शेष सहसमुख जपत सदा हो शिव न पावत पार ॥

१

माधोज जोजनधें बिगरे ।
 सुनि कृपान करुणामय कबहु प्रभु नहि चित्त धरे ॥
 जोसि सुजो जननी जठरगत शत अपराध करि ।
 तत्तन यहत तोषि पोषि चित विकसित अङ्गभरे ॥
 द्विज रसना नादलि दुखित होत तबतो रिस
 काहि करे ।
 कृमिहतको भाव सुशील सुशीतल रिपुतन तापहरे ॥
 घरणी धंसि हल हतन कृषीकरि वेर बीज सचरे ।
 सो सनमुख सहित सतोगुण ससिवह फरणि फरे ॥
 करे नकरण अन्त आज कहि कहि विधि चरण परे ।
 यह कलिकाल बनत नहि मोषो सूर शरण हि धरे ॥

अथ कालीदमन लीलावली

विलास

नारद कहि समुभाइ कंस नृपराजको ।
 तब पठयो ब्रजदूत पुहुपके काजको ॥ भ. व.
 तब पठयो ब्रजदूत सुनी नारद सुखवाणी ।
 बारबार विधिराल कंसमुख अस्तुति मानी ॥
 धन्य धन्य सुनिराज तुम भलो मन्त्र दियो मोहि ।
 दूत चलायो तुरतहो हो अवहि जाइ ब्रजजोहि ॥
 यह कहिये तू जाइ कमल नृप कोटि मगायो ।
 पत्र दिया लिखि हाथ कही बहु भांति जनयो ॥
 कानि कवन नहि आवहो तो तुमकों नहि चैन ।
 सीर नवाइ करजोरि केंहो चलेइ दूत सुनिवेन ॥
 तुरत पठायो दूत नन्दघर हो मैं पायो ।
 कमल पुहुपके भार कंसनृप वेगि मगायो ॥
 कालि न पहुंचे आइके तब वसि हो ब्रजलोग ।
 गोकुलमें जे सुख किये हो ते करि हो भोग ॥
 जौ न पठावहु पुहुप कहोगे तेतो मोकों ।
 ठारेगे नृप तेरे वसन उपहो नहि ओकों ॥
 यह जानु गोपनि समेत पकरि मगावहु कालि ।
 पुहुप वेगि पठाये बने हो जोरे वसो ब्रजपालि ॥
 यह सुनि नन्द उराइ अतिहि मन मन अकुलाने ।
 यह कारज क्यों होइ का न अपनो करि जाने ॥
 और महर सब बोलिके लै कंसो करे उगाइ ।
 कालि प्रात ब्रजमारि है हो वांछि सबनि ले जाइ ॥
 वन मोले को नाम धर्यो कहि पकरि मगावन ।
 ताते अतिभयो सोच अलगत सुनि सोहि भगवन ॥
 यह सुनि सिरनाये सवनि मुखहि न आवे बात ।
 कही कहा अब कीजिये हो कैसे मिटि है घात ॥
 के बालकनि मगाइ जाहि लै आन भूमि पर ।
 वरु मेको नेजाइ श्याम बलराम वचे धर ॥
 मुहरि सबे ब्रजनारिसों कहि पुर्कति कोउ पाठ ।
 जनमहितें करवर टरीहो अबकौ नही वचाउ ॥
 कोसकहै दे दे दाम नृपति जितनो धन चाहे ।
 कोउ कहै जैये शरण सबे मिलि बुधि अवगाहे ॥

येही सोचत सब पगिरहे कहुं नही निरवरे ।
 ब्रज भीतर नन्द भवनमें हो घरघर इह विचरे ॥
 अन्तरजाभि जानि नन्दसों बूझत बात ।
 कहा करत ही सोच कही कछु मोसों तात ॥
 कहा कहीं भेरे लाड़ले कहत वड़ी सन्ताप ।
 मथुरापतिके जिया कछु हो तुम पर उपन्यो पाप ॥
 कालीदहके पुहुप मागि पठये हमसो वान ।
 तबते मो जिय सोच जवहि तें बात परो सुनि ॥
 जो नहि पठवहि कालिहा तौ गोकुल देख लगाइ ।
 मो समेत नन्द तुम हो कालिहो लेइ बंधाइ ॥
 यह कहि पठयो कंस तवहि तें सोच पछो मोहि ॥
 प्रथम पूतना आई बहुत दुःखदें जु गइ तोहि ॥
 ढणावर्तके घात तें बहुत वच्यो दुख पाय ।
 सकटा केसी तें बच्यो हो अब काकरे सहाय ॥
 अघा उदर तें वच्यो बहुत दुख सख्यो कन्हाइ ।
 वका रह्यो सुखवाइ तंहा भंयो धर्म सहाइ ॥
 इतने करघर है टरे देवनि करे सहाय ।
 तबते अब गाढो परोहो मोको कछु न सुहाय ॥
 बाबा तुम हो कहत कौनधों तोहि उबारे ।
 सोइ ब्रज भीतर प्रकट कंस गहिकंस पकारे ॥
 यह जब ही हरि सों सुनी नन्द मनहि पति आई ।
 गगन गिरत जो सङ्गरह्यो हो सो करिलेइ सहाई ॥
 नन्दहि यह समुभाइ कह उठि खेलन धाये ।
 जहं ब्रजबालकहु हे तुरत तहं आपुन आये ॥
 गोपसुतनिसों यह कछो खोन खेद मगाइ ।
 श्रीदामा यह सुनतहो हो घरतें ल्यायो जाइ ॥
 सखा परस्पर मार करे कोउ कानि नमाने ।
 कौरवहो को छोट भेद भेदा नहि आने ॥
 खेलत यमुनातट गये आपुहि ल्याये ठारि ।
 श्रीदामाके हाथ तें ले वे गेद कालीदह डारि ॥
 श्रीदामा गहि फेट कछो हम तुम एक जोटा ।
 कहा भयो जो नन्द बड़े तिनके तुम टोटा ॥
 खेलनके कहा छोटवड़ी हमहु महरके पूत ।
 गेद हियोही पे बनेही छाड़ि देहु मति धूत ॥

तुमसों धूत्यो कहा करो धूयो नहि देखो ।
 प्रथम पूतना नारिका सकटा सुर पेख्यो ॥
 ढणावर्त पटख्यो शिला अघा वका सन्धारि ।
 तुम तादिन सङ्गहो रहे अवधूत कहन सन्धारि ॥
 ठेटे कहा वतात कंसको कमल देहु अब ।
 कालिहि पठये मागिहै पुहुप अब ले देहो जब ॥
 बहुत अचगरी जिनि करी अजहुं तजौ भरारि ।
 पकरि कंस ले जाइ गो हो कालिहि परे सन्धारि ॥
 कमल पठाई कोटि कंसको दोष निवारो ।
 तुम देखत पुनि जाउ कंस जीवत धरि मारो ॥
 फेट लियो तब भटकिके चढ़े कदम पर जाई ।
 सखा हंसत ठाढ़े सबहो मोहन गये पराई ॥
 श्रीदामा चले रोइ जाइ कंहीं नन्द आगे ।
 गेद लेहु तुम अहि मोहि डर पावन लागे ॥
 यह कहि कूद पार सलिल कौन नटवर साज ।
 कोमल तनु धरिके गयेहो जहां सोवत अहिराज ॥
 यहि अन्तर नन्दघरनि कछो हरि भूखे है है ।
 खेलततें अब हि भूख कहि मोहि सुने है ॥
 अति आतुर भीतर चल्थो जीवन कारण आप ।
 छोक सुनत कुसगुन कछो हो कहा भयो यह पाप ॥
 आजिर चलो पछि तात छोक को दोष निवारण ।
 मांजारी गई काटित वहि निकसत हो वारण ॥
 जननो जिय व्याकुल भई कान्ह भवे लगाय ।
 कुसगुण आलु बहुत भये हो कुशल रहे दोउ भाई ॥
 श्वाम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई ।
 आतुर आये नन्द घरहि बूझत दोउ भाई ॥
 नन्दघरनी सों यों कहत मोको लगत उदास ।
 यह अन्तर हृदि तहं गयेहो जहं कालीको वास ॥
 देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय सोवत ।
 बैठी तहं अहि नारि उरा बालकके जोवत ॥
 भागि भागि सुत कौनको अति कोमल तेरो मात ।
 एक फूकको नही तूहो विष ज्वाला अति तात ॥
 तब हरि कछो प्रचारि नारि पति देखि जगाई ।
 आयो देखत याहि कंस मोहि दियो पठाई ॥

कंस कोटो जर जाहि मेरे लखी एक फुकार ।
 कहो करि फिरि जाहि तुं हो बालक सुकुमार ॥
 येहि अन्तर सङ्ग सखा जाइ ब्रज नन्द सुनायो ।
 हम सङ्ग खेलत श्याम जाइ रह माझ धसायो ॥
 बूझी गयो उचक्यो नही ता वीतहि बड़ो बेर ।
 कूदि पखो चढ़ि कदम तेंहो खवरिन करो सबेर ॥
 याहि याहि करि नन्द सुगत दौरे यमुनातट ।
 जसुमति सुनि यह बात चली रोवति तोरति लट ॥
 ब्रजवासी नरनारी सब गिरत परत चले धाई ।
 बूढ़ो कान्ह सबनि सुनोहो अति आकुल सुरभाई ॥
 जहं तहीरो पुकार कान्ह विनु भयो उदासी ।
 कौन काहि सों कहै अतिहि आकुल ब्रजवासी ॥
 नन्द यशोदा अति विकल परत यमुनामे धाई ।
 और गोप उपनन्द मिलिहो बांह पकरि ले भाई ॥
 धेनु फिरीति विललावि वछ थन कोउ न लगावै ।
 नन्द यशोदा कहत कान्ह विन कौन धरावै ॥
 यह सुनि ब्रजवासी सबे परे धरणी अकुलाई ।
 हाय हाय करि कहत सबेहो कान्ह रछी कहां जाई ॥
 नन्द पुकारत रोई बुढ़हि मोकों छड़ायो ।
 कछु दिन मोह लगाई जाई जल भीतर मण्डायो ॥
 यह कहिकों धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराई ।
 नन्दघरनो तब देखि केंहो कान्हहि टेरि बुलाई ॥
 निधुर भये सुत आशु तातकी छोहन आरति ।
 यह कहिकें अकुलाइ जलहि भीतरकों धावति ॥
 परति जाइ यमुना ललिल गहि आनति ब्रजनारी ।
 नेक रहौ सब सरहि गौहो कोहै जीवन हारि ॥
 श्याम गयो जल बूड़ि हथा धृत जीवन जगको ।
 शिरफोरति गिरिजाति आभूषण तोरति अङ्गको ॥
 मूरछि परी तन सुधि गइ प्राण रहो कहुं जाय ।
 सुधर आए धाइ केंहो जननी गइ सुरभाय ॥
 नाक मूदि जल सीचि जननी करि टेखो ।
 बार बार भक्तकीरो नेकटन धरत न हेंखो ॥
 कहत उठि राम सौ वनहि तण्यो लघु भ्रात ।
 कान्ह तुमहि विन रहत नहिहो तुमसो क्यो रहि जात ॥

अब तुमहु जिनि जाहु सखा एक देहु वतारै ।
 कान्हहि आवे जाहि आशु अभ्यसेरि कराई ॥
 छाक पठाउ जोरि कौ मन शोकसमाज ।
 घृत कछु खायो नहो हो मुखेहै गइ सांभ ॥
 कबहुं कहति वन गये कबहुं कहि बरहि वतानति ।
 कन्ह खेलतेहो लाल टेरि यह कहति बुलावति ॥
 जागि परी दुख मोहि तें रोवत देखे लोग ।
 तब जान्यो हरि दहगिखो हो उपयोग

हरि वियोग ॥

धून धून नन्दहि कछो और कितने दिन जोहो ।
 मरत नहो मोहि मारि बहुरि ब्रजवासी हो कीहो ॥
 ऐसे दुखमे मदन सुख मन करि देखहु ज्ञान ।
 आकुल धरणी गिरि परे हो नन्द भये विनु प्राण ॥
 हरिके अङ्गज वन्धु तुरतही पिता जगायो ।
 माताकी परबोधि दुहुनि धीरज धरवायो ॥
 मोहि दुहाइ नन्दकी अबही आवत श्याम ।
 नाथि नाग लै भाइहै हो तब कहियो बलराम ॥
 हलधर कछो सुनहि नन्द जसुमति ब्रजवासी ।
 हथा मरत के हि काज मरे क्यो वह अविनाशी ॥
 आदिपुरुष मै कहत हो गये कमलके काज ।
 गिरिधरको तुम हरत हो हो व डूढ़े बनि शिरताज ॥
 अभी अविनाशी आहि धरो धीरज अपन मन ।
 काली छेदे नाक लोये आवत नृत्यत फन ॥
 कंसहि कमल पठाइहो कालीहि पढ़े दीप ।
 एक घरी धीरज धरी हो बेटो सदतरु नीप ॥
 सुनिहो अहिकी नारी श्याम अहि क्यो न जगावै ।
 बालक बालक करति कहा पति क्यो न उठावै ॥
 कहा कंस कहा डर यह अबहुं दिखाउ तोहि ।
 दै जगाई मै कहत हों तुं नहि जानति मोहि ॥
 से जानति हों बने फुंक एकमे जरि जहै ।
 छोटे मुख बड़ी बात कहत अबही सरि जे है ॥
 छोहन गति तोहि देखि मोहि काको

बालक आहि ।

जगपति सों सरवर करीहो तु वपुरो को आहि ॥

वपुरो मोसों कहति ताहि बपुरो करि छारो ।
 एक लात सों चांपि खसम तेरे कौ मारो ॥
 सोवत कीहु न मारिये चलि आई यह बात ।
 खगपति कां मैही कियोही कहति कहातु वांत ॥
 तुमहि विधाता भये और कर्ता कोउ नाही ।
 अहि मारोगे आपु तन कसे तन चलिवाही ॥
 कहा करौ कहत न बने अति कामल सुकुमार ।
 देतो अबहि जगाई कॅहो जरि बरिहँ हो छार ॥
 तुं धौं देहि जगाइ तोहि दोष कहु नाही ।
 परी कहां तोहिहारि पाप अपनै जरिजांही ॥
 हमको बालक कहनेहै आप बड़ेको नारि ।
 बादतहै विनु काजही हा ब्रथा बड़ावति रारि ॥
 तुं हो न लोहि जगाइ बहुत जो कहत टिटाई ।
 फुलि मरिहै पछि ताहि मात पित तेहो भाई ॥
 अजहुं फिरि करि जाहि तूं मारि लहँ सुख कोम ।
 पांच बरसकी सात कोहो आगे तौकां हेन ॥
 भिर कोनोरो दे गारि आपु महि जाइ जमायो ।
 पगसों चांपो पूछु सवै औ मान सुनायो ॥
 चरण मसकि धरणा दली उरग गयो अकुलाई ।
 कार्ली मनमे तब कहोहै यह आयो खगराई ॥
 देख्यो नैन उवारि तहां बालक एक ठाढो ।
 विषधर भटकी पुंछि पटकि सहभां कन काढो ॥
 बार बार जन घात करि विष ज्वानाको भारो ।
 सहसौ फनि फनि पूंकरेहो नेकन तनहि लगायि ॥
 तब काली मन कहत पूंछि चांग येहि मेरी ।
 मन मन करत विचार लेन याके भे थैरी ॥
 दाव पखो अहि जागिके लियो अरु लपटाई ।
 चरण लपेटे शिखा लोहो र्याह अति करां टिटाई ॥
 कहति उरगकी नारो गवे अतहा करि आयो ।
 आइ पहुंथ्या काल वस्य पग इतहि चलायो ॥
 अहि नारिनसो यह कही मोहि ममसरि कोउ नाहि ।
 एक पूंक विषबाल केहा जलडुंगर जरि जाहि ॥
 गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतहो तनु विलाखा ।
 हाय हाय करि उरग बारहो धार पुताखो ॥

शरण शरण अब मरतहा में नहि जान्या तोहि ।
 चढ़ चढ़ात अरु फटही हो राखु राखु प्रभु मोहि ॥
 शरण शरण धनि सुनत लियो प्रभु सङ्गवाई ।
 अबहु मोहि अपराध न जाने करो टिटाई ॥
 ब्रजमे कृष्ण अवतार हीत जानो प्रभु आज ।
 बहुत कियो फणघात मैही वदन दिखावन लाज ॥
 रक्षा अनि इहि ठौर गरुडको त्रास गानाई ।
 बहुत कृपा मोहि करो दरस दोना जगसाई ॥
 नाक फारि फनपर चढ़े कृपा करो देवराई ।
 फन फन प्रति प्रति चरण धरेहा नृत्यत हरस बढ़ाई ॥
 धन्य कृष्ण धनि उरग जानिजग कृपा करि हरि ।
 धन्य धन्य दिन आज दरमसां पाप गये जरि ॥
 धन्य कंस धनि कमल य धन्य कृष्ण अवतार ।
 बड़ी कृपा उरगहि करोहो फण प्रति चरण विहार ॥
 शेष करत जिय गर्व अण्डको भार शोस धरि ।
 पूरण ब्रह्म अनन्त नामका सक पार करि ॥
 फनफन प्रति प्रति भार भर अमित अन्त मै गात ।
 उरगनारी कर जोरि केहा कहति कृष्णसां बात ॥
 देखत ब्रज नरनारी नन्द यशदा समेत सब ।
 सङ्घर्षण सों कहत सुनहा सुन कान्ह नहा अब ॥
 येहि अन्तर जन कमल विच उड़ा कहु अकुलाई ।
 रोवततं बरजे सबे हो माहन अयज भाई ॥
 आवतहैं यह श्याम पुष्य कालो शिर लाने ।
 मात पिता ब्रज दुखित जान हरि दरशन दोने ॥
 नृत्यत कालो फननिपर दिव दुन्दुभि बजाई ।
 नटवरवपु काछिरहै हो सबदेखा वह भाई ॥
 भारत देखे श्याम हरम कोना ब्रजवासी ।
 सौंकसिन्धु गयो उत्तरिन्धु आनन्द प्रकाश ॥
 जलबूड़त नौकामिले ज्यों तन होत आनन्द ।
 त्यो ब्रज जन हुंलसे सवेहो आवत है नन्दनन्द ॥
 सुत देखत पितु मात रोम गद्गद् पुनकित भये ।
 उर उपण्या आनन्द प्रेमजल लोचन दुहु गये ॥
 दिव दुन्दुभि बजावही फनप्रति नृत्यत श्याम ।
 ब्रजवासी सब कहत है हो धन्य बलराम ॥

सुर अमर लाधनौ सहित जे मुनि मुख गाई ।
 बड़ी कृपा यह उरगको हो ऐसी काहु न पाई ॥
 कृपा करो प्रह्लाद खभते प्रकट भये तब ।
 कृपा करो गजराज गरुड तजि धाई गये जब ॥
 हुपदसुताको करी कृपा वसन समुद्र बढाई ।
 नन्द यशोदाहि जो कृपा हो सोई कृपा अङ्गराई ।
 चरणचिह्न दरशन करत गहिरहै तेरे पाई ।
 उरग दीपको करि यत्राहो कछौ करहु मुख जाई ॥
 प्रभु याते सुख कहा जे चरण फन फन प्रति परसे ।
 रमा हृदे जो वसन सुरमरी शिरवहै हरसे ॥
 जनम जनम पावत भयो फन पदचिह्न धराई ।
 पाइपखो उरगिनी हित हो चल्यो दीप समुद्राई ॥
 काली पठयो दीप सुरनि सुरलोक पठाये ।
 आपन आये निकसि कमल सब तटहि धराये ॥
 जलते आये प्रकाश तब मिले सखा सब आई ।
 मार्तापता दोउ धाईकें होलीनो कण्ठ लगाई ॥
 केरि जन्म भयो काह वाहन लोचन भरि आये ।
 जहां उहां ब्रजगोपनारी आतुर हो धाये ॥
 रुचन भरि भरि मिलत है मनोति धन पाय ।
 मिलो धाई रोहिणी जननी चुम्बति लेति वलाय ॥
 सखा दौरिकें मिलगये हरि हमपर रिसकरि ।
 धनि माता धनि पिता धन्य सोदिन जेहि अवतरि ॥
 तुम ब्रजजीवन प्राणहो यह सुनि हंसै गोपाल ।
 कूटिकर चढ़ि कदम तेहो यह तुम देखत ये ख्याल ॥
 काली ख्याये नाथि कमलताही लगये ।
 तैसी कहि खये श्याम प्रकट सो हमही दिखाये ॥
 कंस मरिगवि विसनव भइ हम मानी ब्रजराज ।
 सिद्धे नि कीछीना भलोहो कहावडो गजराज ॥
 हरि हलधर तब मिले हंसै मन ही मनदोउ ।
 वन्धु मिसत सब कहत भेद नहि जानि कोउ ॥
 माता पिता ब्रजगोप सोहररि कछो नन्दलाल ।
 आशुरहो वसि सब इहांहो भेटहु दुख जखाल ॥
 सुनि सब हिन सुखकियो आशु वरिये समुनातट ।
 शीतल सलिल सुगन्ध पवन सुखतरु वंशीवट ॥

नन्दघरते' मिष्टान बहुत षट्स लिये मगाइ ।
 महर गोप उपनन्दजिहो सबको दियो वढाई ॥
 दुखकिहो सब दुरितुरत सुखदियो कथागइ ।
 हरस भये सबलोग कंसके भय विसराइ ॥
 कमलकाय ब्रजमारतो कितनों लेइ गलाइ ।
 नृपगजको अवतार कहा हो प्रकट्यो मिंइकहाइ ॥
 नन्द कछो करि कल कंसकों कमल पठावहु ।
 और कमल जलधरहु कमल कोटिक दै आवहु ॥
 यह कहियो मेरो कही कमल पठाये कोटौ ।
 कोटि हे कमल ही धरे हो यह विनतौ एक छोटि ॥
 अपने सम जे गोप कमल तेहि साथ चलाये ।
 मन सबके आनन्द कहो जलते वचि आये ॥
 खेलत खात अन्हातही वासर गयो विहाय ।
 सुरश्याम ब्रजलोगकों हो जहां तहां सुखदाय ॥

अथ चौरहरण-लीला

विलावल

नन्दनन्दवर गिरिवरधारी ।
 देखत रीभी घोषकुमारी ॥
 मोर मुकुट पीताम्बर काछे ।
 आवत देखे गायन पाछे ॥
 कोटि इन्दु छवि वदन विराजे ।
 निरखि अङ्गप्रति मनमथ लाजे ॥
 रविशत छवि कुण्डल नाह तुलै ।
 दमन दमक दूति दामिनौ मूलै ॥
 नैनकमल मृगशावक मोहै ।
 शुकनासा पटकों कौहै ॥
 अधर विम्बफल पटतर नाहौ ।
 विद्रुम अरु वन्धुक लजाहौ ॥
 देखत रीभी रहौ ब्रजनारी ।
 गह गेहकी सुकति विसारी ॥
 यह मनमे अनुमान कियो तब ।
 जप तप संयम नियमकरै अब ॥

बारबारस विताहि मनावति ।
 नन्दनन्दन पति देव सुनवति ॥
 तनुसुमं तप साधन कीजे ।
 शिवसीं मागि ज्ञापति लीजे ॥
 वरस दिवस को नेम लियो सब ।
 बहुरि सेवहु मनवचक्रम अब ॥
 हृद विस्वास व्रतहिनी कौन्ही ।
 गौरीपतिपूजा मन दीन्ही ॥
 बड़दशसहस्र लुरी सुकुमारी ।
 व्रत सर्वातरीके तनु धारो ॥
 प्रात उठे यमुनाजल खोरै ।
 सौतभीत कहां आदि न मोरै ॥
 पतिके हंत नेम व्रतसाधे ।
 गङ्गरसीं यह कहि अवराधे ॥
 कमल पत्र तू मान चढ़ावे ।
 नेम मुंदि यह ध्यान लगावे ॥
 हमको पति दीजं गिरिधारी ।
 बड़े देव तुम हो त्रिपुरारि ॥
 ओर कहु नहि तुम सौ मागि ।
 ज्ञाप्य हैत यह कहि पां लागि ॥
 ऐसे हि करत बहुत दिनवीते ।
 प्रभु अन्तरजामी मनचोते ॥
 एक दिवस आपुन आये नहां ।
 तब तक्षणी अस्त्रानकरति अहां ॥
 वसन धरे जलतौर उतारी ।
 आपुन जलपेटो सुकुमारो ॥
 ज्ञाप्ययह अस्त्रान करे जहां ।
 सबके पाछे आपुन है तहां ॥
 सौहत पोढ़ि प्रेम अतिवाढ़ो ।
 चकत भइ युवती फिरि ठाढ़ी ॥
 देखे नन्दनन्दन गिरिधारी ।
 व्रतफल प्रकट भये वनवारो ॥
 सङ्घुषि अङ्ग जन बैठि सुजावे ।
 बार बार हरि अङ्गमनावे ॥

साज नाहि आवता है तुमको ।
 देखत वसन विना सब हमको ॥
 ईसत चले तब नन्दकुमार ।
 लोगनि सुनवति करति पुकार ॥
 हार चीर ले चले पराइ ।
 हांकि दियो कहि नन्द दुहाइ ॥
 भारि सब भूषण तब भागे ।
 श्याम करण अब टिटोलीलागे ॥
 भागे कहां बसोग माहन ।
 पाछे आइ गइ तु अगोहन ॥
 तनकी सुधि सम्भार कुछ नाहो ।
 वसन आभूषण पहिरत जाहो ॥
 चीर कढ़ी कछुका कन्द छूटे ।
 लेतन वसन तहार नगट्टे ॥
 प्रेम सहित मुख खोभत जाहो ।
 भूठे बार बार पकितानो ॥
 गइ सबे त्रिय नन्द महरवर ।
 जसुमति पागगइ सब दरदर ॥
 देखहु महरि श्यामके देगुण ।
 जैसे हालकरे सबके उन ॥
 बोली चीर हार दिखराये ।
 आपुन भाजि इतहिना आये ॥
 यमुनातट कोउ जान न पाव ।
 सङ्ग सखा लये पाछे धावे ॥
 सुतको वरजहु हो नन्दरानो ।
 गिरिधर करत भनी नहीं वाणो ॥
 साज लगति एक बात सुनावति ।
 अस्त्रान छोरि हियो दिखरावति ॥
 यह देखत ईसि उरि जसोद ।
 कहु रिस कहु मनमें करि भोद ॥
 पाइ गये तीस समय कन्हाई ।
 बांह गही ले तुरत दिवारि ॥
 तनक तनक कर तनक अङ्गरिया ।
 तुम यौवन भर नवल बहुरिया ॥

जाहु घरहि तुमको मैं चोन्ही ।
 तुमरी जाति जानि मैं लोन्ही ॥
 तुम चाहति साईं होन यैहै ।
 और बहुत ब्रज भितर लुंहै ॥
 बार बार कहि कथा सुनावति ।
 इन बातनि कहु लाज न आवति ॥
 देखीरो ये भाव कन्हारै ।
 कहां गई तवकां तरुणारै ॥
 महरि तुमहि कहु दोषन नाहो ।
 हमको देखि देखि सुसुकांही ॥
 इन कै गुण कैसे कोउ जाने ।
 और करत औरै धरि टाने ॥
 देन उरहनों तुमको आई ।
 नौकी पहिरावनि हम पाई ॥
 बलो सबै युवती घर घरकों ।
 मनमे ध्यान करति है हरिको ॥
 वरस दिवस तप पूरण कीनो ।
 नन्द सुवनकों तनमन दीनो ॥
 प्रातहोत यमुना फिरि आई ।
 प्रथम रहै चढ़ि कदम कन्हारै ॥
 तीर आई युवती भई ठाढ़ी ।
 उर अन्तर हरि सीं रति वाढ़ी ॥
 कही चले यमुना जल खोर ।
 अङ्ग अङ्ग आभूषण सब छोरे ॥
 चोली छोरे हार उभारै ।
 करसौं शिथिल केश निरवारै ॥
 इत उत चितवति लोग निहारै ।
 कही सबनि अब वीर उतारै ॥
 वसन आभूषण धरे उतारो ।
 जल भीतर सब गई कुमारी ॥
 मागशीर कीभौ तन मानो ।
 षड् ऋतुके गुण सम करि जानो ॥
 बार बार बूड़े जलमाही ।
 नेकहुं जलकों उरपत नाही ॥

प्रातहुते एक जाम नहाही ।
 नेम धर्महो मे दिन जाहो ॥
 इतनो कष्ट करै सुकुमारी ।
 पतिके हित गोवर्धनधारो ॥
 अति तप करत देखि गोपाल ।
 मनमे कछो धन्य ब्रजबाल ॥
 हरि अन्तरयामी सब जाने ।
 छीन छीनको यह सेवा माने ॥
 व्रतफल इनहि प्रकट दिखराउ ।
 बसन हरौ लं कदम चढ़ाउ ॥
 तन साधे तपकियो तुमारी ।
 भजी मोहि कामातुर नारो ॥
 सो रहस इस गोपाल सुकुमारी ।
 सबके वसन हरे बनवारी ॥
 हरत वसन कहु वार न लागी ।
 जल भीतर युवती सब नागो ॥
 भूषण वसन सरे हरि ल्याये ।
 कदम डार जहां तहां लटकाये ॥
 ऐसो नीपहण विस्तारा ।
 चोत हार धौंकि तु कह जारा ॥
 सब समानं तरु प्रति डारा ।
 यह लीला रचि नन्दकुमारा ॥
 हार चोर मानहु तरु फण्यो ।
 निरखि श्याम आपुन अनुकूण्यो ॥
 नेम सहित युवती सब नाही ।
 मन मन सविता विनै सुनाहा ॥
 मुं दे नैन ध्यान उरधारै ।
 नन्दनन्दन पति होई हमारै ॥
 रवि करि विनै शिवहि मन दौन्ही ।
 हृदे माभ अवलोकन कीन्ही ॥
 विपुर दशन त्रिपुरारि त्रिलोचन ।
 गौरीपति पशुपति अघमोचन ॥
 गरल-अशन अहिभूषणधारी ।
 जटाधरन गङ्गा-शिरधारी ॥

करति विनय यह मागति तुमसों ।
 करहु कृपा हंसिके आपुनसों ॥
 हम पावै सुत जसुमतिको पति ।
 इहे देहु करि कृपा देवरति ॥
 नित्य नेम करि चली कुमारी ।
 एक हम तनकी हिमजारो ॥
 ब्रजललना कछो नौर जड़ाई ।
 अति आतुर है तटकी धाई ॥
 जलते निकसि तरुणो सब धाई ।
 चीर आभूषण तहां न पाई ॥
 सकुच गई जल भीतर धाई ।
 देखि हंसि तरु चढ़ कन्हाई ॥
 बार बार युवती पछिताहि ।
 सबके वसन आभूषण नाही ॥
 ऐसे कोन सब लं भाग्यो ।
 लीतहुं ताहि विलम्ब न लाग्यो ॥
 माघ तुषार युवती अकुलाही ।
 छां कहु नन्द सुवन ती नाही ॥
 हम जानहि यह बात बनाई ।
 अम्बर हरि लै गयो कन्हाई ॥
 ही कहुं श्याम विनय सुनि लीजें ।
 अम्बर देहु कृपा करि जो जै ॥
 थर थर अङ्ग कम्पति सुकुमारी ।
 देखि श्याम नही सकें सन्भारी ॥
 येहि अन्तर प्रभु वचन सुनायो ।
 व्रतके फल दरशन सब पायो ॥
 कहा कहति मोसों ब्रजवाल ।
 माघ शीत कत होति बिहाल ॥
 अम्बर जहां वताउ तुमको ।
 तो तुम कहा देहुगो हमकी ॥
 तनमन अर्पण तुमही कोनो ।
 मो कहुहु तोसो तुमही दीनो ॥
 और कहा तज लैहो हमसों ।
 हम मागति है अम्बर तुमसों ॥

यह सुनि हंस दयाल सुरारि ।
 भरो कछो करो सुकुमारो ॥
 जलते निकसि सब तट आवहु ।
 तबही भले तुम अम्बर पावहु ॥
 भुजा पसारि दीन हं भावहु ।
 दोउ कर जोरि जोरि तुम राहहु ॥
 सुनहु श्याम एक बात हमारी ।
 नगनि कहु देखियं न नारो ॥
 यह मति आप कहां धो पाई ।
 आशु सुनी यह बात नवाई ॥
 ऐसी साध मनहि मे राखहुं ।
 यह वाणो मुखते जिनि भाषहु ॥
 हम तरुणो तुम तरुण कन्हाई ।
 विना वसन क्या देहि दिखाई ॥
 पुरुष जाति तुम यह का जानो ।
 हा हा यह मुखते जिनि आनो ॥
 तो तुम पंठोहो जलहि सब ।
 वसन आभूषण नाहि चहति अब ॥
 तबहि देउ जब वाहिर आवहु ।
 विनु वाहिर आए नहि पावहु ॥
 कत ही शीत सहति सुकुमारो ।
 सकुच देहु जलहोमे डारो ॥
 कखो कदम व्रत करनि तुमारो ।
 अब कह लज्जा करति हमारी ॥
 लेहु न आनि आपने व्रतका ।
 मै जानत या व्रतके व्रतको ॥
 नौके व्रतकीनों तनुगारो ।
 व्रत ब्यायो धरि गिरिवरधारो ॥
 तुम मनकामन पूरण करिहा ।
 रास रङ्ग रचि रतिसुख भरिही ॥
 यह सुनिके मन हरस बढ़ायो ।
 व्रतको पूरण हम फल पायो ॥
 छाड़हु तुम यह टेक कन्हाई ।
 नौर माझ हम गई जड़ाई ॥

आभूषण सब आपुन हो लोहो ।
 चीर कृपा करि हमकों देहो ॥
 हाहा लागे पाँइ तुम्हारि ।
 पाप होत है जारिन मारि ।
 आजहुँते हम दासी तुम्हारी ।
 कैसे अङ्ग दिखावै मारी ॥
 अङ्ग दिखाए हि अम्बर पेहो ।
 नामरु वैसे हि थोसङ्ग वेहो ॥
 भैरि कहै निकसि सब आवहु ।
 खोयि हि हमकों भलो मनवेहु ॥
 सुहावरी तरुणी सुसुकाही ।
 यह आपुन खोरी करि साही ॥
 मोह जोइ कही सो तुमको सोहै ।
 आपु तुम्हारि पशुतर कोहै ॥
 हमरी पति सब तुम्हारि हाथा ।
 तुमहि कही ऐसी ब्रजनाथा ॥
 तपतनु गारि कियो जेहि कारण ।
 सो फल लख्यो नौपतरु भारन ॥
 आवहु निकसि लहु पद भूषण ।
 यह लागे हमको सब दूषण ।
 अब अन्तर कत वाखति हमसों ।
 बार बार कहत हो तुमसों ॥
 गोपिनी सुनि यह बात विचारि ।
 अबतो टेक परे वनवारो ॥
 चलहु न जाइ अब लोजे ।
 साज छारि उनको सुखदोजे ॥
 जलते निकसि तौर सब पाइ ।
 बार बार हरि हरसि बुलाइ ॥
 बैठि गइ तरुणी सकुचानो ।
 देहु श्याम हम अतिही लजानी ॥
 छाड़ि देहु यह बात सयानी ।
 देखे हि कगे कही हो वाणी ॥
 करहु कुच अङ्ग ठाकि भइ ठाढ़ी ।
 बदन नवाइ साज अति वाढ़ी ॥

देव श्याम अम्बर अवतारा ।
 हाहा दासी सब तिहारो ॥
 ऐसे नही वसन तुम पावहु ।
 बाँइ उठार अङ्ग दिखरावहु ॥
 कछो मानि युवतिन कर जोरे ।
 पुनि पुनि युवती करति निहोरे ॥
 धन्य धन्य कहि श्रीगोपाल ।
 निखय व्रतकी से ब्रजवाल ॥
 आवहु निकट लेहुँ सब अम्बर ।
 चोलो हरे सुरलि पटम्बर ॥
 निकट गइ सुनिके यह वाणी ।
 तरुणी नगन अङ्ग अकुलानो ॥
 भूषण वसन सबनिको दोन ।
 नियके कहत कृपा हरि कीन ॥
 चीर अभूषण पहिरे नारो ।
 कछो तबहि ऐसे गिरिधारी ॥
 तब हंसि बाले कृष्णमुरारि ।
 मै पात तुम मेरी सब प्यारो ॥
 तुमहि हत यह वपु ब्रजघाखो ।
 तुम कारण वै कुण्ठ विसाखो ॥
 अब व्रतकरि तुमनहं तनगारो ।
 मै तुम ते कहुँ होत न न्यारो ॥
 मोहि कारण तुम अति तप साध्यो ।
 तनमनकरि मोकों अवराध्यो ॥
 जाउ सदन अब सब ब्रजवाल ।
 अङ्ग परसि मेटेह तुडाल ॥
 युवतिन विदा दइ गिरिधारी ।
 गइ घरनी सब घोषकुमारो ॥
 वस्त्रहरणलीला प्रभु कान्हो ।
 ब्रज तरुणिन व्रतकी फल दान्हो ॥
 यह लीला अवधानि सुनि भावै ।
 औरनि सिखवै आपुन गावै ॥
 सूरश्याम जनके सुखदाई ।
 इदताइमै प्रकट कन्हारै ॥

विलावल

वसन हरि सब कदम चटायो ।
 सोरह सहस्र गोप-कन्यकिके अङ्ग अभूषण
 सहित थुरायो ॥
 अति विस्तार नीपतरु तामै लेलै जहां तहां
 लटकायो ।
 मागि अभरण बार बार प्रति देखत छवि मनही
 अटकायो ॥
 लीलाम्बर पटाम्बर सारी श्वेत पीत चुनरौ
 अरुणायो ।
 सूर श्याम युवतिन व्रत पूरणको फल कदमडारि
 फलनायो ॥

राग सूही

आपु कदम चढ़ि देखत श्याम ।
 वसन आभूषण सब हरि लिनै विना वसन
 जल भीतर वाम ॥
 सुंदति नैन ध्यान धरि हरिकों अन्तरगामौ
 लीन्हौ जानि ।
 बार बार सवितासों मागति हम पावि पति
 सारङ्गपानि ॥
 जलते निकसि आइ तट देख्यो मूषण चीर तहां
 कछु नाहि ।
 इत उत हेरि चक्रत भइ सुन्दरौ सकुचि गइ
 फिरि जलही माहि ॥
 नाभि पर्यन्त नोरमे ठारो थर थर अङ्गकम्पन
 सुकुमारी ।
 को लै गयो वसन आभूषण सूरश्याम और प्रीति
 विचारि ॥

विलावल

खोजत जात माखन खात ।
 अरुण लोचन भौंह टेढ़ी बार बार जम्भात ॥
 कबहुं कनुभुनु चलत घुटरुण धूर धूसर गात ।
 कबहुं भुकिकों अलक खेचत लेन जलभरि यात ॥

कबहुं तोतर बोल बोलत कबहुं बोलत बात ।
 सूर हरिकौ निरखि शोभा निमिष तजत न मात ॥
 २
 माखन तनिक दे रौ माय ।
 खेलत घुटरु फिरत आंगन धावत चरण चलाय ॥
 सुन्दर दांतया अति विराजत बोलत हैं तुतराय ।
 मोर मूकटकी शोभा निरखत सूर वलि वलि जाय ॥

१

आज सुफल सखी जनम हमारी ।
 नयन भरि देखोगी मन्दनारो ॥
 वाम कपोल वाम भुज दाने ।
 अधर मधुर मुरली कर लीने ॥
 नयन कुरङ्ग सुपरस मामेख्यो ।
 आजु हरि हम अपनो करि लेख्यो ॥
 नाद वेद सङ्गोत सुनावे ।
 चलत भुवनसिर शिखर डुलावे ॥
 जनम जनमकी पूरो भरी आशा ।
 औजगन्नाथ मुख देख्यो माधोदासा ॥

४

बलिगइ बालरुप मुरारि ।
 पांयउ पेजनेो वदन कनुभुनु नधावति मन्दनारो ॥
 कबहुं हरिकों लाइ अङ्गरिया चलन सिखावतिधारि ।
 कबहुं हृदे लगाइ हित करि लेति अञ्जल डारि ।
 कबहुं हरिको चित चुम्बति कबहुं दिखावति गारी ।
 कबहुं नेकरि पाछे दुवारति इहां नही वनचारि ॥
 कबहुं अङ्ग भुज लय लावति राई लोन उतारि ।
 सूर सुरमुनि सबे मोहे निरखि यह अनुहारि ॥

५

नन्दरायजूके हारि भोरहि उांठ पहाउ ।
 निरवधि आनन्द सूरति निरखि नैन सिराउ ॥
 उज्ज्वल तन थोरी थौंदि राता अम्बर सांहे ।
 अरुण घनते निकसि पूरण चन्दको छवि कोहे ॥

मञ्जु धनोभूत पूत कर अङ्कुरिया लाया ।
 मन्द मन्द चलन सिखवति लोचन फल पायो ॥
 रिद्धि सिद्धि निद्धि सहित रमा टहल करति फिरे ।
 अर्थ धर्म काम मोक्ष भोख भिखारीन परे ॥
 मन्दजू कहत कहा मागत हों टेरि सुगाउ ।
 मन्ददास मन्दलालको लेकु उत्तोर न पाउ ॥

१

खेलत श्याम ग्वालन सङ्ग ।
 सुने हलधर अरु श्रीदामखेलत नाना रङ्ग ॥
 हाथ तारो देत भाजत सबे करि करि होड़ ।
 बरेमे जू हलधर श्याम तबही चोट लागे गोल ॥
 तब कह्यां मे दोरि जानत बहुत वल मो गात ।
 मेरी जोराहं श्रीदामा हाथ मारे जात ॥
 बालि तबे उठे श्रीदामा जाहु तारो मारि ।
 आगे हरि पाछे श्रीदाम विखो श्याम हङ्कारि ॥
 जागि केमे रङ्गो ठाढ़ो छुवत कहा तुं योह ।
 सूरश्याम खोम्बे सखनि सों मने हीं कौनो तोह ॥

०

मैया मे नही माखन खायो ।
 ख्याल परेये सखा सबे मिलि मेरे मूह लपटायो ॥
 देखि तुही छोके पर भाजन उंचे धर लटकायो ।
 हों सु कहत नाहो कर मेरे सो कैसे करि पायो ॥

सुख दधि पीछि बुद्धि एक कौनो दोला पाछे दुरायो ।
 डारि साची मुसिकाति यशोदा श्यामहि

कण्ठ खगायो ॥

बाल विनोद भाव करि मोछो माता कन्हि

रिभायो ।

सूरदास कह जसुमतिको सुख देवनि दुर्लभ गायो ॥

देखो माइ या बालकी बात ।

बन उपवन सरिता सभ मोहै देखत सांवल गात ॥

मारग चलत अनीत करत हरि हटि करि

माखन खात ।

पीताम्बर वह शिरते उठत अक्षर दे मुसिकात ॥

तेरी सोह कहा कहुं यशोदा उरहत देह लजात ।

जब हरि आवत तेरे आगे सकुचनिऋह्यो न जात ॥

कौन कौन गुण कहो श्यामके नेकन काहु उरात ।

सूरश्याम सुख निरखि यशोदा कहति कहाये बात ॥

नेक मेरे बारे काह छाडि दे मयनिया ।

देखि देखि मुख लेति नन्दजकी रनिया ॥

कण्ठ बधली मोहै नाक न थुनिया ।

नैननते नोर मानी मोतिनके मनिया ॥

नेकु रङ्गो देउ माखन मेरे प्राण धनिया ।

आरि जिनि करो मेरे छगन मगनिया ॥

सुरनर मुनिन कहुके ध्यान न आवनिया ।

सूरसुत देखि रानी भूलि धाम धनिया ॥

प्रथम खण्डोक्त

वर्णानुक्रमिक राग-रागिणी-सूची

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
अग्नि	१४	आन्वपञ्चम	३५	कङ्काल	३८, ४०
अङ्ग	१२	आरा	१४	कच्छेली	३६
अङ्गिका	१५	आराधा	१५	कज्जली	१३
अटताल	३३, ४०	आराभिका	१४	कज्जलिका	१६
अडाना	१४, ३१	आलयस्कन्द	३८	कटाक्षा	१३
अडानी	१४	आलापिनी	५, ३७	कठरतिज्ञाना	१७
अनङ्गनाम्दी	३८	आलापौ	४, ५	कण्टक	३८
अनङ्गी	१५	आलावली	३७	कण्ठाभरण	३
अनुक्रिय	३७	आशा	१२	कण्टक	३५, ३८
अनुद्रुत	३८	आशावरी	१०, ११, ३०, ४२	कन्दुका	३८
अन्तरक्रोड़ा	३८	आसा	१६	कमल	१२, १६
अप्पुरी	१६	आहंस	३७	कमली	१६
अभङ्ग	३, ४०	आह्लादी	१३	करण	३८
अभिनन्द	३८	इड़ा	३	करालक	४०
अभिरुहता	४	इड़ावान्	४०	करुणा	१४, ३३
अर्धवेसरी	३५	इन्द्रक्रिय	३७	कर्णाट	१२, १५, १६, २६
अर्जुन	४०	इन्द्रलोक	४०	कर्णाटी	११, १५
अलम्बुषा	३	ईश्वरी	१४	कर्षणी	१६
अलैया	११, १६	उग्रा	४	कलकण्ठ	४०
अश्वक्रान्ता	४	उत्तरमन्द्रा	४	कलध्वनि	३८
अष्टमुखी	३३, ३४	उत्तरायता	४	कलाप	४०
अहङ्ग	१६	उत्पली	३७	कलावती	५
आड़ाचौतारा	३४	उत्सव	४०	कलोपनता	४
आदितान	३८	उदित	४०	कल्याण	१२, १६, ३१,
आधारिणी	५	उपाङ्ग	३६	कल्याणमण्डक	४०
आनह	३७	उग्राखिका	१६	कल्याणिका	१४
आनन्दा	१३	ऋषभ	४	कलिङ्ग	१२, १६
आनन्दौ	५	एकताल	३३, ३८, ४०	कलिङ्गी	१३
आन्धा	१२	एमन	१६	कलिन्दर	१२
आन्धी	१३, १५	एमनी	११, १४	कलोलिनी	१५
आभीर	१२, १४, १५, १६, ३२	ओजक्री	३७	काण्डारणा	३६
आभीरिका	११	ओङ्गम्बरी	७७	कान्ता	४
आभीरी	११, १४, १५, २६, ३६	ओदम्बरी	३७	कान्दड़ा	१२, १५, १६
आमीद	३८	ओष्टा	१७	कान्दड़ी	११
आमीदिनी	५	ककुभा	१०, ११, १८, ३५, ४२	कापी	१४

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
कामकेलिका	,,	कण्वेषी	१५	गजभन्म	३८
कामकेली	१३	कण्वा	१५	गणेशताल	३३, ३४
कामदा	१४	केदार राग	१५	गद्यताल	४०
कामपाली	१५	केदारा	१२, ३१	गन्धिका	१४, १६
कामवर्द्धिनी	१३	केदारिका	३१	गनम्	१६
कामिनी	५	केदारी	११, १५, ३१	गम्भीरी	१२
कामोदिनी	१५	केरली	१५	गर्जा	१५
कामोदो	११, १६, ३५	केली	१३	गर्भा	१६
कारवी	१५	केलाशो	१३	गान्धार	१२, १३, १६, ३०
कारुणी	१४	कोकली	१५	गान्धारगतिका	३७
कानिकी	३६	काकिका	२३	गान्धारो	३, ४, ११, १३, ३४, ३६
किन्नर	१२	कोकिलाप्रिय	३८	गान्धारी	३७
किन्नरी	३७	कोङ्कन	१२	गायत्री	३३
कीर्ति	१४	कोमली	५, १५	गारा	१६
कीर्तिताल	३८	कोल्हास	३३	गारुडि	३८
कीलक	४०	कालाङ्गल	१२	गिरिजा	१५
कुङ्कट	३८	कोलाहली	१२	गोर्वाणमण्डक	४०
कुण्डनाभि	४०	काञ्जिका	१६	कागुञ्जि	१५
कुण्डलिका	४०	कोली	१५	गुण	१२
कुण्डलो	१५	कोहली	१३	गुणक्री	११, १६, २५
कुतपा	३७	कामारिका	१३	गुणक्रो	११
कुन्तला	१२	काशक	१३, ३६	गुण्डगिरि	१३
कुन्तली	१३	कौशिक	१०, ३५	गुण्डयी	११
कुञ्जिका	३०	कौशिको	११	गुण्डो	११
कुमुद	३८, ४०	क्रान्तमङ्गल	१२	गुण्डोगर्भा	१५
कुमुदक्रोत्	३७	क्रियाङ्क	३६	गुन्धारी	१२
कुमुदतो	४	क्राङ्गा	३८	गुजरो	१०, ११, १६, १८, ३५, ४१
कुम्भताल	४०	क्राधा	४	गुरु	३८
कुम्भा	१२	क्षिति	४	गुरुञ्जिका	३७
कुर्मा	३७	चेम	१२, १६	गोकर्णी	१५
कुम्भर	४०	क्षेम	१४	गोणिका	१५
कुविन्द	३८	क्षेमा	१४	गाधुनी	१६
कुशली	१४	क्षामिणी	४	गोपिका	३३
कुसुमराग	१६	खञ्जनी	३५	गोपो	५
कुसुमा	१२	खन्धावती	१०, ११, १६, १८, ४२	गोभो	१५
कुसुमो	१३, १६	खशिक	३७	गोक्षो	३७
कुङ्क	३	खेचरा	५	गौडगिरि	२७
कण्ठ	३३	ख्याल	१७	गौडमालव	३२
कण्ठचन्द्रो	१५	गज	३८	गौडसारङ्ग	३८

वर्णानुक्रमिक राग-रागिणी-सूची

३

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
गोड़	१२	चित्रा	५, ३७	भम्पा	३८
गोड़ा	१६, ३५	चिन्ता	१५	भि.भोटो	१६
गौण्णगिरि	१२	चैतिका	११	भोम्बड़ा	४०
गौण्ण्डा	१४	चैत्रताल	४०	टङ्गा	११, १६, २८
गोरा	११, १६, ४२	चीतारा, चीताल	३४	टङ्गी	११
गौरी	११, १६	छन्दोवतो	४	टप्पा	१७
घण्टा	१४	छायातरङ्गिणी	३७	टाना	१६
घण्टारव	३७	छायानट	१२	टोङ्किका	१६, १८
घण्टारवी	१५	छायालग	३६	टोङ्गी	१०, ११, १६, ४१
घन	३७	छेवाटा	३५	टुमरा	१७
घनश्याम	१६	जगण	४०	डायका	१६
घनश्यामा	१५	जर.दाशो	१४	डाम्बलो	३८
घाटा	१६	जगदाश्वरी	२४	डेङ्गा	३८
घुमड़ी	१५	जगवन्दनौ	१४	तत	३७
घोषवती	३७	जङ्गला	१६	तम्बो	१५
घोषिका	१४	जङ्गल	१२	तारिका	..
चक्रताल	३३, ४०	जङ्गा	१६	ताल	३३
चक्रमण्ड	४०	जनक	३८	तिउटेम	४०
चण्डताल	३८	जना	१२	तिलङ्गा	१६
चतुरस्र	४०	जन्तो	१४	तोत्रा	४, ५
चतुस्रख	३८	जमालौ	५	तुक्	१७
चतुस्ताल	३३, ३८, ४०	जय	३८	तुम्बरा	३६
चन्द्रकला	३८	जयजयन्तो	११, १६, ३२	तुङ्ग	१७
चन्द्रकान्त	१२	जयतश्री	११, १६, ४२	तुरङ्गलोल	३८
चन्द्रकाश	..	जयमङ्गल	३८	तुरस्का	१६
चन्द्रकाशी	१३, १४	जयश्री	२१, ३८	तुलताल	४०
चन्द्रताल	४०	जलद तिताला	३४	तैलङ्ग	१२, १५
चन्द्रद्रुत	३८	जलधर	१२, १५, १६	तेलङ्गी	१५
चन्द्रराग	१२	जलधरो	१५	तोड़िका	११
चपला	४	जलधारिणी	..	त्रिताल	३३
चम्पक	१२	जाम्बती	१४	त्रिनत्रकी	३७
चम्पकताल	३४	जंतराग	..	त्रिभङ्गा	३८
चञ्चरी	३३, ३८	जंतस	१२, १६	त्रिवङ्गा	२३, ३६
चाचताल	४०	जंतो	१४	त्रिवना	११, १५, १६, ४२
चाचपुट	३३	जोगोया	१६	त्रिवस	४०
चातुरीताल	३४	जौनपुरी	..	त्रिथरी	३७
चारिभैरवी	१६	क्येष्टा	३७	त्रेवट	१७, ३३
चित्रपुट	४०	क्याला	१४	त्रेवटताल	३४
चित्रमण्ड	..	भम्पताल	३३, ३४	दक्षिण	३८

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
दयावतो	४	धवलगमिका	१७	नायकी	१४
दर्पण	३८	धवलध्वनी	१६	नारायण	४०
दाक्षिणात्य	३६	धवलश्री	॥	नारायणी	१५
दादरा	१७	धवली	१४	नारिज	१६
दीपक	१०, १२, १६, २१, ३७, ३८, ४२	धात्री	१४	निःशङ्क	४०
दीपका	११	धानी	१६	निःशङ्कलील	३८
दीप्त	३८	धारिणी	१४	निःशङ्क	॥
दीप्तिमती	४	धार्मिका	॥	निःशङ्क	१५
दीर्घिका	५	धार	१७	निरङ्गारी	॥
देवकिरी	३०	धोरा	॥	निरोष्टा	१७
देवकृति	१६	धूमा	१४	निर्मली	५
देवक्रो	१३	ध्यान	१६	निवन्धपुष्कल	३७
देवगान्धार	१२, ३६	ध्यानकल्याण	१२	निवारिका	१२
देवगिरि	११, १६, ३०	ध्रुवपद	१७	निषादिनी	३६
देवनाटी	१३	नकुलोष्ठी	३७	नीलभोज्यङ्क	४०
देववत्	४०	नट	१२, ३५	नीलोत्पली	३७
देवशास्त्र	१६	नटनारायण	११, १२, १५, २५, ३५, ३६	नृत्य	३५
देवारवर्धनी	३६	नटनारायणी	१५	पञ्चरङ्गा	१७
देवाल	३७	नटमञ्जारिका	१६	पञ्चघात	४०
देश	११, १२, १३, १६, २८, ३५	नटमञ्जारी	१२	पञ्चम	११, १२, १६, ३२, ३६
देशकार	१०, ११, १६	नटराग	१५, २२	पञ्चमताल	३४
देशनाट	१३	नट्टञ्जीरा	११	पञ्चमी	५, ११, २०
देशिकारा	४१	नन्दा	५	पञ्चमुखीताल	३४
देशी	१०, ११, १६, २८, ३३	नक्षक	४०	पञ्चराग	३६
दोलो	११	नक्षनी	१५	पञ्चाल	१२, ३३
द्योती	३८	नम्ना	१४	पठमञ्जरी	११, २७
द्वुत	॥	नरोत्तमी	१५	पद्मा	१३
द्वुतालिका	३८, ४०	नाग	३३	पद्माक्ष	४०
द्वन्द्व	३८	नागकृति	३७	पयस्विनी	३
द्विताल	३३	नागध्वनी	११, १३, २६, ३१	परमाठा	१७
द्विवराम	३८	नागशब्दि	३१	पराताल	३४
धत्ता	३८	नाट	१२	परिमण्ड	४०
धनञ्जयप्रिय	४०	नाटकेदार	॥	परिवर्त्त	४०
धनाश्री	११, १६, २१, ४२	नाटक्याया	१६	परिवादिनी	३७
धन्यकृति	३७	नाटिका	११, ४२	पर्यङ्गा	१०, १६, १८, ४२
धमाल	३३	नाटी	१५	पलाशिका	११, ४२
धमाल तिताला	३४	नादान्तरो	३७	पल्लव	३७
धवल	१४	नायक	१४, १६	पातालकुण्डली	४०
		नायका	१२	पाव्यती	१४, ३३

वर्णानुक्रमिक राग-रागिणी-सूची

५

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
पाञ्चतीलोचन	३८	प्रेमलु	१७	मङ्गली	३४
पाञ्चद्विका	११	प्रेमानन्दी	१३	मञ्जुषा	॥
पिङ्गला	३	प्रतत	३७	मण्डक	३८, ४०
पिञ्जरी	३५	फरोदस्त ताल	३४	मण्डक	३८
पिशाकी	३७	बखारी	११	मत्सरी	४, ५
पीन	॥	बड़ा चौतारा	३४	मतङ्गजा	५
पालु	१६	बड़हंसिका	११, १६	मत्तिका	१५
पुण्यकी	१३, ३३	बड़हंसी	२४, ४२	मदन	३८
पुनर्भ	४०	बरवा	१६	मदन्ता	४
पुलिन्द	१२, ३६	बहुल	१२	महरी	१५
पुष्पी	१६	बहुलिका	३३	मधु	१२, १३
पूरवा	१२, १६, २८	ब्रह्मताल	३३, ३४, ४०	मधुमाधवी	११
पूरवी	११, १४, २३	ब्रह्मभोगी	१५	मध्यमध्या	५
पूरवीया	११	ब्रह्मवाणी	३७	मध्यमा	५, ११, १६, ३६, ४२
पूरीया	१६	ब्रह्माण्डी	१५	मनोमोदिका	१६
पूर्णाट	३७	ब्राह्मी	५	मनोरञ्जिका	१४
पूर्णाटिका	॥	भखार	१६, २६	मनारञ्जिनी	१३
पूर्वी	१६, ४२	भङ्गोरमण्ड	४०	मनोहरा	४
पृषा	३	भग्न	३७	मनोहारिणी	१३, १६
पृथ्वी	४०	भटियारी	१६	मनोहारी	१३
पोरवी	४	भावक्रौ	३७	मन्दक	४०
पौराली	३५	भाषाङ्ग	३६	मन्टा	॥
प्रकाशो	१४	भासमध्य	३५	मन्मथ	४०
प्रतापी	१३	भिन्नमण्ड	४०	मन्मथा	१३
प्रतापशेखर	३८	भौम	१२, १४	मयानो	१५
प्रतिपालक	॥	भूपाल	१४	मरुचक्रौ	७३
प्रतिमण्ड	४०	भूपालिका	३१	मरुधर	३५
प्रतिमण्डक	॥	भूपाली	११, १२, १६, ३१	मरुधरा	॥
प्रत्यङ्ग	३८	भूरणी	१४	मलुङ्गो	१६
प्रदीप	१०, १२, १६	भूयाख	१६	मलोङ्गका	१२
प्रदीपिका	११, २१, ४२	भैरव	१२, १६, ३६	मलोङ्गा (मलोङ्गा)	१६
प्रपञ्चा	४	भैरवताल	३३	मल्ल	३८, ४०
प्रभावती	४, ११	भैरवध्वनि	३५	मल्लको	१५
प्रमादिनी	५	भैरवी	१०, ११, १६, १७, ३२, ४१	मल्लवारी	॥
प्रलापिका	॥	भाली	१४	मल्लार	१०, १२, १४
प्रसव	३५	भौमी	१३	मल्लारिका	२३
प्रसारिणी	४	भ्रमणताल	२१	मल्लारो	११, ४२
प्राची	१३	भ्रमर	१२	मल्लिका	१५, ३३, ६८
प्रीति	४, १४	मकरन्द	३८	मस्तानी	१५

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
महाचित्र	४०	मूर्च्छिका	१५	रङ्गिका	१३
महासन्धि	,,	मूलतानी	११	रजनो	४
माङ्गली	३५	मृगाङ्क	४०	रञ्जनो	,,
माठा	१७	मृगिणो	१३	रञ्जा	३७
मातङ्गी	१४	मृदु	१५	रति	३८, ४०
माधव	१२, १३, १६, ४८	मृदुमध्या	५	रतिका	४
माधवी	११, २७	मेघनाट	१२	रतिखील	३८
माधुरी	१३, १४, १५	मेघरञ्जिका	१२	रमणी	१३
मानवर्द्धनी	१४	मेघराग	११, २३, २५, ३६, ४२	रम्य	४
मानमञ्जरी	११, १६	मेघा	१४	रम्भा	१४
मारणी	१३	मेवाड़	१२, १५	रविचक्र	४०
मारराग	,,	मेवाड़ी	१५	राग	३६
मारवराग	१४	मोदवर्द्धिनी	१४	रागवर्द्धन	३८
मारवा	१२	मोदिनी	१३	रागाङ्क	३६
मारवी	१५	मोहन	१६	राजचुड़ामणि	३८
मारु	१२, १५	मोहनी	११, १४, २०, ३३	राजताल	,,
मारुत	१४	मोहिनी	१३	राजनारायण	,,
मारुतो	,,	मौना	१५	राजमत्तङ्क	,,
मार्गी	४	मौनिका	१८	राजमृगाङ्क	,,
माञ्जली	,,	यति	३३, ३४, ३८	राजविद्याधर	,,
मालकोश	१०, ४२	यतिताल	४०	राजहंस	१२
मालकौशिक	१६, २७	यतिनन्कक	३८	राधिका ताल	३३
मालवकौशिकी	१८	यतिशेखर	३०	रावणहस्तक	३७
मालती	१५, १६	यवन्तिका	१६	राम	१३
मालव	११, १५, १६, २२, ३५, ३६, ४०	यशस्विनी	३	रामकिरि	११
मालवरूप	३६	युगलवन्ध	१७	रामकेलि	१०, ११, १६, १८, ४१
मालविका	२२	यूप	४०	रामगिरि	१०, १६
मालवी	११, १६, ४२	यागध्यानिका	१५	रामराग	१२
मालवी, मालवन्त्री	११, ४२	योगिनो	१५, २६	रामशास्त्र	१६
मालिनी	४, १४, १५	योगा	१७	रामा	१३
मालीगौरा (मालवगौड़),	११, १४, १६, ३२	योगाया	१०, ३०	रामिनो	५
मिष्टिका	१३, १५	योनिका	१६	रायवह्नील	३८
सुकुन्द	३८	रक्तहंस	१२, २५	रौति	३७
सुङ्गी	१५	रक्ता	४	रुद्रताल	३३, ३४
सुक्ता	,,	रङ्ग	३८	रूपक	,,
सुक्तिका	,,	रङ्गनाथी	१५	रूपमञ्जरी	११, १४
सुरङ्गा	१४	रङ्गप्रदोषक	३८	रेवती	१३
मूर्च्छना	२	रङ्गमण्ड	४०	रोहिणी	४, ५
		रङ्गाभरण	३८	रोद्रा	,,

वर्णानुक्रमिक राग-रागिण्यो-सूची

७

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
लक्ष्मणाक्ष	१६	वज्ररी	१६	विम्बोदरा	३
लक्ष्मीताल	३३, ३४, ४०	वज्रिका	१३	विष्णुताल	३३, ३४, ४०
लक्ष्मीश	३८	वसन्त	१०, ११, १२, १६, ३६, ३८, ४२	विष्णुवक्रभा	१६
लघु	३८	वसन्तिका	२०	विस्तारिणी	४, ५
लघुगेखर	३८	वसन्ती	११, २०	विहाग	११, १२, १६
लङ्कदहनी	१६	वहारौ	११	विहागडा	१५
लङ्कटोहिनी	११	वाकरेज	१६	विहारिणी	५, १५
लम्बा	५	वागीश्वरी	१०, १६, १८, ४२	विहारी	१२
ललित	१६, ३८	वाद्य	३७	वीणा	३७
ललितप्रिय	३८	वारण	३	वीर	१२
ललिता	५, ११, २०, ३६, ४२	वारी	१५	वीरताल	३३
लहरौ	१६	वासन्त	१२	वीरविक्रम	३८
लाटी	३७	विकल्पिनी	४	वीरा	४
लावनो	१६	विष्णो	१५	वृन्द	३७
लावण्या	१३	विचार	४०	वृन्दा	१५
लाम्य	३५	विचित्रा	५	वृन्दावनी	१६
लीलरङ्गी	१५	विजय	१२, ३८, ४०	वृन्दाचतुर्थ	३३
लीला	४	विजया	११	वृन्दाघाट	१०
लीलाकरण	३८	विजयानन्द	३८	वेद	१२
लीलाम्बरी	११, १३	विद्याधर	१६	वेलावली	११, १६, २८, ४२
लम्	१६	विनादिका	१३	वेमर	३५
लहर	१६	विनोदिनी	५	वैकुण्ठो	१६
वंसरो	३७	विन्दुमालो	३८	वैदिक	११
वङ्गाल	१२, १३, २७	विपश्ची	३७	वेदो	१३
वङ्गालिका	११	विपरिक्रौ	३७	वेराट	१२
वङ्गाली	११, ३३, ३५	विभास	११, १२, १३, १६	वंश्यावो	५, १५, १६
वज्रिका	४	विभाषिका	१०	वोट	३५
वयस्का	५	विभूति	४	वोहाटो	३७
वराटो	१०, ११, १६, १८	विमलक	४०	शक्तिराग	१३
वर्णताल	३८, ४०	विमोहक	१२	शङ्करभरणो	१५
वर्णमालो	३८	विमोहन	१४	शङ्करवैलावली	१५
वर्णयति	,,	विरहा	१६	शङ्करा	१२, १५
वर्धन	१२, ३८	विराज	४०	शङ्कराभरण	१२, १६, ३७
वर्धनी	१३	विरामदु	३८	शङ्करा	१५
वर्षणो	१५	विलासी	१३	शङ्किना	३
वर्षिका	..	विवर्षित	४०	शङ्कताल	४०
वक्रको	३७	विशाल	..	शततन्त्री	३७
वक्रभ	१२, ४०	विशाला	५	शरभखान	३८, ४०
वक्रभो	१५	विश्रामिणी	..	शान्ता	४

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
शास्त्रिका	१३	सङ्कुला	१४	सिधा चौतारा	३४
शावरी	१६	सङ्कोचिका	५	सिन्धुरी	१२, १६
शिशिरा	५	सदावती	५	सिन्धु	११, १३, १६
शिवक्रिया	३७	सनम्	१६	सिन्धुड़ा	२८
शुद्धधनाञ्ची	१६	सन्दापनी	४	सिन्धुरी	१३, १४
शुद्धमध्या	४, २०	सन्निध	४०	सुखकारिणी	१३
शुद्धषड्ज	४	सन्निपातक	४०	सुखा	५
शुद्धा	३६	सप्तताल	३३, ३४	सुखावती	२५
शुद्धान्ता	५	सप्तमो	४	सुगन्धि	१६
शुद्धो	१४	समनन्दन	३८	सुघराह	१६
शैलिका	१४	समुद्भवा	४	सुदशंन	४०
शोवी	१३	सरपङ्कदा	१६	सुधा	१५
शोभन	१३, १३, १६, २५	सरस	४०	सुधावती	१४
शोभनी	१०, १३, १८, ४२	सरस्वती	३, ११, २३, ३८	सुभद्रा	४
श्याम	१२, १६, २५	सखरत्ना	४	सुमनो	१६
श्यामगिरिका	११, १३	सलिता	१४	समुखा	५
श्यामगुञ्जरी	१६	सविता	३३	सुन्दका	१५
श्यामा	१३, १४	सविराम	३८	सुन्देरिका	१४
श्रीकोक्ति	३८	सहाना	१६	सुरफाक्ताल	३४
श्रीधनाश्रिका	११	सागर	१२	सुापर	३७
श्रीनन्दन	३८	सागरी	१३	सुपुञ्जा	३
श्रीरङ्ग	३८, ४०	साजगिरि	१६	सुष्टरङ्गा	१४
श्रीरङ्गी	१५	सायङ्गा	१५	सुस्तनी	१४
श्रीरङ्गा १०, ११, १३, १६, २२, ३५, ३६		सारङ्गनट	२४	सूर्यताल	३४
श्रीविष्णु	४०	सारङ्गा	११, १६, २४, ४२	सूर्यराग	१३
श्रीहृटी	१३	सारङ्गी	११, ३७	सूडा	१२, १४, १६
षट्कर्णा	३७	मारस	३८	सूही	१४
षट्ताल	३३, ३८	सावन्त	१६	सैन्धवी	११, २६, ३६
षट्मुखो	३४	सावन्ती	११	सोम	१२, २५, ३५
षड्ज	४	सावित्री	३३	सोमा	१४
षड्जमध्या	५	साविङ्गा	१५	सोवड़ा	४०
षड्जराग	१२, १३, २८	सादिरी	११	सोहनो	१६, १८, ३२
षण्मख	४०	सिंह	३८	सांहर	१६
षाडव	३५	सिंहनन्दन	३८	सोवरा	१२
षोडशा	३३	सिंहनाद	३८	सोवरी	११, १६, २४, ३२, ४२
संयुक्त	१२	सिंहलोल	३८	सौरभो	१४
संयुक्ता	११	सिंहविजय	३८	सौराष्ट्रिका	२४
संयोग	४०	सिंहविज्जीहित	३८	सौवीरी	४, ५
सङ्कोर्षमण्डक	४०	सिद्धि	४	खेड	१२, १५

	पृष्ठा		पृष्ठा		पृष्ठा
खोड़ी	१५	हमारी	१४	हिन्दोल	१२, १६, २०, ४२
खभावत्री	३७	हम्मरिका	१२	हिन्दोलो	१०, ११, २०, ४२
खरवली	३६	हरम्यङ्गार	११	हिमाल	१२
खरुपा	१४	हरिजिह्वा	३	हीर	१०
खणमेढ	४०	हरिणी	१४	हुलासो	१४
हंस	४०	हषका	१२	हेम	१२, १४, १६
हंसनाद	३८	हर्षपुरो	३५	हेमो	१४
हंसिका	१३	हर्षराग	१३	हृदयोन्मोखनी	४
हंसी	१४	हस्तिका	३७	हृष्यका	४
हंसोत्सवविलोकिता	३८	हरिनाशा	४	ह्लादिनी	४
हमीर	१६-२६	हाषिको	१३		

अकारादिक्रमिक प्राचीन संस्कृत शास्त्र-सूची

(१ले खण्डमें वर्णित)*

गान्धर्ववेद	२	सङ्गोत दामोदर	५, २४
नादपुराण	५, १४, १८	” नारायण	२५, २७, २८, ३०, ३२, ३७
नाद-महोदधि	१३	” पारजात	१२
नारद-संहिता	१, २, ३, ६	” भाष्य	२, ४, ५, १२, ३७
नारद-सङ्गीत	२, १२	” महोदधि	२, ६, ११, १३, २२, २३, ३५
विज्ञानेश्वर	२	” रत्नमाला	१२, ३२
विष्णुपुराण	२	” रत्नाकर	२, ४, ६, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३३,
बृहत् सङ्गीत-रत्नाकर	१०, ११		३५ से ३८ तक
भरत-मत	६८	” संहिता	१, ११
मतङ्ग-मत	३६	” सार	११
याज्ञवल्क्य संहिता	२	” साहित्य	१२
शारोद विवेक	३	” सिन्धु	१२
शिव-सङ्गीत	२, १२	सङ्गीतार्णव	११
सङ्गीत-चन्द्रिका	११, २३	हनुमन्मत	१०
सङ्गीत-तरङ्गिणी	१३		
सङ्गीत-दर्पण	१, २, ४, ५, ६, ११, २, १३, १८		

* १रे खण्डमें भी यह नाम उद्धृत हुए हैं।

दोमबन्धु	६६८, II ३४	नारायण	३८०, ६७४	प्रवीण प्रताप	II ७
दोमेश्वर	२२०	नासरपीर	१८४	प्रभाकर नाथ	II १५३
दुलह	१८५	निजामदीन	२०२, २३८, २८१, २८२, २८३, II ६२	प्रसाद	१०६
देवकृष्ण	४७१, ५५२, II ५५	निजामदीन चीलिथा	६३, ७४, ८८, १५६, १६१, १६२, १६५, २२६, २३३, २८२, २८८, २०४, ३८०, II २४७, २४८, ३०३, III ११०	प्रसादीदास	५५०
देवराव	५८३	निजामदीन चिलि	८१	प्राग्दास	६०६, III ८३
देवेन्द्रनाथ ठाकुर	III २००	निजामी, निजामो चीलिथा	२७७, २८०, २८८	प्रियतम वा प्रीतम	३३२, ३३८, ७८२, II ३१, ३२, ६६, ७७, ७८, ८०, ८३, ८५, १०२, १०३, १३६, १४१, १५१, १८८, २०१, २५२, २६६, ३०८, ५२०, III ८०, १५४, १७१
दीलतखान	१८६, १८८, ३२३	नित्यानन्द	II ३३	प्रेमजान	२५२
धनकुंवर	६७०	निधु बानु	II २८४ [रामनिधिगुप्त देखो]	प्रेसदास	II ६०
धनजी	६४३	निर्मल	II ७६	प्रमरक	३१४, ४२१, ४२४, ४२५, ४५४, ४८६, ५२२, ५३७, ५५०, ५५१, ५५३, ५७२, ५८८, ५८९, ६०१, ६०३, ६०४, ६०७, ६०८, ६१४, ६२५, ६३२, ६७८, ६८३, ६८२, II १८, १९, ३०, ३१, ४७, ८८, २४१, २४८, २७६, २८४, २९१, २९३, २९४, ३३७, III ५१, ५२, ७४, ८०, ८८, १२५, १३८, १४०, १४१, १४४, १५१, १५५, १५७, १६८, १८८
धनादास	II ३७६	निवाज	७४, ७८, ६६५	फकीर हुसैन साह	३३२, ३६८, ४६३, III १६६, १६७
धर्मदास	II ३६६	निहाल	II ७०, १०१, ३३८	फरीद शंकरगुप्त	८७
धीरज	४५, ४८, ११७, १२१, १३४, १७२, २८५, ३१६, ६०२, ६५१, III ५२	नेवाज	II २९७, III ७५, ८८ [निवाज देखो]	बक्सु	३०१, II ५१, ६३, २२२, २२०, III ४७
धींधी	४८, ७१, ३८५, ६३१, II १३९, III ५१, ६४, १८४	न्यामत खाँ	२५८	बख्तसिंह	६५०
नजफ शाह सुरतजा	१८८	पद्मानाम	१०१	बजान	४६४, ४६५, ४६६, ५२२, ५३३, ५३४, ५३५, ५६१, ५६२, ५७२, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ६१६, II २२, ४३, २५१, २८७, III १४८, १७२
नन्दकिशोर	३८५	पद्मासाहेब	II १६	बदरदीन पीर	१६८
नन्दकुंवर	८१	परवीण (प्रवीण राय पातुरी)	७६, ८२	बदरीबदर	२८८
नन्ददाम	४७, ११०, १११, ११६, २५१, २७१, २७२, ३२१, ६२६, II ७८, ८८, ८४, १०४, १०५, ११२, १२३, १३१, १३७, १४४, १४८, १४९, १५५, १५६, १७८, १८०, ५४६, III ५१	परमानन्द	१६८, २०७, २३८, २९४, II २४ ७५, ७८, ८१, ८२, ८८, ९९, १०७, १०८, १२२, १२३, १२४, १२५, १३२, १३३, १३८, १४०, १४२, १४५, १४७, १५८, १७१, १७५, १७६, १७७, १७८, १८८, १८४, १८५, १८६, २००, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०८, २०९, २१०, २११, २१५, २१६		
नन्दराय	१६६, २७९	परमानन्द दास	२०७, २४०, २४१, २४२, २४३, २६८, ४२०, ४५२, ५४७, ५७६, III ४४, ७१, ८०, ८१, ८६	परमानन्द प्रभु	५४७, ५४८, ५५०
नन्दलाल	३१०, II ३३८	परमानन्द स्वामी	२०७, २४०, २४१, २४२, २४३, २६८, ४२०, ४५२, ५४७, ५७६	परमानन्द खामी	२०७, २४०, २४१, २४२, २४३, २६८, ४२०, ४५२, ५४७, ५७६
नवमिष, न	III ८८	पर्णा	६२	पर्णा	६२
नरसी, नरसीया	८४, ५८३, II ४७, ६५, १५६, १५७, १५८, ३३४, ४०४, III ३४, १७३	पीपावाई	II ३७८	पीर मूरतजा अली	६७
नरहर	५२०	पुष्करीक	१५३	पुष्करीक	१५३
नवकिशोर	II १०२	पुष्कपोत्तम	४४१, ४६२, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ५००, ६१६, ६२६, II ३३८, २३८, २८४, III १५५	पूरचण्ड	४२२
नवमिष	२४८			पूरचणायक	१०५
नवल अजय	II ३२८, ३४२			पूरचाराज	४५०
नवलकिशोर	२३६			पूरचानन्द	५७२, II २६३
नवलधैर्य	II ३४१, III ८०			प्रतापसिंह	६५१, ६५२, ६५६
नवललाल	१२४, १८०			प्रपन्ना सखी	III १३३
नरवाहन	II १८५, ५१३, ५१४				
नवी मङ्गलद	१६०, २२८				
नसीरउद्दीन	७२				
नागर	II ३०				
नागरीदास	५३५, ६३५, ६५६, ६७३, II ३०, ३७				
नाजामदीन	७२				
नाहसीन	II ३३८, III ७४				
नानक	२४३, ४२२, ५४३, ५४४, ५४५, ५६५, ६१६, ६३५, ६६८, II ५७				
नामदीन	११७, ६०७				
नाथक	१७२				

राजा राम जगपति	१०७, ११६, ११५, १२७, १२५, १२६, २२१, २५८, २०२, II २२६	२८४, २८६, २२७, २३०, २३४, ४०५, ४२०, ५१८, ५१८, ५२०, ५४३, ५४८, ६०८, ६००, ६८५, II १२, १२ = कल्याणदास।	८५, ८६, १११, १२१, १२०, १२१, १२२, १४३, १४४, १५१, १५६, २८८, ३००, ५१६, ५१७, ५२८, III ७८, १२८
राजा रामचन्द्र	११८, ११८, १२५, १२२	कल्याणदास विद्या	४३८
राजा राम	५५८	कवीराम	५५३, II १४२
राजीन्द्र, बका	६५०, ६६५	कतीक	६३३
राजोपास	६३६	कठाराम दास	२८५
राम	२८८, २८०, II ३०५	कास	८०, १३४, २५७
रामचन्द्र	७६	काफली	१६२, II १२१
रामगुप्त खानी	७०	कासदास	II २८१
रामचन्द्र	२६२, ५४८	काससखी	II २५५
रामचरच	८५	कास कुलीन	२६८
रामजीदास	६५	कंबीचर	६०, II १७१, III ६५
रामदास	४६४, ६१५, ६२६, II २८	कद्वीनाथ	II २५
	२७६, ३२१, ५१५, ५२०	कन्दोवन (?)	२८२
रामदीन	२८१, ५५१	कनाराम	II ८८, III १५५
रामप्रसाद	४३८, ५८२	कल्याण जगपति	१८४
रामप्रसाद वैद्य	४४४, ५८०	कलबीर	७४
रामराजा	२८	कल्याण, कल्याणदास	३३३, ४३५, ४३६, ४३७, ५५३, ५५४, ६००, ६८८, II २१८, २२६ ३२७, ३२८, III १२०, १६२, ४८८, ६८८
रामराय	८३, II ७६, ८७, १०० III १३२	कल्याणमन्दन	३१०, II ३०३
रामसला	६०८, ६०८, ६३२, ६३८	कल्याणप्रताप	३२६
रामसखा	८५, ४८२, II १८, २३७, III ८१	कल्याण रसिक	३३५, II १५०
रामसखी	८४, ६०८, ७०२	कठाराम खाँ	२८८
रामसनेह	४८८	कालचरस	४०२, ६८२, II २४८, III १२२, १२५, १८५, २४८
रामसहाय	३८०, ६३८, II ३२३, ३१२	काग्याहार	२०४
रामानन्द	II ३३, ३७६	कालविनीद	III १८४
रामस	६५०, ६५८	कालसुन्द	४५७
रिसान	१२१, २६१	वासुदेवलास	II ७३
रुप	५५५	वासुदेव सि'क	२५८
रुपनिधाम	५३६	विश्वामहा	६६, III ७०
रुपनिधि	३३१	विठ्ठल (विठ्ठल)	II ७६, III १७६ १८०, २१५, २२६, ५१७
रुपनति	१७४, २११, २१६	विद्यादास	II २०५
रुपरत्न	३३३, ५२३, ५८४, ६२५, ५२८, ६३२, II ६८, ६३१	विशाल	१०७, १२१, १२२, १२७, १३०, II २२१
रुपराम	२८	विश्वनाथ	३३७
रुपलास	II ५८	विश्वर	६१५
रुपखामी	६६	विश्वदास	१४१, १५१, १५४, २४४, २२७, २४६, २४७, २४८, ४४५, ४४६, ४५२, ५५३, ५५४, II ६, २०, २०३, ५३०, III ८८, १००, १०२
रुन करण	६२	विहारी	८७, १४८, २२२, ४२३, ४५३, ५१८, ६४७, ६४८
रुचनशाह	४८५	विहारी दास	६५१, ६६८, II ४४, ४६,
रुचनदास	११६, ४८२, II २४, २८८ = कल्याण दास।		
रुचनीनारायण	५४		
रुचनीपति	II १२४, २१३		
रुचनीराम	५८		
रुचनदास	१५८, १६७, १६८, २२३,		
वीरमन्द्र नारायण	१२७		
वीरमन्द्रा	२६२		
वीरच	१२२, २१८		
वृषभिहारी	३८२, २८०, ४४४, ४४४, ६७६, ६७७, ६८६, II ३२, २६०, २७५, III १२०, १२१, १४५, १५८		
वृषभिहारी	II ३०, ३०२		
व्यासखानी	२७१, II ८६, ११२, १७५, १८१, ५१७		
प्रजनीवन	४३५, ४६६, ४८६		
प्रजनिध, प्रजनिधि	२४२, २७६, २२६, ४०६, ४८४, ५२२, ५४८, ५५५, ६०४, ६२५, ६४२, ६४८, ६४८, ६५३, ६५३, ६६२, ६६४, ६६४, ६६५, ६६६, ६६६, ६६६, II ५, २०, २१, २३०, २३८		
प्रजपति	II ८२, ८२, ८८, १०७, १०८, १३६, १३८, १४८, १४८, १६१, १६२, १७५, २८४, ३४३		
प्रजनीवन	६१७		
प्रहरदिन	II ३४८		
प्रहराचार्य	३५०, III १०३		
प्रहरच	२८६		
प्रभुजी	१६१, II २८८		
प्ररच दास	II २१५		
प्रार कल्याण	२६२, III ६७, ६८		
प्रार भाजन	२५०, २५५, २८६, III ६७		
प्रार कासन या	२८६, ३०१		
प्रार जमन	२१४		
प्रारजनास	२३३		
प्रारजनास	२४८, २५०		
प्रारज'हा	२४७, २६२, २८१, २८५, २८६, २९४, ३२५, III ५३, ६६, ६८		
प्रारज'हापीर	III ६८		
प्रार नेवाज	१६१		
प्रारपथा	३८२		
प्रार नीजदीन	२७०		
प्रार कडातुर	२८८, III ८८		
प्रार लवाल	२६३		
प्रार शिखर कुकभिकर	III ५८		
प्रार जीडीन कबीर	४०८		
प्रियचन्द्र दास	२६५		
प्रियचन्द्र करवार	III २३४, २३८, २४४, २५०		
प्रियदास	II २६४		
प्रियानन्दखानी	२८४		

वर्षानुक्रमिक नाम-सूची

प्रभारत विराजी	१५२	हरिदास शान	१२५	हिम परब	४२१
परदास	१२०	हरिराम	II २०, २४६	हिम रामराम	२६५, III १००
परमिनाथ	६२०	हरिप्रसाद	५२४, ५२८	हितहरिवंश	२०७, २४१, III १११, १४१,
हरिजन	५२४	हरिधर	५१०	हितहरिवंश द्वितीय	१४२, १६६, १६५, १८२, १८५, १८६,
हरिप्रसाद पुष्पवीर्य	४४२, ५११, II १२०	कल्याण	२६८		१२७, ५१२
हरिदास (डाक्टर)	५४, ८६, १२८, १२९,	कल्याण	५६, ६२, ७२, ७८, ७९	विद्यालय भाजिन	११५, ११६, III ६२
	१२४, १०७, १०८, २४१, २४२, २४३, २४४,	कल्याण	४५१, ४०७, ५१०, १०२,	विगत	१२२
	२८५, २८७, ६२२, II ६६, १००, १०१,		II १०, २८, ६६	श्रीरामानन्द वेदव्यास	१, ४१
	१४४, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१,	इफिका मरुच	४६२	वृन्दाप	१०६, १२१
	१६०, १६८, १६९, २८५, ५१५, ५१६,	इफिका	२८७, ४४२, ५०१, ६५०, ६५७,	वृत्तम मरुच	५१६, २२२, ४२२, ४६६,
III ५८			II ५२, २१२, III १२१, १६१		५१६, ५४०, II ५, III १५०

